Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

स्थापित वि. संवत् १९३२ (१८७५ ई.)

ॐ गणेशाय नमः

गणितकर्त्ता पं. पन्ना लाल ज्योतिषी एम. ए. प्रपौत्र पं. देवी दयालु ज्योतिषी (लाहौर) का असली व प्रामाणिक पंचांग २००७-०८ ई.

दिल्ली की दैनिक लग्न सारणी सहित

गौरवशाली प्रकाशन वर्ष १३२वाँ

एक मात्र वितरक :
मॉडर्न पब्लिशर्ज़
रेलवे रोड, जालन्धर
फोन : 2457160

मशहूरे आलम
पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़
माई हीरां गेट (अड्डा होशियारपुर), जालन्धर शहर – 144008

मूल्य 52.00 रु.

अन्य प्राप्ति स्थान :
जनरल बुक डिपो
अड्डा होशियारपुर, जालन्धर
फोन : 2457959

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

स्थापित सं० 1875 ई०

मशहूर आलम पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी के सर्वप्राचीन प्रतिष्ठित

गौरवपूर्ण वर्ष प्रवेश 132वाँ

पंचाँग दिवाकर ज्योतिष कार्यालय के नियम

परम पिता परमात्मा की असीम कृपा से उत्तरी भारत में सर्वप्राचीन एवं सुप्रतिष्ठित मशहूर पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान से छपने वाली सुप्रसिद्ध पंचाँग दिवाकर व मुफीद-आलम जन्त्री उर्दू, हिन्दी, पंजाबी एवं अन्य ज्योतिष व धार्मिक प्रकाशनों को, पंचाँग प्रवर्त्तक पं० देवी दयाल (लाहौर) से लेकर आज तक की दीर्घावधि में, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जो ख्याति प्राप्त हुई है, वह हमारे सुविज्ञ पाठकों से छिपी नहीं।

हमारे ज्योतिष कार्यालय में प्रामाणिक जन्मपत्रीं एवं बर्षफल आदि शुद्ध गणित द्वारा तैयार किए जाते हैं जिससे आप घर बैठे ही अपना भविष्य जान सकते हैं। **ध्यान रहे,** सही फलादेश का आधार वैज्ञानिक ढंग से बनी शुद्ध जन्मपत्री है। जीवन के महत्त्वपूर्ण पक्षों जैसे विद्या में सफलता, व्यवसाय एवं कैरियर सम्बन्धी प्रश्न, भाग्योदय विवाह-सन्तानादि, पारिवारिक सुख, विदेश यात्रा योग इत्यादि प्रश्नों के उत्तर जन्मपत्री एवं ग्रहों के आधार पर अनुशीलन करके भेजे जाते हैं। यदि ग्रहों सम्बन्धी कोई विघ्न बाधाएं हों, तो अनिष्ट ग्रहों के उपाय भी शास्त्रोक्त विधि पर आधारित निर्दिष्ट किए जाते हैं।

मध्यम जन्मपत्री—संक्षिप्त रूप से अपना भविष्य जानने के लिए जन्म तारीख, जन्म समय, जन्म स्थान, पिता का नाम, दादा का नाम, गोत्र आदि लिखें। जिसकी फीस 301 रुपए होगी। विदेश में उत्पन्न जातक की जन्मपत्री के लिए 551 रुपए अथवा 11 पौंड होगी।

सम्पूर्ण वृहद् जन्मपत्री—आपके जीवन में होने वाली महत्त्वपूर्ण घटनाओं, नौकरी, व्यवसाय, शिक्षा, विवाहादि के सम्बन्ध में विस्तृत रूप से विवरण दिया जाता है। बड़ी हस्तलिखित जन्मपत्री बनवाने के लिए जन्म समय, जन्म स्थान, जन्म तारीख, गोत्र, प्रसिद्ध नाम, पिता का नाम, दादा का नाम, वर्तमान व्यवसाय आदि लिख भेजें। इसके लिए **वृहद् जन्मपत्री** के लिए फीस 551 रुपए से 1100 रुपए तक। विदेश में उत्पन्न जातक के लिए फीस 1000 रुपए अथवा 31 पौंड होगी। डाक व्यय अलग।

वर्षफल—आपके लिए आगामी वर्ष कैसा रहेगा ? इसके लिए जन्म कुण्डली की फोटो कापी अवश्य साथ भेजें। यदि जन्मपत्री नहीं है, तो जन्म समय, तारीख, सन्, ई० व्यवसाय अंग्रेज़ी तारीख, स्थान तथा अपनी पारिवारिक व कारोबारी समस्या स्पष्ट लिखते हुए मनपसन्द फूल का नाम लिखें। फलादेश के लिए फीस 275 रुपए होगी। कृपया पूर्ण राशि अग्रिम भेजें। विदेश के लिए 21 पौंड होगी। डाक व्यय अलग।

वायदा-व्यापारियों के लिए चाँस—वायदा व हाज़िर व्यापारियों के लिए रुई, बिनौले, खल, सरसों, गुड़, चने आदि के लिए चाँस की मासिक रिपोर्ट तैयार की जाती है। मासिक रिपोर्ट की फीस 401 रुपए है। यदि एक जिन्स से अधिक होगी तो रुपए अतिरिक्त होंगे।

शेयर-बाज़ार—शेयर बाज़ार के उतार-चढ़ाव तथा प्रमुख शेयरों के तेज़ी से चाँस के लिए शेयर बाज़ार की मासिक रिपोर्ट की फीस 400 रुपए। साथ में अपनी जन्मपत्री की फोटो कापी भी भेज दें।

कम्प्यूटर (Computrized) शुद्ध/वैज्ञानिक जन्मपत्री—लेटैस्ट प्रामाणिक सौफ्टवेयर से तैयार कम्प्यूटर जन्मपत्री एवं हस्तलिखित उपायों सहित मध्यम 251/- रुपये, वृहद् षड्वर्गी फलादेश व हस्त लिखित उपायों सहित 550 रुपये।

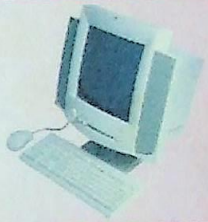

Pt. Panna Lal Jyotishi M.A. Office Pt. Devi Dayal Jyotishi & Sons.
Adda Hoshiarpur, Jalandhar—144008 (India) Ph. 2457959, 2221325

कृपया ड्राफ्ट/मनीआर्डर पं० पन्ना लाल ज्योतिषी, जालन्धर के नाम से ही भेजें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गणितकर्त्ता : पं. पन्ना लाल ज्योतिषी

श्री गणेशाय नमः

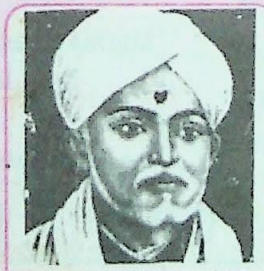

संस्थापक : पं. देवी दयालु ज्योतिषी

श्री सरस्वत्यै नमः

स्वर्गीय : पं. चूनी लाल ज्योतिषी

अखिल भारतोपयोगी चित्रापक्षीय दृक् गणिताधारित

पंचाँग दिवाकर

वि. संवत् २०६४ (सन् 2007–08 ई.)

असली, शुद्ध एवं प्रामाणिक पंचाँग

राजा चन्द्र

मन्त्री शनि

मशहूरे आलम

पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़ (लाहौर वाले)

गणितकर्त्ता : पं. पन्ना लाल ज्योतिषी एम.ए. (संस्कृत-हिन्दी) (स्वर्णपदक प्राप्त)

सुपुत्र: स्वर्गीय पं. चूनी लाल ज्योतिषी प्रपौत्र पं. देवी दयालु ज्योतिषी

सह-संपादक : पं. विवेक शर्मा (एम.ए.एल एल.बी.,), पं. पंकज शर्मा (एम.कॉम M.Tech.)

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर— 144 008 (भारत) फोन नं. : 2457959, फैक्स 2227388

प्रकाशक : मॉडर्न पब्लिशर्ज़, रेलवे रोड, जालन्धर शहर फोन : 2458388

गौरवशाली प्रकाशन वर्ष १३२ वां

स्थापित वि. संवत् १९३२

Printed at : MBD Printographics (P) Ltd. Ram Nagar, Industrial Area, Gagret, Distt. Una (H.P.) JC

सूचना : इस पंचाँग का टाईटल व विषय सामग्री ट्रेड मार्क एवं कापीराईट Act के अन्तर्गत भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है। इसके किसी भी अंश की नकल करना गैर कानूनी होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विषय-सूची—पंचांगदिवाकर संवत् २०६४ (सं. 2007-08 ई.)

विषय	पृष्ठ
पर्व, त्यौहार व छुट्टियां	4-6
हिमाचल, जम्मू, पंजाबादि के मेले	7
सरकारी छुट्टियां, सिक्ख, जैन पर्व	8
अर्द्धकुम्भी पर्व (प्रयाग)	9
मण्डमूल, पंचक विचार	10
ग्रहण-विवरण	11-13
शनि-साढ़ेसाती व पायाविचार / गुरु व राहु-केतु गोचरफल	14-17
सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि योग	18-19
द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योग	19
कालसर्प योग उपाय	20-23
व्यापारिक मन्दा-तेजी	33-38
चामत्कारिक मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र	39-43
बारह राशियों का मासिक फलादेश	44-51
राजा-मन्त्री, आर्द्रा प्रवेश फल	52-55
आकाशी कौंसिल, प्रमुख भविष्यवाणियां	56-63
सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश	64-67
संदिग्ध व्रत-पर्वों का निर्णय	68-74
संवत्सर फल, करवाचौथ के चं. उ.	75
अधिक मास, 13 दिन पक्षफल	76
चैत्रादि पक्ष (घड़ी-पलों में)	77-102
तिथि, नक्षत्र, ग्रहों के घंटा-मिंट	103-116
चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश	117-121
दैनिक ग्रहस्पष्ट, चन्द्रोदय-चन्द्रास्त	122-133
शुद्ध विवाह मुहूर्त्त	134-139
राशियों के अनुसार विवाह मुहूर्त्त	140-142
मुण्डन, गृहप्रवेशादि मुहूर्त्त	143-148
त्रिबल शुद्धि विचार	149-150
लग्नशुद्धि, भद्रा परिहार, यात्रा मुहू.	151-154
मुहूर्त्तों पर विशेष लेख	154

विषय	पृष्ठ
किस दिन क्या करना शुभ है ?	156-157
वर्णादि अष्टकूट, मंगलीक परिहार	158-161
वर-कन्या मिलान सारिणी	162-165
गण्डान्त नक्षत्र विचार	166
पूजा में नियम, घाती, वर्णादि चक्र	167-168
षोडश संस्कारों के मुहूर्त्त	169-171
प्रसूती लग्नादि विचार	173-174
प्रमुख लग्न सारिणीयां	176-180
षड्वर्ग सारिणी	181
भारत के नगरों के अक्षांश-रेखांश	183-186
राजस्थान, जम्मू, हरियाणा के अक्षांश	187-188
विदेशी नगरों के अक्षांश-रेखांश	189-190
किसी भी नगर का सूर्योदय निकालें	191-195
हिमाचल के नगरों के सू.उ.-सू.अ.	196-199
चन्द्रस्पष्ट द्वारा भोग्यदशा जानना	200-202
दशाऽन्तर्दशा, प्रत्यन्तरदशा चक्र	203-206
विशोंतरी दशाओं का वर्णन	207-209
वर्षफल सारिणी (घण्टा-मिनटों में)	223
नक्षत्र चरण प्रवेश काल तालिका	224
दैनिक लग्न सारिणी दिल्ली	225-230
दैनिक लग्न सारिणी जालन्धर	235-240
पुस्तक सूची	247-248

वर्ष का राजा—चन्द्र, मन्त्री—शनि

इस वर्ष के नवीन, उपयोगी एवं आकर्षक विषय

कालसर्प योग चामत्कारिक शुभ-फल भी करता है	20-23
हस्तरेखा सम्बन्धी विशेष सूत्र-	24-26
अनिष्ट ग्रहों के दान, पूजा व उपाय	27-29
दशाऽन्तर्दशा में उपाय विचार	30
चामत्कारिक मंत्र-तंत्र एवं टोटके	39-43
संदिग्ध व्रत-पर्व निर्णय	68-74
श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रतोत्सव सम्बन्धी विश्लेषणात्मक एवं सारगर्भित रेख	70-71
दीपावली पूजन का विभिन्न नगरों का समय-	73-74
करवाचौथ रात्रि विभिन्न नगरों का चं.उ.	75
वास्तुदोष निवारण के चमत्कारी उपाय-	121
त्रिबल शुद्धि के सम्बन्ध में विशेष लेख-	149-150
राहु एवं गुरु मध्ये ग्रहों की अन्तर्दशा फल-	210-211
भारतीय संस्कृति एवं शकुन विचार	216-217

आगामी वर्ष के उपयोगी, आकर्षक विषय

- भारत के मुख्य नगरों के दैनिक सूर्योदय-सूर्यास्त
- शिव-उपासना द्वारा सिद्धि
- वैवाहिक विलम्ब सम्बन्धी विशेष लेख एवं उपाय
- मध्याह्न, अपराह्न, पूर्वाह्न काल ज्ञात करने के नियम आदि अनेक अन्य उपयोगी विषय एवं लेख दिए जाएंगे।

पंचाँग दिवाकर के १३२वें गौरवमयी वर्ष प्रवेश पर

अनन्त श्री विभूषित

श्री श्री १००८ काशी धर्म पीठाधीश्वर जगद् गुरु शंकराचार्य स्वामी नारायणानन्द तीर्थ महाराज जी का शुभाशीर्वाद

भारतीय पञ्चाङ्ग पद्धतिरस्माकं हिन्दु-सभ्यताया: गौरवान्वितायाः समृद्धयाश्च संस्कृतेर-भिव्यंजनां करोति।

शताधिकवर्षेभ्य: प्राक् गणिताचार्येण सु-प्रसिद्धेन ज्योतिर्विद पण्डित देवीदयाल महाभागेन लवपुरे संस्थापितं प्रकाशितं च प्रसिद्धं लोकप्रियं च पञ्चाङ्गदिवाकरम् आगामिवर्षे निज १२५तमे वर्षे प्रवेशं लभमानमस्ति। सम्प्रति तस्यैव पण्डितप्रवरस्य प्रपौत्र: गणिताचार्य: पण्डित पन्नालाल शर्मा ज्योतिर्विद् निज सुयोग्य पुत्र द्वयमाध्ययेन पञ्चाङ्ग कार्ये शुद्धस्फुटसूक्ष्म-गणितागत चित्रापक्षीय निरयणपद्धतिमनुसरन् पञ्चाङ्गदिवाकरस्य लेखनं सम्पादनं च कुर्वन्नस्ति। नवीने पञ्चाङ्गदिवाकरे ज्योतिष: व्रतपर्वादि धर्मशास्त्र विषयकानामु-पयोगिविषयानां च समावेशनात् पञ्चाङ्ग दिवाकरं सम्प्रति सर्वविधर्मपरायण जनसामान्यस्य कृते सुतरामु-पेयोगी प्रतीयते।

आशस्यते यद् लोकहितं सम्मुखीनं कृत्वा निज कुल परम्परा परिपालने पण्डित पन्ना लाल ज्योतिर्विद् निज सुपुत्रयो: सहयोगेन पञ्चाङ्गमिदमतोऽप्यधिकं उपयोगिनं कर्तुं प्रयासरतो भविष्यति। अस्य प्रचुर: प्रचार: प्रसारश्च भवेत् अस्योन्नतिं सुतरां कामय-मान: शुभाशीरपि कामये।

तिथौ
वैशाख पूर्णिमा, भृगुवासर:
प्रविष्टे १७ वैशाख, सं. २०५६ विक्रमी
श्री हस्त-मुद्रा—
१००८ स्वामी नारायणान्द तीर्थ रामेश्वर मठ:
श्री काशी धर्म पीठाधीश्वर काशीक्षेत्रम्
(वाराणसी)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी (पंचाँग दिवाकर, जालन्धर)
भृगु ज्योतिष अनुसंधान संस्थान (रजि.) हरियाणा द्वारा सम्मानित

पण्डित पन्ना लाल गणितकर्त्ता पंचाँग दिवाकर (पं. देवी दयालु संस्थान जालन्धर)को ज्योतिष के क्षेत्र में सहस्र वर्षों से भी अधिक उच्चस्तरीय लेखन व प्रकाशन कार्यों में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए **भृगु अनुसंधान संस्थान** (रजि०)हरियाणा द्वारा दिनांक 21 मार्च 2006ई०, मंगलवार को **रूक्मिणी देवी** मेमोरियल हाल, अम्बाला छावनी में ज़िला नगराधीश अमृता सिंह की अध्यक्षता में पण्डित जी को मंगल मूर्ति श्रीगणेश जी की प्रतिमा, भव्य दुशाला, प्रशस्ति पत्र, नगद राशि, भव्य पुष्पमाल्यालंकरण के साथ सम्मानित किया। इस संस्थान का मुख्य उद्देश्य हमारे पूज्य ऋषि मुनियों की प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर को संयोजित करना तथा उसका प्रचार-प्रसार करना है। यह संस्थान धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में अत्यन्त सक्रिय है। यह संस्था प्रतिवर्ष **भृगु व्रतोत्सव पर्व-दीपिका** का प्रकाशन तथा अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों से धर्म परायण लोगों का मार्गदर्शन करती आ रही है।

इस भव्य सम्मेलन में भृगु अनुसंधान संस्थान के चेयरमैन पं. रघुनाथ शर्मा, अध्यक्ष पं. अशोक शास्त्री, संस्था के अन्य मुख्य एवं गणमान्य एवं उल्लेखनीय सदस्यों जैसे डॉ. गिरीश शर्मा, पं. तिलकराज शर्मा, पं. सरजूदास अचिंत, पं. कृष्ण वसिष्ठ, पं. देवमित्र पाण्डेय, मैत्रेय, कमल शर्मा व सचिव कर्ण शर्मा, वैद्य पं. भीष्मदत्त शास्त्री भी उपस्थित थे, जिन्होंने अपने ओजस्वी एवं भावपूर्ण संभाषणों से सम्मेलन को गौरान्वित किया। प्रदेश के मुख्य समाचार पत्रों (दैनिक भास्कर, अम्बाला केसरी, दैनिक जागरण, दैनिक ट्रिब्यून आदि) ने समारोह को प्रमुख समाचार के रूप में प्रकाशित किया।

चेयरमैन पं. रघुनाथ शर्मा तथा पं. अशोक शास्त्री पं. पन्ना लाल पंचाँगकर्त्ता को सम्मानित करते हुए।

ज्योतिष सीखने के लिए अनुपम ग्रन्थ माला

हमारे संस्थान पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़ द्वारा ज्योतिष सीखने तथा ज्योतिषीयों के लिए पाठ्यक्रम के रूप में तीन पुस्तकों का एक सैट तैयार किया है। जिसे पढ़कर एक साधारण पढ़ा-लिखा व्यक्ति बिना गुरू के भी अच्छा ज्योतिषी बन सकता है तथा ज्योतिषी भाई गणित व फलित सम्बन्धी अपने ज्ञान में वृद्धि करके लोगों का मार्गदर्शन कर सकेगा। अत्यन्त सरल सुबोधगम्य भाषा में इनका लेखन पंचाँग दिवाकर के अनुभवी लेखकों द्वारा किया गया है। इनमें प्रत्येक लग्न के ग्रह-फल एवं योगों को अनेक उदाहरण कुण्डलियाँ देकर समझाया गया है।

(1) **ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड)**– प्रारम्भिक इतिहास से लेकर ज्योतिष सम्बन्धी प्रारम्भिक ज्ञान-सम्पूर्ण बड़ी जन्मपत्री निर्माण शैली अत्यन्त सरल शैली में प्रस्तुत किया गया है। मूल्य 65/- रु.

(2) **ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड-भाग-I)**– फलित सम्बन्धी आरम्भिक तथा विशेष सूत्र, मेष से कन्या लग्न तक प्रत्येक ग्रह का प्रत्येक भाव में फल, दो-तीन चार ग्रहों का फल, दृष्टि फल तथा अनेक योगों को सरल शैली में प्रस्तुत किया गया है। मूल्य 250/-

(3) **ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड-भाग-II)**– तुला से मीन लग्न तक प्रत्येक ग्रह का प्रत्येक भाव में फल, दो-तीन-चार-पंच-षड्ग्रही योगों का फल, ज्योतिष सम्बन्धी विशेष योगों का फल, मंगलीक दोष पर विश्लेषण, ज्यो. द्वारा क्लिष्ट रोग विचार तथा योगिनी दशा-अन्तर्दशाओं का फल आदि अनेक विषयों का समावेश किया गया है। मूल्य 250/-

इन तीनों पुस्तकों को पढ़कर आपको फलित सम्बन्धी कई नई एवं गुप्त बातों का सरल, स्पष्ट शब्दों में ज्ञान होगा, ऐसा हमारा विश्वास है। अतः आज ही मंगवाएँ।

पता-जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर। (पंजाब)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रमुख व्रत, पर्व, त्यौहार एवं छुट्टियाँ (सन् 2007-08 ई.)

—जनवरी 2007 ई.—

[illegible]लिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. चंद्र
[illegible]गंगा, माघ स्नान प्रा.	3 जन. बुध
[illegible] गोविन्द सिंह जयं.	5 जन. शुक्र
[illegible]णेश संकष्ट चतुर्थी	6 जन. शनि
[illegible]ी (पंजाबादि)	13 जन. शनि
[illegible] संक्रान्ति	14 जन. रवि
[illegible]ला एका. व्रत	15 जन. सोम
[illegible] अमावस स्नानदानादि	19 जन. शुक्र
[illegible]कुम्भी पर्व (प्रयाग)	19 जन. शुक्र
[illegible]ी तृतीया	21 जन. रवि
श्रीगणेश तिल चतुर्थी	22 जन. चंद्र
वसंत पंचमी, श्रीपंचमी	23 जन. मं.
रथ, आरोग्य सप्तमी	25 जन. गुरु
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. शुक्र
भीष्म द्वादशी	29 जन. चंद्र

—फरवरी—

माघ पूर्णिमा	2 फर. शुक्र
माघ स्नान समाप्त	2 फर. शुक्र
गुरु रविदास जयन्ती	2 फर. शुक्र
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	16 फर. शुक्र
होलाष्टक प्रारम्भ	24 फर. शनि
गोविन्द द्वादशी	28 फर. बुध

—मार्च—

फागु. पूर्णिमा, होली	3 मार्च शनि
होलिका दहन सायं	3 मार्च शनि
होलाष्टक समाप्त	3 मार्च शनि
खग्रास चन्द्रग्रहण	3/4 मार्च
होला मेला (आनंदपुर सा.)	4 मार्च रवि
श्रीशीतलाष्टमी व्रत	12 मार्च चन्द्र
महावारुणी पर्व	17 मार्च शनि
ग्रस्तोदय खंड सूर्यग्रहण	19 मार्च चंद्र
सोमवती अमावस	19 मार्च चंद्र
वि. संवत् 2063 पूर्ण	19 मार्च चंद्र
वि. संवत् 2064 शुरु	19 मार्च चंद्र
चैत्र (वासंत) नवरात्रे शुरु	19 मार्च चंद्र
महाविषुव दिवस	21 मार्च बुध
गौरी तृतीया (गणगौर)	21 मार्च बुध
श्री (लक्ष्मी) पंचमी	23 मार्च शुक्र
स्कन्द षष्ठी	24 मार्च शनि
श्रीदुर्गाष्टमी व्रत	26 मार्च चंद्र
मे. बाहूफोर्ट (जम्मू)	26 मार्च चंद्र
श्री रामनवमी	27 मार्च मंग.
वासन्त नवरात्रे समाप्त	27 मार्च मं.
कामदा एकादशी व्रत	29 मार्च गुरु
अनङ्ग त्रयोदशी	31 मार्च शनि
श्रीमहावीर जयन्ती	31 मार्च शनि

—अप्रैल—

श्रीहनुमान जयं. (द.भारत)	2 अप्रै. चंद्र
वैशाख स्नान प्रारम्भ	2 अप्रै. चंद्र
गुड फ्राइडे	6 अप्रै. शुक्र
वैशाख संक्रान्ति	14 अप्रै. शनि
डा. अम्बेदकर जयंती	14 अप्रै. शनि
अक्षय तृतीया	19 अप्रै. गुरु
श्रीपरशुराम जयन्ती	19 अप्रै. गुरु
आद्य गुरु शंकराचार्य जयं.	21 अप्रै. शनि
श्रीगंगा जयन्ती	23 अप्रै. चंद्र
श्रीबगुलामुखी जयंती	25 अप्रै. बुध
नृसिंह जयन्ती	30 अप्रै. चंद्र

—मई—

वैशाख-बुद्ध पूर्णिमा	2 मई बुध
वैशाख स्नान समाप्त	2 मई बुध
भद्रकाली एकादशी	13 मई रवि
ज्येष्ठ संक्रान्ति	15 मई मंग.
भावुका अमावस	16 मई बुध
वटसावित्री व्रत (अमा. पक्ष)	16 मई बुध
शनैश्चर जयन्ती	16 मई बुध
ज्येष्ठ अधिक मास शुरु	17 मई गुरु
मे. गंगा दशहरा (हरिद्वार)	26 मई शनि

—जून—

पुरुषोत्तमा एका. व्रत	11 जून सोम
ज्येष्ठ अधिक मास समा.	15 जून शु.
आषाढ़ संक्रान्ति	15 जून शुक्र
रम्भा तृतीया व्रत	17 जून रवि
सा. दक्षिणायन प्रारम्भ	21 जून गुरु
निर्जला एकादशी व्रत	26 जून मंग.
वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष)	30 जून शनि
सन्त कबीर जयन्ती	30 जून शनि

—जुलाई—

अङ्गारकी गणेश चतुर्थीव्रत	3 जुला. मंग
शनैश्चरी आषा. अमावस	14 जुला. शनि
रथ-यात्रा (पुरी)	16 जुला. चंद्र
श्रावण संक्रान्ति	16 जुला. चंद्र
कुमार षष्ठी	20 जुला. शुक्र
विवस्वत सप्तमी	21 जुला. शनि
हरिशयनी एकादशी	26 जुला. गुरु
चातुर्मास्य व्रत प्रारम्भ	26 जुला. गुरु
गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा	29 जुला. रवि
आषाढ़ पूर्णिमा स्नान	30 जुला. चंद्र

—अगस्त—

नागपंचमी (राज.)	3 अग. शु.
हरियाली अमावस	12 अग. रवि
भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग. बुध
सिंघारा तीज	15 अग. बुध
मधुश्रवा-हरियाली तीज	16 अग. गुरु
नाग पंचमी	18 अग. शनि
गो. तुलसीदास जयंती	20 अग. चंद्र
दुर्गाष्टमी (मे. चिंतपूर्णी)	21 अग. मंग.
श्रावण पूर्णिमा (श्रावणी उपाकर्मादि)	28 अग. मंग.
रक्षा-बन्धन (राखी)	28 अग. मंग.
दर्शन श्रीअमरनाथ गुफा	28 अग. मंग.
श्रीगणेश बहुला चतुर्थी	31 अग. शुक्र

—सितम्बर—

चन्दन षष्ठी व्रत	2 सितं. रवि
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त)	3 सितं. चं.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णव)	4 सितं. मं.
गोकुलाष्टमी	4 सितं. मंग.
श्री गुग्गा नवमी	5 सितं. बुध
वत्स द्वादशी	8 सितं. शनि
कुशोत्पाटनी पिठौरी अमा.	11 सितं. मंग.
हरितालिका तृतीया	14 सितं. शुक्र
सिद्धि विनायक व्रत	15 सितं. श.
कलंक चतुर्थी (चंद्रदर्शन निषेध)	15 सितं. शनि
ऋषि पंचमी	16 सितं. रवि
सूर्य षष्ठी व्रत	18 सितं. मंग.
सन्तान सप्तमी व्रत	18 सितं. मंग.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत शुरु	19 सितं. बुध
राधाष्टमी	20 सितं. गुरु
श्रीचन्द्रनवमी (उदासीन)	21 सितं. शु.
श्रीवामन जयन्ती	23 सितं. रवि
अनन्त चतुर्दशी व्रत	25 सितं. मंग.
मे. बाबा सोढल, जालं.	25 सितं. मंग.
प्रौष्ठपदी श्राद्ध, पूर्णिमा	26 सितं. बुध
पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रारंभ	27 सितं. गुरु

—अक्तूबर—

गांधी, शास्त्रीजी जयंती	2 अक्तू. मंग
जीवित्पुत्रिका व्रत	3 अक्तू. बुध
श्रीमहालक्ष्मी व्रत समा.	3 अक्तू. बुध
सर्वपितृ श्राद्ध	10 अक्तू. बुध
पितृ विसर्जन	10 अक्तू. बुध
शरद् नवरात्रे प्रारंभ	12 अक्तू. शुक्र
उपांग ललिता व्रत	16 अक्तू. मंग.
कार्तिक संक्रान्ति	17 अक्तू. बुध
सरस्वती आवाहन	17 अक्तू. बुध
सरस्वती पूजन	18 अक्तू. गुरु
श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी	19 अक्तू. शु.
महानवमी (शस्त्र पूजा)	20 अक्तू. शनि
सरस्वती विसर्जन	20 अक्तू. शनि
नवरात्रे समाप्त	20 अक्तू. शनि
विजयादशमी (दशहरा)	21 अक्तू. रवि
भरत मिलाप	22 अक्तू. चंद्र
शरद् पूर्णिमा व्रतादि	25 अक्तू. गुरु
शरद् पूर्णिमा स्नानादि	26 अक्तू. शु.
महर्षि वाल्मीकि जयं.	26 अक्तू. शु.
कार्तिक स्नान प्रारंभ	26 अक्तू. शुक्र
करवा चौथ व्रत	29 अक्तू. चंद्र

—नवम्बर—

अहोई अष्टमी	1 नवं. गुरु
गोवत्स द्वादशी	6 नवं. मंग.
धन त्रयोदशी	7 नवं. बुध
नरक चतुर्दशी	8 नवं. गुरु
श्रीहनुमान जयन्ती	8 नवं. गुरु
दीपावली	9 नवं. शुक्र
अन्नकूट, गोवर्धन पूजा	10 नवं. श.
विश्वकर्मा दिवस (पं.)	11 नवं. रवि
भाई दूज, यम द्वितीया	11 नवं. रवि
सूर्य षष्ठी व्रत	16 नवं. शुक्र
गोपाष्टमी	18 नवं. रवि
अक्षय-कूष्माण्ड नवमी	19 नवं. चंद्र
भीष्म पंचक प्रारम्भ	20 नवं. मंग.
देवप्रबोधिनी एकादशी	21 नवं. बुध
तुलसी विवाह	21 नवं. बुध
चातुर्मास्य व्रतादि समा.	21 नवं. बुध
वैकुण्ठ चतुर्दशी	23 नवं. शुक्र
कार्तिक पूर्णिमा	24 नवं. शनि
श्रीगुरु नानक जयंती	24 नवं. शनि

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भीष्मपंचक समाप्त	24 नवं. शनि
कार्तिक स्नान समाप्त	2 . नवं. शनि
मेला पुष्कर, रामतीर्थ (अमृ.)	24 नवं. श.

—दिसम्बर—

श्रीकाल भैरवाष्टमी	1 दिसं. शनि
स्कन्द-चम्पा षष्ठी	15 दिसं. शनि
मित्र सप्तमी	16 दिसं. रवि
श्रीदुर्गाष्टमी	17 दिसं. चंद्र
मोक्षदा एकादशी व्रत	20 दिसं. गुरु
श्री गीता जयन्ती	20 दिसं. गुरु
पिशाचमोचन श्राद्ध	22 दिसं. शनि
सूर्य उत्तरायण में	22 दिसं. शनि
श्रीदत्तात्रेय जयन्ती	23 दिसं. रवि
क्रिसमिस डे	25 दिसं. मंग.

—जनवरी 2008 ई.—

इंग्लिश नववर्ष प्रारंभ	1 जन. मंग.
लोहड़ी पर्व (पंजाब)	13 जन. रवि
मकर संक्रान्ति	14 जन. चंद्र
पुत्रदा एका. (स्मार्त)	18 जन. शुक्र
पूर्णिमा, माघ स्नान प्रा.	22 जन. मंग.
श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी	25 जन. शुक्र
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. शनि

—फरवरी—

तिला एका. व्रत	2 फर. शनि
ी अमावस पितृकार्येषु	6 फर. बुध
ी अमावस स्नान	7 फर. गुरु
ी तृतीया व्रत	9 फर. शनि
गणेश तिल चतुर्थी	10 फर. रवि
न्त पंचमी, श्रीपंचमी	11 फर. चंद्र
थ-आरोग्य सप्तमी	13 फर. बुध
भीष्म द्वादशी	17 फर. रवि
माघ पूर्णिमा स्नान	21 फर. गुरु
माघ स्नान समाप्त	21 फर. गुरु
श्रीगुरु रविदास जयंती	21 फर. गुरु

—मार्च—

श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	6 मार्च गुरु
होलाष्टक प्रारम्भ	14 मार्च शुक्र
गोविन्द द्वादशी	18 मार्च मंग
महाविषुव दिवस	20 मार्च गुरु
फा. पूर्णिमा, होली	21 मार्च शुक्र
होलिका दहन (सायं.)	21 मार्च शुक्र
होलाष्टक समाप्त	21 मार्च शुक्र
होला मेला (आनंदपुर सा.)	22 मार्च शनि
अङ्गारकी गणेश चतुर्थी	25 मार्च मं.
श्रीशीतलाष्टमी व्रत	30 मार्च रवि

—अप्रेल—

वारुणी पर्व	3 अप्रै. गुरु
वि. संवत् 2064 पूर्ण	6 अप्रै. रवि
वि. संवत् 2065 प्रारम्भ	6 अप्रै. र.
वासन्त नवरात्रे प्रारम्भ	6 अप्रै. र.

एकादशी व्रत-सं. २०६४

षट्तिला एका. (माघ कृ.)	15 जन. चं.
जया एका. (माघ शु.)	29 जन. चं.
विजया एका. (फा. कृ.)	13 फर. मं.
आमलकी एका. (फा. शु.)	27 फर. मं.
पापमोचनी एका. (चै. कृ.)	15 मार्च गु.
कामदा एका. (चैत्र शु.)	29 मार्च गु.
वरूथिनी एका. (वै. कृ.)	14 अप्रै. श.
मोहिनी एका. (वै. शु.)	27 अप्रै. शु.
अपरा एका. (ज्ये. कृ.)	13 मई र.
पुरुषोत्तमा एका. (अधि.शु.)	27 मई र.
पुरुषोत्तमा एका. (अधि.कृ.)	11 जून चं.
निर्जला एका. (ज्ये. शु.)	26 जून मं.
योगिनी एका. स्मार्त	10 जुला. मं.
योगिनी एका. वैष्णव	11 जुला. बु.
देवशयनी एका. (आषा.शु.)	26 जुला. गु.
कामिका एका. (श्रा. कृ.)	9 अग. गु.
पवित्रा एका. (श्रा. शु.)	24 अग. शु.
अजा एका. (भाद्र. कृ.)	7 सितं. शु.
पद्मा एका. (भाद्र. शु.)	23 सितं. र.
इन्दिरा एका. (आश्वि. कृ.)	6 अक्तू. श.
पापांकुशा एका. (आ. शु.)	22 अक्तू. चं.
रमा एका. (कार्ति. कृ.)	5 नवं. चं.
देवप्रबोधिनी एका. (का. शु.)	21 नवं. बु.
उत्पन्ना एका. (मार्ग. कृ.)	5 दिसं. बु.
मोक्षदा एका. (मार्ग शु.)	20 दिसं. गु.

(सन् 2008 ई.)

सफला एका. (पौष कृ.)	4 जन. शु.
पुत्रदा एका. स्मार्त	18 जन. शु.
पुत्रदा एका. वैष्णव	19 जन. श.
षट्तिला एका. (माघ कृ.)	2 फर. श.
जया एका. (माघ शु.)	17 फर. र.
विजया एका. (फा. कृ.)	3 मार्च चं.
आमलकी एका. (फा. शु.)	17 मार्च चं.
पापमोचनी एका. (चै. कृ.)	2 अप्रै. बु.

श्रीसत्यनारायण व्रत

पौष पूर्णिमा व्रत	3 जन. बु.
माघ पूर्णिमा व्रत	1 फर. गु.
फाल्गुन पूर्णिमा व्रत	3 मार्च श.
चैत्र पूर्णिमा व्रत	2 अप्रै. चं.
वैशाख पूर्णिमा व्रत	1 मई मं.
अधिक ज्येष्ठ पूर्णि. व्रत	31 मई गु.
शुद्ध ज्येष्ठ पूर्णिमा व्रत	30 जून श.
आषाढ़ पूर्णिमा व्रत	29 जुला. र.
श्रावण पूर्णिमा व्रत	27 अग. चं.
भाद्रपद पूर्णिमा व्रत	26 सितं. बु.
आश्विन (शरद्)	25 अक्तू. गु.
कार्तिक पूर्णिमा व्रत	24 नवं. श.
मार्गशीर्ष व्रत	23 दिसं. र.

(सन् 2008 ई.)

पौष पूर्णिमा व्रत	22 जन. मं.
माघ पूर्णिमा व्रत	20 फर. बु.
फाल्गुन पूर्णिमा व्रत	21 मार्च शु.

अमावस्याएँ
(स्नान-दानार्थ)

माघ (मौनी)	19 जन. शु.
फाल्गुन (शनिवारी)	17 फर. श.
चैत्र (सोमवती)	19 मार्च चं.
वैशाख (भौमवती)	17 अप्रै. मं.
ज्येष्ठ	16 मई बु.
ज्येष्ठ (अधिक)	15 जून शु.
आषाढ़ (शनैश्चरी)	14 जुला. श.
श्रावण	12 अग. र.
भाद्रपद (भौमवती)	11 सितं. मं.
आश्विन	11 अक्तू. गु.
कार्तिक	9 नवं. शु.
मार्गशीर्ष	9 दिसं. र.

(सन् 2008 ई.)

पौष (भौमवती)	8 जन. मं.
माघ (मौनी)	7 फर. गु.
फाल्गुन	7 मार्च शु.
चैत्र	6 अप्रै. र.

श्रीगणेश चतुर्थी व्रत

श्रीगणेश संकष्ट (माघ कृ.)	6 जन. श.
तिल चतुर्थी (माघ शु.)	22 जन. चं.
फाल्गुन	5 फर. चं.
चैत्र	7 मार्च बु.
वैशाख	6 अप्रै. शु.
प्र. ज्येष्ठ	5 मई श.
द्वि. (अधिक) ज्येष्ठ	4 जून चं.
आषाढ़ (अङ्गारकी)	3 जुला. मं.
श्रावण	2 अग. गु.
भाद्रपद (बहुला चतु.)	31 अग. शु.
सिद्धि विनायक व्रत, भा. शु.	15 सितं. श.
आश्विन	29 सितं. श.
कार्तिक	29 अक्तू. चं.
मार्गशीर्ष (अङ्गारकी)	27 नवं. मं.
पौष	27 दिसं. गु.

(सन् 2008 ई.)

श्रीगणेश संकष्ट (माघ कृ.)	25 जन. शु.
तिल चतुर्थी (मा. शु.)	10 फर. र.
फाल्गुन	24 फर. र.
चैत्र (अङ्गारकी)	25 मार्च मं.

मुस्लिम त्यौहार
सन् 2007-08 ई.

ईदुलजुहा (बकरीद)	1 जन. चं.
मुहर्रम, 1428 हिजरी प्रा.	21 जन. र.
मुहर्रम (ताजिया)	30 जन. मं.
चेहलम	10 मार्च श.
आखिरी चहार	14 मार्च बु.
शहादत-ए-इमाम हसन	19 मार्च चं.
ईद-ए-मिलाद	1 अप्रै. र.
ईद-ए-मौलाद	6 अप्रै. शु.
ग्यारहवीं शरीफ	29 अप्रै. र.
उर्स निजामुद्दीन औलिया प्रा.	4 मई
उर्स ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती (अजमेर)	16-22 जुला.
जन्म श्रीहजरत अली	28 जुला. श.
शबे-मिराज	11 अग. श.
शबे-बारात	29 अग. बु.
रमजान	14 सितं. शु.
शहादत-ए-हजरत अली	4 अक्तू. गु.
शबे कदर	10 अक्तू. बु.
जमातुलविदा	12 अक्तू. शु.
ईद-उल-फितर	14 अक्तू. र.
ईदुलजुहा (बकरीद)	21 दिसं. शु.

(सन् 2008 ई.)

मुहर्रम, हिजरी 1429 शुरु	10 जन. गु.
मुहर्रम (ताजिया)	19 जन. श.
चेहलम	27 फर. बु.
आखिरी चहार	5 मार्च बु.
शहादत-ए-इमाम हसन	7 मार्च शु.
ईद-ए-मिलाद	21 मार्च शु.
ईद-ए-मौलाद	26 मार्च बु.

अर्द्धकुम्भी पर्व (प्रयाग)

प्रमुख स्नान 19 जन. 2007 शुक्रवार ; अन्य मुख्य स्नान तिथियों और पूर्ण विवरण हेतु पृष्ठ 9 पर देखें।

उपरोक्त सभी छुट्टियां सरकारी गजट से मिलान कर लें। परिवर्तन की स्थिति में सम्पादक मण्डल उत्तरदायी न होगा।
—सम्पादक

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पितृ पक्ष में श्राद्ध-2007 ई.

अपने पूर्वज पितरों के प्रति श्रद्धा भावना रखते हुए पितृ यज्ञ एवं श्राद्ध कर्म करना मनुष्य आवश्यक है। इससे स्वास्थ्य, समृद्धि, एवं सुख-शान्ति रहती है। सन् 2007 श्राद्ध की तिथियों का विवरण—

[illegible] का श्राद्ध	26 सितं. बु.
[illegible] का श्राद्ध	27 सितं. गु.
[illegible] का श्राद्ध	28 सितं. शु.
[illegible] का श्राद्ध	29 सितं. श.
[illegible] का श्राद्ध 2.43 बाद	29 सितं. र.
[illegible] का श्राद्ध 11.26 बाद	30 सितं. र.
षष्ठी का श्राद्ध	1 अक्तू. चं.
सप्तमी का श्राद्ध	2 अक्तू. मं.
अष्टमी का श्राद्ध	3 अक्तू. बु.
नवमी का श्राद्ध	4 अक्तू. गु.
दशमी का श्राद्ध	5 अक्तू. शु.
एकादशी का श्राद्ध	6 अक्तू. श.
[illegible]दशी का श्राद्ध	7 अक्तू. र.
[illegible]योदशी का श्राद्ध	8 अक्तू. चं.
✚चतुर्दशी का श्राद्ध	9 अक्तू. मं.
अमावस का श्राद्ध	10 अक्तू. बु.
सर्वपितृ श्राद्ध	10 अक्तू. बु.

✚ चतुर्दशी को शस्त्र, विष, दुर्घटनादि से मृतों का श्राद्ध होता है। उनकी मृत्यु चाहे किसी अन्य तिथि में हुई हो। चतुर्दशी का श्राद्ध अमावस करने का विधान।

पर्व श्रीपिण्डोरीधाम (गुरदासपुर)

श्रीरामानन्दाचार्य जयं.	25 जन. गु.
श्रीहोलिका दहन	3 मार्च श.
श्रीभगवतनारायण जयं.	8 मार्च गु.
रामनवमी पर्व	27 मार्च मं.
वैशाखी पर्व	14 अप्रै. श.
जानकी जयन्ती	25 अप्रै. बु.
गंगा दशहरा	26 मई श.
गुरु पूर्णिमा पर्व	29 जुला. र.
तुलसी जयन्ती पर्व	20 अग. चं.
श्रीकृष्ण जयन्ती पर्व	3-5 सितं.
श्रीवामन जयन्ती	23 सितं. र.
विजयादशमी	21 अक्तू. र.
शरद् पूर्णिमा पर्व	25-26 अक्तू.
महंत गु. गोविंददास जयं.	27 अक्तू.
श्रीहनुमान जयन्ती	8 नवं. गु.
दीपावली पर्व	9 नवं. शु.
श्रीगीता जयन्ती	20 दिसं. गु.

प्रदोष व्रत—2007 ई.

पौष शुक्ल (सोम)	1 जन. चं.
माघ कृष्ण	16 जन. मं.
माघ शुक्ल	30 जन. मं.
फाल्गुन कृष्ण	15 फर. गु.
फाल्गुन शुक्ल	1 मार्च गु.
चैत्र कृष्ण	16 मार्च शु.
चैत्र शुक्ल	30 मार्च शु.
वैशाख कृष्ण	15 अप्रै. र.
वैशाख शुक्ल	29 अप्रै. र.
प्र. शुद्ध ज्ये. कृष्ण	14 मई चं.
प्र. अधि. ज्ये. शुक्ल	29 मई मं.
द्विती. अधि. ज्ये. कृष्ण	12 जून मं.
द्विती. अधि. ज्ये. शुक्ल	27 जून बु.
आषाढ़ कृष्ण	12 जुला. गु.
आषाढ़ शुक्ल	27 जुला. शु.
श्रावण कृष्ण	10 अग. शु.
श्रावण शुक्ल	26 अग. र.
भाद्रपद कृष्ण	8 सितं. श.
भाद्रपद शुक्ल (सोम)	24 सितं. चं.
आश्विन कृष्ण (सोम)	8 अक्तू. चं.
आश्विन शुक्ल	24 अक्तू. बु.
कार्तिक कृष्ण	7 नवं. बु.
कार्तिक शुक्ल	22 नवं. गु.
मार्गशीर्ष कृष्ण	7 दिसं. शु.
मार्गशीर्ष शुक्ल	21 दिसं. शु.

श्रीनिजात्म प्रेमधाम आश्रम, हरिद्वार

स्वा. स्वरूपानन्द जयंती	23 जन.
निर्वाण स्वा. निजात्मानन्द जी	7 मार्च
निर्वाण स्वा. स्वरूपानन्द जी	4 अप्रै.
स्वा. निजात्मानन्द जयंती	18 अप्रै.
गु. प्रेमानन्द जी जयंती	29 जुला.
निर्वाण गु. प्रेमानन्द जी	17 अग.

सिद्ध महापुरुषों के जन्मदिन

स्वामी विवेकानन्द जी	10 जन. बु.
स्वामी रामानन्दाचार्य	10 जन. बु.
सिद्ध बा. लालदयालजी	20 जन. श.
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन. मं.
लाला लाजपतराय जी	28 जन. र.
श्रीगुरु रविदास जी	2 फर. शु.
श्रीगुरु रामदास जी	11 फर. र.
स्वामी दयानन्द सरस्वती	12 फर. चं.
श्रीरामकृष्ण परमहंस जी	19 फर. चं.
श्रीचैतन्य महाप्रभु	3 मार्च श.
सन्त तुकाराम जी	6 मार्च मं.
शहीदी सः भगत सिंह	23 मार्च शु.
श्रीमहावीर जयन्ती	31 मार्च श.
श्रीवल्लभाचार्य जी	14 अप्रै. श.
डॉ. बी. आर. अम्बेदकर	14 अप्रै. श.
श्रीछत्रपति शिवाजी	19 अप्रै. गु.
भगवान परशुराम	19 अप्रै. गु.
आद्य गुरु शंकराचार्य	21 अप्रै. श.
स्वामी रामानुजाचार्य	22 अप्रै. र.
महात्मा बुद्ध	2 मई बु.
श्रीनारद जयन्ती	4 मई शु.
श्रीरविन्द्रनाथ टैगोर	7 मई चं.
श्रीमहाराणा प्रताप	17 जून र.
श्रीध्यानू भगत	24 जून र.
सन्त कबीर जयन्ती	30 जून श.
लोकमान्य गंगाधर तिलक	23 जु. चं.
ऋषि वेदव्यास	29 जुला. र.
लोकमान्य तिलक स्मरणोत्सव	1 अग. बु.
गो. सन्त तुलसीदास	28 अग. मं.
सन्त ज्ञानेश्वर जयं.	4 सितं. मं.
भक्त नवल (जोधपुर)	4 सितं. मं.
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं. श.
श्रीचन्द्र जयन्ती	21 सितं. शु.
महात्मा गांधी, शास्त्रीजी	2 अक्तू. मं.
महाराजा अग्रसेन	12 अक्तू. शु.
श्रीमाधवाचार्य जी	21 अक्तू. र.
स्वामी रामतीर्थ	22 अक्तू. चं.
श्रीधनवन्तरी	7 नवं. बु.
श्रीहनुमान जयन्ती	8 नवं. गु.
श्रीविश्वकर्मा जयं.	11 नवं. र.
महाराजा रणजीत सिंह	13 नवं. मं.
श्रीजवाहर लाल नेहरु	14 नवं. बु.
श्रीवीर वैरागी	22 नवं. गु.
भग. सत्य श्रीसाईं बाबा	23 नवं. शु.
श्रीगुरु नानक देव जी	24 नवं. श.
डा. राजेन्द्र प्रसाद जयं.	3 दिसं. चं.
श्री दत्तात्रेय	23 दिसं. र.

(सन् 2008 ई.)

श्रीगुरु गोबिन्द सिंहजी	5 जन. श.
नेताजी सुभाषचंद्र बोस	23 जन. बु.
लाला लाजपतराय जी	28 जन. चं.
स्वामी विवेकानन्द जी	29 जन. मं.
स्वामी रामानन्दाचार्य	29 जन. मं.
सिद्ध बाबा लालदयालजी	9 फर. श.
श्रीगुरु रविदास जी	21 फर. गु.
गुरु रामदास जी	1 मार्च श.
स्वामी दयानन्द सरस्वती	2 मार्च र.
श्रीरामकृष्ण परमहंसजी	9 मार्च र.
श्रीचैतन्य महाप्रभु	21 मार्च शु.
सन्त तुकाराम	23 मार्च र.

क्रिश्चियन त्यौहार

नववर्ष प्रारम्भ	1 जन चं.
गुड फ्राइडे	6 अप्रै. शु.
ईस्टर सण्डे	8 अप्रै. र.
लो सण्डे	15 अप्रै. र.
रोगेशन सण्डे	13 मई र.
क्रिसमिस डे	25 दिसं. मं.

(सन् 2008 ई.)

नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. मं.

दशमहाविद्या जयन्ती

श्रीमहातारा जयन्ती	27 मार्च मं.
श्रीमातङ्गी जयन्ती	19 अप्रै. गु.
श्रीबगुलामुखी जयन्ती	25 अप्रै. बु.
श्रीछिन्नमस्तिका जयन्ती	2 मई बु.
श्रीधूमावती जयन्ती	22 जून शु.
श्रीमहाकाली जयन्ती	4 सितं. मं.
श्रीभुवनेश्वरी जयन्ती	24 सितं. चं.
श्रीकमला जयन्ती	28 अक्तू. र.
श्रीत्रिपुरभैरव जयन्ती	23 दिसं. र.
श्रीललिता जयंती	21 फर. (08) गु.

दशावतार जयन्तियां

श्रीमत्स्यावतार जयंती	21 मार्च बु.
श्रीरामावतार जयंती	27 मार्च मं.
श्रीपरशुराम जयन्ती	19 अप्रै. गु.
श्रीनृसिंहावतार जयंती	30 अप्रै. चं.
श्रीकूर्मावतार जयन्ती	1 मई मं.
श्रीबुद्धावतार जयन्ती	2 मई बु.
श्रीकल्कि जयन्ती	19 अग. र.
श्रीकृष्णावतार जयंती	3 सितं. चं.
श्रीवाराहावतार जयंती	14 सितं. शु.
श्रीवामनावतार जयंती	23 सितं. र.

मास-शिवरात्रि व्रत

माघ	17 जन. बु.
फाल्गुन	16 फर. शु.
चैत्र	17 मार्च श.
वैशाख	16 अप्रै. चं.
शु. ज्येष्ठ	15 मई मं.
अधिक ज्येष्ठ	13 जून बु.
आषाढ़	13 जुला. शु.
श्रावण	11 अग. श.
भाद्रपद	9 सितं. र.
आश्विन	9 अक्तू. मं.
कार्तिक	8 नवं. गु.
मार्गशीर्ष	7 दिसं. शु.
पौष (2008 ई.)	6 जन. र.
माघ	5 फर. मं.
फाल्गुन	6 मार्च गु.
चैत्र	4 अप्रै. श.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

तुलसी जयन्ती पर्व	20 अग. चं.	स्वा. निजात्मानन्द जयंती	18 अप्रै.	श्रावन्द्र जयन्ती	21 सितं. शु.	क्रिसमिस डे	25 दिस. मं.
श्रीकृष्ण जयन्ती पर्व	3-5 सितं.	गु. प्रेमानन्द जी	23 अग.	महाराज गोपी, राजाजी	2 अक्तू. मं.	(सन् 2008 ई.)	
श्रीवामन जयन्ती	23 सितं. र	निर्वाण गु. प्रेमानन्द जी	17 अग.	महाराज अग्रसेन	12 अक्तू. शु.	नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. मं.

माघ	5 फर. मं.
फाल्गुन	6 मार्च गु.
चैत्र	4 अप्रै. शु.

पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और यू.पी. के मुख्य मेले–सन् 2007 ई.

मेला लोहड़ी (सर्वत्र)	13 जन.
मे. दांऊ (रोपड़)	13 जन.
मे. माघी (मुक्तसर)	14 जन.
मे. पौंगल (द. भारत)	14 जन.
मे. मौनी अमावस, यू.पी. प्रयाग, हरिद्वार आदि	19 जन.
मे. अर्द्धकुम्भी (प्रयागराज)	19 जन.
मे. बसन्त पंचमी	23 जन.
मे. जैसलमेर (राज.)	31 जन.-2 फर.
जयन्ती देवी (चण्डीगढ़)	,, ,, ,, ,,
मे. मस्तुआणा (पं.)	1 फर.
मे. माघी पूर्णिमा (यू.पी.)	2 फर.
मे. श्रीमहाशिवरात्रि	16 फर.
नीलकण्ठ महादेव (गढ़वाल)	16 फर.
होलियां-होलाष्टक (यू.पी.)	24 फर.-3 मा.
मे. सावातिल्ला	1 मार्च
होला, आनन्दपुर साहिब	4 मार्च
श्रीवीरमदास, बधोछी, पटियाला	6 मार्च
मे. नवचण्डी (मेरठ)	9 मार्च
श्रीगुरु रामराय (देहरादून)	9 मार्च
मे. शीतला माता कुराली, पं.	11-12 मार्च
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	18 मार्च
मे. सूर्यग्रहण (कुरुक्षेत्र) फाल्गू व कपालमोचन	19 मार्च
मे. नानकसर चीमा	19 मार्च
मेला नवरात्रे (मनसा देवी, हरिद्वार)	19-26 मार्च
मनसा देवी, पंचकूला (हरि.)	19-26 मार्च
गौरी तृतीया (जयपुर)	21 मार्च
माईसरखांना (बठिण्डा)	24 मार्च
मे. नरीसेमरी (मथुरा) उ. प्र.	24 मार्च
मे. श्रीरामनवमी	27 मार्च
भण्डारा स्वा. संतदास जी गोपाल नगर, जालन्धर	30 मार्च

कांसा देवी, रोपड़ (पं.)	1-2 अप्रै.
देवी मेला हथीहरा, कुरुक्षेत्र	1 अप्रै.
मे. वैशाखी (पं.)	14 अप्रै.
रामथनदास, फाजिल्का पं.	14 अप्रै.
मे. पिंजौर (हरियाणा)	17 अप्रै.
गंगा सप्तमी (हरिद्वार)	23 अप्रै.
मे. भद्रकाली, कपूरथला, पं.	13 मई
गंगा दशहरा (हरिद्वार)	26 मई
रथ यात्रा उत्सव पुरी, उड़ी.	16 जुला.
गुरु पूर्णिमा उत्सव	29 जुला.
मे. नागपंचमी राज., बंगाल	3 अग.
मे. सिंधारा तीज	15 अग.
गौरी तीज, जयपुर, राज.	16 अग.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व, मथुरा	4 सितं.
गुग्गा नवमी, अम्बाला	5 सितं.
गुग्गा जाहिरपीर, नकोदर, पं.	5 सितं.
गोगामेड़ी, श्रीगंगानगर, राज.	5 सितं.
मे. मुथरेशाह, दिल्ली	11 सितं.
श्रीगुसाईंआणा, कुराली (पं.)	13 सितं.
रामदेव रोणेचा, जोधपुर, राज.	22 सितं.
वामन द्वादशी, पटियाला	23 सितं.
मे. छपार, मलेरकोटला, पं.	25 सितं.
मे. बाबा सोढल, जालन्धर	25 सितं.
श्रीगोईंदवाल साहिब, अमृतसर	26 सितं.
मे. गुग्गापीर, लुधियाना	26 सितं.
मे. फाल्गू, कुरुक्षेत्र प्रा.	10 अक्तू.
आशापूर्णी, पठानकोट	12-20 अक्तू.
मे. हरचोवाल, गुरदासपुर पं.	19-20 अक्तू.
मे. दशहरा (सर्वत्र)	21 अक्तू.
बाबा बुड्ढा सा., अमृतसर	21 अक्तू.
महा. अग्रसेन, अगरोहाधाम, हिसार	26 अक्तू.
अचलेश्वर (बटाला)	19-20 नवं.
मे. वीर वैरागी, नकोदर	22 नवं.
मे. रामतीर्थ, अमृतसर	24 नवं.

कपालमोचन, हरियाणा	24 नवं.
श्रीगढ़गंगा, पुष्करराज	24 नवं.
भण्डारा संत प्रीतमदास जी गोपाल नगर, जालन्धर	30 नवं.
मे. चमकौर साहिब	26-28 दिसं.
मे. जोड़, फतेहगढ़ प्रा.	26 दिसं.
संगीत मे. हरवल्लभ, जालं	28-30 दिसं.

जम्मू-कश्मीर के मेले

लोहड़ी पर्व	13 जन.
मे. पुरमण्डल (जम्मू)	17-18 मार्च
गुप्तगंगा, कफी-अखनूर	18-19 मार्च
नवरात्रे पर्व	19-27 मार्च
मे. बाहूफोर्ट	26 मार्च
मे. रामबन	27 मार्च
गुरुगद्दी 1008 सत्गुरु बाबा कांशीगिरजी (सुन्दरबनी)	13-14 अप्रै.
नृसिंह चौदश (ऊधमपुर)	30 अप्रै.
मे. मानसर	20-21 जून
मे. क्षीर भवानी	22-23 जून
शुद्ध महादेव (ऊधमपुर)	30 जून
जन्म गु. हरगोबिन्द जी	1 जुला.
मे. शरीक भवानी	9 जुला.
शहीदी दिवस	13 जुला.
मे. हरिप्रयाग (बनी)	25-26 जुला.
मे. ज्वालामुखी	28-29 जुला.
मे. रुद्रगंगा, चंद्रेणीदेसा, डोडा	29 जुला.
दर्शन श्री अमरनाथ गुफा	28 अग.
मे. स्वा. शंकराचार्य	28 अग.
मे. रामबन	4 सितं.
कैलाश यात्रा प्रारम्भ	9 सितं.
मेला पात, भद्रवाह	16-19 सितं.
मे. आशापति, मार्तण्ड	9-11 अक्तू.
मे. झिड़ी बाबा	24 नवं.
मे. पुरमण्डल (जम्मू)	8 दिसं.

हिमाचल प्रदेश के मेले–सन् 2007 ई.

मेला श्री ब्रह्मा, कुल्लू	20 जन.
वसन्त पंचमी (बिलासपुर)	23 जन.
श्रीमहाशिवरात्रि, मण्डी	16-23 फर.
कालेश्वर महादेव, नादौन	16 फर.
मे. स्वर्गाश्रम, नूरपुर	16 फर.
मे. काठगढ़	16 फर.
मे. बैजनाथ (कांगड़ा)	17 फर.
वड़भाग सिंह, ऊना	28-3 मार्च
सुजानपुर टिहरा (हमीरपुर)	3-8 मार्च
होला मेला, पौंटा साहिब	4 मार्च
कनिहारा, धर्मशाला प्रा.	14 मार्च
मे. बाबा बालकनाथ प्रा.	14 मार्च
नलवाड़ (बिलासपुर)	17-22 मार्च
बाला सुन्दरी, सिरमौर	19 मा.-2 अप्रै.
नयनादेवी, बिलासपुर	19-27 मार्च
नलवाड़, सुन्दरनगर	21-26 मार्च
मे. लाहौल, मण्डी	25 मार्च
श्रीदुर्गाष्टमी, कांगड़ा	26 मार्च
मे. रोहरू, महासू	29-30 मार्च
मे. नलवाड़, घुमारवीं	5-9 अप्रै.
मारकण्डा, बिलासपुर	12-16 अप्रै.
कालेश्वर महादेव, देहरा	14 अप्रै.
राजगढ़ (सिरमौर)	14-16 अप्रै.
बिशु प्रारम्भ	14 अप्रै.
हिमाचल दिवस	15 अप्रै.
कशाधा, हुरला (कुल्लू)	16-17 अप्रै.
रवनाणी, शिम, कुल्लू	20-21 अप्रै.
माहूनाग, करसोग	20-21 अप्रै.
मे. मनीकरण (कुल्लू)	26 अप्रै.-2 मई
पीपल जातर, कुल्लू	28-30 अप्रै.
मे. स्वीटी	30 अप्रै.
मे. आनी (कुल्लू)	7-9 मई
मे. नारकण्डा, बिलासपुर	8-10 मई
श्यामाकाली, सरकाघाट	10 मई
मे. बंजार (कुल्लू)	14-18 मई
ढुंगरी जातर, मनाली	15-16 मई
मे. घाघरस, बिलासपुर	15 मई
शाढ़ी जातर, नगर	18-23 मई
कमलाहिया, धर्मपुर	20 मई
पशु मेला प्रा.	21 मई

हरिदेवी, घुमारवीं	22 मई
शीतलादेवी (सुन्दरनगर)	23-25 मई
मिरपरी, मण्डी	25-26 मई
मुरारीदेवी, सरकाघाट	26-28 मई
ग्राम पंजगाई, बिलासपुर	30-31 मई
मे. स्थूल मढोल	1-4 जून
मे. भुन्तर, कुल्लू	15-17 जून
बाड़ी-सरयांझ, सोलन	15 जून
नौवाही देवी, सरकाघाट	15 जून
मे. अहल, हमीरपुर	15 जून
मे. माँ शूलिनी, सोलन	22-24 जून
मे. टाणी देवी, हमीरपुर	24 जून
मे. पीपलू, हमीरपुर	26 जून
त्रिमौणी, सिरमौर	8 जुला.
नागनी, नूरपुर	16 जुला.
सिद्ध बाबा शिव्वो, ज्वाली	22 जुला.
मे. मिंजर, चम्बा प्रा.	29 जुला.
मे. चिन्तपूर्णी, ऊना	13-21 अग.
नयना देवी, बिलासपुर	13-21 अग.
सन्तोषी माता, लदरौर	17 अग.
गुग्गा नवमी, बिलासपुर	5 सितं.
बंद्राल (कुल्लू)	5 सितं.
अम्बिका देवी-सदर, मण्डी	10 सितं.
श्रीगणेश उत्सव, मण्डी प्रा.	15 सितं.
नलवाड़, चिच्योट	17-24 सितं.
मे. लदरौर, हमीरपुर	17 सितं.
मे. सायर, अर्की	17 सितं.
वामन द्वादशी, नाहन	23 सितं.
चामुण्डा देवी, कांगड़ा	12-20 अक्तू.
मे. रामलीला	12-21 अक्तू.
बगुलामुखी (रत्नखण्डी)	12-21 अक्तू.
तारादेवी, शिमला	19-21 अक्तू.
ज्वालामुखी	19-20 अक्तू.
शीतलामाता (मच्छिभवन)	19 अक्तू.
मे. दशहरा (कुल्लू) प्रा.	21-27 अक्तू.
मे. काली बाड़ी, शिमला	8-9 नवं.
लावी, रामपुर-चिच्चोट	11-14 नवं.
रेणुका, रिवालसर, सिरमौर	21-22 नवं.
बाबा रुद्रीनन्दनारी, ऊना	21-24 नवं.
मे. जोगी पांगा, ऊना	24 नवं.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

निरयण संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल सन् 2007-08 ई.

नाम संक्रान्ति	ता. मास वार	प्रवेशकाल (घं. मिं.)	पुण्यकाल विवरण (भा. स्टै. टा.)
माघ संक्रान्ति	14 जन. रवि	18-07	दोपहर 11-43 से सायं तक
फागु. संक्रान्ति	12 फर. चन्द्र	31-06	अगले दिन मध्याह्न तक
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च बुध	27-59	अगले दिन प्रातः 10-23 तक
वैशाख संक्रान्ति	14 अप्रै. शनि	12-28	सूर्योदय से सायं सूर्यास्त तक
ज्येष्ठ संक्रान्ति	15 मई मंग	9-18	प्रातः ऊषाकाल से दोपहर 15/42 तक
आषाढ़ संक्रान्ति	15 जून शुक्र	15-53	प्रातः 9/29 के बाद
श्रावण संक्रान्ति	16 जुला. चंद्र	26-44	अगले दिन प्रातः 9/08 तक
भाद्र. संक्रान्ति	17 अग. शुक्र	11-09	प्रातः ऊषाकाल से
आश्विन संक्रान्ति	17 सितं. चंद्र	11-07	प्रातः ऊषाकाल से
कार्तिक संक्रान्ति	17 अक्तू. बुध	23-05	मध्याह्न बाद
मार्ग. संक्रान्ति	16 नवं. शुक्र	22-51	मध्याह्न बाद
पौष संक्रान्ति	16 दिसं. रवि	13-27	प्रातः सूर्योदय से
माघ संक्रान्ति	14 जन. चंद्र	24-07	मध्याह्न बाद
फागु. संक्रान्ति	14 फर. बुध	13-05	सूर्योदय से
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च शुक्र	9-57	प्रातः ऊषाकाल से सायं 16/21 तक

जैन व्रत-पर्व व उत्सव

मेरु त्रयोदशी	17 जन. बु.	श्रीकाल् निर्वाण दिवस	17 सितं. चं.
मर्यादा महोत्सव	25 जन. गु.	श्रीतुलसी पट्टारोहण	21 सितं. शु.
जैन महोत्सव (कांगड़ा)	1-3 मार्च	श्री महावीर निर्वाण	9 नवं. शु.
ऋषभदेव जयन्ती	11 मार्च र.	श्री वीर संवत् 2533 प्रा.	10 नवं. श.
वरसी तप प्रारम्भ	12 मार्च चं.	आचार्य श्री तुलसी जन्म	12 नवं. चं.
ओली तप प्रारम्भ	26 मार्च चं.	ज्ञान पंचमी	15 नवं. गु.
श्रीमहावीर जयन्ती	31 मार्च श.	चातुर्मास्य व्रतादि समा.	24 नवं. श.
ओली तप समाप्त	2 अप्रै. चं.	श्री महावीर दीक्षा दिवस	4 दिसं. मं.
वरसी तप समाप्त	20 अप्रै. शु.	मौनी एकादशी	20 दिसं. गु.
केवल ज्ञान दिवस	26 अप्रै. गु.	आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा	28 दिसं. शु.
मे. चक्रेश्वरी देवी (सरहिंद)	5-7 जून	**(सन् 2008 ई.)**	
तेरापन्थ स्थापना दिवस	29-30 जुला.	श्री पार्श्वनाथ जयन्ती	2 जन. बु.
चातुर्मास्य नियम प्रा.	30 जुला. चं.	मेरू त्रयोदशी	5 फर. मं.
जैन महोत्सव	12 अग. र.	मर्यादा महोत्सव	13 फर. बु.
श्री जयाचार्य निर्वाण	8 सितं. श.	जैन महोत्सव (कांगड़ा)	19-21 मार्च
पर्युषण पर्वारम्भ	9 सितं. र.	ऋषभदेव जयन्ती	29 मार्च श.
संवत्सरी महापर्व	15 सितं. श.	वरसी तप प्रारम्भ	30 मार्च र.

भारत सरकार एवं प्रादेशिक सरकारों की छुट्टियां (सन् 2007-08 ई.)

(इन छुट्टियों को भारत सरकार के गज़ट की सूची से मिला लें)

ईदलजुहा (बकरीद)	1 जन. चं.	वैशाखी (पं.)	14 अप्रै. श.	दीपावली	9 नवं. शु.
लोहड़ी	13 जन. श.	डा. अम्बेदकर जयन्ती	14 अप्रै. श.	विश्वकर्मा दिवस (पं.)	11 नवं. र.
मकर संक्रान्ति	14 जन. र.	श्री बुद्ध जयन्ती	2 मई बु.	श्री गुरु नानक देव जयन्ती	24 नवं. श.
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. शु.	रथ यात्रा (पुरी)	16 जुला. चं.	ईदुल जुहा (बकरीद)	21 दिस. शु.
मुहर्रम (ताजिया)	30 जन. मं.	शहीद स. उधम सिंह	31 जुला. मं.	क्रिसमिस डे	25 दिसं. मं.
श्री गुरु रविदास जयन्ती	2 फर. शु.	भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग. बु.	**(सन् 2008 ई.)**	
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	16 फर. शु.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	4 सितं. मं.	लोहड़ी	13 जन. र.
होला मेला (पं.)	4 मार्च र.	श्रीगणेश चतुर्थी (महा.)	15 सितं. श.	मकर संक्रान्ति	14 जन. चं.
श्रीराम नवमी	27 मार्च मं.	महात्मा गांधी जयन्ती	2 अक्तू. मं.	महर्रम (ताजिया)	19 जन. श.
श्रीमहावीर जयन्ती	31 मार्च श.	जमातुलविदा	12 अक्तू. शु.	श्री गुरु रविदास जयन्ती	21 फर. गु.
ईद-ए-मिलाद (ज. का.)	1 अप्रै. र.	ईदुलफितर	14 अक्तू. र.	श्री महाशिवरात्रि व्रत	6 मार्च गु.
गुड फ्राइडे	6 अप्रै. शु.	दशहरा	21 अक्तू. र.	होली	21 मार्च शु.
		महर्षि वाल्मीकि जयंती	26 अक्तू. शु.		

सिक्ख पर्व एवं गुरुपर्व आदि—2007-08 ई.

नाम गुरु साहिबान	(प्राचीन परम्परा अनुसार) जन्मदिन	गुरयाई	ज्योति ज्योत	(नानकशाही कलैण्डर अनुसार) जन्मदिन	गुरयाई	ज्योति ज्योत
1. श्रीगुरु नानक देव जी	24 नवंबर	जन्म से	5 अक्तूबर	24 नवंबर	जन्म से	22 सितंबर
2. श्रीगुरु अंगददेव जी	18 अप्रैल	1 अक्तूबर	22 मार्च	18 अप्रैल	18 सितंबर	16 अप्रैल
3. श्रीगुरु अमरदास जी	1 मई	19 मार्च	26 सितंबर	23 मई	16 अप्रैल	16 सितंबर
4. श्रीगुरु रामदास जी	27 अक्तूबर	25 सितंबर	14 सितंबर	9 अक्तूबर	16 सितंबर	16 सितंबर
5. श्रीगुरु अर्जनदेव जी	10 अप्रैल	13 सितंबर	18 जून	2 मई	16 सितंबर	16 जून
6. श्रीगुरु हरगोबिन्द जी	1 जुलाई	10 मई	23 मार्च	5 जुलाई	11 जून	19 मार्च
7. श्रीगुरु हरिराय जी	31 जन., 07 ई. / 19 फर., 08 ई.	17 मार्च, 07 ई. / 4 अप्रै., 08 ई.	3 नवंरबर	31 जनवरी	14 मार्च	20 अक्तूबर
8. श्रीगुरु हरकिशन जी	7 अगस्त	3 नवंबर	1 अप्रैल	23 जुलाई	20 अक्तूबर	16 अप्रैल
9. श्रीगुरु तेगबहादुर जी	8 अप्रैल	31 मार्च	14 दिसंबर	18 अप्रैल	16 अप्रैल	24 नवंबर
10. श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी	27 दिसं., 06 ई. / 15 जन., 08 ई.	12 दिसंबर	15 नवम्बर	5 जनवरी	24 नवंबर	21 अक्तूबर

श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब जी का प्रथम प्रकाश	भाद्र. शुक्ल प्रतिपदा तदनुसार	12 सितं.	17 भादों (ना.शा.)	1 सितं., 2007 ई.
श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब जी को गुरयाई मिली	कार्तिक शुक्ल द्वितीया तदनुसार	12 नवं.	6 कार्तिक (ना.शा.)	20 अक्तू., 2007 ई.
[illegible]	1 वैशाख प्रतिपदा तदनुसार	14 अप्रै.	1 वैशाख (ना. शा.)	14 अप्रैल, 2007 ई.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पर्युषण पर्वारम्भ	9 सितं. र.	ऋषभदेव जयन्ती	29 मार्च श.	को गरयाई मिली				
संवत्सरी महापर्व	15 सितं. श.	वरसी तप प्रारम्भ	30 मार्च र.	खालसा पंथ साजना दिवस	1 वैशाख प्रविष्ट तदनुसार 1	14 अप्रै.	1 वैशाख (ना. शा.)	14 अप्रैल, 2007 ई.

अर्धकुम्भी पर्व प्रयागराज (त्रिवेणी)

(प्रमुख स्नान, माघ अमावस 19 जनवरी, 2007 ई०)

सन् 2007 ई. में माघ मास की अमावस के समय जब सूर्य व चन्द्र मकर राशि में तथा बृहस्पति (गुरु) बृश्चिक राशि पर संचार करते हों, तो इन तीनों ग्रहों के योग में **प्रयागराज (त्रिवेणी) में अर्धकुम्भ** का भव्य मेला (पर्व) आयोजित किया जाता है—

बृश्चिक राशि स्थिते जीवे, मकरे च चन्द्र-भास्करौ।
अमावस्या तदा योगः कुम्भी, अर्धकुम्भवाख्या तीर्थनायके॥

ऊपरलिखित सूर्य, चन्द्र एवं गुरू तथा तिथि का संयोग क्रमशः मकर एवं बृश्चिक राशि में **19 जनवरी, शुक्रवार** की प्रातः 9 बजकर 31 मिंट तक रहेगा। त्रिवेणी (प्रयाग) में स्नान, दान, जप आदि का विशेष **पुण्यकाल 19 जन. को अरूणोदय काल से लेकर प्रातः 9/31 बजे** तक रहेगा। इस दिन स्नानोपरान्त, देव-पितृतर्पण, अन्न, तिल, चावल, खीर, गर्मवस्त्र, फल मिष्ठान्नादि का दान करना प्रशस्त होता है।

जिस प्रकार हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन और नासिक—इन प्रमुख तीर्थों पर प्रति बारह वर्षों के पश्चात् विशिष्ट ग्रह योग घटित होने पर कुम्भ महापर्व मनाया जाता है। उसी प्रकार इन्हीं तीर्थों पर कुम्भ पर्व के लगभग छः वर्षों के पश्चात् विशिष्ट ग्रह योग में अर्धकुम्भी का पर्व मनाया जाता है। इस अवसर पर भारतीय सनातन धर्म परम्परा, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय एकता का अभूतपूर्व सम्मिलन परिलक्षित होता है।

कुम्भ एवं अर्धकुम्भी के शुभ पर्व पर गंङ्गा-यमुना तथा सरस्वती के जलों में **दिव्य व्योम** से **अमृत तत्त्व का समावेश** हुआ माना जाता है। **साधक आनन्द रूप अमृततत्त्व** की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करते हैं। **कुम्भ एवं अर्धकुम्भ** में स्नान करके साधक **प्राण-अपान** की एकता का सम्पादन कर **परम व्योम (सहस्रार)** में स्थित अमृत की प्राप्ति करते हैं। **अमृत-प्राप्ति** ही **कुम्भी-साधक** का परम लक्ष्य है।

अर्धकुम्भी स्नान का माहात्म्य :—अर्धकुम्भी पर्व पर विधिवत् स्नान, दान, जप-पाठ एवं यज्ञादि शुभ कर्मों को करने का विशेष पुण्य होता है। श्रीविष्णु-पुराण के अनुसार, हजारों अश्वमेघ यज्ञ करने, सैंकड़ों वाजपेय यज्ञ करने से और लाख बार पृथ्वी की परिक्रमा करने से जो पुण्य प्राप्त होते हैं, वह केवल कुम्भ/अर्धकुम्भ स्नान करने से प्राप्त होते हैं।

वाङ्ग मनः कायजं पापं नरस्य सुदृढ़ं महत्। प्रयागे माघ मासे तु त्रयहस्नानेन नश्यति॥

—अर्थात् मन, वचन एवं कामजनित जो पाप होते हैं, वह माघ मास में त्रिवेणी (प्रयाग) में मात्र स्नान करने से नष्ट हो जाते हैं।

अर्ध-कुम्भी एवं माघ स्नान करने के उपरांत भगवान् विष्णु, भगवान् शिव एवं सूर्यादि देवों का ध्यान करते हुए मन्त्रपूर्वक तिल, पुष्पाक्षत, तीर्थजल से अर्घ्य देना चाहिए। श्रीविष्णु व शिवजी के स्तोत्रों का भी पाठ करना चाहिए। अपने दिवंगत पितरों को तीर्थ जल, तिल-पुष्पादि सहित तर्पण करके यथाशक्ति अनाज से भरा घड़ा, तिलादि सहित मिष्ठान्न, द्रव्य, गर्म वस्त्र, फलादि तथा तिल-निर्मित वस्तुओं का दान करना शुभ होता है।

अर्धकुम्भ पर्व सम्बन्धी स्नान की मुख्य तिथियां इस प्रकार से रहेंगी। इसमें स्नान करके अर्धकुम्भी स्नान जैसा ही पुण्यार्जित कर सकते हैं—

(1) **पौष शुक्ल एकादशी**—30 दिसम्बर, शनिवार 2006 ई० (पुत्रदा एकादशी)

(2) **पौष पूर्णिमा**, 3 जनवरी, बुधवार 2007 ई०

(3) **मकर संक्रान्ति**, 14 जनवरी, रविवार 2007 ई०, यह प्रथम शाही स्नान होगा।

(4) **माघ अमावस**, 19 जनवरी, शुक्रवार, 2007 ई०, यह अर्ध-कुम्भ का मुख्य पुण्यप्रद स्नान होगा। विशेष **पुण्यकाल** अरूणोदय से **प्रातः 9 बजकर 31 मिनट** तक रहेगा। यद्यपि 18 जन. गुरूवार को प्रातः 11 बजकर 10 मिनट के बाद पुण्य स्नान का पर्व तथा पितृ तर्पण हेतु विशेष काल होगा। परन्तु चन्द्र मकर राशि में अर्द्धरात्रि को 1 बजकर 24 मिनट से प्रविष्ट होने से स्नानदानादि का विशेष माहात्म्य आगामी दिवस की प्रातः अर्थात् 19 जन. को होगा।

(5) **माघ शुक्ल पंचमी**—(बसन्त पंचमी) 23 जनवरी, मंगलवार।

(6) **माघ शुक्ल सप्तमी**—(रथ सप्तमी) पुण्यकाल 25 जनवरी, गुरुवार को अरुणोदय से प्रारम्भ होगा।

(7) **माघ पूर्णिमा** (1-2 फरवरी) 1 फर. को गुरु पुष्य योग होने से तथा 1 फर. को प्रातः 10/39 के बाद पूर्णिमा प्रारम्भ होने से इस दिन भी स्नान-दान आदि का विशेष माहात्म्य रहेगा। 2 फर. शुक्रवार को दुपै. 11/15 तक स्नानदानादि का विशेष पुण्यकाल रहेगा।

विवाह में सम-विषम वर्षों का विचार

सम वर्षों (१८, २०, २२, २४ आदि) में कन्या का विवाह और **विषम वर्षों** (१९, २१, २३, २५ आदि) में लड़के (पुत्र) का विवाह शुभ माना गया है।—अर्थात् इन वर्षों में कन्या या पुत्र का विवाह करना, उनके वैवाहिक जीवन में सुख, सौहार्द आदि की दृष्टि से कल्याणकारी होता है। इसके विपरीत वर्षों (अर्थात् कन्या का विषम वर्षों में तथा लड़के का सम वर्षों) में करना दुःख, रोग एवं कष्टप्रद होता है—

अब्देषु युग्मेषु च कन्याकानां स्वजन्म वर्षात् शुभदो विवाहः।
अयुग्म वर्षेषु शुभो नराणां विपर्यये दुःखगद प्रदःस्यात्॥ (ज्योतिष तत्त्व प्रकाश)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गण्डमूलक नक्षत्रों का प्रारम्भ व समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) संवत् २०६४ वि.

(1 जनवरी, सन् 2007 ई. से 6 अप्रैल, 2008 ई. तक)

अश्विनी, अश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूला एवं रेवती--ये गण्डमूल नक्षत्र कहलाते हैं--इन नक्षत्रों में उत्पन्न जातक स्वयं अपने या माता-पिता के स्वास्थ्य, व्यवसाय एवं उन्नति आदि के सम्बन्ध में अशुभ होते हैं। गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक के नक्षत्र की लगभग 27 दिन पश्चात् उसी नक्षत्र में विद्वान् एवं योग्य ब्राह्मण द्वारा शान्ति करवानी चाहिए। यदि जन्मकाल के समय शान्ति न करवाई गई हो तो, जातक के जन्मदिन के निकट उसी नक्षत्र में दान-पूजन करवा लेना शुभकारक रहता है।

नोट—हमारे कार्यालय से छपी **'सम्पूर्ण गण्डमूल नक्षत्र शान्ति'** पुस्तक पूजनादि कार्यों के लिए मंगवा सकते हैं। **मूल्य 35 रु—जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर**

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
ता. मास	घं. मिं.	ता. मास	घं. मिं.	ता. मास	घं. मिं.	ता. मास	घं. मिं.
15 जन.	19 48	17 जन.	20 19	31 अग.	03 21	1 सितं.	23 07
24 जन.	10 11	26 जन.	07 25	8 सितं.	18 08	10 सितं.	20 41
2 फर.	06 45	4 फर.	10 22	18 सितं.	15 12	20 सितं.	19 26
12 फर.	05 02	14 फर.	06 23	27 सितं.	12 56	29 सितं.	07 25
20 फर.	17 49	22 फर.	13 40	5 अक्तू.	23 41	7 अक्तू.	26 43
1 मार्च	13 18	3 मार्च	17 27	15 अक्तू.	21 55	17 अक्तू.	26 54
11 मार्च	13 00	13 मार्च	15 38	24 अक्तू.	24 02	26 अक्तू.	18 03
20 मार्च	04 01	21 मार्च	22 27	2 नवं.	05 42	4 नवं.	08 23
28 मार्च	18 57	30 मार्च	23 29	12 नवं.	03 53	14 नवं.	08 56
7 अप्रै.	19 29	9 अप्रै.	22 58	21 नवं.	10 33	23 नवं.	05 23
16 अप्रै.	15 10	18 अप्रै.	09 10	29 नवं.	13 40	1 दिसं.	15 07
24 अप्रै.	25 11	27 अप्रै.	05 25	9 दिसं.	09 59	11 दिसं.	14 40
4 मई	25 15	7 मई	04 48	18 दिसं.	18 41	20 दिसं.	15 07
13 मई	25 12	15 मई	19 55	26 दिसं.	23 40	28 दिसं.	23 43
22 मई	08 59	24 मई	12 15	5 जन. (08)	17 02	7 जन.	21 25
1 जून	07 24	3 जून	10 29	14 जन.	24 28	16 जन.	22 05
10 जून	08 52	12 जून	04 56	23 जन.	10 07	25 जन.	09 34
18 जून	18 04	20 जून	20 19	1 फर.	25 02	4 फर.	05 35
28 जून	14 37	30 जून	17 14	11 फर.	06 05	13 फर.	03 27
7 जुला.	14 37	9 जुला	11 40	19 फर.	19 01	21 फर.	18 55
15 जुला.	27 19	18 जुला	05 02	29 फर.	09 21	2 मार्च	14 26
25 जुला.	22 50	27 जुला	25 28	9 मार्च	13 41	11 मार्च	09 47
3 अग.	20 09	5 अग.	17 04	17 मार्च	25 37	19 मार्च	26 27
12 अग.	11 31	14 अग.	13 25	27 मार्च	17 12	29 मार्च	22 48
22 अग.	07 20	24 अग.	10 36	5 अप्रै.	23 31	7 अप्रै.	[illegible]

पंचकारम्भ एवं समाप्ति काल—सं० २०६४

(1 जन. सं. 2007 ई० से 6 अप्रैल, सन् 2008 ई. तक)

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
ता. मास	घं. मिं.	ता. मास	घं. मिं.	ता. मास	घं. मिं.	ता. मास	घं. मिं.
21 जन.	04 12	25 जन.	08 42	27 अग.	21 50	31 अग.	25 11
17 फर.	14 06	21 फर.	15 36	24 सितं.	08 08	28 सितं.	10 11
16 मार्च	25 03	20 मार्च	25 08	21 अक्तू.	17 58	25 अक्तू.	21 09
13 अप्रै.	10 54	17 अप्रै.	12 11	17 नवं.	25 49	22 नवं.	08 11
10 मई	18 27	14 मई	22 40	15 दिसं.	07 38	19 दिसं.	17 09
6 जून	24 10	11 जून	07 03	11जन.(08)	13 14	15 जन.	23 26
4 जुला.	05 44	8 जुला.	13 13	7 फर.	20 30	12 फर.	04 50
31 जुला.	12 46	4 अग.	18 36	6 मार्च	05 42	10 मार्च	11 47
				2 अप्रै.	15 37	6 अप्रै.	21 08

पंचक नक्षत्र विचार

वासवोत्तर दलादि पंचके याम्यदिग्गमनं गृहगोपनम्।
प्रेत दाहतृण काष्ठ संचयं शय्यका वितरणं च वर्जयेत्॥

—पंचक नक्षत्रों में काष्ठ छेदन (लकड़ी तोड़ना), तिनके तोड़ना, दक्षिण दिशा की यात्रा, प्रेतादि-दाहसंस्कार, स्तम्भारोपन, तृण, ताम्बा, पीतल, लकड़ी आदि का संचय, दुकान, मकान या झौंपड़ी आदि की छत डालना, चारपाई, खाट, चटाई आदि बुनना, बैठक की गद्दियों का निर्माण करना त्याज्य माना गया है। पंचकों में हानि, लाभ एवं व्याधि आदि पाँच गुणा, त्रिपुष्कर में तीन गुना तथा द्विपुष्कर में दोगुणा लाभ या हानि की सम्भावना होती है। विधिवत् नक्षत्र पूजा, दान एवं ब्राह्मण भोजन करवाना शुभप्रद होता है। प्रेत दाह अथवा किसी अन्य कारण से हानि की आशंका हो तो उस स्थिति में किसी विद्वान् ब्राह्मण से पंचक शान्ति करवाने का विधान होता है।

ध्यान रहे, मुहूर्त्त ग्रन्थों में विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृह प्रवेश, वधू-प्रवेश, उपनयन आदि तथा रक्षा-बन्धन, भैय्या दूज आदि पर्वों में पंचक नक्षत्रों के निषेध के बारे में कहीं भी विचार नहीं किया जाता।

बृहद् ज्योतिषानुसार तो धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपद व रेवती नक्षत्र सभी कार्यों में सिद्धिप्रदायक एवं शुभ माने जाते हैं जबकि पू. भाद्रपद एवं शतभिषा नक्षत्र साधारण रूप से कार्य सिद्धि कारक माने गए हैं।

—सम्पादक।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

12 अग.	11	31	14 अग.	13	25	27 मार्च	17	12	29 मार्च	22	48	एवं शुभ माने जाते हैं जबकि पू. भाद्रपद एवं शतभिषा नक्षत्र साधारण रूप से कार्य सिद्धि			
22 अग.	07	20	24 अग.	10	36	5 अप्रै.	23	31	7 अप्रै.	18	33	कारक माने गए हैं।			

—सम्पादक।

ग्रहण विवरण (सन् 2007–08 ई.)

सन् 2007-08 ई. में पृथ्वी पर कुल छः ग्रहण होंगे—

(1) खग्रास चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य) (3/4 मार्च, 2007 ई., शनि/रवि)
(2) ग्रस्तोदय खण्डग्रास सूर्यग्रहण (भारत में दृश्य) (19 मार्च, 2007 ई., सोमवार)
(3) ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य) (28 अगस्त, 2007 ई., मंगलवार)
(4) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (भारत में अदृश्य) (11 सितम्बर, 2007 ई., मंगलवार)
(5) कंकण सूर्यग्रहण (भारत में अदृश्य) (7 फरवरी, 2008 ई., गुरुवार)
(6) ग्रस्तास्त खग्रास चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य) (21 फरवरी, 2008 ई., गुरुवार)

भारत में अदृश्य ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण

(1) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (11 सितम्बर, 2007 ई., मंगलवार)—यह ग्रहण भाद्रपद कृष्ण अमावस, मंगलवार, वि. संवत् २०६४ तद्नुसार 11 सितं., 2007 ई. को भा. स्टैं. टा. अनुसार दोपहर 3 बजकर 56 मिं. से प्रारम्भ होकर रात्रि 8 बजकर 07 मिनट पर समाप्त हो जाएगा। भारत में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा। यह ग्रहण अण्टार्कटिका, दक्षिणी अमेरिका (उत्तरी भागों को छोड़कर) में दिखाई देगा।

(2) कंकण सूर्यग्रहण (7 फरवरी, 2008 ई., गुरुवार)—यह ग्रहण माघ कृष्ण अमावस, गुरुवार, वि. संवत् २०६४ तद्नुसार 7 फरवरी, 2008 ई. को भा. स्टैं. टा. अनुसार प्रातः 7 बजकर 09 मिनट से प्रारम्भ होकर 11 बजकर 42 मिनट पर समाप्त हो जाएगा। भारत में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा। यह ग्रहण न्यूज़ीलैण्ड, दक्षिण-पूर्वी आस्ट्रेलिया, फिज़ी तथा पश्चिमी समोन में दिखाई देगा।

भारत में दृश्य ग्रहणों का विस्तृत विवरण

(1) ग्रस्तास्त/ खग्रास चन्द्रग्रहण (3/4 मार्च, 2007 ई., शनि/रविवार)—इस ग्रहण का सविस्तार विवरण हम गतवर्षीय पंचांगदिवाकर में लिख आए हैं। इस वर्ष आप मुफीद आलम जन्त्री का अवलोकन कर सकते हैं।

(2) ग्रस्तोदय खण्डग्रास सूर्यग्रहण (19 मार्च, 2007 ई., सोमवार)—इस ग्रहण का भी सविस्तार विवरण हम गतवर्षीय पंचांगदिवाकर में लिख आए हैं।

(3) ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्रग्रहण (28 अगस्त, 2007 ई., मंगलवार)—यह ग्रहण श्रावण पूर्णिमा तद्नुसार 28 अगस्त, 2007 ई. को सायं चन्द्रोदय के समय अरूणांचल प्रदेश, मेघालय, मणिपुर, नागालैण्ड, मिज़ोरम, त्रिपुरा, आसाम, बंगाल के सदूर पूर्वी सीमावर्ती क्षेत्रों में दिखाई देगा। इन क्षेत्रों में चन्द्रमा ग्रस्त ही उदय होगा। और उदय के कुछ मिनट बाद ही ग्रहण समाप्त हो जाएगा। **भारत के अन्य किसी भी प्रान्त में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा।** ग्रहण चित्र (1) में देखने पर आपको स्पष्टतः पता चल जाएगा कि 'क-ख'

ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण-28 अग. 2007 ई.

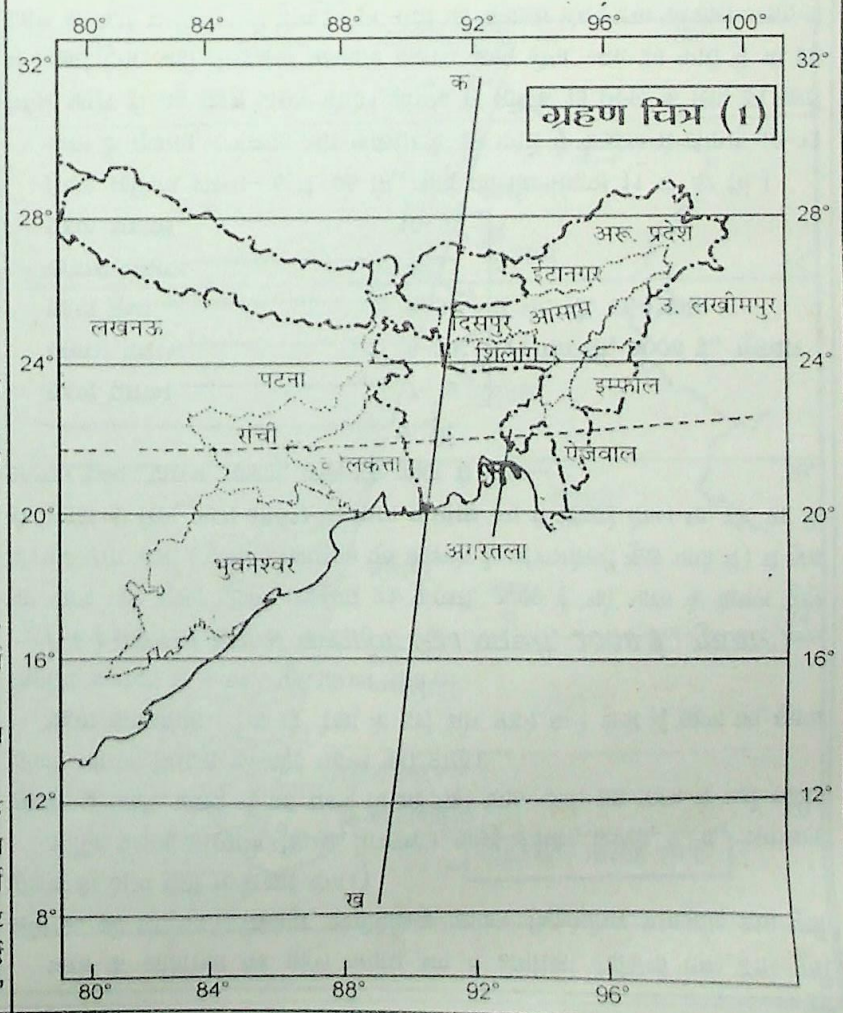

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रेखा के दायीं ओर स्थित क्षेत्रों में ही यह ग्रहण दिखाई पड़ेगा। इस ग्रहण के स्पर्श, मोक्ष आदि का काल (भा. स्टै. टा. में) इस प्रकार है—

	घं. मिं.	
ग्रहण स्पर्श --------	14-21	28 अग., 2007 ई. (भा. स्टैं. टा.)
खग्रास प्रारम्भ ------	15-22	
ग्रहण मध्य----------	16-07	
खग्रास समाप्त ------	16-53	
ग्रहण समाप्त -------	17-54	

[ग्रहण पर्वकाल 3 घं. 33 मिं., चन्द्र मालिन्य प्रारम्भ 13 घं. 22 मिं., चन्द्र मालिन्य समा. 18 घं. 53 मिं.]

ग्रहण चित्र (1) में 'क-ख' रेखा के बाईं ओर स्थित नगरों में चन्द्रमा का उदय ग्रहण समाप्ति के बाद होगा। अत: स्पष्ट रूप से प्रतीत हो रहा है कि 'क-ख' रेखा के बायीं ओर शेष भारत में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा और इससे केवल दायीं ओर के नगरों में (पूर्वी भारत) यह ग्रहण देखा जा सकेगा। इन क्षेत्रों में ग्रहण समाप्ति के समय चन्द्रमा को पूर्वी क्षितिज की ओर देखा जा सकेगा। इसी पृष्ठ पर पूर्वी प्रदेशों के मुख्य नगरों के चन्द्रोदय दिए गए हैं। जिससे स्पष्ट प्रतीत हो रहा है कि इन प्रदेशों के नगरों में भी खग्रास समाप्ति के बाद ही चन्द्रोदय होगा।

पूर्वी भारत के मुख्य नगरों के चन्द्रोदय

ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण–28 अगस्त, 2007 ई.

[17 घं. 54 मिं. से पहले जहाँ चन्द्रोदय होगा, वहीं ग्रहण ग्रस्तोदय रूप में दिखाई देगा।]

नगर	चन्द्रोदय घं.	मिं.	नगर	चन्द्रोदय घं.	मिं.	नगर	चन्द्रोदय घं.	मिं.
अगरतला (त्रिपु.)	17	48	गोचाम (अरु.)	17	40	डिगबोई (आ.)	17	34
अलीपुरदुआर (बं.)*	17	59	गंगटोक (सिकिम)*	18	02	नया बाज़ार (सिकि.)*	18	03
ऐज़वाल (मिज़ो)	17	42	गोलाघाट (आ.)	17	40	पोर्ट-ब्लेयर	17	32
ईटानगर (अरु.)	17	41	गोवाहाटी (आ.)	17	48	बोमडिला (आ.)	17	46
इम्फाल (मणि.)	17	38	जौग्राम (बं.)*	18	01	बोमडिला (अरु.)	17	47
डरब्रूल (मणि.)	17	36	चिरापूंजी (मे.)	17	48	ब्रह्मकुण्ड (आ.)	17	31
उत्त. लखीमपुर (आ.)	17	40	जलपाईगुड़ी (बं.)*	18	00	बाराकपुर (बं.)	17	55
कुमारग्राम (बं.)*	17	57	जोरहाट (आ.)	17	40	मातीमांगा (बं.)	17	54
कोलकत्ता (बं.)*	17	59	टवांग (अरु.)	17	50	शिलांग (मेघा)	17	47
कूच बिहार (बं)*	17	58	दार्जिलिंग*	18	04	लखीमपुर (आ.)	17	39
कोहिमा (नागा.)	17	38	डिब्रूगढ़ (आ.)	17	36	सिबसागर	17	37
						तेजपुर (आ.)	17	44

* = वाले शहरों में ग्रहण समाप्ति के बाद चन्द्रोदय होगा।

भारत के अतिरिक्त यह ग्रहण खग्रास रूप में अमेरिका (दक्षिणी तथा उत्तर-पूर्वी अमेरिका को छोड़कर), सिंगापुर, इण्डोनेशिया, जापान, फिलीपीन्स, हांगकांग, तथा पूर्वी एशिया के अन्य देशों में दिखाई देगा।

क्योंकि पंजाब, हरियाणा, हि. प्र., राजस्थान, जम्मू-कश्मीर, दिल्ली, उ. प्र., उत्तरांचल एवं म. प्र. आदि प्रदेशों में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा—अत: इस ग्रहण में यहाँ स्नान, दानादि धार्मिक विधानों का कोई महत्त्व नहीं होगा।

ग्रहण का सूतक—'क-ख' रेखा के दाईं ओर पड़ने वाले क्षेत्रों में ग्रहण का सूतक स्थानीय चन्द्रोदय से 9 घण्टे पूर्व प्रारम्भ होगा।

(4) ग्रस्तास्त खग्रास चन्द्रग्रहण (21 फरवरी, 2008 ई., गुरुवार)—यह ग्रहण माघ शुक्ल पूर्णिमा तदनुसार 21 फरवरी, 2008 ई. को भारत के केवल सुदूर पश्चिम-उत्तर नगरों (गुजरात, राजस्थान एवं काश्मीर के पश्चिमोत्तरी कुछ भागों में) में कुछ ही मिनटों के लिए ग्रहण आरम्भ के समय ग्रस्तास्त रूप में दिखाई देगा। भा. स्टै. टा. के अनुसार इसका प्रारम्भ, मोक्षादि काल इस प्रकार से होगा—

	घं. मिं.	
ग्रहण प्रारम्भ	7-13	21 फरवरी, 2008 ई., गुरुवार (भा. स्टैं. टा.) प्रात:
खग्रास प्रारम्भ	8-31	
ग्रहण मध्य	8-56	
खग्रास समाप्त	9-22	
ग्रहण समाप्त	10-39	

[चन्द्र मालिन्य प्रारम्भ—6 घं. 05 मिं., चन्द्र मालिन्य समाप्त 11 घं. 47 मिं.]

भारत के गुजरात, राजस्थान और काश्मीर के इन नगरों में चन्द्रास्त से लगभग 10-12 मिनट पहले ही यह ग्रहण प्रारम्भ होगा। अधिक से अधिक 13 मिनट के लिए इन नगरों में दिखाई देगा। यहाँ भी इसका परमग्रास अत्यन्त अल्प होगा, अत: इन नगरों में भी इस ग्रहण का कोई माहात्म्य नहीं होगा। (इन नगरों का चन्द्रास्त समय तथा पर्वकाल अलग से दिया गया है।)

ग्रहण चित्र (2) में दी गई 'क-ख' रेखा से बाईं ओर स्थित इन पश्चिमी प्रदेशों के नगरों में यह ग्रहण चन्द्रास्त के समय देखा जा सकेगा। रेखा के दाईं ओर स्थित सभी नगर-ग्रामों में यह ग्रहण नहीं देखा जा सकेगा क्योंकि इन क्षेत्रों में (पंजाब, हरियाणा, पूर्वी [illegible] आदि) ग्रहण प्रारम्भ होने से पहले ही चन्द्रमा अस्त हो

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कोहिमा (नागा.)	17	38	डिब्रूगढ़ (आ.)	17	36	तेजपुर (आ.)	17

* = वाले शहरों में ग्रहण समाप्ति के बाद चन्द्रोदय होगा।

गामों में यह ग्रहण नहीं देखा जा सकेगा क्योंकि इन क्षेत्रों में (पंजाब, हरियाणा, पूर्वी राजस्थान, पूर्वी गुजरात, दिल्ली आदि) ग्रहण प्रारम्भ होने से पहले ही चन्द्रमा अस्त हो चुका होगा। भारत के अधिकांश नगरों में ('क-ख' रेखा के बाईं ओर स्थित नगरों को छोड़कर) 7 घं. 13 मिं. से पहले ही चन्द्र-अस्त हो जाएगा।

इस ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण को 'क-ख' रेखा के बाईं ओर स्थित नगरों में प्रातः पश्चिमी क्षितिज की ओर चन्द्रमा अस्त होते देखा जा सकेगा।

भारत के अतिरिक्त यह ग्रहण खग्रास रूप में रूस, सऊदी अरब, ओमान तथा अन्य अरब देशों, अफ्रीका में भी दिखाई देगा।

ध्यान रहे—ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण का पर्वकाल ग्रहण के प्रारम्भ से चन्द्र के अस्तकाल तक ही माना जाता है। अतः चन्द्र के अस्त हो जाने पर वहां स्नान कर लेना चाहिए।

ग्रहण का सूतक—जिस क्षेत्र में ('क-ख' रेखा से बाईं ओर) यह ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण दिखाई देगा, केवल वहीं इस ग्रहण के सूतक का विचार होगा तथा 20 फर. की रात्रि 10 घं. 13 मिं. से प्रारम्भ होगा।

क्योंकि यह ग्रहण भारत के सुदूर पश्चिमोत्तर क्षेत्रों को (पश्चिमी राजस्थान, पश्चिम गुजरात) छोड़कर शेष भारत में दिखाई नहीं देगा। अतएव भारत के अधिकांश भागों में ('क-ख' रेखा के दायीं ओर के क्षेत्र में) इस चन्द्रग्रहण का कोई माहात्म, सूतकादि धार्मिक कृत्यों का विचार नहीं होगा।

ग्रस्तास्त (अल्पकालिक) खग्रास चन्द्रग्रहण (21 फर., 2008 ई.)
पश्चिमी भारत के मुख्य नगरों का चन्द्रास्त और पर्वकाल
(जहाँ चन्द्रास्त 7-13 से पहले होगा—वहाँ ग्रहण दिखाई नहीं देगा।)

नगर	चन्द्रास्त घं.	चन्द्रास्त मिं.	पर्व काल मिं.
(पश्चि. राजस्थान के नगर)			
*अनूपगढ़	7	11	—
*उतारनी	7	12	—
कुरी	7	19	6
*कोलायत	7	10	—
बुईआला	7	20	7
नाराव	7	18	5
गागरिया	7	17	4
*गूढ़ा	7	13	—
घोटारू	7	22	9
चारनवाला	7	15	2
जैसलमेर	7	18	5
देओरा	7	18	5
देवीकोट	7	16	3
नाचना	7	14	1
*पोखरन	7	13	—
*फलोंदी	7	13	—
बाड़मेर	7	14	1
*बालोतरा	7	12	—
*बीकानेर	7	10	—
मोहनगढ़	7	17	4
रामगढ़ (जैस.)	7	20	7
शाहगढ़	7	22	9
*हनुमानगढ़	7	08	—
(गुजरात के नगर)			
*अमरेली	7	12	—
जामनगर	7	17	4
जूनागढ़	7	14	1
जखाऊ	7	22	9
द्वारिका	7	21	8
पोरबन्दर	7	19	6
भुज	7	19	6
माधवपुर	7	15	2
मण्डवी (कच्छ)	7	20	7
मालिया	7	15	2
राजकोट	7	14	1
रापर	7	16	3
लखपत	7	24	11
सोमनाथ	7	14	1
*हलवाड़	7	13	—
(जम्मू-कश्मीर)			
गिलगित	7	14	1
*पुच्छ	7	13	—
*उड़ी	7	13	—

* — वाले नगरों में ग्रहण आरम्भ से पहले ही चन्द्र अस्त हो जाएगा।

ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण-21 फरवरी, 2008 ई.

यह ग्रहण भारत में 'क-ख' रेखा के बाईं ओर स्थित नगरों में ही चन्द्रास्त के समय कुछ ही मिनटों के लिए अल्पग्रास रूप में दिखाई देगा।

ग्रहण चित्र (2)

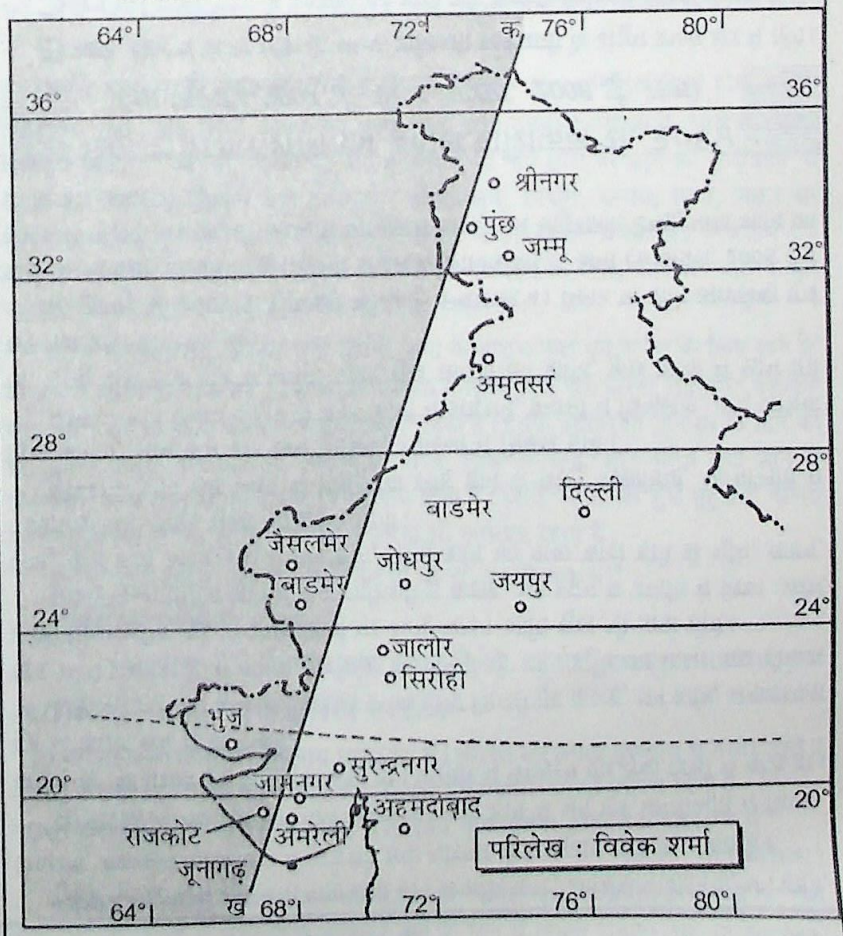

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शनि साढ़ेसाती, ढैय्या एवं सुवर्णादि पाया विचार—संवत् २०६४ (सन् 2007-08 ई.)

गतवर्ष लगभग दो मास की अल्पावधि (1 नवम्बर, 2006 ई. से 9 जन. 2007 ई. तक) के लिए **शनि** शतभिषा नक्षत्र एवं कुम्भ के चन्द्रमा कालीन **सिंह राशि में प्रविष्ट** हो चुका होगा। विभिन्न राशियों पर इसका प्रभाव हम गतवर्षीय पंचांग (२०६३) में लिख चुके हैं।

10 जनवरी बुधवार को वक्री अवस्था में, हस्त नक्षत्र एवं कन्या के चन्द्रमा कालीन शनि देव सायं 6 बजकर 07 मिनट पर **पुनः कर्क राशि** में प्रवेश करेंगे तथा **15 जुलाई, 2007 ई. तक इसी राशि में संचार करेंगे।** कर्क राशि में संचार का फल भी यद्यपि संवत् २०६३ की **पंचांग** दिवाकर में दिया जा चुका है, परन्तु विक्रमी संवत् २०६४ में शनि द्वारा राशियों के **सुवर्णादि पाया परिवर्तन में अन्तर** आ जाने से **राशिगत फलादेश** में भी कुछ भिन्नता आ जाएगी। इसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार से होगा—

▲कर्क राशिगत शनि का द्वादश राशियों का फल-2007 ई.▲

कर्क, मिथुन व सिंह राशि के जातकों को शनि की साढ़ेसति तथा **मेष व धनु** राशि वाले जातकों को शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव रहेगा।

मेष—इस राशि को शनि की ढैय्या एवं पाया लौह होने से धन हानि, बनते कार्यों में विघ्न, घरेलू कलह-क्लेश रहने का भय, वृथा खर्च, स्वास्थ्य भी ठीक न रहे। फर.-मार्च में मंगल स्वोच्च होने से शुभ फल भी घटित होंगे।

वृष—शनि तृतीयस्थ होगा तथा शनि का पाया भी रजत होने से कार्य व्यवसाय में धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। सवारी, भूमि आदि सुख मिले। धर्म की ओर रुचि बढ़ेगी।

मिथुन—शनि की साढ़ेसती का प्रभाव उतरती अवस्था में रहेगा। इस पर शनि का पाया भी लौह है, कार्य-व्यवसाय में हानि, परिवार में कलह, शरीर कष्ट तथा वृथा खर्च बढ़ेंगे।

कर्क—राशि पर शनि साढ़ेसती होने से तनाव, घरेलू व कारोबारी उलझनें व खर्चों की अधिकता रहे। परन्तु **शनि का पाया ताम्बा** व गुरु की दृष्टि के फलस्वरूप गृह में मंगल कार्य व धन लाभ के अवसर मिलेंगे।

सिंह—राशि पर **चढ़ती साढ़ेसाती** होने से शत्रु भय, बन्धुजन से विरोध, शरीर कष्ट एवं वृथा खर्च होंगे। परन्तु शनि का **पाया चांदी (रजत)** होने से आकस्मिक धन लाभ, भूमि, वाहन, विवाह, पदोन्नति आदि तथा विद्या में सफलता भी होगी।

कन्या—शनि एकादश में होने से आकस्मिक धन लाभ, सवारी, पदोन्नति, विवाह आदि सुखों की प्राप्ति होगी। **शनि का पाया सुवर्ण** होने से घरेलू एवं व्यवसायिक उलझनें तथा खर्चों की अधिकता भी रहे।

तुला—दशमस्थ शनि तथा पाया लौह होने से शरीर कष्ट, आर्थिक परेशानियां, धन हानि, अपव्यय, व्यवसाय या सर्विस में अड़चनें तथा परिवार में मनमुटाव होने के संकेत हैं।

बृश्चिक—नवमस्थ शनि एवं सुवर्ण का पाया होने से धन एवं भाग्योन्नति में विघ्न-बाधाएँ रहे, मानसिक एवं शारीरिक कष्ट हो। परिवार में वैमनस्य एवं वृथा खर्चों में वृद्धि हो। गुरु के कारण धर्म में रूचि बढ़े।

धनु—अष्टमस्थ शनि से ढैय्या का प्रभाव होगा जिससे गृह कलह, धन हानि, अनावश्यक खर्च बढ़ेंगे। अड़चनों के कारण मानसिक परेशानियां भी बढ़ें। **शनि का पाया ताम्र** होने से उच्च-विद्या प्राप्ति, गृह में मंगल कार्य पर व्यय, वाहन आदि सुख भी प्राप्त होंगे।

मकर—सप्तमस्थ शनि होने से पारिवारिक कलह, धन लाभ व उन्नति में विघ्न, शरीर कष्ट, वृथा व्यय आदि अशुभ फल होंगे, परन्तु शनि का पाया चांदी होने से भूमि, वाहन, उच्चविद्या, स्त्री आदि सुखों की प्राप्ति होगी।

कुम्भ—शनि छटे स्थान में तथा पाया लौह होने से घरेलू परेशानियां, भाग्योन्नति में विघ्न/बाधाएँ, लाभ कम तथा खर्च अधिक, स्वास्थ्य में विकार होंगे।

मीन—शनि पंचमस्थ होने से बनते कार्यों में अड़चनें, प्रयासों में विफलता, खर्च अधिक रहे, परन्तु पाया ताम्र होने से सवारी आदि सुख साधनों की प्राप्ति, कुछ कार्यों में लाभ एवं सफलता प्राप्त होगी।

16 जुलाई सं. 2007 ई. **सोमवार** की प्रातः 4 बजकर 41 मिनट पर शनि **आश्लेषा एवं कर्क के चन्द्रमा** कालीन **सिंह राशि में संचार करेगा।** संवत् के अन्त (6 अप्रैल, 2008 ई.) तक इसी राशि में संचरण करेगा। शनि का द्वादश राशियों पर साढ़ेसाती, ढैय्या, पाया आदि का प्रभाव इस प्रकार से रहेगा।

सिंह राशिगत शनि का द्वादश राशिफल सं. २०६४

(16 जुलाई 2007 ई. से 6 अप्रैल, 2008 ई. तक)

- कर्क, सिंह व कन्या राशि के जातक शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभाव क्षेत्र में रहेंगे।
- वृष एवं मकर राशि के जातकों को शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव रहेगा।

सिंह राशिकालिक शनि का द्वादश राशियों पर प्रभाव का विवरण यद्यपि गतवर्षीय (२०६३) **पंचाँगदिवाकर** में लिख चुके हैं, परन्तु प्रस्तुत वर्ष में शनि के सुवर्णादि पाया में अन्तर आ जाने के कारण शनि की साढ़ेसाती आदि के फल में भी अन्तर आ जाएगा।

मेष—राशि को शनि पंचम में होगा और पाया लौह होगा, जिससे उच्च विद्या में विघ्न, गुप्त चिन्ता, तनाव, स्वास्थ्य हानि, अनावश्यक खर्च एवं पारिवारिक उलझनों का सामना रहेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

खर्चों की अधिकता भी रहे।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

मेष—राशि को शनि पंचम में होगी और पाया लौह होगा, जिससे उच्च विद्या में विघ्न, गुप्त चिन्ता, तनाव, स्वास्थ्य हानि, अनावश्यक खर्च एवं पारिवारिक उलझनों का सामना रहेगा।

वृष—चतुर्थ शनि होने से ढैय्या प्रारम्भ होगी जिससे अवांछित परिवर्तन, अपव्यय, भूमि, मकान एवं वाहनादि के सम्बन्ध में तथा घरेलू उलझनें रहें, शनि का पाया ताम्र होने से आकस्मिक धन लाभ व बिगड़े कामों में सुधार हो।

मिथुन—शनि तृतीयस्थ होगा। धन लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। विद्या या कम्पीटिशन में सफलता हो। शनि इस राशि में चांदी का पाया बदलेगा जिससे भूमि, वाहन, विवाह आदि सुखों की प्राप्ति होगी।

कर्क—शनि द्वितीयस्थ राशि परिवर्तित करेगा। शनि साढ़ेसाती रहेगी, पाया भी सुवर्ण है, जिससे व्यवसाय में कठिन व संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहे। आय कम व खर्च अधिक होंगे। गुरु के कारण धर्म कार्यों में रूचि रहेगी।

सिंह—केन्द्रस्थ शनि होने से घरेलू एवं व्यवसाय सम्बन्धी परेशानियां बढ़ेंगी। धन सम्बन्धी उलझनें भी बढ़ेंगी। पाया सुवर्ण होने से निकटस्थ बन्धुओं से मतान्तर पैदा होंगे, तनाव भी अधिक रहे।

कन्या—द्वादशस्थ शनि होने से साढ़ेसाती का अनिष्ट प्रभाव होगा। आय कम तथा खर्च अधिक होंगे। पाया भी सुवर्ण होने से अपने लोग भी परायों जैसा व्यवहार रखेंगे। बनते कामों में विघ्न होंगे। खर्चों की भी अधिकता रहे।

तुला—एकादश शनि होने से पदोन्नति, धन लाभ, सवारी आदि सुखों की प्राप्ति होगी। शनि का पाया भी ताम्र होने से अकस्मात् धन लाभ एवं उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। गृह में कोई मंगल कार्य के योग भी हैं।

वृश्चिक—को शनि दशम स्थान में होने से कार्य व्यवसाय में अड़चनें व घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। परन्तु शनि का पाया रजत होने से संघर्ष के बावजूद निर्वाह सुख के साधन बनते रहेंगे।

धनु—राशि को शनि नवम स्थान में होने से धन लाभ एवं पदोन्नति में विघ्न रहें। स्वास्थ्य में विकार, निकट बन्धु से विरोध पैदा हो। शनि का पाया भी लौह होने से पारिवारिक एवं आर्थिक परेशानियां, अपव्यय आदि अशुभ फल होंगे।

मकर—राशि को अष्टमस्थ शनि होने से शनि की ढैय्या का अशुभ फल होगा। शरीर कष्ट, रोग भय, पारिवारिक उलझनें तथा खर्च अधिक रहेंगे, परन्तु ताम्र का पाया होने से उच्च विद्या में सफलता व आकस्मिक धन लाभ होंगे।

कुम्भ—राशि को सप्तम शनि होने से परिवार में कलह-क्लेश, शरीर कष्ट, धन हानि एवं अपव्यय तथा व्यवसाय में रुकावटें पैदा होंगी। पाया भी लौह होने से शत्रुभय, आय कम व खर्च अधिक होंगे।

मीन—राशि को शनि षष्ट स्थान में होने से संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। पाया भी रजत होने से वाहन, भूमि आदि सुखों की प्राप्ति तथा उच्च विद्या में सफलता रहे।

शनि की साढ़ेसाती के प्रभावस्वरूप जातक को पारिवारिक कलह एवं व्यवसाय सम्बन्धी उलझनें, आकस्मिक खर्चों की अधिकता, निकट बन्धुओं से विरोध, वृथा-दौड़धूप, बनते कामों में विघ्न/बाधाएँ, रोग, दुर्घटना से हानि, शत्रुभय, धन-हानि, सुख में कमी, आदि अशुभ फल घटित होते हैं।

शनि की ढैय्या के प्रभावस्वरूप जातक को घरेलू उलझनें, कलह-क्लेश, अशान्ति, धन-हानि, अनावश्यक खर्च, गुप्त चिन्ताएँ, रोग व शत्रुभय तथा शारीरिक एवं मानसिक कष्टों का भय होता है।

शनि साढ़ेसाती अथवा शनि ढैय्या का फल सदा अनिष्टकारी ही होगा—ऐसा आवश्यक नहीं। यदि किसी जातक की कुण्डली में शनि उच्चस्थ, मित्रक्षेत्री, स्वक्षेत्री अथवा वर्गोत्तम स्थिति में पड़ा हो, तो जातक की जन्म राशि या नाम राशि पर शनि की साढ़ेसाती या ढैय्या का प्रभाव अपेक्षाकृत कम अरिष्टकर होगा। **वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर या कुम्भ लग्न** की कुण्डली में शनि यदि शुभ स्थिति में हो, तो शनि की दशा व्यवसाय एवं कैरियर की दृष्टि से विशेष शुभ रहती है। अधिक विवरण के लिए **फलित ज्योतिष की ज्योतिष तत्त्व** (द्वितीय खण्ड) का अध्ययन कर सकते हैं।

शनि साढ़ेसाती, ढैय्या एवं शनि पाया के अशुभ फल की शान्ति के लिए शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र का 23 हज़ार की संख्या में विधिपूर्वक जप करना, तदुपरान्त दशमांश संख्या में हवन करना या करवाना कल्याणकारी रहता है। इसके अतिरिक्त शनिवार के दिन का व्रत रखना, उड़द, सप्तधान्यादि दान, कृष्ण वस्त्र, शिव उपासना, शनि स्तोत्र तथा शनि से सम्बन्धित अन्य वस्तुओं का दान करने से लाभ होता है। इसके अतिरिक्त शुभ मुहूर्त्त में नीलम एवं विधिपूर्वक निर्मित **शनि यन्त्र** धारण करना भी लाभप्रद रहता है।

शनि का बीज मन्त्र—"ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः॥"

शनि का वैदिक मन्त्र—

"ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये, शं योरभिस्रवन्तु नः॥ शं नमः॥"

सर्वारिष्ट शान्त्यर्थ शनि स्तोत्र—

"ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाय नमोऽस्तु ते। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तुते॥
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते शौरये विभो॥
नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च॥"

(धर्मसिन्धु)

प्रतिदिन प्रातःकाल भगवान शिव की पूजोपरान्त पीपल वृक्ष के समीप इस स्तोत्र का पाठ करके कच्ची लस्सी में काले तिल डालकर वृक्ष के मूल में लस्सी चढ़ाना तथा सायंकाल को तैल का दीपक जलाकर प्रार्थना करने से शनि-जनित अरिष्टों की शान्ति होती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गुरु का शुभाशुभ गोचरफल–संवत् २०६४ (2007-08)

वर्ष के आरम्भ में गुरु **बृश्चिक राशि में संचार** कर रहा है। ता. 6 अप्रैल से वक्री होकर 7 अगस्त (2007 ई.) को इसी राशि में मार्गी हो जाएगा। ता. 22 नवम्बर, गुरुवार की प्रात: 5 बजकर 3 मिनट से गुरु अपनी **स्वराशि धनु में प्रवेश** करेंगे। संवत् २०६४ के अन्त तक **धनु राशि** में ही संचरणशील रहेंगे।

ध्यान रहे, गुरु का **बृश्चिक राशि** में संचार के समय, उसकी पंचम, सप्तम एवं नवम विशेष दृष्टियां क्रमश: मीन, वृष एवं कर्क राशियों पर रहेंगी।

वृश्चिक राशिकालीन गुरु का गोचर फल

(वर्षारम्भ से 21 नवम्बर, 2007 ई. तक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आय कम खर्च अधिक ऋण-रोग एवं घरेलू उलझनें बढ़ेंगी।	विघ्नों के बाद कार्य सिद्धि धन-लाभ भाग्य-उन्नति	आय कम खर्च अधिक रहें। रोग व शत्रु भय बन्धु विरोध	भूमि-वाहनादि सुख हों धन लाभ धर्म-कर्म में रुचि गृह में शुभ कार्य हो।	कार्यों में विघ्न-बाधाएं व खर्च अधिक स्वास्थ्य हानि व तनाव	धन-लाभ प्रिय-बन्धु का सुख, पदोन्नति, दीर्घ यात्रा हो।	अचानक धन लाभ के चांस हों भाग्य वृद्धि प्रिय व श्रेष्ठ जन से सम्पर्क	संघर्ष से निर्वाह योग्य धन-लाभ, खर्चों की अधिकता परिवार-वैमनस्य	अल्प धन-लाभ, धर्म-कर्म में रूझान शुभ कार्यों पर खर्च हो।	धन-. सम्पदा का लाभ, भाग्य उन्नति प्रिय-मिलन व्यय अधिक	आय कम व खर्च अधिक परिवार में कलह, तनाव व चिन्ता हो।	योजनाओं में सफलता भूमि, वाहनादि सुख मिलें प्रिय-बन्धु सुख

धनु राशिकालीन गुरु का गोचर फल

(22 नवम्बर, 2007 से संम्वत् के अन्त तक)

धनु राशिस्थ संचार काल में गुरु की मेष, मिथुन एवं सिंह राशि पर क्रमश: विशेष दृष्टियां (५, ७ एवं ९) रहेंगी।

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
बिगड़े कामों में सफलता भूमि, वाहनादि सुख मिले प्रिय-बन्धु मिलन	आय कम व खर्च अधिक ऋण-रोग भय घरेलू उलझनें बढ़ेंगी	धन लाभ व भाग्य में उन्नति विघ्नों के बाद कार्य-सिद्धि हो भाग्य-उन्नति	आय कम, खर्च अधिक रहेगा रोग व शत्रुभय निजबन्धु विरोध	भूमि-वाहनादि सुख हों धन-लाभ, धर्म में रुचि, गृह में शुभ कार्य हो	बनते कामों में बाधाएँ, खर्च अधिक, शरीर-कष्ट गृह कलह-क्लेश हो।	प्रिय-बन्धु से मेल, धन लाभ, अच्छा पदोन्नति दीर्घ-यात्रा के योग	अचानक धन लाभ के अवसर हो, भाग्य में वृद्धि किसी श्रेष्ठजन से सम्पर्क हो।	संघष के बावजूद निर्वाह योग्य धन लाभ पर, खर्चों में अधिकता परिवार में कलह रहे।	अल्प-धन लाभ धर्म-कार्यों में प्रवृत्ति, शुभ कार्यों पर खर्च हो	धन-सम्पदा का लाभ, भाग्य में उन्नति प्रिय मिलन व्यय अधिक	आय कम व खर्च अधिक हो, परिवार में कलह-तनाव एवं उलझनें रहें।

गुरु के अशुभ फल की शान्ति–अथवा गुरु की शुभता बढ़ाने के लिए वृद्ध ब्राह्मण को भोजन कराना, गुरुवासरी अभावस्या तथा गुरुवार का व्रत रखना, पुखराज धारण करना, पीले वस्त्र, चने की दाल, कांस्य पात्र, सुवर्ण, शक्कर, केले, लड्डुओं, धार्मिक ग्रन्थ आदि का दान यथाशक्ति करने तथा गुरु के बीज मन्त्र अथवा गुरु गायत्री मन्त्र का जाप 19,000 की संख्या में विधिपूर्वक करना शुभ एवं फलदायक रहेगा। गुरु धनु और मीन राशि का स्वामी है। पति सौख्य की प्राप्ति के लिए स्त्रियों को गुरु के बीज मन्त्र, व्रत, पुखराज धारण तथा यथाशक्ति दान करना लाभदायक रहता है। प्रत्येक गुरुवार केसर का तिलक भी लगाना चाहिए।

गुरु गायत्री मन्त्र—

''ॐ अंगिरो जाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरु: प्रचोदयात्''

गुरु बीज मन्त्र—''ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं स: गुरवे नम:॥''

राहु-केतु का शुभाशुभ गोचरफल–संवत् २०६४

वर्ष के आरम्भ से लेकर वर्ष के अन्त (संवत् २०६४ के अन्त) तक राहु वक्र गति से **कुम्भ राशि** में तथा **केतु सिंह राशि** में संचार करेंगे। दोनों ग्रहों का शुभाशुभ फल यद्यपि हम गतवर्षीय पंचाँग में प्रकाशित कर चुके हैं, तथापि पाठकों की सुविधा के लिए फल पुन: लिख रहे हैं।

ध्यान रहे, किसी विशेष राशि पर गुरु, राहु, शनि आदि ग्रहों का गोचरफल पर अन्तिम निर्णय करते समय, उस राशि पर अन्य किसी ग्रह के योग एवं शुभाशुभ दृष्टि का भी विचार कर लेना चाहिए।

कुम्भ राशि के राहु का गोचर फल संवत् २०६४

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
कुछ बिगड़े कामों में सुधार, भूमि-वाहन आदि सुख हो।	खुश-खबरी मिले, शुभ कार्य हो, धन लाभ व खर्च बढ़े।	संघर्ष अधिक, निर्वाह योग्य धन में विघ्न हो, निजबन्धु से विरोध	लाभ कम खर्च अधिक हो, शरीर कष्ट व मित्रों से विरोध हो, अपने भी पराये हों।	बनते कामों में बाधाएं, धन-लाभ कम, खर्च अधिक रहे।	अचानक धन-लाभ, प्रिय-बन्धु से मेल, कार्यों में सफलता मिले	निज-बन्धु से कलह-क्लेश, रोग व शत्रु भय, खर्च व चिन्ता बढ़े।	किसी बन्धु से क्लेश, लाभ कम व खर्चों में वृद्धि हो।	पराक्रम व उत्साह में वृद्धि, शुभ यात्रा, धन व पदोन्नति के चांस बनेंगे	घरेलू कलह-क्लेश हो, वृथा खर्च भी बढ़े, शरीर कष्ट व तनाव बढ़े	निज-बन्धु से बिगाड़ हो, रोग व शत्रु भय हो, खर्चों में वृद्धि हो, दीर्घ यात्रा हो।	बनते कामों में विघ्न, वृथा दौड़-धूप व खर्च अधिक रहे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सिंह राशि के केतु का गोचर फल सं. २०६४

(वर्षारम्भ से सम्वत् के अन्त तक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घरेलू कलह-क्लेश मन अशान्त, लाभ कम खर्च अधिक	आर्थिक संकट के कारण घरेलू झंझट व अशान्ति रहे।	बिगड़े कामों में सुधार परिश्रम से धन लाभ अच्छा वाहन सुख मिले	वृथा दौड़-धूप अधिक हो, लाभ कम व खर्च अधिक रहे।	शरीर कष्ट व तनाव रहे, बनते कामों में विघ्न, खर्च ज्यादा हो।	रोग व शत्रु भय अपने भी परायों जैसा व्यवहार रखें।	धन लाभ साधारण वाहन, भूमि आदि साधनों की प्राप्ति संघर्ष अधिक रहे।	लाभ अल्प व खर्च अधिक रहे। गृह में कोई मंगल कार्य हो।	भाग्य उन्नति में विघ्न, वृथा खर्च बढ़े, दुर्घटना से चोट आदि का भय	धन-हानि, रोग व शत्रु भय विद्या, परिवार सम्बन्धी चिन्ता	कुटुम्ब में किसी प्रियजन से वैमनस्य, खर्च अधिक, किसी से धोखा मिले	पराक्रम से धन लाभ हो बिगड़े कामों में सुधार, खुशखबरी मिले

अनिष्ट राहु की शान्ति हेतु तिल, तेल, भूरे रंग का वस्त्र, कम्बल, नारियल, सप्तधान्य, सतनाजा, कृष्ण पुष्प आदि का दक्षिणा सहित दान करना कल्याणकारी रहता है। जन्मपत्री अनुशीलन के बाद गोमेध भी धारण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त राहु के बीज मन्त्र **'ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः'** का 18 हज़ार की संख्या में जाप करें। गजेन्द्र मोक्ष स्तोत्र का पाठ भी शुभ है। राहु का गायत्री मन्त्र—

ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्

केतु के अरिष्ट की शान्ति हेतु लोहा, सप्तधान्य, लाल-काला वस्त्र, नारियल, कम्बल, कस्तूरी, बेल, कुष्ठाश्रम आदि में भोजन, क्षीर का दान तथा जन्मपत्री विश्लेषण के पश्चात् लहसनिया नग धारण करना कल्याणकारी रहता है। केतु के बीज मन्त्र 'ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः' की 17 हज़ार की संख्या में जाप करना तथा श्री गणेश स्तोत्र एवं अपराजिता स्तोत्र का पाठ करना शुभ है। केतु की शान्ति के लिए गायत्री मन्त्र—

ॐ पद्म पुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नोकेतु प्रचोदयात्

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के सम्बन्ध में और अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी आश्य पुस्तक **अनिष्ट ग्रह शान्ति और उपयोगी उपाय** मँगवाकर पढ़ें। —सम्पादक

शिवरात्रि पूजन कैसे करें ?

श्रीमहाशिवरात्रि का व्रत सब व्रतों में उत्तम एवं कल्याणकारी है। जैसे गंगाजी के समान कोई तीर्थ नहीं है। भगवान् शंकर के समान कोई दूसरा देवता नहीं है तथा शिवरात्रि से बढ़कर दूसरा कोई व्रत एवं तप नहीं है। व्याख्याकार पं. पन्ना लाल द्वारा प्रणीत इस महाशिवरात्रि व्रत कथा में **माहात्म्य, आध्यात्मिक रहस्य एवं सम्पूर्ण पूजन विधि,** उद्यापन, व्रत कथा, रुद्राष्टक, शिव पंचाक्षर, शिव चालीसा, शिव षडक्षर स्तोत्र, शिवमानस पूजा, आरती सहित बहुत सरल एवं सुबोधगम्य ढंग से प्रस्तुत की गई है जिससे शिव भगत स्वयं शिवरात्रि पूजन कर पुण्य लाभ ले सकें। पुस्तक खरीदते समय व्याख्याकार **पं. पन्ना लाल ज्योतिषी** का नाम तथा **जनरल बुक डिपो का पता** अवश्य देख लें अथवा सीधे वी.पी.पी. द्वारा मंगवाएं। **मूल्य 25/-** (डाक व्यय अलग)।

आज का दिन कैसा गुजरेगा ?

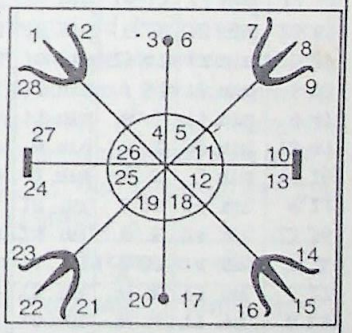

जिस दिन को मालूम करना हो कि **आज का दिन आपका कैसा गुजरेगा ?** तो उस दिन आप पंचांग में देखें कि चन्द्रमा किस नक्षत्र पर है। आप उस नक्षत्र को नं. १ पर से गिन कर ऊपर लिखे चक्र के क्रमानुसार 28 नक्षत्र लगा लें। फिर देखें कि आपके नाम का नक्षत्र किस स्थान पर आता है। वैसा फल जानें। यदि आपके नाम का नक्षत्र वृत्त (गोलाकार) के अन्दर पड़ेगा तो उस दिन शुभ समाचार, प्रिय बन्धु से मिलाप व धन लाभ होगा। यदि गोल वृत्त के बाहर पड़े तो दिन का आधा भाग खुशी में, आधा भाग फिकर और चिन्ता में व्यतीत होगा। यदि त्रिशूल के ऊपर पड़े तो पूरा दिन परेशानी, झगड़े, धन हानि व चिन्ता में व्यतीत होगा। **उदाहरणार्थ आज यदि मघा नक्षत्र हो तो, उसे नं. १ लें।** इसी क्रम में पूफा आदि 28 नक्षत्र क्रम से लिख लें। नक्षत्रों की तालिका इसी पंचाँग के अन्तिम पृष्ठों में देखें।

——खोई हुई वस्तु मिलेगी या नहीं ?——

विनष्टार्थस्य लाभोऽन्धे शीघ्रं मन्दे प्रयत्नतः। स्यात् दूरेश्रवणं मध्ये श्रुत्याप्ती न सुलोचने॥

१. अन्धाक्ष नक्षत्रों में गुम हुई अथवा चोरी हुई वस्तु पूर्व दिशा की ओर जाती है और उसकी पुनः प्राप्ति की शीघ्र सम्भावना रहती है।

२. सुलोचन नक्षत्रों में गुम हुई वस्तु उत्तर दिशा में जाती है परन्तु उसका न तो पता चलता है और न ही प्राप्त होती है।

३. मध्याक्ष नक्षत्र में खोई वस्तु पश्चिम दिशा की ओर अति दूर चली जाती है। पता चलने पर भी प्राप्त (हस्तंगत) नहीं होती।

४. मन्दाक्ष नक्षत्र में गुम अथवा चोरी हुई वस्तु दक्षिण की ओर चली जाती है तथा अत्यधिक प्रयत्न करने पर अन्ततोगत्वा वह प्राप्त हो जाती है। अन्धाक्षादि नक्षत्र निम्नलिखित हैं—

नक्षत्र संज्ञा	नाम नक्षत्र							मिलेगी या नहीं
(१) अन्धाक्ष	रोह.	पुष्य.	उफा.	विशा.	पूषा.	धनि.	रेव.	शीघ्र मिलेगी।
(२) सुलोचन	कृति.	पुन.	पूफा.	स्वा.	मूला.	श्रव.	उभा.	नहीं मिलेगी।
(३) मध्याक्ष	भर.	आर्द्रा.	मघा.	चित्रा.	ज्ये.	अभि.	पूभा.	पता लगाने पर भी नहीं मिलेगी।
(४) मन्दाक्ष	अश्वि.	मृग.	आश्ले.	हस्त.	अनु.	उषा.	शत.	बहुत यत्न करने पर मिलेगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, गुरु पुष्यादि योगः—वि. संवत् २०६४ (सन् 2007-08)

किसी विशेष कार्य हेतु आवश्यक परिस्थितिवश अथवा शीघ्रता में कोई सुनियोजित एवं निर्धारित मुहूर्त न मिलता हो, तो आगे लिखे गए सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, रवि योग, गुरु पुष्य आदि योगों में अभीष्ट कार्यों का शुभारम्भ करके मनोवांछित कार्यों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

सर्वार्थ सिद्धि योगों में—अनुबन्ध करना, परीक्षा, नौकरी अथवा चुनाव आदि के लिए आवेदन करना, क्रय-विक्रय करना, यात्रा या मुकद्दमा करना, भूमि, सवारी, वस्त्र-आभूषणादि का क्रय करना इत्यादि कृत्य किए जा सकते हैं। **अमृत सिद्धि योगों में** स. सि. योगों वाले कृत्यों के अतिरिक्त विवाह करना, विदेश यात्रा शुरू करना, किसी कार्य सिद्धि हेतु सकाम अनुष्ठान करना आदि। रवि योग स. सि. योगों की भान्ति शुभ कार्यों के लिए प्रशस्त माने जाते हैं। **रवि योग की** उपलब्धता में यदि कोई योग भी हो, तो **'रवि योग'** अन्य कुयोगों का नाश करके शुभ फल प्रदान करता है।

रविपुष्य योगों—में जड़ी-बूटी तोड़ना तथा तोड़कर औषध तैयार करना, किसी विशेष रोग में रोगी को औषधि देना शुभ होता है। यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रादि प्रयोगों में यह योग शुभ होते हैं। इसमें शत्रुनाशक प्रयोग भी किए जाते हैं।

गुरु पुष्य योग—गुरु अथवा पिता, दादा या श्रेष्ठ व्यक्ति से मन्त्र, तन्त्र या किसी विशिष्ट विषय के सम्बन्ध में उच्च विद्या ग्रहण करना, धन, भूमि-विद्या एवं आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना, कोई धार्मिक अनुष्ठान प्रारम्भ करना, गुरू धारण करना, विदेश-गमन करना शुभ होता है।

उपरोक्त सभी योगों में से कोई योग विशेष ग्रहण करने से पूर्व तिथि एवं चन्द्रमा का बल भी ध्यान में रख लेवें, तो अत्यन्त लाभदायक होगा। (अर्थात् कृष्ण पक्ष की त्रोदशी से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा पर्यन्त चन्द्र निर्बल माना जाता है।) इनके अतिरिक्त गुरु-शुक्र ग्रहों के अस्त काल में, ग्रहण काल, श्राद्ध पक्ष, अधिक मास, त्रोदश दिनात्मक पक्ष आदि का भी ध्यान कर लेना प्रशस्त होगा। विवाह, मुण्डन, गृहनिर्माण, गृहप्रवेश, कार्य निर्धारित मुहूर्त्तों में ही करने कल्याणकारी होंगे। पण्डित पन्ना लाल पंचाँगकर्त्ता।

सर्वार्थ सिद्धि योग				सर्वार्थ सिद्धि योग				सर्वार्थ सिद्धि योग				सर्वार्थ सिद्धि योग				सर्वार्थ सिद्धि योग			
प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2007 ई.	घं. मिं.	2007 ई.	घं. मिं.	2007 ई.	घं. मिं.	2007 ई.	घं. मिं.	2007 ई.	घं. मिं.	2007 ई.	घं. मिं.	2007 ई.	घं. मिं.	2007 ई.	घं. मिं.	2008 ई.	घं. मिं.	2008 ई.	घं. मिं.
1 मार्च	सू. उ.	1 मार्च	13. 18	27 मई	सू. उ.	27 मई	20 55	5 अग.	सू. उ.	5 अग.	17 04	10 अक्तू.	7 22	11 अक्तू.	सू. उ.	4 जन.	14 18	5 जन.	सू. उ.
4 मार्च	20 03	5 मार्च	सू. उ.	30 मई	5 17	31 मई	पू. दिन	7 अग.	सू. उ.	7 अग.	14 17	13 अक्तू.	सू. उ.	13 अक्तू.	16 00	6 जन.	19 25	7 जन.	सू. उ.
16 मार्च	सू. उ.	16 मार्च	13 56	1 जून	सू. उ.	1 जून	7 24	8 अग.	सू. उ.	9 अग.	सू. उ.	15 अक्तू.	सू. उ.	15 अक्तू.	21 55	13 जन.	25 09	14 जन.	सू. उ.
20 मार्च	25 08	21 मार्च	सू. उ.	3 जून	सू. उ.	3 जून	10 29	10 अग.	11 35	11 अग.	सू. उ.	20 अक्तू.	सू. उ.	21 अक्तू.	6 06	15 जन.	23 26	16 जन.	सू. उ.
24 मार्च	सू. उ.	24 मार्च	17 00	10 जून	सू. उ.	10 जून	8 52	12 अग.	सू. उ.	12 अग.	11 31	23 अक्तू.	26 30	24 अक्तू.	सू. उ.	19 जन.	सू. उ.	19 जन.	16 36
1 अप्रै.	सू. उ.	2 अप्रै.	5 15	13 जून	सू. उ.	13 जून	24 21	18 अग.	23 0	19 अग.	सू. उ.	25 अक्तू.	सू. उ.	26 अक्तू.	18 03	27 जन.	सू. उ.	28 जन.	सू. उ.
6 अप्रै.	17 03	7 अप्रै.	सू. उ.	17 जून	18 08	18 जून	सू. उ.	21 अग.	4 50	21 अग.	सू. उ.	29 अक्तू.	सू. उ.	30 अक्तू.	सू. उ.	31 जन.	22 12	1 फर.	25 02
8 अप्रै.	21 29	9 अप्रै.	सू. उ.	18 जून	सू. उ.	18 जून	18 04	22 अग.	सू. उ.	22 अग.	7 20	1 नवं.	सू. उ.	2 नवं.	5 42	3 फर.	सू. उ.	4 फर.	5 35
15 अप्रै.	17 56	16 अप्रै.	सू. उ.	19 जून	सू. उ.	19 जून	18 48	26 अग.	सू. उ.	26 अग.	11 08	7 नवं.	सू. उ.	7 नवं.	16 07	10 फर.	सू. उ.	11 फर.	6 05
17 अप्रै.	12 11	18 अप्रै.	सू. उ.	27 जून	12 34	28 जून	14 37	27 अग.	सू. उ.	27 अग.	10 24	16 नवं.	12 33	17 नवं.	13 33	12 फर.	सू. उ.	13 फर.	3 27
23 अप्रै.	24 07	24 अप्रै.	सू. उ.	1 जुला	17 51	2 जुला	सू. उ.	31 अग.	3 19	31 अग.	25 10	20 नवं.	12 22	21 नवं.	सू. उ.	14 फर.	2 00	14 फर.	सू. उ.
24 अप्रै.	25 11	25 अप्रै.	सू. उ.	2 जुला	18 03	3 जुला	सू. उ.	3 सितं.	19 43	4 सितं.	सू. उ.	22 नवं.	सू. उ.	23 नवं.	5 23	24 फर.	सू. उ.	24 फर.	22 36
29 अप्रै.	सू. उ.	29 अप्रै.	11 18	8 जुला	13 13	9 जुला	सू. उ.	5 सितं.	सू. उ.	5 सितं.	17 45	24 नवं.	23 13	25 नवं.	सू. उ.	28 फर.	6 26	29 फर.	9 21
3 मई	22 56	4 मई	सू. उ.	10 जुला	10 00	11 जुला	8 18	6 सितं.	17 25	7 सितं.	सू. अ.	26 नवं.	सू. उ.	26 नवं.	17 39	2 मार्च	सू. उ.	2 मार्च	14 26
4 मई	सू. उ.	5 मई	1 15	11 जुला	8 18	12 जुला	सू. उ.	7 सितं.	सू. उ.	7 सितं.	17 33	29 नवं.	सू. उ.	29 नवं.	13 40	9 मार्च	सू. उ.	9 मार्च	13 41
6 मई	सू. उ.	7 मई	4 48	14 जुला	4 07	14 जुला	सू. उ.	12 सितं.	24 53	13 सितं.	सू. उ.	2 दिसं.	16 59	3 दिसं.	सू. उ.	11 मार्च	सू. उ.	11 मार्च	9 47
13 मई	सू. उ.	14 मई	1 12	15 जुला	सू. उ.	16 जुला	3 19	17 सितं.	12 24	18 सितं.	सू. उ.	8 दिसं.	7 16	8 दिसं.	सू. उ.	12 मार्च	7 51	13 मार्च	6 03
15 मई	सू. उ.	15 मई	19 55	25 जुला	सू. उ.	25 जुला	22 50	22 सितं.	20 59	23 सितं.	सू. उ.	14 दिसं.	सू. उ.	14 दिसं.	19 14	16 मार्च	25 47	17 मार्च	25 37
16 मई	17 06	17 मई	सू. उ.	29 जुला	सू. उ.	29 जुला	25 47	27 सितं.	12 56	29 सितं.	सू. उ.	18 दिसं.	सू. उ.	18 दिसं.	18 41	18 मार्च	सू. उ.	18 मार्च	25 51
21 मई	8 34	22 मई	सू. उ.	30 जुला	सू. उ.	30 जुला	25 12	1 अक्तू.	सू. उ.	2 अक्तू.	सू. उ.	20 दिसं.	सू. उ.	20 दिसं.	15 07	26 मार्च	14 15	27 मार्च	17 12
22 मई	8 59	23 मई	सू. उ.	3 अग.	20 9	4 अग.	सू. उ.	4 अक्तू.	सू. उ.	5 अक्तू.	सू. उ.	22 दिसं.	10 05	23 दिसं.	7 24	30 मार्च	25 01	31 मार्च	सू. उ.
												30 दिसं.	सू. उ.	30 दिसं.	26 55	6 अप्रै.	21 08	7 अप्रै.	सू. उ.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

21 मई	8 34	22 मई	सू. उ.	30 जुला	सू. उ.	30 जुला	25 12	1 अक्तू.	सू. उ.	2 अक्तू.	सू. उ.	22 दिसं.	10 05	23 दिसं.	7 24	25 दिसं.	10 05	26 दिसं.	7 24	26 दिसं.	10 05	27 दिसं.	7 24
22 मई	8 59	23 मई	सू. उ.	3 अग.	20 9	4 अग.	सू. उ.	4 अक्तू.	सू. उ.	3 अक्तू.	सू. उ.	30 दिसं.	10 49	31 दिसं.	8 13	26 दिसं.	26 55	6 अप्रै.	21 08	7 अप्रै.	सू. उ.		

अमृत सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2007-08	घं. मिं.	2007-08	घं. मिं.
1 मार्च	सू. उ.	1 मार्च	13 18
20 मार्च	25 08	21 मार्च	सू. उ.
24 मार्च	सू. उ.	24 मार्च	17 00
2 अप्रै.	5 15	2 अप्रै.	सू. उ.
17 अप्रै.	12 11	18 अप्रै.	सू. उ.
29 अप्रै.	11 18	30 अप्रै.	सू. उ.
15 मई	सू. उ.	15 मई	19 55
27 मई	सू. उ.	27 मई	20 55
27 जून	12 34	28 मई	सू. उ.
25 जुला	सू. उ.	25 जुला	22 50
3 अग.	20 09	4 अग.	सू. उ.
22 अग.	सू. उ.	22 अग.	7 20
31 अग.	सू. उ.	31 अग.	25 11
28 सितं.	सू. उ.	28 सितं.	10 11
1 अक्तू.	24 47	2 अक्तू.	सू. उ.
4 अक्तू.	23 00	5 अक्तू.	सू. उ.
29 अक्तू.	9 25	30 अक्तू.	सू. उ.
1 नवं.	सू. उ.	2 नवं.	5 42
26 नवं.	सू. उ.	26 नवं.	17 39
29 नवं.	सू. उ.	29 नवं.	13 40
22 दिसं.	10 05	23 दिसं.	7 24
30 दिसं.	सू. उ.	31 दिसं.	2 55
(सन् 2008 ई.)			
15 जन.	23 26	16 जन.	सू. उ.
19 जन.	सू. उ.	19 जन.	16 36
[illegible] जन.	11 44	28 जन.	सू. उ.
[illegible] फर.	सू. उ.	13 फर.	3 27
[illegible] फर.	सू. उ.	24 फर.	22 36
[illegible] फर.	6 26	28 फर.	सू. उ.
[illegible] मार्च	सू. उ.	11 मार्च	9 47
[illegible] मार्च	सू. उ.	23 मार्च	6 41
26 मार्च	14 15	27 मार्च	सू. उ.

रवि योग

20 फर.	17 49	21 फर.	15 36
22 फर.	13 40	23 फर.	12 08
25 फर.	10 29	27 फर.	10 54
1 मार्च	13 18	2 मार्च	15 10

रवि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2007-08	घं. मिं.	2007-08	घं. मिं.
10 मार्च	10 44	11 मार्च	13 00
21 मार्च	22 27	22 मार्च	20 06
23 मार्च	18 15	24 मार्च	17 00
26 मार्च	16 36	28 मार्च	18 57
30 मार्च	23 29	31 मार्च	23 04
1 अप्रै.	2 16	2 अप्रै.	5 15
8 अप्रै.	21 29	9 अप्रै.	22 58
20 अप्रै.	3 46	20 अप्रै.	25 46
21 अप्रै.	24 25	22 अप्र.	23 51
24 अप्रै.	25 11	27 अप्रै.	5 25
28 अप्रै.	4 13	28 अप्रै.	8 14
30 अप्रै.	14 25	1 मई	17 28
8 मई	5 56	9 मई	6 34
19 मई	10 11	20 मई	8 59
21 मई	8 34	22 मई	8 59
24 मई	12 15	27 मई	20 55
29 मई	26 47	31 मई	5 17
6 जून	12 13	7 जून	12 01
17 जून	18 08	18 जून	18 04
19 जून	18 48	20 जून	20 19
24 जून	4 11	26 जून	10 04
28 जून	14 37	29 जून	16 11
5 जुला	16 46	6 जुला	15 07
6 जुला	15 48	7 जुला	14 37
17 जुला	3 50	18 जुला	5 02
19 जुल	6 53	20 जुला	9 18
20 जुला	14 34	21 जुला	12 06
23 जुला	18 00	25 जुला	22 50
27 जुला	25 28	28 जुला	25 54
4 अग.	18 36	5 अग.	17 04
15 अग.	15 10	16 अग.	17 25
17 अग.	11 09	17 अग.	20 05
18 अग.	23 00	19 अग.	26 00
22 अग.	7 20	24 अग.	10 36
26 अग.	11 08	27 अग.	10 24
2 सितं.	21 16	3 सितं.	19 43
15 सितं.	6 24	16 सितं.	9 25
17 सितं.	12 24	18 सितं.	15 12

रवि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2007-08	घं. मिं.	2007-08	घं. मिं.
20 सितं.	19 26	22 सितं.	20 59
24 सितं.	19 30	25 सितं.	17 45
1 अक्तू.	24 47	2 अक्तू.	23 33
14 अक्तू.	19 01	15 अक्तू.	21 55
16 अक्तू.	24 36	17 अक्तू.	26 54
20 अक्तू.	5 45	22 अक्तू.	5 39
23 अक्तू.	26 30	24 अक्तू.	16 03
24 अक्तू.	24 02	25 अक्तू.	21 09
31 अक्तू.	6 03	1 नवं.	5 42
13 नवं.	6 32	14 नवं.	8 56
15 नवं.	10 59	16 नवं.	12 33
18 नवं.	13 53	21 नवं.	10 33
23 नवं.	5 23	23 नवं.	26 19
29 नवं.	13 40	30 नवं.	13 58
12 दिसं.	16 33	13 दिसं.	18 05
14 दिसं.	19 14	15 दिसं.	19 55
16 दिसं.	13 27	16 दिसं.	20 05
18 दिसं.	18 41	20 दिसं.	15 07
22 दिसं.	10 05	23 दिसं.	7 24
28 दिसं.	23 43	29 दिसं.	15 44
29 दिसं.	24 58	30 दिसं.	26 55
10 जन.	24 59	11 जन.	17 38
11 जन.	25 24	12 जन.	25 27
13 जन.	25 09	14 जन.	24 28
16 जन.	22 05	18 जन.	18 35
20 जन.	14 38	21 जन.	12 48
28 जन.	13 48	29 जन.	16 22
10 फर.	7 08	11 फर.	6 05
12 फर.	4 50	13 फर.	3 27
14 फर.	24 33	16 फर.	21 47
18 फर.	19 40	19 फर.	19 01
20 फर.	3 34	20 फर.	18 45
27 फर.	3 32	28 फर.	6 26
10 मार्च	11 47	11 मार्च	9 47
12 मार्च	7 51	13 मार्च	6 03
15 मार्च	3 14	16 मार्च	25 47
17 मार्च	18 18	17 मार्च	25 37
20 मार्च	2 27	21 मार्च	3 28
27 मार्च	17 12	28 मार्च	20 07

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योग (2007-08 ई.)

(गाड़ी, आभूषणादि बहुमूल्य वस्तुएँ खरीदने हेतु विशेष मुहूर्त्त)

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योगों में बहुमूल्य एवं उपयोगी पदार्थ, वस्तुएँ जैसे—ज़मीन-जायदाद, हीरे-जवाहरात, स्वर्ण-चाँदी के आभूषण, कार, ट्रक, स्कूटर, गाय-भैंस क्रय करना, नवीन उद्योग की स्थापना आदि करना लाभदायक रहता है। इन योगों में यदि कोई अनिष्ट हो जाए, तो भी दुगुनी अथवा तीन गुणा हानि होने की सम्भावना हो जाती है। तो त्रिपुष्कर दोष की शान्ति के लिए तीन गौओं के मूल्य का धन तथा द्विपुष्कर में दो गौओं के मूल्य और तिलों द्वारा निर्मित पीठी का दान करना शुभ होगा। (वसिष्ठ.)

द्विपुष्कर योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2007-08	घं. मिं.	2007-08	घं. मिं.
20 जन.	17 01	21 जन.	05 10
24 मार्च	17 00	25 मार्च	12 11
3 अप्रै.	25 20	4 अप्रै.	सू. उ.
27 मई	22 25	28 मई	सू. उ.
21 जुला	12 06	21 जुला	22 47
31 जुला	सू. उ.	31 जुला	24 16
23 सितं.	20 36	24 सितं.	सू. उ.
2 अक्तू.	सू. उ.	2 अक्तू.	23 33
17 नवं.	13 33	17 नवं.	16 08
25 नवं.	20 16	26 नवं.	सू. उ.
19 जन.	16 36	19 जन.	26 16
29 जन.	सू. उ.	29 जन.	16 22
23 मार्च	06 41	23 मार्च	26 55
(रवि पुष्य योग)			
17 जून	18 08	18 जून	सू. उ.
15 जुला	सू. उ.	16 जुला	03 19
12 अग.	सू. उ.	12 अग.	11 31
16 मार्च	25 47	17 मार्च	सू. उ.
(गुरु पुष्य योग)			
4 जन.	21 45	5 जन.	सू. उ.
1 फर.	सू. उ.	2 फर.	6 45
1 मार्च	सू. उ.	1 मार्च	13 18
4 अक्तू.	23 00	5 अक्तू.	सू. उ.
1 नवं.	सू. उ.	2 नवं.	05 42
29 नवं.	सू. उ.	29 नवं.	13 40

त्रिपुष्कर योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2007-08	घं. मिं.	2007-08	घं. मिं.
10 जन.	02 12	10 जन.	सू. उ.
18 फर.	22 40	19 फर.	सू. उ.
27 फर.	23 35	28 फर.	सू. उ.
14 अप्रै.	20 20	15 अप्रै.	03 53
28 अप्रै.	08 14	29 अप्रै.	08 11
8 मई	22 50	9 मई	सू. उ.
16 जून	18 55	17 जून	04 19
26 जून	15 00	27 जून	सू. उ.
1 जुला	19 11	2 जुला	सू. उ.
10 जुला	26 01	11 जुला	सू. उ.
19 अग.	26 00	20 अग.	सू. उ.
25 अग.	11 13	25 अग.	21 02
2 सितं.	23 22	3 सितं.	सू. उ.
23 अक्तू.	सू. उ.	23 अक्तू.	20 50
27 अक्तू.	14 56	27 अक्तू.	26 38
6 नवं.	सू. उ.	6 नवं.	13 15
16 दिसं.	20 05	17 दिसं.	04 21
25 दिसं.	सू. उ.	25 दिसं.	24 48
29 दिसं.	24 58	30 दिसं.	24 24
(सन् 2008 ई.)			
17 फर.	20 37	18 फर.	सू. उ.
23 फर.	सू. उ.	23 फर.	09 16
4 मार्च	सू. उ.	4 मार्च	17 20

ज्वालामुखी योग—देखें पृष्ठ 121

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कालसर्प योग–चामत्कारिक शुभ फल भी देता है

कालसर्प योग जन्म कुण्डली में उस स्थिति में बनता है, जब कुण्डली में समस्त ग्रह राहु-केतु के एक ओर स्थित होते हैं। ज्योतिष जगत में **'कालसर्प योग'** के विषय में बड़ी चर्चाएं हैं। प्राचीन विचारधारा के ज्योतिर्विदों का कहना है कि प्राचीन ग्रन्थों में कालसर्प योग का कहीं उल्लेख नहीं है। आधुनिक ज्योतिर्विद जातक के जन्माङ्ग में कालसर्प योग की जो स्थिति पाते हैं, वह स्थिति पहले भी होती थी, जिसे राहु की दशा कहा जाता था। अति प्राचीन ज्योतिर्विदों ने **'कालसर्प योग'** शब्द का प्रयोग नहीं किया। परन्तु महर्षि पराशर एवं वराह मिहिर ने अपने ग्रन्थों में **'सर्प योग'** की चर्चा की है। बृहज्जातक तथा वृहत् पराशर होराशास्त्र में **योगः प्रोक्तकाल सर्पश्च.....॥ एवं 'राहुकेतुमध्ये ग्रहा सर्वे विघ्नदा काल सर्प जनकः तथा काल सर्पयोगस्य विषविषात्त जीवने भयावह पुनः पुनरपि शोकं च।** मानसागरी के अध्याय ४ में स्पष्ट उल्लेख है कि **''लग्नाच्च सप्तमे स्थाने शनि राहु संयुतौ। सर्पेण बाधा तस्योक्ता शय्यायां स्वपतोऽपिच।।४-१०॥''** यदि सप्तम भाव में शनि राहु के साथ हो तो उस जातक की मृत्यु 'सर्पदंश' से होती है। इसी सर्प योग को हम **'कालसर्प योग'** भी कहते हैं।

कुछ विद्वान लोग यह प्रश्न करते हैं कि **'कालसर्प योग'** अस्तित्व में कैसे आया ? तो यह प्रश्न अनुचित नहीं है क्योंकि अधिकांश ग्रन्थों में **'सर्प योग'** की तो चर्चा है किन्तु **'कालसर्प योग'** की नहीं। 'काल' शब्द जोड़ दिया जाए, तो साधारण प्राणी के मस्तिष्क में उसका प्रथम अर्थ 'मृत्यु' ही आएगा और जब 'काल' शब्द के साथ 'सर्प' जुड़ा हो, तब तो प्रथम दृष्ट्या जातक भयभीत हो जायेगा। समाज में सामान्य रूप से **'काल'** और **'सर्प'** दोनों प्रथमतः भयावह ही हैं। यह तो उसे धैर्य बँधाने और समझाने पर ही समझ में आयेगा कि 'काल' का अर्थ है समय और 'सर्प' हमारे पूज्य देवता हैं अर्थात् अब या जीवन का अमुक समय सर्प पूजा का समय है, नाग की पूजा और शिव भक्ति से हमें ऊर्जा प्राप्त होकर मन को शान्ति मिलती है। राहु-केतु की महादशा एवं कालसर्प/पितृदोष से पीड़ित जातकों की ऊर्जा शक्ति क्षीण हो जाती है। इसलिए नाग पूजा एवं शिवभक्ति का विधान हमारे शास्त्रों ने सुझाया है। इससे जातक को आने वाले कष्टों से राहत अथवा दूर होंगे।

राहु-केतु छाया ग्रह हैं। जैसे प्राचीन चरक संहिता में कैंसर एवं एड्स जैसे रोगों का उल्लेख नहीं है, परन्तु ये रोग नहीं है, ऐसा नहीं माना जा सकता। इसी प्रकार कालसर्प योग जब सभी सात ग्रह राहु और केतु या केतु और राहु के मध्य आ जाते हैं, तो राहु के प्रभाव से अन्य ग्रह निष्प्रभावी हो जाते हैं और राहु का अधिक प्रभाव आता है, जन्मकुण्डली में कालसर्प योग का निर्णय करते समय विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। राहु या केतु के साथ अन्य ग्रहों का सहचर्य की स्थिति में भाव-स्पष्ट कर लिए जाएँ तो इस योग में और भी अधिक स्पष्टता आ जाएगी। जैसे-लग्न भाव से निर्मित कालसर्प योग में यदि राहु के साथ मंगल या कोई भी ग्रह है तथा उसके भोगांश राहु से अधिक हैं तो कालसर्प योग दोषपूर्ण नहीं होगा, बल्कि योगकारक बनता है। कुछ विद्वान तो इसे भंग कालसर्प दोष की कुण्डली मानते हैं।

वैदिक रूप से राहु का अधिदेवता काल, प्रति अधिदेवता सर्प है, जबकि केतु का अधिदेवता चित्रगुप्त एवं प्रतिअधिदेवता ब्रह्माजी हैं। कालसर्प योग से सम्बन्धित जन्मकुण्डलियों के अध्ययन करने पर यह दिखाई पड़ता है कि कुछ कालसर्प योग से युक्त जातक असहनीय कष्ट झेल रहे हैं और कुछ उत्तरोत्तर समृद्धि, वैभव प्राप्त कर रहे हैं। व्यक्ति जब पद, प्रतिष्ठा, धन, परिवार आदि के मद में चूर हो जाता है, तब वह अपने सम्माननीय माता-पिता, पितर तथा आश्रित अन्य लोगों को सम्मान न देकर उनसे सम्मान कराने की इच्छायें रखता है और उन्हें मानसिक रूप से प्रताड़ित करता है, उसी का प्रभाव अगले जन्म में कालसर्प योग के रूप में आता है। इसके विपरीत अपने माता-पिता आदि की यथाशक्ति सेवा करते है, उन्हें कालसर्प योग अनुकूल हो सुखी बनाता है।

> राहु वायुकारक, छाया व अशुभ ग्रह होते हुए भी प्राणी को दुःखों की अग्नि में तपाकर उसे कुन्दन की भान्ति निखारने एवं परिष्कृत करने का कार्य करता है। दुःखों से व्याकुल होकर ही मनुष्य प्रभु की शक्तियां का स्मरण करता है।

सामान्यतः कालसर्प योग का प्रभाव जीवनपर्यन्त रहता है, परन्तु राहु अथवा केतु की दशाऽन्तर्दशा में इसके प्रभाव, फलों का प्रादुर्भाव होते देखा जा सकता है। एक अन्य मान्यतानुसार कालसर्प योग यदि किसी जातक की कुण्डली में प्रथम छः भावों में बनता हो, तो उसे जीवन के पूर्वार्द्ध भाग में विशेष संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहता है [इस स्थिति में राहु सप्तम में तथा केतु लग्न भावस्थ होगा।] इसी भान्ति यदि राहु और केतु के मध्य सभी सातों ग्रह सप्तम भाव से द्वादश भावों के बीच पड़ते हों, तो तत्सम्बन्धित योग के प्रभावस्वरूप मनुष्य को जीवन का उत्तरार्द्ध भाग विशेष कठिन परिसिथतियों में से गुजारना पड़ता है। ध्यान रहे, इस योग की गणना राहु से लेकर केतु तक करनी चाहिए।

कालसर्प का शुभाशुभ फल द्वादश भावों में राश्यानुसार अलग-अलग होता है।

1. अनन्त कालसर्प योग–प्रथम व सातवें भाव से निर्मित कालसर्प योग मनुष्य के व्यक्तित्व, शरीर, सिर, आत्मा एवं पिता की माता (दादी) पर जीवन पर्यन्त प्रभावी रहता है। 42 वर्ष की आयु तक अथवा राहु की महादशा में विशेष प्रभाव देखा जा सकता है।

अशुभ प्रभाव–शरीर रोग, कष्ट व मानसिक तनाव अधिक रहता है। जीवन में संघर्ष अधिक करना पड़ता है। वैवाहिक जीवन में असन्तोष बना रहता है। जातक जीवन पर्यन्त उदर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जब सभी सात ग्रह राहु और केतु या केतु और राहु के मध्य आ जाते हैं, तो राहु के प्रभाव से अन्य ग्रह निष्प्रभावी हो जाते हैं और राहु का अधिक प्रभाव आता है, जन्मकुण्डली में कालसर्प

अशुभ प्रभाव—शरीर रोग, कष्ट व मानसिक तनाव अधिक रहता है। अधिक करना पड़ता है। वैवाहिक जीवन में असन्तोष बना रहता है। जातक जीवन पर्यन्त उदर

विकार से पीड़ित रहता है। बचपन में अथवा बड़े होने तक पेट में कीड़े होते हैं। प्राय: इसको शौच सम्बन्धी कष्ट बना रहता है। यह तब और भी अधिक प्रभाव होता है, जब लग्न एवं राशि एक ही हो। जातक को स्वप्न में सूर्य एवं मृत्यु लोग की आत्माएं दिखती हैं।

शुभ फल—यदि यह अनन्त कालसर्प योग वृष एवं मिथुन, सिंह राशि पर आता है, तब राजयोगकारक भी होता है। जातक प्राय: विदेश गमन भी करता है। **रविक्षेत्रोदये राहौ राजभोगाय सम्पदि॥** वैद्यनाथ। गुप्त युक्तियों द्वारा लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, बाहरी तौर पर सज्जन परन्तु भीतर से चालाक प्रवृत्ति का होगा।

2. कुलिक कालसर्प दोष—द्वितीय व आठवें भाव से निर्मित कालसर्प दोष में यदि राहु अशुभ हो, तो जातक को कुटुम्ब एवं धन सम्बन्धी उलझनों का सामना रहता है। अत्यन्त कठिन एवं विषम परिस्थितियों में निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनते हैं। गुप्त रोग होने की सम्भावना रहती है। जातक प्राय: अपनी वाणी पर संयम नहीं रख पाता। कभी-कभी मुख सम्बन्धी रोग, गले या श्वास सम्बन्धी परेशानी उत्पन्न हो।

शुभ फल—अचानक धन की प्राप्ति होती है। गढ़ा धन, लॉटरी, सट्टा आदि से भी धन का आगम हो सकता है। परिवार ख्याति प्राप्त एवं संयुक्त होता है। जातक धन की अपेक्षा कीर्ति को अधिक मूल्यवान समझता है।

3. वासुकि कालसर्प योग—तृतीय एवं नवम भाव में निर्मित इस योग से अपने निकटस्थ भाई-बन्धुओं के कारण ही विविध परेशानियों का सामना करना पड़ता है। विदेशों में अथवा भ्रमणशील (घूमने-फिरने) के कार्यों द्वारा धनार्जन होता है।

शुभ प्रभाव—तृतीयेश उच्च स्थानस्थ होकर भाग्येश, पंचमेश या राज्येश से युति होने पर एवं राहु के तृतीय भाव में वृष या मिथुन या कन्या राशिस्थ होने पर अखण्ड साम्राज्य प्रदान करता है। राजनीति में विशेष सफलता देता है। भाई-बहन होते हैं तथा उनसे सहयोग भी प्राप्त होता है। यदि गुरु की दृष्टि भी हो तो पराक्रम में वृद्धि तथा भाई-बन्धुओं का यथेष्ठ सुख प्राप्त होता है। जातक का सम्पर्क एवं सम्बन्ध उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ भी रहता है, जिनसे जातक लाभान्वित भी होता है। शुभफल का अनुभव स्त्रीराशियों में प्राप्त होता है। अशुभ फल का अनुभव पुरुष राशियों में प्राप्त होगा।

4. शंखपाल कालसर्प योग—चतुर्थ व दशम भावों द्वारा निर्मित कालसर्प योग का प्रभाव जातक की माता, स्थायी सम्पत्ति, पैतृक सम्पत्ति, वाहन-सुख एवं शरीर में पेट पर पड़ता है। चतुर्थेश निर्बल हो एवं राहु नीच राशिस्थ होने से जातक को आराम कम व संघर्ष अधिक रहता है। माता-पिता एवं परिवार के निमित्त परेशानियां होती हैं। आय में अनिश्चितता रहती है। जातक को पथरी एवं किडनी आदि उदर विकार होते हैं। जातक घरेलू परिस्थितियों के प्रति असन्तुष्ट रहता है।

शुभ फल—इसके विपरीत उच्च राशिस्थ राहु होने एवं चतुर्थेश के बलिष्ठ होने पर यह योग पूर्ण शुभ तो नहीं, अपितु अल्प शुभफली बन जाता है। जन्म स्थान छोड़ने पर जातक सुखी रहता है तथा माता को कष्ट के बावजूद सुख प्राप्त होता है। १, २, ३, ४ एवं कन्या राशि में शुभ फल प्राप्त होते हैं।

5. पद्म कालसर्प योग—पंचम व एकादश भावों के मध्य कालसर्प योग का प्रभाव शिक्षा, संतान, श्रम का मूल्यांकन, मान-सम्मान, पेट विशेषकर लीवर एवं आँत पर पड़ता है। पंचमेश नीच, वक्री, अस्त या अन्य निर्बल भावों में स्थित हो तथा राहु नीच राशि धनु या शत्रु राशि में हो तथा किसी शुभ ग्रह की दृष्टि भी न हो तो जीवन के पूर्वार्द्ध भाग में अत्यन्त कठिन एवं संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहे। कोई भी विशेष कार्य पूर्ण होने से पूर्व विघ्न या रुकावटें पैदा हों। आर्थिक स्थिति अनिश्चित रहती है। सन्तान उत्पत्ति में विलम्ब अथवा कन्या सन्तान अधिक हों। उच्च-विद्या में विघ्न-बाधाएं अथवा अधूरी शिक्षा रहती है।

शुभ फल—पंचमेश उच्च राशि एवं बलिष्ठ स्थिति में होने एवं उच्च राशि या शुभ ग्रह द्वारा दृष्ट होने पर यह योग अनेक गुप्त विद्याओं का ज्ञान कराता है। सन्तान-उत्पत्ति के बाद क्रमिक उन्नति हो। मंगल-राहु योग हो तो जातक कूटनीति का प्रयोग करता है। भृगुसूत्र के अनुसार पंचम में यदि राहु हो तो मनुष्य को पुत्र सुख नहीं मिलता, सर्प के शाप से पुत्र का नाश होता है। नागदेव की पूजा करने से पुत्र प्राप्ति होती है।

6. महापद्म कालसर्पयोग—षष्ठ स्थान में राहु होने पर योग बनता है। इसका प्रभाव रोग, शत्रु, मामा और मौसी पर पड़ता है। षष्ठेश निर्बल एवं पापग्रस्त या राहु नीचस्थ होने से जातक गुप्त रोग एवं गुप्त षड्यन्त्र का शिकार होता है अथवा मामा/मौसी की अकाल मृत्यु होती है। वृथा खर्च, मानसिक तनाव व गुप्त शत्रु-भय, मातुल (नानके) पक्ष को अनिष्टकर, दांतों व नेत्रों सम्बन्धी रोग भय। प्रगति कठिनता से हो पाती है।

शुभ फल—षष्ठेश उच्च राशिस्थ, बलिष्ठ तथा राहु उच्च राशिस्थ होने से शत्रु स्वयं ही (निजी कारणों से) दूर हट जाते हैं। विदेश गमन भी होता है। जातक तर्क-वितर्क करने में कुशल, अपने बुद्धि-चातुर्य एवं गुप्त युक्तियों के बल पर शत्रुओं को परास्त करने वाला होता है।

7. तक्षक कालसर्प योग—राहु के सप्तम भाव में होने पर यह योग बनता है। इसका प्रभाव वैवाहिक जीवन, मित्र, सांझेदारी, दादा पर पड़ता है।

सप्तमेश ६, ८, १२वें अथवा अशुभ भावस्थ या राहु नीच राशिस्थ होने से वैवाहिक विलम्ब, विवाह होने पर वैवाहिक सुख में कमी, व्यवसाय में सांझेदारी के कार्यों में विघ्न-बाधाएं तथा धोखा, अत्यधिक परिश्रम द्वारा ही धन, आय के साधन हों। स्त्री/पति की ओर से परेशानी अथवा वैवाहिक जीवन में कलह-क्लेश हो।

शुभ फल—सप्तमेश शुभ हो तो जातक का एक जगह सम्बन्ध छूटने के बाद वैवाहिक सुख प्राप्त होता है। स्त्री राशि का राहु शुभ फल करता है। विवाह जल्दी होता है।

8. कर्कोटक कालसर्प योग—राहु के अष्टमस्थ होने से यह योग बनता है। अशुभ होने पर क्लिष्ट रोग का भय, मानसिक तनाव, आर्थिक तंगी व घरेलू उलझनें अधिक हों।

शुभ फल—अष्टमेश शुभ भावस्थ हो, या राहु उच्च राशिस्थ, शुभ दृष्ट हो तो जातक दीर्घजीवी होता है तथा जीवन के उत्तरार्द्ध में भूमि, मकान, वाहन एवं सुयोग्य सन्तान आदि सुखों की प्राप्ति होती है।

9. शंखनाद कालसर्प योग—नवम व तृतीया भाव में निर्मित कालसर्प योग में भाग्योन्नति में विघ्न-बाधाएं पैदा होंगी। लाटरी, सट्टे में धन का अपव्यय तथा किसी नजदीकी बन्धु द्वारा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विश्वासघात हो। मनमाना आचरण करने से प्रवृत्त।

शुभ प्रभाव—जातक स्वाभिमानी, जादू, यंत्र-मंत्र, तन्त्र, ज्योतिष, लाटरी-शेयर आदि विषयों में रूचि रखने वाला, जातक ऐसी योजनाओं के संचालक होते हैं जिनमें धन की वृद्धि अचानक होती है।

10. पातक कालसर्प योग—दशम एवं चतुर्थ भावों में निर्मित इस योग से जातक अत्यन्त संघर्ष के पश्चात् जीवन में उन्नति करता है। आयु के उत्तरार्ध भाग में ही सफलता मिलती है। पिता के सुख में कमी करता है। झूठे आरोप झेलने पड़ते हैं।

शुभ प्रभाव—जातक उच्च प्रतिष्ठित संस्थान में महत्त्वपूर्ण पद प्राप्त करता है तथा अपनी योग्यता के बल पर भूमि, आवास, स्त्री आदि सुखों को प्राप्त करता है।

11. विषाक्त कालसर्प योग—एकादश व पंचम भाव से सम्बन्धित कालसर्प योग के कारण जातक पिता या सन्तान पक्ष के कारण चिन्तित, गुप्त आर्थिक, परेशानियां, प्रथम कन्या सन्तान की सम्भावना, पारिवारिक सुख एवं सहयोग में कमी, अत्यधिक परिश्रम करने पर भी धन लाभ के सम्बन्ध में असन्तोष बना रहता है।

शुभ प्रभाव—लाटरी, सट्टा, शेयर्ज द्वारा आकस्मिक धन लाभ, अनेक यात्राओं द्वारा धन लाभ एवं ऐश्वर्य प्राप्त करता है। अरिष्टनाशक एवं सौभाग्य में वृद्धिकारक होता है।

12. शेषनाग कालसर्प योग—द्वादश भाव में राहु होने पर यह योग बनता है। जातक को शिर, नेत्रादि के कारण कष्ट, देश-विदेश में भ्रमण करने वाला धन का वृथा खर्च अधिक होता है। कुसंगति के कारण व्यसन आदि का भी शिकार हो सकता है।

शुभ प्रभाव—यदि व्ययेश शुभ भावस्थ हो तो जातक अपने जन्म स्थान से दूर जाकर भाग्योदय प्राप्त करता है। आध्यात्म, धार्मिक, लेखन, ज्योतिष के क्षेत्र में विशेष रूचि रखेगा।

कालसर्प का मुख राहु होता है। यदि राहु बली हो तथा उस पर शुभ और योगकारक ग्रहों का प्रभाव हो, तो कालसर्प योग जातक को अतीव उन्नति देता है। किसी भी जन्मकुण्डली में उच्चस्तरीय सफलता के लिए केवल किसी एक योग पर निर्भर रहना शास्त्रसम्मत नहीं है। उच्चस्तरीय सफलता के लिए लग्न का बली और शुभ प्रभाव में होना अत्यन्त आवश्यक है। यदि लग्न बली हो, तो जातक की कुण्डली में विद्यमान् सामान्य शुभ ग्रहयोग भी जातक को अच्छी प्रगति देते हैं। इसके विपरीत लग्न के निर्बल होने पर जातक की कुण्डली में विद्यमान ग्रहयोग उच्चस्तरीय सफलता नहीं दे पाते। कालसर्प योग के शुभफलदायक होने की स्थिति में लग्न की बलवत्ता को ध्यान में रखना भी आवश्यक है। कालसर्प योग जिन स्थितियों में विशेष शुभ फलदायक सिद्ध होता है, उसके लिए योग की स्थिति एवं कुण्डली में विद्यमान् योगकारक ग्रहों के परस्पर सम्बन्ध को अवश्य देखना चाहिए।

जिन लोगों की कुण्डलियों में यह योग मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या और मीन राशिस्थ राहु से बनता है, उनके मन-मस्तिष्क और हृदय में गुह्य ज्ञान, अंतर्दृष्टि और प्रेरणाओं का अनूठा संगम होता है। जो उनके जीवन में उत्कर्ष के व्यापक अवसर प्रदान करते हैं। ऐसे मनुष्यों का व्यक्तित्व बहिर्मुखी होता है। वे समाज कल्याण हेतु तत्पर, व्यवहार-कुशल और त्याग करने की भावना रखते हैं। उनकी लयबद्ध और यर्थाथवादी सोच होती है। लोगों में अपने नाम के प्रचार से उनके अहं और मन को सन्तुष्टि मिलती है।

(1) उदाहरणार्थ—(१) लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की कुण्डली में कालसर्प योग के बावजूद वे दूरदर्शिता और दृढ़ व स्थिर मानसिकता के व्यक्तित्व से लब्ध एक महान् पुरुष थे। उनके जैसा गृहमंत्री आज तक नहीं हुआ। उनकी कुण्डली में सप्तम भाव में बुध आदित्य योग एवं दशम भाव में रूचक और शश योग हैं। लग्नेश बली है। जिनकी कालसर्प के द्वारा कोई हानि नहीं हुई।

अनेक उच्चस्तरीय एवं सुप्रसिद्ध व्यक्तियों की कुण्डली में कालसर्प में कालर्प योग देखने में आया है। उदाहरणार्थ—सचिन तेंदुलकर, धीरू भाई अम्बानी, सुश्री लता-मंगेशकर, हिटलर, मोरारजी देसाई इत्यादि।

(2) उदाहरण कुण्डली—(२) संलग्न कुण्डली प्रसिद्ध उद्योगपति स्व. धीरू भाई अम्बानी की है, जिनके जन्मांग में समस्त ग्रह तृतीय के राहु तथा नवम के केतु के बीच हैं। कालसर्प योग का मुख तृतीय भाव में शनि की राशि तथा राहु के नक्षत्र में है। तृतीयेश शनि द्वितीय भाव में स्वगृही है। इस प्रकार कालसर्प का मुख राहु बली तथा शुभ स्थिति में है एवं उसका सम्बन्ध धनभाव से है, जोकि आर्थिक जगत में शीर्ष सफलतादायक है, इस प्रकार कालसर्प का मुख राहु धन उगलता रहा। तृतीय भाव में इसकी स्थिति स्वपराक्रम को बढ़ाने वाली तथा जुझारू प्रवृत्ति की द्योतक है। इस कालसर्पयोग का शुभ फल लग्न की बलवत्ता ने बहुत बढ़ा दिया। लग्नेश गुरु भाग्येश सूर्य के नक्षत्र में स्थित होकर दशम भावस्थ होना, लग्न में भाग्येश सूर्य और उसका मित्र चन्द्रमा स्थित है। लग्नेश और भाग्येश का नक्षत्र सम्बन्ध तथा भाग्येश की लग्न में स्थिति लग्न को बली और इन्हें प्रबल भाग्यवान बनाया। इस प्रकार श्रीअम्बानी की कुण्डली में उच्च सफलतादायक ग्रह योग विद्यमान थें, जिन्हें कालसर्प योग ने और भी ऊँचाईयों तक पहुँचाया।

(3) उदाहरण कुण्डली—(३) संलग्न जन्मांग प्रसिद्ध अभिनेता अनिल कपूर की है, जिन्होंने फिल्मी जगत में अच्छी पहचान बनाई। इनका जन्म कुम्भ लग्न के मिथुन नवांश में हुआ था। कर्कोटक नामक, अष्टमस्थ राहु तथा द्वितीयस्थ केतु के मध्य सभी ग्रह बैठे हैं। लग्नेश शनि एकादश भाव में तथा द्वितीयेश (वाणी का कारक) गुरु बुध के साथ है। कला का कारक शुक्र

वल्लभ भाई पटेल
31 अक्टू., 1875 ई.
6-00 सायं, लगभग
गुजरात

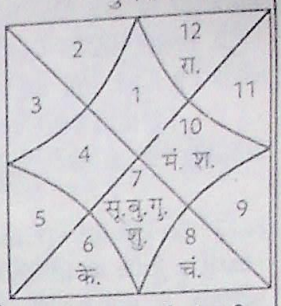

स्व. धीरू भाई अंबानी
28-12-1932
प्रातः 6-31 बजे
जन्मस्थान-गुजरात

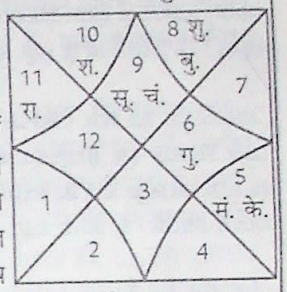

अनिल कपूर
24-12-1959
12-00 दोपहर
मुम्बई

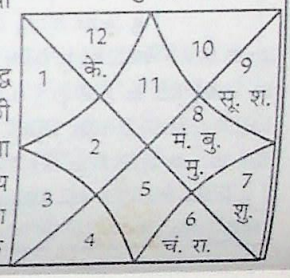

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मनुष्यों को व्यक्तित्व बहिर्मुखी होता है। वे समाज कल्याण हेतु तत्पर, [illegible] त्याग करने की भावना रखते हैं। उनकी लयबद्ध [illegible] नाम के प्रचार से उनके अहं और मन को सन्तुष्टि मिलती हैं।

सभी यह बैठे हैं। लग्नेश शनि एकादश भाव में तथा द्वितीयेश (वाणी का कारक) गुरु बुध के साथ है। कला का कारक शुक्र

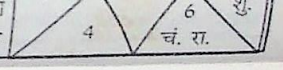

भाग्य भाव में स्वगृही है, जिसने कपूर जी को वास्तव में कलाकार बनाया। स्पष्ट है, अष्टम भाव में कन्या राशिस्थ राहु (नवांश में भाग्य स्थान) कोई अशुभ/अरिष्ट प्रभाव प्रदान नहीं कर रहा। यद्यपि अष्टमस्थ राहु उत्तम फल नहीं देता परन्तु शुभ-अशुभ परिणाम राशि, बल तथा अन्य ग्रहों को दृष्टि के अनुसार प्रदान करता है। अतः कर्कोटक नामक कालसर्प योग से भय में न आएं, यदि अष्टमस्थ राहु शुभ होगा तो निश्चय ही लाभकारी परिणाम देगा।

वास्तव में राहु वायुकारक, छाया व अशुभ ग्रह होते हुए भी प्राणी को दुःखों की अग्नि में तपाकर उसे कुन्दन की भान्ति निखारने एवं परिष्कृत करने का कार्य करता है। दुःखों से व्याकुल होकर ही मनुष्य प्रभु की शक्तियों का स्मरण करने लगता है।

—कालसर्प दोष शान्ति के लिए कुछ उपाय—

कालसर्प दोष की शान्ति के लिए मुख्य रूप से (१) ग्रह शान्ति (२) सर्प दोष (३) पितृ दोष शान्ति एवं नागबलि एवं शिव पूजन वैदिक पुराणोक्त विधि से किसी योग्य ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। (४) विधिपूर्वक महामृत्युञ्जय का जप भी करें।

यदि कुण्डली में **काल सर्पयोग** पड़ा हो, तो निम्नलिखित किंचित् उपाय करने **शुभ एवं कल्याणकारी** होंगे—(१) **कालसर्प** की अरिष्ट शान्ति के लिए शिव मन्दिर में सवा लाख **ॐ नमः शिवाय** मन्त्र का पाठ करना तथा पाठोपरान्त रूद्राभिषेक करवाने का विशेष महत्त्व है। साथ ही शिवलिंग पर चांदी का **सर्प युगल-नाग स्तोत्र** एवं नाग पूजनादि करके चढ़ाना शुभ होगा।

नाग गायत्री मन्त्र— ॐ नव कुलाय विद्महे विषदंताय धीमहि तन्नो सर्पः प्रचोदयात्॥

(२) प्रत्येक शनिवार एक नारियल को तैल एवं काले तिलों का तिलक लगाकर, मौली लपेटकर अपने शिर से तीन बार घुमा कर **ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः** मन्त्र कम-से-कम तीन बार पढ़कर चलते पानी में बहा देवें—ऐसे कम-से-कम **पाँच शनिवार** करें।

(३) प्रत्येक **शनिवार** कुत्तों को दूध और चपाती डालनी तथा गौओं, कौओं को तैल के छीटें देकर रसोई की प्रथम चपातियां डालना शुभ है।

(४) **कालसर्प** योग के कारण यदि वैवाहिक जीवन में बाधा आती हो, तो जातक पत्नी के साथ दोबारा विवाह करें एवं घर के द्वार पर चांदी का स्वस्तिक चिन्ह बनवाकर लगवाएं।

(५) घर में **मयूर पंख** का पंखा पवित्र स्थान पर रखें तथा भगवान् शिव का ध्यान करते हुए प्रातः उठते ही तथा सोने से पूर्व मयूर पंखे द्वारा हवा करें।

(६) कालसर्प योग शान्ति के लिए नवनाग देवताओं के नाम (नवनाग-स्तोत्र) का उच्चारण करना चाहिए—

अनंतं वासुकिं शेष पद्मानाभम् च कंबलम्। शंखपालं कर्कोटकं कालियं तक्षकं तथा॥
एतानि संस्मरेन्नित्यं आयुः कामार्थ सिद्धये। सर्पदोष क्षयार्थं च पुत्रपौत्रान् समृद्धये॥
तस्मै विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्॥

(७) महाकुम्भ पर्व के अवसर पर प्रमुख स्नान करें और कुम्भ में स्थित शिव मन्दिर में जाकर विधिपूर्वक पूजन करें। चाँदी के बने नाग-नागिन के कम-से-कम ११ जोड़ों को प्रतिदिन शिवलिंग में चढ़ाएँ तथा महादेव से इस कुयोग से मुक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करें।

(८) प्रत्येक बुधवार को काले वस्त्र में उड़द या मूंग एक मुट्ठी डालकर, राहु का मन्त्र जाप कर किसी भिखारी को दे देवें। यदि दान लेने वाला कोई नहीं मिले तो बहते पानी में उस अन्न को छोड़ देना चाहिए। इस प्रकार 72 बुधवार करते रहने से अवश्य लाभ होता है।

(९) किसी अश्वत्थ (बट) के वृक्ष से नित्य १०८ प्रदक्षिणा (घेरे) लगाने चाहिए। तीन सौ दिन में जब २८००० प्रदक्षिणा पूरी होगी तो दोष दूर होकर स्वतः ही संतति की प्राप्ति होगी।

(१०) इसके अतिरिक्त महाकाल रुद्र स्तोत्र, रुद्र सूक्त, शिव-पंचाक्षर स्तोत्र, मनसादेवी नाग स्तोत्र, महामृत्युञ्जय आदि स्तोत्रों का विधि-विधान से पूजन, हवन करने से कालसर्प दोष की शान्ति हो जाती है।

(११) (i) प्रथम भाव से निर्मित कालसर्पदोष हो, तो गले में हमेशा चांदी का चौकोर टुकड़ा पहनें।

(ii) द्वितीय भाव से निर्मित कालसर्पदोष हो, तो घर के वायव्य (उत्तर-पश्चिम) कोण को साफ कर, मिट्टी के बर्तन में पानी भरकर रखें। प्रतिदिन पानी बदलते रहें। पुराने पानी को घर के बाहर चौराहे पर रखें।

(iii) तृतीय भाव से निर्मित कालसर्प योग हो, तो अपने जन्मदिन पर गुड़, गेहूँ और तांबे का दान करें।

(iv) चतुर्थ भाव से निर्मित कालसर्प योग हो, तो प्रतिदिन बहते हुए जल में दूध बहाएं।

(v) पंचम भाव से निर्मित कालसर्प योग हो, तो घर के ईशान कोण में सफेद हाथी की मूर्त्ति रखें।

(vi) षष्ठ भाव से कालसर्प बने तो प्रत्येक मास की पंचमी तिथि को एक श्रीफल बहते हुए पानी में डाल दें।

(vii) सप्तम भाव से कालसर्प योग बने, तो मिट्टी के बरतन में दूध भरकर वीरान स्थान पर रख आएँ।

(viii) अष्टम भाव से कालसर्प योग बने, तो प्रतिदिन सुबह काली गाय को गुड़, रोटी, काले तिल और उड़द खिलाएं।

(ix) नवम भाव से कालसर्प योग बने, तो 18 नारियल सूर्योदय से सूर्यास्त तक 18 शिव मन्दिरों में रखें। यह प्रत्येक वर्ष में एक बार शिवरात्रि को करें।

(x) दशम भाव से कालसर्प योग बने, तो घर से बाहर निकलते समय काली उड़द के दाने, सिर पर से 7 बार घुमाकर ज़मीन पर बिखेर दें। महत्त्वपूर्ण कार्य के समय यह प्रयोग से कार्य में कोई अवरोध उत्पन्न नहीं होता है।

(xi) एकादश भाव से कालसर्प योग बने, तो हर बुधवार को घर की सफ़ाई करें। सफ़ाई के बाद घर का कूड़ा घर के पास के रास्ते पर फेंक दें। उस दिन शरीर के अन्दर या बाहर एक फटा हुआ कपड़ा अवश्य पहनें।

(xii) द्वादश भाव से कालसर्प योग बने तो, प्रत्येक मास की अमावस्या को काले कपड़े में काला तिल, दूध में भिगोया हुआ जौं, नारियल और कोयला बांध कर बहते हुए पानी में बहाएं।

उपरोक्त उपाये यदि सम्भव हो, तो लगातार 43 दिन तक करे।

(१३) **तंत्र प्रयोग**—1 मीटर काले कपड़े में १/२ किलो उड़द, लोहे का टुकड़ा, काले तिल, मूंग और चावल, मधु, दूर्वा, खिचड़ी, गुड़, कर्पूर—इन वस्तुओं को बांधकर हर मास की अमावस्या को शिव मन्दिर में रखना चाहिए तथा यथाशक्ति **'ॐ नमः शिवाय'** मंत्र का जाप करना चाहिए।

अपनी अनुकूलता के अनुसार ऊपर बतायें गए कोई भी उपाय नियमित रूप से करने से अवश्य लाभ होगा।

कालसर्प दोष की शान्ति के लिए हमारी पुस्तक की प्रतीक्षा कीजिए।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हथेली में ग्रह पर्वत (Mounts) व उनका फल

हथेली में ग्रहों के पर्वतों का भी विशेष महत्त्व रहता है। अगर जन्म कुण्डली में कोई ग्रह बलवान होता है तो उस जातक की हथेली में भी उस ग्रह का पर्वत उभरा और स्पष्ट होता है। जिस व्यक्ति को अपनी जन्म-तिथि अथवा जन्म समय का ज्ञान नहीं होता, उस व्यक्ति की हथेली पर पर्वतों के आधार पर सही जन्म-कुण्डली का निर्माण किया जा सकता है। अंगूठे से जन्म लग्न मालूम किया जाता है। प्रथम अंगुली (तर्जनी) से बृहस्पति की स्थिति, मध्यमा से शनि, व अनामिका से सूर्य की स्थिति मालूम कर कुण्डली का निर्माण किया जा सकता है। तर्जनी के नीचे के स्थान को बृहस्पति का पर्वत कहते हैं। मध्यमा अंगुली के नीचे के स्थान को शनि का पर्वत कहते हैं। अनामिका अंगुली के नीचे के भाग को सूर्य पर्वत कहते हैं और कनिष्ठिका अंगुली के नीचे के स्थान को बुध पर्वत कहते हैं। अंगूठे के नीचे हथेली पर जो जीवन रेखा से घिरा हो उसे शुक्र पर्वत कहते हैं। उसी के बायीं ओर हथेली में ऊंचे उठे पर्वत को चन्द्र पर्वत कहते हैं। हृदय रेखा के नीचे और मस्तिष्क रेखा के ऊपर ऊँचे उठे भाग को मंगल का प्रथम क्षेत्र कहते हैं। शुक्र पर्वत के ऊपर और बृहस्पति, को मंगल का द्वितीय क्षेत्र कहते हैं। इस प्रकार सूर्य, चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र शनि के एक-एक ग्रह पर्वत तथा मंगल के दो ग्रह पर्वत हथेली में होते हैं। हथेली का मध्य भाग जो थोड़ा धंसा होता है उसे करतल मध्य कहते हैं। हथेली के मध्य भाग की अपेक्षा ग्रह पर्वत ऊँचे उठे होते हैं। अंग्रेज़ी में इन पर्वतों को Mounts कहते हैं।

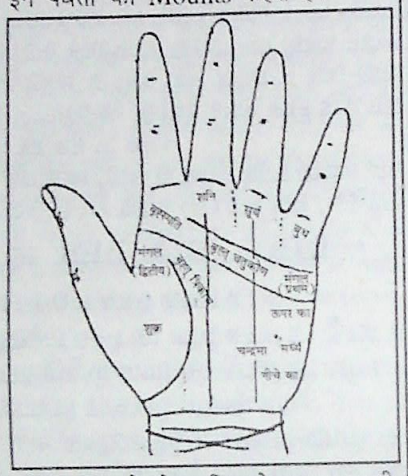

सूर्य पर्वत (Sun Mount)—यह पर्वत अनामिका अंगुली के नीचे होता है। सूर्य पर्वत उन्नत होने पर जातक उत्साही, कला प्रेमी, शिल्पविद्या में निपुण, भावुक, धनवान्, उदार होता है। अगर सूर्य का पर्वत धंसा हुआ हो तो उस जातक में उत्साह की कमी होती है और उसकी बुद्धि भी तेज नहीं होती। उसे सामाजिक कार्यों में प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होती। यदि क्रास × का चिन्ह हो तो अनावश्यक बदनामी प्राप्त होती है। यदि सूर्य पर्वत हथेली में साधारण रूप से उच्च हो तो काव्य-कला सौन्दर्य इत्यादि में अभिरूचि होती है। जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य का पर्वत उच्च हो उसे यश व प्रतिष्ठा प्राप्त होती है और वह धनवान होता है। सूर्य का पर्वत उठा हुआ हो तो व्यक्ति लेखक, यशस्वी, सुखी एवं बुद्धिमान होता है। सूर्य के पर्वत पर त्रिकोण का चिन्ह हो तो जातक उच्च राज्याधिकारी, सरकारी क्षेत्रों में लाभान्वित, उच्चपदाधिकारी या लेखक अथवा कलाकार होता है। सूर्य-पर्वत पर बिन्दु या वृत्त का चिन्ह शुभ नहीं माना जाता। जिस व्यक्ति के हाथ में यह पर्वत हो ही न उसका जीवन साधारण सा होता है। इस पर्वत से प्रतिभा, यश, सम्मान, सुख व सफलता की जानकारी प्राप्त होती है। अगर सूर्य-पर्वत बुध पर्वत के साथ मिला हो तो ऐसे जातक नम्र स्वभाव वाले, वाहनादि सुखों से युक्त, ईमानदार, व्यवहार दक्ष होते हैं। यदि स्त्री के हाथों में यह लक्षण हों तो रूपवती, पति से प्रीति रखने वाली, हंसमुख व सुशीला होती है। सूर्य पर्वत पर अगर दो खड़ी रेखाएं हों तो वह महाधनी होता है। अगर सूर्य का पर्वत शनि की ओर झुक जाए तो व्यक्ति एकान्तप्रिय व उदासीन होता है कभी-कभी निराशावादी बन जाता है।

चन्द्र पर्वत (Moon Mount)—दाहिने हाथ में आयु रेखा से बांयी ओर भाग्य रेखा के पास और मणिबंध रेखा से ऊपर चन्द्र पर्वत होता है। चन्द्र क्षेत्र सौन्दर्य-प्रियता, कल्पना काव्य, साहित्य आदि से सम्बन्ध रखता है। जिस व्यक्ति के हाथ में चन्द्र का क्षेत्र धंसा हुआ होता है, उसमें प्राय: कल्पना शक्ति का अभाव होता है। जिस व्यक्ति के हाथ में चन्द्र-क्षेत्र उच्च होता है वह, साहित्य, काव्य, कला, संगीत, कल्पना, गायन आदि के कारण सफल होता है धन, स्त्री, माता व विदेश यात्रा का सुख प्राप्त होता है। यदि चन्द्र क्षेत्र, साधारण हो तो पाचन शक्ति कमज़ोर होती है। चन्द्र-क्षेत्र का संपूर्ण भाग अत्यधिक उच्च हो और स्वास्थ्य के अन्य लक्षण हथेली में शुभ न हों तो सिर दर्द, पागलपन आदि के रोग होते हैं। चन्द्र-पर्वत अच्छा और उठाव हो तो मनुष्य सुखी, कला प्रेमी और शांतिपूर्वक जीवन व्यतीत करने वाला होता है, अधिक उठा हुआ हो तो व्यक्ति में उतावलापन अधिक होता है और उसे क्रोध भी जल्दी आता है। चन्द्र पर्वत गहरा हो तो व्यक्ति चिन्ता-ग्रस्त होता है। चन्द्र-क्षेत्र पर त्रिकोण का चिन्ह हो तो व्यक्ति गुप्त विद्याओं को जानने वाला होता है। इस पर्वत पर वर्तुल या कोई दाग का चिन्ह हो तो मानसिक रोग एवं जलभय होता है। यदि इस पर ऊर्ध्व रेखाएँ हों, तो विदेश-यात्रा के अवसर मिलते हैं। इस पर आड़ी-तिरछी रेखाएँ विदेश में विघ्न व परेशानियां पैदा करती है।

चन्द्र-क्षेत्र मणिबन्ध की ओर झुका हुआ हो व्यक्ति कल्पना लोक में विचरण करता है। चन्द्र-पर्वत से यदि कोई रेखा शुक्र पर्वत की ओर जावे तो वह व्यक्ति जलयात्रा करता है। चन्द्र प्रधान व्यक्ति कलाकार होते हैं तथा कोमलता और भावुकता इनके स्वाभाविक गुण होते हैं। चन्द्र पव4त-उन्नत हो तो जातक में कल्पना, भावुकता, सौन्दर्य प्रियता तथा प्रकृति-प्रेम विशेष रूप से होता है। ऐसे व्यक्ति अच्छे कलाकार, संगीतकार, साहित्यकार और कवि होते हैं। जिस व्यक्ति के हाथ में चन्द्र-क्षेत्र अनुपस्थित होता है, वह कठोर हृदय का होता है।

मंगल पर्वत (Mars Mount)—मंगल के दो क्षेत्र होते हैं। पहला हथेली में बुध पर्वत एवं हृदय रेखा के नीचे एवं चंद्र पर्वत के ऊपर मंगल का स्थान है। दूसरा मंगल पर्वत

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

बृहस्पति पर्वत के नीचे होता है, जहाँ से जीवन-रेखा प्रारम्भ होती है। यह जीवन रेखा के दोनों के उच्च होने का भी समझना चाहिए। जिन व्यक्तियों के बुध व गुरु के पर्वत समान

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

होता है और वह धनवान होता है। सूर्य का पर्वत उठा हुआ हो तो व्यक्ति [illegible] सुखी एवं बुद्धिमान होता है। सूर्य के पर्वत पर [illegible] राज्याधिकारी, सरकारी क्षेत्रों में लाभान्वित, उच्चपदाधिकारी या लेखक अथवा कलाकार होता

मंगल पर्वत (Mars Mount)—मंगल के दो क्षेत्र होते हैं। पहला हथेली में बुध पर्वत एवं हृदय रेखा के नीचे एवं चंद्र पर्वत के ऊपर मंगल का स्थान है। दूसरा मंगल पर्वत बृहस्पति पर्वत के नीचे होता है जहाँ से जीवन-रेखा प्रारम्भ होती है। यह जीवन रेखा के अन्दर और शुक्र पर्वत की समाप्ति पर होता है। मंगल प्रधान व्यक्ति साहसी, निडर तथा शक्तिशाली होते हैं। जिनके हाथों में मंगल पर्वत बलवान होता है वे प्रभुत्वाकांक्षी, परिश्रम के कामों में दक्ष, लड़ाई-झगड़े में उत्साही होते हैं। धीरजता तथा साहस इनका प्रधान गुण होता है। नैतिक बलशाली, चंचल प्रकृति के सैनिक होते हैं।

यदि मंगल पर्वत बहुत अधिक ऊँचा हो तो वह व्यक्ति दुराचारी, अकारण क्रोध करने वाला, समाज-विरोधी, निर्दयी होता है। ऐसे व्यक्ति स्वभाव से लड़ाकू तथा अपनी बात को ज़बरदस्ती मनवाने के आदी होते हैं। यदि मंगल का पर्वत नीचा हो तो व्यक्ति में सहन-शक्ति की कमी होती है, नास्तिक, डरपोक तथा शान्त विचार का होता है।

यदि मंगल पर्वत का झुकाव शुक्र क्षेत्र की ओर होता है तो यह निश्चित समझना चाहिए कि उस व्यक्ति में सद्गुणों की अपेक्षा दुर्गुण विशेष होंगे। ऐसे व्यक्ति झूठी शान-शौकत, व्यर्थ का आडम्बर तथा प्रदर्शन प्रिय होते हैं। यदि मंगल पर्वत या राहु के पर्वत पर त्रिकोण का चिन्ह हो तो ऐसा व्यक्ति युद्ध कुशल, दृढ़-निश्चयी, उत्तम सेनापति अर्थात् प्रबन्धन क्षमता से युक्त होता है। मंगल पर्वत यदि बुध की ओर झुका हो तो ऐसा व्यक्ति अच्छी राय देने वाला, सलाहकार होता है। यदि मंगल पर्वत पर आड़ी-तिरछी रेखाएं हों और उनसे जाल-सा बन गया हो तो निश्चय ही उसकी मृत्यु दुर्घटना के फलस्वरूप होती है। मंगल का पर्वत यदि अशुभ, निर्बल हो तो ऐसे व्यक्ति को तीव्र ज्वर, पित्त विकार, शस्त्र, शत्रु, चोर व राजा से भय प्राप्त होता है। रक्त-विकार से पीड़ा होती है। यदि मंगल पर्वत भली प्रकार से विकसित हो तथा साथ ही हथेली का रंग भी लालिमा लिए हो तो वह व्यक्ति निश्चय ही ऊँचा पद प्राप्त करता है। संघर्षों एवं बाधाओं के बावजूद वह अपने लक्ष्य तक पहुंच जाने में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

वस्तुतः मंगल पर्वत से ही व्यक्ति साहसी, निर्भीक और स्पष्टवक्ता बनता है।

बुध पर्वत (Mercury Mount)—कनिष्ठिका ऊँगली के नीचे (मूल में) हृदय रेखा या मंगल पर्वत के ऊपर जो स्थान है उस स्थान को बुध पर्वत कहते हैं। यह पर्वत भौतिक सम्पदा एवं भौतिक समृद्धि का सूचक है। बुध का क्षेत्र अच्छा हो तो व्यक्ति को व्यापारिक एवं वैज्ञानिक कार्यों में सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान, ज्योतिषी, धनी एवं कवि होता है। कानून का ज्ञाता, लेखक एवं हंसमुख प्रकृति का भी होता है। यदि बुध पर्वत अत्यन्त ऊँचा हो तो वह ठग, चालाक, धूर्त, विश्वासघाती और लफंगा भी होता है। ऐसे व्यक्ति धन के पीछे पागल रहते हैं। यदि बुध पर्वत नीचा हो तो अप्रसन्न, आलसी, धनहीन एवं मन्दबुद्धि होते है।

यदि बुध पर्वत सूर्य की ओर झुका हुआ हो तो ऐसा व्यक्ति जीवन में आसानी से सफलता प्राप्त कर सकता है। ऐसे व्यक्ति व्यापार कुशल, प्रतापी, चिकित्सक, वकील, ज्योतिषी आदि होता है। ऐसे व्यक्ति विद्या-व्यसनी होते हैं। यदि बुध पर्वत मंगल पर्वत की ओर झुका हो तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त हंसमुख प्रकृति का होता है। यही फल मंगल, बुध दोनों के उच्च होने का भी समझना चाहिए। जिन व्यक्तियों के बुध व गुरु के पर्वत समान रूप से ऊँचे उठे हों, वे विद्याभ्यासी, संगति प्रिय, सफल साहित्यकार, पत्रकार, लेखक होते हैं। श्रमवान और उद्यमी होते हैं। मान-सम्मान प्राप्त करने वाले होते हैं। बुध व शुक्र का पर्वत समान रूप से ऊँचे हों तो वह विलक्षण ज्ञान वाला, शृंगार प्रिय और संतति सुख से पूर्ण होता है।

जिनके हाथों में बुध पर्वत सही रूप से विकसित होता है, वे मनोविज्ञान के क्षेत्र में माहिर होते हैं। ऐसे व्यक्ति अवसरवादी एवं भौतिकवादी कहे जाते हैं। धन-संचय करने में ये उचित-अनुचित आदि का कोई ख्याल नहीं रखते। यदि बुध पर्वत पर कोई तिरछी रेखा आई हो तो उसे गुप्त परेशानी होती है। यदि इस पर त्रिकोण Δ का चिन्ह हो तो ऐसा व्यक्ति यशस्वी, मान प्रतिष्ठा वाला या व्यापारी होकर प्रचुर धन पैदा करता है। यदि बुध पर्वत पर दो चार खड़ी रेखाएं हों तो वह डाक्टर या औषधि संग्रहकर्ता होता है। यदि बुध का पर्वत ऊँचा उठा हुआ कुछ चौरस दिखे तो वह ज्योतिषी होता है। यदि हथेली पर बुध पर्वत का अभाव हो तो उसका जीवन दरिद्रता में ही व्यतीत होता है। लम्बी उंगलियों के साथ विकसित बुध पर्वत हो तो वह व्यक्ति स्त्रियों के प्रति विशेष आसक्ति रखने वाला होता है।

यदि बुध पर्वत अपने आप में पूर्णतः श्रेष्ठ एवं विकसित हो तो ऐसा व्यक्ति जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है।

बृहस्पति क्षेत्र (Jupiter Mount)—तर्जनी अँगली के मूल भाग में राहु पर्वत के ऊपर शनि पर्वत के पास जो स्थान है उसे गुरु का क्षेत्र या गुरु पर्वत कहते हैं। हथेली में गुरु का पर्वत उच्च हो तो उस व्यक्ति में देव-तुल्य सभी गुण पाए जाते हैं। ऐसा व्यक्ति तेजवान, ओजस्वी, दर्शनीय विद्वान्, उदार, ज्योतिषी, अध्यापक होता है। वह धनधान्य युक्त, सदाचारी, सत्यवक्ता होने के साथ-साथ जहां स्वयं की उन्नति करता है, वहाँ दूसरों को उन्नति देने में सहायक रहता है। यदि गुरु का पर्वत अत्यन्त उच्च हो तो व्यक्ति आडम्बर वाला, मिथ्याभिमानी, स्वार्थी, धोखा देने में चतुर तथा स्वेच्छाचारी होता है।

यदि गुरु पर्वत अल्पविकसित या अविकसित होता है तो उन व्यक्तियों में उपर्युक्त गुणों की न्यूनता समझनी चाहिए। विपरीत योनि के प्रति इनके मन में कोमल भावनाएं होती हैं। यदि गुरु पर्वत का झुकाव शनि की ओर हो तो ऐसा व्यक्ति चिन्तनशील तथा अपने ही कार्यों में लगा रहने वाला परन्तु जीवन में सफलता न मिल पाने के कारण धीरे-धीरे उसमें निराशा की भावना आने लगती है। यदि गुरु पर्वत राहु पर्वत की ओर झुका हो तो ऐसा व्यक्ति धूर्त तथा रोगी होता है। यदि गुरु, शुक्र का पर्वत एक समान ऊँचा हो तो ऐसा व्यक्ति असत्य वक्ता, शत्रु-युक्त, अविचारी, झगड़ालू तथा स्त्रियों के साथ रहकर भी उनसे कम प्रीति वाला होता है। यदि गुरु पर्वत निम्न तथा शनि पर्वत ही अधिक उठा हो तो वह समाज व घर वालों से घृणा करता है। तथा इन दोनों के एक समान ऊँचे होने पर धैर्यवान्, भाग्यवान और अदृष्टवादी होता है।

अगर बृहस्पति-क्षेत्र पर क्रास (X) का चिन्ह हो तो जातक धार्मिक क्षेत्र में बहुत ऊँचा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उठ जाता है। उसका वैवाहिक जीवन सानन्द रहता है। यदि गुरु पर्वत पर सीधी रेखा हो तो ऐसा व्यक्ति यशस्वी होता है परन्तु बहुत सी रेखाएं होने पर अपयश प्राप्त होता है। गुरु पर्वत पर त्रिकोण चिन्ह हो तो व्यक्ति सात्विक विचार, चतुर व कुशल होता है। यदि त्रिकोण के साथ सूर्य रेखा भी हो तो ऐसा व्यक्ति किसी संस्था का मन्त्री होता है। गुरु के पर्वत पर तारा का चिन्ह हो तो अच्छा फल देता है किन्तु परिवार की ओर से परेशानी कारक होता है। यदि गुरु के पर्वत पर गुणा (क्रास) का चिन्ह हो तथा तर्जनी के मूल में स्पष्ट हो तो उस व्यक्ति का विवाह सम्पन्न एवं कुलीन घराने में होता है। ऐसे व्यक्ति ससुराल पक्ष से सहयोग प्राप्त कर अच्छी उन्नति प्राप्त कर लेते हैं। अस्पष्ट गुणा का चिन्ह या अत्यन्त सूक्ष्म होने पर उसके मस्तक पर चोट चपेट आदि से कोई घाव अवश्य हो जाता है।

यदि व्यक्ति की उंगलियां नुकीली हों तथा गुरु पर्वत विकसित हो तो वह व्यक्ति अंधविश्वासी होता है। वर्गाकार उंगलियों के साथ विकसित गुरु पर्वत हो तो वह जीवन में निरंकुश तथा अत्याचारी बन जाता है। यदि उंगलियां लम्बी हों तो वह व्यक्ति अपव्ययी तथा भोगी होता है। यदि गुरु पर्वत अशुभ हो तो उसे कुष्ठ, चर्म, क्षय-रोग, गठिया, पीलिया तथा फेफड़े सम्बन्धी रोग रहता है।

वस्तुत: गुरु पर्वत जीवन में अत्यधिक सहायक तथा उन्नति की ओर अग्रसर करने वाला पर्वत कहा गया है।

शुक्र पर्वत (Venus Mount)—अंगूठे के नीचे और जीवन रेखा के भीतर का भाग शुक्र क्षेत्र कहलाता है। शुक्र पर्वत से सौन्दर्य प्रियता, काम वासना, संगीत प्रियता, स्वास्थ्य, संतान उत्पन्न करने की शक्ति का विचार किया जाता है। अगर किसी व्यक्ति के हाथ में शुक्र का पर्वत उठा हुआ न हो तो उस व्यक्ति में उपर्युक्त गुण न्यून मात्रा में होता है। शुक्र क्षेत्र का साधारण उच्च होना अच्छा है। साधारण उच्च होने पर जातक में उपर्युक्त सभी गुण पाये जाते हैं।

शुक्र का अति उच्च होना अशुभ होता है। अतिउच्च होने पर मनुष्य अत्यधिक विलासी, व्यभिचारी व कामुक होता है। शुक्र पर्वत उठावदार व शुभ होने पर व्यक्ति निरोगी होता है, और वह सुख-शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करता है। उसकी ललित कला में अधिक रूचि होती है। यदि शुक्र पर्वत धंसा हुआ अथवा गहरा हो तो वह व्यक्ति नपुंसक होता है तथा धातु रोग से ग्रसित होता है। शुक्र पर्वत पर व्रत या बिन्दु के चिन्ह अशुभ होते हैं। शुक्र क्षेत्र से कोई रेखा वृहस्पति की ओर जावे तो उस व्यक्ति को यश, प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। यदि कोई रेखा शुक्र से निकल कर भाग्य रेखा को काटे तो धन हानि होती है। शुक्र पर्वत हथेली में अनुपस्थित होने पर व्यक्ति निर्मोही हो जाता है। वह उदासीन व सन्यासी बन जाता है। हाथ में शुक्र पर्वत अच्छा होने पर चेहरा लावण्यमय व प्रभावशाली होता है।

शनि पर्वत (Saturn Mount)—यह मध्यमा अंगुली के नीचे होता है। एकान्त-प्रियता, परिश्रम-शीलता व किसी वस्तु का गंभीरता पूर्वक अध्ययन इसके स्वाभाविक गुण है। यदि शनि पर्वत अत्यधिक उन्नत हो तो उस जातक पर शनि का प्रभाव अधिक रहता है। अत: वह मनुष्य चिन्तायुक्त व दु:खी रहता है तथा अविश्वासी होता है। अगर शनि का क्षेत्र साधारण उन्नत हो तो वह जातक विचारशील होता है। अगर शनि का पर्वत बिगड़ा हुआ हो तो उस मनुष्य का स्वास्थ्य खराब रहता है व विशेष रूप से वह पित-वात रोग का रोगी होता है। शनि का पर्वत उठावदार व शुभ हो तो उस व्यक्ति का जीवन सुखी होता है। आवश्यकता से अधिक उठा हुआ हो तो वह एकान्त-प्रिय और वैराग्य की भावना रखने वाला होता है। शनि का पर्वत गहरा होने पर मनुष्य का जीवन दु:खी होता है और वह कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। जिस व्यक्ति के शनि पर्वत पर त्रिकोण का चिन्ह हो, वह यौगिक क्रियाओं और गुप्त विद्याओं को जानने वाला होता है। शनि पर्वत पर वृत या बिन्दु के चिन्ह दु:ख व दरिद्रता के चिन्ह होते हैं। शनि पर्वत प्रधान व्यक्ति एकान्त-प्रिय होने के कारण भीड़ से बचना चाहते हैं। शनि क्षेत्र प्रधान व्यक्ति प्राय: इन्जीनियर, जादूगर, साहित्यकार व वैज्ञानिक होते हैं। नृत्य, गान, संगीत इत्यादि में इनकी रुचि नहीं होती है। ये संदेहशील प्रकृति के व्यक्ति होते हैं। शनि क्षेत्र अत्यधिक विकसित होने पर जातक आत्महत्या तक कर लेता है। वे स्वभाव से उदासीन व चिड़चिड़े होते हैं। जिस व्यक्ति के हाथ में शनि पर्वत वृहस्पति की और झुका हुआ हो तो श्रेष्ठ होता है। उस व्यक्ति में वृहस्पति के गुणों का समावेश हो जाता है। वह व्यक्ति उन्नतशील बन जाता है। सूर्य की ओर झुका हुआ होने पर व्यक्ति निष्क्रय व उदासीन हो जाता है। शनि क्षेत्र पर रेखाएं शुभ होती है परन्तु चिन्ह जैसे वृत्त आदि अशुभ माने गए हैं।

ऊपर संक्षेप में भिन्न ग्रह क्षेत्रों के लक्षण और फल बताये गये हैं। किसी हाथ में एक, किसी में दो, किसी में तीन ग्रह क्षेत्र उच्च रहते हैं। इसलिए अलग-2 फलों का मिलान पर, परिणाम में जो फल आवे, वह कहना चाहिए।

विवाह सम्बन्धी योग–

(1) यदि किसी स्त्री के हाथ में भाग्यरेखा का उदय चन्द्र पर्वत से हुआ हो और वह स्पष्ट रूप से आगे बढ़ती हुई शनि के पर्वत पर चलीगई हो तो ऐसी स्त्री विवाह के बाद अपने पति के अधीन रहती है।

(2) यदि स्त्री के दाएँ हाथ में भी ऐसी ही रेखा हो तो उसको उन्नति तथा भाग्योदय में सहायता प्राप्त होती है।

(3) यदि स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा चन्द्र पर्वत से उदित होकर गुरु-पर्वत पर गई हो वह धनी पुरूष की पत्नी होती है। उसे सुख, यश एवं विदेश-गमन आदि के लाभ प्राप्त होते हैं।

(4) यदि विवाह रेखा में से एक शाखा हृदय-रेखा की ओर लटकी हुई हो परन्तु हृदय-रेखा से मिली न हो तो ऐसी स्त्री का पति शराबी होता है।

(5) यदि हृदय रेखा गुरु क्षेत्र से उदय हो तथा चन्द्र से निकलती हुई भाग्य रेखा आकर हृदय-रेखा में विलीन हो गई तो ऐसी स्त्री को अत्याधिक प्रेम करने वाला पति प्राप्त होता है।

(6) यदि हृदय-रेखा शृंखलाकार होकर बीच में शनि-क्षेत्र की ओर झुकी हुई हो तो ऐसी रेखा वाली स्त्रियों को पुरुषों की परवाह नहीं रहती।

(7) यदि भाग्य-रेखा, चन्द्र क्षेत्र से प्रारम्भ होकर सुन्दर गहरे रूप में बृहस्पति के क्षेत्र तक चली जाये तो उस स्त्री का अपने पति अथवा किसी अन्य पुरुष की सहायता से भाग्योदय होता है।

(8) यदि किसी विवाह-रेखा स्पष्ट तथा सुन्दर हो, साथ ही चन्द्र क्षेत्र से आई हुई कोई प्रभाव रेखा भाग्य रेखा में आकर मिल जाये तो ऐसी स्त्री का विवाह किसी धनी कुल में होता है। उसे अपने सम्बन्धियों के अतिरिक्त अन्य व्यक्ति के सहयोग से भाग्योदय होता है।

(9) यदि विवाह-रेखा में से पतली-पतली शाखायें निकल-कर हृदय रेखा की ओर गई हो तो ऐसी स्त्री के पति का स्वास्थ्य खराब रहने के कारण दाम्पत्य सुख में बाधा होती है।

अधिक जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से 'हस्तरेखा विज्ञान' मंगवाएँ मूल्य 120/- सौ रुपये अग्रिम
पता–जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर चौक, जालन्धर।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रियता, परिश्रम-शीलता व किसी वस्तु की गंभीरता पूर्वक अध्ययन इसके स्वाभाविक गुण है। यदि शनि पर्वत अत्यधिक उन्नत हो तो उस जातक पर शनि का प्रभाव अधिक रहता है। अतः वह मनुष्य चिन्तायुक्त व दुःखी रहता है तथा अविश्वासी होता है। अगर शनि का

पति का स्वास्थ्य खराब रहने के कारण दाम्पत्य सुख में बाधा होती है।

अधिक जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से 'हस्तरेखा विज्ञान' मंगवाएँ मूल्य 120/- सौ रुपये अग्रिम (एडवांस) भेजें।

पता—जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर।

अरिष्ट ग्रहों के दान, पूजा एवं उपाय

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के लिए ज्योतिष शास्त्र में अनेक प्रकार के उपाय बतलायें गए हैं—जैसे मंत्रजाप-हवन, दान, ग्रह औषधि स्नान, तीर्थ-स्नान, व्रत रखना, नग एवं यंत्र धारण करना इत्यादि। पाठकों के लाभार्थ, आगे कुछ उपायों का संक्षिप्त विवरण लिखा जाता है। **ध्यान रहे,** सूर्य चन्द्रादि ग्रहों की उपासना के माध्यम से हम सर्वपिता परमात्मा की ही उपासना करते हैं। क्योंकि विश्व के सभी सौरपिण्डों के द्वारा ईश्वर की असीम शक्ति की ही सतत अभिव्यक्ति हो रही है।

पूर्वा जन्मों में कृत शुभाशुभ कर्मों के अनुसार एवं ग्रहों के द्वारा अनुप्रेरित होकर मनुष्य ऐहिक जीवन में सुख-दुख, लाभ-हानि, इष्ट-अनिष्टादि फल प्राप्त करता है। जन्मपत्री एवं वर्ष कुण्डली में पड़े क्रूर ग्रह मनुष्य को प्रतिकूल एवं कठिन समस्याएं उत्पन्न करवाते हैं, जबकि शुभ एवं योगकारक ग्रह अनुकूल व सौभाग्यवर्द्धक परिस्थितियां बनाने में सहायक होते हैं।

यदि अशुभ ग्रहों के प्रभावस्वरूप बार-बार प्रयत्न करने पर भी जीवन में विघ्नों एवं विफलताओं का सामना पड़े और भाग्य साथ न देता हो, तो अशुभ ग्रहों की अनुकूलता हेतु ज्योतिष आचार्यों द्वारा प्रतिपादित अनिष्ट ग्रहों के उपायों को अपनाकर जीवन को स्वास्थ्य, खुशहाल एवं सुखी बनाने का प्रयास करना चाहिए।

◆सूर्य शान्ति के लिए उपाय◆

यदि किसी जातक की जन्म अथवा वर्ष कुंडली में सूर्य अशुभ कारक हो तो उसको निम्नलिखित मन्त्र की (अपनी सामर्थ्यानुसार) कम-से-कम 7000 की संख्या में जप करना चाहिए। जप का आरम्भ शुक्लपक्षीय रविवार या शुभ मुहूर्त्त के दिन प्रातः सूर्योदय से करना चाहिए। पाठ करते समय समीप ताम्र बर्तन में शुद्ध जल, ताण्डुल, लाल चन्दन, लाल पुष्प, गंगाजल, थोड़ा गुड़ डालकर पात्र को लाल वस्त्र, आम के पत्तों एवं नारियल द्वारा ढक लेना चाहिए। साथ ही दान योग्य वस्तुओं को संकल्पपूर्वक पहले से पास में रख लेनी चाहिएं।

बीज मंत्र—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः (जप संख्या 7000)

सूर्य दान हेतु वस्तुएँ—गेहूँ, लाल चन्दन, गुड़, लाल पुष्प, लाल वस्त्र, घी, लाल वर्ण की गाय, सुवर्ण, माणिक्य, ताम्र बर्तन, नारियल आदि लाल फल, मिष्ठान, दक्षिणा आदि।

उपाय—(1) तांबे की अँगूठी में माणिक्य अथवा विधिवत् तैयार किया हुआ सूर्य-यन्त्र (ताम्र पत्र पर) धारण करें।

(2) खाना खाते समय सोने अथवा तांबे के चम्मच का प्रयोग करना तथा 11 रविवार तक सूर्य स्नान करना। जब जन्म या वर्ष कुण्डली में सूर्य अशुभ हो तो।

(3) 108 रविवार तक ताम्र बर्तन में शुद्ध जल, लाल चन्दन मिलाकर सूर्य को अर्घ्य देकर सूर्य स्तोत्र का पाठ करना शुभ है।

(4) 40 या 43 दिन तक चलते पानी में गुड़ या तांबे के सिक्के बहाना शुभ होगा।

(5) सर्वप्रथम प्रातःकाल उठकर स्नान उपरान्त ताम्र कलश (गड़वी) में जल, दूध, पुष्प, गंध, लाल-चंदन आदि लेकर पूर्व दिशा में मुख करके गायत्री मंत्र तथा सूर्यार्घ्य मंत्र के उच्चारण से सूर्य को अर्घ्य प्रदान करना चाहिए।

(6) रविवार को नमक से परहेज़ रखें। लवणरहित सादा भोजन करें। ग्यारह रविवार पर्यन्त केवल दही और चावल का सेवन करना चाहिए।

◆चन्द्रमा शान्ति के लिए उपाय◆

जब जन्म या वर्ष कुण्डली में चन्द्र ग्रह अशुभ कारक हो तो निम्नलिखित मन्त्र की 11 हज़ार की संख्या में जप करना और तदुपरान्त दशमांश संख्या में हवन करना कल्याणकारी होगा। जप का आरम्भ पूर्णिमा या शुक्ल पक्ष के सोमवार से किसी शुभ मुहूर्त्त में करना चाहिए।

तन्त्रोक्त चन्द्र मंत्र—ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः (जप संख्या 11,000)

दान योग्य वस्तुएँ—चावल, सफेद चन्दन, शंख, कपूर, घी, दही, चीनी या मिश्री, क्षीर, मोती, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, श्वेत फल, चांदी, मिठाई और दक्षिणा। **उपाय=**

(1) चांदी के बर्तनों का प्रयोग करना एवं चारपाई के पायों में चांदी के कील ठुकवाना।

(2) सफेद मोतियों की माला अथवा चांदी की अँगूठी में मोती धारण करना।

यदि कुण्डली में चन्द्र अशुभ हो तो चन्द्रमा के अशुभत्व के निवारण हेतु उपाय—

(3) शीशे के गिलास में दूध, पानी आदि पीने से परहेज़ रखना तथा चाँदी के बर्तनों में दूध, पानी पीना शुभ होगा।

(4) पानी में कच्चा दूध मिलाकर चन्द्रमा का बीज मन्त्र पढ़ते हुए पीपल को डालना।

(5) लगातार 16 सोमवार व्रत रखकर सायंकाल सफेद वस्तुओं का दान करना चाहिए तथा पाँच छोटी कन्याओं को क्षीर सहित भोजन कराना चाहिए।

(6) सोमवार को ही प्रातःकाल स्नानादि करके ताम्र बर्तन में कच्ची लस्सी (जल तथा थोड़ा सा दूध) भगवान् की मूर्त्ति या शिवलिंग पर चढ़ाना चाहिए।

◆मंगल शान्ति के लिए उपाय◆

जन्म या वर्ष कुंडली में मंगल अशुभकारक एवं बाधाकारक हो, तो निम्न मन्त्र की कम-से-कम 10 हज़ार संख्या में शुक्ल पक्ष के मंगलवार से प्रारम्भ करें।

तन्त्रोक्त मंगल मन्त्र—ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः (जप संख्या 10,000)

दान योग्य वस्तुएँ—गेहूँ, मसूर, लाल बैल, घी, गुड़, सुवर्ण, मसूर, मूंगा, ताम्र बर्तन, कनेर पुष्प, लाल चन्दन, लाल वस्त्र, केशर, लाल फल, नारियल, मीठी चापाती, गुड़ से निर्मित रेवड़ियां, दक्षिणा आदि। मंगल का दान युवा ब्राह्मण को करना शुभ है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उपाय—जब कुण्डली में मंगल शुभ एवं योगकारक होता हुआ भी फल न करता हो तो निम्नलिखित उपाय शुभ होंगे—

(1) तांबे की अँगूठी में मूँगा धारण करना अथवा तांबे का कड़ा पहनना।

(2) मंगलवार को घर में गुलाब का पौधा लगाना तथा 108 दिन तक रात को तांबे के बर्तन में पानी सिरहाने रखकर घर में लगाए हुए गुलाब के पौधे को वहीं पानी डालना।

(3) मंगलवार का व्रत रखकर 27 मंगल किसी अपाहज को मीठा विशेषकर गुड़ से निर्मित भोजन खिलाना।

(4) नारियल को तिलक करके तथा लाल कपड़े में लपेटकर लगातार 3 मंगलवार चलते पानी में बहाएँ।

(5) लाल रंग की गाय या लाल वर्ण के कुत्ते को भोजन खिलाना शुभ होगा।

(6) मंगलवार का व्रत रखना चाहिए। विशषकर उन कन्याओं को जिनकी कुण्डली में मंगल मंगलीक योग बनकर विवाह में बाधा, विलम्ब उत्पन्न कर रहा हो—उन्हें मंगलागौरी का व्रत लगातार 7 मंगलवार रखना चाहिए।

◆बुध शान्ति के लिए उपाय◆

जन्म या वर्ष कुंडली में बुध ग्रह अशुभफली हो तो भगवान् विष्णु का ध्यान करके शुक्ल पक्ष के बुधवार अथवा किसी शुभ मुहूर्त्त में आरम्भ करके 9000 की संख्या में बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

तन्त्रोक्त बुध मन्त्र—ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः (जप संख्या 9000)

दान योग्य वस्तुएँ—मूंगी, 5 हरे फल, चीनी, हरे पुष्प, हरी इलायची, कांस्य-पत्र, पन्ना, सोना, हाथी का दांत, षड्रसों से युक्त भोजन हरी सब्ज़ी, हरा कपड़ा, दक्षिणा सहित दान करें।

उपाय—कुंडली में बुध शुभ होता हुआ भी फलकारक न हो तो निम्न उपाय शुभ होंगे—

(1) हरे रंग का पन्ना बुधवार को सोने की अँगूठी में धारण करना। हरे रंग के वस्त्रों को पहनना तथा हरे रंग के पर्दे लगाना शुभ होगा। हरे रंग की गाड़ी, स्कूटर या साईकिल आदि का प्रयोग करें। परन्तु यदि बुध अशुभ हो, तो हरे वस्त्र कदापि न पहनें।

(2) बुधवार को चाँदी या कांस्य के गोल टुकड़े को हरे रंग के कपड़े में लपेट कर जेब में रखें या भुजाओं के साथ बांधें।

यदि बुध अशुभ हो तो—(3) मूंगी साबत के सात दाने, हरा पत्थर, कांसे का गोल टुकड़ा, हरे वस्त्र में लपेट कर बुधवार को चलते पानी में बहाना शुभ होगा। पानी में बहाते समय कम-से-कम 7 बार बुध का बीज मन्त्र पढ़ें।

(4) हरे रंग के वस्त्र (परिधान) किसी हिजड़े को बुधवार के दिन शुभ होगा।

(5) बुधवार के दिन 6 इलायची हरे रूमाल में लपेटकर अपने पास रखें तथा इसके पश्चात् एक इलायची व तुलसीपत्र का सेवन करना।

◆गुरु शान्ति के लिए उपाय◆

जब किसी व्यक्ति की जन्म या वर्ष कुंडली में गुरु शुभ फल प्रकट न कर रहा हो तो उसे शुक्ल पक्ष के बृहस्पतिवार को, शुभ मुहूर्त्त में निम्नलिखित मन्त्र का 19,000 की संख्या में पाठ करना तथा तदोपरान्त दशांश संख्या में हवन करना कल्याणकारी होगा।

तन्त्रोक्त गुरु मन्त्र—ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः (जप संख्या 19,000)

गुरु दान की वस्तुएं—पीले चावल, पुखराज, चने की दाल, हल्दी, शहद, पीला कपड़ा, पीले पुष्प व पीले फल (जैसे—आम, केले आदि), कांस्यपात्र, घोड़ा, लवण, शक्कर, घी, धर्मग्रन्थ, सुवर्ण, पीली मिठाई, दक्षिणा आदि।

उपाय—जन्म कुंडली में बृहस्पति शुभ व योगकारक होता हुआ भी शुभ फल प्रकट न कर रहा हो तो निम्नलिखित उपाय करें—

(1) सोने या चांदी की अँगूठी में तर्जनी अंगुली में तथा शुभ मुहूर्त्त में पुखराज धारण करें।

(2) 27 गुरुवार केसर का तिलक लगाना तथा केसर की पुड़िया पीले रंग के कपड़े या कागज़ में अपने पास रखना शुभ होगा।

गुरु के अशुभ प्रभाव के निवारण हेतु निम्नलिखित उपाय करें—

(3) चलते पानी में बादाम एवं नारियल पीले कपड़े में लपेटकर बहाना शुभ होगा।

(4) पीपल के वृक्ष को गुरुवार एवं शनिवार को गुरु का बीज मन्त्र एवं गुरु गायत्री मन्त्र पढ़ते हुए जल दें।

(5) वृद्ध ब्राह्मण को यथाशक्ति पीली वस्तुएँ, जैसे—चने की दाल, लड्डू, पीले वस्त्रों, शहदादि का दान करना चाहिए।

◆शुक्र शान्ति के लिए उपाय◆

जन्म या वर्ष कुंडली में शुक्र अशुभकारक हो तो शुभ मुहूर्त्त में निम्न मन्त्र का 16,000 की संख्या में जाप करना तथा तदुपरान्त दशांश संख्या में हवन करना कल्याणकारी होगा।

तन्त्रोक्त शुक्र मन्त्र—ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः (जप संख्या 16,000)

शुक्रदान की वस्तुएँ—चाँदी, चावल, सुवर्ण, दूध, दही अथवा दुग्ध निर्मित वस्तुएँ, मिश्री, श्वेत चन्दन, श्वेत घोड़ा, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, श्वेत फल एवं सुगन्धित पदार्थ, दक्षिणा आदि।

उपाय—कुंडली में यदि शुक्र शुभ एवं योगकारक होता हुआ भी फलीभूत न हो रहा हो तो निम्न उपाय कल्याणकारी रहेंगे—

(1) चाँदी की कटोरी में सफेद चन्दन, मुश्कपूर, सफेद पत्थर का टुकड़ा रखकर सोने वाले कमरे में रखे चन्दन की अगरबत्ती जलाना शुभ होगा।

(2) घर में तुलसी का पौधा लगाना, सफेद गाय रखना, सफेद पुष्प लगवाना शुभ होगा तथा क्रीम रंग के रेशमी कपड़े में चाँदी के चौरस टुकड़े पर शुक्र यन्त्र खुदवाकर विधिपूर्वक अपने पास रखें।

शुक्र अशुभ प्रभावी होने की स्थिति में नीचे लिखे उपाय कल्याणकारी होंगे—

(3) शुक्रवार को श्री दुर्गा पूजन, 5 कन्या पूजन उन्हें खीरादि श्वेत वस्तुएँ देना तथा गौशाला में शुक्रवार से शुरु करके सात दिन तक गाय को हरा चारा, शक्कर एवं चरी डालना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

◆गुरु शान्ति के लिए उपाय◆

जब किसी व्यक्ति की जन्म या वर्ष कुंडली में गुरु शुभ फल प्रकट न कर रहा हो तो उसे

(3) शुक्रवार को श्री दुर्गा पूजन, 5 कन्या पूजन उन्हें खीरादि श्वेत वस्तुएं देना तथा गौशाला में शुक्रवार से शुरु करके सात दिन तक गाय को हरा चारा, शक्कर एवं चरी डालना।

(4) सफेद रंग के पत्थर पर चन्दन का तिलक लगाकर चलते पानी में बहा देना या चांदी के टुकड़े पर शुक्र यन्त्र खुदवा कर रेशमी क्रीम रंग के वस्त्र में लपेट कर शुक्रवार को नीम के वृक्ष के नीचे दबाना।

(5) शुक्रवार का विधिवत् व्रत रखना चाहिए तथा पाँच शुक्रवार पाँच कन्याओं का पूजन कर उन्हें मिश्री सहित श्वेत वस्तुओं की भेंट देनी चाहिए।

◆शनि शान्ति के लिए उपाय◆

जन्म या वर्ष कुण्डली में शनि अशुभ फल प्रदायक हो तो किसी शुभ मूहूर्त्त में आरम्भ करके निम्न मन्त्र का श्रद्धापूर्वक भगवान् शंकर का एवं शनि के रूप का ध्यान करते हुए 23 हज़ार संख्या पूर्ण करने के पश्चात् उसी मन्त्र सहित दशांश की संख्या में हवन करने से शुभ प्रभाव पड़ता है।

तन्त्रोक्त शनि मन्त्र—ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः (जप संख्या 23,000)

शनि के दान योग्य वस्तुएँ—नीलम, लोहा, तिल, उड़द (माश), सरसों का तेल, काला वस्त्र, काली गाय, कुल्थी, लौह निर्मित पात्र, जूता, भैंस, कस्तूरी, सुवर्ण, नारियल, काले अथवा नीले पुष्प, फल दक्षिणा इत्यादि।

उपाय—शनि शुभ होता हुआ भी शुभफल प्रकट न कर रहा हो तो निम्न उपाय शुभ होंगे—

(1) सोने की अँगूठी में नीलम धारण करें। उसके अभाव में नाव के कील की अँगूठी अथवा काले घोड़े के नाल (खुरों) की अँगूठी बनवाकर मध्यमा अंगूली में धारण करें।

(2) घर में नीले रंग के पर्दे तथा नीले रंग की चादरों का प्रयोग करना और स्वयं भी बहुधा नीले रंग के वस्त्रों का प्रयोग करना शुभ होगा। जब कुण्डली में शनि नीच या अरिष्टकर फल प्रकट कर रहा हो तो निम्न उपाय करें—

(3) शनिवार का व्रत और शनि स्तोत्र का पाठ करें।

(4) स्टील या लोहे की कटोरी में तेल का छाया-पात्र करके तेल पाँच शनिवार तक आक के पौधे पर अथवा **'शनि मन्दिर'** में डालना शुभ होगा। 5वें शनिवार को तेल चढ़ाने के बाद तेल वाली कटोरी को वही दबा देना या वही चढ़ा देना शुभ होगा। तेल चढ़ाते समय शनि का बीज मन्त्र पढ़ें।

◆राहु शान्ति के लिए उपाय◆

जन्म या वर्ष कुंडली में राहु अशुभ फलदायक हो तो निम्नलिखित मन्त्र का 18,000 की संख्या में जाप करके दशमांश का हवन करें—

मन्त्र—ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः (जप संख्या 18,000)

राहु दान योग्य वस्तुएँ—सप्तधान्य, गोमेद, सीसा, काला घोड़ा, तिल, तैल, सोने या चाँदी का सर्प, उड़द, खड्ग (तलवार), कवच, नीला वस्त्र, काले रंग के पुष्प, नारियल, दक्षिणा आदि।

उपाय—अशुभ राहु या राहु की महादशा या अन्तर्दशा में निम्नलिखित उपाय करें—

(1) काले व नीले वस्त्र पहनने से परहेज़ करें तथा चाँदी की चेनी व लॉकेट पहनना शुभ होगा।

(2) चापाती को खीर लगाकर कौओं को एवं काले रंग की गाय को खिलाएँ।

(3) काले तिल, कच्चा कोयला, नीले रंग के ऊनी कपड़े में बाँधकर शनिवार अथवा राहु के नक्षत्रों में घर के आंगन में दबाना शुभ होगा। अथवा नीले वस्त्र के बांधे रूमाल को राहु मन्त्र पढ़ते जल में प्रवाह कर देवें।

◆केतु शान्ति के लिए उपाय◆

जन्म या वर्ष कुण्डली में केतु अशभु फलकारी हो तो किसी शुभ मुहूर्त्त में नीचे लिखे मन्त्र की 17 हज़ार की संख्या में जाप करें तथा दशमांश का हवन करें।

मन्त्र—ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः (जप संख्या 17,000)

केतु की दान योग्य वस्तुएँ—लहसुनिया, लोहा, बकरा, नारियल, तिल, सप्तधान्य, धूम्र (धुएँ जैसा) वर्ण का वस्त्र, कस्तूरी, लौह चाकू, कपिला गाय, दक्षिणा सहित।

उपाय—(1) केतु की शान्ति के लिए श्री गणेश चतुर्थी का व्रत रखें तथा श्रीगणेश पूजन तथा लड्डुओं का भोग लगाना शुभ होगा।

(2) काले वस्त्र में बाँधकर काले व सफेद तिल चलते पानी में बहाना।

(3) रंग-बिरंगी (चितकबरी) गाय की सेवा करना एवं रंग-बिरंगे कुत्ते को दूध व चापाती (Bread) डालना।

——देवकार्य (देवपूजा कैसे करें)——

1. शालग्राम, तुलसी और शंख—इन तीनों को एक साथ रखने से भगवान् बहुत प्रसन्न होते हैं। शालग्राम तथा शंख पर रखी हुई तुलसी को अलग करना पाप है। शालग्राम से तुलसी अलग करने वाले को जन्मान्तर में स्त्री-वियोग की प्राप्ति होती है और शंख से तुलसी अलग करने वाला भार्याहीन तथा सात जन्मों तक रोगी होता है।

2. शालग्राम को बेचने वाला और खरीदने वाला—दोनों ही नरक में जाते हैं।

3. शिवलिंग पर चढ़े हुए फल, फूल, नैवेद्य, पत्र एवं जल ग्रहण करना निषिद्ध है। यदि शालग्राम से उनका स्पर्श हो जाय तो वे ग्रहण करने योग्य हो जाते हैं।

4. घर में अँगूठे के पर्व से लेकर एक बित्ता परिमाण की ही प्रतिमा होनी चाहिए। इससे बड़ी प्रतिमा घर में शुभ नहीं है।

5. घर में प्रतिदिन पूजा के लिये वही प्रतिमा कल्याणदायिनी होती है, जो स्वर्ण आदि धातुओं की बनी हो तथा कम-से-कम अँगूठे के बराबर तथा अधिक-से-अधिक एक बित्तेकी हो। जो टेढ़ी हो, जली हुई हो, खण्डित हो, जिसका मस्तक या आँख फूटी हुई हो अथवा जिसे चाण्डाल आदि अस्पृश्य मनुष्यों ने छू दिया हो, वैसी प्रतिमा की पूजा नहीं करनी चाहिये।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अनिष्ट ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा में उपाय विचार

ज्योतिष शास्त्र का क्षेत्र बड़ा व्यापक एवं महत्त्वपूर्ण है और उसकी शाखाएँ भी अनन्त है तथा उपासनासे उसका बड़ा गहन सम्बन्ध है। मनुष्य अपने पूर्वकृत दुष्कर्मों के कारण ही कष्ट भोगता है। उसकी निवृत्तिके लिये उपासना आदि सत्कर्म ही उपाय हैं, इसलिये बुद्धिमान् मनुष्य को दुष्कर्मों से दूर रहते हुए प्रत्येक क्षण देवोपासनामें ही निरत रहना चाहिये। ज्योतिष शास्त्र को कालविधायक शास्त्र या काल (समय) ज्ञान-निर्णायक शास्त्र भी कहा जाता है। यद्यपि काल-ज्ञान के अन्य भी उपाय हैं, किन्तु प्रत्यक्ष शास्त्र होने से ज्योतिष अन्यतम शास्त्र है। ज्योतिष में भी स्वप्न, शकुन, प्रश्न, दशा-महादशा आदि के माध्यम से समय का परिज्ञान किया जाता है। सूर्य-चन्द्रादि ग्रहों तथा नक्षत्रादि की सम्यक् गणना एवं योग से भूत-भविष्य तथा वर्तमान—तीनों समयों की बातों की जानकारी होती है। ज्योतिष शास्त्र में जातक की जन्मकुण्डली के अनुसार मिलने वाले सुख-दुःखों की फलप्राप्ति में काल-निर्णय का बड़ा महत्त्व है, जिन्हें ग्रहों की दशा, अन्तर्दशाओं तथा गोचर आदि के माध्यम से जाना जाता है।

'बृहत्पाराशरहोराशास्त्र' नामक ग्रन्थ में प्रायः चालीस प्रकार की दशाओं की चर्चा है, किन्तु व्यवहार में विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी तथा योगिनी दशा का विशेष चलन है। यहां केवल इतना ज्ञात करना है कि कौन-सी दशा-अन्तर्दशा में अनिष्टकारक योग होने पर भगवान् शिव की उपासना करनी चाहिये। उदाहरण हेतु कुछ अंश यहाँ दिये जाते हैं—

(१) **सूर्य की महादशा** में सूर्य की अनिष्टकारक अन्तर्दशा हो तो उस दोष की निवृत्ति के लिये मृत्युंजय मन्त्र का जप करना चाहिये। इससे समस्त दोषों की निवृत्ति हो जाती है और भगवान् शिव एवं ग्रहराज सूर्य देव का अनुग्रह प्राप्त होता है—

तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युंजयजपं चरेत्॥ सूर्यप्रीतिकरीं शान्तिं कुर्यादारोग्यमादिशेत्।

—इसी प्रकार सूर्य की महादशा में शनि एवं केतु की अन्तर्दशा होने पर **मृत्युंजय मन्त्र का अनुष्ठान करने से अपमृत्यु का निवारण होता है—'मृत्युंजयजपं चरेत्।'**

(२) **चन्द्रमा की महादशा** में गुरु की अन्तर्दशा होने पर यदि अनिष्टकारक योग हो तो अपमृत्यु होती है, इसलिये इस दोष की निवृत्ति के लिये 'शिवसहस्रनाम' का जप करना चाहिए—**'तद्दोषपरिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत्।'** शनि की अन्तर्दशा होने पर शरीर में कष्ट होता है, अतः मृत्युंजय मन्त्र का जप करना चाहिये। **चन्द्रमा में केतु** की अन्तर्दशा में भय होता है तथा शरीर में रोग उत्पन्न होते हैं, इसलिये मृत्युंजय मन्त्र का जप करना चाहिये—**'मृत्युंजयं प्रकुर्वीत सर्वसम्पत्प्रदायकम्।'** इसी प्रकार **चन्द्र में शुक्र** की अन्तर्दशा में तथा **सूर्य की अन्तर्दशा** में क्रमशः रुद्र-जप तथा शिवपूजन करना चाहिए—**'तद्दोष-विनिवृत्त्यर्थं रुद्रजापं च कारयेत्, तद्दोषपरिहारार्थं शिवपूजां च कारयेत्।'**

(३) **मंगल की महादशा या अन्तर्दशा में** रुद्र-जप तथा वृषभदान करना चाहिये। राहु की अन्तर्दशा होने पर नाग का दान, ब्राह्मण-भोजन तथा मृत्युंजय मन्त्र के जप कराने से आयु एवं आरोग्य की प्राप्ति होती है।

मंगल में बृहस्पति की **खराब अन्तर्दशा** होने पर शिवसहस्रनामावलीका जप करना चाहिये—**'तद्दोष-परिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत्।'** इसी प्रकार शनि की दोषयुक्त अन्तर्दशा में मृत्युंजय मन्त्र के जप का विधान है।

(४) **राहु की महादशा** में बृहस्पति की अन्तर्दशा दोषकारक होने पर अपमृत्यु की सम्भावना रहती है, इसलिये स्वर्णप्रतिमा का दान तथा शिवपूजन करना चाहिये—**'स्वर्णस्य प्रतिमादानं शिवपूजां च कारयेत्।'**

(५) बृहस्पति की महादशा में **अनिष्टकारक बृहस्पति** के योग होने पर शिवसहस्रनामका जप, रुद्र-जप तथा गोदान करने से सुख-शान्ति की प्राप्ति होती है—**'तद्दोषपरिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत्। रुद्रजाप्यं च गोदानं कुर्यादिष्टं समाप्नुयात्॥'** इसी प्रकार राहु की अन्तर्दशा होने पर मृत्युंजयमन्त्र के जपका विधान है।

(६) **शनि की महादशा** में शनि तथा राहु की खराब अन्तर्दशा होने पर मृत्युंजय-मन्त्र का जप कराना चाहिये। इसी प्रकार बृहस्पति की अनिष्टकारक अन्तर्दशा होने पर शिवसहस्रनाम का जप तथा स्वर्ण दान करना चाहिये। इससे आरोग्य प्राप्त होता है और सभी बाधाएँ दूर हो जाती हैं—

तद्दोषपरिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत्। स्वर्णदानं प्रकुर्वीत ह्यारोग्यं भवति ध्रुवम्॥

(७) **बुध की महादशा** में मंगल, बृहस्पति एवं शनि की अन्तर्दशा यदि ठीक न हो तो वृषभ-दान और मृत्युंजय-मन्त्र तथा शिवसहस्रनाम के जप करने से अपमृत्यु का निवारण होता है तथा सर्वसौख्य प्राप्त होता है—

अनड्वाहं प्रकुर्वीत मृत्युंजयजपं चरेत्। तद्दोषपरिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत्॥

(८) **केतु की महादशा** सात वर्ष तक रहती है। इस सात वर्ष में निश्चित क्रम से सभी ग्रह अपना समय अन्तर्भुक्त करते है। केतु में केतु तथा बृहस्पति ग्रह की दोषकर अन्तर्दशा रहने पर स्वास्थ्य-हानि तथा आत्म बन्धु से वियोग और अपमृत्यु होती है, ऐसी स्थिति में मृत्युंजय-जप तथा शिवसहस्रनाम का पाठ करने से सभी दुर्योग दूर हो जाते हैं।

(९) **शुक्र ग्रह की महादशा** में दोषयुक्त राहु, बृहस्पति तथा केतु की अन्तर्दशा में मृत्युंजय मन्त्र के जप करने से अपमृत्यु दूर होती है और सौख्य प्राप्त होता है तथा भगवान् शंकर की प्रसन्नता प्राप्त होती है— **तद्दोषपरिहारार्थ मृत्युंजयजपं चरेत्।**

उपर्युक्त संक्षिप्त विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि अनिष्टकारक दुर्योगों में भगवान् शंकर की **सहस्रनामावली के पाठ**, श्रीमहामृत्युंजप मन्त्र के जप, रुद्राष्टाध्यायीका पाठ, शिवलिङ्गार्चन, अभिषेक, स्तोत्र-पाठ अथवा अन्य जिस-किसी भी साधन से आशुतोष की प्रसन्नता प्राप्त कर लेने पर ग्रहजन्य सभी बाधाएँ शान्त हो जाती है, अकालमृत्यु नहीं होती। और सभी दिव्य सुख भोग प्राप्त हो जाते हैं। **मारकेश-ग्रहों की दशा-अन्तर्दशा** में तो प्रायः **महामृत्युंजय मन्त्र के जप का** विधान निर्दिष्ट हैं, महर्षि मार्कण्डेयजीने भी अत्यल्प आयु का योग जानकर भगवान् शिव की शरण ग्रहण की थी और उनकी **'चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः'** की अटूट निष्ठा थी। उपायों सम्बन्धी और अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी आगामी पुस्तक ''अनिष्ट ग्रहों के सुनहरी उपाय व टोटके पढ़ें॥''

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

एवं आरोग्य की प्राप्ति होती है।

मंगल में बृहस्पति की **खराब अन्तर्दशा** होने पर शिवसहस्रनामावलीका जप करना चाहिये—

। उपायों सम्बन्धी और अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी आगामी पुस्तक ''अनिष्ट ग्रहों के सुनहरी उपाय व टोटके पढ़ें॥''

सूर्यादि ग्रहों के अनिष्टफल की शान्ति हेतु दान एवं जपादि मन्त्र

													जप संख्या	जपकाल	जपनीय बीजमन्त्राः	हवन समिधा
सूर्य	कनक	माणिक्य	तांबा	सोना	लाल गाय	गुड़	घी	कमलादि	रक्तवस्त्र	लालचंदन	मूंगा	केशर	७०००	सूर्योदय	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	आक् काष्ठ
चन्द्र	चावल	मोती	चांदी	सोना	श्वेत बैल	मिश्री	दही	श्वेत पुष्प	श्वेतवस्त्र	श्वेतचंदन	शंख	कपूर	११०००	संध्याकाले	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	पलाश
मंगल	मसूर	मूंगा	तांबा	सोना	लाल बैल	गुड़	घी	लाल कनेर	लालवस्त्र	लाल चंदन	केशर	कस्तूरी	१००००	सू.उ. २।१५	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	खैर
बुध	मूंग	पन्ना	कांस्य	सोना	शस्त्र	शक्कर	घी	सर्व रंग पु.	हरावस्त्र	अनेक फल	हाथीदांत	कपूर	९०००	सू.उ. ५ घड़ी	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	अपामार्ग
गुरू	पीतधान्य	पुखराज	कांस्यपात्र	सोना	अश्व	लवण श	घी	पीले पुष्प	पीतवस्त्र	पीला फल	धर्मग्रंथ	लवणशहद	१९०००	संध्याकाले	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	पीपल
शुक्र	चावल	हीरा	चांदी	सोना	श्वेत घोड़ा	मिसरी	दूध	श्वेत पुष्प	सफेदवस्त्र	सफेद चंदन	दही	सुगन्धित द्रव्य	१६०००	सू. उ. काल	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	गूलर
शनि	उड़द	नीलम	लोहा	सोना	काली गाय	कुलथी	तैल	काले पुष्प	कालावस्त्र	काले जूते	भैंस	कस्तूरी	२३०००	संध्याकाल	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	शमी
राहु	सप्तधान्य	गोमेद	सीसा	सोना	काला घोड़ा	ताम्र पात्र	तैल	कृष्ण पुष्प	नीलवस्त्र	नारियल	कंबल	खड्ग	१८०००	रात्रि	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	दूर्वा
केतु	सप्तधान्य	लसनिया	लोहा	सोना	बकरा	नारियल	तेल	धूम्र पुष्प	कालावस्त्र	शस्त्र ध्वज	कंबल	कस्तूरी	१७०००	रात्रि	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	कुशा
मुंथा	चावल	मोती	कांस्यपात्र	सोना	श्वेतचंदन	ऋतुपुष्प	घृत	श्वेतपुष्प	श्वेतवस्त्र	हाथीदांत	मुंथेश ग्रह.	ग्रह अनुसार	मुंथेश ग्रह अनुसार	प्रातः	मुन्था स्वामी मन्त्र	

विशेष—ध्यान रहे, प्रत्येक ग्रह के दाने के साथ यथाशक्ति दक्षिणा भी अवश्य देनी चाहिए। **सप्तधान्य**—गेहूँ, उड़द, मूंगी, चने, जौं, कंगनी और धान्य, चावल।

सूर्यादि ग्रहों के अरिष्ट निवारण हेतु औषधि स्नान

सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मनःशिला	पंचगव्य	बिल्व छाल	गोबर	चमेलीपुष्प	पिपरामूल	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गोदूध	लाल पुष्प	अक्षत	पुष्प	जायफल	सूरमा	तारपीन	तारपीन
देवदारू	गोबर	हींग	मोती	श्वेत सरसों	केशर	लोबान	मुत्थरां	तिलपत्र
केशर	गजमद	गोदनी	शहद	शहद	मूली बीज	सौंफ	गजदंत	गजदंत
खश	शंख सीप	जटामांसी	सुवर्ण	गुलर	मैनशिला	खश	कस्तूरी	छागमूत्र
रक्तपुष्प	गंगाजल	मौलसिरी	जायफल	दमयंती	इलायची	खिल्ला	तिलपत्र	लाल चंदन
रक्तचंदन	श्वेत चंदन	सिगरफ	पिपरामूल	मुलट्ठी	श्वेतचंदन	शतकुसुम	गंगाजल	गंगाजल
कनेर पुष्प	स्फटिक	मालकंगनी	इत्यादि	नवीनपत्ते	गंगाजल	गाँदमिश्रित	—	—
मि. गंगाजल	गोमूत्र	गंगाजल	गंगाजल	गंगाजल				

होमादि में अग्नि वास जानना

जिस दिन को होम/हवन करना हो, उस दिन की तिथि और वार की संख्या को जोड़कर १ जमा करें फिर कुल जोड़ को ४ द्वारा भाग देवें। यदि शेष शून्य (०) अथवा ३ बचें, तो **अग्नि का वास पृथ्वी** पर होगा। इस दिन होम करना कल्याणकारक होता है। यदि शेष २ बचें तो अग्नि का वास **पाताल में** होता है। इसी दिन होम करने से धन का नुक्सान होता है। यदि ४ का भाग देने से १ शेष बचे तो आकाश में अग्नि का वास होगा, इसमें होम करने से आयु का क्षय होता है। **वार** की गणना **रविवार** से तथा तिथि की गणना **शुक्ल प्रतिपदा** से करनी चाहिए। तदुपरान्त ग्रह के मुख आहुति चक्र का विचार करना चाहिए।

ग्रहों के मुख में आहुति चक्र

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने से यदि ३ या ३ से कम की संख्या आए तो होमाहुति सूर्य के मुख में जाने, तीन से आगे की संख्या से ६ तक की संख्या में मिले, तो बुध के मुख में आहुति जानें। इसी प्रकार, निम्न क्रमानुसार सब ग्रहों में होमाहुति जानें।

ग्रह	सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चंद्र	मंग.	गुरु	राहु	केतु
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फल	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ

नवग्रहों के जपनीय होमार्थ (हवन) मन्त्र

सूर्य मन्त्र—अर्क (आक) समिधा द्वारा ''ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम॥१॥

चन्द्रमा मन्त्र—(पलाश या ढाक समिधा के साथ)—''ॐ इमं देवाऽसपत्न Ω सुवध्वम् महते क्षत्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां Ω राजा। ॐ सोमाय स्वाहा॥ इदं चन्द्रमसे न मम॥२॥

भौम मन्त्र—(खैर की लकड़ी से) ''ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा Ω रेता Ω सि जिन्वति स्वाहा। ॐ भौमाय स्वाहा॥ इदं भौमाय इदं न मम॥''

बुध मंत्र—(अपामार्ग की समिधा से) ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहित्वमिष्टापूर्ते स Ω सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥ ॐ बुधाय स्वाहा। इदं बुधाय इदं न मम॥

गुरु मन्त्र—(पीपल) ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐ बृहस्पतये स्वाहा॥ इदं बृहस्पतये, इदं न मम।

शुक्र मन्त्र—(गूलर) ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः। सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान Ω शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥ ॐ शुक्राय स्वाहा॥ इदं शुक्राय, न मम।

शनि मन्त्र—(शमी की समिधा) ॐ शन्नो देवीरभिष्टयआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु नः। ॐ शनैश्चराय स्वाहा। इदं शनैश्चराय, इदं न मम्॥

राहु मन्त्र—(दूर्वा) ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ ॐ राह्वे स्वाहा॥ इदं राहवे इदं न मम॥

केतु मन्त्र—(कुशा से) ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजा यथाः। ॐ केतवे स्वाहा॥ इदं केतवे, इदं न मम॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों के गुण, वर्ण, स्वभाव, उच्च-नीच, स्व-गृह राशि आदि चक्र

नाम ग्रह	स्व-ग्रह राशि	मूल त्रिकोण	गुण	चरादि	वर्ण जाति	रंग	उच्च राशि	नीच राशि	पुरुष स्त्री	तत्त्व	कारक	संबंध	स्व-भाव	प्रकृति	धातु	रस	शरीरांग	दिशा	दृष्टि विशेष	भाग्योदय काल
सूर्य Sun	सिंह	सिंह	सत्त्व	स्थिर	क्षत्रिय	रक्त वर्ण	मेष	तुला	पुरुष	अग्नि	आत्मा	पिता	क्रूर	पित्त	सोना	तिक्त	शिर, नेत्र	पूर्व	७	२२ से २४
चन्द्र Moon	कर्क	वृष	सत्त्व	चंचल	वैश्य	श्वेत	वृष	बृश्चि.	स्त्री	जल	मन	माता	सौम्य	वातश्ले	चांदी	क्षार	बुद्धि, रक्त	पश्चि. उत्तर	७	२४ से २५
मंगल Mars	मेष, बृश्चिक	मेष	तम	चर	क्षत्रिय	लाल	मकर	कर्क	पुरूष	अग्नि	बल	भाई	क्रूर	पित्त	ताम्र	कटु	मज्जा	दक्षिण	७,४,८	२८ से ३२
बुध Merc	मिथुन, कन्या	कन्या	रज	द्विस्वभा	वैश्य	हरा	कन्या	मीन	नपुंसक	पृथ्वी	वाणी	बंधु/मित्र	मिश्र	त्रिधातु	कांस्य	मिश्र	त्वचा, मुख	उत्तर	७	३२ से ३६
गुरू Jup.	धनु, मीन	धनु	सत्त्व	स्थिर	ब्राह्मण	पीला	कर्क	मकर	पुरूष	आकाश	विद्या	संतान	शुभ	कफ	सोना	मधुर	चर्बी	ईशान	५७९	१६ से २४
शुक्र Ven.	वृष, तुला	तुला	रज	चर	वैश्य	सफेद	मीन	कन्या	स्त्री	जल	काम	स्त्री	शुभ	वात, कफ	चांदी	अम्ल	वीर्य	दक्षि., पूर्व	७	२६ से २८
शनि Sat.	मकर, कुम्भ	कुम्भ	तम	स्थिर	शुद्र	नीला काला	तुला	मेष	नपुंसक	वायु	संघर्ष	भृत्य	क्रूर	वात, श्ले	लोहा	कषाय	स्नायु	पश्चि.	३,७,१०	३६ से ४२
राहु Rahu	कन्या	कर्क	तम	चर	अत्यज	धूम्र	वृष	बृश्चि.	पुरुष	छाया	दुःख	शत्रु	क्रूर	वायु	लोहा	कषाय	हड्डी	दक्षिण	७	४४ से ५०
केतु Ketu	मीन	मकर	तम	चर	शूद्र	धूम्र	बृश्चि.	वृष	पुरुष	छाया	कष्ट	बाधा	क्रूर	वायु	लोहा	कषाय	चर्म	उत्तर	७	४८ से ५०

राशियों के गुण-स्वभाव तत्त्व, शुभ रत्नादि चक्र

राशि	स्वा. ग्रह	अंग्रेज़ी नाम	वर्ण	जाति	क्रूरादि	चरादि	तत्त्व	गुण	जीवादि	समादि	दिशा	शुभ रत्न	बल समय	शरीरांग	दीर्घादि	नरादि	प्रकृति	गुण	पृष्ठोदय आदि
मेष	मंगल	Aries	लाल	क्षत्रिय	क्रूर	चर	अग्नि	रज	धातु	विषम	पूर्व	मूंगा	रात्रि	शिर	ह्रस्व	पशु	पित्त	उष्ण	पृष्ठोदय
वृष	शुक्र	Taurus	श्वेत	वैश्य	सौम्य	स्थिर	पृथ्वी	तम	मूल	सम	दक्षिण	हीरा	रात्रि	नेत्र	ह्रस्व	पशु	वात	शांत	पृष्ठोदय
मिथुन	बुध	Gemini	हरा	शूद्र	क्रूर	द्वि. स्व.	वायु	सत	जीव	विषम	पश्चि.	पन्ना	रात्रि	भुजाएँ, गला	सम	नर	वात	चंचल	शीर्षोदय
कर्क	चंद्र	Cancer	श्वेत	विप्र	सौम्य	चर	जल	रज	धातु	सम	उत्तर	मोती	रात्रि	वक्ष, फेफड़े	सम	जल चर	कफ	शांत	पृष्ठोदय
सिंह	सूर्य	Leo	लाल	क्षत्रिय	क्रूर	स्थिर	अग्नि	तम	मूल	विषम	पूर्व	माणक	दिन	मेरू, रक्त, हृदय	दीर्घ	पशु	पित्त	उष्ण	शीर्षोदय
कन्या	बुध	Virgo	मिश्रित	वैश्य	सौम्य	द्वि. स्व.	पृथ्वी	सत	जीव	सम	दक्षिण	पन्ना	दिन	पेट, नाभि	दीर्घ	नर	त्रिदोष	शीत	शीर्षोदय
तुला	शुक्र	Libra	नीला	शूद्र	क्रूर	चर	वायु	रज	धातु	विषम	पश्चि.	हीरा	दिन	गुर्दे, कमर	दीर्घ	नर	वात	उष्ण	शीर्षोदय
बृश्चिक	मंगल	Scorpio	ताम्र	विप्र	सौम्य	स्थिर	जल	तम	मूल	सम	उत्तर	मूंगा	दिन	गुप्तांग	दीर्घ	कीट	कफ	शीत	शीर्षोदय
धनु	गुरु	Sagittarius	पीला	क्षत्रिय	क्रूर	द्वि. स्व.	अग्नि	सत	जीव	विषम	पूर्व	पुखराज	रात्रि	जंघा	सम	नर पशु	पित्त	उष्ण	पृष्ठोदय
मकर	शनि	Capricor	भूरा	वैश्य	सौम्य	चर	पृथ्वी	रज	धातु	सम	दक्षिण	नीलम	रात्रि	घुटने	सम	जल पशु	वात	शीत	पृष्ठोदय
कुम्भ	शनि	Aquarius	काला	शूद्र	क्रूर	स्थिर	वायु	तम	मूल	विषम	पश्चि.	नीलम	दिन	पिंडली	लघु	जल चर	त्रिदोष	उष्ण	शीर्षोदय
मीन	गुरु	Pisces	पीला	विप्र	सौम्य	द्वि. स्वा.	जल	सतो	जीव	सम	उत्तर	पुखराज	दिन	पाँव दोनों	लघु	जल चर	कफ	शीत	उभयोदय

चर, शीर्षोदयादि राशियों का महत्त्व—उपरोक्त राशियों के **गुण, स्वभाव, तत्वादि** का फलित ज्योतिष में विशेष महत्त्व होता है। संक्षेप में, **चर** का अर्थ है चलित अर्थात् जिसमें कार्य जल्दी हो। यात्रा करें, तो शीघ्र वापिस आ जावे। स्थिर लग्न राशि में कार्य करने से स्थायी प्रभाव होता है। मकान, दुकान, व्यवसायादि में प्रवेश करे, तो बहुत वर्षों तक रहे। द्वि-स्वभाव राशि में मिला-जुला प्रभाव होता है। अर्थात् पहिला आधा भाग स्थिर प्रभाव दिखाता है, अन्तिम आधा भाग 'चर' का प्रभाव दिखाता है। इसी भान्ति धातु का अर्थ है, सोना, चाँदी, लोहा, भूमि, सवारी धनादि पदार्थ। **'मूल'** का अर्थ है, फल, वृक्ष, अनाजादि भोग्य पदार्थ। **'जीव'** का अर्थ प्राणी—स्त्री, पुत्र, पौत्र, भाई आदि। **उदाहरणार्थ**—मान लीजिए, सौम्य राशि **मीन** में यदि कोई सौम्य ग्रह (शुक्र) बैठा है, तो प्रश्नकर्त्ता को स्त्री, संतानादि का सुख लाभ होगा (क्योंकि मीन राशि जीव सम्बन्धी राशि है) और यदि कोई अशुभ या क्रूर ग्रह स्थित हो, तो स्त्री, संतानादि सुख सम्बन्धी हानि होगी। ऐसा कहना चाहिए। इसी भान्ति, राशियों की दिशा बताने का तात्पर्य यह है कि जिस राशि में कारक ग्रह बैठे हो, उस राशि की दिशा में भाग्योदय होता है। **उदाहरण** के लिए किसी की जन्म कुण्डली में लग्नेश एवं नवमेश ग्रह वृष राशि में हो, तो जातक का भाग्योदय जन्म से दक्षिण दिशा में होगा—ऐसा कहना चाहिए। जैसे—यदि **कन्या लग्न** हो, तो बुध लग्नेश, दशमेश होगा। द्वितीयेश व नवमेश शुक्र, बुध (लग्नेश) सहित नवम् (भाग्य) स्थान पर इकट्ठे हों, तो वृष राशि (दक्षिण) में भाग्योदय होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

एवं नवमेश ग्रह वृष राशि में हो, तो जातक का भाग्योदय [illegible] हो, तो बुध लग्नेश, दशमेश होगा। द्वितीयेश व नवमेश शुक्र, बुध (लग्नेश) सहित नवम् (भाग्य) स्थान पर इकट्ठे हों, तो वृष राशि (दक्षिण) में भाग्योदय होगा।

व्यापारिक वस्तुओं में मन्दा-तेजी का भविष्यफल—सन् 2007 ई.

वायदा व्यापारियों के लिए आवश्यक निर्देश—व्यापारिक वस्तुओं के दैनिक उतार-चढ़ाव के अध्ययन के बाद ही वस्तुओं का क्रय-विक्रय करना सफल व्यापार की कुंजी है। संसार के सभी पदार्थों को ग्रहण कर लेने वाले अथवा नियन्त्रण में रखने वाले ग्रह होते हैं तथा अपने में सभी पदार्थों का समावेश करने वाली राशियाँ होती हैं। जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशि-भोग करता है, तो उसकी हर चाल का प्रभाव हर वस्तु पर पड़ता है, क्योंकि उस समय वे पदार्थ उस ग्रह के नियन्त्रण में रहते हैं और वस्तु के मूल्यों में जो परिवर्तन (घटा-बढ़ी) होता है, उसे हम तेज़ी-मन्दी कहते हैं।

ज्योतिष शास्त्र का वायदा-व्यापार से गहरा सम्बन्ध है। ध्यान रहे, हाजिर एवं वायदा बाज़ार पर राजनीतिक, सामाजिक, प्राकृतिक एवं आजकल अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव भी अवश्य रहता है। इसके अतिरिक्त कुशल व्यापारी को अपनी वर्तमान विंशोत्तरी ग्रह दशा तथा आर्थिक सामर्थ्य को ध्यान में रखते हुए ही व्यापार करना चाहिए। जन्म / वर्ष कुण्डली में हानिप्रद या अनिष्ट ग्रह से सम्बन्धित वस्तु का व्यापार न करें। अनुकूल ग्रहदशा जातक को व्यवसाय में विपुल धन लाभ तथा प्रतिकूल ग्रह दशा अकस्मात् धन हानि करवा सकती है। सदैव उतने ही लाभ की आशा करके व्यापार करें, जितनी कि हानि साधारणतया उठा सकने की सामर्थ्य हो।

गत संवत् 2062 एवं 2063 में हमारे द्वारा निर्दिष्ट ग्रह स्थिति एवं तेज़ी-मन्दी के चांसों से सोना, चांदी, तांबे, गुड़, सोयाबीन, तेल, लोहे, स्टील, चने के अनेक व्यापारी लाभान्वित हुए।

आगे गोचर ग्रहों, नक्षत्रों के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं (जिन्सों) के दैनिक उतार-चढ़ाव व तेज़ी-मन्दी की विशेष लाइनों एवं तूफानी तेज़ी आदि का विवरण लिख रहे हैं। यदि आप प्रतिमास किसी विशेष, एक जिन्स की दैनिक तेज़ी-मन्दी मासिक रिपोर्ट या वायदा-हाजिर बाजार का चांस चाहते हैं तो प्रति जिन्स की एक मास की फीस 450 रू०, 2 महीने की फीस 850 रू० होगी। पूरी फीस अग्रिम भेजें। रिपोर्ट लिखित रूप में भेजी जाएगी। D.D. या M.O. इस पते पर भेजें—

पं. विवेक शर्मा, सुपुत्र पं. पन्ना लाल ज्योतिषी, c/o पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर—144008 (पंजाब) फोन : 0181—2457959

जनवरी—मासारम्भ 1 जन. को बुध पू.षा. में आने से बिनौला, रुई, तेल, सोयाबीन में तेजी तथा गेहूँ, जौं, चना, सोना, चांदी में मन्दी बनेगी। [1 से 6 जन. तक पूरा सप्ताह घटाबढ़ी के बीच मुख्य वस्तुओं में मन्दी रहे। 14 जन. के बाद आने वाली तेज़ी के लिए स्टाक कर लें]

7 जन. को शुक्र श्रवण में आने से सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, उड़द, मूँग, मोठ, अरहर में मन्दी बने, जबकि कपास, रूई, तिल, तेल, सरसों में तेजी बनेगी।

8 जन. को मंगल मूला नक्षत्र तथा धनु राशि में प्रवेश करेगा। घी, कपास, रूई में पहले मन्दी फिर तेजी बनेगी। धान्य, तृण, सोना, चांदी, जिस्त आदि धातु, बिनौला, सरसों, चावल में तेज़ी बनेगी। 9 जन. को (रात्रि) बुध उ.षा. में आने से गेहूँ, धान्य, चावल, चांदी में मन्दी बनेगी।

10 जन. को शनि आश्लेषा के चतुर्थ चरण तथा कर्क राशि में पुनः आ रहा है। शनि-मंगल के मध्य षडाष्टक सम्बन्ध भी बन रहा है। फलस्वरूप रूई, कपास, सरसों, गुड़-शक्कर, चना, मूँग, उड़द, चावल, सोयाबीन में तेजी बनेगी। वक्री शनि पर गुरु की विशेष दृष्टि रहने से कुछ जिन्सों में अचानक मन्दी की लाइन भी चल सकती है। बाज़ार के रुख को देखकर आगे बढ़ें।

11 जन. को बुध मकर राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा तथा सूर्य उ.षा. में जाने से लोहा, सीसा, सरसों, अलसी, घी, गुड़, चावल, कपास, खल, मोठ, अरहर, मसूर, मूँग, सोना, चांदी तथा रूई में तेज़ी बनेगी। गेहूँ, जौं, चना आदि के भाव सम रहेंगे। 13 जन. को गुरु ज्येष्ठा में आने से चांदी में मन्दी, अनाजों के भावों में घटाबढ़ी रहेगी।

14 जन. को सूर्य मकर राशि में आकर बुध एवं शुक्र के साथ मेल करेगा। घी, तिल, तेल, सरसों, गुड़, शक्कर, रूई, खांड में तेजी, बारदाना, धान्यादि तथा सोना, चांदी, शेयरों में मन्दी का रूझान होता है। परन्तु हमारे विचार के अनुसार यहाँ मन्दी न बनकर तेजी का रूख ही रहेगा। 17 जन. को बुध श्रवण तथा शुक्र धनिष्ठा में आने से गुड़, अलसी, सरसों, चना, रूई, सोना, चांदी कपास, चावल, मूँग, मोठ, ज्वार, बाजरा, उड़द, तांबे में तेजी बनेगी।

20 जन. शनिवार को धनिष्ठा नक्षत्र एवं मकरस्थ चन्द्रमा कालीन चन्द्रदर्शन होने से सोना, चांदी, तांबा, तेल, मूँगफली आदि में अच्छी तेजी तथा रूई, कपासादि में मन्दी बनेगी।

23 जन. को शुक्र कुम्भ राशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा। अकेला शुक्र यहाँ मंदीकारक होता है परन्तु राहु के साथ होने से यहाँ मन्दी के स्थान पर तेजी ही मालूम पड़ती है। रूई, चांदी, शेयरों, गेहूँ, जौं, चना, उड़द, मूँग, ज्वार, बाजरा तथा घी आदि सफेद वस्तुओं में तेजी बनेगी। 24 जन. को सूर्य श्रवण में आने से सोना, चांदी, रूई, चावल, जौं, गेहूँ, सूत, गुड़, चीनी, जूट, तांबा, पीतल, स्टील, लौंग, सुपारी के भावों में तेजी बनेगी।

25 जन. को बुध धनिष्ठा में आने से सोना, चांदी, तांबा धान्यादि में मन्दी, रूई में घटाबढ़ी, चावल, चीनी में तेजी बनेगी। 26 जन. को रात्रि के समय मंगल पू.षा. में आने तथा बुध पश्चिम से उदय होने से सोना, चांदी, चावल, घी, मूँगफली, उड़द, तेल, सोयाबीन, बिनौला, अरण्डी, सरसों तथा धान्यादि में तेजी, रूई तथा शेयरों में मन्दी बनेगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

28 जन. को शुक्र शतभिषा में आने से रूई, कपास, चावल, गुड़, घी, खाण्ड, सूत, सरसों, सोना, चांदी आदि में तेजी आयेगी।

29 जन. को बुध कुम्भ राशि में आकर शुक्र-राहु के साथ राशि सम्बन्ध बनायेगा। यह ग्रहयोग अच्छी तेजी का ही मालूम पड़ता है। घी, सरसों, तिल, रूई, गुड़, सोना, चांदी में तेजी बनेगी। बाज़ार के आरम्भिक रूख को देखते हुए आगे बढ़ें। 31 जन. को गुरु ज्येष्ठा के द्वितीय चरण में आने से चांदी में मन्दी तथा अनाजों में घटाबढ़ी रहेगी।

फरवरी–2 फर. को बुध शतभिषा में आने से सोने, चांदी, तांबा, जिस्त, मैंथायल में मन्दी, गेहूँ, अरहर, चने में तेजी रहेगी। [प्रारम्भिक सप्ताह प्रमुख धातुओं में मन्दी ही रहेगी]

6 फर. को सूर्य धनिष्ठा में आने से सोना, चांदी, मोती, स्टील, सीसा, मणि, तांबा आदि, मूँग, मसूर, गेहूँ, अरहर, चावल, जौं, लालचन्दन, रूई तथा अन्य धान्य भी तेज होंगे।

8 फर. को शुक्र पू.भा. में आने से रूई, चांदी, कपास, सूत में तेजी तथा अनाज, गेहूँ, चने में मन्दी बनेगी।

12 फर. को सूर्य शत्रु **राशि कुम्भ में बुध, शुक्र, एवं राहु के साथ मेल करेगा। घी, तेल, सरसों, मूँगफली, सरसों, कपास, राई, अलसी, सोना, चांदी, शेयरों, हल्दी, मैन्थायल, क्रूयड आयल में तेजी बनेगी।** रूई, अरण्डी, गेहूँ आदि अनाज, गुड़, शक्कर, खाण्ड में मन्दी बनेगी।

13 फर. को मंगल उ.षा. में आने से अलसी, उड़द, घी, तेल, सरसों, गुड़, चना, कपास, सोयाबीन में तेजी बने। रूई में विशेष तेजी बनेगी।

14 फर. को बुध वक्री होने तथा राहू पू.भा. १, केतु पू.फा. ३ में आने से घी, गुड़, खाण्ड, रसादि पदार्थों, सोना, चांदी, सरसों, मूंग, उड़द, तिल, तेल में तेजी रहेगी।

16 फर. को शुक्र मीन राशि में आकर गुरु द्वारा दृष्ट रहेगा। चांदी में पहले मन्दी फिर तेजी बने। अनाज, सरसों, तेल, तिलहन, अलसी, अरण्डी, गुड़, खाण्ड में मन्दी बनेगी। रूई में साधारण तेजी रहे। इसी दिन बुध पश्चिम में अस्त होने से अगले दिन शेयरों, रूई में मन्दी, चांदी में तेजी बनेगी। 17 फर. को शनिवारी अमावस भी गुड़, सरसों, सोयाबीन, मैंथायल में तेजीकारक रहेगी।

18 फर. को मंगल मकर राशि में आकर शनि के साथ समसप्तक योग बनाएगा। यह ग्रहयोग विशेष तेजीकारक एवं घटाबढ़ी वाला होगा। रूई, सोना, चांदी, ताम्बा, गुड़, खाण्ड, घी, तेल, अलसी, ऊन, घी, सरसों, सोयाबीन में तेज़ी बनेगी।

19 फर. को सूर्य शतभिषा तथा शुक्र उ.भा. में आने से सोना, सूत, सन, कपड़ा, तिल, तेल, अरण्डी, सरसों, हींग, मोंठ, हल्दी, गुड़, गेहूँ में तेजी, नमक, खाण्ड, चावल, मोती, चांदी, कपूर, रूई, कपास आदि सफेद वस्तुओं में मन्दी बनेगी। 23 फर. को शनि आश्लेषा (३) में जाने से मैंथायल, तेल, सोयाबीन, रिफाइण्ड आयल, सरसों, गुड़ में तेजी बनेगी, रूई एवं तिल में मन्दी ही बनेगी। 24 फर. को गुरु ज्येष्ठा (३) में आने से चांदी, अनाजों (अरहर, मूंग, चावल) में घटाबढ़ी के बाद मन्दी का रूख चलेगा। 26 फर. को वक्री बुध धनिष्ठा में आने से चावल, स्वाँक, चीनी में तेजी, रूई में घटाबढ़ी, सोना-चांदी में मन्दी बनेगी।

[इस मास की 6, 12, 13, 14, 17, 18, एवं 19 फर. को वायदा बाजारों में तेजी बनेगी तथा 3, 4, 15, 16, 21, 22, तथा 27 फरवरी के लगभग वायदा बाज़ार मन्दे रह सकते हैं। सावधानी से काम करें।]

मार्च–1 मार्च को वक्री बुध पूर्व से उदय होने से गेहूँ, चना आदि अनाजों, अलसी, बिनौला, तिल, घी, लाल-मिर्च, चांदी में तेजी रहे। सोना, चावल, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी बनेगी। 2 मार्च को शुक्र रेवती में आने से रूई, कपास, चांदी, चावल, चन्दन, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर तथा जवाहरात में मन्दी बने।

3 मार्च, शनिवार को खग्रास चन्द्रग्रहण होने तथा मंगल श्रावण में आने से गेहूँ, जौं, **चने, तिल, पीतल, सिक्का, जिस्त, सोना, चांदी में अच्छी तेजी बनेगी।** अलसी, सरसों, अरण्डी, उड़द, तिल, तेल, लोहे का संग्रह करने से भविष्य में अच्छा लाभ मिलेगा। 4 मार्च को सूर्य पू.भा. में आकर राहु के साथ मेल करेगा। रेशम, बाजरा, उड़द, चना, गेहूँ, ज्वार, घी, सरसों, सोना, चांदी, चावल, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, रूई में अच्छी तेजी बनेगी। 7 मार्च तक घटाबढ़ी रहेगी।

8 मार्च को कुम्भ राशिगत बुध मार्गी होने से लाइन में अचानक परिवर्तन हो सकता है। सावधानीपूर्वक आगे बढ़ें। सोना, सुपारी, सोंठ, सरसों, लाख, चमड़ा, गेहूँ, चना, अनाजादि में तेजी, रूई से पहले मन्दी, फिर तेजी बने, बिनौला, मूँगफली, चन्दन में मन्दी बने।

12 मार्च को शुक्र अश्विनी नक्षत्र तथा मेष में आएगा। शनि एवं मंगल की दृष्टि भी रहेगी। गुड़, सोना, चांदी, तिल, तेल, सरसों, रूई, जौं, चना, गेहूँ, उड़द, अरहर, मूँग, मोठ, घी, अरण्डी, बारदाना में घटाबढ़ी के बाद अच्छी तेज़ी बनेगी।

14 मार्च को सूर्य मीन राशि में आकर गुरु द्वारा दृष्ट रहेगा। कपास, रूई, चांदी, सोना, जिस्त, तांबा, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अलसी, तिल, तेल, सरसों तथा अनाजादि में पहले तेजी, बाद में रूख कुछ मन्दी की ओर रहेगा।

18 मार्च को सूर्य उ.भा. में आने से सोना, चांदी, रूई, चावल, गुड़, शक्कर, गेहूँ, तेल, लवण में तेज़ी बनेगी।

19 मार्च को खण्डग्रास सूर्यग्रहण घटित होगा तथा बुध शतभिषा में आने से वायदा एवं हाज़िर व्यापार में अच्छी तेज़ी की सम्भावना है। **तेल, सोयाबीन, तिलहन, घी, सोना, चांदी, तांबा, लोहा, जिस्त आदि धातु तथा अनाजों में तेज़ी बनेगी।**

20 मार्च को मंगल धनिष्ठा में आने से राई, जौं, सोना, चांदी, पीतल, जिस्त, लोहा आदि में तेजी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, घी, रूई, सूत, अनाजादि में मामूली तेजी बनकर मन्दे का रुख बनेगा। 23 मार्च को शुक्र भरणी में आने से सोने, चांदी, लाल मिर्च, सरसों, तिल, तेल, अलसी, घी, उड़द, चना, मूँग, मोठ, ज्वार में घटाबढ़ी के बाद पहले तेजी, फिर मन्दी

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

चांदी, कपूर, रूई, कपास आदि सफेद वस्तुओं में मन्दी बनेगी। 23 फर. को शनि ... (३) में जाने से मैंथायल, तेल, सोयाबीन, रिफाइण्ड आयल, सरसों, गुड़ में तेजी बनेगी। रूई एवं तिल में मन्दी ही बनेगी। 24 फर. को गुरु ज्येष्ठा (३) में आने से चांदी, अनाजों

... में आने से सोने, चांदी, लाल मिर्च, सरसों, तिल, तेल, अलसी, घी, उड़द, चना, मूँग, मोठ, ज्वार में घटाबढ़ी के बाद पहले तेज़ी, फिर मन्दी

का रुख बनेगा। रूई में तेजी ही रहेगी।

29 मार्च को मंगल कुम्भ राशि में आकर बुध-राहु के साथ मेल करेगा। रूई एवं चांदी में विशेष घटाबढ़ी होगी। अनाज, उड़द, सोना, गुड़, खाण्ड, चना में अच्छी तेज़ी बनेगी।

31 मार्च को सूर्य रेवती एवं बुध पू.भा. में आने से अलसी, सरसों, अरण्डी, मूँगफली, लहसुन, मोती, लाख, रूई, गेहूँ, जौं, चना, चावल में तेज़ी, सोना, चांदी, तांबा, लोहा, रूई में घटाबढ़ी के बाद रात्रि को तेजी बनेगी।

अप्रैल–मासारम्भ में तेजी का वातावरण रहेगा। 4 अप्रै. को शुक्र कृतिका में आने से जौं, चावल, हींग, तिल, तेल, सरसों, रूई, सूत, चाँदी, सोना, हीरा, मणि, मोती, ताम्बा, में मन्दी बनेगी।

6 अप्रैल को वृश्चिक राशिगत गुरु वक्री होगा तथा शुक्र वृष राशि में आएगा। शुक्र पर मंगल एवं गुरु की दृष्टि भी रहेगी। रूई, कपास में अच्छी मन्दी, सोना, चांदी, ताम्बा, चने, घी, सरसों में घटाबढ़ी के बाद तेजी का रूख रहेगा।

7 अप्रैल को बुध मीन राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की दृष्टि रहेगी तथा इसी दिन मंगल शतभिषा में आने से रूई, गुड़, खाण्ड शक्कर में मन्दी बने, सोना, चांदी, बिनौला, जिस्त, ताम्बा, सोयाबीन में पहले तेज़ी होकर बाद में उतनी ही मन्दी बनेगी।

9 अप्रै. को बुध उ.भा. में आने से दोपहर बाद चाँदी, रूई, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूँ, चना में घटाबढ़ी रहेगी। 10 से 13 अप्रै. तक हाजिर बाज़ार में घटाबढ़ी चलती रहेगी।

14 अप्रैल को सूर्य मेष राशि में प्रवेश करेगा। शनि की नीच दृष्टि भी रहेगी। रूई, कपास, सूत, घी, तेल, तिल, सरसों, नारियल, सुपारी, बादाम, फल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चाँदी, सोना, चना, उड़द में अच्छी तेज़ी की सम्भावना है। गेहूँ, चावल, मूँग, अरहर जौं, मटर, मैन्था-आयल में भी घटाबढ़ी के बाद तेज़ी का ही रूख बनेगा।

15 अप्रै. को शुक्र रोहिणी में आने से दोपहर बाद सोना, चांदी, अलसी, तांबा, जिस्त, अरण्डी, सरसों, रिफाइण्ड सोयाबीन, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, सुपारी, नारियल में मन्दी का रुख शुरू होगा। 17 अप्रै. को भौमवासरी अमावस तथा बुध रोहिणी में आकर लाल-चन्दन, लाल मिर्च आदि लाल वस्तुओं, केसर, मजीठ, गुड़, सरसों में तेज़ी लाएगा। खाण्ड, तिल, घी, चांदी में पहले तेज़ी फिर मन्दी का रुख चलेगा।

18 अप्रै. बुधवार को मेष राशिगत चन्द्रदर्शन तथा राहु शतभिषा में आने से सरसों, अलसी, घी, गेहूँ में तेज़ी, सोना, चांदी, रूई, बारदाना, जूट, गुड़, शक्कर, खाण्ड में मन्दी बनेगी।

19 अप्रै. को शनि मार्गी होने से रूई, तिल, सरसों, हींग, लाल-मिर्च, काली-मिर्च, क्रूड-आयल, तेल, सरसों में तेज़ी बने। चाँदी, शेयर-बाज़ार में मन्दी का रूख रहे। परन्तु शनि की सूर्य पर दृष्टि के कारण यहाँ लाइन में अचानक परिवर्तन होगा। तेल से सम्बन्धित सभी बाज़ारों में अच्छी तेज़ी सम्भव है। रूई में बीच में मन्दी का झटका भी लगेगा।

20 अप्रैल को बुध पूर्व में अस्त होगा। अनाज, घी, चावल में मन्दी बने। रूई में घटाबढ़ी रहे। पहले तेज़ी आकर मन्दी आए, अन्त में फिर तेज़ी बनेगी। सोना, चांदी, जिस्त, बिनौला, अलसी, चना, लाल-मिर्च में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी रहे। 24 अप्रै. को बुध मेष राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की विशेष दृष्टि रहेगी। इसी दिन मंगल पू.भा. में आएगा। तिल, तेल, मूंगफली, अरण्डी, अलसी, सुपारी, रूई, सूत, कपास, सोना, चांदी, चना, सरसों, घी, गुड़ में तेज़ी बनेगी।

27 अप्रै. को सूर्य भरणी तथा शुक्र मृगशिर में आने से गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना, चांदी, तांबा, पीतल, जिस्त, गेहूँ, जौं, चना, चावल, मोठ, अलसी, रूई, सरसों, गुड़, घी में तेज़ी बनेगी। रूई, अलसी में मन्दी बने। 30 अप्रै. को बुध भरणी में आने से चावल, गेहूँ आदि अनाजों में 8 दिन में तेज़ी करेगा।

[इस मास की 6, 7, 8, 14, 19, 24, 27 को विशेष तेजी की सम्भावना है।]

मई–मासारम्भ 2 मई की रात्रि को शुक्र मिथुन राशि में आएगा। रूई, कपास, सूत, वस्त्र, पाट, बारदाना, अरण्डी, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार में अच्छी मन्दी बने, अलसी, गुड़, घी, चांदी में अच्छी घटाबढ़ी होगी। गेहूँ, जौं, चना, चावलों में तेजी होगी।

7 मई को बुध कृतिका में तथा मंगल मीन राशि में आकर मिथुन राशिस्थ शुक्र को चतुर्थ दृष्टि से देखेगा। सोना, रूई, तृण, लकड़ी, अनाज, गेहूँ, तांबा में तेज़ी, चांदी, चावल में घटाबढ़ी होकर मन्दी बनेगी।

8 मई को बुध वृष राशि में आएगा। इस पर गुरु की दृष्टि रहेगी। शुक्र भी आर्द्रा में आएगा। प्रायः सब वस्तुओं में घटाबढ़ी रहेगी। रूई में पहले मन्दी, फिर तेजी, गेहूँ, जौं, चना, चावल, मटर, रूई, कपास, तिल, तेल आदि के भावों में तेज़ी बनेगी।

11 मई को सूर्य कृतिका में आने से घी, रूई, सोना, चांदी, अलसी, अरण्डी, गेहूँ, जौं, चना, मूँग, मोठ, चावल, राई, सरसों में तेजी बनी रहेगी। (12) मई को मंगल उ० भा० में आने से सोना, चांदी, रूई, गेहूँ, जौं, चना, देवदारू, चन्दन, कपूर में तेज़ी बनेगी। (13) मई को बुध रोहिणी में आने से रूई, कपास, सूत, सोना, चांदी, तिल, तेल, सरसों, चावल, गुड़, खाण्ड में तेज़ी बने। र[illegible], तूअर, सन, रूई, कपास, चावल में पहले तेज़ी होकर फिर मन्दी बने। 14 मई को बुध पश्चिम में उदय होने से गेहूँ, चने, खल-बिनौले, गुड़, सोना, चांदी, तांबा, पीतल, लोहादि धातुओं में तेज़ी बने।

15 मई को सूर्य वृष राशि में बुध के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की विशेष दृष्टि रहेगी। सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रूई, सूत, बादाम, सुपारी, नारियल, तिल, तेल, सरसों में पहले अच्छी तेजी बनकर फिर घटाबढ़ी रहे। भाव कुछ गिर भी सकते हैं। तेजी का तुरन्त लाभ लें। जौं, चना, गेहूँ, अरहर, मूंग, चावल में मन्दी बनी रहेगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

18 मई को शुक्रवार को वृष राशिस्थ चन्द्रमा कालीन चन्द्रदर्शन होने से सरसों, तिल, तेल, गेहूँ में मन्दी, रूई, चांदी, सोना, उड़द, चना में घटाबढ़ी होकर बाद में तेज़ी बनेगी।

20 मई को बुध मृगशिर में आने से रूई, चांदी में घटाबढ़ी होकर मन्दी गेहूँ, तिल, सरसों, उड़द में मन्दी बनेगी। 21 मई को शुक्र पुनर्वसु में आने से सोना, चांदी, रूई, कपास, सूत, घी में मन्दी ; बिनौला, गेहूँ, उड़द में तेजी बने।

24 मई को बुध मिथुन राशि में आकर मंगल की दृष्टि में रहेगा। सोना, चांदी, सरसों, तारामीरा, गुड़, सोयाबीन में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बने। 25 मई को सूर्य रोहिणी में आने से तिल, तेल, अरण्डी, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूँ, जौं, चना, ज्वार, बाजरा, सूत, वस्त्र, सन, सुपारी, मिर्च, राई में तेजी बने। चांदी में मन्दी बनेगी।

29 मई को मंगल रेवती तथा बुध आर्द्रा में आने से गेहूँ, चना, मूँग, मोठ, जौं, ज्वार, बाजरा, तिल, उड़द में मन्दी, चांदी में भारी तेजी, सोने में कुछ मन्दी, रूई में घटाबढ़ी होकर बाद में तेजी बने। 30 मई को शुक्र कर्क राशि में शनि के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की विशेष उच्च दृष्टि रहेगी। रूई में पहले अच्छी मन्दी, बाद में तेज़ी बनेगी। अलसी, अरण्डी, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी तथा चांदी, गेहूँ, जौं, चना, मटर, अरहर में मन्दी बनेगी।

जून–2 जून को शुक्र पुष्य में आने से रूई, सूत, सन, रेशम, ऊन व धान्य में तेजी, लाख, चमड़ा, कपूर, पारा, हींग, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी बनेगी। 7 जून तक बाज़ार में अस्थिरता एवं मन्दी का रुख रहेगा।

8 जून को सूर्य मृगशिर में आने से रूई, सूत, रेशम, सन, कपूर, कस्तूरी, सोना, चांदी, उड़द, मूंग, मोठ, चने, बाजरा, अलसी आदि में तेज़ी बनेगी।

13 जून को वक्री गुरु ज्येष्ठा (1) में तथा शनि आश्लेषा (4) में आने से रूई, चांदी, तिल में मन्दी, अन्य व्यापारिक वस्तुओं में तेजी बनेगी।

15 जून को सूर्य मिथुन में बुध के साथ मेल करेगा तथा इन पर मंगल की विशेष दृष्टि रहेगी। सोना, चांदी, बारदाना, रेशम, सूत, कपास, रूई, सरसों, लोहा, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, मूँग, उड़द, गेहूँ, चना, चावल, चना, सोयाबीन, लाल-मिर्च में तेज़ी बने।

16 जून को मंगल अश्विनी नक्षत्र तथा मेष राशि में आकर कर्कस्थ शुक्र-शनि को चतुर्थ दृष्टि से देखेगा। सोना, चांदी, तांबा आदि धातु, रूई, कपास, ऊन, पाट, बारदाना, चने, सोयाबीन, सरसों, क्रूड-आयल, मैंथा-आयल, खाण्ड तथा गुड़, रसादि पदार्थों में तेज़ी बनेगी। सायं/रात्रि तक इस तेज़ी से निकल जावें।

17 जून को शुक्र आश्लेषा में आने से रूई, तूअर, चावल, चांदी, चना में मन्दी बनेगी। 20 जून को बुध पश्चिम में अस्त होने से शेयरों, सोना, रूई में मन्दी, चांदी में तेज़ी बनेगी।

22 जून को सूर्य आर्द्रा में आने से रूई, सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्ड, मोती, गेहूँ, [illegible] सोयाबीन में तेजी बनेगी। 7 सित. को शनि मघा (3) में आने से दही, दूध, तेल, कपास,]

मासान्त तक सभी व्यापारिक जिन्सों में घटाबढ़ी के बीच तेजी का ही रूख रहेगा।

जुलाई–3 जुला० को शुक्र सिंह राशि में केतु के साथ मेल करेगा। सोना, तांबा, जौं, चना, गेहूँ, लाल-मिर्च, लाल-चन्दन, लाल रंग की अन्य व्यापारिक वस्तुएं, घी, उड़द में तेजी बने, चांदी व रूई में पहले मन्दी, बाद में मामूली तेजी बने।

5 जुला. को मंगल भरणी में आने से गेहूँ, चना आदि अनाजों, सोना, चांदी और रूई में तेजी बनेगी।

6 जुला. को सूर्य पुनर्वसु में आने से रूई, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, कपास, बिनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों, लाख, तिल, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, चावल, नमक, हरड़, सुपारी, नारियल, केसर, मजीठ, सोंठ, गुग्गुल आदि करियाना पदार्थों में तेजी बने।

7 जुला. को बुध पूर्व से उदय होने से गेहूँ, चने, मैदा, चावल, तिलहन, घी, खाद्य तेल, रूई, कपास, खल-बिनौला, सोना, चांदी, पीतल आदि में तेज़ी बने। 10 जुला० को बुध मार्गी होने से चना, मूँग, मोठ, रेशम, तेल, अलसी, अरण्ड, गुड़, बिनौला, मूँगफली, कपूर, चन्दन, अगर आदि सुगन्धित वस्तुओं में मन्दी बनेगी। सोना, चांदी, तांबा में घटाबढ़ी होकर तेज़ी बने।

15 जुला. की रात्रि के बाद शनि अतिचारी गति से सिंह राशि में प्रवेश करेगा। गुड़, तेल, सरसों, सोयाबीन में ज़ोरदार तेजी, लोहा, खाण्ड, उड़द, घी, खाण्ड, गुड़, नमक, सोना, चांदी, मैंथा-आयल में तेज़ी बनेगी। 16 जुला. को सूर्य कर्क राशि में प्रवेश करेगा। मंगल की इस पर दृष्टि रहेगी। रूई, सूत, बादाम, सुपारी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों, चांदी, सोना आदि तेज होंगे। गेहूँ, चना, जौं, मटर, अरहर, उड़द, मूँग, चावल में मन्दी बनेगी।

[16 से 23 जुलाई तक वायदा बाज़ार में तेज़ी का वातावरण रहेगा।]

24 जुला. को मंगल कृतिका में आने से गेहूँ, मूँग, मोठ, चावल, राई, मसूर, तिल, तेल, सरसों, घी, चांदी, सूत में तेजी, रूई में पहले तेजी, फिर मन्दी बनेगी।

26 जुला. को बुध पुनर्वसु में आने से चांदी, रूई, कपास, सूत, सन, चावल में मन्दी बनें।

27 जुला. को शुक्र वक्री होने से गेहूँ, चना, घी, तेल, धान्य, चीनी, शक्कर, सोना, चांदी, पीतल में तेजी, रूई में घटाबढ़ी होगी।—

यदा दैत्यगुरु चैव राशि वक्रं चरिष्यति। धान्यर्घं च क्षयं कुर्याद् घृत तैल महर्घता॥

29 जुला. को मंगल वृष में आकर शुक्र एवं शनि को चतुर्थ दृष्टि से देखेगा तथा गुरु के साथ समसप्तक योग रहेगा। लाल वस्त्र, लाल-मिर्च, अन्य लाल वर्ण की वस्तुएँ तथा गेहूँ, रूई, कपास, सूत, चन्दन, केसर, तेल, सोना, चांदी, ताम्बा, जिस्त आदि धातु, क्रयूड-आयल तथा शेयरों में तेजी बनेगी।

अगस्त–मासारम्भ 1 अग. को बुध कर्क राशि में सूर्य के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की दृष्टि रहेगी। चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी, गुड़, दूध, तेल, घी, मूँगफली, सरसों,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

20 जून को बुध पश्चिम में अस्त होने से शेयरों, [illegible]

22 जून को सूर्य आर्द्रा में आने से रूई, सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्ड, मोती, गेहूँ, [illegible]

3 अग० को सूर्य आश्लेषा तथा बुध पुष्य में आएगा। इसी दिन बुध पूर्व में अस्त होगा। रूई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी, सोना, चांदी, बिनौला, गेहूँ, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल, सरसों, अरण्डी, अलसी, मिर्च, मजीठ में तेजी बनेगी।

4 अग. को शनि पश्चिम में अस्त होने से सोना, चांदी तथा शेयरों में तेजी रहेगी।

7 अग. को गुरु मार्गी तथा शुक्र पश्चिम में अस्त होने से रूई, चांदी में पहले मन्दी, फिर तेजी बने। चावल, अलसी, सरसों, गुड़, तम्बाकू में तेजी बनेगी। सोना, घी, बिनौला, मूँगफली में मन्दी बनेगी। 9 अग. को बुध आश्लेषा में आने से तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूँग, मूँगफली में तेजी का रूख शुरू होगा।

12 अग. को शनि मघा (२) में आने से सन, दाख, हींग, घी, गुड़, खाण्ड, तेल में तेज़ी बनेगी। 13 अग. को मंगल रोहिणी में आने से रूई, कपास, सूत, रेशम, सरसों, तेल, लाल-मिर्च, हींग तथा शेयरों में तेजी बनेगी।

16 अग. को बुध मघा नक्षत्र तथा सिंह राशि में प्रवेश कर शनि के साथ मेल करेगा। मंगल की इन पर दृष्टि रहेगी। गेहूँ, जौं, चना, रूई, कपास, सूत, गुड़, मैंथा-आयल, क्रूड-आयल, सरसों, तेल, सोयाबीन में तेजी बनेगी। शक्कर, खाण्ड में मन्दी बनेगी।

17 अग. को सूर्य सिंह राशि में शुक्र, बुध, शनि व केतु ग्रहों के पंचग्रही योग बनाएगा। सोना, चांदी, रूई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तेल, अरण्ड, सरसों, सोयाबीन, पीतल, लाल-मिर्च तथा लाल रंग की वस्तुओं तथा शेयर बाजार में तेज़ी बनेगी।

19 अग. को वक्री शुक्र कर्क राशि में आएगा। गुरु की इस पर दृष्टि रहेगी। रूई, चांदी, गेहूँ, जौं, चना, मटर, अरहर, सोने में मन्दी, अलसी, अरण्ड, तेल, घी, गुड़, खण्ड, शक्कर में मामूली तेजी बनेगी। अकेला शुक्र अच्छी मन्दी ला सकता है। सावधानीपूर्वक आगे बढ़े।

23 अग. को बुध पू.फा. में आने से गुड़, खाण्ड, गेहूँ, जौं, चना, बाजरा में मन्दी का रुख बनेगा।

24 अग. को शुक्र पूर्व से उदय होने से चावल, चांदी, चने, घी व सोने में तेजी बनेगी।

28 अग. को गुरु ज्येष्ठा में आने से चांदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी, गेहूँ, धान्यादि में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने।

30 अग० को बुध उ.फा. में आने से उड़द, मूँग, मोठ, मसूर, अरहर में तेजी, रूई व चांदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी का रूख रहेगा। 31 अग. को सूर्य पू.फा. में आने से जीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूँ, ज्वार, चावल, ऊनी कपड़ा, रूई, सूत में तेजी बने। चांदी में घटाबढ़ी रहेगी।

सितम्बर–1 सितं. को ही बुध कन्या राशि में आने से रूई, चांदी में मन्दी, गेहूँ, जौं, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी में तेजी बनेगी।

4 सितं. को मंगल मृगशिर में आने से तिल, चांदी, रूई, कपास, घी, गुड़, सरसों, [illegible] को बुध कर्क राशि में सूर्य के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की दृष्टि रहेगी। चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी, गुड़, दूध, तेल, घी, मूँगफली, सरसों, [illegible] सोयाबीन में तेजी बनेगी। 7 सितं. को शनि मघा (3) में आने से दही, दूध, तेल, कपास, गुड़, घी, तेल, क्रूयड-आयल में तेजी बनेगी।

8 सितं. को बुध हस्त में आएगा 1 शुक्र मार्गी तथा शनि पूर्व से उदय होगा। घी, तेल, खल-बिनौला, लोहा, रिफाइण्ड तेल, अलसी, अरण्डी, सोना, चांदी, तांबा में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बनेगी। चना, गेहूँ आदि अनाज में मन्दी बनेगी।

13 सितं. गुरुवार को सूर्य उ.फा. में आने तथा कन्या राशिस्थ चन्द्रदर्शन होने से रूई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चांदी, लोहा, घी, तेल, अलसी, सरसों, अरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी में तेजी, खाण्ड, गुड़ में मन्दी बने।

16 सितं. को मंगल मिथुन में आने से रूई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अलसी, तांबा, सोना, लाल-मिर्च तथा अन्य लाल रंग की वस्तुओं में अच्छी तेजी बनेगी। चांदी में घटाबढ़ी के बाद मामूली तेजी बने।

17 सितं. को सूर्य कन्या राशि में बुध के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल की दृष्टि रहेगी। रूई, नारियल, सुपारी, तिल, तेल, गुड़ तथा लाल वस्तुओं में और तेजी बनेगी। रूई, चांदी में घटाबढ़ी होकर तेजी बनेगी।

22 सितं. को बुध तुला राशि में आएगा। शनि की इस पर नज़र होगी। रूई, गुड़, खाण्ड, सोना, अफीम, सरसों, अलसी, अरण्ड, बिनौला, मूँगफली में तेजी, चांदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी।

27 सितं. को सूर्य हस्त में आने से गेहूँ, जौं, ज्वार, गुड़, खाण्ड, कपास, रूई, सूत, जूट, नमक, हरड़, हींग, हल्दी, सन, सोना में तेजी बने। 28 सितं. को बुध स्वाती में आने से रूई, चांदी में मन्दी बनेगी।

29 सितं. को शुक्र मघा नक्षत्र तथा सिंह राशि में आकर शनि व केतु के साथ मेल करेगा। सोना, ताम्बा, जौं, चना, गेहूँ, लाल-चन्दन, मजीठ, लाल-मिर्च, लाल रंग की वस्तुओं, घी, चांदी में तेजी बनेगी। 30 सितं. को मंगल आर्द्रा में आने से रूई, सूत, कपास, अलसी, अरण्डी, गुड़, चीनी, तिल, तेल, सरसों, सोयाबीन, नमक में तेज़ी बने तथा चांदी में मन्दी बनेगी।

अक्तूबर–मासारम्भ में वायदा एवं हाज़िर बाज़ार में घटाबढ़ी के बीच मन्दी का वातावरण रहेगा। 5 अक्तू. को शनि मघा (4) में आकर सब प्रकार के अनाजों में तेजी करेगा।

12 अक्तू. को तुला राशिस्थ बुध वक्री होने से सोना, घी, गुड़, चीनी, शक्कर, अलसी, चांदी में तेज़ी बनेगी, गेहूँ, जौं, चनादि में मन्दी बनेगी।

13 अक्तू. को शनिवार को तुला राशिस्थ चन्द्रमा कालीन चन्द्रदर्शन होने से बर्तन, सोना, चांदी, रूई, सूत, सरसों, मूँगफली में अच्छी तेजी बनेगी।

16 अक्तू. को शुक्र पू.फा. में आने से गेहूँ, जौं, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग, चना में कुछ मन्दी बने।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

17 अक्तू. को सूर्य तुला राशि में बुध के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की दृष्टि रहेगी। क्रूड-आयल, मैन्थाल, सरसों, लाल-चन्दन, मजीठ, सुपारी, गेहूँ, जौं, चना, अलसी, सोना, तांबा तथा शेयर बाज़ारों में अच्छी तेज़ी बनेगी।

18 अक्तू. को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से चांदी, घी में अच्छी तेजी, रूई, शेयर-बाज़ार में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी, अलसी, चने, बिनौले भी तेज़ हों।

24 अक्तू. को सूर्य स्वाती में होने से रूई, सूत, सन, रेशम, सोना, चांदी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हींग, गुग्गुल में तेजी बनेगी।

29 अक्तू. को वक्री बुध पूर्व से उदय होने से गेहूँ, चना, चावल, तिलहन, घी, खाद्य तेल, रूई, कपास, खल-बिनौला तथा शेयरों में तेजी बने।

30 अक्तू. को वक्री बुध कन्या में आएगा, उस पर मंगल की दृष्टि रहेगी। इसी दिन शुक्र उ.फा. में आएगा। सोना, चांदी में घटाबढ़ी रहे, गेहूँ, जौं, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी में तेजी बनेगी।

नवम्बर–1 नवं. को ही कन्या राशिस्थ बुध मार्गी होने से सोना, चन्दन, सुपारी, चांदी, गेहूँ, जौं, चना, अनाज में तेजी बने। रूई में पहले मन्दी, फिर तेजी। रेशम, तेल, अलसी, अरण्ड, गुड़ बिनौला, मूंगफली, कपूर में मन्दी बने।

3 नवं. को शुक्र कन्या में आकर बुध के साथ होगा। इन पर मंगल की दृष्टि रहेगी। चांदी में घटाबढ़ी होकर तेजी, चावल, गेहूँ, चना, गुड़, खाण्ड, शेयर-बाज़ार, घी, रूई, ग्वार में तेजी बनेगी। 4 नवं. को ही बुध पुनः तुला राशि में सूर्य के साथ मेल करेगा। रूई, गुड़, खाण्ड, सोना, अफीम, सरसों, अलसी, बिनौला, मूँगफली में तेज़ी बने। चांदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी।

6 नवं. को सूर्य विशाखा में आने से जौं, चावल, गेहूँ, मसूर, गुड़, चीनी, रूई, सूत, सरसों, तिल, अरण्ड, अफीम, तेज़, अलसी, चाँदी में घटाबढ़ी होकर तेजी बने।

11 नवं. रविवार को वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमाकालीन चन्द्रदर्शन होने से रूई में मन्दी, गुड़, तेल, सरसों, सोना-चांदी में तेजी बनेगी। 12 नवं. को शुक्र हस्त तथा शनि पू.फा. में आने से सोना, गेहूँ, जौं, चना, उड़द, मूँग, सरसों, तिल, सोयाबीन में तेजी, रूई, चांदी चावल में मन्दी बने। गुड़ शक्कर में घटाबढ़ी रहे।

15 नवं. को मंगल वक्री होने से गुड़, घी, चीनी, शक्कर, ताम्बा, सोना, लाल-मिर्च, में अच्छी तेजी बने। लगभग सभी व्यापारिक जिन्सों में काफी घटाबढ़ी चलेगी।

16 नवं. को सूर्य वृश्चिक राशि में गुरु के साथ मेल करेगा। रूई, तांबा, चांदी, सोना, ऊनी वस्त्रों, घी में तेज़ी गुड़, लाल-मिर्च तथा अन्य लाल रंग की वस्तुओं में मन्दी बने। 19 नवं. को सूर्य अनुराधा में आने से जौं, चना, गेहूँ, ऊन, तांबा, जिस्त, ग्वार में तेजी, गेहूँ, अलसी, मिर्च, सरसों, तिल में तेजी होकर मन्दी बने। सोना, चांदी में मन्दी बने। 21 नवं. को गुरु धनु राशि में मंगल के साथ समसप्तक योग बनाएगा। रूई, कपास, चीनी, गुड़, शक्कर, तिल, तेल, घी, सोना, चांदी, पीतल, लोहा, तांबा, सिक्का में प्रारम्भ में तेजी बनकर मन्दी का रुख बनेगा।

24 नवं. को बुध पूर्व में अस्त होगा। शुक्र चित्रा में आएगा। घी, तिल, तेल, खल-बिनौला, मूँगफली, सूरजमुखी, सरसों में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। सोना, चांदी में मामूली तेजी बने। 27 नवं. को बुध वृश्चिक में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। घी, तेल, सरसों, रूई, चांदी में तेज़ी, सोने में मन्दी बनेगी। 29 नवं. को बुध अनुराधा में आने से सूत, सन, रूई, सोना, चांदी में मन्दी रहेगी।

30 नवं. को शुक्र तुला में आएगा। शुक्र पर शनि की दृष्टि रहेगी। रूई, चांदी, सोना, गुड़, चीनी, चना, अरहर, कच्चे तेल, मैंथा-आयल, सोयाबीन में तेजी बनेगी।

दिसम्बर–3 दिसं. को सूर्य ज्येष्ठा में आने से सोना, चांदी, चावल, गेहूँ, जौं, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गुल, गुड़, चीनी में तेजी बने। रूई में पहले मन्दी, फिर तेजी बने।

6 दिसं. को शुक्र स्वाती तथा गुरु मूला (2) में आने से गुड़, चीनी, चना, तेल, सोयाबीन में तेज़ी, सोना, चांदी में मन्दी बने। 8 दिसं. को बुध ज्येष्ठा में आने से घी, गुड़, चीनी, चावल, चना में तेजी बने।

10 दिसं. को गुरु पश्चिम में अस्त होने से घी, तेल, तिल, उड़द, सोना, चांदी, में मन्दी, रूई तथा शेयरों में तेज़ी बने। 11 दिसम्बर, मंगलवार को धनुराशिस्थ चन्द्रमा कालीन चन्द्रदर्शन होने से रूई में पहले मन्दी, बाद में तेजी, सोना, चांदी, गुड़, सरसों, मूँगफली में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

16 दिसं. को सूर्य तथा बुध दोनों धनु राशि में आकर गुरु के साथ मेल करेगा। मंगल की इन पर दृष्टि रहेगी। रूई, कपास, सूत, तिल, सोना, चांदी में तेजी बनेगी। 17 दिसं. को शुक्र विशाखा में आने से रूई, गेहूँ, कपास, घी में मन्दी बने।

19 दिसं. को सिंहराशिगत शनि वक्री होने से बाज़ार के रूख में अचानक परिवर्तन होगा। जिन वस्तुओं में पहले तेजी होगी, उनमें मन्दी तथा जिनमें मन्दी चल रही होगी, उनमें अचानक तेजी का रूख बने। सोना, चांदी, क्रूयड-आयल, मैंथा-आयल, सरसों, सोयाबीन, लोहा में तेजी बनेगी।

25 दिसं. को शुक्र वृश्चिक में तथा बुध पू.षा. में आने से सोना, रूई, शेयर, चांदी, गुड़ में पहले मन्दी, फिर से तेज़ी बने। गेहूँ, जौं उड़द, मूँग, मोंठ, बाजरा, अलसी में तेज़ी बनेगी। 28 दिसं. को शुक्र अनुराधा में आने से गुड़, चीनी, चावल, नमक, घी, चने में मन्दी बने।

29 दिसं. को सूर्य पू.षा. में तथा मंगल मृगशिर में आने से तिल, तेल, सरसों, बिनौला, गुड़, खाण्ड, हल्दी, गुग्गुल, चांदी में तेज़ी बनेगी।

नोट—ऊपर दिए गए व्यापारिक रूख, लाइन तथा चांसों के उल्ट बाज़ार का रुख चले या वायदा व्यापार की लाइन न चले, तो तुरन्त सौदा काटकर हानि से बचें तथा तुरन्त टेलीफोन से ताज़ा मशफरा प्राप्त करें। व्यापार में किसी प्रकार की हानि होने पर हम

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

को गुरु धनु राशि में मंगल के साथ समसप्तक योग बनाएगा। रूई, कपास, चीनी, गुड़, शक्कर, तिल, तेल, घी, सोना, चांदी, पीतल, लोहा, तांबा, सिक्का में प्रारम्भ में तेजी बनकर मन्दी का रुख बनेगा।

चले या वायदा व्यापार को लाइन न चले, तो तुरन्त सौदा काटकर हानि से बचें तथा तुरन्त टेलीफोन से ताजा मशविरा प्राप्त करें। व्यापार में किसी प्रकार की हानि होने पर हम जिम्मेवार न होंगे।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चमत्कारिक मन्त्र-तन्त्र एवं यन्त्र

'मन्त्र' वह दिव्य शक्ति है, जिसके द्वारा दैवी शक्तियों का अनुग्रह, उपयुक्त साधना द्वारा सुगमता से प्राप्त किया जा सकता है। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति के लिए कर्त्तव्य की प्रेरणा देने वाली शक्ति साधना को भी मन्त्र कहते हैं।

मन्त्र सिद्धि एवं साधना के लिए दृढ़ संकल्प शक्ति एवं श्रद्धा भावना का होना आवश्यक है। जैसा कि 'भावचूड़ामणि' में लिखा गया है—

बहुजापात् तथा होमात् कायक्लेशादिविस्तरैः। न भावेन विना देवो यन्त्रमन्त्राः फलप्रदाः॥

अर्थात् चाहे कितना ही अधिक जप, होम तथा शरीर-कष्टादि किया जाए, परन्तु भाव के बिना देवता, मन्त्र और यन्त्र आदि फलप्रद नहीं होते।

प्राचीनाचार्यों के मन्त्र-तन्त्रादि के अनुष्ठान एवं सिद्धि के लिए कुछ विशेष नियमों को पालन करने के भी निर्देश दिए हैं। जैसे—गोपनीयता, मन व शरीर की शुद्धि, शुभ स्थान, सात्विक भोजन, शुभासन, विनियोग, मन्त्र, देवता, दिशा एवं शुभ-मुहूर्तादि का ज्ञान होना आवश्यक बताया गया है। जिनका पालन करके मन्त्रानुष्ठान शीघ्र व सुलभ हो जाती है। इनकी विस्तृत व्याख्या हमारी दिसम्बर, 2007 में प्रकाशित होने वाली पुस्तक *'शिव-मन्त्रावली'* में दी गई है।

मन्त्र एवं यन्त्रों के अनुष्ठान एवं सिद्धि के लिए सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य का काल, श्रीमहाशिवरात्रि काल, दीपावली, अक्षया तृतीया, सायन एवं निरयण संक्रान्ति पुण्यकाल, होलाष्टक, रवि-गुरु-पुष्यादि योग, नवरात्रों में, अमृत सिद्धि योगों, भौमवासरी अमावस आदि पर्वों को विशेष प्रशस्त माना गया है।

सायन संक्रान्ति पुण्यकाल—सन् 2007-08 ई.

भारतीय मुहूर्त्त शास्त्रों ने निरयण संक्रान्ति के पुण्यकाल की भान्ति सायन संक्रान्ति के पुण्यकाल को भी यन्त्र-मन्त्र साधना हेतु विशेष सिद्धिदायक बताया है।

2007-08 ई.	राशि	प्रवेशकाल	पुण्यकाल विवरण (भा. स्टै. टा.)
20 जनवरी	कुम्भ	16-31	प्रातः 10-31 से रात्रि 22-31 तक
18 फरवरी	मीन	30-39	रात्रि 24-39 से अगले दिन दोपहर 12-39 तक
20 मार्च	मेष	29-38	रात्रि 23-38 से 21 मार्च की प्रातः 11-38 तक
20 अप्रैल	वृष	16-38	प्रातः 10-38 से रात्रि 22-38 तक
21 मई	मिथुन	15-42	प्रातः 9-42 से रात्रि 21-42 तक
21 जून	कर्क	23-37	सायं 17-37 से 22 जून की प्रातः 5-37 तक
23 जुलाई	सिंह	10-30	प्रातः 4-30 से सायं 16-30 तक
23 अगस्त	कन्या	17-38	दोप. 11-38 से रात्रि 23-38 तक
23 सितंबर	तुला	15-21	प्रातः 9-21 से रात्रि 21-21 तक
23 अक्तूबर	वृश्चिक	24-46	सायं 18-46 से अगले दिन प्रातः 6-46 तक
22 नवंबर	धनु	22-20	सायं 16-20 से अगले दिन प्रातः 4-20 तक
22 दिसंबर	मकर	11-38	प्रातः 5-38 से सायं 17-38 तक
20 जन. (08)	कुम्भ	22-14	सायं 16-14 से अगले दिन प्रातः 4-14 तक
19 फरवरी	मीन	12-20	प्रातः 6-20 से सायं 18-20 तक
20 मार्च	मेष	11-18	प्रातः 5-18 से सायं 17-18 तक

क्रान्तिसाम्य काल 2007-08 ई.

यहाँ सूर्य-चन्द्र का सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य काल दिया जा रहा है। विवाहादि मुहूर्त्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य के काल को वर्जित किया गया है। इस समय विवाह के लिए अशुभ परन्तु यंत्र-मंत्र-तंत्र अनुष्ठान के लिए श्रेष्ठ समय होता है।

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
तारीख	घं. मिं.	तारीख	घं. मिं.
13 जन.	22 06	14 जन.	3 58
26 जन.	9 58	26 जन.	14 44
8 फर.	18 56	8 फर.	23 48
21 फर.	7 54	21 फर.	11 38
6 मार्च	8 26	6 मार्च	12 47
19 मार्च	8 05	19 मार्च	11 22
31 मार्च	20 23	31 मार्च	24 40
14 अप्रै.	8 18	14 अप्रै.	11 57
26 अप्रै.	9 12	26 अप्रै.	13 52
10 मई	5 39	10 मई	10 22
22 मई	5 05	22 मई	10 24
5 जून	7 03	5 जून	13 34
17 जून	18 08	17 जून	24 30
26 जून	26 33	27 जून	9 41
10 जुला.	5 10	10 जुला.	10 54
23 जुला.	12 32	23 जुला.	18 25
5 अग.	9 40	5 अग.	14 05
18 अग.	8 39	18 अग.	13 26
31 अग.	8 16	31 अग.	11 58
12 सितं.	24 06	13 सितं.	04 14
26 सितं.	8 04	26 सितं.	11 31
8 अक्तू.	13 05	8 अक्तू.	17 20
22 अक्तू.	6 30	22 अक्तू.	10 17
3 नवं.	02 08	3 नवं.	6 46

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
तारीख	घं. मिं.	तारीख	घं. मिं.
16 नवं.	25 28	17 नवं.	6 48
28 नवं.	23 40	29 नवं.	5 10
13 दिसं.	3 39	13 दिसं.	11 01
25 दिसं.	13 54	25 दिसं.	20 18
(सन् 2008 ई.)			
3 जन.	21 40	4 जन.	4 59
17 जन.	6 58	17 जन.	12 11
29 जन.	23 13	30 जन.	4 39
12 फर.	5 14	12 फर.	9 19
24 फर.	16 10	24 फर.	20 30
8 मार्च	25 01	9 मार्च	4 37
21 मार्च	7 17	21 मार्च	11 20
3 अप्रै.	22 10	3 अप्रै.	25 44

सूर्यग्रहण—चन्द्रग्रहण

4 मार्च, 2007 ई. को चन्द्रग्रहण तथा 19 मार्च, 2007 ई. को सूर्यग्रहण भारत में दृश्य होंगे। अपने नगर के पर्वकाल के मध्य मन्त्र साधना करना श्रेयस्कर रहेगा। 28 अगस्त, 2007 ई. को भारत के केवल पूर्वी प्रदेशों में दृश्य होंगे। देखें ग्रहण विवरण पृष्ठ 11, 12.

दीपावली पर्व

9 नवंबर, 2007 ई. को दीपावली पर्व पर यंत्र-मंत्र-तंत्र अनुष्ठान के लिए अपने स्थानीय नगर का निशीथ, महानिशीथ काल जानने के लिए देखें पृष्ठ 73, 74.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

"प्रेत-बाधा निवारण के लिए श्रीहनुमान यन्त्र"

मन्त्र— प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यानघन।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर॥

प्रतिदिन ११ माला के हिसाब से ४९ दिनों तक इसका जप करना चाहिए। श्रीहनुमान जी की मूर्त्ति या चित्र के सामने बैठकर पञ्चोपचार से उनकी पूजा करके कम-से-कम सात शनिवार तक प्रत्येक शनिवार को हनुमान चालीसा के एक सौ पाठ करें।

इस (६४) यन्त्र को भोजपत्र पर लाल चन्दन से लिखकर, मँढ़वाकर सभी कमरों में टांग दें।

ॐ ॐ ॐ

ॐ	२४	३१	२	७	ॐ
ॐ	६	३	२८	२७	ॐ
ॐ	३०	२५	८	१	ॐ
ॐ	४	५	२६	२९	ॐ

ॐ ॐ ॐ

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

प्रेत की सद्गति के लिए भागवत् का सप्ताह-अनुष्ठान के रूप में एक पाठ और श्रीविष्णुसहस्रनाम के १०८ पाठ कराने चाहिए।

❖श्री लक्ष्मी-विशांक यन्त्र (बीसा यन्त्र)❖

बीसा यन्त्र को यदि एक लाख मन्त्र जपकर हवन द्वारा यन्त्र सिद्ध कर लिया जाए तो इसका दर्शनमात्र ही समस्त संकटों का निवारण कर देता है। धन-सम्पदा, अर्थ-लाभ, वैभव-सम्मान प्राप्ति, शत्रु-दमन के लिए बीसा यन्त्र एक अद्भुत एवं परम प्रभावी यन्त्र है।

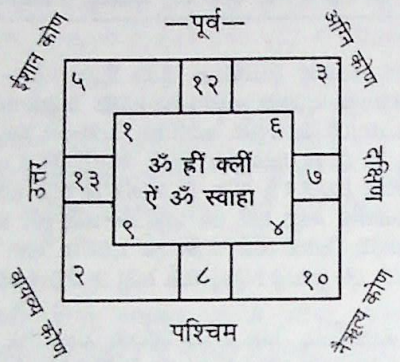

प्रतिदिन स्नान, पूजा के पश्चात् श्रीलक्ष्मी जी की मूर्त्ति, चित्र (या यन्त्र जो भी हो) के सामने धूप-दीप जलाकर लक्ष्मी जी का ध्यान करते हुए नीचे लिखे किसी भी मन्त्र का जाप (१, ३, ७ माला) नियमित रूप से संयमपूर्वक निर्धारित संख्या (५१ हज़ार अथवा सवा लाख) में करें अथवा किसी सुयोग्य ब्राह्मण द्वारा करवाएँ। कमलगट्टे की माला हो तो अच्छा है। पाठ से पूर्व एवं पाठ के बाद निम्न श्री लक्ष्मी स्तुति पढ़ लेवें तो अत्यन्त शुभकारी होगा—

भवानि त्वं महालक्ष्मीः सर्वकाम प्रदायिनी। सुपूजिता प्रसन्नां स्यान्महालक्ष्म्यै नमोऽस्तुते॥
सर्वज्ञ सर्व वरदे सर्व दुष्ट भयंकरी। सर्व दुख-हरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते॥

श्रीमहालक्ष्मी मन्त्राः—

- **"ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः"**
- **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः॥ ॐ श्री ह्रीं श्री कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद।**
- **श्री ह्रीं श्री महालक्ष्म्यै नमः॥ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्री सिद्ध लक्ष्म्यै नमः।**
- **ॐ ह्रीं महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्नीम् व। धीमहि तन्नोलक्ष्मी प्रचोदयात् ह्रीं ॐ॥**

उपरोक्त मन्त्रों में से कोई एक मन्त्र संकल्प एवं श्रद्धापूर्वक किसी शुभ मुहूर्त्त जैसे नवरात्रे, अक्षय तृतीया, गुरुपुष्य, रविपुष्य योग, दीपावली, ग्रहण काल में यथेष्ठ संख्या में करने से शीघ्र लाभ होता है। पाठ के उपरान्त श्रीसूक्त अथवा लक्ष्मी स्तोत्र का पाठ करना प्रशस्त रहता है। ध्यान रहे, पाठोपरान्त निष्ठापूर्वक अभीष्ट कार्य हेतु पुरुषार्थ एवं उद्यम करना भी अनिवार्य है।

"संक्षिप्त लक्ष्मी स्तोत्र"

त्रैलोक्यपूजिते देवि कमले विष्णु वल्लभे। यथा त्वमचला कृष्णे तथा भव मयि स्थिरा॥
ईश्वरी कमला लक्ष्मीश्चला भूतिर्हरि प्रिया। पद्मा पद्मालया सम्पदुच्चैः श्री पद्मा धारिणी॥
द्वादशैतानि नमानि लक्ष्मीं सम्पूज्य यः पठेत्। स्थिरा लक्ष्मी र्भवेत्तस्य पुत्रदारादिभिः सह॥

❖लक्ष्मी प्रदायक—श्री कनकधारा मन्त्र❖

प्राण प्रतिष्ठा युक्त कनकधारा यन्त्र को स्थापित करके नित्य निम्न कनकधारा मन्त्र की स्फुटक माला से एक या तीन माला का पाठ करने से लक्ष्मी देवी प्रसन्न होती है तथा आर्थिक प्रगति होती है।

"ॐ वं श्री वं एं ह्रीं क्लीं कनकधारायै स्वाहा॥"

कनकधारा मन्त्र का एक लाख जप पूरा करें तथा यदि सम्भव हो तो देवीदयालु की पं. पन्ना लाल कृत **'श्री दुर्गा सप्तशती'** में से कनकधारा स्तोत्र का पाठ भी अवश्य करें। जिन साधकों के पास श्री यन्त्र है, उन्हें भी कनकधारा यन्त्र अवश्य रखना चाहिए। दोनों यन्त्रों में परस्पर सामञ्जस्य होने से फल शत गुणा अधिक बढ़ जाता है।

❖भगवत्कृपा से पुत्र प्राप्ति के लिए❖

रविवार के दिन 'पुत्रजीवाबूटी तथा शिवलिङ्गी बूटी' को जड़, डाली तथा पत्तों सहित उखाड़ लाये। फिर एक वर्णवाली गौ के दूध के साथ उसे कुमारी के द्वारा पिसवाकर एक ही वर्णवाली गौ के दूध के साथ मिलाकर रजोदर्शन से शुद्ध होकर चौथे दिन से छठे दिन तक—तीन दिन पिये। दवा की मात्रा एक तोला प्रतिदिन। मिश्री मिलाकर दूध-भात का भोजन करें। अधिक परिश्रम न करें। दवा पीने से पूर्व नीचे लिखे दोनों मन्त्रों की एक-एक माला (१०८ दाने वाली) श्रद्धा विश्वासपूर्वक अवश्य जप लें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

भवानि त्वं महालक्ष्मीः सर्वकाम प्रदायिनी। सुपूजितप्रसन्नाभवन्तु मेसर्वदा नमोऽस्तुते॥
सर्वज्ञ सर्व वरदे सर्व दुष्ट भयंकरी। सर्व दुख-हरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते॥

पूर्व नीचे लिखे दोनों मन्त्रों की एक-एक माला (१०८ दाने की) श्रद्धा विश्वासपूर्वक अवश्य जप लें।

'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।'
'देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥'

तदनन्तर प्रतिदिन दवा पीने से पूर्व उपर्युक्त 'देवकीसुत गोविन्द.....' मन्त्र की एक माला का जप कर लें।

साथ ही (७२) यन्त्र का भी प्रयोग करें। इस यन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखकर बाईं भुजा, कमर या कण्ठ में ताँबे के तावीज़ में डालकर धूप देकर धारण कर लें। हरिवंशपुराण के पाठ करने अथवा श्रवण से भी पुत्र प्राप्ति होती है।

०८	०१	३४	२९
३०	३३	०४	०५
०२	०७	२८	३५
३२	३१	०६	०३

व्रतोपवास द्वारा सन्तानोत्पत्ति—(1) सन्तान प्राप्ति के लिए भाद्रपद कृष्ण सप्तमी को व्रत किया जाता है। इस दिन उपवास रहकर भगवान् विष्णु का पूजन औरदूसरे दिन "ॐ क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन बल्लभाय स्वाहा"—इस मन्त्र से अग्नि में यव-तिलादि की 108 बार आहुति देकर इच्छा और श्रद्धानुसार भोजन कराएं। पारणा में बिल्वपत्र खाकर षड्रस पदार्थों का भक्षण करें। तदनन्तर प्रत्येक मास की कृष्ण सप्तमी के दिन ऐसा ही व्रत करें। वर्ष पूरा होने पर ब्राह्मण को गोदान करें। वाराह पुराण का वचन है कि ऐसा करने से पुत्रार्थी की निश्चित रूप से मनोकामना पूर्ण होती है।

(2) पौष शुक्ल एकादशी-पुत्रदा एकादशी के नाम से विख्यात है। इस दिन नियमपूर्वक एकादशी व्रत करने वाले व्रती की मनोकामना निश्चित रूप से पूर्ण होती है।

❖श्रीबगुलामुखी देवी की उपासना❖
('शत्रुविजयी मन्त्र')

श्रीबगला महाविद्या की उपासना गुरु के सान्निध्य में रहकर सतर्कता, इन्द्रियनिग्रहपूर्वक सफलता की प्राप्ति होने तक प्रयत्नपूर्वक करते रहना चाहिए।

आपका विरोधी अथवा शत्रु आपको अन्यायपूर्वक तंग कर रहा हो अथवा राजकीय रुकावटों के कारण उपयुक्त प्रमोशन न मिल पा रहा हो अथवा व्यवसाय में गुप्त शत्रु हानि पहुँचाने का यत्न करते हों अथवा आपको अनावश्यक रुपेण, झगड़े आदि में फंसाया जा रहा हो तो निम्न श्री बगुलामुखी मन्त्र विशेष सहायक सिद्ध होता है।

साधक को गुरु से बगला मन्त्र का उपदेश ग्रहण कर ब्रह्मचर्यपूर्वक देवीमन्दिर में, पर्वतशिखर पर, शिवालय में, गुरु के समीप या जैसी सुविधा हो पीताचार से बगलामहामन्त्र का पुरश्चरण करना चाहिए। महाविद्या बगुलामुखी का ३६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है—

"ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदम्।
स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा॥"

मन्त्र के जपादि के विषय में बगलापटल (सिद्धेश्वर तन्त्र) में विशेष विधान बताए हैं, जो इस प्रकार हैं—

पीताम्बरधरो भूत्वा पूर्वाशाभिमुखः स्थितः। लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं हरिद्राग्रन्थिमालया॥
ब्रह्मचर्यरतो नित्यं प्रयतो ध्यानतत्परः। प्रियङ्गु कुसुमेनापि पीतपुष्पैश्च होमयेत्॥

बगला के जप में पीले रंग का विशेष महत्त्व है। जपकर्त्ता को पीला वस्त्र पहनकर हल्दी की गाँठ की माला से जप करना चाहिए। देवी की पूजा और होम में पीले पुष्पों, प्रियङ्गु, कनेर, गेंदा आदि के पुष्पों का प्रयोग करना चाहिए। शुचिर्भूत हो पीले कपड़े पहनकर साधक पूर्वाभिमुख बैठकर ही जप करें। उसे ब्रह्मचर्य का पालन अनिवार्यतः करना चाहिए। जप के पूर्व पूर्वाभिमुख आसन पर बैठकर आसनशुद्धि, भूशुद्धि, भूतशुद्धि, अङ्गन्यास, करन्यास आदि करना चाहिए। जप संख्या एक लाख बतलाई गई है। विशेष बात यह बताई है कि प्रतिदिन जप के अन्त में दशांश होम पीले पुष्पों से अवश्य करना चाहिए।

महाविद्या बगुलामुखी का ध्यान निम्नलिखित है, जो जप से पूर्व करणीय है—

सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं,
हेमाभाङ्गरुचिं शशाङ्कमुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम्।
हस्तैर्मुद्गरपाशवज्ररसनाः सम्बिभ्रतीं भूषणैः,
व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्॥

❖ऋण-मोचन के लिए मन्त्र❖

कुश की जड़, बिल्व का पञ्चाङ्ग (पत्र, फल, बीज, लकड़ी और जड़) तथा सिन्दूर—इन सबका चूर्ण बनाकर चन्दन की पीठिका पर नीचे लिखे मन्त्र को लिखे। तदनन्तर पञ्चोपचार से पूजन करके गो-घृत के द्वारा ४४ दिनों तक प्रतिदिन सात बार हवन करें। मन्त्र की जप संख्या कम-से-कम १०,००० है, जो ४४ दिनों में पूरी होनी चाहिए। ४३ दिनों तक प्रतिदिन २२८ मन्त्रों का जाप हो और ४४वें दिन १९६ मन्त्रों का। तद्नन्तर १००० मन्त्र का जप दशांश के रूप में करना आवश्यक है। मन्त्र यह है—

ॐ आं ह्रीं क्रौं श्रीं श्रियै नमः ममालक्ष्मीं नाशय नाशय मामृणोत्तीर्ण कुरु कुरु सम्पदं वर्धय वर्धय स्वाहा॥

❖दाम्पत्य-सुख एवं शत्रु विजय हेतु हनुमान प्रयोग❖

शुक्ल पक्ष के मंगलवार से प्रारम्भ कर यह प्रयोग लगातार ७ या ११ मंगलवार करें। यदि सम्भव हो तो प्रतिदिन करें। हनुमान जी की प्रतिमा लेकर चन्दन, पीला सिन्दूर और देसी घी से तिलक लगाएं। श्री हनुमान जी से इसी बात की प्रार्थना करनी है कि जिस प्रकार आपने सीता और श्रीराम का मिलन करवाया था, उसी प्रकार मुझे मेरे पति की प्राप्ति कराएं।

"दारिद्रदुःखदहनं विजयं विवादे, कल्याण साधनममंगलवारणं च।
दाम्पत्यदीर्घसुखसर्वमनोरथाप्तिम, श्री मारुतेः स्तवमहो नितरां तनोति॥"

हर बार मन्त्र उच्चारण के पश्चात् ललाट से पूँछ तक तिलक लगाएं, तत्पश्चात् पूंछ से ललाट तक पुनः यही क्रिया सम्पन्न करें। प्रतिदिन कम-से-कम २१ बार अवश्य इस मन्त्र का जप करें। प्रति मंगलवार एक माला का पाठ करें। मन्त्र जप करते हुए मन ही मन हनुमान जी से यह प्रार्थना करनी चाहिए कि हे हमुमान ! जिस प्रकार आपने माता सीता को उनके अधीष्ठ राम से मिलवाया था, उसी प्रकार मेरे मार्ग की सभी बाधाओं तथा विपदाओं का शमन कर मुझे मेरे पति से मिलाने की कृपा करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

❖सिर पीड़ा दूर करने के लिए हनुमद् शाबर-मंत्र❖

लंका में बैठ के माथ हिलावे हनुमंत। सो देखिके राक्षसगण पराय दूरंत॥
बैठी सीतादेवी अशोक वन में। देखि हनुमान को आनन्दभई मन में॥
गई उर विषाद देवी स्थिर दरशाय। 'अमुक' के सिर व्यथा पराय॥
'अमुक' के नहीं कछु पीर नहिं कछु भार। आदेश कामाख्या हरिदासी चण्डीकी दोहाई॥

सिर की पीड़ा से पीड़ित व्यक्ति को दक्षिण व्यक्ति को दक्षिण की ओर मुख करके बैठा दें। सिर को हाथ से पकड़कर मन्त्रोच्चारण करते हुए झाड़े। 'अमुक' के स्थान पर रोगी का नाम ले लें। (हनुमान अंङ्क)

❖'नेत्र रोग-शमन के लिए हनुमद्-शाबर मन्त्र'❖

ॐ झलमल जहर भरी तलाई अस्ताचल पर्वत से आई जहाँ बैठा हनुमंता जाई फूटै न पाकै करै न पीड़ा जती हनुमंत हरे पीड़ा मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु को॥

इस मन्त्र को सिद्ध कर ११ बार उच्चारण करते हुए नीम की डाली से झाड़े। लगातार तीन दिन झाड़ने से नेत्र रोग एवं पीड़ा का शमन हो जाता है।

❖श्रीहनुमान-सम्बन्धी मानस-सिद्ध मन्त्र❖

(१) मुकद्दमे में विजय प्राप्ति के लिए-

पवन तनय बल पवन समाना। बुद्धि बिबेक बिग्यान निधाना॥
कवन सो काज कठिन जग माहीं। जो नहिं होइ तॉत तुम्ह पाहीं॥ किष्कि. ७९०

(२) मस्तिष्क की पीड़ा दूर करने के लिए-

हनुमान अंगद रन गाजे। हाँक सुनत रजनीचर भाजे॥

(३) खोई वस्तु पुनः प्राप्त करने के लिए-

गई बहोर गरीब नेवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजु॥

(४) विवाह के लिए-

तब जनक पाई बसिष्ठ आयसु ब्याह साज संवारिकै।
मांडवी श्रुत कीरति उरमिला कुँअरि लई हैकारिकै॥

(५) बिक्री बढ़ाने का मन्त्र-

भवर वीर तू चेला मेरा, खोल दुकान कहाकर मेरा,
उठे जो डंडी बिके जो माल, भँवर वीर सोखे नहीं जाय॥

अष्टाङ्ग हवन की सामग्री—(१) चन्दन का बुरादा (२) तिल (३) शुद्ध घी (४) शुद्ध शक्कर (५) अगर (६) तगर (७) कपूर (८) शुद्ध केसर (९) नागरमोथा (१०) पञ्चमेवा, जौं और चावल।

जिस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए जिस चौपाई या सोरठे का जप बतलाया गया है, उसको सिद्ध करने के लिए एक दिन अष्टाङ्ग हवन की सामग्री से उसी चौपाई या सोरठे के द्वारा १०८ बार हवन करना चाहिए। यह हवन केवल एक ही दिन करना चाहिए। यह हवन रात को १० बजे के बाद ही करना उपयुक्त होगा। प्रत्येक आहुति में चौपाई आदि के अन्त में 'स्वाहा' का उच्चारण करना चाहिए। इसके बाद जब तक कार्य सफल न हो, तब तक उस मन्त्र (चौपाई, दोहे आदि) का प्रतिदिन कम-से-कम एक सौ आठ बार प्रातःकाल या रात्रि को जब सुविधा हो, जप करते रहना चाहिए।

❖सन्तान कामेश्वरी मन्त्र❖

"शक्ति उपासना" में "सन्तान कामेश्वरी" का बड़ा महत्त्व है। जिन महिलाओं को गर्भ निरोध हो जाता है अथवा अन्य किसी कारण से सन्तान प्राप्ति नहीं होती, उनके लिये यह मन्त्र शीघ्र फलदायक है। अपने संकल्प के साथ भगवती का पूजन करके ध्यान करना चाहिये।

ध्यान-भजे कामेश्वरीं देवीं शिवांके रूपसन्निभाम्। व्रतानुष्ठान मात्रेण आशु सन्तान वर्धिनीम्॥

विनियोग

अस्य श्रीसन्तानकामेश्वरी महामंत्रस्य मन्मथ ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः श्रीसन्तानकामेश्वरी देवता क्लीं बीजं श्रीं शक्तिः श्रीं कीलकं (अमुक्याः) मम सन्तान प्राप्तये, वृद्धये जपे विनियोगः।

अथ जपनीय मन्त्र

ॐ क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवति सन्तानकामेश्वरि गर्भविरोधं।
निरासय निरासय सम्यक् शीघ्रं सन्तानमुत्पादयोत्पादय स्वाहा॥
श्रीकामेश्वरी यै अर्पणमस्तु

नोट—सवा लक्ष जपान्ते, दशांश हवन, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन से पूर्ति करें। कन्या पूजन करके आरम्भ करे। सन्तान अवश्य होती है। (विशेष विधि देखें रुद्रायमल ग्रन्थ)

❖पत्नी प्राप्ति के लिये विश्वावसु गंधर्वराज मन्त्र❖

निम्न मन्त्र का यदि सम्भव हो तो सवा लाख जाप करें। अन्यथा प्रतिदिन सात बार मन्त्र से तर्पण करने से कुछ समय में कार्य सफल हो जाता है।

विनियोग—ॐ अस्य श्रीगंधर्वराज विश्वावसु गंधर्व मन्त्रस्य संमोहन ऋषि गायत्री छन्दः श्रीगंधर्व विश्वावसुदेवता भार्या लाभार्थे जपे विनियोगः।

ध्यानम्— हेमाम्भोरुहभूषितो रथवरे पुंड्रेक्षुभि कल्पिते,
कल्हार स्थित रक्तपाणि कमलै कन्याजनै सेवितम्।
गंधर्वाधिपतिं प्रसन्न हृदयं विश्वावसु यः पुमान्।
मंत्रं तस्य जपेल्लभवेत कन्या मस्ये कांक्षितम्॥

मन्त्र—ॐ विश्वावसुनामि गंधर्वः कन्यानामधिपति सुरूपां सालंकरां कन्यां देहि मे नमस्तस्यै विश्वावसवे स्वाहा॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MOE-IKS

अष्टाङ्ग हवन की सामग्री—(१) चन्दन की बुरादी (२) तिल (३) शुद्ध घी (४) शुद्ध शक्कर (५) अगर (६) तगर (७) कपूर (८) शुद्ध केसर (९) नागरमोथा (१०) पंचमेवा, जौं और चावल।

मंत्र : ॐ विश्वावसुर्नाम गन्धर्व : कन्यानामधिपति सुरूपां सालंकरां कन्यां देहि मे नमस्तस्मै विश्वावसये स्वाहा॥

आजकल बहुतात लोगों को रोजगार अथवा वैवाहिक दृष्टि से विदेश भ्रमण की इच्छा रहती है, परन्तु किन्हीं कारणों से विघ्न-बाधाओं का सामना रहता है। उन्हें निम्न मन्त्र का जप करना शुभ रहेगा—''ॐ अनंग बल्लभाये विदेश गमनाय कार्य सिद्धयर्थे नमः''

किसी भी शुक्ल पक्ष के शुभ शुक्रवार प्रातः स्नानादि के पश्चात् स्वच्छ कपड़े पहनकर सफेद रंग के सूती आसन पर बैठकर अपने सामने एक लकड़ी के पट्टे पर सफेद वस्त्र को बिछाकर उस पर दक्षिणावर्ती शंख रखकर केसर से स्वास्तिक चिन्ह व तिलक लगाकर श्रद्धापूर्वक उपरोक्त मंत्र का जाप स्फटिक की माला से करें।

मंत्र जप समापन होने पर उस सफेद वस्त्र में दक्षिणावर्ती शंख को भली-भांति लपेटकर अपने पूजा स्थल पर रख देने से विदेश भ्रमण की सभी बाधाएं स्वतः ही दूर हो जाती हैं तथा विदेश भ्रमण की संभावनाएं प्रबल हो जाती है।

⇨ 'सर्वव्याधि नाश के लिए महमृत्युञ्जय मन्त्र' ⇦

'ॐ हौं जूँ सः, ॐ भूर्भुवः स्वः। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। स्वः भुवः भूः ॐ। सः जूँ हौं ॐ।'

अर्थ—हम परमपिता त्र्यम्बक (भगवान् शिव) की आराधना करते हैं। वह परमसुखदायक एवं पुष्टिवर्धक हैं। जैसे तरबूज आदि फल (पक जाने पर स्वयं ही) बेल से छूट जाता है, वैसे ही (पूर्ण आयु भोगकर) मैं मृत्युमय जीवन से (बिना कष्ट भोगे) छूट जाऊँ, परन्तु अमृतमय जीवन से मत छूटूँ।

संक्षिप्त विधि—यह सम्पुटयुक्त मन्त्र है। ॐकार का प्रतीक शिवलिङ्ग है; उसी के ऊपर अविच्छिन्न-अनवरत जलधारा के प्रवाहवत अपनी दृष्टि स्थिर करते हुए विश्वासपूर्वक मृत्युंजय महामन्त्र का जाप करता रहे तो ध्यानावस्था प्रत्यक्ष खड़ी हो जाती है और एक विलक्षण आनन्द की अनुभूति होती है।

किसी शुभ मुहूर्त में शुद्ध शान्तचित्त, संयमपूर्वक देवालय (विशेषकर शिव मन्दिर), गंगादि तीर्थ स्थान, जलाशय, पीपल वृक्ष के पास अथवा अपने निवास स्थान में स्वच्छ एकान्त स्थान पर संकल्पपूर्वक निश्चित विषम संख्या (एक, तीनादि) में नियमित रूप में श्रद्धापूर्वक पाठ करने से अवश्य लाभ मिलता है। जप संख्या में उलट-फेर या कमी बेशी करने से विक्षिप्तता का भय रहता है। जपसंख्या पूर्ण हो जाने पर जपसंख्या का दशमांश हवन, हवन का दशांश तर्पण तथा एवं तर्पण का दशांश मार्जन एवं यथेष्ठ दानादि सहित ब्राह्मण भोजन करवाना चाहिए तथा पाठोपरान्त शिव कवच पढ़ना चाहिए। जप के बाद इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए।

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादन्महेश्वर॥
मृत्युंजय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम। जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः॥

श्रीमहामृत्युञ्जय मंत्र के जप से अकालमृत्यु का निवारण, दीर्घायु व आरोग्य की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त जन्मकुण्डली में ग्रह-नक्षत्र दोष, नाड़ी दोष, मंगलीक दोष, शत्रुषडाष्टक, विधुर एवं वैधव्यादि दोषों के निवारण हेतु तथा अतिशय क्लिष्ट एवं असाध्य रोगों और मृत्युतुल्य शारीरिक एवं मानसिक रोगों में उपायस्वरूप अचूक एवं सिद्ध मन्त्र माना गया है।

(1) यदि यथेष्ठ परिश्रम के बावजूद कारोबार चल न रहा हो तथा अत्यधिक खर्चे हों, तो गुरुपुष्य योग और शुभ चन्द्रमा के दिन प्रातः हरे रंग के कपड़े की छोटी थैली तैयार करें। श्रीगणेश जी के चित्र के आगे संकटनाशक गणेश स्तोत्र के पाठ कर, इस थैली में 7 मूंग, 10 ग्राम साबुत धनिया, एक पंचमुखी रुद्राक्ष, एक चाँदी का रुपया या 2 सुपारी, 2 हल्दी की गांठे रखकर गणेश जी को शुद्ध घी के मोदक का भोग लगाएं। यह थैली तिजोरी या कैश बॉक्स में रख दें। गरीबों और ब्राह्मणों को दान करते रहें। आर्थिक स्थिति शीघ्र सुधर जाएगी।

(2) उचित समय पर विवाह होने के लिए शुक्ल पक्ष में किसी गुरुवार के दिन प्रातःकाल स्नानादि के पश्चात् पीले वस्त्र पहनकर, बेसन देसी घी में सेंककर, बूरा मिलाकर 108 लड्डू बनाएं। पीले रंग की प्लास्टिक की टोकरी में पीले रंग का कपड़ा बिछाकर उस पर उन लड्डुओं को रख दें। कुछ दक्षिणा रख सारा सामान शिव मन्दिर में जाकर गणेश-पार्वती शिवजी का पूजन कर मनोवांछित वर प्राप्ति का संकल्पकर किसी ब्राह्मण को दान दें। इस प्रयोग से शीघ्र विवाह की संभावना बनेगी।

(3) पीपल पर लगातार 43 दिन लड़की या लड़का जल चढ़ाए, तो शादी की रुकावट दूर हो जाती है। रविवार को तथा मासिक धर्म आने पर जल नहीं चढ़ाना है।

(4) जब गर्भधारण हो गया हो, तो एक चाँदी की बांसुरी बनाकर कृष्ण-राधा के मन्दिर में पति-पत्नी दोनों, गुरुवार के दिन चढ़ाएं, तो गर्भपात नहीं होगा। अनुभूत उपाय है।

(5) ''ॐ गौरी आवे शिव जी ब्याहवे'' (अपना नाम) को विवाह तुरंत सिद्ध करें, देर न करै देर होय तो शिवजी का त्रिशूल पड़े। गुरु गोरख नाथ की दुहाई।'' इस मन्त्र की 11 दिन तक लगातार 1 माला रोज जप करें। दीपक और धूप जलाकर 11वें दिन एक मिट्टी के कुल्हड़ का मुँह लाल कपड़े में बाँध दें। उस कुल्हड़ पर बाहर की तरफ 7 रोली की बिंदी बना कर अपने आगे रखें और ऊपर दिए गए तंत्र-मंत्र की 5 माला का जप करें। चुपचाप कुल्हड़ को रात के समय किसी चौराहे पर रख आवें। पीछे मुड़ कर मत देखें। सारी रुकावट दूर हो कर बहुत शीघ्र विवाह हो जाता है।

(6) भगवान् कृष्ण को चांदी की बांसुरी बनाकर चढ़ाएं। साथ ही 43 दिन लगातार पति-पत्नी भगवान् कृष्ण के मन्दिर में जाकर 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः' का (गत पृष्ठ पर सन्तान गोपाल मंत्र का भी पाठ करें) तथा बाद में गाय को चारा डालें, तो जल्दी सन्तान की प्राप्ति हो जाएगी। मासिक धर्म में पति अकेला ही इस क्रिया को करें।

(7) प्रेम के दिवाने के लिए लोहे के एक टुकड़े को आग में गर्म करके उसे पानी से बुझाएं। इसी प्रकार तीन बार गर्म करके क्रमशः पानी में बुझाएं और प्रत्येक बार बुझाते समय यह कहते जाएं कि जिस प्रकार यह गर्म लोहा पानी में शीतल होता है, उसी प्रकार अमुक लड़के का प्रेम अमुक लड़की से शीतल हो जाए। फिर उस पानी से प्रेम में पागल रोगी का मुँह धुलाएँ और थोड़ा पानी उसके वक्षस्थल पर भी छिड़क दें। 3 दिन तक इस क्रिया द्वारा वह अपनी प्रेमिका को भूल जाएगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बारह राशियों का मासिक एवं वार्षिक फल सन् 2007 ई.

बारह राशियों का मासिक एवं वार्षिक फल ग्रहों की गोचर स्थित्यनुसार लिख रहे हैं। अपने जीवन सम्बन्धी और अधिक जानकारी एवं महत्त्वपूर्ण विषयों–विद्या, व्यवसाय, विवाह, सन्तान, विदेश गमनादि प्रश्नों सम्बन्धी विशेष फलादेश तथा विशेष उपाय जानने के लिए शुद्ध एवं बड़ी जन्मपत्री का होना आवश्यक है। हमारे कार्यालय से शुद्ध एवं विस्तृत जन्मपत्री बनवाने के लिए जातक/जातिका का नाम, जन्म समय, वर्ष, स्थान (Place & Time of Birth), माता–पिता एवं व्यवसाय आदि का विवरण तथा अग्रिम रूप में पूरी फीस भेजें। बड़ी विस्तृत जन्मपत्री हस्तलिखित फलादेश सहित की फीस 551 रु. से 1100 रुपये। **मध्यम जन्मपत्री** 375 रु., वर्षफल फीस 300 रु.। विदेश में उत्पन्न जातक की फीस 31 पौंड अथवा 40 डालर होगी। डाकव्यय अतिरिक्त होगा, फीस M.O. या ड्राफ्ट द्वारा अग्रिम भेजें।

—पं. पन्ना लाल ज्योतिषी, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर–8

मेष राशि (Aries)—(चु, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

वर्ष प्रवेश कुंडली

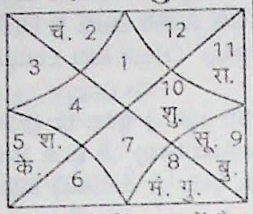

ग्रहगोचर—10 जन. से 15 जुला. तक इस राशि पर शनि की दशम दृष्टि एवं शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव रहेगा। 18 फर. से राशिस्वामी मंगल उच्च राशि में तथा 14 अप्रैल से 14 मई के मध्य सूर्य इस राशि पर **उच्च** स्थिति में संचार करेगा। उच्चविद्या में सफलता एवं धन लाभ के अवसर बनेंगे। 7 मई से 15 जून के मध्य राशिस्वामी मंगल द्वादशस्थ होने से अस्थिरता एवं वृथा खर्च बढ़ेंगे। 16 जून से 28 जुला. तक मंगल इसी राशि में शुभ होगा। 22 नवं. से वर्षान्त तक गुरु की शुभ दृष्टि रहेगी।

जनवरी—मासारम्भ में राशि स्वामी मंगल अष्टम में होने से बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। परन्तु 8 ता. से मं. भाग्य स्थान में आने से बिगड़े कामों में सुधार होगा। धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। उत्तरार्ध में ढैय्या के कारण तनाव व उलझनें भी होंगी।

फरवरी—पूर्वार्द्ध भाग में शनि की दृष्टि के कारण घरेलू उलझनें व व्यवसायिक परेशानियाँ बढ़ेंगी। खर्च भी अधिक रहेंगे। 18 ता. से राशि स्वामी मंगल उच्चराशिस्थ होने से पराक्रम में वृद्धि तथा उच्च प्रतिष्ठित लोगों से सम्बन्ध बनेंगे। धनागमन के साधनों में भी कुछ सुधार होगा।

मार्च—मास के आरम्भ में मंगल मकर राशि में संचरित है। पराक्रम एवं उत्साह में वृद्धि होगी। धन लाभ के अवसर एवं वाहन आदि सुखों की प्राप्ति होगी। निकट भाई-बन्धुओं से सम्पर्क बनेंगे। उत्तरार्ध भाग में अकस्मात् खर्च बढ़ेंगे।

अप्रैल—मासारम्भ में राशि स्वामी कुम्भ राशि में है। अत्यधिक संघर्ष के पश्चात् व्यवसाय में निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। घरेलू उलझनों के कारण मन चिन्तित रहे। उत्तरार्ध में कोई बिगड़ा काम बनेगा। भाग्य में उन्नति के योग हैं। वैशाखी को इष्टजाप, पाठ व दान करना शुभ होगा।

मई—रोजगार के लिए दौड़-धूप अधिक रहेगी। परन्तु प्रयास सार्थक सिद्ध होंगे। घरेलू उलझनों के कारण मन गुप्त परेशानियों से संतप्त रहे। किसी निकट बन्धु से कपटपूर्ण धोखा मिलने के संकेत हैं। विद्यार्थियों को सरस्वती स्तोत्र का नित्य पाठ करना चाहिए।

जून—मास के पूर्वार्द्ध में राशि स्वामी मंगल द्वादश भावस्थ होने से वृथा दौड़-धूप अधिक रहेगी। आय कम व खर्च भी अधिक रहेंगे। ता. 16 से मंगल इसी राशि में संचार करने से बिगड़े कामों में सुधार होगा। निर्वाह योग्य आ[illegible] सम्पर्क बनेंगे। ता. 16 से [illegible] स्वभाव में तेज़ी रहेगी। उत्तरार्ध में अकस्मात् धन लाभ के अवसर बनेंगे।

अगस्त—राशि स्वामी मंगल द्वितीयस्थ होने से विशेष परिश्रम एवं पुरुषार्थ करने पर ही धन लाभ के अवसर बनेंगे। कुछ रुके हुए कार्यों में प्रगति होगी। उच्च क्षेत्र के व्यक्तियों से सम्पर्क बढ़ेंगे। परन्तु खर्च अधिक होंगे।

सितम्बर—मास के पूर्वार्द्ध भाग में व्यवसाय सम्बन्धी उलझनें बढ़ेंगी, भाग-दौड़ एवं वृथा खर्च बढ़ेंगे। गृह में निकट बन्धु से मन-मुटाव होगा। ता. 16 से मंगल तृतीय स्थान में होने से पराक्रम एवं परिश्रम में वृद्धि होगी।

अक्तूबर—मासारम्भ में कार्यक्षेत्र में विघ्न-बाधाएँ रहेंगी। खर्चों की अधिकता से मन चिन्तित व अशान्त होगा। शरीर कष्ट और गुप्त शत्रु का भय होगा। ता. 17 से सूर्य की उच्च दृष्टि पड़ने से किसी विशिष्ट व्यक्ति की सहायता से बिगड़े कामों में सुधार होगा।

नवम्बर—आय कम तथा संघर्ष अधिक रहेगा। व्यवसाय एवं लाभ में रुकावटें पैदा होंगी। किसी निकटस्थ व्यक्ति द्वारा धोखा मिलने के संकेत हैं। अकस्मात् धन हानि के योग हैं। ता. 22 के बाद गुरू की शुभ दृष्टि होने से भाग्योन्नति व लाभ के अवसर मिलेंगे। धर्म-कर्म की ओर रुचि बढ़ेगी।

दिसम्बर—आकस्मिक धन लाभ हो, परन्तु मनोरंजन एवं विलासादि कार्यों पर खर्च अधिक होगा। जल्दबाजी में किए गए निर्णयों से हानि होगी। व्यवसाय में अड़चनों के कारण परेशानियाँ बढ़ेंगी। किसी नए कार्य-क्षेत्र की योजना बनेंगी।

वृष राशि (Taurus)—(इ, उ, ए, ओ, व, वि, वृ, वे, वो)

वर्ष प्रवेश कुंडली

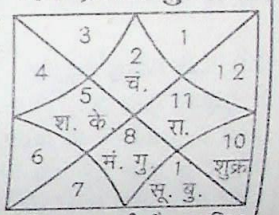

ग्रहगोचर—वर्षारम्भ से ही वृष राशि पर मंगल-गुरु की विशेष दृष्टियाँ पड़ रही हैं। कठिन संघर्ष के बाद सफलता प्राप्त होगी। ता. 16 फर. से 11 मार्च तक की अवधि में राशि स्वामी शुक्र उच्च स्थिति (मीन) में संचार करेगा। वाहनादि सुख-सुविधाओं पर खर्च होंगे। वर्षारम्भ से 21 नवंबर तक इस राशि पर गुरु की दृष्टि रहेगी। 29 मार्च से 6 मई के मध्य मंगल की दृष्टि होने से घरेलू उलझनें एवं तनाव रहेंगे। ता. 16 जुलाई से वर्ष के अन्त तक वृष राशि पर शनि की ढैय्या रहेगी।

उत्तरार्ध—[illegible] इस राशि पर मंगल-गुरु की सप्तम दृष्टि पड़ रही है। कठिन [illegible] पर खर्च होगा। क्रोध एवं उत्तेजना से कोई बना हुआ कार्य [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मिलने के संकेत हैं। विद्यार्थियों की सरस्वती साधना का [illegible]

जून—मास के पूर्वार्द्ध में राशि स्वामी मंगल [illegible] अधिक रहेगी। आय कम व खर्च भी अधिक रहेंगे। ता. 16 से मंगल इसी राशि में संचार करने से बिगड़े कामों में सुधार होगा। निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे।

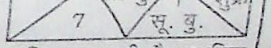

होंगे। कार्य-क्षेत्र में दौड़-धूप अधिक रहेगी। नए मित्रों के साथ सम्पर्क बनेंगे। ता. 16 से शुक्र उच्च राशि में होने से अकस्मात् धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। प्रिय व्यक्ति से मुलाकात होगी।

मार्च—मासारम्भ में शुक्र उच्च राशि का होने से शुभ फल घटित होंगे। पराक्रम में पर्याप्त वृद्धि होगी। कुछ बिगड़े कार्य बनेंगे। किसी श्रेष्ठ पदाधिकारी से सम्पर्क स्थापित होंगे। खर्च की अधिकता से मानसिक परेशानी भी रहेगी।

अप्रैल—मास में शुक्र वृष राशि में संचार करने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। उच्च प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क होंगे। वाहन सुख प्राप्त होगा। इस राशि पर मंगल की दृष्टि भी होने से व्यवसाय एवं गृह सम्बन्धी उलझनों का सामना रहेगा।

मई—कार्य व्यवसाय में अड़चनों के बावजूद दैनिक कार्यों में सफलता मिलेगी। व्यर्थ की दौड़-धूप, खर्च की अधिकता और प्रिय बन्धु से मनमुटाव होगा। उत्तरार्द्ध में आय के साधनों में वृद्धि और सन्तान से खुशी मिलेगी। सुख साधनों पर खर्च होगा।

जून—पराक्रम में वृद्धि एवं आय के साधनों में बढ़ौत्तरी होगी। व्यवसायिक व्यस्तताएं बढ़ेंगी। आँखों में कष्ट और चमड़ी रोग होने की सम्भावना होगी। उत्तरार्द्ध भाग में मान प्रतिष्ठा में वृद्धि और लाभ के अवसर बढ़ेंगे। प्रिय बन्धु से मुलाकात होगी।

जुलाई—कार्य व्यवसाय में उन्नति व लाभ के अवसर मिलेंगे। अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए विशेष परिश्रम और संघर्ष का सामना रहेगा। विशेष रूप से परिवार के सहयोग से किए गए प्रयास सार्थक होंगे।

अगस्त—अत्यधिक संघर्ष के बावजूद कुछ कार्यों में सफलता और कुछ कार्यों में विलम्ब होगा। धन और सुख-साधनों में आंशिक वृद्धि होगी। धार्मिक कार्यों पर खर्च होगा। स्वास्थ्य ढीला रहेगा।

सितम्बर—इस मास मिश्रित प्रभाव रहेंगे। पारिवारिक सहयोग से धनागमन के साधन बनते रहेंगे। अत्यधिक परिश्रम करने पर कुछ सोची योजनाओं में आंशिक लाभ होगा। उत्तरार्द्ध में भूमि/सवारी आदि सम्बन्धी परेशानी और दुर्घटना में चोटादि का भय रहे।

अक्तूबर—विघ्न-बाधाओं के बावजूद गुज़ारे योग्य धन प्राप्ति के साधन बनते रहेंगे। घर-परिवार में खुशी के अवसर मिलेंगे। किसी विशेष रुके हुए कार्य में उच्चाधिकारियों से सम्पर्क करने पर प्रगति होगी।

नवम्बर—पूर्वार्द्ध भाग में परिवार में किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में भी धन लाभ रहे। खर्चों में अधिकता हो। आलस्य, वृथा शंकाओं के कारण लाभदायक अवसर हाथ से निकल जाएंगे। किसी निकट सम्बन्धी से धोखा मिलने के संकेत हैं।

दिसम्बर—शनि की ढैय्या के कारण बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। आशाओं के अनुरूप सफलता प्राप्ति नहीं होगी। कुछ विवादास्पद मामलें मानसिक तनाव का कारण बनेंगे। किसी निकट सम्बन्धी से तकरार होगी। उत्तरार्ध भाग में यात्रा अथवा विदेशगमन की योजना बनेगी।

मिथुन राशि (Gemini)–(क, कि, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह)

ग्रहगोचर—9 जन. से 15 जुला. तक शनि की साढ़ेसति होने से मानसिक तनाव और खर्च अधिक होंगे। 7 अप्रैल से 22 अप्रैल तक बुध मीन (नीच) राशि में आने से स्वास्थ्य हानि, बनते कार्यों में विघ्न तथा अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। 23 नवं. से वर्षान्त तक गुरू की दृष्टि रहेगी। जिससे व्यवसायिक क्षेत्रों में लाभ के अवसर मिलेंगे।

[illegible] हानि होने से घरेलू उलझनें एवं तनाव रहेंगे। ता. 16 जुलाई से वर्ष के अन्त तक वृष गोश पर शनि की ढैय्या रहेगी।

जनवरी—मासारम्भ में इस राशि पर मंगल-गुरु की सप्तम दृष्टि पड़ रही है। कठिन

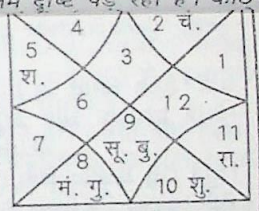

पर खर्च होगा। क्रोध एवं उत्तेजना से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ने के योग हैं। धर्म-कर्म में रूचि रहेगी। अशुभ शनि के कारण चोटादि का भय रहेगा।

फरवरी—उत्साह में वृद्धि और धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। किसी नवीन कार्य की योजना बनेगी। परन्तु सन्तान सम्बन्धी कार्यों में व्यस्त होने से कार्यरूप देने में विलम्ब होगा। उत्तरार्द्ध भाग में व्यवसाय में अड़चनों के कारण तनाव व परेशानियां बढ़ेंगी।

मार्च—राशिस्वामी बुध भाग्य स्थान में संचार कर रहा है। किसी श्रेष्ठ बन्धु से मुलाकात होगी। बिगड़े काम बनेंगे। परिवार में किसी मंगल कार्य पर खर्च होगा। भाग्य स्थान में बुध-राहु का योग होने से वृथा भाग-दौड़ खर्च अधिक होगा। अष्टम मंगल होने से परिवार में कलह-क्लेश का भय होगा।

अप्रैल—इस मास में बुध मीन (नीच) राशि में संचार करने से बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। विशेष परिश्रम के बाद ही निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। ता. 24 अप्रैल से बुध लाभ स्थान में प्रवेश करेगा। धन लाभ एवं उन्नति के अवसर बनेंगे।

मई—इस मास मिश्रित फल रहेंगे। अत्यधिक भागदौड़ करने पर धन लाभ अल्प और मानसिक तनाव रहेगा। 24 ता. से बुध मिथुन में जाने से कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। विद्या के क्षेत्र में नये सम्पर्कों से विशेष रूचि पैदा होगी। धार्मिक कार्यों पर खर्च होगा।

जून—कुछ रुके हुए कार्यों में सफलता के योग हैं। किसी उच्च प्रतिष्ठित मित्र के सहयोग से बिगड़ा कार्य बनेगा। धर्म-कर्म की ओर रुचि बढ़ेगी। परन्तु शनि साढ़सति के कारण मानसिक दबाव भी रहेगा। अधिकांश समय मनोरंजन एवं वृथा कार्यों में व्यतीत होगा।

जुलाई—विघ्न बाधाओं के बावजूद गुज़ारे योग्य धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त हों। किसी उच्चाधिकारी से सम्पर्क स्थापित होंगे। स्त्री सुख एवं घर परिवार की ओर से खुशी का समाचार मिलेगा। सप्ताहान्त में किसी निकट बन्धु से कलह-क्लेश का भय होगा। सावधानी बरतें। धन का खर्च सोच-समझकर करें।

अगस्त—मासारम्भ में राशि स्वामी बुध द्वितीय भाव में होने से व्यर्थ की दौड़ धूप और फिज़ूल खर्ची बढ़ेगी। आय के साधनों में भी कमी होगी। उत्तरार्ध भाग में बुध अच्छी स्थिति में होने से बिगड़े काम बनेंगे। गृह में कोई मंगल कार्य होगा।

सितम्बर—मासारम्भ में राशिस्वामी बुध उच्चराशि में आने से आय के साधनों में सुधार होगा। किसी प्रियजन से मुलाकात होगी। स्त्री व संतान की ओर से शुभ समाचार प्राप्त होगा। उत्तरार्द्ध में घरेलू एवं व्यवसायिक उलझनों के कारण अशान्ति होगी। खर्च भी अधिक रहेंगे।

अक्तूबर—ग्रहस्थिति के अनुसार मास के पूर्वार्द्ध भाग में परिस्थितियों में सुधार होने के योग हैं। किसी प्रिय एवं श्रेष्ठ व्यक्ति से मेल होगा। सुख-साधनों में वृद्धि होगी। परन्तु 12 ता. से बुध वक्री होने से धन का व्यय तथा क्रोध व उत्तेजना अधिक रहेगी।

नवम्बर—मासारम्भ में बुध कन्या में मार्गी हुआ है। गत किए गए प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी। धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। भूमि एवं सवारी आदि सुखों की प्राप्ति होंगी। उत्तरार्द्ध भाग में वृथा खर्च तथा मानसिक चिन्ता में वृद्धि रहेगी।

दिसम्बर—मासारम्भ में राशिस्वामी बुध छटे भाव में होने से नौकरी या व्यवसाय में संघर्षमयी परिस्थितियों का सामना रहेगा। आर्थिक मुश्किलें बढ़ेंगी। उत्तरार्द्ध में बुध की दृष्टि मिथुन पर होने से धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु अधिकांश समय व धन मनोरंजन, वाहन एवं विलास आदि कार्यों में व्यय होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कर्क (Cancer)—(हि, हु, हे, हो, डा, डी, ड, डे, डो)

वर्ष प्रवेश कुंडली

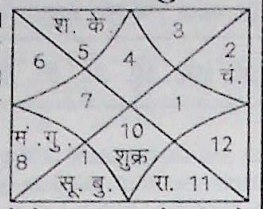

ग्रहगोचर—इस राशि पर शनि का संचार 10 जनवरी से 15 जुलाई तक रहेगा। शनि की साढ़सती का प्रभाव वर्षभर रहेगा। गुरु की शुभ दृष्टि वर्षारम्भ से 22 नवम्बर तक रहेगी। फलस्वरूप वर्ष के पूर्वार्द्ध भाग में शुभाशुभ अर्थात् मिश्रित प्रभाव रहेंगे। अत्यधिक संघर्ष एवं कठिनाइयों के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

जनवरी—व्यवसाय में लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। भूमि, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति होगी। धर्म-कर्म की ओर रुचि रहेगी। उत्तरार्ध भाग में परिवार में मंगल कार्य पर खर्च होगा। मंगल की दृष्टि के कारण उत्तर भाग में बनते कामों में कुछ उलझनें व परेशानियाँ रहेंगी।

फरवरी—गुरु की दृष्टि के कारण धार्मिक एवं शुभ कार्यों पर खर्च अधिक रहेगा। दूसरे सप्ताह नए-नए श्रेष्ठ लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। कोई बिगड़ा काम बनेगा। ता. 18 से मंगल की दृष्टि होने से स्वभाव में तेजी एवं व्यर्थ की दौड़-धूप एवं खर्च अधिक रहेंगे।

मार्च—मासारम्भ में इस राशि पर शनि की स्थिति एवं मंगल की अशुभ दृष्टि के कारण बनते कामों में अड़चनें, आय में कमी तथा विविध खर्चों की अधिकता रहे।

अप्रैल—मासारम्भ में कार्य-व्यवस्ताएँ अधिक रहेंगी, परन्तु संघर्ष के बावजूद गुजारे योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 14 के पश्चात् कोई बिगड़ा हुआ काम बनेगा। कार्य-व्यवसाय में लाभ व पदोन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु शनि साढ़सति के कारण मानसिक तनाव व घरेलू उलझनें भी रहेंगी।

मई—मासारम्भ में घर-परिवार में कोई खुशी का वातावरण बनेगा। संघर्ष के बावजूद (गुरु के कारण) आय के साधन बनते रहेंगे परन्तु कार्य-व्यवसाय में परिश्रम एवं संघर्ष अधिक रहेगा। मासान्त में स्वास्थ्य विकार एवं बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी।

जून—पराक्रम में वृद्धि और व्यवसायिक व्यस्तताएं बढ़ेंगी। धार्मिक कार्य की इच्छा जागृत होगी। किसी प्रिय बन्धु से मुलाकात होगी। उत्तरार्द्ध भाग में इस राशि पर मंगल की दृष्टि के कारण भागदौड़ एवं उलझनें अधिक तथा फिजूलखर्च बढ़ेगा।

जुलाई—मास के आरम्भ में व्यर्थ की दौड़-धूप अधिक रहेगी। परन्तु निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। खर्च भी बहुत अधिक रहेंगे। उत्तरार्द्ध भाग में किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। किसी श्रेष्ठ व्यक्ति की सहायता से कोई बिगड़ा काम बनेगा।

अगस्त—मासारम्भ में परिश्रम एवं उत्साह में वृद्धि होगी। किसी मंगल कार्य पर व्यय होगा। ता. 16 के बाद अकस्मात् यात्रा के योग हैं। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध बढ़ेंगे। कार्य, व्यवसाय में लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे।

सितम्बर—मासारम्भ में धर्म-कर्म की ओर रुचि बनेगी। भूमि, वाहन आदि सुख-साधनों में वृद्धि होगी। किसी प्रिय बन्धु से मुलाकात होगी। मासान्त में शरीर कष्ट व तनाव रहे। अकस्मात् धन का अपव्यय बढ़ेगा।

अक्तूबर—आशाओं में सफलता तथा अकस्मात् धन प्राप्ति के योग बनेंगे। किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। ता. 15 से स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी, मानसिक तनाव एवं खर्च अधिक और आय कम होगी। किसी प्रिय व्यक्ति के व्यवहार से मन [illegible]

सुख में वृद्धि होगी। किसी उत्कृष्ट वस्तु का लाभ भी प्राप्त होगा। मासान्त में यात्रा व फिजूलखर्ची रहेगी।

दिसम्बर—संघर्ष के बावजूद धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। कुछ रुके हुए कार्य बनेंगे। परिवार की ओर से शुभ समाचार प्राप्त होगा। उत्तरार्ध भाग में आलस्य में वृद्धि, अधिकांश समय व धन मनोरंजन कार्यों पर खर्च होगा। श्रीशिव उपासना करना कल्याणकारी होगा।

सिंह राशि (Leo)—(म, मि, मु, मे, मो, टा, टि, टू, टे)

वर्ष प्रवेश कुंडली

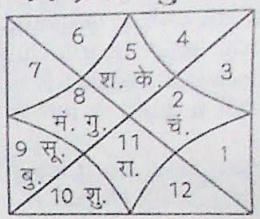

ग्रहगोचर—सिंह राशि पर केतु का संचार तथा शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव वर्षभर बना रहेगा। जिससे वर्ष में संघर्षमय परिस्थितियां रहेंगी। ता. 13 फरवरी से 13 मार्च के मध्य इस राशि पर सूर्य की स्वगृही दृष्टि पड़ेगी। ता. 17 अक्तू. से 15 नवं. के मध्य सूर्य नीच राशिस्थ रहेगा। 22 नवं. से वर्ष के अन्त तक गुरु की शुभ दृष्टि होगी।

जनवरी—मासारम्भ में राशिस्वामी सूर्य पंचम भाव में होने से कैरियर सम्बन्धी योजनाएं बनेंगी। किसी नवीन विद्या की ओर रूचि होगी। शनि की दृष्टि के कारण मानसिक तनाव एवं घरेलू उलझनें होंगी। 20 ता. के बाद बिगड़े कामों में सुधार होगा। कोई शुभ समाचार मिलेगा।

फरवरी—मासारम्भ में सूर्य छठे स्थान में होने से संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहे। आय कम व खर्च अधिक हो। उत्तरार्द्ध भाग में अप्रत्याशित और सूर्य की स्वगृही दृष्टि होने से राजकीय कार्यों में सफलता और सन्तान सुख मिलेगा।

मार्च—मासारम्भ में सूर्य की दृष्टि के कारण संघर्ष के पश्चात् धन लाभ हो। उदर-विकार व आँखों में कष्ट का भय रहे। किसी शुभ कार्य पर खर्च भी हो। मासान्त में अधिकांश समय व्यर्थ के कार्यों में व्यतीत होगा। भूमि-जायदाद सम्बन्धी परिवार में कुछ परेशानी व तनाव रहे।

अप्रैल—मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप क्रोध, उत्तेजना अधिक रहे। व्यवसाय में उथल-पुथल रहे। ता. 10, 11 को किसी नए कार्य की योजना बनेगी परन्तु अभी एक-दो माह तक क्रियान्वित नहीं हो पाएगी। 14 अप्रैल से सूर्य भाग्य स्थान में उच्चराशिस्थ होने से धन लाभ व उन्नति के प्रसंग बनेंगे। वैशाख माहात्म्य का पाठ करना शुभ होगा।

मई—पूर्वार्द्ध भाग में भाग्य स्थान पर सूर्य की स्थिति होने से निर्वाह योग्य धन प्राप्त होगा। सुख-साधनों पर खर्च होगा। कुछ रुके कार्यों में प्रगति होगी। उत्तरार्द्ध भाग में स्वभाव में तेजी एवं क्रोध अधिक रहेगा। परन्तु निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

जून—मास के प्रारम्भ में बनते कामों में विघ्न-बाधाएं पड़ने के संकेत हैं। स्वास्थ्य कुछ नर्म, आय कम तथा खर्च बहुत अधिक रहेंगे। निकट बन्धुओं से कुछ मतान्तर पैदा होंगे। उत्तरार्द्ध भाग में हालात कुछ बेहतर होंगे। कुछ बिगड़े काम बनेंगे।

जुलाई—आय कम और खर्च अधिक होगा। वृथा भागदौड़ और अपव्यय होगा। स्वास्थ्य ढीला रहेगा। अत्यधिक परिश्रम करके गुजारे योग्य आय के साधन बनेंगे। शुभ मंगल एवं धार्मिक कार्यों पर खर्च होगा।

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

सितम्बर—धर्म-कर्म में विशेष रूचि होगी। परिवार में शुभ कार्यों पर व्यय एवं संघर्ष होगा। व्यवसाय में परिवर्तन का विचार बनें। उत्साह एवं संघर्ष शक्ति बनी रहेगी। तनाव के पश्चात् चोटादि का भय, गुप्त चिन्ता अधिक हो।

अक्तूबर—कठिनाइयों एवं संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। मानसिक तनाव तथा घरेलू उलझनों के साथ खर्चों की भी अधिकता रहेगी। 15 अक्तूबर के बाद कोई महत्त्वपूर्ण कार्य के सम्पन्न होने के योग हैं।

नवम्बर—व्यवसाय में उन्नति के योग हैं लेकिन फिजूलखर्ची भी अधिक रहेगी। सोची हुई योजनाओं में आंशिक सफलता प्राप्त होगी। गत किए हुए प्रयास फलीभूत होंगे। व्यवसाय व नौकरी में परिवर्तन के संकेत हैं। नए-नए मित्रों के साथ सम्बन्ध बढ़ेंगे।

दिसम्बर—प्रथम भाग में आय-व्यय सामान्य रहेगा। भाग्योन्नति व लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। प्रिय बन्धु से मुलाकात होगी। बढ़ते कार्य-भार से मन अशान्त रहेगा। गायत्री जप तथा सूर्योपासना करनी शुभ एवं कल्याणकारी होगी।

कन्या राशि (Virgo)—(टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

वर्ष प्रवेश कुंडली

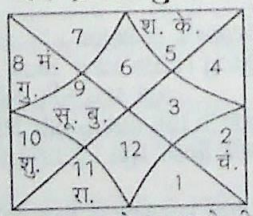

ग्रहगोचर—वर्ष के आरम्भ से 9 जनवरी तक तथा फिर 16 जुलाई से वर्ष के अन्त तक इस राशि पर शनि की साढ़ेसती का प्रभाव रहेगा। इस अवधि में घरेलू एवं व्यवसाय सम्बन्धी परेशानियाँ रहेंगी। 10 जन. से 15 जुला. के मध्य इस राशि पर शनि की तृतीय दृष्टि होगी। 29 मार्च से 15 जून के मध्य मंगल की दृष्टि रहेगी। 3 नवं. से 29 नवं. के मध्य शुक्र संचार करेगा।

जनवरी—पूर्वार्द्ध में व्यवसाय में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहेगा। गृहस्थ जीवन में आर्थिक उलझनों एवं परेशानियों का सामना रहेगा। अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। उत्तरार्द्ध में बिगड़े कामों में कुछ सुधार होगा। परन्तु मानसिक तनाव रहेगा।

फरवरी—धन लाभ मध्यम परन्तु खर्च अधिक होंगे। उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। 14 ता. से बुध वक्री होने से आय की अपेक्षा धन का खर्च अधिक रहे। अफसरों से तनाव और सोची हुई योजनाओं में विघ्न उत्पन्न होंगे। धन संचय में रुकावटें रहेंगी।

मार्च—मासारम्भ में बुध उदय होने से हालात में सुधार होगा। परन्तु दाम्पत्य जीवन में कुछ तनाव रहे। पैतृक सम्पत्ति सम्बन्धी विवाद से चिन्ता रहेगी। व्यवसायिक क्षेत्र में लाभ के अवसर मिलेंगे। विदेश सम्बन्धी कार्यों में प्रगति, विदेशी सम्बन्धियों से शुभ समाचार भी मिलेगा।

अप्रैल—मासारम्भ ता. 7 से बुध नीच राशि में प्रवेश करेगा जिससे बनते कामों में विघ्न पैदा होंगे। स्वास्थ्य भी ठीक न रहे। व्यवसाय में लाभ कम तथा खर्च अधिक रहेंगे। ता. 24 के बाद स्थिति में कुछ सुधार होगा।

मई—अत्यन्त परिश्रम के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। किसी श्रेष्ठ व्यक्ति की सहायता से कुछ बिगड़े काम बनेंगे। राशि पर मंगल व शनि की दृष्टियाँ होने से घरेलू उलझनें एवं तनाव बढ़ेंगे। क्रोध भी अधिक रहे।

जून—शनि व मंगल की दृष्टि रहने से स्वभाव में तेजी, घरेलू एवं आर्थिक उलझनें रहेंगी। आय कम व खर्च अधिक होंगे। ता. 16 से बुध वक्री होने से हालात में परिवर्तन के योग बनेंगे।

जुलाई—मासारम्भ से शनि की दृष्टि होने से परिश्रम अधिक रहे। मानसिक तनाव, उचाटता तथा उद्विग्नता अधिक रहे। आय साधारण रहे। नए लोगों के सम्पर्क से लाभ कम और खर्च अधिक होगा। उदर रोग, प्रतिकूलता तथा व्यर्थ के खर्च सम्भव हैं।

अगस्त—परिवार में कलह और बनते कामों में विघ्न उत्पन्न होंगे। वृथा वाद-विवाद में खर्च भी अधिक होगा। ता. 16 के पश्चात् वृथा यात्रा, स्थान परिवर्तन, मानसिक तनाव और शत्रु भय होगा। दूरस्थ यात्रा और विदेशी कार्यों में प्रगति के योग हैं।

सितम्बर—पूर्वार्द्ध में परिवार में किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में भी कुछ धन लाभ होगा। खर्चों में अधिकता हो। आलस्य, भय एवं शंकाओं के कारण विशेष अवसर हाथ से निकल जाएंगे। किसी निकट सम्बन्धी से धोखा मिलने के संकेत हैं।

अक्तूबर—व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहेगी। घरेलू परेशानियों के कारण मन परेशान रहेगा। परिश्रम एवं प्रयास करने से हालात में कुछ सुधार होगा परन्तु धन संचय करने में कठिनाई होगी। मासान्त में परिवार में कलह-क्लेश और तनाव उत्पन्न होने के योग। स्वास्थ्य में खराबी रहे।

नवम्बर—कार्य व्यवसाय में अड़चनों के बावजूद दैनिक कार्यों में सफलता होगी, परन्तु व्यर्थ की दौड़ धूप, खर्च की अधिकता और प्रिय बन्धु से मनमुटाव होगा। उत्तरार्द्ध में मंगल दशम में वक्री होने से आय के साधनों में विघ्न बाधाएं उत्पन्न होंगी।

दिसम्बर—पराक्रम में वृद्धि एवं आय के साधनों में बढ़ोत्तरी होगी। व्यवसायिक व्यस्तताएं बढ़ेंगी। उत्तरार्द्ध भाग में मान प्रतिष्ठा में वृद्धि और लाभ के अवसर बढ़ेंगे। शनि के कारण घरेलू कार्यों पर खर्च भी अधिक होंगे। मानसिक तनाव भी बढ़ेगा।

तुला राशि (Libra)—रा, री, रू, रे, रो, ता, ति, तु, ते

वर्ष प्रवेश कुंडली

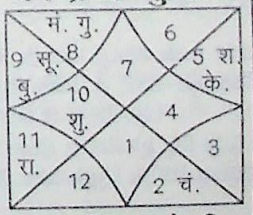

ग्रहगोचर—वर्षारम्भ से 9 जन. तक तथा फिर 16 जुलाई से वर्ष के अन्त तक इस राशि पर शनि की उच्च दृष्टि रहेगी। इस अवधि में लाभ व उन्नति के विशेष अवसर प्राप्त होंगे। ता. 14 अप्रैल से 14 मई के मध्य सूर्य की नीच दृष्टि पड़ेगी। धन हानि व्यय एवं बनते कामों में विघ्न पैदा होंगे। 28 जुला. से 8 सित. के मध्य राशिस्वामी शुक्र वक्री होने से व्यवसाय में विघ्न बाधाएं होंगी। 30 नवं. से 24 दिसं. के मध्य शुक्र का संचार शुभ होगा।

जनवरी—पूर्वार्द्ध भाग में आय के साधन पर्याप्त रहेंगे। विलासादि कार्यों पर खर्च अधिक होगा। उत्तरार्द्ध भाग में स्वास्थ्य ढीला, गुप्त रोग, वृथा वाद-विवाद और मानसिक तनाव रहेगा। स्वास्थ्य के लिए एकादशी का व्रत धारण करना लाभकारी रहेगा।

फरवरी—पराक्रम में वृद्धि एवं आय के साधनों में बढ़ोत्तरी होगी। व्यवसायिक व्यस्तताएं बढ़ेंगी। नये कार्य की योजना भी बनेगी। उत्तरार्द्ध भाग में शुक्र षष्ठस्थ परन्तु उच्चस्थ होने से गुप्त युक्तियों से धन प्राप्ति के अवसर मिलेंगे। रोग एवं शत्रुभय भी रहेगा।

मार्च—इस मास विशेष उतार-चढ़ाव और पारिवारिक परेशानियों का सामना रहेगा। आलस्य में वृद्धि और व्यर्थ के कामों में समय व्यतीत होगा। कार्य-व्यवसाय में संघर्ष के पश्चात् धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। मासान्त में कुछ बिगड़े काम बनेंगे।

अप्रैल—इस मास राशिस्वामी शुक्र अष्टमस्थ में होने से धन लाभ के अवसर मिलने पर भी आप उनका पूरा लाभ नहीं उठा पाएंगे। आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। मानसिक तनाव व घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। वैशाख माहात्म्य का पाठ करना शुभ होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मई—राशिस्वामी शुक्र भाग्य स्थान में होने से आशानुकूल एवं निर्वाह योग्य आय के साधनों की प्राप्ति होगी। वाहनादि सुख-साधनों पर व्यय अधिक होंगे। धर्म-कर्म की ओर अभिरूचि बढ़ेगी। मासान्त में किसी श्रेष्ठ व्यक्ति से मुलाकात होगी।

जून—मासारम्भ में शुक्र यद्यपि दशमभावस्थ है, परन्तु मंगल की दृष्टि पड़ने से धन लाभ के अवसर मिलने पर समुचित लाभ नहीं उठा पाएंगे। मानसिक तनाव एवं उत्तेजना अधिक रहेगी।

जुलाई—मासारम्भ में मंगल की दृष्टि होने से मानसिक तनाव एवं घरेलू परेशानियाँ बढ़ेंगी। 10 ता. के बाद हालात में कुछ बेहतरी होगी। परन्तु आर्थिक क्षेत्र में रुकावटें पैदा होंगी। उत्तरार्द्ध में शनि की उच्च दृष्टि होने से धन प्राप्ति के साधन बनेंगे तथा बिगड़े काम बनेंगे।

अगस्त—मासारम्भ में शुक्र वक्री होने से व्यर्थ यात्रा की परेशानी उठानी पड़ेगी। गुज़ारे योग्य धन प्राप्ति व उन्नति के योग हैं। भाई-बन्धुओं का सहयोग प्राप्त होगा। व्यर्थ के झंझटों से दूर रहें। अन्यथा हानि होने की आशंका होगी। भागदौड़ करने पर भी आय अल्प होगी।

सितम्बर—मासारम्भ ता. 8 सितं. से शुक्रमार्गी होने से किसी प्रिय व्यक्ति से मुलाकात होगी। भाई-बन्धु से सहयोग प्राप्त होगा। अकस्मात् धार्मिक स्थल की यात्रा होगी। परिवार में खुशी का समाचार मिलेगा। विद्यार्थियों को विद्या में सफलता के लिए अत्यन्त परिश्रम एवं स्वाध्याय करने से लाभ होगा।

अक्तूबर—सोची हुई योजनाओं में आंशिक सफलता मिलेगी, परन्तु धन का खर्च विलास-मनोरंजन आदि कार्यों पर अधिक होगा। मासान्त में सूर्य इस राशि पर नीचस्थ होगा। अधिकांश समय वृथा कार्यों में व्यतीत होगा। किसी प्रिय बन्धु से मुलाकात होगी। व्यर्थ के वाद-विवाद से बचें।

नवम्बर—मासारम्भ में सूर्य इस राशि पर नीच स्थिति में संचरित है। राशि स्वामी शुक्र भी 3 नवं. से नीच राशि (कन्या) में प्रविष्ट होगा, जिससे पूर्वार्द्ध भाग में आय कम व खर्च अधिक होंगे। पारिवारिक कलह व तनाव रहे। मासान्त में कुछ शुभ फल होंगे।

दिसम्बर—मास के आरम्भ में शुक्र इसी राशि में स्वगृही होकर संचार करेगा। बिगड़े कामों में सुधार होगा। आय के साधनों में वृद्धि होगी। किसी प्रिय व्यक्ति से मुलाकात होगी। मनोरंजक कार्यों पर खर्च अधिक रहेंगे।

नोट—अधिक विस्तृत जानकारी के लिए अपना वर्षफल बनवाएँ। —पं० पन्नालाल ज्यो०

बृश्चिक राशि (Scorpio)-(तो, न, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

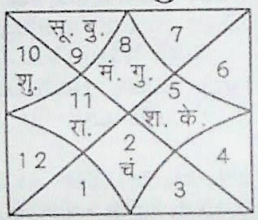

ग्रहगोचर—वर्ष के आरम्भ से 7 जनवरी तक इस राशि पर गुरु-मंगल का योग होगा तथा केवल गुरु संचार वर्षारम्भ से 21 नवं. तक रहेगा। वर्ष में भूमि-जायदाद, सवारी, मकान आदि के सुख प्राप्त होंगे। ता. 18 फर. से 28 मार्च के मध्य मंगल तृतीय (उच्चराशि) में होने से पराक्रम एवं धन में वृद्धि होगी। 16 जून से 15 सितं. के मध्य मंगल की स्वगृही शुभ दृष्टि रहेगी। 15 नवं. से मंगल वक्री अवस्था में संचार करने से धन हानि, विघ्न, खर्च आदि अशुभ फल होंगे।

वर्ष प्रवेश कुंडली

सू. बु. 9 | 8 मं. गु. | 7 | 10 शु. | 6 | 11 रा. | 5 श. के. | 12 | 2 चं. | 4 | 1 | 3

जनवरी—मासारम्भ में इस राशि पर मंगल-गुरु का योग होने से धन लाभ व भाग्य में उन्नति के अवसर बनेंगे। उच्च विद्या में सफलता प्राप्त होगी। व्यवसाय में भी उन्नति के योग हैं। प्रिय बन्धु से सम्बन्ध होंगे।

फरवरी—मासारम्भ में मंगल एवं गुरु के मध्य स्थान परिवर्तन योग बना है। अकस्मात् धन लाभ के अवसर बनेंगे। कोई नवीन कार्य की योजना भी सम्भव है। गृह में किसी मंगल कार्य के भी योग हैं।

मार्च—मासारम्भ में राशिस्वामी मंगल उच्चराशिस्थ होने से गत मास के बिगड़े कामों में कुछ सुधार होगा। धन लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। भूमि, वाहन आदि सुख के साधनों पर विशेष खर्च होंगे। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे। मासान्त में आर्थिक परेशानियों से क्रोध एवं तनाव बढ़ेगा।

अप्रैल—घर-परिवार की ओर से शुभ समाचार मिलेगा। किसी नवीन कार्य की योजना भी बनेगी, परन्तु व्यवसायिक क्षेत्रों में रुकावटों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। मास के उत्तरार्द्ध में लाभ व उन्नति के योग हैं।

मई—आय के साधनों में वृद्धि के साथ-साथ मनोरंजन आदि पर खर्च तथा सवारी आदि सुखों में वृद्धि होगी। गृह में मंगल कार्य भी सम्पन्न होगा, परन्तु सूर्य की दृष्टि के कारण परिश्रम व दौड़धूप अधिक रहेगी।

जून—मासारम्भ में किसी श्रेष्ठ बन्धु से मुलाकात होगी। बिगड़े काम बनेंगे। परिवार में कोई मंगल कार्य होगा। उत्तरार्द्ध भाग में धन का अपव्यय बढ़ेगा। बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। पित्त एवं पेट विकार आदि के कारण शरीर कष्ट हो। निकटस्थ बन्धु से कलह हो।

जुलाई—मासारम्भ में इस राशि पर मंगल की स्वगृही दृष्टि पड़ने से उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे। कोई बिगड़ा काम बनेगा। विघ्नों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

अगस्त—वृश्चिक राशि पर गुरु का संचार है तथा उस पर मंगल की विशेष दृष्टि होने से भूमि, मकान, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति होगी। कठिनाइयों के बावजूद गुज़ारे योग्य आय के स्रोत बनते रहेंगे।

सितम्बर—पूर्वार्द्ध भाग में इस राशि पर मंगल की स्वगृही दृष्टि होने से मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध बनेंगे। उत्तरार्द्ध भाग में मंगल अष्टम में होने से बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी।

अक्तूबर—इस मास में मिश्रित फल प्राप्त होगा। अत्यधिक भागदौड़ करने पर धन लाभ अल्प और मानसिक तनाव रहेगा। मासान्त में कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। विद्या के क्षेत्र में नये सम्पर्कों से विशेष रुचि पैदा होगी। शुभ एवं धार्मिक कार्यों पर खर्च होगा।

नवम्बर—पूर्वार्द्ध भाग में सोची योजनाओं में कुछ सफलता मिलेगी। धन-लाभ व सवारी आदि सुखों पर खर्च होगा। उत्तरार्द्ध भाग मंगल वक्री होने से विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन-लाभ के अवसर मिलेंगे। दूरस्थ स्थल की यात्रा और भ्रमण के योग हैं। परन्तु परिवार सम्बन्धी गुप्त चिन्ता रहेगी।

दिसम्बर—मासारम्भ में राशि स्वामी मंगल अष्टम में वक्री है। अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाइयों के बावजूद धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। उत्तरार्द्ध भाग में वृथा दौड़-धूप एवं अपव्यय अधिक रहेंगे। श्रीशिवोपासना करनी शुभ रहेगी।

धनु राशि (Sagittarius)-(ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, ढ, भे)

ग्रहगोचर—वर्षारम्भ में इस राशि पर बुधादित्य (सूर्य-बुध) का योग है। 8 जन. से 17 [illegible] संचार होने से विघ्न-बाधाएँ होंगी। वर्षारम्भ से 21 नवं. [illegible]

[illegible] लोगों के साथ सम्बन्ध बनेंगे। मासान्त में घरेलू

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

जनवरी—मासारम्भ में इस राशि पर मंगल-[illegible] उन्नति के अवसर बनेंगे। उच्च विद्या में सफलता प्राप्त होगी। व्यवसाय में भी उन्नति के योग हैं। प्रिय बन्धु से सम्बन्ध होंगे।

तक इसी राशि में संचार करेगा। ता. 10 जन. से 15 जुला. तक शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव रहेगा।

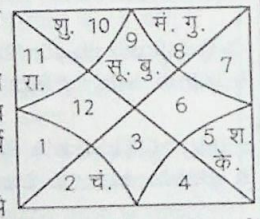

जनवरी—मासारम्भ में इस राशि पर सूर्य-बुध का योग होने से संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। राशिपति गुरु 12वें होने से शुभ कार्यों पर खर्च अधिक रहेंगे।

फरवरी—मासारम्भ में पंचमेश मंगल का संचार होने से क्रोध एवं उत्तेजना की भावना अधिक रहेगी। लाभ कम तथा खर्च अधिक रहेंगे। बनते कामों में विघ्न-बाधाएँ रहने के संकेत हैं। किसी दुष्ट व्यक्ति से परेशानी होने के योग हैं।

मार्च—स्वभाव में क्रोध व आवेश अधिक रहेगा। लाभ कम तथा खर्च अधिक होंगे। किसी निकट बन्धु से धोखा मिलने की सम्भावना है। सतर्क रहें। बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। मासान्त में पारिवारिक कलह के कारण परेशानी हो।

अप्रैल—कठिन परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। परिवार में व्यर्थ की आर्थिक उलझनें बढ़ेंगी। निकटतम भाई बन्धुओं से मनमुटाव पैदा होगा। उत्तरार्द्ध भाग में किसी श्रेष्ठ व्यक्ति से मुलाकात होगी। धार्मिक कार्यों की ओर रूचि बढ़ेगी।

मई—इस मास मंगल अधिकांशतः चतुर्थ (मीन राशि) में संचार करने से सुख में कमी तथा धन लाभ भी अल्प रहेगा। खर्च बढ़-चढ़कर (अधिक) रहेंगे। यद्यपि भाग्यवश निर्वाह योग्य धन लाभ होता रहेगा।

जून—मासारम्भ में अत्यन्त संघर्षपूर्ण एवं कठिन परिस्थितियों का सामना होगा। व्यवसाय में आर्थिक स्थिति अनिश्चित रहेगी। परिवार में अशान्ति होगी। उत्तरार्द्ध में भाग्येश सूर्य की दृष्टि पड़ने से आय के साधनों में सुधार होगा।

जुलाई—मास के पूर्वार्द्ध में शनि की ढैय्या का प्रभाव होने से व्यवसाय में आर्थिक हालात अस्थिर रहेंगे। आय कम तथा व्यय अधिक रहेंगे। उत्तरार्द्ध में ढैय्या का प्रभाव नहीं होगा। बिगड़े कामों में कुछ सुधार होगा।

अगस्त—व्यवसाय में यद्यपि उन्नति व लाभ के अवसर प्राप्त होंगे परन्तु मंगल की दृष्टि के कारण कुछ असमंजस की स्थिति होने से हानि के संकेत हैं। उत्तरार्द्ध में परिवार में मंगल कार्य और खुशी के अवसर मिलेंगे। परन्तु स्वास्थ्य में खराबी और रक्त विकार होने का भय रहे।

सितम्बर—पुरुषार्थ द्वारा धन लाभ होगा। लाभदायक कार्यों के लिए जल्दबाजी न करें अन्यथा हानि होगी। व्यर्थ के कार्यों पर खर्च और मानसिक तनाव रहे। उत्तरार्द्ध भाग में नौकरी व व्यापार आदि में उन्नति के साधन बढ़ेंगे। राज दरबार में मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

अक्तूबर—घरेलू एवं व्यवसाय सम्बन्धी चिन्ता रहेगी। परिवार में कुछ तनाव होगा। कठिन परिश्रम के पश्चात् निर्वाह योग्य धन मिलेगा। उत्तरार्द्ध भाग में बाधाओं के बावजूद धन प्राप्ति के मार्ग प्रशस्त होंगे। वाहनादि का क्रय-विक्रय भी होने के योग हैं।

नवम्बर—मासारम्भ में भाग्येश सूर्य लाभ स्थान में तुला राशिगत है। अड़चनों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 22 नवं. से गुरु धनु में ही संचार करने से धन लाभ व उन्नति के योग बनेंगे।

ग्रहगोचर—वर्षारम्भ में इस राशि पर बुधादित्य (सूर्य-बुध) का योग है। 8 जन. से 17 फर. तक इस राशि पर मंगल का संचार होने से विघ्न-बाधाएँ होंगी। वर्षारम्भ से 21 नवं. [illegible] साधनों में वृद्धि होगी। कुछ उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध बनेंगे। मासान्त में घरेलू कलह के कारण मन चिन्तित रहेगा। श्रीदुर्गासप्तशती का पाठ करना शुभ होगा।

मकर राशि (Capricorn)—(भो, ज, जी, खी, खू, खे, खो, ग, गी)

वर्ष प्रवेश कुंडली

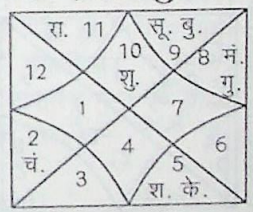

ग्रहगोचर—वर्षारम्भ से 9 जन. तक इस राशि पर शनि की ढैय्या होगी, परन्तु 22 जन. तक शुक्र का संचार शुभफली होगा। ता. 10 जन. से 15 जुला. तक इस राशि पर शनि की स्वगृही दृष्टि रहेगी। 18 फर. से 28 मार्च तक मंगल का संचार रहेगा। ता. 16 जुला. से वर्षान्त तक शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव रहेगा। 16 सितं. से वर्षान्त तक मंगल की उच्च दृष्टि रहेगी।

जनवरी—मासारम्भ में भूमि-सवारी (वाहन), इलैक्ट्रानिक आदि सुख साधनों की प्राप्ति होगी, पूर्वार्द्ध में शनि की ढैय्या के कारण घरेलू उलझनें व तनाव रहेगा। उत्तरार्द्ध में किसी कार्य की योजना बनेगी। गृह में कोई मंगल कार्य पर व्यय सम्भव है।

फरवरी—मासारम्भ में शनि की दृष्टि होने से मान-सम्मान में वृद्धि तथा निर्वाह-योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 18 से इस राशि में मंगल संचार करेगा। भूमि-वाहन आदि के कारण कुछ परेशानी होगी। आय की अपेक्षा खर्च अधिक होंगे।

मार्च—मासारम्भ में मंगल का संचार रहने से यद्यपि तनाव एवं क्रोध अधिक रहेगा, किन्तु शनि की शुभ दृष्टि होने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। उच्च प्रतिष्ठित मित्रों के साथ सम्बन्ध बढ़ेंगे। मासान्त में किसी तीर्थस्थल अथवा पर्यटन स्थल की यात्रा भी होगी।

अप्रैल—मास के आरम्भ में व्यर्थ की दौड़-धूप अधिक रहेगी। परन्तु निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। खर्च भी बहुत अधिक रहेंगे। उत्तरार्द्ध भाग में किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। किसी श्रेष्ठ व्यक्ति की सहायता से कोई बिगड़ा काम बनेगा।

मई—मासारम्भ में परिश्रम एवं उत्साह में वृद्धि होगी। किसी मंगल कार्य पर व्यय होगा। ता. 15 के बाद अकस्मात् यात्रा के योग हैं। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध बढ़ेंगे। कार्य-व्यवसाय में लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे।

जून—मासारम्भ में धर्म कर्म की ओर रुचि बनेगी। भूमि, वाहन आदि सुख-साधनों में वृद्धि होगी। किसी प्रिय बन्धु से मुलाकात होगी। मासान्त में शरीर कष्ट व तनाव रहेगा। अकस्मात् धन का अपव्यय बढ़ेगा।

जुलाई—आशाओं में सफलता तथा अकस्मात् धन प्राप्ति के योग बनेंगे। किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। ता. 16 से स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी, मानसिक तनाव एवं खर्च अधिक और आय कम होगी। किसी प्रिय व्यक्ति के व्यवहार से मन विक्षुब्ध होगा।

अगस्त—पराक्रम में वृद्धि एवं आय के साधनों में बढ़ोत्तरी होगी। व्यवसायिक व्यस्तताएं बढ़ेंगी। आँखों में कष्ट और चमड़ी रोग होने की सम्भावना होगी। उत्तरार्द्ध भाग में मान प्रतिष्ठा में वृद्धि और लाभ के अवसर बढ़ेंगे। शनि के कारण मानसिक तनाव होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सितम्बर—कार्य व्यवसाय में अड़चनों के बावजूद दैनिक कार्यों में सफलता मिलेगी। व्यर्थ की दौड़-धूप, खर्च की अधिकता और प्रिय बन्धु से मनमुटाव होगा। उत्तरार्द्ध भाग में आय के साधनों में वृद्धि और सन्तान से खुशी मिलेगी। सुख साधनों पर खर्च होगा।

अक्तूबर—पूर्वार्द्ध भाग में सोची योजनाओं में कुछ सफलता मिलेगी। धन-लाभ व सवारी आदि सुखों पर खर्च होगा। उत्तरार्द्ध भाग में विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन-लाभ के अवसर मिलेंगे। दूरस्थ स्थल की यात्रा और भ्रमण के योग हैं। परन्तु सन्तान सम्बन्धी गुप्त चिन्ता रहेगी।

नवम्बर—ग्रह स्थिति के अनुसार इस मास में पूर्वार्द्ध भाग में प्रतिष्ठा में वृद्धि तथा धन-लाभ एवं पदोन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। कुछ उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध बनेंगे। निर्वाह योग्य धन लाभ के बावजूद विलास कार्यों पर धन का व्यय अधिक होगा।

दिसम्बर—संघर्ष के बावजूद धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। कुछ रुके हुए कार्य बनेंगे। परिवार की ओर से शुभ समाचार प्राप्त होगा। उत्तरार्द्ध भाग में अधिकांश समय व धन मनोरंजक कार्यों पर खर्च होगा। श्री शिव उपासना करना शुभ एवं कल्याणकारी होगा।

कुम्भ राशि (Aquarius)—(गु, गे, गो, स, सी, सू, से, सो, द)

ग्रहगोचर—सम्पूर्ण वर्ष राशि पर राहु का संचार रहेगा। शनि की दृष्टि वर्षारम्भ से 9 जनवरी तक तथा उसके बाद 16 जुलाई से वर्षान्त तक शनि की दृष्टि पुनः रहेगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध भाग में भाग्य में उन्नति व लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। 29 मार्च से 6 मई के बीच मंगल का संचार तथा 17 अगस्त से 16 सितं. के मध्य सूर्य की दृष्टि पड़ने से निकट बन्धु से कलह-क्लेश तथा खर्चों की अधिकता रहेगी। भगवान् शिवोपासना करना कल्याणकारी होगा।

वर्षप्रवेश कुंडली

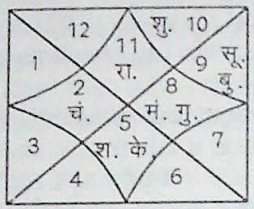

जनवरी—मासारम्भ से 9 जन. तक शनि की स्वगृही दृष्टि रहने से कठिन एवं संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि तथा उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध बढ़ेगा। नए-नए मित्रों के साथ सम्पर्क भी बनेंगे।

फरवरी—विघ्न बाधाओं के बावजूद धन लाभ व कार्यों में सफलता प्राप्त हो। कारोबार में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। व्यवसाय में कुछ परिवर्तन का विचार बने। यात्रा का प्रोग्राम बनेगा। प्रिय बन्धु से मुलाकात होगी। मासान्त में स्त्री सुख व शुभ समाचार मिले। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय संघर्षपूर्ण रहेगा।

मार्च—मासारम्भ में कार्येश मंगल द्वादश भाव में उच्चस्थ होगा। कार्य-व्यवसाय के सम्बन्ध में दौड़-धूप अधिक रहेगी। यद्यपि अकस्मात् धन लाभ के चांस बनेंगे। प्रिय मित्रों के साथ सहयोग बढ़ेगा।

अप्रैल—इस मास भाग्येश शुक्र चतुर्थ भाव में स्वराशि में संचरित है। विघ्न-बाधाओं के बावजूद आय के स्रोतों में प्रगति होगी। परन्तु कुम्भ राशि पर मंगल-राहु का योग होने से धन लाभ की मात्रा कम होगी। स्वभाव में क्रोध व तनाव बढ़ेगा। अकस्मात् धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। किसी उच्च प्रतिष्ठित जन के साथ सम्पर्क बनेंगे। स्वास्थ्य कुछ नर्म रहेगा।

जून—कठिन परिश्रम के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन मिलते रहेंगे। परन्तु व्यवसाय के सम्बन्ध में दौड़-धूप अधिक रहेगी। किसी प्रिय बन्धु से मन-मुटाव एवं तकरार होने के संकेत हैं, सावधानी बरतें।

जुलाई—मंगल तृतीय स्थान में स्वराशिगत होने से पराक्रम एवं पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। धन लाभ के चांस बनेंगे। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध बनेंगे। इस राशि पर राहु के कारण अपव्यय, तनाव व घरेलू उलझनें भी होंगी।

अगस्त—मासारम्भ में मंगल की कर्म भाव पर स्वराशि दृष्टि होगी। पर्याप्त परिश्रम के बाद निर्वाह योग्य धन लाभ के अवसर मिलेंगे, परन्तु मंगल पर शनि की दृष्टि के कारण खर्च भी बहुत होंगे। चोट आदि का भय होगा।

सितम्बर—शनि-मंगल के मध्य दृष्टि होने से संघर्ष व व्यवसायिक उलझनें बढ़ेंगी। बनते कामों में अड़चनें रहेंगी। आय कम तथा खर्च अधिक रहेंगे।

अक्तूबर—शुभ समाचार तथा अप्रत्याशित लाभ की प्राप्ति होगी। परिवार में मेलजोल बढ़ेगा। कार्य-व्यवसाय व नौकरी में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। उत्तरार्द्ध भाग में किसी बिगड़े कार्य के बनने के योग हैं। नवीन कार्य योजना बनने से उत्साह बनेगा।

नवम्बर—मासारम्भ में सूर्य भाग्य स्थान में नीच राशिस्थ होने से व्यवसाय में विघ्न बाधाएँ होंगी। धन लाभ भी कम होगा। बनते कामों में अड़चनें रहेंगी। उत्तरार्द्ध में बिगड़े कामों में सुधार होगा।

दिसम्बर—मासारम्भ में धनेश गुरु लाभ स्थान में तथा सुखेश शुक्र भाग्य में होने से धन लाभ के चांस मिलेंगे। किसी उच्च प्रतिष्ठित व्यक्ति से सम्पर्क बनेंगे। मासान्त में लाभ कम तथा वृथा खर्च बढ़ेंगे।

मीन राशि (Pisces)—(दी, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, चि)

ग्रहगोचर—इस राशि पर राशिस्वामी गुरु की स्वगृही दृष्टि वर्षारम्भ से 21 नवं. तक रहेगी। 8 जन. से 17 फर. के मध्य मंगल की भी दृष्टि होगी। 14 मार्च से 13 अप्रैल के मध्य सूर्य का संचार रहेगा तथा 7 मई से 15 जून के मध्य मंगल का संचार रहेगा। 22 नवं. से वर्षान्त तक राशिस्वामी गुरु स्वराशि (धनु) पर संचार करेगा।

वर्षप्रवेश कुंडली

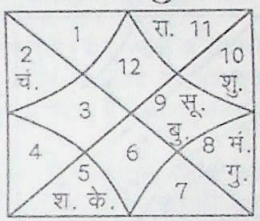

जनवरी—मासारम्भ में पंचमेश चन्द्र पर गुरु की शुभ दृष्टि होने से कोई शुभ समाचार मिलेगा। उच्च प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क होंगे। धर्म-कर्म की ओर रुचि बनेगी। ता. 8 से राशि पर मंगल की दृष्टि होने से विघ्न होंगे।

फरवरी—विघ्न बाधाओं के बावजूद धन लाभ के चांस मिलते रहेंगे। अच्छे लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। धार्मिक कार्यों की ओर रुझान बढ़ेगा। द्वितीय स्थान में शनि की दृष्टि से व्यय अधिक होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अप्रैल—इस मास भाग्येश शुक्र चतुर्थ भाव में स्वराशि में संचरित है। विघ्न-बाधाओं के बावजूद आय के स्रोतों में प्रगति होगी। परन्तु कुम्भ राशि पर मंगल-राहु का योग होने से धन लाभ की मात्रा कम होगी। स्वभाव में क्रोध व तनाव बढ़ेगा।

मार्च—दैनिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यापार को बढ़ाने में मित्रों और सहयोगियों का सहयोग मिलेगा। धार्मिक कार्यों की ओर रुझान बढ़ेगा। द्वितीय स्थान में शनि की दृष्टि से व्यय अधिक होगा।

रुचि बढ़ेगी। नौकरी में पदोन्नति परन्तु खर्च अधिक और स्थान परिवर्तन के भी योग हैं।

अप्रैल—6 अप्रैल से गुरु वक्री होने से व्यर्थ की दौड़-धूप अधिक रहेगी। परन्तु निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। खर्च भी बहुत अधिक रहेंगे। उत्तरार्द्ध किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। किसी श्रेष्ठ व्यक्ति की सहायता से कोई बिगड़ा काम बनेगा।

मई—संघर्ष के बावजूद धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। कुछ रुके हुए कार्य बनेंगे। परिवार की ओर से शुभ समाचार प्राप्त होगा। उत्तरार्द्ध भाग में आलस्य में वृद्धि, अधिकांश समय व धन मनोरंजन कार्यों पर खर्च होगा। श्रीशिव उपासना करना कल्याणकारी होगा।

जून—पूर्वार्द्ध कार्य व्यवसाय के लिए दौड़-धूप अधिक रहेगी। अत्यधिक परिश्रम करने पर धन लाभ अल्प होगा। घरेलू उलझनें एवं आर्थिक परेशानियाँ अधिक रहेंगी। उत्तरार्द्ध भाग में कुछ बिगड़े काम बनेंगे। उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे।

जुलाई—कार्य-व्यवसाय में लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। भूमि, वाहन, विवाह आदि सुखों की प्राप्ति होगी। धर्म-कर्म की ओर रुचि रहेगी। उत्तरार्द्ध में परिवार में किसी मंगल कार्य पर खर्च होगा।

अगस्त—गुरु की स्थिति के कारण धार्मिक एवं शुभ कार्यों पर खर्च अधिक रहेगा। दूसरे सप्ताह नए-नए श्रेष्ठ लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। तीसरे सप्ताह कोई बिगड़ा काम बनेगा। चौथे सप्ताह स्वभाव में तेज़ी एवं व्यर्थ की दौड़-धूप अधिक रहेगी।

सितम्बर—गुरु की दृष्टि के कारण गृह में मंगल कार्य सम्पन्न होंगे। धार्मिक कार्यों की ओर प्रवृत्ति रहेगी। किसी के सहयोग से नया कार्य आरम्भ होगा। विद्या में सफलता एवं घरेलू सुखों में वृद्धि होगी। 17 सितम्बर से सूर्य की दृष्टि रहने से सरकार की ओर से लाभ, भागदौड़ अधिक एवं क्रोध व उत्तेजना भी अधिक रहेगी।

अक्तूबर—मासारम्भ में घर-परिवार में कोई खुशी का वातावरण बनेगा। संघर्ष के बावजूद (गुरु के कारण) आय के साधन बनते रहेंगे परन्तु कार्य-व्यवसाय में परिश्रम एवं संघर्ष अधिक रहेगा। मासान्त में स्वास्थ्य विकार एवं बनते कार्यों में अड़चनें पैदा होंगी। ता. 25 से परिस्थितियों में सुधार होगा।

नवम्बर—मासारम्भ में शुक्र नीच राशिगत है। संघर्ष के बावजूद धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। कुछ रुके हुए कार्य बनेंगे। परिवार की ओर से शुभ समाचार प्राप्त होगा। उत्तरार्द्ध भाग में आलस्य में वृद्धि, अधिकांश समय व धन मनोरंजक कार्यों पर खर्च होगा। श्रीशिव उपासना करना कल्याणकारी होगा।

दिसम्बर—अत्यधिक परिश्रम करने पर भी धन लाभ के अवसरों का समुचित लाभ नहीं उठा पाएंगे। सन्तान के सम्बन्ध में चिन्ता और घरेलू उलझनों के कारण मन उदासीन रहेगा। ता. 10 के बाद आय कम और खर्च अधिक, पारिवारिक मतभेद और कार्य स्थिति सामान्य ही रहेगी।

सम्पूर्ण राशिफल—अपनी राशि सम्बन्धी वर्ष 2007 के लिए साप्ताहिक एवं दैनिक राशियों के उपायों सहित तथा **विस्तृत बड़ा राशिफल** के लिए हमारा वृहद् पं० देवी दयालु 'राशिफल' ही पढ़ें। लेखक का नाम पं. पन्ना लाल अवश्य देख लें। मूल्य 25 रु०

—पंचांग दिवाकर ज्योतिष कार्यालय, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर—140008 (पंजाब)

जन्म राशि एवं प्रसिद्ध नाम राशि का महत्त्व

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में उसके प्रचलित नाम का विशेष महत्त्व होता है। परिवार, समाज, शिक्षा, कैरियर, मित्रता इत्यादि प्रत्येक कार्य-क्षेत्र में मनुष्य अपने प्रसिद्ध नाम से जाना जाता है। एक अच्छा नाम जो किसी महान् व्यक्ति के नाम सदृश हो, उसके लिए जीवन पर्यन्त प्रेरणा-स्रोत का काम करता है। इसी कारण हमारे प्राचीन ऋषि या ज्योतिषाचार्य जन्मराशर्यनुसार बालक का नाम कुलदेवता, महान् पुरुष, देववाचक, मंगलदायक, या कुल/परम्परा के अनुरूप सार्थक नाम रखते थे। उनके अनुसार मनुष्य के आन्तरिक गुणों एवं ब्राह्य व्यक्तित्व के विकास तथा भाग्य वृद्धि में नामकरण का विशेष महत्त्व होता था—

नामखिलस्य व्यवहार हेतुः शुभावहंकर्मसु भाग्यहेतुः।
नाम्नैव कीर्ति लभते मनुष्यस्ततः प्रशस्तं खलु नाम कर्म॥

प्राचीन काल में आचार्य/गुरु कन्या या बालक के जन्म नक्षत्र एवं राशि के अनुसार ही नाम रखने का परामर्श देते थे। अर्थहीन अथवा कुत्ते, बिल्ली के नाम सदृश नाम रखने से जातक/जातिका के व्यक्तित्व पर विपरीत प्रभाव पड़ते हैं। भारतीय मनीषियों ने वैसे तो जन्म नक्षत्र एवं जन्म राशि के आधार पर ही जातक का नाम रखने की आज्ञा दी है, परन्तु यदि परिस्थिति वश किसी व्यक्ति की जन्म कुण्डली में चन्द्रस्थित **जन्म राशि** में तथा, **प्रसिद्ध नाम** राशि में अन्तर होने की स्थिति में, दोनों राशियों के अन्तर्गत अलग-अलग प्रतिपाद्य कृत्यों को करने का परामर्श दिया है।

● **जन्म राशि (विचार)**—वर कन्या का राशि मिलान, विवाह निर्णय, गर्भाधान, पुंसवन, उपनयन, मुण्डन, विवाह षोडश संस्कार एवं **मांगलिक कार्य**, तीर्थादि की शुभ यात्रा, राशि से गोचर ग्रहों का फल-प्रतिपादन करना इत्यादि प्रशस्त है—

विवाहे सर्वमाङ्गल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे।
जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्॥ (ज्योतिर्निबन्ध)
कुर्यात् षोडश कर्माणि जन्म राशौ बलान्विते॥ (ज्योतिषतत्त्वनिबन्धं)

● **प्रसिद्ध नाम राशि (विचार)**—प्रसिद्ध नाम राशि का प्रयोग गृहारम्भ, गृह-प्रवेश, सांसारिक व्यवहार, व्यापार (व्यवसाय), देश-कार्य, मन्त्र-सिद्धि, दानादि के समय संकल्प कार्य, पुनर्विवाह, स्वामी व सेवक के पारस्परिक सम्बन्ध, रोगशान्ति हेतु औषधी प्रयोग, विवाद, मुकद्दमा, युद्ध, द्यूतादि क्रूर कार्यों तथा दानादि शुभ संकल्पों में नाम राशि का ही प्रयोग करना चाहिए—

देश ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारकेः।
नाम राशेः प्रधानत्वं जन्म-राशिं न चिन्तयेत्॥
काकिण्यां वर्गशुद्धौ च वादे द्यूते ज्वरोदये।
मन्त्रे पुनर्भूवरणे, नामराशेः प्रधानता॥ (ज्योतिनिबन्ध)

यदि जन्म राशि का ज्ञान न हो, तो नाम राशि को ही ग्रहण करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०६४ में सम्वत्सर, राजा, मन्त्री आदि का फल

ॐ स्वस्ति नः श्री गणेशाय नमः। अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधार भूर्तये ब्रह्मणे नमः। आदौ गणपतिं नमस्कृत्य प्रणम्य च पूर्वजानहम्-चन्द्रमिश्रं तत्पुत्रं रामजी दत्तस्य सूनं विश्वविख्यातं पण्डित देवी दयालुं स्व प्रपितामहम् स्मरन् भक्त्या लोकहितार्थाय सुख सम्पत्ति हेतवे। शर्वरी नामक नवविक्रमी सम्वत्सरे शुभे द्वित्रिंशत्योत्तर शत वर्षाणि (१३२) वर्ष प्रवेशे पं. पन्नालाल अहं प्रपौत्र पण्डित देवी दयालु मशहूर आलम ज्योतिषी, स्वपुत्रौ सहिताऽहं कूर्वे पंचांग दिवाकरम्॥

सृष्टि सम्वत् १९५, ५८, ८५, १०८ के अन्तर्गते, श्रीविक्रमी संवत् २०६४, कलि (कल्कि) संवत् ५१०८, श्रीकृष्ण सम्वत् ५२४३, सप्तर्षि संवत् ५०८३, श्रीबुद्ध संवत् २६३०/३१, श्रीमहावीर निर्वाण संवत् २५३२/३३, शक संवत् १९२८-२९, हिजरी सन् १४२७-२८, इंग्लिश सन् 2007-08 ई., खालसा संवत् ३०९, नानकशाही सम्वत् ५३९, सृष्टि संवत् के अन्तर्गत सतयुग प्रमाण १७२८०००, त्रेतायुग १२९६०००, द्वापर युग प्रमाण ८६४००० एवं कलियुग का प्रमाण ४३२००० वर्षों का होता है।

बार्हस्पत्यमान से विष्णुविंशति का ३४वां नया **शर्वरी नामक** संवत् २०६४, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा 19 मार्च, सन् 2007 ईस्वी, **सोमवार से प्रारम्भ** होगा। धार्मिक अनुष्ठान एवं संकल्प आदि कार्यों के शुभारम्भ में **शर्वरी नाम के सम्वत्सर का प्रयोग** रहेगा। शास्त्रों में इसका फल इस प्रकार वर्णित है—

➤➤ *शर्वरी नाम सम्वत्सर का फल—*

शर्वरीवत्सरेपूर्णाधरासस्यार्घ वृष्टिभिः। जनाश्च सुखिनः सर्वे राजानः स्युः विवैरिणः॥

अर्थात् शर्वरी नामक सम्वत् आ जाने से वर्ष भर वर्षा बहुत हो, पृथ्वी पर अनाज आदि की फसल भी अच्छी हो। अधिकांश मनुष्य सुख-साधनों से सम्पन्न एवं सुखी रहें। राजनेताओं में परस्पर वैर-विरोध एवं टकराव अधिक रहे। फलस्वरूप राजनेता सामान्य लोगों की भलाई में कम तथा अपने स्वार्थ के कार्यों में अधिक प्रवृत्त रहेंगे।

➤➤ ***रोहिणी का वास***—विक्रमी सम्वत् २०६४ में **रोहिणी** का वास **समुद्र** पर होने से प्रस्तुत वर्ष वर्षा की बहुतता (बाहुल्य) रहेगी। कुछ स्थलों पर बाढ़ आदि प्रकोपों के कारण जन, धन, कृषि आदि को हानि होगी। धान्य, चावल, मक्की, घास, पौधे, वृक्षों आदि की पैदावार अच्छी रहेगी। राजस्थान के कुछ क्षेत्रों में भी वर्षा के संकेत हैं।

यदा पयोनिधि स्थलेगतो विरंचिभं तदा। अतीव वर्षणं भवेत् समस्त धान्यवर्द्धनम्॥

➤➤ ***सम्वत् का निवास माली के घर***—समय अर्थात् सम्वत् का वास माली के गृह में होने से सर्वप्रकार के अनाज यथा-गेहूँ, उड़द, चने, चावल, [illegible] अधिक तेजभाव होंगी, परन्तु वर्षा अधिक होने से धान्य, चावल, पटसन, गन्ना, तृण, घास-पौधों आदि की पैदावार अच्छी होगी।

सर्ववस्तु समर्घं स्यात् मालाकार गृहेऽब्दके॥ मालिनः प्रचुरावृष्टिः॥

➤➤ ***सम्वत् का वाहन मृग***—नए सम्वत् का राजा चन्द्र होने से संवत् का वाहन मृग होगा, जिसके फलस्वरूप वर्षा की बहुलता रहेगी। गेहूँ, धान्य, चावल, गन्ना, मक्का आदि की पैदावार अच्छी होगी। धन-सम्पदा, सुख-ऐश्वर्य के साधनों में विस्तार होगा। नए-नए उद्योगों का विकास होगा। अधिकांशतः लोग बाह्य आडम्बरों में अधिक आकृष्ट होंगे।

(१) वर्ष के राजा चन्द्र का फल—

चन्द्रे नृपे मंगल शोभनानि प्रभूतवृष्टिः प्रचुरं च धान्यम्।
सौख्यं जनानामुदयो नृपाणां प्रशाम्यति व्याधि जरा नराणाम्॥

वर्ष का राजा चन्द्रमा होने से लोगों में शुभ, मंगलादि उत्सव अधिक होंगे। वर्षा बहुत हो। धान्य, चावल, मौसमी फल, वृक्ष, तृण, घास, गन्ना व अन्य रसदार वनस्पतियों की फसल अच्छी हो। लोगों में सुख-ऐश्वर्य के साधनों का प्रसार अधिक हो। राजनेताओं का प्रभुत्व बढ़ेगा, परन्तु प्रजा और नेताओं के मध्य सौहार्द भी बढ़ेगा। समुद्र एवं नदियों में जल का बहाव अधिक रहेगा। धार्मिक एवं धार्मिक विषयों पर चर्चा अधिक रहे। कुछ विशेष रोगों पर अनुसंधानात्मक प्रयोग होंगे। लोगों में श्वास, बलगम, कफ, प्रमेह, उन्माद, स्त्रीजन्य एवं मानसिक रोगों का आधिक्य होगा। स्त्रियों का प्रभाव-क्षेत्र बढ़ेगा।

(२) मन्त्री शनि का फल—

रविसुते यदि मन्त्रिणि पार्थिवा विनय संरहिता बहुदुः खदाः।
न जलदा जलदा जनता पदा जनपदेषु सुखं न धनं क्वचित्॥

अर्थात् वर्ष का मन्त्री शनि होने से प्रशासक वर्ग एवं राजनेताओं का व्यवहार साधारण प्रजा के प्रति अत्यन्त कठोर, निर्दयतापूर्ण एवं दुःखप्रदायक रहेगा। कुछ भू-स्थलों में वर्षा की कमी रहने से खाद्यान्नों में कमी एवं प्राकृतिक प्रकोपों का भय होगा। साधारण मनुष्यों के पास समुचित धन-सम्पदा एवं पर्याप्त सुख साधनों की कमी हो तथा दिलों में गहन असन्तोष व्याप्त हो। लोहा, जिस्त, स्टील, सिक्का, चांदी तथा दालें, गेहूं, चावल आदि खाद्यान्न वस्तुओं में तेजी होगी।

(३) सस्येश चन्द्र का फल—

सस्याधिपे शीतकरे प्रजासुखं मेघः पयो मुञ्चति गोप गोधुक्॥
[illegible] नृपा धरा भवेत् धान्यधनौघपूर्णा॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

सम्वत् का निवास माली के घर—सम्वत् का निवास माली के गृह में होने से सर्वप्रकार के अनाज यथा-गेहूँ, उड़द, चने, चावल, सुवर्ण, ताम्र, लौहादि वस्तुएं और

(३) सस्येश चन्द्र का फल—

सस्याधिपे शीतकरे प्रजासुखं मेघः पयो मुञ्चति गोप गोधुक्॥
देवद्विजाराधन तत्परा नृपा धरा भवेत् धान्यधनौघपूर्णा॥

अर्थात् सस्येश (ग्रीष्मकालीन फसलों का स्वामी) चन्द्रमा होने से लोगों में सुख-सुविधाओं के साधनों का विस्तार होगा। बादलों द्वारा वर्षा अच्छी बरसे। पशुओं से दूध पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो। कुछ राजनेता लोग भी देव-विप्र की पूजार्चन आदि धर्म कार्यों में प्रवृत्त होंगे। पृथ्वी धन-धान्य, ऐश्वर्यवान् वस्तुओं से अधिक समृद्ध होगी।

(४) धान्येश सूर्य का फल—

पश्चाद् धान्याधिपे सूर्ये पश्चाद् धान्यं तदा नहि।
विग्रहं भूभृतां धान्यं महर्घं ज्वरपीड़नम्॥

धान्यपति सूर्य होने से शीतकालीन में पैदा होने वाली फसलें (जैसे—मूंग, मोंठ, बाजरा, धान्य, ईखादि) की पैदावार में कमी हो, अथवा प्राकृतिक आपदाओं के कारण फसलों को हानि पहुँचे। फलस्वरूप धान्यादि अनाजों के मूल्यों में वृद्धि होगी। राजनेताओं में परस्पर विरोध रहे एवं कुछ देशों में परस्पर युद्ध का वातावरण बने। सर्व प्रकार के अनाज तेज भाव हों, सामान्य लोगों में ज्वर आदि रोगों का प्रकोप अधिक रहे।

(५) मेघेश शुक्र का फल—

भृगु सुतो जलदस्यपतिः यदा जलमुचो जलदादिविशोभनाः।
धननिधान युता द्विजपालका नृपतयो जनता सुखदायकाः॥

मेघेश अर्थात् वर्षा का स्वामी शुक्र होने से वर्ष में वर्षा बहुत अच्छी रहेगी। विद्वान् एवं ब्राह्मणों का सम्मान करने वाले राजनेता एवं प्रशासक लाभान्वित होंगे, अधिकांशतः शासक धन-धान्य से सम्पन्न होंगे। कुछ शासक सामान्य प्रजा की भलाई व सुख के लिए प्रयास करेंगे।

(६) रसेश बुध का फल—

रसपतौ द्विजराज सुते मही सुलभ धान्य-घृतादि युता जनाः।
प्रमुदिता वरनायक पालिता बहुजलाखिल देश सुरक्षिता॥

रसों का स्वामी बुध हो, तो उस साल में वर्षा अधिक हो तथा घी, धान्य, मक्की, चावल, ईख, सरसों आदि की पैदावार अच्छी हो, अर्थात् ये वस्तुएं लोगों के लिए सुलभ होंगी। अधिकांश राजनेता प्रसन्न रहें। सभी देश अपनी सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ एवं सुरक्षित रखने में प्रयत्नशील होंगे।

(७) नीरसेश चन्द्र का फल—

शुक्ल वर्णादिवस्तूनां मुक्तारजतवाससाम्। अर्घवृद्धिः प्रजायेत शशांके नीरसाधिपे॥

नीरसेश अर्थात् धातुओं का स्वामी चन्द्र होने से सफेद वर्ण की वस्तुएं—चांदी, मोती, वस्त्र, स्टील, प्लाटिनम, रूई, कपास, दूध-पनीर, गाय आदि चौपाय तेज भाव अर्थात् महंगे हो जाएंगे।

(८) फलेश शुक्र का फल—

यदि फलस्यपतौ भृगुजे धरामृदु कुमार महीरूहराशयः।
बहुफलानरनाथ सुभोगदा द्विजवराः श्रुतिपाठ परायणाः॥

फलों का स्वामी शुक्र होने से पृथ्वी पर कोमल घास, फल-फूल एवं पेड़-पौधों का उत्पादन अधिक होगा। अधिकांश राजनेता ऐश्वर्ययुक्त जीवन यापन करेंगे। धर्म-परायण पण्डित एवं विप्रलोग वेद-पुराणादि वैदिक साहित्य के पठन-पाठन में विशेष रूचि लेंगे।

(९) धनेश चन्द्र का फल—

धनपतिः मृगलांछनको यदा रसचय-क्रय-विक्रयतोधनम्।
वसनशालि-सुगन्धरसं बहु द्रविणतैलयुतं नृपसौख्यदम्॥

जिस वर्ष धनपति (कोशपति) चन्द्रमा हो, तो उस वर्ष वस्तुओं (विशेषकर करियाना वस्तुओं) के क्रय-विक्रय से धनोपार्जन अधिक रहे, अर्थात् करियाना वस्तुओं के व्यापार से अच्छा लाभ मिले। वस्त्र, चावल, घी, तैल (विशेषकर सुगन्धित तैल), रसादि वस्तुओं के व्यापार से अच्छा लाभ प्राप्त हो। अवसरवादी राजनेता विशेष प्रकार के सुख-साधनों से सम्पन्न होंगे।

(१०) दुर्गेश शुक्र का फल—

नगर देश विशेष पतिर्यदा भृगुसुतो बहुसौख्यकरो मतः।
विनयवणिज-गेहसमः सुखोनगवने निकटेऽपि च दूरतः॥

दुर्गेश, अर्थात् सेनापति शुक्र हो, तो देश के विशिष्ट राजनेता तथा वर्ग विशेष के लोग ही सुख-साधनों से सम्पन्न एवं समृद्ध होंगे। देश-विदेश के व्यापारिक क्षेत्रों में विस्तार होंगे। दूरस्थ वनों एवं पर्वतीय स्थलों में भी नागरिक स्थलों पर स्थित घरों जैसी सुख-सुविधाएँ उपलब्ध हों।

♠ **आवर्तकादि चतुर्मेघो में द्रोण नाम मेघ फल**—"द्रोणं वर्षति सर्वदा" कई स्थलों पर निरन्तर, मूसलाधार वर्षा होगी। कहीं असामायिक (बे-मौसमी) वर्षा होने से बाढ़ आदि प्रकोपों से फसलों एवं जन, धनादि की हानि होगी। राजनेता और समृद्ध होंगे (**समस्त—महीभूरिधान्येनयुक्ता**)

♠ **नवमेघों में नील नामक मेघ उदित हुआ है।**

फल—नील नामक मेघ आने पर वर्षा अच्छी हो, गाय आदि चौपाय पशु दूध अच्छा देवें। रूई, कपास आदि का उत्पादन अधिक हो। लोगों में सुख-सुविधाओं की वस्तुओं का प्रसार अधिक हो।

♠ **वज्रदंष्ट्र नामक नाग का फल**—

यत्र संवत्सरे नागो वज्रदंष्ट्राभिधानकः। तदां बुवर्षणं नैव सर्वसस्यविनाशनम्॥

अर्थात् संवत्सर में वज्रदंष्ट्र नाम का नाग होने पर वर्ष में उपयोगी वर्षा की कमी रहती है। सब प्रकार की फसलों के उत्पादन में कमी एवं हानि होती है। अनाज के मूल्यों में तेजी होने के संकेत हैं।

शनि की दृष्टि—विक्रमी संवत् २०६४ के प्रारम्भ से ही शनि वक्री अवस्था में

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कर्क राशि में संचार कर रहा है। 20 अप्रैल को मार्गी होगा, तथा ता. 15 जुलाई, 2007 ई. तक कर्क राशि में ही संचरित रहेगा। ता. 16 जुलाई से सम्वत् के अन्त तक की अवधि में पुनः सिंह राशि में संचार करेगा। कर्क राशि में संचार के मध्यान्तर शनि की मेष, कन्या एवं मकर राशियों पर विशेष दृष्टि रहेगी, इन राशि वालों के अतिरिक्त मिथुन व सिंह राशियों पर साढ़सति का भी अरिष्ट प्रभाव होगा।

अतएव कर्क राशि में संचार के दौरान शनि की क्रूर दृष्टि दक्षिण पूर्वी प्रान्तों में एवं देशों पर विशेषतया प्रभावी रहेगी।

सिंह राशि में संचार के दौरान शनि वृष, तुला व कुम्भ राशियों पर विशेष दृष्टियां रखेगा तथा कर्क, सिंह व कन्या राशि वाले जातक व राष्ट्रों पर शनि साढ़ेसति का प्रभाव होगा। उपरोक्त राशियों पर दृष्टियों के फलस्वरूप शनि का भारत एवं विश्व के दक्षिण-पश्चिम भागों पर विशेष दृष्टिपात रहेगा। शनि द्वारा दोनों (कर्क एवं सिंह) राशियों में संचरणकाल में मेष, वृष, कन्या आदि वाले देशों, प्रान्तों एवं व्यक्तियों पर दृष्टिपात के समय वहां राजनैतिक उथल-पुथल, सत्ता-परिवर्तन, आतंकवादी, विस्फोटक एवं हिंसक घटनाएँ घटित होने के संकेत हैं। दक्षिण-पूर्वी प्रदेशों में कहीं बाढ़, समुद्री तूफ़ान, भूस्खलन, महामारी, भूकम्प, यान-दुर्घटना, अग्निकाण्ड, सड़क दुर्घटनाएं आदि प्राकृतिक प्रकोपों से भारी कृषि, धन एवं जन हानि होने की सम्भावनाएं होंगी। मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ राशि वाले जातकों एवं राष्ट्रों विशेषकर मुस्लिम बाहुल्य देशों में कहीं अप्रत्याशित घटनाएं घटित होंगी।

वर्षा आदि चार स्तम्भ-संवत् २०६४

(१) जल स्तम्भ—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र का सम्पर्क ३ प्रतिशत है। फलस्वरूप आगामी वर्ष देश में कम वर्षा के योग हैं। कहीं खण्ड वर्षा एवं कहीं उपयोगी वर्षा की कमी रहेगी। कहीं पेयजल की समस्याएं उत्पन्न होंगी, भूमिगत जलस्तर में भी गिरावट बनेगी। दुर्भिक्ष की परिस्थितियां बनेंगी।

(२) तृण स्तम्भ—ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र का सम्पर्क २० प्रतिशत है। फलस्वरूप तिनके, बांस, घास, पुष्पों, वनस्पतियों, जड़ी-बूटियों तथा वन्य औषधियों के उत्पादन में कमी रहेगी। पशुओं के लिए चारे का अभाव रहे। फलस्वरूप गौं, भैंस आदि चौपाय पशुओं द्वारा दुग्ध उत्पादन में भी कमी रहे। आयुर्वेदिक औषधियां, दुग्ध, डेयरी उत्पाद महंगे होंगे।

(३) वायु-स्तम्भ—ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिर नक्षत्र का सम्पर्क ५४ प्रतिशत है। कहीं वातावरण में ऊष्णता एवं आशातीत गर्मी का प्रकोप रहे तथा कहीं तेज़ आँधियों के कारण जन-धन एवं कृषि आदि को हानि पहुँचने की सम्भावना है। कहीं अधिक वर्षा हो, तो कुछ प्रदेशों में अल्प वर्षा के कारण सूखे की स्थिति रहे। बादलों की गति भी मध्यम रहेगी।

(४) अन्न-स्तम्भ—आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र का सम्पर्क 43 प्रतिशत है। गेहूँ, चना, मक्की, धान्यादि का उत्पादन सामान्य ही रहेगा। हाड़ी-सौणी की फसलों का सामान्य उत्पादन होने तथा जल व तृणस्तम्भ भी कम होने के कारण फसल अच्छी नहीं होगी। मूल्यों में वृद्धि तथा किसानों व बिचोलियों को लाभ मिलेगा।

संवत् के शुभाशुभ विचार में इन स्तम्भों का विशेष विचार किया जाता है।

सूर्य आर्द्रा प्रवेश फल संवत् २०६४

(आर्द्रा प्रवेश कुण्डली)

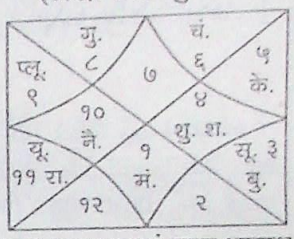

वि. संवत् २०६४ में, सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में, द्वितीय शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष, अष्टमी तिथि, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र, व्यतीपात योग, कन्या के चन्द्रमा कालीन दोपहर 3 बजकर 27 मिनट पर, 22 जून, शुक्रवार को तुला लग्न में प्रवेश करेंगे।

आर्द्रा प्रवेश लग्न में तुला लग्न उदित है। लग्न का स्वामी शुक्र (जो कि जलीय ग्रह है) दशम भाव में जल राशि-कर्क में स्थित है जो कि अच्छी उपयोगी एवं विपुल वर्षा के संकेत हैं, परन्तु शुक्र के साथ शनि का योग होना तथा लग्न भाव पर एवं दशम भावस्थ शुक्र व शनि-दोनों ग्रहों पर मंगल की नीच दृष्टि पड़ने से भारत के पश्चिम एवं उत्तर भागों में कहीं अनुपयोगी व असमय वर्षा—अर्थात् कहीं अति वर्षा के कारण बाढ़ादि से जन-धन व कृषि आदि की हानि होगी। तो कहीं उपयोगी वर्षा की कमी से सूखा एवं फसलों को हानि पहुँचे। सप्तम भाव स्थित मंगल पर तथा द्वादश भाव में चन्द्र पर शनि की विशेष ३, १० दृष्टियाँ होना, भारत के दक्षिण व पूर्वीय भागों में असामयिक (अकालिक) वर्षा के कारण बाढ़ आदि का प्रकोप होगा। दशम भाव पर गुरु की भी शुभ दृष्टि होने से उत्तरी क्षेत्रों में कहीं उपयोगी वर्षा होने से गेहूँ, धान्यादि की कृषि के उत्पादन में अच्छी एवं लाभदायक वृद्धि होने के भी योग हैं।

यद्यपि अष्टमी तिथि के दिन तथा मध्याह्न के समय आर्द्रा का प्रवेश होने से कहीं उपयोगी वर्षा में कमी रहने से अनाज धान्य एवं घासादि पशुचारा के मूल्यों में विशेष वृद्धि होगी—

यदिस्यादष्टमीतिथ्यां आर्द्रा नक्षत्रगो रविः।
सस्यानां वाससां मूल्यं स्वल्प वृष्टिः न संशयः॥
मध्याह्नकाले कृषि नाशनाय धान्यं महर्घंच तृणस्य नाशः॥

उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र कालीन आर्द्रा प्रवेश का फल कृषि एवं कृषकों के लिए शुभफली एवं लाभप्रद माना गया है—

यदि रौद्रग आदित्ये चन्द्र भेयमदेवते। तदा सस्याभिवृद्धिः स्यात्पुत्र पौत्रयुतोजनः॥"

आर्द्रा प्रवेश में व्यतिपात योग होने से राजनेताओं एवं सामान्य लोगों के धन का अत्यधिक अपव्यय एवं क्षय रहेगा।

व्यतिपाताभिधेयोगे.....तर्हिराज्ञोजनानां च निश्चयेन—धनक्षयः॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कारण जन-धन एवं कृषि आदि को हानि पहुँचने की सम्भावना है। कहीं अधिक वर्षा हो तो कुछ प्रदेशों में अल्प वर्षा के कारण सूखे की स्थिति रहे। बादलों की गति भी मध्यम रहेगी।

आर्षमान को वर्ष में राष्ट्र की रक्षा के चार दुर्गों (किले), समृद्धि एवं सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है।

(१) प्रथम आर्ष—गतवर्ष की पौष अमावस्या की मूला नक्षत्र के स्पर्श से माना जाता है। मूला नक्षत्र का स्पर्श 67 प्रतिशत है।

(२) द्वितीय आर्ष—वैशाख शुक्ल तृतीया को रोहिणी नक्षत्र 13 प्रतिशत है।

(३) तृतीय आर्ष—श्रावण पूर्णिमा के श्रवण नक्षत्र का अभाव है।

(४) चतुर्थ आर्ष—कार्तिक पूर्णिमा को कृतिका नक्षत्र 88 प्रतिशत है।

फल—इस वर्ष रक्षा के दो दुर्ग बली, द्वितीय दुर्गा अल्पबली तथा तृतीय दुर्ग का अभाव है। फलस्वरूप अनेक अवरोधों के होने पर भी राष्ट्र आर्थिक एवं रक्षा की दृष्टि से प्रगति पथ पर रहेगा। सुरक्षा, समृद्धि एवं राजनैतिक दृष्टि से यह वर्ष विशेष उलझन एवं असमंजसपूर्ण रहेगा। कहीं आतंकवादी एवं विस्फोटक घटनाओं के कारण आन्तरिक सुरक्षा को खतरा रहेगा। सामान्य प्रजा में युद्धादि का भय बनेगा। वर्षा-पानी की कमी एवं कहीं अकाल की स्थिति बनेगी।

—वर्षादि के विश्वमान—

वर्षादि विश्वा का कुल मान २० विश्वे होते हैं। जिस पदार्थ (विषय) के विश्वा १ से २० अंकों के मध्य जितने अधिक (२० अथवा उसके समीपस्थ) होंगे, उस वस्तु के उत्पादन की मात्रा उतनी अधिक होगी। जैसे आगे सं. २०६४ में धान्य के विश्वे ५ लिखे हैं, इसका तात्पर्य यह हुआ कि आगामी वर्ष धान्य का उत्पादन सामान्य से कम होगा।

वर्षा १५, धान्य ५, तृण १५, तेज १५, शीत ११, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ७, निद्रा १३, आलस्य ९, उद्यम ५, शान्ति ५, क्रोध १५, दंभ १३, लोभ ५, मैथुन ३, रसनिष्पत्ति १५, फलनिष्पत्ति ९, उत्साह १३, उग्रता १३, पाप ११, पुण्य १५, व्याधिनाश १३, आचार ९, अनाचार ७, मृत्यु ११, जन्म ७, देश उपद्रव १५, देश स्वस्थता ३, चोरभय ७, चोरनाश १३, अग्नि ५, अग्निशांत १, उद्भिज १५, जरायुज ३, अंडज ५, स्वेदज ७, टिड्डी ९, तोता १५, मूषक १९, सोना १५, तांबा १३, स्वचक्र ११, परचक्र १३, वृष्टि १५, अनावृष्टि ५॥

गुर्राफल विचार, सन् 1428 हिजरी

(इस्लामी मतानुसार बादशाह साल सूर्य)

सन् 2007 ई. में मुहर्रम की पहली (यकम) तारीख एवं हिजरी सन् 1428 का आगाज़ (प्रारम्भ) 21 जनवरी धनिष्ठा नक्षत्र एवं रविवार को कर्क लग्न में होगा। रविवार को हिजरी सन् का प्रारम्भ होने से इस्लामी मतानुसार बादशाह साल सूर्य (सूरज) होगा। मुस्लिम राष्ट्रों की इस नववर्ष कुण्डली में वर्ष का बादशाह सूर्य सप्तम भाव में लग्नेश चन्द्रमा एवं बुध, शुक्र के साथ सप्तम (मृत्युभाव) में स्थित है। शनि के साथ इनका समसप्तक योग है। गुरु की विशेष दृष्टि लग्नस्थ शनि

ईस्लामी मतानुसार वर्ष कुं.

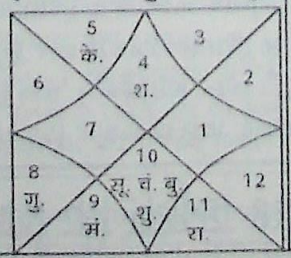

उत्तेजना की भावनाएँ ज्यादा होंगी। हुक्मरानों में भी आपसी टकराव व विरोध अधिक होगा। मज़हबी झगड़े और तनाव अधिक होंगे। चोरी, बेईमानी और धोखा-फरेब की वारदातें होंगी। लग्न पर मंगल की दृष्टि होने से कुछ मुस्लिम देशों का अमेरिका एवं यूरोपीय देशों के साथ वैमनस्य बढ़ेगा। धर्म-ईमान की तरफ़ लोगों का ध्यान कम रहे। समृद्ध राष्ट्र जैसे अमेरिका, इंग्लैण्ड, जर्मनी मुस्लिम राष्ट्रों जैसे ईरान, पाकिस्तान, अफ़गानिस्तान, टर्की आदि देशों के खिलाफ कठोर नीति अपनाएंगे। 18 फर., 2007 से 28 मार्च, 2007 के मध्य शनि-मंगल के मध्य समसप्तक योग इजराइल—लेबनान के मध्य टकराव को अधिक भयावह बन जाएगा। 16 जून से 28 जुला. के मध्य परस्पर दृष्टि सम्बन्ध भी मुस्लिम अथवा आतंकवादी संगठनों तथा समृद्ध राष्ट्रों (अमेरिका, इंग्लैण्ड) के मध्य टकराव की स्थिति बनेगी। विस्फोट तथा उपद्रवी घटनाओं का भय है। किसी मुस्लिम राष्ट्र के प्रधान नेता के लिए भी विशेष संकट भरी स्थिति बन सकती हैं।

वि. संवत् 2064 में लाभ-हानि चक्र

(विंशोत्तरी मतानुसारेण)

आगामी वर्ष में आपको जिस राशि का लाभ-हानि का विवरण ज्ञात करना हो, तो आप निम्नलिखित अपनी राशि के नीचे लिखे लाभ-हानि के अंकों को जमा कर दें, फिर कुल जमा अंक में से 1 कम करके जोड़ को 8 से भाग दे देवें। भाग करने के पश्चात् यदि 1 बचे तो आगामी वर्ष में धन लाभ अच्छा रहेगा। मनोवांछित योजनाएं सफल होंगी। मनोरंजक कार्यों की ओर रूचि बढ़ेगी। यदि शेष 2 बचे तो, धन लाभ मध्यम पर शुभ कार्यों पर खर्च अधिक होगा। यदि शेष 3 बचें तो लाभ कम, खर्च (अपव्यय) अधिक रहेगा। व्यर्थ भागदौड़ अधिक रहेगी और घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। यदि शेष 4 बचें तो, मानसिक तनाव, शरीर-कष्ट और रोगादि पर खर्च हो, आर्थिक समस्याएँ उत्पन्न हों। यदि शेष 5 बचें, तो लाभ कम तथा फिजूलखर्ची अधिक रहेगी। बनते कार्यों में विघ्न पड़ेंगे। यदि शेष 6 बचे तो, भाग्योन्नति और धन लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। कोई बिगड़ा कार्य बनेगा। यदि शेष 7 बचें तो, व्यापार, लाटरी, सट्टे आदि द्वारा अकस्मात् धन लाभ होगा। जमीन-जायदाद आदि कार्यों पर खर्च होगा। आय के साधनों में भी वृद्धि होगी। यदि 8 अर्थात् 0 बचे, तो उस वर्ष लाभ कम व खर्च अधिक रहेगा, मानसिक परेशानियां भी बढ़ने के संकेत हैं।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	११	५	११	५	८	११	५	११	८	२	२	८
हानि	१४	८	५	२	१४	५	८	१४	५	८	८	५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों के आधार पर आगामी वर्ष की प्रमुख भविष्यवाणियाँ संवत् २०६४ वि. (2007-08 ई.)

- नया **'शर्वरी'** नामक सम्वत् होने से पृथ्वी पर वर्षा अधिक हो तथा अनाजादि का उत्पादन अच्छा रहे। विशिष्ट वर्ग के लोग भूमि, वाहनादि सुख-साधनों से सम्पन्न होंगे। अधिकांश नेता प्रजा की भलाई में कम, परन्तु निज स्वार्थ पूर्ति में अधिक प्रवृत्त रहेंगे॥
- सम्वत् का **राजा चन्द्रमा** एवं **मन्त्री शनि** होने से राष्ट्र--नेताओं में परस्पर द्वेष, वैर-विरोध एवं टकराव अधिक रहे। भोग-विलास एवं सुख व ऐश्वर्य संसाधनों का प्रसार व प्रचार अधिक रहेगा। राजनेताओं के आचरण, कार्यशैली में परस्पर विरोधाभास रहेगा।
- सामाजिक, राजनीतिक, शिक्षा एवं अनुसन्धानात्मक आदि सभी क्षेत्रों में महिलाओं का योगदान बढ़ेगा।
- मन्त्री शनि के कारण अधिकांश प्रशासन तन्त्र व नेताओं का व्यवहार साधारण प्रजा के प्रति कठोर एवं उदासीनतापूर्ण रहेगा।
- औद्योगिक व आर्थिक क्षेत्रों में दिशाहीन प्रगति होने से उच्चवर्ग के लोग और अधिक अमीर तथा सामान्य एवं मध्यमवर्ग के लोग आर्थिक तंगी का शिकार रहेंगे।
- नव्य गणतन्त्र दिवस कुण्डली में राजा एवं कोशपति चन्द्र पर शनि की अशुभ दृष्टि होने से दैनिक उपभोग की वस्तुओं, अनाज, दालें, खाद्य तैल, पैट्रोलियम पदार्थ, सुवर्ण, चाँदी, लौहादि धातुओं के मूल्यों में अत्यधिक वृद्धि होने से आम लोगों में दुःख, असंतोष एवं विरोध बढ़ेगा।
- राजा एवं मन्त्री के अधिकार (पद) दो परस्पर शत्रु ग्रहों के पास आने से राजा (प्रधानमन्त्री) की शक्ति का ह्रास होगा। उनमें निर्णयात्मक शक्ति का अभाव रहेगा। यद्यपि दर्गेश शुक्र पर मंगल की दृष्टि के कारण आतंकवाद के विरुद्ध निर्णायात्मक प्रहार के लिए आन्तरिक सुरक्षा के लिए कुछ ठोस एवं आवश्यक पग उठाए जाएंगे।
- भारत पाक के मध्य शान्ति प्रक्रिया तथा बातचीत के बावजूद शनि की नववर्ष लग्न पर दृष्टि के कारण काश्मीर समस्या तथा आतंकवाद के मुद्दे पर गतिरोध जारी रहेगा। कोई विशेष समाधान नहीं निकलेगा।
- 17 मई से 15 जून के मध्य ज्येष्ठ अधिक मास रहने से किसी प्रधाननेता की आकस्मिक मृत्यु तथा छत्रभंग (राज्य-परिवर्तन) के स्पष्ट संकेत हैं।
- 30 जुला. से 12 अग. के मध्य श्रावण कृष्णपक्ष त्रयोदश दिनात्मक (13 दिन का) होने से भारत एवं विश्व में कहीं रेल या हवाई दुर्घटना अथवा भूकम्प, भूस्खलन, भारत के मुख्य प्रान्तों में बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों से भारी जन-धन एवं कृषि हानि का भय है।
- उत्तरप्रदेश, उत्तराखण्ड, पंजाब आदि प्रदेशों में नेतृत्व परिवर्तन के योग होंगे।

एव सर्वेषु भूतेषु गूढोत्मा न प्रकाशते।
दृश्यते तु अग्रयया बुद्धयासूक्ष्म्या सूक्ष्म दर्शिभिः ॥ कठोपनिषद् ॥

ज्योतिष अध्यात्म विद्या का ही महत्त्वपूर्ण अंग है। परन्तु ज्योतिष जैसे सूक्ष्म ज्ञान की अभिव्यक्ति सभी प्राणियों में समान रूप से नहीं होती, बल्कि आत्मोन्नत एवं सूक्ष्म तथा दिव्य दृष्टि प्राप्त तत्त्वदर्शी मनीषियों ने ही अपने तपोबल के द्वारा मानव कल्याण की भावना से प्रेरित होकर ज्योतिष विद्या का प्रणयन किया था। आज से सहस्त्रों वर्ष पूर्व, जब आधुनिक वैज्ञानिक संयन्त्रों का आविष्कार भी नहीं हुआ था, तभी हमारे ऋषियों ने 'या ब्रह्माण्डे सा पिण्डे, या पिण्डे सा ब्रह्माण्डे' के सूत्र के आधार पर अपनी अन्तः दृष्टि द्वारा विश्व एवं सौर मण्डल की संरचना, ग्रहों की मार्गी, वक्रातिचार आदि गति तथा समस्त प्राणियों पर ग्रह रश्मियों के शुभाशुभ प्रभाव का अनुशीलन कर लिया था। उनके अनुसार सभी ग्रह अपनी उदार, दयालु, सत्यनिष्ठ एवं धर्मपरायण होता है, रजोगुणी ग्रहों के प्रभाव से जातक विषयासक्त, कामी, उच्चाकांक्षी, भोग-लोलुप तथा शनि, मंगल आदि तामसिक ग्रहों के प्रभाव से जातक क्रोधी, नास्तिक, व्यसनी एवं दुराचारी प्रकृति का होता है।

गुरु रवि शशिनः सत्त्वं रज्जास्सितज्ञौ तमोऽर्कसुत भौमो।
एते ही आत्म समानाः प्रकृतिस्तेभ्यः फलानि प्रयच्छन्ति॥

ज्योतिष विज्ञान हमें ग्रह-नक्षत्रों सम्बन्धी कुछ शास्त्रीय सिद्धान्त प्रदान करता है, जिनके द्वारा हमें पूर्व कर्मों के प्रतिफल को जानकर भविष्य में अपने जीवन को उच्चतर दिशा की ओर ले जाना है। ज्योतिष ज्ञान पर आधारित बनी एक जन्मपत्री अथवा जन्म कुण्डली अपने गर्भ में अनेक रहस्य संजोए रहती है। एक कुशल एवं अनुभवी ज्योतिषी की सहायता से मनुष्य अपने जीवन सम्बन्धी अज्ञात रहस्यों को जानकर निश्चय ही भौतिक एवं आध्यात्मिक

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सौर मण्डल की संरचना, ग्रहों की मार्गी, वक्रातिचा[illegible] एक कुशल एवं अनुभवी ज्योतिषी की सहायता से रश्मियों के शुभाशुभ प्रभाव का अनुशीलन कर लिया था। उनके अनुसार सभी ग्रह अपनी [illegible] मनुष्य अपने जीवन सम्बन्धी अज्ञात रहस्यों को जानकर निश्चय ही भौतिक एवं आध्यात्मिक

प्रारब्ध कर्मों की प्रतिमूर्ति है। अनेक जन्मों के पाप-पुण्य, शुभाशुभ कर्मों का फल कब प्रकट होगा ? और भविष्य में जातक को कैसी परिस्थितियों की सम्भावना है ? ऐसे महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर ज्योतिष शास्त्र अन्धेरे में दीप की भान्ति देता है—

''यदुपचितमन्यजन्मनि शुभाशुभं तस्य कर्मणः पक्तिम्।
व्यंजति शास्त्रमेतत् तमसि द्रव्याणि दीप इव॥''

ईश्वर की अपार कृपा से उत्तरी भारत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित एवं सर्वप्राचीन प्रकाशन **''पंचांगदिवाकर''**, **'मुफ़ीद आलम जन्त्री'** (उर्दू-हिन्दी-पंजाबी) एवं तिथ पत्रिका (पंजाबी भाषा) को प्रकाशित होते हुए प्रस्तुत संवत् २०६४ (2007-08 ई.) में गौरवशाली 132 वर्ष हो जाएंगे। इस पंचांग समूह के प्रवर्तक एवं संस्थापक हमारे पूज्य पितामह विश्व विख्यात मशहूर आलम पण्डित देवी दयालु जी (लाहौर) से लेकर आज तक की दीर्घावधि में हमारे प्रकाशनों को जो राष्ट्रीय एवं विश्वव्यापी स्तर पर ख्याति एवं प्रशंसा प्राप्त हुई—वह सुविज्ञ पाठकगणों से छिपी नहीं है। उत्तरी भारत में शताब्दि से भी अधिक वर्षों पर्यन्त ज्योतिष के क्षेत्र में हमारी पंचांग, जन्त्री एवं अन्य प्रकाशनों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। हमारे प्रकाशनों की निरन्तर अग्रसर ख्याति को देखकर कुछ दुष्ट प्रकृति के धन लोलुप एवं लालची प्रकाशक हमारे टाईटल से मिलता जुलता टाईटल—नाम रखकर विषय-सामग्री को तोड़-मरोड़ कर छापते हैं। इस प्रकार लोगों को गुमराह व धोखा देने की कुचेष्टा करते रहे हैं। सुविज्ञ पाठकों को सूचित किया जाता है कि वह असली व प्रामाणिक पंचांगदिवाकर, तिथ पत्रिका, मुफ़ीद आलम जन्त्री तथा हमारी नव प्रकाशित 'अर्द्धशताब्दि पंचांग' (संवत् २००१ से २०६० तक) खरीदते समय प्रथम पृष्ठ पर गणितकर्त्ता पं. पन्ना लाल ज्योतिषी एम० ए०, पं० विवेक शर्मा व पंकज शर्मा, जालन्धर के नाम अवश्य पढ़ लिया करें।

गतवर्षीय पंचांगदिवाकर में चामत्कारिक भविष्यवाणियां

ईश्वर की कृपा से हमारी गत वर्षों की पंचांगों एवं जन्त्रियों से उल्लिखित अनेकशः **भविष्यवाणियां** ठीक निकलती आ रही हैं। **उदाहरणस्वरूप** जैसे-भारत का स्वतन्त्र होना (सं० 1947 ई०), बंगलादेश के रूप में पाकिस्तान का विभाजन, कांग्रेस (ई) की पराजय, पुनः सत्ता में आना, ईरान-ईराक युद्ध (२०३९), पूर्व प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी की आकस्मिक मृत्यु (संवत् २०४१), पूर्व प्रधानमन्त्री राजीव गांधी की आकस्मिक मृत्यु (संवत् २०४८), सन् 1998 में मोर्चा सरकार (गुजराल सरकार) का पतन (२०५५) तथा लोकसभा चुनावों में भाजपा का सफल होकर सत्तारूढ़ होना आदि आगे संवत् २०५७ से २०६३ तक की कुछ प्रमुख भविष्यवाणियां ही उद्धृत हैं, जो ईश्वर कृपावश चामत्कारिक रूप से सत्य निकली हैं।

उदाहरणार्थ—संवत् २०५७ के पंचांग में-पाकिस्तान में शरीफ सरकार का तख्ता पलट तथा मार्शल लॉ या आपात् स्थिति का लगना एवं शासन परिवर्तन, छत्रभंग, उपद्रव, राजनीतिक टकराव व हिंसक घटनाएं होना (पृष्ठ 51-कालम I व II)

सं. २०५८ के पंचागदिवाकर पृष्ठ 56 (कालम II) पर जगत लग्न में **कालसर्प योग** के कारण मिथुन से धन राशि वाले देशों में विस्फोटक घटनाएं घटित होंगी। जैसा कि अमरीका में दुखद विस्फोटक घटनाएं हुईं। २०५९ में पृष्ठ 56 (कालम I) में पढ़ें—''अफ़गानिस्तान में नया राजनैतिक ग्रुप उभरकर आएगा तथा तालिबान अमरीकी शक्ति के सामने अधिक देर तक टिक नहीं पाएंगे।'' पृष्ठ 60 (कालम I) पर पंजाब के शीर्षक के अन्तर्गत स्पष्ट पढ़ें—''विधानसभा चुनावों में कांग्रेस का मुख्य पार्टी के रूप में आना।'' फर. २००३ में खप्पर योग होने से अमरीका व ईराक युद्ध होना पृष्ठ 58-I.

संवत् २०६० (2003-04 ई.) के **भाद्रमास** में पाँच मंगलवार होने के कारण उ.प्र., म.प्र., कश्मीर आदि प्रदेशों में छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन) एवं हिंसक घटनाएं अधिक होना (पृष्ठ 65 का. I, II) जैसा कि उ.प्र. एवं कश्मीर घाटी में हुआ। ईराक में सत्ता परिवर्तन के योग के बारे में स्पष्टतः पढ़ें-पृष्ठ 63 कालम II पर।

सम्वत् २०६१ की पंचांग दिवाकर में स्पष्टतः पढ़ें—**''आगामी लोकसभा चुनावों में कांग्रेस पार्टी के सदस्य भाजपा की अपेक्षा अधिक सीटों पर कामयाब होकर निकलना''** पृष्ठ 68 का. I **''चुनावों में कुछ प्रदेशों में भाजपा की प्रतिष्ठा को गहरी ठेस पहुँचेगी। उन्हें आशा के विपरीत कम सीटें मिलेंगी।''** पृष्ठ 67 का I. राजस्थान के सन्दर्भ में पृष्ठ 68 का II पर पढ़ें। विधानसभा चुनावों में कांग्रेस को हार का सामना होगा।

संवत् २०६२ (2005-06) की पंचांग, जन्त्री में ''पाकिस्तान और भारत के मध्य दोस्ती और शान्तिवार्ताओं के नए आयाम जुड़ना (पृष्ठ 56 का. II, पृष्ठ 60-I) **हरियाणा** की प्रान्तीय चौटाला सरकार के वर्चस्व को गहरी ठेस पहुँचना (पृष्ठ 59 का. II) **''हरियाणा, महाराष्ट्र, बिहार आदि प्रदेशों में नेतृत्व परिवर्तन के योग''**—''कोयला, लोहा, **पैट्रोलियम** आदि उपभोग्य वस्तुओं की कीमतों में आशातीत वृद्धि होना-पृष्ठ 53), **अस्थिरता के बावजूद मनमोहन सरकार का अस्तित्व 2007 तक अवश्य बना रहेगा-पृष्ठ 60 का. I)''**

संवत्-२०६३ (2006-07) की पंचांग में मुस्लिम राष्ट्रों के कारण डीज़ल-पैट्रोल के मूल्यों में अत्यधिक तेज़ी के कारण मुद्रा-स्फीति दर में वृद्धि होगी (पृष्ठ 53), 14 अप्रैल से 11 जुलाई के मध्य खप्पर योग बनने से महाराष्ट्र, गुजरात, बिहार, उड़ीसा आदि प्रदेशों में विषम वर्षा, बाढ़ एवं प्राकृतिक आपदाओं से जन व धन हानि के योग हैं (पृष्ठ 53), पंजाब, बिहार में नेतृत्व परिवर्तन की प्रबल संभावना (पृष्ठ 53), **7 फरवरी, 2007 ई. तक यू. पी. ए. सरकार के वर्चस्व को कोई खतरा नहीं** (पृष्ठ 53), भाजपा नेतृत्व में भी परिवर्तन की प्रबल संभावना है (पृष्ठ 53)। अमेरिकी सरकार की प्रतिष्ठा को विश्व में अनेक स्थलों पर भारी ठेस पहुँचेगी, विशेषकर अधिकांश मुस्लिम राष्ट्र (इराक, ईरान, अफ़गानिस्तान, लैबनान आदि) अमेरिका आदि देशों की मुस्लिम विरोधी विदेश नीतियों का खुलकर विरोध करेंगे। (पृष्ठ 55-का. II) जनोपयोगी दैनिक उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक वृद्धि, बेरोज़गारी, भ्रष्टाचार, आवश्यक वस्तुओं की कमी के कारण लोगों में

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गहन असन्तोष एवं आक्रोश बढ़ेंगे। जुलाई-अगस्त में कुछ राज्यों में बाढ़ **समस्या गम्भीर** बनेगी (पृ 57 कालम I), **24 मई से 12 जुलाई के मध्य मंगल-शनि योग के कारण** काश्मीर, महाराष्ट्र, उ.प्र. आदि प्रदेशों में उपद्रव, अग्निकाण्ड, हिंसा एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होने के योग हैं (जैसा कि मुम्बई में 11 जुलाई को भयानक बम विस्फोट हुए) (पृ. 58 का. I). 8 अगस्त से 16 अग. मध्ये **चतुर्ग्रही योग** एवं आश्विन मास (8 सितम्बर से 7 अक्तूबर) में **पाँच शनिवार** होने से अनुपयोगी वर्षा से कहीं बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोप एवं हिंसक, विस्फोटक घटनाएं घटित होंगी। (स्पष्ट पढ़े-पृष्ठ 58, कालम I) **[जैसा कि महाराष्ट्र, गुजरात, बिहार, उड़ीसा आदि में बाढ़ादि के कारण व्यापाक जन धन हानि हुई तथा 8 सितं. को ही मालेगाँव (महाराष्ट्र) में विस्फोटक घटनाएं घटित हुई।]**

सं. २०६४ में ग्रहों की आकाशी कौंसिल और भविष्यफल

वि. संवत् २०६४ में ग्रहों की आकाशी कौंसिल (ग्रह-परिषद्) के **दस अधिकारों में से आठ अधिकार सौम्य (शुभ)** ग्रहों को तथा केवल **दो अधिकार क्रूर ग्रहों** को प्राप्त हुए हैं। **राजा, सस्येश,** धातुओं तथा धनेश (कोशपति) के मुख्य अधिकार चन्द्र देव को, मेघ (वर्षा), फलों तथा सेनापति का अधिकार शुक्र को तथा **शेष मन्त्री का अधिकार** शनि देव एवं धान्य का अधिकार सूर्यदेव को प्राप्त हुआ है। **ग्रह परिषद् के वर्तमान** विभाजन के फलस्वरूप लोगों में सुख-साधनों की वृद्धि तथा ऐश्वर्य-परता अधिक बढ़ेगी। स्त्रियों का प्रभाव-क्षेत्र बढ़ेगा। वर्षा अधिक होगी, भारत में अनाज आदि फसलों का उत्पादन भी अच्छा होगा। **मन्त्री शनि** होने के कारण प्रशासक वर्ग एवं राजनेताओं का व्यवहार साधारण प्रजा के प्रति अपेक्षापूर्ण रहेगा। कुछ क्षेत्रों में कम वर्षा से अकाल एवं पेयजल की समस्या भी उत्पन्न होगी। **जलस्तम्भ** भी मात्र 3 प्रतिशत होने से अनोपयोगी वर्षा होगी। **शर्वरी नाम** नव सम्वत्सर होने से राजनेता सामान्य लोगों की भलाई में कम प्रवृत्त रहेंगे। शनि के प्रभावस्वरूप भ्रष्टाचार, चोरी-ठगी, लूटमार बेईमानी की वारदातें अधिक होंगी। राजनैतिक टकराव, उपद्रव, आतंकवादी एवं हिंसक घटनाएं अधिक होंगी, **कोशपति चन्द्र होने से** आतंकवादरोधी कार्रवाई के लिए वित्तीय आबंटन में वृद्धि तथा सामाजिक आर्थिक विकास के लिए कई नई योजनाएं बनेंगी। क्रय-विक्रय द्वारा व्यापार में भी वृद्धि होगी। **धान्येश** सूर्य के प्रभाव से शीतकालीन फसलों को हानि पहुँचेगी तथा **सभी प्रकार अनाज, दालों के मूल्यों में वृद्धि होगी।** मेघेश, फलेश तथा **सेनापति शुक्र** के प्रभावस्वरूप सामान्य वर्षा तथा फलों के अच्छे उत्पादन के बावजूद देश के विशिष्ट पूंजीवादी वर्ग के लोग तथा राजनेता ही सुख-साधनों से सम्पन्न तथा और समृद्ध होंगे। कई स्थलों पर निरन्तर एवं मूसलाधार वर्षा होगी और बाढ़ की स्थिति बनेगी तथा कहीं कम वर्षा के कारण अनाज के उत्पादन में कमी होगी। विद्युत् उत्पादन भी कम होने से सामान्य प्रजा में आक्रोश, विरोध एवं असन्तोष की भावना रहेगी। रसेश बुध तथा नीरसेश चन्द्र के कारण भी सौन्दर्य प्रसाधनों तथा विभिन्न उपभोग्य वस्तुओं के उत्पादन एवं प्रसार में विशेष वृद्धि होगी। बढ़िया किस्म के वस्त्रों, सुवर्णकार, अनाज-करियाना आदि सम्बन्धित व्यापारी, पेट्रोल, तेल, भवन निर्माण से सम्बन्धित व्यवसायी, अन्य व्यापारी वर्ग भी विशेष लाभान्वित होंगे। चन्द्र, शुक्र के कारण लोगों में सुख और ऐश्वर्य प्राप्ति से सम्बन्धित उपभोग्य वस्तुओं की ओर प्रवृत्ति बढ़ेगी। कम्प्यूटर, दूर-संचार संसाधनों, सौन्दर्य प्रसाधनों, वाहनों के क्रय-विक्रय की ओर अधिक जिज्ञासा रहेगी। इन उपभोग्य वस्तुओं से सम्बन्धित व्यापारी वर्ग विशेष लाभान्वित रहेंगे। राजा चन्द्र, मंत्री शनि एवं शर्वरी नामक सम्वत् होने से लोगों में कफ, प्रमेह, मधुमेह, उदर, स्नायु, श्वास, हृदय एवं मानसिक रोगों की अधिकता रहेगी।

नववर्ष प्रवेश एवं जगत् लग्न कुण्डली अनुसार भविष्यफल सं. २०६४

नववर्ष प्रवेश कुं. 8/13 घं.मिं.

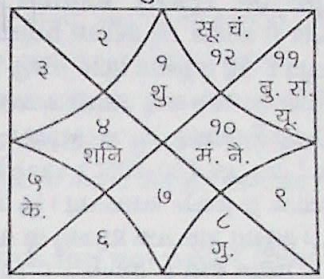

जगत् लग्न कुण्डली 12/28 घं.मिं.

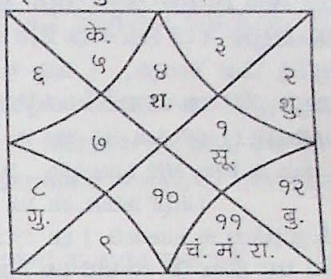

वि. सम्वत् २०६४ में नव सम्वत् प्रवेश 19 मार्च 2007 ई., सोमवार, चैत्र अमा. की समाप्ति पर प्रातः 8 बजकर 13 मिनट से **मेष लग्न** में प्रारम्भ होगा। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा एवं नवरात्रारंभ भी इसी दिन से होगा। **वर्ष प्रवेश** कुंडली में मेष लग्न उदित हुआ है। लग्न का स्वामी युद्धप्रिय ग्रह मंगल दशम भाव (विदेशी व्यापार) से उच्चराशि होकर बैठकर लग्न भाव को स्वगृही दृष्टि से तथा चतुर्थ भावस्थ शनि को शत्रु दृष्टि से देख रहा है।

पंचमभाव (नेतृत्व एवं प्रशासन बुद्धि) का स्वामी सूर्य द्वादश भाव में चन्द्र के साथ योगकारक है, उस पर गुरु की शुभ दृष्टि पड़ रही है। ग्रहस्थिति के अनुसार विश्व के अधिकांश देश अत्यधिक संहारक हथियारों की दौड़ में अपना प्रभुत्व बनाने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। प्रतिद्वन्दिता और होड़ की प्रवृत्तियां बढ़ेगी। ईराक, लैबनान, पाकिस्तान, अफ़गानिस्तान, श्रीलंका, नेपाल एवं भारत सहित कुछ देशों में आतंकवादी ग्रुप विस्फोटक एवं हिंसक वारदातें करने के लिए सक्रिय रहेंगे।

28 मार्च तक शनि-मंगल के मध्य समसप्तक योग तथा फिर 29 मार्च से 6 मई तक शनि-मंगल के मध्य षडाष्टक योग होने से इस अवधि में ईरान, इराक आदि कुछ मुस्लिम देशों के साथ अमेरिका के साथ प्रत्यक्ष विरोध एवं टकराव के हालात बनेंगे। लैबनान,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

इज़रायल, अफ़गानिस्तान, भारत, पाक सहित एशियाई देशों तथा कुछ यूरोपीय देशों में भी अग्निकांड, तोड़-फोड़, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होने के संकेत हैं। अमेरिका की स्वार्थपूर्ण कूटनीतियों के कारण अनेक मुस्लिम राष्ट्र पूंजीवादी साम्राज्यवाद के विरुद्ध नए गठजोड़ बनाने में सक्रिय होने लगेंगे।

16 जून से 15 जुलाई के मध्य **मंगल-शनि** के मध्य परस्पर पुनः दृष्टि सम्बन्ध होने से भारत-पाक, इज़रायल. लैबनान, अमेरिका-ईराक आदि विरोधी देशों के मध्य पुनः फौजी टकराव, विस्फोटक एवं हिंसा की घटनाएं घटित होंगी। मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, धनु व कुम्भ राशि वाले देश विशेष प्रभावित होंगे।

29 जुलाई से 15 सितम्बर के मध्य शनि-मंगल ग्रहों के मध्य पुनः दृष्टि सम्बन्ध होंगे, जोकि भारत, पाकिस्तान, ईरान, ईराक, लैबनान, अफ़गानिस्तान, आदि मुस्लिम बहुल्य देशों की आन्तरिक परिस्थितियों के लिए अरिष्टकर होंगे। मेष लग्न में नववर्ष प्रवेश का फल शास्त्र में इस प्रकार से उल्लेखित किया गया है—

मेष लग्नेतुपूर्वस्यां दुर्भिक्षं राज विग्रहः। दक्षिणस्यां सुभिक्षं स्याद् ब्रह्मधान्यरसा च भूः।

अर्थात् मेष लग्न में वर्ष प्रवेश हो, तो पूर्व दिशा में स्थित देश या प्रदेश में कहीं छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन, राज विग्रह, प्रशासकों में टकराव तथा कहीं दुर्भिक्ष हो, कहीं अल्प वर्षा के कारण अकाल सी स्थिति होगी, तो कहीं अतिवर्षा के कारण बाढ़ से हानि होगी। दक्षिण में कृषि का उत्पादन अच्छा रहे।

जगत् लग्न (वर्षेश) कुण्डली अनुसार 14 अप्रैल, 2007 ई. शनिवार को दोपहर 12 बजकर 28 मिनट पर वर्ष प्रवेश **कर्क लग्न** में होगा। लग्न भाव (नेतृत्व) में सप्तमेश एवं अष्टमेश शनि शत्रु राशि का होकर स्थित है, जबकि लग्न का स्वामी चन्द्रमा अष्टम भाव में राहु-मंगल से युक्त होकर शत्रु राशि में पड़ा है। लग्न भाव पर शनि जोकि संवत् का मन्त्री भी है, उस पर गुरु की स्वोच्च दृष्टि भी पड़ रही है। प्रस्तुत ग्रह स्थिति के अनुसार भी विश्व का राजनीतिक वातावरण अशान्त, तनावपूर्ण एवं विक्षुब्ध रहेगा। कुण्डली में शनि-मंगल का षडाष्टक योग बना हुआ है, जिससे विश्व के प्रमुख एवं अन्य विकासशील देश अपनी सामरिक शक्ति बढ़ाने के लिए अत्याधुनिक परमाणु हथियार बनाने के लिए अग्रसर रहेंगे।

इस्लामिक देश अमेरिका की साम्राज्यवादी प्रवृत्तियों पर अंकुश लगाने के लिए गुप्त तौर पर विश्व स्तर पर गठजोड़ बनाने के प्रयास करेंगे। ध्यान रहे, जगत् लग्न कुण्डली में तथा मुस्लिम राष्ट्रों की कुण्डली—दोनों में कर्क लग्न ही उदित हुआ है। तदनुसार विश्व की राजनीति मुस्लिम सम्प्रदाय के संगठनों की कूटनीतियों से विशेष तौर पर प्रभावित रहेगी। मुस्लिम राष्ट्र विशेषकर पाकिस्तान, सऊदी अरब, लैबनान, ईरान, इराक, टर्की, अफ़गानिस्तान, बंगलादेश, सूडान आदि राष्ट्र अन्दरूनी तौर पर इकट्ठे होकर अमेरिका और

मुस्लिम देशों की नववर्ष कुं.

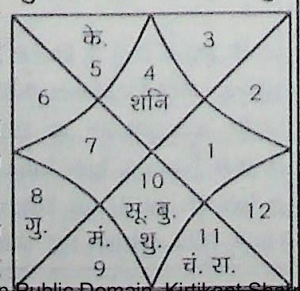

यूरोपीय साम्राज्यवाद के खिलाफ विश्वव्यापी संगठन की बुनियाद रखेंगे। ईसाइयों के धार्मिक नेता पोप द्वारा पैगम्बर मोहम्मद के विरुद्ध की गई टिप्पणी विश्व में समस्त मुस्लिम समुदाय के आक्रोश की अग्नि में घी का काम करेगी।

पाकिस्तान के अन्दरूनी हालात अत्यन्त विक्षुब्ध रहेंगे। विशेषतौर पर 23 मार्च से 18 जुलाई तक तथा फिर 29 जुलाई से 15 सितं. तक की अवधि पाक सरकार के लिए चुनौतीपूर्ण व अग्निपरीक्षा के होंगे। देश के प्रान्त बलूचिस्तान में उग्र-प्रदर्शन, अग्निकांड एवं हिंसक घटनाएं घटित होंगी।

चैत्र (मार्च) में ५ रविवार, वैशाख मास (3 अप्रैल से 2 मई) तथा **श्रावण में** (1 अगस्त से 28 अगस्त) में **पाँच मंगलवार** होना तथा कार्तिक मास 27 अक्तूबर से 24 नवंबर) फिर पौष मास (24 दिसंबर से 22 जन. 2008 ई.) में पुनः ५ मंगलवार होने से इन अवधियों में विश्व के अनेक देशों (विशेषकर पाक आदि) में राजनीतिक संकट, उपद्रव, आगजनी, छत्र भंग, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होने के संकेत हैं। परन्तु नववर्ष एवं जगत् लग्नदोनों कुण्डलियों में लग्न पर गुरु की शुभ दृष्टियां पड़ने से लक्षित होता है कि भारत, चीन, पाक, अफ़गानिस्तान, अमेरिका, जापान आदि देशों में नेतृत्व परिवर्तन की सम्भावना नहीं होगी। विकसित एवं विकासशील (गुट-निरपेक्ष) देशों के मध्य विश्व शान्ति वार्ताओं की प्रक्रिया का क्रम चलता रहेगा।

——विश्व के कुछ अन्य सम्बद्ध देश——

अमेरिका—इसकी प्रभाव राशि मिथुन है। वर्षप्रवेश कुण्डली में इस राशि का स्वामी, बुध एकादश भाव में राहु युक्त है, जबकि जगत् लग्न कुण्डली में राशिस्वामी बुध भाग्य स्थान में नीच राशिगत (मीन) है। बुश सरकार विस्तारवाद सम्बन्धी अपनी स्वार्थपूर्ण एवं कुटिल नीतियों के कारण विश्व के अनेक देशों के मध्य आलोचना का शिकार बनेगी। कुछ इस्लामिक देश अमेरिका के खिलाफ एकजुट होकर अमेरिका की सम्प्रभुता को चुनौती देंगे। इज़रायल और लैबनान तथा भारत व पाकिस्तान के सम्बन्ध में दोगली एवं पक्षपातपूर्ण कूटनीतियों को अपनाएगा। इज़रायल व पाकिस्तान को सैन्य सामग्री की सहायता का क्रम जारी रखेगा। विरोधास्पद परिस्थितियों के बावजूद बुश सरकार भारत, पाक, चीन व अन्य मध्य एशियाई राष्ट्रों के साथ राजनीतिक सम्बन्धों में सुधार के प्रयास जारी रखेगा। अन्तरिक्ष विज्ञान में विशिष्ट अनुसन्धानों के कार्यक्रम भी जारी रहेंगे।

पाकिस्तान—जगत् लग्न कुण्डली में इसकी प्रभाव राशि कन्या पर शनि की तृतीय दृष्टि पड़ रही है तथा राशिस्वामी बुध नवम भाव में नीच राशिगत है। ग्रह योगानुसार पाकिस्तान की सत्तारूढ़ मुशर्रफ सरकार को गम्भीर चुनौतियों का सामना रहेगा। आतंकवादी संगठनों को पनाह देने के विरोध में तथा तानाशाही रवैये के कारण अपने देश के भीतर ही जबरदस्त खिलाफत

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

के बाद मंडराने लगेंगे। हकूमत के लिए राजनीतिक संकट और अधिक गहरा होगा। बिलोचस्तान, सिन्ध आदि प्रान्तों में उपद्रव, जनांदोलन, विस्फोट एवं हिंसक घटनाओं में वृद्धि होगी। भारत के साथ शान्ति वार्ताओं के बावजूद कश्मीर आदि सीमावर्ती क्षेत्रों से आतंकवादी संगठनों को (अप्रत्यक्ष रूप में) घातक हथियारों की सहायता करता रहेगा। भारत के साथ शान्ति वार्ताओं का क्रम, गतिरोध के पश्चात् पुनः समायोजित होगा। बेनज़ीर भुट्टो तथा नवाज़ शरीफ़ साथ मिलकर पाकिस्तान की फौजी हकूमत के लिए चुनौती उत्पन्न करेंगे।

ब्रिटेन (Britain)—इसकी प्रभाव राशि मेष है। वर्षप्रवेश कुण्डली में इसकी राशि मंगल की स्वगृही दृष्टि, परन्तु शनि की नीच दृष्टि पड़ रही है। ग्रहस्थिति अनुसार देश में शुभाशुभ दोनों प्रकार के फल घटित होंगे। आगामी वर्ष ब्रिटेन के नेतृत्व में परिवर्तन के योग मिलते हैं। आन्तरिक एवं विदेश नीति में भी कुछ अमूल परिवर्तन लक्षित होंगे। भारत के साथ व्यापारिक एवं राजनीतिक सम्बन्धों में विशेष प्रगति होगी।

----विभिन्न देशों एवं नगरों की राशियाँ----

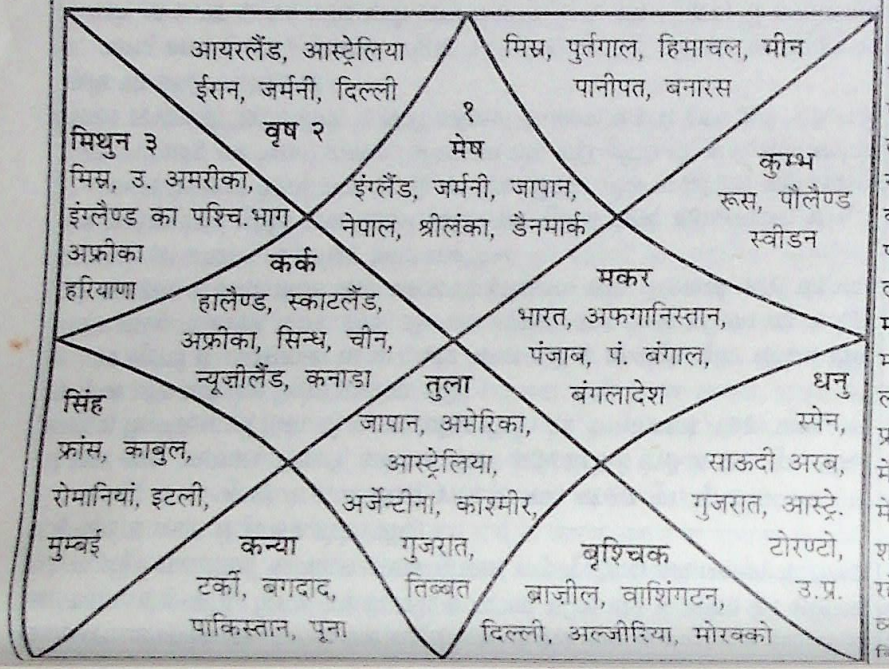

वि. संवत् २०६४ में गोचर ग्रह और भारत का भविष्यफल

कुं. स्वतंत्र भारत
15 अग., 1947, रात्रि 12 बजे

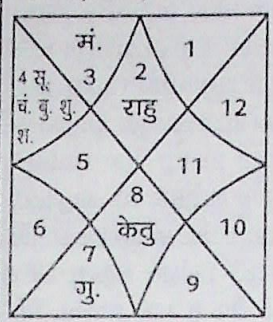

स्वतन्त्र भारत का 60वाँ वर्ष
15 अग., 2006 ई. 27/01

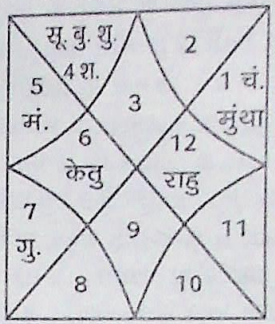

गणतंत्र दिवस का 58वाँ वर्ष
26 जन., 2007 ई. 25/01

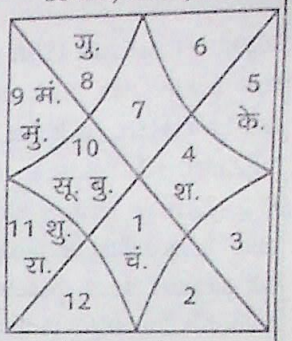

58वें गणतन्त्र दिवस (26 जनवरी, 2007 ई.) की वर्षकुण्डली में भारतवर्ष तुला लग्न में प्रवेश कर रहा है। तुला लग्न भारतीय गणतन्त्र दिवस के जन्मलग्न (मीन) की अष्टम भावस्थ राशि है। वर्ष लग्नेश **शुक्र** पंचमभाव (प्रशासक बुद्धि कौशल) में राहु युक्त होकर पड़ा है, इस पर मुंथापति गुरु की विशेष चतुर्थ शत्रु दृष्टि पड़ रही है। परन्तु शुक्र पर मुंथा एवं मंगल की गुप्त-मित्र दृष्टियां भी पड़ रही हैं। सामान्य प्रजा का प्रतिनिधित्व करने वाला तथा सम्वत् का राजा चन्द्र सप्तम भाव में स्थित है, उस पर शनि की दशम् शत्रु-दृष्टि पड़ रही है। प्रस्तुत ग्रहस्थिति के अनुसार विभिन्न राज्यों एवं केन्द्रशासित राज्यों में सामान्य लोगों की भलाई की दृष्टि से बहुत-सी रोज़गार एवं विकास सम्बन्धी योजनाएं बनाई जाएंगी, परन्तु राजनेताओं की स्वार्थपूर्ण प्रवृत्तियों के कारण, लोकहितकारी योजनाओं का समुचित लाभ सामान्य लोगों को नहीं मिल पाएगा। **वर्ष-लग्न कुण्डली में भारत की प्रभाव राशि मकर** पर सूर्य-बुध का योग बना हुआ है तथा शनि की स्वगृही शुभ दृष्टि पड़ रही है, परन्तु मकर राशि पापाक्रान्त भी है। फलस्वरूप, विभिन्न क्षेत्रों जैसे साईंस टैक्नोलोजी, कम्प्यूटरर्ज़, लघु उद्योग, सड़क-परिवहन, विद्युत्, दूर-संचार, तकनीकी, बैंकिंग आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति करेगा। तृतीय भाव में भौमयुक्त धनुराशिस्थ मुंथा तथा मुंथेश गुरु का बृश्चिक राशि में होने से **स्थान-परिवर्तन** योग बना है, जिससे भारतवर्ष आर्थिक एवं टैक्नोलोजी के क्षेत्र में उल्लेखनीय विकास करेगा। विश्व-राजनीति में प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। परन्तु चन्द्र पर शनि की शत्रु दृष्टि होने से विकास योजनाओं का लाभ साधारण लोगों को अल्प मात्रा में रहेगा। देश की कुछ ज्वलन्त समस्याएँ जैसे राजनायिक पार्टियों में परस्पर टकराव, कानून-व्यवस्था में सुदृढ़ता की कमी, बढ़ती जनसंख्या, बेईमानी, भ्रष्टाचार, विदेशी घुसपैठ, बिजली, पेयजल एवं आन्तरिक सुरक्षा नियमों में कमी, बेरोज़गारी, उपभोग्य वस्तुओं की

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कीमतों में अतिशय वृद्धि तथा देशव्यापी आतंकवादी हिंसक गतिविधियों के फलस्वरूप विकास प्रक्रियाओं के वांछित लाभ नहीं मिल पाएंगे।

स्वतन्त्र भारत के 60वें वर्ष (15 अगस्त, 2006 ई.) की प्रवेश कुण्डली में मिथुन लग्न उदित हो चुका है। वर्ष लग्नेश बुध द्वितीय स्थान में सूर्य, शुक्र व शनि के साथ चतुर्ग्रही योग बना हुआ है और द्वितीयेश (कोशपति) चन्द्र (जो वर्ष का राजा भी है) मुंथायुत होकर लाभ स्थान में है। भारत की प्रभाव राशि—मकर पर सूर्य, शनि, बुधादि ग्रहों की संयुक्त दृष्टियाँ भी पड़ रही हैं। ग्रह स्थिति के अनुसार सत्तारूढ़ केन्द्रीय सरकार को राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक समस्याओं से निपटने के लिए गम्भीर चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। छटे (शत्रु) भाव पर मंगल की स्वगृही दृष्टि होने से नक्सली एवं आतंकवादी तत्त्व (संगठन) देश में विस्फोटक एवं हिंसक वारदातें करके निर्दोष लोगों की हत्याओं के जघन्य अपराध करने की कुचेष्टाएं करेंगे। जुलाई-अगस्त (2006 ई.) को महाराष्ट्र में हुई दुर्भाग्यपूर्ण दुःखद विस्फोटक वारदातों के स्पष्ट उदाहरण हैं। हमारे राष्ट्राध्यक्षों को आगे भी विशेष सावधान रहने की आवश्यकता होगी। गणतन्त्र दिवस की कुण्डली में भी भारत की प्रभावराशि मकर का राशिस्वामी **शनि एवं वर्ष के राजा चन्द्र के मध्य शत्रुजन्य दृष्टि सम्बन्ध होने से देश के भीतर ही कुछ दुष्ट प्रकृति के लोग भारत की शान्ति को भंग करने की कुचेष्टाओं में प्रयासरत होंगे।** ग्रहयोग अनुसार देश के भीतर भी राजनीतिक पार्टियां देश की भलाई के कार्यक्रमों की ओर कम तथा अपने स्वार्थ की तरफ़ अधिक अधिमान देंगे। कुछ राज्यों में बिगड़ती कानून व्यवस्था, बेरोज़गारी, आरक्षण का मुद्दा, भ्रष्टाचार, विद्युत् संकट, राजनेताओं में परस्पर टकराव, उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में अतिशय वृद्धि इत्यादि ज्वलन्त समस्याओं के कारण सामान्य लोगों में विक्षोभ एवं असन्तोष व्याप्त रहेगा।

कुं. स्वतन्त्र भारत, 61वां वर्ष
15 अगस्त, 2007 ई. (9-09 A.M.)

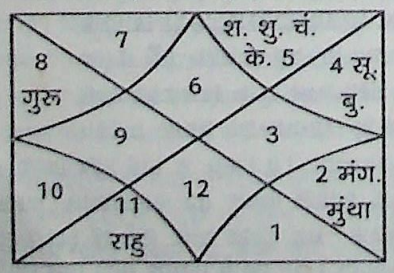

कुं. 59वां गणतन्त्र दिवस
26 जन. 2008 ई. (प्रातः 7-10)

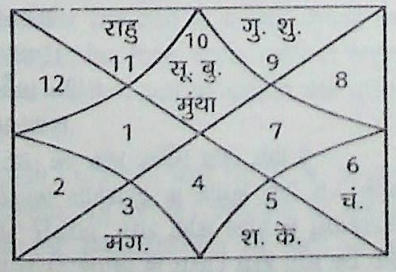

स्वतन्त्र भारत के 61वें वर्ष की कुण्डली में **कन्या लग्न** उदित हुआ है। प्रथम स्वतन्त्र भारत कुण्डली में यह राशि पंचम भाव में पड़ती है। वर्ष लग्नेश बुध एकादश भाव में शुभ **बुधादित्य** योग निर्मित हुआ है। जिससे विश्व राजनीति एवं व्यापारिक क्षेत्र में भारत का वर्चस्व एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। विदेशी मुद्रा भण्डार में भी उल्लेखनीय वृद्धि होगी। परन्तु भारत की प्रभावराशि का स्वामी शनि द्वादश भाव में चन्द्र, शुक्र, केतु ग्रहों के पड़ने से लक्षित होता है कि **अगस्त, 2007 ई.** के बाद की अवधि सत्तारूढ़ केन्द्रीय (U.P.A.) सरकार के लिए विशेष संघर्षपूर्ण रहेगी। सत्तारूढ़ पार्टी से अलग हुए घटक दल सरकार के लिए चुनौती बनेंगे। 12वें चन्द्र, शनि, केतु आदि ग्रह होने से अधिकांश लोग, नेता एवं सरकारी तन्त्र के लोगों में अधिकाधिक धन-संग्रह की होड़ में नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों की कमी दिखाई देगी। सरकारी खर्चों में अत्यधिक वृद्धि होगी। दिशाहीन आर्थिक प्रगति होने से समाज का विशेष एवं उच्चवर्ग ही लाभान्वित होगा। सामान्य वर्ग के लोग तथाकथित विकास कार्यों के अवसरों से लाभान्वित नहीं हो पाएंगे। आतंकवाद को समाप्त करने के लिए भारत को कठोर एवं निर्णायक कदम उठाने आवश्यक होंगे।

—संवत् २०६४ में गोचर—ग्रह और भारतवर्ष—

सम्वतारम्भ से पूर्व ही (12 फर. से 13 मार्च तक) सूर्य-राहु का योग कुम्भ में तथा मंगल-शनि का **समसप्तक** योग (क्रमशः मकर व कर्क राशियों पर) 18 फर. से 29 मार्च तक रहेगा। इस अवधि में किसी विशिष्ट राजनेता की पदच्युति अथवा आकस्मिक मृत्यु होने के योग हैं। कुछ प्रदेशों में जैसे उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, आन्ध्र प्रदेश, असम आदि पूर्वी क्षेत्रों एवं जम्मू-कश्मीर आदि पश्चिमोत्तर प्रदेशों में हिंसक वारदातें, उपद्रव, अग्निकाण्ड, साम्प्रदायिक फिसाद एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होने के संकेत हैं—

यदा सौरिभौमे सुरराज मंत्री—भार्गवश्च यदैक राशौ समसप्तके वा।
अयोध्या, मध्यदेशे लंकापुरे पूर्वस्यां च क्षुधाभयं शस्त्रं करोति॥

चान्द्र चैत्रमास (4 मार्च से 2 अप्रैल) में ही **पाँच रविवारों** का समावेश होने से राज्यों में कहीं खाद्यान्न की कमी, मन्त्रीमण्डल में परिवर्तन या छत्रभंग तथा राजनेताओं में टकराव एवं अनाज, दालों आदि के मूल्यों में अत्यधिक तेजी के योग बनेंगे—

यत्र मासे रवेर्वाराः जायन्ते पञ्चसततम्। दुर्भिक्षं छत्रभंगः स्यात् दास्ते महद्भयम्॥

29 मार्च से 6 मई के बीच मंगल-शनि के मध्य **षडाष्टकयोग** तथा 7 अप्रैल से 1 मई तक गुरु-शुक्र ग्रहों के मध्य **समसप्तक** योग बनने से कहीं राजनीतिक संकट, छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन), जनांदोलन, साम्प्रदायिक उपद्रव, उत्तर-पश्चिम भागों में कही विस्फोटक टकराव एवं हिंसक वारदातें होने के योग हैं। **वैशाख मास** (अप्रैल-मई) में **पाँच मंगलवार** होने से इस समयावधि में किसी विशिष्ट राजनेता की मृत्यु या अपदस्थ होना, विस्फोटक एवं हिंसक घटनाएँ आदि घटित होंगी—

यत्रमासे महीसूनो जायन्ते पञ्चवासराः। रक्तेन पूरिता पृथिवी छत्रभंङ्गस्तदाभवेत्॥

ज्येष्ठ अधिकमास (17 मई से 15 जून) तक की अवधि में **ज्येष्ठधिक मास** रहेगा। जिसके फलस्वरूप भी किसी प्रधाननेता की आकस्मित मृत्यु अथवा छत्रभंग होने के संकेत हैं—**ज्येष्ठ द्वये नृपध्वसो॥**

चान्द्र **ज्येष्ठ, आषाढ़** एवं **श्रावण मासों** में क्रमशः पांच शनि, पाँच रवि, फिर पाँच

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मंगलवार होने से कहीं बाढ़, भूकम्प, यान दुर्घटना, भूस्खलन आदि अप्रत्याशित प्रकृति के प्रकोप होने के संकेत हैं।

16 जून से 15 जुला. तक शनि-मंगल ग्रहों के मध्य पुनः शत्रु-दृष्टि (4-10) सम्बन्ध होने से भारत की आन्तरिक स्थितियाँ क्लिष्ट एवं संघषपूर्ण होंगी। महाराष्ट्र, उड़ीसा, असम, बिहार आदि प्रदेशों में बाढ़ आदि प्रकोपों के कारण जन,धन एवं कृषि की हानि का भय होगा। इन्हीं दिनों **श्रावण कृष्ण** पक्ष (30 तुला से 12 अगस्त के मध्य) **तेरह दिन का पक्ष** घटित होने से कुछ अन्य प्रदेशों जैसे—कश्मीर, गुजरात, उत्तर प्रदेश आदि में विस्फोटक घटनाएँ, साम्प्रदायिक दंगे अथवा बाढ़ादि प्राकृतिक आपदाओं के कारण जन, धन, कृषि आदि की क्षति होने के संकेत हैं। 'विश्वघस्रपक्ष' का फल अशुभ कहा गया है—

यदा च जायते पक्षस्त्रयोदश दिनात्मकः।
भवेत लोकक्षयो घोरो रूण्डमाला युता मही॥
अनेक युग सहस्रयां दैव-योगात्प्रजायते।
त्रयोदश दिने पक्षस्तदा संहरते जगत्॥

17 अग. से 1 सितं. के मध्य **सिंह राशि** पर सूर्य, शनि, बुध, केतु आदि ग्रहों का चतुर्ग्रही एवं **पंचग्रही** योग बनने से कश्मीर, असम, आन्ध्रादि प्रदेशों में कहीं उपद्रव, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होंगी। राजनेताओं में कहीं टकराव बढ़ेंगे—

एकराशौ यदा चत्वारः पञ्चखेचराः। प्लावयन्ति महीं सर्वा रूधिरेण जलेन वा।

27 अगस्त को **सूर्य व शनि** के मध्य **अंशात्मकयुति** होने से राजनीतिक हालात अस्थिर होंगे। किसी मूर्धन्य नेता के निधन या अपदस्थ होने के योग हैं। 30 अग. को सिंह राशि में सूर्य-केतु के मध्य अंशात्मक योग भी किसी विशिष्ट राजनेता के लिए अरिष्टकर होगा।

चान्द्र **कार्तिक मास** से चान्द्र **पौष मासों** के मध्य (26 अक्तू. से 22 जन. 2008 ई.) पुनः क्रमशः ५ शनिवार, ५ रविवार और पाँच मंगलवार घटित होने से देश में कहीं राजनीतिक अस्थिरता, छत्रभंग, उपद्रव, उपभोग्य वस्तुओं में अतिशय मूल्य वृद्धि के कारण लोगों में विक्षोभ, तनाव एवं गहन असन्तोष व्याप्त रहेगा।

16 दिसम्बर, **रविवार** के दिन **पौष संक्रान्ति** होना तथा **सिंह राशि** में शनि **वक्री** होने से राजनेताओं में परस्पर टकराव, अस्थिरता, अनाज, तैलादि उपभोग्य वस्तुओं में आशातीत वृद्धि तथा प्रजा में बेचैनी, दुःख, असन्तोष, भय व अशान्ति बढ़ेगी—

''संक्रान्ति आदित्य दिने न शस्ता करोति युद्धं नृपतेरतीव।
धान्यं महर्घं प्रतिरौद्रवार्ता प्रजाभवेद् दुखित हीन दीना॥''

अत्यन्त कठिन संघर्षपूर्ण एवं क्लिष्ट चुनौतियों के बावजूद भारत विदेशी व्यापार एवं विदेश नीति के अन्तर्गत अमेरिका, चीन, रूस, ब्रिटेन, अफ़गानिस्तान, पाकिस्तान, ईरान, साऊथ अफ्रीका, ब्राज़ील, क्यूबा, जापान, इटली आदि देशों के साथ व्यापारिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्धों में वृद्धि होगी। भारत के आर्थिक एवं औद्योगिक क्षेत्रों में उल्लेखनीय उन्नति होगी। न्यायपालिका एवं सांसदीय प्रणाली के बीच कई बार संवैधानिक गतिरोध पैदा होंगे। पाकिस्तान के साथ शान्ति-वार्ताओं की शृंखला के बावजूद राजनायिक सम्बन्धों में विशेष प्रगति नहीं होगी। देश की आन्तरिक समस्याएं जैसे बेरोज़गारी, बेईमानी, भ्रष्टाचार, कानून और व्यवस्था की स्थिति, विद्युत् संकट, आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में तेज़ी, पेयजल में कमी, ढीली आन्तरिक सुरक्षा, आरक्षण के मुद्दे, असन्तुलित आर्थिक विकास, साम्प्रदायिकता, बढ़ती जनसंख्या तथा लोगों में चारित्रिक मूल्यों का गिरता स्तर आदि समस्याएँ और अधिक गम्भीर होंगी। बहुमुखी क्लिष्ट समस्याओं के बावजूद भारतवर्ष कम्प्यूटर उद्योग, दूरसंचार, अन्तरिक्ष विज्ञान, कपड़ा उद्योग, स्टील उद्योग व अन्य मध्यमस्तरीय उद्योगों में विशेष उन्नति करेगा।

—भारत के कुछ प्रमुख प्रान्त—

हिमाचल प्रदेश—गणतन्त्र दिवस (26 जन. 2007 ई.) की कुण्डली में इस प्रदेश की प्रभावराशि मीन पर गुरु की स्वगृही दृष्टि पड़ रही है, जिससे सत्तारूढ़ कांग्रेस सरकार राज्य की बेहतरी के लिए अनेक उपयोगी योजनाएं तैयार करेगी। इनमें मुख्यतः ग्राम पंचायत संस्थाओं की स्थापना करके प्रदेश के गाँवों एवं शहरों के बहुमुखी विकास की ओर ध्यान दिया जाएगा। इसके अतिरिक्त विद्युत्, संचार-साधनों, परिवहन, पर्यटन, कृषि, जल एवं पेयजल, आयुर्वेद से सम्बन्धित जड़ी-बूटियों के विकासार्थ पौधों सम्बन्धी अनुसंधानात्मक कार्य, सेबादि फलों की कृषि एवं वन-उद्योग, चिकित्सा, दूर-संचार, इंजीनियरिंग, कम्प्यूटर कोचिंग सैंटर, बागवानी, शिक्षा एवं अन्य तकनीकी क्षेत्रों में विकास के विशेष प्रयास किए जाएंगे। यद्यपि विभिन्न विकास योजनाओं का विशेष लाभ साधारण लोगों को नहीं मिल पायेगा। भ्रष्टाचार, बेरोज़गारी, पेयजल एवं खाद्यान्न, तैलादि आवश्यक उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में आशातीत वृद्धि के कारण सामान्य लोगों में गहरी निराशा एवं असन्तोष की भावनाएँ व्याप्त रहेंगी। प्रदेश की राशि मीन पर मंगल की अशुभ दृष्टि के प्रभावस्वरूप कई स्थलों पर जनांदोलन, आक्रोश एवं तोड़फोड़ की वारदातें घटित होंगी। वर्ष के उत्तरार्ध भाग में प्रदेश के उत्तर-पूर्वी भागों में कहीं अतिवृष्टि, भू-स्खलन, वायु एवं विद्युत् विस्फोट, बाढ़ आदि प्राकृतिक आपदाओं के कारण कृषि-धन व जन हानि होने के योग हैं। यान-वाहनादि सड़क दुर्घटनाओं की भी संभावनाएँ हैं।

पंजाब—इसकी प्रभाव राशि भी मीन है, परन्तु नाम राशि कन्या है। इसकी प्रभाव राशि मीन पर गुरु की स्वगृही दृष्टि 21 नवम्बर तक रहेगी। 6 अप्रैल से राशिस्वामी गुरु वक्री हो रहा है तथा 7 मई से 13 जून के मध्य इसकी राशि पर मंगल का संचार रहेगा। जिसके फलस्वरूप वर्ष के पूर्वार्द्ध भाग में सत्तारूढ़ सरकार के लिए विशेष चुनौतियों से भरा होगा तथा विपक्ष के बीच जबरदस्त आरोप-प्रत्यारोपों के कारण परस्पर टकराव एवं विरोध बढ़ेंगे। कई स्थलों पर हिंसा की घटनाएँ होने की भी आशंका रहेगी। पंजाब के अधिकांश क्षेत्रों में बिजली एवं पेयजल की कमी, उपभोग्य वस्तुओं की कीमतों में अत्यधिक तेज़ी, भ्रष्टाचार, बेरोज़गारी, कानून-व्यवस्था सम्बन्धी समस्या, लघु एवं मध्यम स्तरीय व्यापारियों तथा आम

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नागरिकों को टैक्स वृद्धि आदि की समस्याओं के कारण वर्तमान कांग्रेस सरकार की प्रतिष्ठा एवं साख को गहरी ठेस पहुँचेगी। आगामी सम्भावित विधानसभा के चुनावों में स्पष्ट बहुमत मिलना संदिग्ध होगा। उपरोक्त क्लिष्ट समस्याओं के बावजूद यह प्रदेश साईंस, कम्प्यूटर टैक्नोलोजी, दूरसंचार, परिवहन, लघु-उद्योगों में श्लाघनीय उन्नति होगी।

जम्मू-कश्मीर—इसकी प्रभाव राशि तुला है। 58वें वर्ष की नई गणतन्त्र दिवस की कुण्डली में सकी प्रभाव राशि (तुला) का लग्न ही उदित हुआ है। राशिस्वामी शुक्र पंचम भाव में राहु-युक्त होकर पड़ा है। उस पर मुंथापति गुरु की गुप्त शत्रु दृष्टि पड़ रही है। ग्रहस्थिति के अनुसार आगामी वर्ष में कश्मीर घाटी की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति गत कुछ वर्षों की अपेक्षा बेहतर होगी। कांग्रेस की गठबन्धन सरकार प्रान्त में पर्यटन, सेब, लकड़ी आदि के वन-उद्योग, रेल-मोटर आदि परिवहन संसाधन, विद्युत, कम्प्यूटर इंजीनियरिंग, दूरसंचार साधन एवं तकनीकी रोज़गार जैसे शाल-गलीचे आदि गर्म वस्त्रों के उद्योगों को प्रोत्साहन देने के लिए विशेष कदम उठाएगी। प्रान्तीय सरकार घाटी में सामाजिक उन्नति के लिए विभिन्न प्रकार की आर्थिक योजनाएं तैयार करेगी। भारत-पाक की शान्ति वार्ताओं को विफल करने की कोशिश में लगे कुछ आतंकवादी संगठन विस्फोटक एवं हिंसक घटनाओं से गतिरोध पैदा करने की कुचेष्टाएँ करेंगे।

हरियाणा—इसकी नाम राशि मिथुन है, परन्तु प्रभाव राशि मीन है। नव्य गणतन्त्र दिवस की कुण्डली में इसकी राशि पर मंगल एवं मुंथा-दोनों की संयुक्त दृष्टियाँ हैं। राशि स्वामी बुध का बुधादित्य योग चतुर्थ भाव में शुभ है। ग्रहयोग अनुसार वर्तमान सत्तारूढ़ सरकार प्रदेश में कृषि एवं लघु व मध्यम स्तरीय उद्योगों की स्थापना के लिए उल्लेखनीय प्रयास करेगी। विद्युत, कृषि, इंजीनियरिंग, शिक्षा, चिकित्सा, जल-संसाधनों, पेयजल, रोज़गार, आवास, निर्माण आदि की समस्याओं से निपटने के लिए बहुमुखी विकास योजनाएँ तैयार करेगी। विद्युत, जल-आपूर्ति, रोज़गार सम्बन्धी क्लिष्ट समस्याओं के बावजूद आगामी वर्ष भवन-निर्माण, बिल्डिंग-मैटीरियल, रोज़गार आदि आर्थिक, शिक्षा, व्यापार-सम्बन्धी राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक विकास होंगे। परन्तु सामान्य प्रजा का प्रशासन तथा पुलिस प्रशासन के प्रति आक्रोश एवं भय की भावना रहेगी।

दिल्ली—नई गणतन्त्र दिवस कुंडली में इसकी प्रभाव राशि मकर पर सू., बु. का शुभ योग बना हुआ है। इस पर शनि की स्वगृही दृष्टि पड़ रही है। ग्रहस्थिति के अनुसार शुभाशुभ दोनों प्रकार के फल होंगे। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत-सी नई Multinational कम्पनीज़ की स्थापना होने से विश्व-व्यापार का केन्द्र बनेगा।

राज्य में परिवहन, सड़क, आधुनिक तकनीक से निर्मित फ्लाई ओवर (Fly-Over) मैट्रो ट्रेन, मैडिकल एवं प्रबन्धनात्मक शिक्षा, प्रोग्रैसिव कम्प्यूटर, इंजीनियरिंग आदि तकनीकी शिक्षाओं आदि के क्षेत्र में विकास हेतु विशेष प्रयास किये जाएंगे। परन्तु प्रदेश की कुछ मौलिक समस्याओं जैसे विद्युत, मंहगाई, भ्रष्टाचार, आवास, पेयजल, व्यापारी प्रतिष्ठानों पर सीलिंग एवं पुनर्वासादि की समस्याएँ सत्तारूढ़ राज्य सरकार की साख एवं प्रतिष्ठा के लिए अत्यधिक क्षतिकारक सिद्ध होगी।

उत्तर प्रदेश—प्रभाव राशि धनु तथा नाम राशि वृष है। गणतन्त्र दि. कुं. में इसकी प्रभाव राशि पर मंगल एवं मुंथा का योग बना हुआ है। ग्रहस्थिति अनुसार प्रदेश में बिगड़ती कानून व्यवस्था, भ्रष्टाचार, बेरोज़गारी, मंहगाई, साम्प्रदायिक उपद्रव एवं राजनीतिक पार्टियों के मध्य टकराव आदि के कारण आन्तरिक अशान्ति होगी, सामान्य प्रजा में आक्रोश व असन्तोष रहे। संभावित विधानसभा चुनावों में सत्तारूढ़ समाजवादी पार्टी को कम सीटें प्राप्त होंगी। नेतृत्व परिवर्तन के प्रबल योग हैं। कांग्रेस पार्टी को अपेक्षाकृत अधिक सफलता प्राप्त होगी। पुनरपि सांझा गठबन्धन सरकार बनने के ही योग हैं।

जैसा कि गतवर्ष की पंचांगदिवाकर २०६३ में स्पष्टत: लिख आए थे कि फर., 2007 ई. तक विपक्षी पार्टियों के आरोप प्रत्याशेयों के बावजूद डॉ. मनमोहन एवं यू.पी.ए. सरकार सफलतापूर्वक अपना कार्यकाल निर्धारित अवधि तक निभाएगी। आगामी वर्ष की ग्रहस्थिति एवं ग्रहगोचर के आधार पर स्पष्टत: संकेत हैं कि आगामी वर्ष भी डॉ. मनमोहन सिंह एवं गठबन्धन (UPA) सरकार विकट चुनौतियों के बावजूद अपना कार्यकाल पूरा कर लेंगे। ऐसे ग्रह योग हैं। भविष्य की भारतीय राजनीति में भी गठबन्धन सरकारों का वर्चस्व रहेगा। उपरोक्त भविष्यवाणियां गोचर ग्रहों के आधार पर अपनी अलपसीमित बुद्धि अनुसार लियिबद्ध की गई। वास्तव में सर्वश्रेष्ठ भविष्यवेत्ता तो स्वयं भगवान् ही हैं—

फलानि ग्रहसंचारेण सूचर्यान्त। को वक्तः तारटम्यस्य वेधसं विना॥

लेख लिपिबद्धः—
भाद्र. शुक्ल द्वादशी, मंगलवार (वामन जयन्ती)
दिनांक : 5 सितम्बर, 2006 ई.

निवेदकः
पं. पन्ना लाल ज्योतिषी
(लेखक—पंचांगदिवाकर), जालन्धर
फोन-0181-2457959

गण्डमूल नक्षत्र शान्ति प्रयोग (भा. टी.)

—व्याख्याकार—पण्डित पन्ना लाल पंचांगकर्त्ता

अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा-मूला एवं रेवती—सभी छः गण्डमूलक नक्षत्रों पर छपी अत्यन्त उपयोगी पुस्तक जिसमें नक्षत्र, ग्रहों के आवाहन, पूजन, हवन, दान आदि की व्याख्या शास्त्र विधि-विधान के साथ एवं हिन्दी व्याख्या सहित दी गई है। गण्डमूल के सभी छः नक्षत्रों पर ऐसी उपयोगी पुस्तक पहिले आपने नहीं देखी होगी। कर्मकाण्डी पण्डितों एवं नव-विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त लाभदायक पुस्तक है। **मूल्य 35 रूपये।**

कुछ अन्य नवीन प्रकाशन

- चातुवार्षिक श्राद्ध पद्धति 15/-
- शिव मन्त्रावली 100/-
- अनिष्ट ग्रहों के उपयोगी उपाये 100/-
- कार्तिक माहात्म 25/-
- नवग्रह पूजा विधान 25/-
- फलित ज्योतिष (पंजाबी भाषा में) 250/-
- आदित्य हृदय स्तोत्र 8/-
- दुर्गा सप्तशती (कविता रुपान्तर) 35/-
- श्रीमद्भगवद्गीता (कविता रूपान्तर) 35/-

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यादि ग्रहों का राशि प्रवेश, वक्री-मार्गी एवं उदयास्त घण्टे-मिन्टों में (सन् 2007-08 ई.)

सूर्य राशि प्रवेश

ता. मास	राशि	घं. मिं.	ता. मास	राशि	घं. मिं.
14 जन.	मकर	18/07	17 सितं.	कन्या	11/07
13 फर.	कुम्भ	7/06	17 अक्तू.	तुला	23/05
14 मार्च	मीन	27/59	16 नवं.	वृश्चिक	22/51
14 अप्रै.	मेष	12/28	16 दिसं.	धनु	13/27
15 मई	वृष	09/18	14 जन.(08)	मकर	24/07
15 जून	मिथुन	15/53	13 फर.	कुम्भ	13/05
16 जुला.	कर्क	26/44	14 मार्च	मीन	09/57
17 अग.	सिंह	11/09			

मंगल राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मकर में)

29 मार्च	कुम्भ	17/15	16 सितं.	मिथुन	21/37
7 मई	मीन	21/08	15 नवं.	वक्री	13/54
16 जून	मेष	20/21	31 जन. (08)	मार्गी	4/05
29 जुला.	वृष	8/29			

बुध राशि प्रवेश (संवतारम्भ में कुम्भ में)

7 अप्रै.	मीन	8/24	12 अक्तू.	वक्री	09/18
24 अप्रै.	मेष	12/39	30 अक्तू.	व. कन्या	17/06
8 मई	वृष	18/26	2 नवं.	मार्गी	04/36
24 मई	मिथुन	19/51	4 नवं.	तुला	17/52
16 जून	वक्री	05/11	27 नवं.	वृश्चिक	21/27
10 जुला.	मार्गी	07/40	16 दिसं.	धनु	24/36
1 अग.	कर्क	17/46	4 जन. (08)	मकर	17/26
16 अग.	सिंह	17/32	28 जन.	वक्री	25/58
1 सितं.	कन्या	24/31	19 फर.	मार्गी	08/38
22 सितं.	तुला	16/02	10 मार्च	कुम्भ	14/29
			30 मार्च	मीन	13/35

गुरु राशि प्रवेश (संवतारम्भ में वृश्चिक में)

6 अप्रै.	वक्री	06/54	22 नवं.	धनु	05/03
7 अग.	मार्गी	07/37			

शुक्र राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मेष में)

7 अप्रै.	वृष	04/30	27 जुला.	वक्री	22/55
2 मई	मिथुन	27/23	19 अग.	कर्क	19/18
30 मई	कर्क	22/40	8 सितं.	मार्गी	21/46
3 जुला.	सिंह	27/24	29 सितं.	सिंह	24/27

शुक्र राशि प्रवेश

ता. मास	राशि	घं. मिं.
3 नवं.	कन्या	09/11
30 नवं.	तुला	14/17
25 दिसं.	वृश्चिक	23/37
19 जन. (08)	धनु	15/39
12 फर.	मकर	24/42
8 मार्च	कुम्भ	07/23
1 अप्रै.	मीन	14/00

शनि राशि प्रवेश

(संवतारम्भ से कर्क में वक्री)

20 अप्रै.	मार्गी	02/56
16 जुला.	सिंह	04/41
19 दिसं.	वक्री	19/40

राहु

(संवतारम्भ से कुम्भ में)

सारा संवत् कुम्भ राशि में संचार करेगा।

केतु

(संवतारम्भ से सिंह में)

सारा संवत् सिंह राशि में संचार करेगा।

यूरेनस

पूरा संवत् कुम्भ राशि में संचार करेगा।

नैपच्यून

सम्पूर्ण संवत् मकर राशि में संचार करेगा।

प्लूटो

सम्पूर्ण संवत् धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रहों का वक्री-मार्गी

मंगल

15 नवं.	वक्री	13/54
31 जन. (08)	मार्गी	4/05

बुध

16 जून	वक्री	05/11
10 जुला.	मार्गी	07/40
12 अक्तू.	वक्री	09/18
2 नवं.	मार्गी	04/36
28 जन. (08)	वक्री	25/58
19 फर.	मार्गी	08/38

गुरु

(संवतारम्भ में वक्री)

6 अप्रै.	वक्री	06/54
7 अग.	मार्गी	07/37

शुक्र

27 जुला.	वक्री	22/55
8 सितं.	मार्गी	21/46

शनि

(संवतारम्भ में वक्री)

20 अप्रै.	मार्गी	02/56
19 दिसं.	वक्री	19/40

संवत् के अन्त तक वक्री रहेगा।

यूरेनस

23 जून	वक्री	20/13
24 नवं.	मार्गी	15/47

नैपच्यून

25 मई	वक्री	06/40
31 अक्तू.	मार्गी	25/41

प्लूटो

1 अप्रै.	वक्री	04/12
7 सितं.	मार्गी	20/30
2 अप्रै. (08)	वक्री	14/46

ग्रहों का उदय-अस्त

मंगल

सम्पूर्ण वर्ष उदय रहेगा।

बुध

20 अप्रै.	पूर्वेऽस्त	24/35
14 मई	पश्चिमोदय	11/45
20 जून	व. पश्चिमास्त	14/50
7 जुला	व. पूर्वोदय	15/23
3 अग	पूर्वेऽस्त	23/50
30 अग.	पश्चिमोदय	8/50
18 अक्तू.	व. पश्चिऽस्त	12/25
30 अक्तू.	व पूर्वोदय	05/50
24 नवं.	पूर्वेऽस्त	08/42
8 जन.(08)	पश्चिमोदय	24/15
31 जन.	व पश्चिऽस्त	19/05
12 फर.	व पूर्वोदय	22/37
3 अप्रै.	पूर्वेऽस्त	11/29

गुरु

10 दिसं.	पश्चि. अस्त	16/30
6 जन. (08)	पूर्व उदय	5/45

शुक्र

7 अग.	पश्चि. अस्त	28/40
24 अग.	पूर्व उदय	04/45

शनि

4 अग.	पश्चि. अस्त	05/10
8 सितं.	पूर्व उदय	26/12

अंशात्मक युतियां-2007-08 ई.

31 मार्च = बुध-राहु (कुम्भ)
24 अप्रै. = मंग-राहु (कुम्भ)
3 मई = सूर्य-बुध (मेष)
28 जून = सूर्य-बुध (मिथुन)
1 जुला. = शुक्र-शनि (कर्क)
13 अग. = शुक्र-शनि (सिंह)
16 अग. = सूर्य-बुध (कर्क)
18 अग. = सूर्य-शुक्र (सिंह)
22 अग. = सूर्य-शनि (सिंह)
23 अग. = बुध-केतु (सिंह)
30 अग. = सूर्य-केतु (सिंह)
12 अक्तू. = शनि-केतु (सिंह)
14 अक्तू. = शुक्र-शनि (सिंह)
24 अक्तू. = सूर्य-बुध (तुला)
17 दिसं. = सूर्य-बुध (धनु)
23 दिसं. = सूर्य-गुरु (धनु)
21 दिसं. = बुध-गुरु (धनु)
1 फर. 08 = गुरु-शुक्र (धनु)
17 फर. 08 = सूर्य-राहु (कुंभ)
26 फर. = बुध-शुक्र (मकर)
10 मार्च = शुक्र-राहु (कुम्भ)
12 मार्च = बुध-राहु (कुम्भ)
24 मार्च = बुध-शुक्र (कुम्भ)

दृष्टि-सम्बन्ध

- 16 जून से 15 जुला. मध्य मंगल-शनि के मध्य चतुर्थ-दशम दृष्टि सम्बन्ध
- 22 नवं. से 10 अप्रै., 08 तक मंगल-गुरु मध्ये दृष्टि सम्बन्ध
- 29 जुला. से 15 सितं. तक मंगल-गुरु मध्ये समसप्तक योग
- 29 जुला. से 15 सितं. तक मं.-श. मध्ये पुनः ४-१० दृष्टि सम्बन्ध
- 17 अग. से 1 सितं. तक सिंह राशि में चतुर्ग्रही योग—सू., बु., श., के.।

ग्रहों का नक्षत्र-चरण प्रवेश संवत् २०६४ वि.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों का नक्षत्र–चरण प्रवेश–संवत् २०६४ वि.

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

2007 ई.	नक्षत्र	चरण
21 मार्च	उ.भा. (2)	
25 मार्च	उ.भा. (3)	
28 मार्च	उ.भा. (4)	
31 मार्च	रेव (1)	23/05
4 अप्रै.	रेव. (2)	
7 अप्रै.	रेव. (3)	
10 अप्रै.	रेव. (4)	
14 अप्रै.	अश्वि 1 मेष	12/28
17 अप्रै.	अश्वि (2)	
21 अप्रै.	अश्वि (3)	
24 अप्रै.	अश्वि (4)	
28 अप्रै.	भर. (1)	04/13
1 मई	भर. (2)	
4 मई	भर. (3)	
8 मई	भर. (4)	
11 मई	कृति (1)	22/28
15 मई	कृति (2) वृष	9/18
18 मई	कृति. (3)	
22 मई	कृति. (4)	
25 मई	रोहि. (1)	18/35
29 मई	रोहि. (2)	
1 जून	रोहि. (3)	
5 जून	रोहि. (4)	
8 जून	मृग (1)	16/32
12 जून	मृग. (2)	
15 जून	मृग (3) मिथु.	15/53
18 जून	मृग. (4)	
22 जून	आर्द्रा (1)	15/27
25 जून	आर्द्रा (2)	
29 जून	आर्द्रा (3)	
2 जुला.	आर्द्रा (4)	
6 जुला.	पुर्न (1)	15/07
9 जुला.	पुर्न. (2)	
13 जुला.	पुर्न. (3)	

2007 ई.	नक्षत्र	चरण
16 जुला.	पुर्न 4 कर्क	26/44
20 जुला.	पुष्य (1)	14/34
23 जुला.	पुष्य (2)	
27 जुला.	पुष्य (3)	
30 जुला.	पुष्य (4)	
3 अग.	आश्ले. (1)	13/32
6 अग.	आश्ले. (2)	
10 अग.	आश्ले. (3)	
13 अग.	आश्ले. (4)	
17 अग.	मघा 1 सिंह	11/09
20 अग.	मघा. (2)	
24 अग.	मघा. (3)	
27 अग.	मघा. (4)	
31 अग.	पू.फा. (1)	7/11
3 सितं.	पू.फा. (2)	
7 सितं.	पू.फा. (3)	
10 सितं.	पू.फा. (4)	
13 सितं.	उ.फा. (1)	25/02
17 सितं.	उ.फा. 2 क.	11/07
20 सितं.	उ.फा. (3)	
24 सितं.	उ.फा. (4)	
27 सितं.	हस्त (1)	16/34
30 सितं.	हस्त (2)	
4 अक्तू.	हस्त (3)	
7 अक्तू.	हस्त (4)	
11 अक्तू.	चित्रा (1)	05/34
14 अक्तू.	चित्रा (2)	
17 अक्तू.	चित्रा 3 तुला	23/05
21 अक्तू.	चित्रा (4)	
24 अक्तू.	स्वा. (1)	16/03
27 अक्तू.	स्वा. (2)	
31 अक्तू.	स्वा. (3)	
3 नवं.	स्वा. (4)	

2007-08 ई.	नक्षत्र	चरण
6 नवं.	विशा. (1)	24/14
10 नवं.	विशा. (2)	
13 नवं.	विशा. (3)	
16 नवं.	विशा. 4 वृश्चि.	22/51
20 नवं.	अनु. (1)	6/11
23 नवं.	अनु. (2)	
26 नवं.	अनु. (3)	
29 नवं.	अनु. (4)	
3 दिसं.	ज्ये. (1)	10/34
6 दिसं.	ज्ये. (2)	
9 दिसं.	ज्ये. (3)	
13 दिसं.	ज्ये. (4)	
16 दिसं.	मूले 1 धनु.	13/27
19 दिसं.	मूल. (2)	
22 दिसं.	मूल. (3)	
26 दिसं.	मूल. (4)	
29 दिसं.	पूषा. (1)	15/44
1 जन. (08)	पू.षा. (2)	
5 जन.	पूषा. (3)	
8 जन.	पूषा. (4)	
11 जन.	उ.षा. (1)	17/38
14 जन.	उ.षा. 2 मक.	24/07
18 जन.	उ.षा. (3)	
21 जन.	उ.षा. (4)	
24 जन.	श्रव. (1)	19/58
28 जन.	श्रव. (2)	
31 जन.	श्रव. (3)	
3 फर.	श्रव. (4)	
6 फर.	धनि. (1)	23/05
10 फर.	धनि. (2)	
13 फर.	धनि. (3) कुंभे	13/05
16 फर.	धनि. (4)	
19 फर.	शत. (1)	27/34

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

2008 ई.	नक्षत्र	चरण
23 फर.	शत. (2)	
26 फर.	शत. (3)	
29 फर.	शत. (4)	
4 मार्च	पू.भा. (1)	9/55
7 मार्च	पू.भा. (2)	
10 मार्च	पू.भा. (3)	
14 मार्च	पू.भा. 4 मीने	9/57
17 मार्च	उ.भा. (1)	18/18
21 मार्च	उ.भा. (2)	
24 मार्च	उ.भा. (3)	
27 मार्च	उ.भा. (4)	
31 मार्च	रेव. (1)	5/12
3 अप्रै.	रेव. (2)	
6 अप्रै.	रेव. (3)	
10 अप्रै.	रेव. (4)	

मंगल नक्षत्र प्रवेश

2008 ई.	नक्षत्र	चरण
3 मार्च	श्रव. (1)	12/24
7 मार्च	श्रव. (2)	
12 मार्च	श्रव. (3)	
16 मार्च	श्रव. (4)	
20 मार्च	धनि. (1)	24/14
25 मार्च	धनि. (2)	
29 मार्च	धनि. 3 कुंभे	17/15
2 अप्रै.	धनि. (4)	
7 अप्रै.	शते. (1)	9/55
11 अप्रै.	शते. (2)	
15 अप्रै.	शते. (3)	
20 अप्रै.	शते. (4)	
24 अप्रै.	पू.भा. (1)	19/07
28 अप्रै.	पू.भा. (2)	
3 मई	पू.भा. (3)	
7 मई	पूभा. 4 मीन	21/08
12 मई	उ.भा. (1)	6/10
16 मई	उ.भा. (2)	

मंगल नक्षत्र प्रवेश

2007 ई.	नक्षत्र	चरण
20 मई	उ.भा. (3)	
25 मई	उ.भा. (4)	
29 मई	रेवती (1)	21/34
3 जून	रेवती (2)	
7 जून	रेवती (3)	
12 जून	रेवती (4)	
16 जून	अश्वि 1 मेष	20/21
21 जून	अश्वि (2)	
5 जुला.	भरणी (1)	6/43
9 जुला.	भरणी (2)	
14 जुला.	भरणी (3)	
19 जुला.	भरणी (4)	
24 जुला.	कृति (1)	10/00
29 जुला.	कृति 2 वृष	8/29
3 अग.	कृति. (3)	
8 अग.	कृति. (4)	
13 अग.	रोहिणी (1)	15/19
18 अग.	रोहिणी (2)	
24 अग.	रोहिणी (3)	
29 अग.	रोहिणी (4)	
4 सितं.	मृगे (1)	16/25
10 सितं.	मृगे. (2)	
16 सितं.	मृगे. 3 मिथु.	21/37
23 सितं.	मृगे. (4)	
30 सितं.	आर्द्रा (1)	14/58
8 अक्तू.	आर्द्रा (2)	
17 अक्तू.	आर्द्रा (3)	
30 अक्तू.	आर्द्रा (4)	
15 नवं.	वक्री	13/54
1 दिसं.	आर्द्रा (3)	12/57
12 दिसं.	आर्द्रा (2)	19/51
21 दिसं.	आर्द्रा (1)	14/46
29 दिसं.	मृग (4)	28/08

मंगल नक्षत्र प्रवेश

2008 ई.	नक्षत्र	चरण
31 जन. (08) को मार्गी		4/05
6 मार्च	आर्द्रा (1)	15/02
15 मार्च	आर्द्रा. (2)	
24 मार्च	आर्द्रा. (3)	
31 मार्च	आर्द्रा. (4)	
8 अप्रै.	पुर्न (1)	8/22

बुध नक्षत्र प्रवेश

2 मार्च	धनि. (3)	15/45
8 मार्च को मार्गी		10/26
14 मार्च	धनि. (4)	17/00
19 मार्च	शत. (1)	9/00
22 मार्च	शत. (2)	
25 मार्च	शत. (3)	
28 मार्च	शत. (4)	
31 मार्च	पू.भा. (1)	8/14
2 अप्रै.	पू.भा. (2)	
4 अप्रै.	पू.भा. (3)	
7 अप्रै.	पू.भा. 4 मीन	8/24
9 अप्रै.	उ.भा. (1)	11/59
11 अप्रै.	उ.भा. (2)	
13 अप्रै.	उ.भा. (3)	
15 अप्रै.	उ.भा. (4)	
17 अप्रै.	रेवती (1)	10/20
19 अप्रै.	रेवती (2)	
20 अप्रै.	रेवती (3)	
22 अप्रै.	रेवती (4)	
24 अप्रै.	अश्वि 1 मेष	12/39
26 अप्रै.	अश्वि. (2)	
27 अप्रै.	अश्वि. (3)	
29 अप्रै.	अश्वि. (4)	
30 अप्रै.	भर. (1)	24/39
2 मई	भर. (2)	
4 मई	भर. (3)	
5 मई	भर. (4)	

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बुध नक्षत्र प्रवेश

2007 ई.	नक्षत्र	चरण
7 मई	कृति. (1)	5/16
8 मई	कृति 2 वृष	18/26
10 मई	कृति (3)	
11 मई	कृति (4)	
13 मई	रोहि (1)	13/01
15 मई	रोहि. (2)	
16 मई	रोहि. (3)	
18 मई	रोहि. (4)	
20 मई	मृग. (1)	15/37
22 मई	मृग. (2)	
24 मई	मृग 3 मिथु.	19/51
26 मई	मृग. (4)	
29 मई	आर्द्रा (1)	18/56
1 जून	आर्द्रा (2)	
5 जून	आर्द्रा (3)	
11 जून	आर्द्रा (4)	03/54
16 जून	वक्री	05/11
21 जून	आर्द्रा (3)	09/28
27 जून	आर्द्रा (2)	23/55
3 जुला.	आर्द्रा (1)	26/07
10 जुला.	मार्गी	07/40
15 जुला.	आर्द्रा (2)	
20 जुला.	आर्द्रा (3)	
23 जुला.	आर्द्रा (4)	
26 जुला.	पुर्न. (1)	12/44
28 जुला.	पुर्न (2)	
30 जुला.	पुर्न (3)	
1 अग.	पुर्न 4 कर्क	17/46
3 अग.	पुष्य (1)	13/00
5 अग.	पुष्य (2)	
6 अग.	पुष्य (3)	
8 अग.	पुष्य (4)	
10 अग.	आश्ले. (1)	05/10
11 अग.	आश्ले. (2)	

2007 ई.	नक्षत्र	चरण
13 अग.	आश्ले. (3)	
14 अग.	आश्ले. (4)	
16 अग.	मघा 1 सिंह	17/32
18 अग.	मघा (2)	
19 अग.	मघा (3)	
21 अग.	मघा (4)	
23 अग.	पू.फा. (1)	14/05
25 अग.	पू.फा. (2)	
27 अग.	पू.फा. (3)	05/30
28 अग.	पू.फा. (4)	
30 अग.	उ.फा. (1)	25/03
1 सितं.	उ.फा. 2 कन्या	24/31
3 सितं.	उ.फा. (3)	
5 सितं.	उ.फा. (4)	
8 सितं.	हस्त (1)	6/25
10 सितं.	हस्त (2)	
12 सितं.	हस्त (3)	
14 सितं.	हस्त (4)	
17 सितं.	चित्रा (1)	11/46
19 सितं.	चित्रा (2)	
22 सितं.	चित्रा 3 तुला	16/02
25 सितं.	चित्रा (4)	
28 सितं.	स्वा. (1)	13/29
1 अक्तू.	स्वा. (2)	
6 अक्तू.	स्वा. (3)	
12 अक्तू.	वक्री	09/18
17 अक्तू.	व. स्वा. (2)	13/03
20 अक्तू.	स्वा. (1)	27/08
23 अक्तू.	चित्रा (4)	20/58
26 अक्तू.	चित्रा (3)	15/27
30 अक्तू.	चित्रा 2 कन्या	17/06
2 नवं.	मार्गी	4/36
4 नवं.	चित्रा 3 तुला	17/52
8 नवं.	चित्रा (4)	

2007-08 ई.	नक्षत्र	चरण
11 नवं.	स्वा. (1)	26/30
14 नवं.	स्वा. (2)	
16 नवं.	स्वा. (3)	
19 नवं.	स्वा. (4)	
21 नवं.	विशा. (1)	10/49
23 नवं.	विशा. (2)	
25 नवं.	विशा. (3)	
27 नवं.	विशा. 4 वृश्चि	21/27
29 नवं.	अनु. (1)	24/33
1 दिसं.	अनु. (2)	
4 दिसं.	अनु. (3)	
6 दिसं.	अनु. (4)	
8 दिसं.	ज्ये. (1)	12/46
10 दिसं.	ज्ये. (2)	
12 दिसं.	ज्ये. (3)	
14 दिसं.	ज्ये. (4)	
16 दिसं.	मूला 1 धनु	24/36
18 दिसं.	मूला (2)	
21 दिसं.	मूला (3)	
23 दिसं.	मूला (4)	
25 दिसं.	पू.षा. (1)	10/17
27 दिसं.	पू.षा. (2)	
29 दिसं.	पू.षा. (3)	
31 दिसं.	पू.षा. (4)	
2 जन. 08	उ.षा. (1)	16/21
4 जन.	उ.षा. 2 मक.	17/27
6 जन.	उ.षा. (3)	
8 जन.	उ.षा. (4)	
10 जन.	श्रव. (1)	21/21
12 जन.	श्रव. (2)	
14 जन.	श्रव. (3)	
17 जन.	श्रव. (4)	
19 जन.	धनि. (1)	22/20
22 जन.	धनि. (2)	
28 जन.	वक्री	25/58

बुध नक्षत्र प्रवेश

2008 ई.	नक्षत्र	चरण
3 फर.	धनि. (1)	25/32
6 फर.	व. श्रव. (4)	24/25
9 फर.	श्रव. (3)	
13 फर.	श्रव. (2)	06/45
19 फर.	मार्गी	08/38
25 फर.	श्रव. (3)	
1 मार्च	श्रव. (4)	
4 मार्च	धनि. (1)	20/28
7 मार्च	धनि. (2)	
10 मार्च	धनि. 3 कुंभ	14/29
13 मार्च	धनि. (4)	
15 मार्च	शत. (1)	15/19
17 मार्च	शत. (2)	
20 मार्च	शत. (3)	
22 मार्च	शत. (4)	
24 मार्च	पू.भा. (1)	13/20
26 मार्च	पू.भा. (2)	
28 मार्च	पू.भा. (3)	
30 मार्च	पू.भा. 4 मीन	13/35
1 अप्रै.	उ.भा. (1)	11/11
3 अप्रै.	उ.भा. (2)	
4 अप्रै.	उ.भा. (3)	
7 अप्रै.	उ.भा. (4)	
8 अप्रै.	रेव. (1)	15/13

गुरु नक्षत्र प्रवेश
(संवतारम्भ से वृश्चिक में)

6 अप्रै.	गुरू वक्री	06/54
17 मई	व ज्ये. (2)	14/01
13 जून	ज्ये. (1)	16/12
16 जुला.	अनु. (4)	19/31
7 अग.	मार्गी	07/39
28 अग.	ज्ये. (1)	19/06
29 सितं.	ज्ये. (2)	09/49

गुरु नक्षत्र प्रवेश

2007-08 ई.	नक्षत्र	चरण
19 अक्तू.	ज्ये. (3)	23/46
6 नवं.	ज्ये. (4)	09/02
22 नवं.	मूला 1 धनु	05/03
7 दिसं.	मूला (2)	05/28
21 दिसं.	मूला (3)	20/27
5 जन.(08)	मूला (4)	09/54
20 जन.	पू.षा. (1)	05/20
4 फर.	पू.षा. (2)	16/06
21 फर.	पू.षा. (3)	08/20
11 मार्च	पू.षा. (4)	11/04
5 अप्रै.	उ.षा. (1)	26/15

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

12 मार्च	अश्वि 1 मेष	27/49
15 मार्च	अश्वि (2)	21/47
18 मार्च	अश्वि (3)	15/56
21 मार्च	अश्वि (4)	10/15
24 मार्च	भर. (1)	04/44
26 मार्च	भर. (2)	23/25
29 मार्च	भर. (3)	18/20
1 अप्रै.	भर. (4)	13/30
4 अप्रै.	कृति. (1)	08/52
7 अप्रै.	कृति 2 वृष	04/30
9 अप्रै.	कृति. (3)	
12 अप्रै.	कृति (4)	
15 अप्रै.	रोहि. (1)	17/02
18 अप्रै.	रोहि. (2)	
21 अप्रै.	रोहि. (3)	
24 अप्रै.	रोहि. (4)	
27 अप्रै.	मृग. (1)	06/16
30 अप्रै.	मृग. (2)	04/35
2 मई	मृग 3 मिथुन	27/23
5 मई	मृग. (4)	
8 मई	आर्द्रा (1)	26/32
11 मई	आर्द्रा (2)	
15 मई	आर्द्रा (3)	

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2007 ई.	नक्षत्र	चरण
18 मई	आर्द्रा (4)	
21 मई	पुर्न (1)	08/34
24 मई	पुर्न (2)	
27 मई	पुर्न (3)	
30 मई	पुर्न (4) कर्क	22/40
3 जून	पुष्य (1)	05/57
6 जून	पुष्य (2)	
9 जून	पुष्य (3)	
13 जून	पुष्य (4)	
17 जून	आश्ले. (1)	06/59
20 जून	आश्ले. (2)	
25 जून	आश्ले. (3)	
29 जून	आश्ले. (4)	
3 जुला.	मघा 1 सिंह	27/24
9 जुला.	मघा (2)	
16 जुला.	मघा (3)	
27 जुला.	वक्री	22/55
7 अग.	मघा (2)	20/07
14 अग.	मघा (1)	08/35
19 अग.	आश्ले. 4 कर्क	19/18
25 अग.	आश्ले. (3)	12/23
2 सितं.	आश्ले. (2)	23/15
8 सितं.	मार्गी	21/46
14 सितं.	आश्ले. (3)	
23 सितं.	आश्ले. (4)	
29 सितं.	मघा 1 सिंह	24/27
4 अक्तू.	मघा (2)	
9 अक्तू.	मघा (3)	
13 अक्तू.	मघा (4)	
17 अक्तू.	पू.फा. (1)	05/06
20 अक्तू.	पू.फा. (2)	
24 अक्तू.	पू.फा. (3)	
27 अक्तू.	पू.फा. (4)	
30 अक्तू.	उ.फा. (1)	22/12

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2007-08 ई.	नक्षत्र	चरण
3 नवं.	उ.फा. 2 कन्या	09/11
6 नवं.	उ.फा. (3)	
9 नवं.	उ.फा. (4)	
12 नवं.	हस्त (1)	18/52
15 नवं.	हस्त (2)	
18 नवं.	हस्त (3)	
21 नवं.	हस्त (4)	
24 नवं.	चित्रा (1)	18/28
27 नवं.	चित्रा (2)	
30 नवं.	चित्रा 3 तुला	14/17
3 दिसं.	चित्रा (4)	
6 दिसं.	स्वा. (1)	08/04
9 दिसं.	स्वा. (2)	
11 दिसं.	स्वा. (3)	
14 दिसं.	स्वा. (4)	
17 दिसं.	विशा. (1)	15/09
20 दिसं.	विशा. (2)	
23 दिसं.	विशा. (3)	
25 दिसं.	विशा. 4 वृश्चि	23/37
28 दिसं.	अनु. (1)	18/00
31 दिसं.	अनु. (2)	
3 जन. (08)	अनु. (3)	
5 जन.	अनु. (4)	
8 जन.	ज्ये. (1)	17/46
11 जन.	ज्ये. (2)	
14 जन.	ज्ये. (3)	
16 जन.	ज्ये. (4)	
19 जन.	मूला 1 धनु	15/39
22 जन.	मूला (2)	
24 जन.	मूला (3)	
27 जन.	मूला (4)	
30 जन.	पू.षा. (1)	12/13
2 फर.	पू.षा. (2)	
4 फर.	पू.षा. (3)	
7 फर.	पू.षा. (4)	

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2008 ई.	नक्षत्र	चरण
10 फर.	उ.षा. (1)	07/52
12 फर.	उ.षा. 2 मक.	24/42
15 फर.	उ.षा. (3)	
18 फर.	उ.षा. (4)	
20 फर.	श्रव. (1)	27/05
23 फर.	श्रव. (2)	
26 फर.	श्रव. (3)	
29 फर.	श्रव. (4)	
2 मार्च	धनि. (1)	21/59
5 मार्च	धनि. (2)	
8 मार्च	धनि. 3 कुंभ	07/23
10 मार्च	धनि. (4)	
13 मार्च	शत.(1)	16/48
16 मार्च	शत. (2)	
18 मार्च	शत. (3)	
21 मार्च	शत. (4)	
24 मार्च	पू.भा. (1)	11/43
27 मार्च	पू.भा. (2)	
29 मार्च	पू.भा. (3)	
1 अप्रै.	पू.भा. 4 मीन	14/00
4 अप्रै.	उ.भा. (1)	6/46
6 अप्रै.	उ.भा. (2)	
9 अप्रै.	उ.भा. (3)	

शनि नक्षत्र प्रवेश
(संवतारम्भ से कर्क में)

20 अप्रै.	मार्गी	02/56
13 जून	आश्ले. (4)	11/25
16 जुला.	मघा 1 सिंह	04/41
12 अग.	मघा (2)	12/36
7 सितं.	मघा (3)	20/20
5 अक्तू.	मघा (4)	25/11
12 नवं.	पू.फा. (1)	08/40
19 दिसं.	वक्री	19/40
26 जन. 08	मघा (4)	19/32
10 मार्च	मघा (3)	16/02

राहु नक्षत्र प्रवेश
(वर्षारम्भ से कुम्भ में)

18 अप्रै.	शत. (4)	23/18
20 जून	शत. (3)	21/05
22 अग.	शत. (2)	18/52
24 अक्तू.	शत. (1)	16/42
26 दिसं.	धनि. (4)	14/00
27 फर.(08)	धनि. (3)	11/59

केतु नक्षत्र प्रवेश

18 अप्रै.	पू.फा. (2)	23/18
20 जून	पू.फा. (1)	21/05
22 अग.	मघा (4)	18/52
24 अक्तू.	मघा (3)	16/42
26 दिसं.	मघा (2)	14/00
27 फर.(08)	मघा (1)	11/59

यूरेनस नक्षत्र प्रवेश
(वर्षारम्भ से कुम्भ में)

24 अप्रै.	पू.भा. (2)	
23 जून	वक्री	20/13
25 अग.	पू.भा. (1)	
24 नवं.	मार्गी	15/47
14 फर. (08)	पू.भा. (2)	
14 अप्रै.	पू.भा. (3)	

नैपच्यून नक्षत्र प्रवेश
(वर्षारम्भ से मकर में)

11 मार्च	धनि. (2)	14/11
25 मई	वक्री	06/40
13 अग.	धनि. (1)	
31 अक्तू.	मार्गी	25/41
12 जन.(08)	धनि. (2)	

प्लूटो नक्षत्र प्रवेश
(वर्षारम्भ से धनु में)

1 अप्रै.	वक्री	04/12
1 जुला.	मूला (1)	
7 सितं.	मार्गी	20/30
8 नवं.	मूला (2)	
17 फर. (08)	मूला (3)	
2 अप्रै.	वक्री	14/46

वि. संवत् २०६४ में विभिन्न सम्वतों का प्रारम्भ

वर्ष का राजा चन्द्र | **वर्ष का मन्त्री शनि**

- वि. संवत् (शर्वरी नामक) २०६४ का शुभारम्भ = १९ मार्च, सोमवार
- कल्पादि से गत वर्ष = 1,97,29,49,107 वर्ष
- सृष्टि का आरम्भ वर्ष = 1,95,58,85,108 वर्ष
- इनमें सतयुग की कुल समयावधि = 172,8000 वर्ष
- त्रेतायुग की कुल समय अवधि = 12,96,000 वर्ष
- द्वापर युग की कुल समय अवधि = 8,64,000 वर्ष
- कलियुग की कुल समय अवधि = 4,32,000 वर्ष
- भोग्य कलि वर्ष (Balance) = 426892 वर्ष
- २०६४ में कलि वर्ष = 5108वां वर्ष (19 अग., रविवार)
- श्री कृष्ण जन्म संवत् = 5243 प्रा., 3 सितं., सोमवार
- सप्तर्षि संवत् 5083 प्रा. = 19 मार्च, सोमवार
- महात्मा बुद्ध सम्वत् 2631 प्रा., = 2 मई, बुधवार
- महावीर निर्वाण संवत् 2533 प्रा. = 9 नवं., शुक्रवार
- सन् ईसवी (क्रिश्चियन) 2007 प्रारम्भ = 1 जनवरी, सोमवार
- सन् ईसवी (क्रिश्चियन) 2008 प्रारम्भ = 1 जनवरी, मंगलवार
- शाका संवत् 1929 प्रा. = 22 मार्च, सन् 2007 ई. गुरुवार
- हिजरी सन् 1428 (मुस्लि॰) प्रा. = 21 जन., 2007 ई., रवि
- फसली सन् 1415 प्रारम्भ = 7 सितम्बर, गुरुवार, 2007 ई.
- बंगाली सन् 1414 प्रारम्भ = 15 अप्रैल, रविवार, 2007 ई.
- नानकशाही संवत् 539 प्रारम्भ = 14 मार्च, बुधवार, 2007 ई.
- खालसा सम्वत् 309 प्रारम्भ = 14 अप्रैल, शनिवार, 2007 ई.
- जय हिन्द संवत् 61वाँ प्रा. = 15 अग. बुधवार, 2007 ई.
- पंचांगदिवाकर' का प्रवेश वर्ष 132वाँ = 19 मार्च, सोमवार, 2007 ई.

देवकार्य (देवपूजा) कैसे करें ?

1. देवपूजा उत्तरमुख होकर और पितृपूजा दक्षिणमुख होकर करना चाहिये।

2. नीला, लाल अथवा काला वस्त्र पहनकर और बिना धोया हुआ वस्त्र पहनकर भगवान् विष्णु की उपासना करने वाला दोषी माना जाता है और उसका पतन होता है।

3. गीले वस्त्रों को पहनकर अथवा दोनों हाथ घुटनों से बाहर करके जो जप, होम और दान किया जाता है, वह सब निष्फल हो जाता है।

4. केस खोलकर आचमन और देवपूजन नहीं करना चाहिये।

5. ताँबा मंगलस्वरूप, पवित्र एवं भगवान् को बहुत प्रिय है। ताँबे के पात्र में रखकर जो वस्तु भगवान् को अर्पण की जाती है, उससे भगवान् को बड़ी प्रसन्नता होती है। इसलिये भगवान् को जल आदि वस्तुएँ ताँबे के पात्र में रखकर अर्पण करनी चाहिये।

6. चाँदी पितरों को तो परमप्रिय है, पर देवकार्य में इसे अशुभ माना गया है। इसलिये देवकार्य में चाँदी को दूर रखना चाहिये।

7. भगवान् की उपासना करते समय दीपक का स्पर्श करने पर हाथ धो लेना चाहिये, अन्यथा दोष लगता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रमुख व्रत-पर्वों का शास्त्रीय निर्णय-वि. संवत् २०६४

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा एवं नवरात्रारम्भ (19 मार्च, सोमवार, 2007 ई.)

हेमाद्रि में **ब्रह्मपुराण** के अनुसार चैत्र महीने के प्रथम दिन शुक्ल पक्ष में सूर्योदय के समय ब्रह्मा जी ने समस्त जगत् को रचा है—

चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि।
शुक्लपक्षे समग्रं तु तदा सूर्योदय सति॥ हेमाद्रौ ब्राह्मोक्ते

यदि दोनों दिन प्रतिपदा में सूर्योदय का समावेश हो अथवा दोनों दिन की प्रतिपदा में सूर्योदय न हो, तो उस स्थिति में पूर्व विद्धा, अर्थात् **अमावस युक्ता** प्रतिपदा को ग्रहण करना चाहिए—

दिन द्वये तद् व्याप्तौअव्याप्तौ वा पूर्वैव ग्राह्या॥ (निर्णयसिन्धु व धर्मसिंधु॥)
पूर्व विद्धैव कर्त्तव्या प्रतिपत्सर्वदा बुधैः (वृद्ध वसिष्ठ)

धर्मसिन्धुकार अनुसार भी यदि चैत्र-शुक्ल प्रतिपदा में सूर्योदय का अभाव रहे, तो पूर्व अर्थात् अमा. विद्धा ही ग्रहण करनी चाहिए।

''तिथि चिन्तामणि'' के मतानुसार यदि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि का क्षय हो जाए, अथवा प्रतिपदा तिथि सूर्योदय कालिक न हो, तो ऐसी स्थिति में **अमावस्या युक्ता** प्रतिपदा में ही नवसम्वत्सर का आरम्भ एवं चैत्र नवरात्र के शुभ कर्त्तव्य-घटस्थापन, देवी पूजन आदि शुभ कृत्य सम्पादित कर लेने चाहिएँ—

''चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सम्वत्सराम्भ च तत्रौदयिकी ग्राह्या। यत्र क्षयवशादमा-युक्तैव लभ्यते, न द्वितीया युता तत्र अमा. विद्धायामपि प्रतिपदि कलश स्थापनादि कार्यम्॥''....[तिथि चिन्तामणि]

भविष्योतर पु. एवं वृद्ध वसिष्ठ जी के मत भी उपरोक्त वाक्यों की पुष्टि करते हैं।

कुछ पौराणिक ग्रंथों में अमा. युक्त चैत्र नवरात्र एवं दुर्गा पूजन, घटस्थापन आदि का निषेध मानते हुए यह कहा है कि यदि प्रतिपदा मात्र १ मुहूर्त्त (२ घड़ी) भी हो, तो भी नवरात्र द्वितीया युक्त ग्रहण करना चाहिए—जैसे देवी पुराण का कथन है—

अमा. युक्त न कर्त्तव्या प्रतिपद् चण्डिकार्चने।
मुहूर्त्त मात्रा कर्त्तव्या द्वितीयायां गुणान्विता॥ (देवीपुराण)

परन्तु प्रस्तुत वर्षारम्भ में द्वितीया के साथ प्रतिपदा के योग का सर्वथा अभाव है।

प्रस्तुत वर्ष **19 मार्च को अमावस** तिथि ४ घड़ी (प्रातः 8:13) तक है, तदुपरान्त प्रतिपदा ५४ घड़ी, ४८ पल तक व्याप्त है, अर्थात् 20 मार्च की प्रातः 4 बजकर 32 मिनट तक रहेगी—*अर्थात् प्रतिपदा तिथि २० मार्च के सूर्योदय से लगभग २ घण्टे ४ मिनट पहिले ही समाप्त हो जाने* ***से क्षय को प्राप्त हुई है।*** उपरोक्त शास्त्र वचनों का ध्यान में रखते हुए **19 मार्च सोमवार को प्रातः 8-15 के बाद नया शर्वरी नामक विक्रमी सम्वत् २०६४ प्रारम्भ होगा।** इसी दिन को संवत् पूजन, पंचांग फल श्रवण, चैत्र (वासन्त) नवरात्र आरम्भ, घटस्थापन, श्रीदुर्गापूजा, दीप स्थापन, ध्वजारोहण आदि शुभ कृत्यों का आरम्भ होगा। घटस्थापन, दीप प्रज्वलन आदि शुभ कार्यों का सम्पादन 19 मार्च सोमवार प्रातः 9 बजकर 20 मिनट से दुपै. 11 बजकर 13 मिनट तक—**अर्थात् वृष लग्न में अथवा अभिजित मुहूर्त्त** काल में करना विशेष प्रशस्त होगा।

सम्वत् के राजा (चन्द्रमा) का निर्णय

उदय व्यापिनी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन जो वार होता है, उसके स्वामी ग्रह को ही वर्षेश (वर्ष का राजा) माना जाता है। यदि प्रतिपदा का क्षय हो, अर्थात् दोनों दिनों में ही सूर्योदय न हो, तो पहिले दिन अमावस युक्ता प्रतिपदा वाले दिन वार के स्वामी को ही वर्ष का राजा मानने का शास्त्र नियम है—

चैत्रे सित प्रतिपदि यो वारोऽर्कोदये स वर्षेशः।
उदय द्वितये पूर्वोनोदय युगलेऽपि पूर्वस्यात्। (ज्योतिर्निबन्ध, निर्णय सिन्धुः)

उपरोक्त शास्त्र वचनानुसार 19 मार्च सोमवार, अमा. विद्धा चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (सोमवार) के **स्वामी ग्रह चन्द्रमा को ही वर्षेष्ट**-अर्थात् सम्वत् का राजा माना जायेगा।

श्री दुर्गाष्टमी (चैत्र शुक्लाष्टमी) (26 मार्च, सोमवार)

भविष्यपुराणानुसार चैत्रशुक्ल अष्टमी को श्री दुर्गाभवानी का प्रादुर्भाव हुआ था॥ ''धर्म सिन्धु'' के अनुसार अष्टमी नवमी विद्धा ग्रहण करनी चाहिए—

''चैत्र शुक्लाष्टमी भवान्या उत्पत्ति॥
तत्र नवमी युता ग्राह्या''॥

इस सम्बन्ध में अन्य स्थान में उल्लिखित है कि शुभ फलों की कामना वाले भक्तों को नवमी युक्ता अष्टमी में श्रीदुर्गा पूजन आदि शुभ कृत्य करने चाहिएँ—

''अष्टम्या नवमी विद्धा कर्त्तव्या फलाकांक्षिभिः॥'' (दीक्षित)

सम्वत् २०६४ में, **ता. 26 मार्च, 2007 ई०, सोमवार को अष्टमी** १२ घड़ी, ४० पल तक व्याप्त है, तदुपरान्त नवमी का संयोग हुआ है। उपरोक्त शास्त्र वचनों के अनुसार श्री दुर्गाष्टमी एवं भवान्युत्पत्ति 26 मार्च, 2007 ई० सोमवार को ही समोचित होगी।

श्री रामनवमी (27 मार्च, मंगलवार)

श्री राम का अवतरण चैत्र शुक्ल नवमी तिथि, पुनर्वसु नक्षत्र एवं मध्यान्ह काल में हुआ था। चैत्र शुक्ल रामनवमी। चैत्र शुक्ल नवम्यां पुनर्वसु-युतायां मध्यान्हे कर्क लग्न राश्यां.....

यदि नवमी दो दिन मध्यान्ह व्यापिनी या दोनों दिन मध्यान्ह काल में व्याप्त न हो, तो उस स्थिति में दूसरे दिन (पर विद्धा नवमी वाले दिन) को ही श्रीरामनवमी का व्रतोत्सवादि करना चाहिए। फिर अष्टमी विद्धा नवमी का त्याग करना चाहिए—

''दिन द्वये मध्याह्नव्याप्त अव्याप्तौ वा परा, अष्टमी विद्धाया निषेधात्॥'' धर्मसिन्धु

प्रस्तुत वर्ष 27 मार्च मंगलवार को चैत्र शुक्ल नवमी १२ घड़ी ५५ पल (दुपै. 11:37 स्टै. टा.)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

तक व्याप्त है तथा नवमी पुनर्वसु युता भी है, जिससे यह महापुण्यतम एवं सर्वमनोकामनापूरक होगी, जिससे इस दिन व्रत, पूजनादि करना विशेष प्रशस्त होगा।

चैत्र मासे नवम्यां तु जातो रामः स्वयं हरिः।
पुनर्वसु ऋक्ष संयुक्ता सा तिथिः सर्वकामदा॥
श्री राम नवमी प्रोक्ता कोटिसूर्य ग्रहाधिका॥ निर्णयसिन्धु

अक्षया तृतीया (19 अप्रैल, गुरूवार)

वैशाख शुक्ल तृतीया तिथि को अक्षया-तृतीया का व्रत-पर्व मनाया जाता है। इस दिन किए गए स्नान, दान, जप-होमादि सभी सत्कर्मों का फल अक्षय अर्थात् अनन्त होता है। यह पूर्वाह्न एवं मध्याह्न व्यापिनी मनानी चाहिए—

वैशाख शुक्ल तृतीया अक्षया तृतीयोच्यते। सा पूर्वाह्न-व्यापिनी ग्राह्या॥ (निर्णयसिन्धु॥)

यदि यह तिथि पूर्वार्द्ध भाग में दोनों दिन में होय, तो तीन मुहूर्त्त (६ घड़ी) से अधिक व्याप्ति की स्थिति में परली (चतुर्थी युता) लें, और यदि तीन मुहूर्त्त से कम हो तो पहिली ही ग्रहण करनी चाहिए। धर्मसिन्धु अनुसार—

''द्वेधा विभक्त दिन पूर्वार्द्धैक देश व्यापिनी दिनद्वये चेत्, त्रिमुहूर्त्ताधिक व्याप्ति सत्त्वे परा॥ त्रिमुहूर्त्त न्यूनत्वे पूर्वा॥'' (धर्मसिन्धु)

प्रस्तुत वर्ष, २० अप्रैल शुक्रवार को वैशाख शुक्ल तृतीया मात्र १ घड़ी, ८ पल तक व्याप्त है, जबकि 19 अप्रैल, गुरूवार को तृतीया तिथि पूर्वाह्न, मध्याह्न एवं अपराह्न व्यापिनी होने के कारण स्नान दान, जप, होमादि तर्पण आदि सत्कृत्यों के लिए प्रशस्त होगी। यद्यपि 20 अप्रै. शुक्रवार को भी तृतीया आंशिक रूप में प्रातःकालीन स्नान, दानादि कार्यों के लिए शुभ होगी।

श्रीपरशुराम जयन्ती भी 19 अप्रैल, गुरुवार को ही ग्राह्य होगी। क्योंकि तृतीया तिथि इसी दिन प्रदोष व्यापिनी है।

गंगा दशहरा (26 मई, शनिवार)

ज्येष्ठ शुक्ल दशमी तिथि गंगा दशहरा कहलाती है। ज्येष्ठ शुक्ला दशमी हस्त नक्षत्र युक्त हो, तो दश प्रकार के पापों को दूर करती, जिससे दशहरा कहलाती है—

ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशमी हस्त संयुता।
हरते दश पापानि तस्मात् दशहरा स्मृता॥ (हेमाद्रिः)

योगाधिक्ये फलाधिक्यात्—इसमें जितने योगों की अधिकता रहे उतना फल अधिक होता है।

ज्येष्ठ अधिक मास होने की स्थिति में, उसी अधिक मास में यह पर्व मनाया जाता है, शुद्ध में नहीं—

''ज्येष्ठे मलमासे सति तन्नैव दशहरा कार्या न तु शुद्धे॥'' (धर्मसिंधु एवं नि. सिन्धु)

'ब्रह्मपुराणानुसार' इस दिन स्नान, दान, जप, व्रत एवं श्रीगंगा पूजन करने से विशेष पुण्यों की प्राप्ति होती है। ज्येष्ठ अधिक मास में गंगा स्नान, पूजनादि करना, शुद्ध ज्येष्ठ की अपेक्षा अधिक फलप्रदायक होता है।

संवत् २०६४ में 26 मई शनिवार को ज्येष्ठ शुक्ल अधिक पक्ष की दशमी तिथि के दिन ही **श्रीगङ्गा दशहरा (हरिद्वार)** का पर्व आयोजित होगा। इस दिन हस्त नक्षत्र का योग सायं 5-48 के बाद व्याप्त रहेगा। जो व्यक्ति हरिद्वार आदि तीर्थ पर न जा सके, वह घर में ही गङ्गाजल युक्ता स्वच्छ जल में मन्त्रपूर्वक, स्नान, आवाहन एवं पूजनादि करे—

मन्त्र—''ॐ नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गङ्गायै नमः॥''

⇨गुरू पूर्णिमा, व्यास पूजा (29 जुलाई, रविवार)⇦

गुरू पूर्णिमा एवं व्यास पूजादि पर्व आषाढ़ पूर्णिमा में सम्पादित किए जाते हैं। परन्तु शास्त्र नियमानुसार सूर्योदय के पश्चात् आषाढ़ पूर्णिमा कम-से-कम तीन मुहूर्त्त (६ घड़ी) अवश्य व्याप्त रहनी चाहिए। यदि आषाढ़ पूर्णिमा तीन मुहूर्त्त से कम हो, तो गुरू पूर्णिमा, व्यास पूजा आदि पर्व पहले दिन, अर्थात् चतुर्दशी विद्धा पूर्णिमा में मनाएँ जाने चाहिएँ, यथा—

''व्यास पूजा निर्णय—अत्रैव व्यास पूजोक्ता। तत्रा त्रिमुहूर्त्ता चेत्परैवेति सन्यास पद्धतौ। त्रिमुहूर्त्ताधिकं ग्राह्यं पर्वक्षौर-प्रणामयोः॥'' —निर्णयसिन्धुः

अर्थात्—व्यास पूजा निर्णय के सम्बन्ध में संन्यास पद्धति में कहा गया है कि पूर्णिमा तीन मुहूर्त्त होय, तो अगली लेनी चाहिए। कारण यह है कि पर्व, क्षौर और प्रणाम (अर्थात् पूजार्चना) में तीन मुहूर्त्त से अधिक तिथि ग्रहण करनी चाहिए।

कोकिला व्रत एवं शिव शयनोत्सव पर्व तो पहिले ही आषाढ़ पूर्णिमा की संध्या एवं सायंकाल में करने का निर्देश है—

''अस्यामेव पौर्णमास्यां प्रदोष व्यापिन्यां श्री शिवस्य शयनोत्सवः॥''—धर्मसिन्धुः

उपरोक्त शास्त्र वचनानुसार **व्यास पूजा, गुरू पूर्णिमा,** कोकिला व्रत (गौरी पूजा), शिवशयनोत्सव आदि पर्वोत्सव, 29 जुलाई रविवार को मनाने ही शास्त्र सम्मत एवं उचित होंगे। ता. 30 जुलाई सोमवार को पूर्णिमा प्रातः केवल १ घड़ी, २० पल अर्थात् प्रातः 6 बजकर 18 मिनट तक व्याप्त रहेगी। उसके पश्चात् श्रावण कृष्ण प्रतिपदा का आरम्भ हो जाएगा। जबकि 29 जुलाई, रविवार को पूर्णिमा प्रातः 7 बजकर 16 मिनट से लेकर पूरा दिन तथा पूरी रात तक व्याप्त रहेगी॥

दूर्वाष्टमी (21 अगस्त, मंगलवार)

भविष्य पुराणानुसार यह व्रत भाद्र. शुक्लाष्टमी को धन-सम्पत्ति, सौभाग्य, दाम्पत्य एवं पुत्र सन्तान सुख की कामना से किया जाता है। शास्त्र-वचनानुसार भा. शु. अष्टमी के समय यदि अगस्त्य तारा का उदय हो चुका हो अथवा कन्या का सूर्य हो, तो शास्त्रानुसार दूर्वाष्टमी पूर्ववर्ती किसी अन्य मास की अष्टमी (भा. कृष्ण या श्रावण शुक्लाष्टमी) में यह व्रत करना चाहिए, जबकि अगस्त्य तारा अदृश्य (अस्तंगत) हो—

सिंहार्के एव कर्त्तव्या न कन्याऽर्के कदाचन।
सिंहस्थे सोत्तमा सूर्येऽनुदिते मुनिसत्तम्॥ स्कंद पुराण
इदं दूर्वा पूजनं व्रतं कन्याऽर्केऽगस्त्योदये च वर्ज्यम्॥ (धर्मसिन्धुः)

''भाद्रपद शुक्लाष्टम्यामगस्त्योदये भाविनि सति पूर्व कृष्ण-अष्टम्यामेव कुर्यादिति हेमाद्रिः।'' निर्णयसिन्धुः

संवत् २०६४ में भाद्र शुक्लाष्टमी एवं भाद्र कृष्णाष्टमी से पूर्व ही, 3 सितम्बर को अगस्त्य तारा का उदय हो चुका है। इस स्थिति में श्रावण शुक्लाष्टमी अर्थात् 21 अगस्त, मंगलवार 2007 ई. को दूर्वाष्टमी व्रत, पूजनादि कृत्य करने शुभ होंगे॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भाद्र. कृष्णाष्टमी = श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत निर्णय

(3 सितम्बर सोमवार, अर्द्ध रात्रि व्यापिनी, रोहिणी योगे
4 सितम्बर, मंगलवार, उदय व्यापिनी)

भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को भगवान् श्रीकृष्ण जन्माष्टमी मनाई जाती है। सिद्धान्त रूप में अर्धरात्रि में व्याप्त रहने वाली अष्टमी तिथि ही अधिक मान्य होती है—

''कृष्ण जन्माष्टमीऽयं निशीथ व्यापिनी ग्राह्या।
पूर्व-दिन एव निशीथ योगे पूर्वा॥'' (धर्मसिन्धु)

सम्वत् २०६४ में **3 सितम्बर 2007 ई.**, सोमवार की रात्रि 9 बजकर 4 मिनट से लेकर आगामी दिवस 4 सितं., मंगलवार की सायं 7 बजकर 8 मिंट तक अष्टमी तिथि व्याप्त रहेगी तथा **रोहिणी नक्षत्र, 3 सितं. की सायं** 7 बजकर 43 मिंट से प्रारम्भ होकर आगामी दिन सायं 6-31 मिंट तक रहेगा। इस प्रकार 3 सितम्बर सोमवार की अर्द्धरात्रि के समय अष्टमी तिथि तथा रोहिणी नक्षत्र, वृष का चन्द्रमा एवं चन्द्रोदय काल (चं. उ. 22/42 रात्रि घं. मिं.) इसी दिन होने से **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी** का व्रत, पूजा, चन्द्र को अर्घ्य दान, झूला-झुलाना, श्री कृष्ण कीर्तन आदि कृत्य करने विशेष प्रशस्त होंगे। रोहिणी का योग होने से इस दिन जयन्ती योग भी रहेगा। 4 सितम्बर, मंगलवार को अष्टमी तिथि तथा रोहिणी संयोग सायं ३० घड़ी ५५ पल, अर्थात् शाम 7 बजकर 31 मिनट तक रहेगा। **अर्द्धरात्रि काल में अष्टमी तिथि और रोहिणी दोनों का अभाव रहेगा।**

ता. 4 सितं. को यद्यपि **सूर्योदय** से लेकर सायं 7 बजकर 8 मिंट तक अष्टमी व्याप्त रहेगी, तदुपरांत अर्द्धरात्रि में नवमी व्याप्त होगी, जिसके फलस्वरूप जन्माष्टमी के व्रत, पूजन, अर्घ्यदान आदि का विशेष अधिक पुण्य लाभ नहीं होगा।

सिद्धान्त ग्रंथों में अधिकांश व्रत-पर्व, त्यौहारों को कर्मकाल विद्यमान तिथि के दिन ही करने के निर्देश दिए गए हैं। यथा—

तत्र सर्वातिथिः यदहः कर्मकाल व्यापिनी सैव ग्राह्या॥ (निर्णयसिन्धुः)

अर्थात् ''जो तिथि कर्म के समय तक जिस दिन रहे, वही ग्रहण करनी चाहिए।''

कर्मणो यस्य कालस्तत् कालव्यापिनी तिथिः।
तस्य कर्माणि कुर्वीत ह्रासवृद्धी न कारणम्॥ (विष्णु धर्मः)

इस प्रकार श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का ***कर्मकाल अर्द्धरात्रि अष्टमी, वृष का चन्द्रमा एवं चन्द्रोदय काल*** *है, क्योंकि उसी समय से पूर्व श्रीकृष्ण के निमित्त व्रत, जन्म कालानन्तर बाल रूप में विशेष पूजा, झूला-झुलाना, चन्द्र को अर्घ्यदान, जागरण-कीर्तन आदि करने का विधान है।*

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के व्रतोत्सव के लिए अर्द्धरात्रि में अष्टमी होना अनिवार्य है। पूर्व दिन अर्द्धरात्रि व्याप्त अष्टमी को छोड़कर यह व्रत, उस दिन करना, जिस दिन आधी रात के समय अष्टमी का अभाव है—किसी प्रकार भी न्याय संगत नहीं लगता। यद्यपि कुछ विद्वानों के अनुसार सप्तमी विद्धा अष्टमी वर्जित मानी जाती है, लेकिन यह वर्जन तभी ग्राह्य है, जबकि अष्टमी दो दिन अर्द्ध रात्रि व्यापिनी हो, या दोनों दिन अर्द्धव्यापिनी न हो।

दिन द्वये अर्धरात्र व्याप्ता व व्याप्तौ वा परैव॥.....(व्रतराज)

जहाँ मुख्य काल विषय में पूर्व दिन ग्रहण करने योग्य तिथि हो, वहाँ पूर्व तिथि ग्रहण करें। दूसरे दिन भी ग्राह्य तिथि हो, तो परा तिथि लेनी, इसमें संदेह नहीं। यदि दोनों दिन पूरी तिथि व्याप्त हो, तो ही युग्म वाक्य से निर्णय करना।

''तत्र पूर्वेद्युरेव मुख्य कालेग्राह्य तिथि सत्त्वे पूर्वैव परत्रैव सत्त्वेपरैवेत्य संदेहः।
उभय यत्रापि पूर्ण व्याप्ति युग्म वाक्य निर्णयः॥'' धर्म सिन्धुः

आगे पुनः **धर्मसिन्धु** अनुसार ही कृष्ण पक्ष में पूर्व विद्धा अष्टमी ग्रहण करनी चाहिए तथा शुक्ल में पूरा विद्धा ग्रहण करें—

व्रत मात्रेऽष्टमी शुक्ल पक्षेपरा कृष्ण पक्षे पूर्वा॥ (धर्म सिन्धुः)

भगवान् श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के व्रत, पूजन, झूला झुलाना, संकीर्तन, जागरण आदि के सम्बन्ध में अधिकांश शास्त्रकारों ने रोहिणी नक्षत्र युक्त, अर्द्ध रात्रि व्यापिनी भाद्र कृष्णाष्टमी को ही ग्राह्य बतलाया है। इस सम्बन्ध में कुछ और शास्त्र-वाक्य उद्धृत किए जाते हैं—

भविष्यपुराण व विष्णुधर्म के अनुसार यदि भाद्र. कृष्ण पक्ष की अष्टमी को आधी रात के समय रोहिणी नक्षत्र होय, तो उसमें भगवान् श्री कृष्ण का व्रत, पूजनादि करने से तीन जन्मों के पाप दूर हो जाते हैं। भविष्यपुराण अनुसार,

अर्धरात्रे तु रोहिण्यां, यदा कृष्णाष्टमी भवेत्। तस्यामभ्यर्चनं शौरेर्हन्ति त्रिजन्मजम्॥

''वसिष्ठ संहिता'' अनुसार यदि रोहिणी युक्त कृष्णाष्टमी आधी रात को उपलब्ध हो, तो वही मुख्य काल कहा जाता है, क्योंकि हरि (भगवान् कृष्ण) स्वयं इसी योग में प्रगट हुए थे—

अष्टमी रोहिणी युक्ता निश्यर्धे दृश्यते यदि।
मुख्यकाल इति ख्यातस्तत्र जातो हरिः स्वयम्॥ (वसिष्ठ संहिता)

'धर्म सिन्धुकार' के अनुसार भी निशीथ-व्यपिनी अष्टमी एवं रोहिणी नक्षत्र योग से पूर्वा तिथि अर्थात् सप्तमी विद्धा अष्टमी ग्रहण करने का अनुरोध किया है—

विद्धाधिकायां पूर्व दिन एवं निशीथात्पूर्वं निशीथे वा रोहिणी योगे पूर्वा॥ (धर्मसिन्धुः)

नारद ऋषि अनुसार—

कार्या विद्धाऽपि सप्तम्या रोहिणी सहिताष्टमी।
तत्रोपवासं कुर्वति तिथ्यान्ते पारणम्॥ नारद

सप्तमी तिथि विद्धा भी हो, तो भी उसमें व्रतोपवास करके, तिथि के अन्त होने पर उसका पारणा करनी चाहिए।

कार्या विद्धापि सप्तम्या रोहिणी सहिताष्टमी॥ (पद्मपुराण)

अर्थात् सप्तमी विद्धा अष्टमी भी यदि रोहिणी युक्त हो, तो उसमें व्रतादि कार्य करने चाहिए।

अग्निपुराण अनुसार तो सप्तमी युक्त अष्टमी, अर्द्धरात्रि काल में यदि रोहिणी नक्षत्र युक्त

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हो, तो वह अष्टमी तब तक पुण्यप्रदायक है, जब तक सूर्य-चन्द्र रहेंगे अर्थात् अक्षय पुण्यप्रदा है।

'गौतमी तन्त्र' में तो अर्ध रात्रिकालीन अष्टमी, यदि रोहिणी नक्षत्र युक्त हो, तो उस तिथि में किया गया व्रतोपवास, जपादि करोड़ों यज्ञों का फल देने वाला होता है। भाद्र कृष्णाष्टमी, रोहिणी नक्षत्र, काल में यदि सोमवार या बुधवार का संयोग हो जाए, तो वह जयन्ती नाम से विख्यात होती है। जन्म-जन्मान्तरों के पुण्यों से ऐसा योग प्राप्त होता है। जिसको जयन्ती-उपवास का सौभाग्य मिलते है, उसके कोटि जन्म कृत पाप नष्ट हो जाते हैं॥

''अष्टमी रोहिणी युक्ता चार्ध रात्रे यदा भवेत्।
उपोष्य तां तिथिं विद्वान् कोटियज्ञ फलं लभेत्॥
सोमाह्नि बुधवासरे वा अष्टमी रोहिणीयुता।
जयन्ती सा समाख्याता सालभ्या पुण्य सञ्चयैः॥''
तस्यामुपोष्य यत्पापं लोकः कोटिभवोद् भवम्।
विमुच्य निवसेद् विप्र वैकुण्ठे विरजे पुरे॥ (गौतमी तन्त्र)

ऐसे और भी बहुत से शास्त्र प्रमाण मिलते हैं, जो कि रोहिणी युक्ता, सप्तमी विद्धा, अर्ध रात्रिव्यापिनी भाद्र. कृष्ण अष्टमी में व्रतोपवास आदि कृत्य करने की शास्त्राज्ञा देते हैं। मीमांसक भट्टोजि दीक्षित के मतानुसार तो अर्द्ध रात्रि व्यापिनी अष्टमी में श्रीकृष्ण जन्म अष्टमी का व्रत करना चाहिए, उस समय रोहिणी नक्षत्र को योग हो अथवा न हो। दूसरे दिन नवमी युक्ता अष्टमी के साथ रोहिणी नक्षत्र का योग अर्थहीन है—

रोहिणी योगाभावेऽपि अर्द्धरात्र व्यापिनी अष्टमी ग्राह्या।
पर दिने नक्षत्र योगः अकिंचित्करः॥

—स्मार्त और वैष्णवों का भेद—

परवर्ती ग्रंथाकारों के अनुसार—पूर्व युक्ता अर्थात् सप्तमी विद्धा अष्टमी को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का व्रत, पूजादि करने वाले धर्मपरायण लोगों को स्मार्त एवं गृहस्थी लोग कहा जाता है, जबकि संन्यासादि धर्म एवं निष्काम व्रत धारण करने वाले वीतरागी लोगों को वैष्णव की संज्ञा दी गई है। उनके लिए सप्तमी विद्धा अष्टमी को न ग्रहण कर नवमी विद्धा अष्टमी का ही व्रतोपासना आदि करने की शास्त्राज्ञा दी गई है—

स्मार्त्तानां गृहिणी पूर्वा पोष्या, निष्काम वनस्थे विधवाभिः वैष्णवैश्च परै वा पोष्या॥
वैष्णवास्तु अर्द्धरात्रि व्यापिनीमपि रोहिणी युतामपि सप्तमी विद्धामष्टमीं परित्यज्य नवमी युतैव ग्राह्या॥ (धर्म सिन्धु)

नवमी युता अष्टमी में श्रीकृष्ण व्रतोपासना करने के सम्बन्ध में भी कुछ ग्रंथों में वचन पाए जाते हैं, उनमें से कुछ निम्नतः उल्लेखनीय हैं, यथा—

वर्जनीया प्रयत्नेन सप्तमी संयुताष्टमी।
स ऋक्षापि न कर्त्तव्या सप्तमी संयुताष्टमी॥ (निर्णयामृत)

पद्म पुराण के अनुसार जिन्होंने श्रावण (भाद्रपद) में रोहिणी नक्षत्र एवं बुधवार या सोमवार युक्त तथा नवमी युक्ता जन्माष्टमी का व्रत किया हो, वोह प्रेतयोनि को प्राप्त हुए अपने पितरों को भी प्रेत योनि से मुक्त कराते हैं—

प्रेतयोनिगतानां तु प्रेतत्वं नाशितं तु तैः। यैः कृता श्रावणे (भाद्रे) मासि अष्टमी रोहिणी युता। किं पुनः बुधवारेण सोमेनापि विशेषतः। किं पुनर्नवमी युक्ता कुलकोट्यास्तु मुक्तिदा॥''

स्कन्दपुराणानुसार भी उदयकालिक अष्टमी को ही ग्राह्य माना गया है, नवमी युक्ता यदि अष्टमी हो तथा बुधवार एवं रोहिणी नक्षत्र का योग भी हो, तो ऐसी जन्माष्टमी सौ वर्षों में भी दुर्लभ, अर्थात् उत्तम फल प्रदायक है।

''उदयेचाष्टमी किंचिन्नवमी सकला यदि। भवते बुध संयुक्ता प्राजापत्यर्क्ष संयुता। अपि वर्षशतेनापि लभ्यतेवाऽथवा न वा'' —(स्कन्द पुराण)

इस प्रकार की उदय व्यापिनी अष्टमी-रात्रिकाल में नवमी युक्ता होने पर भी ग्रहण करने वाले श्रद्धालुओं को वैष्णव कहा जाता है तथा सप्तमी युक्ता अर्द्ध-व्यापिनी अष्टमी को व्रतादि करने वाले श्रद्धालु भक्तों को स्मार्त्त कहा जाता है। ध्यान रहे, कि भगवान श्रीकृष्ण की जन्मभूमि, मथुरा-वृन्दावन में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का व्रत, उत्सव प्रायः उदयकालिक (नवमी युक्ता) अष्टमी में ही मनाया जाता है।

अधिकांश शास्त्रकारों ने अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी को ही व्रतोत्सव, पूजनादि करने की पुष्टि की है; क्योंकि श्रीभागवत पुराण अनुसार भगवान श्री कृष्ण का जन्म अर्धरात्रि (निशीथ व्यापिनी रात्रि) के समय ही हुआ था। यद्यपि कुछ स्थलों पर उदय व्यापिनी (नवमी युता) अष्टमी मनाने के सम्बन्ध में भी शास्त्र-वचन मिलते हैं, परन्तु हमारे मतानुसार धर्मपरायण श्रद्धालुओं को किसी प्रकार के पूर्वाग्रहों में न पड़ते हुए दोनों दिन अष्टमी होने की स्थिति में, पूर्वदिन, अर्धरात्रि व्यापिनी अष्टमी वाले दिन संकल्प सहित व्रत, जप, चन्द्रार्घ्य, झूला-झुलाना, संकीर्तन, स्तोत्र पाठ आदि कृत्य करने चाहिएं। दूसरे दिन अष्टमी तिथि और नक्षत्र के समाप्त होने पर पारणा (उद्यापन) उत्सव करना चाहिए। महर्षि भृगुजी का मत इस सम्बन्ध में द्रष्टव्य है— जन्माष्टमी रोहिणी च शिवरात्रिस्तथैव च।
पूर्व विद्धैव कर्त्तव्या तिथिभान्ते च पारणम्॥ (भृगु)
तिथ्यन्ते चोत्सवान्ते च व्रती कुर्वीत पारणम्॥ (याज्ञ. स्मृति)

अर्धरात्रि व्यापिनी अष्टमी के दिन विधिपूर्वक व्रत, पूजन, चन्द्र अर्घ्य देकर झूला-झुलाना, कीर्तन एवं जागरणादि करके दूसरे पूर्वाह्न में पुनः स्नानादि करके 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' आदि मन्त्रों का जप तथा श्री कृष्ण सम्बन्धी स्तोत्रों का पाठ करना चाहिए। फिर अष्टमी तिथि अथवा जिस नक्षत्र के योग में व्रत किया गया हो, उसकी समाप्ति (अन्त) होने पर पारणा करना चाहिए। यदि अभीष्ट तिथि या नक्षत्रादि के समाप्त होने में विलम्ब हो, अथवा किसी कारणवश असमर्थता हो, तो साधक केवल जल पीकर या फल खाकर पारणा की पूर्ति करें।

अतएवं 3 सितम्बर को व्रत-पूजनादि की दृष्टि से अर्द्धरात्रि व्या. अष्टमी, रोहिणी योग तथा सोमवार भी होने से जयन्ती योग के साथ-साथ अत्युत्कृष्ट फलप्रद योग भी बना है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दूसरे दिन 4 सितं. को केवल सायं तक अष्टमी व रोहिणी का योग बना है। हमारे मतानुसार दोनों दिन यथाशक्ति व्रत, पूजन, श्रीकृष्ण स्तोत्र पाठ, मन्त्र-जप, ध्यानादि करके इन पुण्य सुअवसरों का लाभ उठाना चाहिए। क्योंकि जिस मनुष्य को श्री कृष्णाष्टमी के उपवास, पूजनादि का सौभाग्य मिलता है, उसके कोटि जन्मकृत पाप नष्ट हो जाते हैं, तथा वह जन्म बन्धन से मुक्त होकर दिव्य वैकुण्ठादि भगवत् धाम में निवास करता है।

शुभाकांक्षी—(पं. पन्ना लाल शर्मा)

वामन द्वादशी

भाद्र. शुक्ल पक्ष की द्वादशी वामन द्वादशी-वामन जयन्ती के रूप में मनाई जाती है। श्रीमद्भागवत पुराण के अनुसार वामन भगवान के अवतार के समय श्रवण नक्षत्र एवं मध्याह्न व्यापिनी द्वादशी थी। इसी कारण वामन द्वादशी श्रवणयुक्त ग्रहण की जाती है—

मध्याह्नव्यापिनी द्वादशी मध्यान्हे ततोऽन्यत्र वा काले श्रवणयुता।

यदि पंचांग गणित कारण द्वादशी में श्रवण योग न हो और एकादशी में श्रवण हो तो एकादशी में ही श्रवणद्वादशी (वामन जयंती) का व्रत करना चाहिए—

अत्र द्व दश्यां श्रवण योगाभावे एकादश्यां श्रवण योगे तत्रैव श्रवण द्वादशी व्रतं कार्यम्

(धर्मसिन्धु)

संवत् २०६४ में भाद्र. शुक्ल द्वादशी तिथि प्रातः 9.27 तक होने से न मध्याह्न व्यापिनी है और न ही इस दिन श्रवण नक्षत्र का योग है। परन्तु **23 सितम्बर** रविवार को प्रातः 10.59 के बाद मध्याह्न में द्वादशी तिथि तथा श्रवण नक्षत्र की व्याप्ति होने से **वामन जयन्ती** का पर्व इसी दिन को मनाया जाएगा।

आश्विन कृष्ण चतुर्थी व पंचमी का श्राद्ध

आश्विन (पितृ पक्ष) में मृत व्यक्ति की जो तिथि आए, उस तिथि पर मुख्य रूप से पार्वण श्राद्ध करने का विधान है। पार्वण श्राद्ध में पिता, पितामह, प्रपितामह, सपत्नीक अर्थात् माता-दादी और परदादी सहित छः जनों का श्राद्ध होता है। श्राद्ध कर्म में मध्याह्न एवं अपराह्न—दोनों काल विशेषतः ग्राह्य माने गए हैं, यथा—

(क) मध्याह्न—खड्गपात्रं, च तथा नेपाल कम्बलः, दर्भा-तिला, गावो दौहित्रश्चाष्टमः स्मृतः॥ (मत्स्य पुराण)

(ख) **पूर्वाह्ने मातृकं श्राद्धमपराह्णे तु पैतृकम्।**
एकोद्दिष्टं तु मध्याह्ने प्रातर्वृद्धि निमित्तकम्॥

प्रस्तुत वर्ष, **चतुर्थी का श्राद्ध** दो दिन ग्राह्य रहेगा। ता. 29 सितं. शनिवार को **तृतीया का श्राद्ध** दोप. 2.43 तक (मध्याह्न एवं अपराह्न दोनों काल में व्याप्त रहेगा)

इस दिन अपराह्न काल दुपै. 1.29 से 3 बजकर 51 मिनट तक रहेगा। अतएव दुपै. 2.44 से 3.51 तक चतुर्थी का श्राद्ध माना होगा।

ता. 30 सितं. को चतुर्थी तिथि दुपै. 11.26 तक जबकि इस दिन **मध्याह्न** काल दुपै. 11.07 से दुपै. 13.28 तक व्याप्त रहेगा। अतः **चतुर्थी तिथि** के लिए मात्र 19 मिनट का समय मिलेगा। इसी दिन **पंचमी** तिथि के श्राद्धादि कार्य के लिए दुपै. 11.27 के बाद दुपै. 13.28 तक **मध्याह्न** तथा दुपै.1.28 से दुपै. 3.51 का अपराह्न काल उपलब्ध रहेगा।

शरद् पूर्णिमा व्रत (25 अक्तूबर, गुरूवार)

इस व्रत को **कोजागर व्रत** भी कहते हैं। इसमें निशीथ व्यापिनी पूर्णिमा ग्रहण करनी चाहिए। इस पूर्णिमा की रात्रि को अपने आराध्य देव एवं भगवान् श्रीकृष्ण की वस्त्राभूषणादि से सुशोभित करके षोडशोपचार पूजन एवं स्तुति करें तथा रात्रि के समय बादाम, किशमिश सहित गोदुग्ध से बनी खीर को श्री भगवान को भोग लगावें, फिर कुछ क्षीर सहित चन्द्रदेव को अर्घ्य देकर, खीर से भरे पात्र को खुली चाँदनी में, सुरक्षित करके रखें। यदि उस पर चन्द्र किरणें भी पड़ें तो अत्यन्त शुभ है। दूसरे दिन पुनः भोग लगाकर ब्राह्मणों को क्षीर सहित भोजन करवाकर स्वयं प्रसाद रूप में ग्रहण करने से अनेक प्रकार के कायिक व मानसिक रोग दूर हो जाते हैं।

करवा चौथ व्रत (करक चतुर्थी, 29 अक्तूबर, सोमवार)

करवा चौथ का व्रत भारतीय संस्कृति के उस अखण्ड सौभाग्य एवं पवित्र बन्धन का प्रतीक है, जो पति-पत्नी के बीच प्रेम रूपी डोरी को जोड़ता है। सौभाग्यवती स्त्रियों द्वारा यह व्रत चन्द्रोदय व्यापिनी कार्तिक कृष्ण चतुर्थी को किया जाता है। यदि किसी वर्ष तृतीयायुक्त चतुर्थी में चन्द्रोदय न हो, और दूसरे दिन हो, तो पर युक्ता अर्थात् उदय व्यापिनी चतुर्थी ग्रहण करें। यदि दोनों में चं. उ. हो, पहली लें। यदि दोनों दिन चतुर्थी में चन्द्र उदय न हो, तो भी परयुता चतुर्थी ही ग्रहण करें—

कार्तिक कृष्ण चतुर्थी करक चतुर्थी। सा चन्द्रोदय व्यापिनी ग्राह्या॥.....परदिने एव चन्द्रोदय व्याप्तौ परैव॥ उभय दिने चन्द्रोदयव्यापित्वे तृतीया युतैव ग्राह्या। दिन द्वये चन्द्रोदय व्याप्त्यभावे परैव॥ (धर्मसिन्धुः)

प्रस्तुत वर्ष 28 अक्तूबर रविवार को तृतीया रात्रि 11 बजकर, 06 मिनट तक रहेगी। चन्द्रोदय लगभग 8 बजे को तृतीया में ही होगा। परन्तु 29 अक्तूबर, सोमवार को चतुर्थी तिथि रात्रि 8 बजकर 2 मिनट तक व्याप्त रहेगी। भारत के पूर्वी क्षेत्रों (पश्चिमी बंगाल, कलकत्ता, बिहार आदि) में तो प्रायः चन्द्रोदय भी हो जाएगा, परन्तु लुधियाना, जालन्धर, अमृतसर, बटाला, जम्मू आदि के मुख्य शहरों में तो तिथ्यन्त पर ही चन्द्रोदय होने की सम्भावना है। दोनों स्थितियों में व्रत करवा चौथ 29 अक्तूबर, सोमवार को ही शास्त्र-सम्मत बनता है।

आगामी पृष्ठ पर भारत के प्रसिद्ध नगरों में 29 अक्तू. के दिन का चंद्रोदय काल भी दिया गया है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजन

(9 नवंबर, शुक्रवार)

'ब्रह्मपुराण' के अनुसार **अर्द्धरात्रि व्यापिनी**—अर्थात् आधी रात तक रहने वाली अमावस्या श्रेष्ठ होती है। यदि वह आधी रात तक न रहे तो प्रदोषव्यापिनी लेनी चाहिए—

दीपान्दत्त्वा प्रदोषे तु लक्ष्मीं संपूज्य यथाविधि। स्वालंकृतेन भोक्तव्यं सितवस्त्रोपशोभिना॥ (निर्णय सिन्धुः)

दीपावली वास्तव में पांच पर्वों का महोत्सव माना जाता है, जिसकी व्याप्ति कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी (धन तेरस) से लेकर कार्तिक शुक्ल द्वितीया (भाई दूज) तक रहती है।

दीपावली की शाम (प्रदोषकाल) में स्नानादि के उपरान्त स्वच्छ वस्त्राभूषण धारण करके धर्मस्थल पर मन्त्रपूर्वक दीप दान करके अपने निवास स्थान पर श्री गणेश सहित महालक्ष्मी, कुबेर, महाकाली पूजन आदि करके अल्पाहार करना चाहिए। तदुपरान्त यथा उपलब्ध निशीथ आदि शुभ मुहूर्त्तों में मन्त्र-जप, यन्त्र सिद्धि आदि अनुष्ठान सम्पादित करने चाहिएं। दीपावली पूजन के पश्चात् गृह में चौमुखा दीपक रात्रि भर प्रज्ज्वलित रहना सौभाग्य एवं लक्ष्मी वृद्धि का द्योतक माना जाता है।

प्रस्तुत वर्ष 9 नवंबर को **कार्तिक अमावस** का अर्द्धरात्रि से भी अधिक समय (28.33 घं. मिं. तक) व्याप्त रहने से दीपावली का महत्त्व और भी अधिक प्रशस्त होगा। श्री महालक्ष्मी पूजन, मन्त्र-जाप, पाठ, तन्त्रादि साधना के लिए प्रदोष, निशीथ, महानिशीथादि काल व साधना काल अनुष्ठानानुसार अलग-अलग महत्त्व रखते हैं। आगे दीपावली पर्व में विशेष तौर पर ग्राह्य प्रदोषादि काल लिखे जाते हैं।

✤ ***प्रदोष काल***—9 नवबंर को, अपने शहर के सूर्यास्त से लेकर 2 घण्टे 40 मिनट पर्यन्त प्रदोष काल होगा। (प्रत्येक नगर के रात्रिमान के अनुसार इसका काल निर्धारण करें) जालन्धर में **प्रदोष काल** सायं 5.30 बजे से रात्रि 8 बजकर 10 मिनट तक रहेगा। सायं 5 बजकर 51 तक **मेष लग्न** फिर सायं 5.52 से रात्रि 7.45 (पौने आठ) तक स्थिर वृष लग्न विशेषतः प्रशस्त रहेगा। लग्न पर गुरु की शुभ दृष्टि होगी। तदुपरान्त रात्रि 7.46 से रात्रि 9.59 तक **मिथुन लग्न** होगा। प्रदोष काल में और वृष लग्न कालीन **स्वाती नक्षत्र, तुला का चंद्र, एवं सौभाग्य** नामक शुभ योग भी रहेगा। इस योग में दीपदान, श्रीमहालक्ष्मी पूजन व गणेश पूजन, कुबेर पूजन, बही खातों का पूजन, धर्म एवं गृह स्थलों पर दीप प्रज्वलित करना, ब्राह्मणों तथा अपने आश्रितों को भेंट, मिष्टान्नादि बांटना शुभ होता है।

✤ ***निशीथ काल***—9 नवबंर, शुक्रवार को जालन्धर व समीपवर्ती नगरों में **निशीथ काल रात्रि 8 बजकर 11 मिनट से शुरु होकर रात्रि 10:50 तक** रहेगा। इस दौरान मिथुन ल. 7.46 से रात्रि 9.59 तक होगा ; इस मध्य लाभ का चौघड़िया रात 10.50 तक, तथा स्वाती नक्षत्र 10.06 तक रहेगा तथा **कर्क लग्न** 9.59 से प्रारम्भ होकर रात्रि 12 बजकर 22 मिनट तक व्याप्त रहेगा। इस लग्न पर गुरु की उच्च दृष्टि भी रहेगी। इस अवधि में श्रीमहालक्ष्मी पूजन, महाकाली पूजन, लेखनी पूजन, कुबेर आदि देवताओं का पूजन, श्रीसूक्त, लक्ष्मीसूक्त एवं पुरुष सूक्त तथा अन्य काम्य मन्त्रों का जपानुष्ठान करना चाहिए।

✤ **महानिशीथकाल**—रात्रि 10.50 से अर्द्धरात्रि 1 बजकर 10 मिनट तक **महानिशीथ** काल रहेगा। इस दौरान **कर्क लग्न** भी प्रशस्त रहेगा। महानिशीथ काल में श्रीमहालक्ष्मी व महाशक्ति काली की उपासना, यन्त्र-मंत्र-तंत्र आदि क्रियाएँ, विशेष काम्य प्रयोग व तंत्र अनुष्ठान व यज्ञादि किए जाते हैं।

✤ **साधना काल**—अर्द्धरात्रि 1 बजकर 10 मिनट से 10 नवं. की प्रातः 4 घं. 33 मिं. तक रहेगा। इसमें उच्च स्तर की यौगिक क्रियाएँ, प्राणायाम व योग साधना, ध्यान-समाधि एवं महाशक्ति की निष्काम भक्ति साधना की जाएगी।

क्योंकि पंचांगदिवाकर के पाठक सम्पूर्ण भारत में हैं। इसलिए इस वर्ष से हम भारत के मुख्य नगरों में दीपावली पूजन एवं साधना आदि के लिए प्रशस्त काल दिया करेंगे। आशा है पाठक लाभान्वित होंगे।

विभिन्न नगरों में दीपावली पूजा एवं मन्त्रादि साधना हेतु विशेष प्रशस्त काल—9 नवम्बर शुक्रवार

नगर	वृष लग्न (प्रदोष व्याप्त)	कर्क लग्न (निशीथ/महानिशीथ काल व्याप्त	नगर	वृष लग्न (प्रदोष व्याप्त)	कर्क लग्न (निशीथ/महानिशीथ काल व्याप्त
अमृतसर (पं.)	17-53 से 19-47	22-02 से 24-25	कानपुर	17-40 से 19-37	21-49 से 24-08
अम्बाला (हरि.)	17-46 से 19-41	21-55 से 24-17	कांगड़ा (हि.प्र.)	17-46 से 19-40	21-54 से 24-18
अजमेर (राज.)	18-03 से 19-59	22-1_ से 24-32	कुरुक्षेत्र	17-47 से 19-42	21-56 से 24-18
अबोहर (पं.)	17-56 से 19-50	22-04 से 24-28	कुल्लू	17-44 से 19-38	21-52 से 24-16
अलवर (राज.)	17-54 से 19-49	22-03 से 24-23	कटुआ	17-49 से 19-43	21-57 से 24-21
आगरा (उ.प्र.)	17-47 से 19-43	21-57 से 24-16	खन्ना (पं.)	17-49 से 19-42	21-56 से 24-20
ऊना (हि. प्र.)	17-48 से 19-42	21-56 से 24-19	गुरदासपुर	17-50 से 19-44	21-58 से 24-22
उदयपुर (राज.)	18-10 से 20-07	22-19 से 24-37	गुड़गांव	17-50 से 19-44	21-57 से 24-19
उज्जैन	18-04 से 20-01	22-13 से 24-30	गाजियाबाद	17-49 से 19-44	21-58 से 24-20
करनाल (हरि.)	17-46 से 19-40	21-54 से 2_-1_	गंगानगर, (राज.)	17-57 से 19-51	22-05 से 24-29
कलकत्ता	17-14 से 19-13	21-25 से 2_-4_	ग्वालियर	17-49 से 19-46	21-59 से 24-17
कपूरथला (पं.)	17-52 से 19-46	21-59 से 24-22	चण्डीगढ़	17-46 से 19-41	21-55 से 24-17

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नगर	वृष लग्न (प्रदोष व्याप्त)	कर्क लग्न (निशीथ/महानिशीथ काल व्याप्त)	नगर	वृष लग्न (प्रदोष व्याप्त)	कर्क लग्न (निशीथ/महानिशीथ काल व्याप्त)
चम्बा	17-45 से 19-39	21-54 से 24-17	बरेली	17-40 से 19-35	21-49 से 24-09
जम्मू	17-50 से 19-44	21-58 से 24-22	बंगलौर	18-12 से 20-14	22-26 से 24-35
जयपुर	17-58 से 19-53	22-06 से 24-26	बुलन्दशहर	17-46 से 19-41	21-54 से 24-16
जोधपुर	18-09 से 20-06	22-19 से 24-38	बड़ौदा	18-17 से 20-15	22-28 से 24-45
जैसलमेर	18-17 से 20-13	22-26 से 24-45	बरनाला	17-50 से 19-44	21-57 से 24-21
जीन्द (ह.)	17-51 से 19-47	22-00 से 24-21	भटिण्डा	17-54 से 19-48	22-02 से 24-25
झांसी	17-49 से 19-46	21-59 से 24-16	भरतपुर	17-49 से 19-45	21-59 से 24-19
दिल्ली	17-49 से 19-44	21-58 से 24-19	भुवनेश्वर	17-28 से 19-28	21-40 से 23-54
देहरादून (उत्त.)	17-41 से 19-36	21-50 से 24-12	भोपाल	17-57 से 19-55	22-08 से 24-24
दुर्ग (छत्तीस.)	17-46 से 19-45	21-57 से 24-12	मद्रास	18-01 से 20-04	22-15 से 24-24
धर्मशाला (हि.प्र.)	17-46 से 19-41	21-53 से 24-17	मण्डी (हि.प्र.)	17-45 से 19-38	21-53 से 24-16
नाहन (हि.प्र.)	17-45 से 19-39	21-53 से 24-17	मथुरा	17-49 से 19-45	21-58 से 24-18
नंगल (पं.)	17-48 से 19-42	21-56 से 24-18	मलेरकोटला	17-50 से 19-44	21-58 से 24-21
नागपुर (महा.)	17-54 से 19-54	22-10 से 24-22	मेरठ	17-46 से 19-42	21-55 से 24-16
नाभा (पं.)	17-49 से 19-44	21-58 से 24-20	मुरादाबाद	17-43 से 19-38	21-53 से 24-14
नैनीताल	17-38 से 19-34	21-47 से 24-08	मुम्बई	18-22 से 20-22	22-34 से 24-47
नादौन (हि.प्र.)	17-48 से 19-42	21-56 से 24-18	रोपड़	17-46 से 19-42	21-56 से 24-18
पटियाला	17-48 से 19-42	21-58 से 24-19	रोहतक	17-50 से 19-46	22-00 से 24-20
पठानकोट	17-47 से 19-42	21-56 से 24-20	लुधियाना	17-49 से 19-43	21-58 से 24-20
पानीपत	17-46 से 19-39	21-53 से 24-17	लखनऊ	17-37 से 19-33	21-47 से 24-06
पुंछ	17-50 से 19-44	21-59 से 24-24	शिमला	17-45 से 19-40	21-53 से 24-16
प्रयाग	17-35 से 19-32	21-45 से 24-04	श्रीनगर	17-48 से 19-42	21-56 से 24-21
पटना	17-22 से 19-19	21-36 से 23-52	सोलन	17-45 से 19-40	21-56 से 24-16
पालमपुर (हि.प्र.)	17-46 से 19-39	21-53 से 24-17	सोनीपत	17-49 से 19-43	21-57 से 24-20
फरीदकोट (पं.)	17-54 से 19-49	22-03 से 24-25	सहारनपुर	17-45 से 19-40	21-54 से 24-16
फाजिल्का	17-56 से 19-50	22-05 से 24-28	सुन्दरनगर	17-45 से 19-39	21-53 से 24-17
फिरोजपुर	17-55 से 19-49	22-04 से 24-26	हरिद्वार	17-43 से 19-38	21-52 से 24-13
फगवाड़ा	17-50 से 19-44	21-58 से 24-21	हैदराबाद	18-02 से 20-03	22-14 से 24-27
फरीदाबाद (ह.)	17-48 से 19-43	21-57 से 24-19	हमीरपुर (हि.प्र.)	17-46 से 19-40	21-55 से 24-18
वाराणसी	17-31 से 19-29	21-42 से 23-59	हिसार	17-53 से 19-49	22-02 से 24-23
बटाला (पं.)	17-52 से 19-46	22-00 से 24-24	हाँसी	17-53 से 19-47	22-02 से 24-24
बिलासपुर (हि.प्र.)	17-46 से 19-40	21-54 से 24-18	होशियारपुर	17-48 से 19-41	21-56 से 24-19

—यमद्वितीया/भाई दूज—

कार्तिक शुक्ल द्वितीया तिथि को अपने भाईयों की दीर्घायु एवं मंगलकामना से बहिनें शिव-पार्वती व यमदेव की पूजा के बाद, अपने भाईयों को मंगल टीका लगाती हैं। भाई अपनी बहन को यथाशक्ति वस्त्राभूषण के उपहार देता है।

शास्त्र वचनानुसार कार्तिक शुक्ल द्वितीया, यम द्वितीया एवं भ्रातृ दूज अपराह्नव्यापिनी ग्रहण करनी चाहिए—

कातिक शुक्ल द्वितीया यम द्वितीया/भ्रातृ द्वितीया॥
सा अपराह्न व्यापिनी ग्राह्या॥ (व्रतराज)

'हेमाद्रिः' अनुसार भी यम द्वितीया पूर्वविद्धा और मध्याह्न व्यापिनी ग्रहण करनी चाहिए—

यम द्वितीया मध्याह्न व्यापिनी पूर्वविद्धा चेति॥ (हेमाद्रिः)

प्रस्तुत वर्ष 11 नवंबर, रविवार को कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा प्रातः 7 बजकर 02 मिनट तक है, तदुपरान्त द्वितीया तिथि मध्याह्न एवं अपराह्न व्यापिनी व्याप्त है। दूसरे दिन (12 नवं.) को द्वितीया तिथि प्रातः 9 बजकर 22 मिनट तक होने से मध्याह्न एवं अपराह्न व्या. का अभाव है। अतः शास्त्रनियमानुसार 11 नवंबर रविवार को ही न्यायोचित होगी।

धर्मसिन्धु अनुसार भी यदि पहले दिन अपराह्न व्या. होय, तो पहली (प्रतिपदा युक्ता) लेनी और दोनों दिन अपराह्न व्या. हो अथवा दोनों दिन न हो, तभी परली (तृतीया युक्ता) लेनी चाहिए—

इयं पूर्वेद्युरेवापराह्न व्याप्तौ पूर्वा। उभयत्र व्याप्त्याव्याप्यादि पक्षांतरेषु परैः॥

भीष्मपंचक व्रतारम्भ व समाप्ति
(20 नवम्बर से 24 नवम्बर तक)

यह पर्व प्रायः कार्तिक प्रबोधिनी एकादशी से लेकर पूर्णिमा तक, पांच दिनों तक किया जाता है। यदि तिथि क्षयादि के कारण एकादशी से पूर्णिमा तक की अवधि में दिनों की संख्या पांच की अपेक्षा चार रह जाए तो उस स्थिति में दशमी विद्धा एकादशी से इस पर्व का प्रारम्भ करके पूर्णिमा तक पूरे पांच दिनों में भीष्म पंचकों के व्रत नियमों आदि का पालन करना चाहिए। इस सम्बन्ध में धर्मसिन्धुकार का स्पष्ट निर्देश है—

एकादश्यादि दिन पंचके भीष्मपंचक व्रत मुक्तम्। यदि शुद्धैकादश्यामारम्भे क्षयवशेन पौर्णमास्यां पंचदिनात्मक व्रत समाप्ति र्न घटते तदा विद्धैकादश्यामप्यारम्भः॥ —धर्मसिन्धु

प्रस्तुत वर्ष सम्वत् २०६४ में कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी तिथि का क्षय होने से भीष्मपंचक हरि प्रबोधिनी एकादशी से पूर्णिमा तक पर्व दिनों की संख्या चार रह जाती है। उस स्थिति में दशमी विद्धा एकादशी अर्थात् 20 नवम्बर, मंगलवार से 24 नवं. शनिवार तक भीष्मपंचक परिव्याप्त रहेंगे।

करवाचौथ को मुख्य नगरों का चन्द्रोदय काल | [illegible] का फल और माहात्म्य

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

करवाचौथ को मुख्य नगरों का चन्द्रोदय काल
(29 अक्तूबर, सोमवार, 2007 ई.)

पंचांगदिवाकर के पाठक सम्पूर्ण भारत में हैं तथा ग्रह स्पष्ट तथा पक्ष वाले पृष्ठों पर केवल जालन्धर के चन्द्रोदयास्त दिए रहते हैं। 'पंचांगदिवाकर' के पाठकों के लिए भारत के प्रमुख नगरों के करवाचौथ (29 अक्तूबर, 2007 ई.) के दिन का चन्द्रोदय दे रहे हैं।

नगर	चंद्रोदय घं. मिं.	नगर	चंद्रोदय घं. मिं.	नगर	चंद्रोदय घं. मिं.	नगर	चंद्रोदय घं. मिं.
अमृतसर	20 16	गुड़गाँव (हरि.)	20 19	नैनीताल (उत्तरा.)	20 07	मेरठ	20 14
अम्बाला	20 15	गुरदासपुर	20 13	नवांशहर (पं.)	20 14	मोगा (पं.)	20 18
अर्की (हि. प्र.)	20 11	गुवाहाटी	19 27	नंगल (पं.)	20 12	मुक्तसर	20 23
अहमदाबाद (गु.)	20 49	चण्डीगढ़	20 12	पठानकोट (पं.)	20 12	मोहाली	20 12
अगरतला	19 33	चम्बा (हि.प्र.)	20 09	पटियाला	20 16	रामपुरबुशैहर	20 06
आगरा	20 18	चमौली (उत्तरां)	20 05	पंचकूला (हरि.)	20 11	रायपुर (छत्ती.)	20 20
इलाहाबाद	20 08	चेन्नई	20 45	पानीपत	20 17	रिवाड़ी (हरि.)	20 21
ईटावा (उ. प्र.)	20 15	जम्मू	20 12	पिहोवा (हरि.)	20 16	रोपड़ (पं.)	20 13
इन्दौर	20 38	जयपुर	20 28	पटना	19 52	रोहतक	20 18
अबोहर	20 25	जालन्धर	20 17	पालमपुर (हि.प्र.)	20 09	लखनऊ	20 07
अखनूर (का.)	20 13	जीन्द (हरि.)	20 20	पूंछ (का.)	20 12	लुधियाना	20 15
उज्जैन	20 37	जोधपुर	20 42	फगवाड़ा	20 15	शिमला	20 10
ऊधमपुर (का.)	20 12	जगाधरी (हरि.)	20 13	फरीदकोट	20 19	श्रीनगर	20 11
ऊना (हि. प्र.)	20 12	टोहाना (हरि.)	20 18	फिरोज़पुर	20 21	संगरूर	20 18
कठुआ (का.)	20 12	डोडा (का.)	20 10	फाज़िल्का	20 25	सहारनपुर	20 12
कपूरथला	20 16	डलहौज़ी (हि.प्र.)	20 09	फरीदाबाद (हरि.)	20 18	सोलन (हि.प्र.)	20 10
करतारपुर	20 15	दार्जिलिंग (बं.)	19 38	बनारस	20 04	सुनाम (पं.)	20 19
कलकत्ता	19 48	दिल्ली	20 17	बटाला	20 15	सोनीपत (हरि.)	20 17
कांगड़ा	20 10	देहरादून	20 10	बरेली (उ.प्र.)	20 10	सरकाघाट (हि.प्र.)	20 10
कालका (हरि.)	20 10	दुर्ग (छत्ती.)	20 22	बैंगलोर	20 56	सुन्दरनगर (हि.प्र.)	20 09
किश्तवाड़ (का.)	20 09	दीनानगर (पं.)	20 13	बिलासपुर (हि.प्र.)	20 12	हमीरपुर (हि.प्र.)	20 10
कुराली	20 12	धर्मशाला (हि.प्र.)	20 09	भटिण्डा (पं.)	20 22	हरिद्वार	20 09
कुरुक्षेत्र (हरि.)	20 15	धूरी (पं.)	20 18	भुवनेश्वर	20 06	हैदराबाद	20 41
कुल्लू (हि. प्र.)	20 06	नागपुर (म.)	20 29	भिवानी (हरि.)	20 20	होशियारपुर	20 13
कैथल (हरि.)	20 16	नाभा (पं.)	20 17	मण्डी (हि.प्र.)	20 08	हिसार	20 21
कोटखाई (हि.प्र.)	20 09	नाहन (हि.प्र.)	20 10	मलेरकोटला	20 16	हाथरस	20 17
खन्ना (पं.)	20 14	नारनौल (हरि.)	20 22	मुम्बई	20 59	हनुमानगढ़ (राज.)	20 25
गाज़ियाबाद	20 15	नालागढ़ (हि.प्र.)	20 13	मुगलसराय (उ.प्र.)	20 02	हांसी (हरि.)	20 21

नव सम्वत्सर का फल और माहात्म्य

भारत की गौरवमयी सभ्यता एवं संस्कृति में **सम्वत्सर** का विशेष महत्त्व है। हिन्दुओं के प्रायः सभी शुभ संस्कारों (विवाह–मुण्डनादि) एवं मन्त्र–जपादि अनुष्ठानों में संकल्पादि के समय सम्वत् के नाम का प्रयोग प्रमुखता से लिया जाता है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवीन सम्वत् का प्रारम्भ होता है। सत्ययुग का आरम्भ भी इसी दिन हुआ माना जाता है तथा ब्रह्मा जी ने सृष्टि का आरम्भ भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को किया था। **''चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा संसर्ज प्रथमेऽहनि शुक्ल पक्षे समग्रे तु तदा सूर्योदये सति॥ (ब्रह्मपुराण)।''** सम्भवतः इसी कारण **इसे स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त** माना जाता है। इस दिन किए गए जप–दानादि शुभ कर्मों के प्रभाव से वर्ष भर धन–सम्पदा एवं सुख–शान्ति बनी रहती है।

नवीन शर्वरी नाम का नव्य सम्वत् 19 मार्च 2007 ई. सोमवार को प्रारम्भ हो रहा है।

नव सम्वत्सर के आगमन पर प्रातः तैलाभ्यंग, नित्य कर्मों से निपटकर आसन, पाद्य, अर्घ्य, वस्त्र, यज्ञोपवीत, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप–दीप, ताम्बुल, नैवेद्य, फल, आदि से सम्वत्सर पूजन एवं फल श्रवणादि, नवरात्र घट–स्थापन, मिट्टी के पात्र में रखी रेत–मिट्टी में जौं–गेहूँ आदि के बीज बोना, ओंकार सहित श्री गणेश, ब्रह्मा, विष्णु, शिव एवं श्री दुर्गा– इन पंचदेवों तथा नवग्रहों की स्वयं अथवा किसी सुयोग्य ब्राह्मणों द्वारा पूजार्चना करवा कर उन्हें क्षीर सहित सात्त्विक भोजन करवाकर उनका **पंचाँग का दान** सहित यथाशक्ति अन्न, वस्त्र, फल एवं धनादि देकर सत्कार करना चाहिए।

पूजन के समय भगवान् ब्रह्मा एवं विष्णु की मूर्तियों के समक्ष पुष्पाक्षत, नैवेद्य, अर्घ्य गंगा जल आदि लेकर निम्न मन्त्र पढ़ें–

ॐ ब्रह्मणे नमः से **ब्रह्मा जी का आवाहन तथा बहुरूपाय विष्णवे परमात्मने नमः परमात्म–** विष्णुमावाहयामि स्थापयामि च।

ॐ सम्वत्सराय नमः, चैत्राय नमः, वसन्ताय नमः। आदि नाम–मन्त्रों से पूजन करके विद्वान् ब्राह्मण का अर्चन करें। तथा खीर सहित भोजन करवाकर यथाशक्ति वस्त्र, फलों आदि का दान करें। संवत्सर की मूर्त्ति बनाकर उसकी **''चैत्राय नमः, वसन्ताय नमः''** आदि से भी पूजा करनी चाहिए।

तदुपरान्त स्वास्ती वाचन, शान्ति पाठ आदि मांगलिक मन्त्रों का पाठ करने के पश्चात् सूर्य देव को ताम्र बर्तन से मन्त्र–पूर्वक तीन बार अर्घ्य देकर **गायत्री मन्त्र** का जाप करना चाहिए। तत्पश्चात् दिवाकर पंचाँग में किसी ब्राह्मण के श्री मुख से **सम्वत् का नाम, सम्वत् का वास, सवारी राजा, मन्त्री आदि का फल श्रवण करना** चाहिए चैत्र, प्रतिपदा से लेकर नवमी तक भगवान्–विष्णु, शिव एवं श्री दुर्गा के समक्ष नित्य ज्योति जलाकर श्रद्धानुसार श्री दुर्गासप्तशती का जप पाठ करने का विधान है।

चैत्र प्रतिपदा से नवमी तक प्रतिदिन प्रातः कटु नीम की कोमल पत्तियाँ व पुष्पों का चूर्ण बनाकर, उसमें काली मिर्च, हींग, सेंधा नमक, ईमली, अजवायन, जीरा तथा शक्कर या चीनी बराबर मात्रा में मिलाकर चूर्ण बनाकर भगवान् को भोग लगाकर ग्रहण करने से वर्षभर आरोग्यता बनी रहती है तथा रक्त विकार, त्वचा, कुष्ठ आदि रोगों का भय नहीं रहता॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ज्येष्ठ अधिक मास का फल सम्वत् २०६४

(17 मई से 15 जून तक के मध्यकाल में)

'सिद्धान्त शिरोमणि' के अनुसार जिस चान्द्र मास के दोनों पक्षों में सौर संक्रान्ति का अभाव हो, उसे **अधि-मास** या अधिक मास कहते हैं, तथा यदि चान्द्र मास में दो सौर-संक्रान्तियों का समावेश हो जाए, वह **''क्षय मास''** कहलाता है—

असंक्रान्ति मासोऽधिमासः स्फुटः स्यात्, द्विसंक्रान्ति मासः क्षयाख्यः कदाचित्॥

सामान्यतः 32 महीने, 16 दिन और 4 घड़ी के बीत जाने पर भारतीय पंचाँगों में अधिक मास का समावेश किया जाता है। गणितानुसार सौरवर्ष 365 दिन, 6 घण्टे व 11 सैकिण्ड का होता है। जबकि चान्द्र वर्ष लगभग 354 दिन, 22½ पल लगभग 9 घण्टे का होता है। इन दोनों का अन्तर अधिक मास में पूरा कर लिया जाता है। लोक व्यवहार में अधिक मास को **अधिमास, मलमास या पुरूषोत्तम मास** भी कहा जाता है।

अधिक मास—अर्थात् मलमास में फल-प्राप्ति की कामना से किए जाने वाले प्रायः नैमित्तिक कर्म वर्जित हैं। जैसे—विवाह, मुण्डन, गृह-प्रवेश, यज्ञोपवीत, बहुमूल्य वस्तु जैसे—भूमि, आभूषण, गाड़ी आदि की खरीद करना, नव वधू का प्रवेश, दीक्षा ग्रहण, देव प्रतिष्ठा, यज्ञादि का अनुष्ठान, अष्टका श्राद्ध, कूआँ, तालाब आदि काम्य कर्मों का आरम्भ शुभ नहीं माना जाता।

अधिक मास में केवल भगवान् पुरूषोत्तम (विष्णु) की प्रसन्नता के लिए व्रत, उपवास, स्नान, दान या पूजनादि किए जाते हैं, उनका अक्षय फल होता है और साधक के अनिष्ट फलों का क्षय होता है।

विक्रमी सम्वत् २०६४ में निरयण ज्येष्ठ संक्रान्ति के बाद में पड़ने वाले दोनों पक्षों में सौर संक्रान्ति का अभाव हुआ है। अतएव **17 मई, 2007 ई. से लेकर 15 जून, 2007 के मध्यान्तर** में पड़ने वाले दोनों पक्षों की मध्यावधि में **ज्येष्ठ अधिक** मास या मल-मास रहेगा। इस कालविधि में शुभ काम्य नैमित्तिक कामों का आरम्भ वर्जित रहेगा। ज्येष्ठ **अधिक मास में पुरूषोत्तम माहात्म्य** का पाठ, भगवान् श्रीविष्णु की उपासना, जप, व्रत, दानादि कृत्य करने चाहिएँ। महर्षि वाल्मीकि के अनुसार पुरूषोत्तम मास में गेहूँ, चावल, मूँग, जौं, मटर, तिल, ककड़ी, केला, घी, आम, सोंठ, इमली, आँवला, सेंधानमक आदि का भोजन करना चाहिए। परन्तु उड़द, राई, प्याज़, लहसुन, गाजर, मूली, गोभी, दाल, शहद व तामसिक भोजन का त्याग करना चाहिए। केवल एकभुक्त (एक समय) भोजन करना तथा *यथासम्भव भूमि पर शयन करना चाहिए॥*

राष्ट्रीय ज्योतिष अनुसार सम्वत् में **ज्येष्ठ अधिमास** *का आगमन होने पर राष्ट्राध्यक्षों में परस्पर टकराव होते हैं। किसी विशिष्ट गणमान्य राजनेता के निधन एवं अपदस्थ होने के योग हैं—*

''ज्येष्ठ द्वये नृपध्वंसोधान्यानि क्षितिसत्तमे॥''—अर्थात् दो ज्येष्ठ मास होने से कुछ देशों के राष्ट्राध्यक्षों के मध्य टकराव हो, कहीं शासन परिवर्तन हो, कहीं उपद्रव एवं हिंसक घटनाएँ घटित हों। वर्षा अच्छी तथा धान्य की पैदावार अच्छी होगी। ज्येष्ठ अधिक मास में गुरु, शुक्र अस्त की भान्ति शास्त्रकारों ने विवाहादि शुभ कार्य वर्जित कहे हैं—

गृह प्रवेशश्चूड़ामौंजी बंध विवाहारतीर्थादि यात्रा वास्तु कर्मे तान्यधिवर्ज्यानि॥ (धर्मसिन्धु)

संवत् २०६४ में त्रयोदश (१३) दिनात्मक पक्ष का फल

विक्रमी सम्वत् २०६४ में तिथियों की प्रत्यक्षगणित की गणना के कारण **श्रावण कृष्ण पक्ष** (30 जुलाई से 12 अगस्त, 2007 ई.) के मध्य तेरह दिन का पक्ष आ रहा है। इसका फल अशुभ माना गया है।

सामान्यतः सूर्य और चन्द्रमा की स्पष्ट गणित प्रक्रिया के कारण भारतीय पंचांगों में कृष्ण अथवा शुक्ल पक्षों के अन्तर्गत प्रतिवर्ष पक्ष के दिन १४, १५ अथवा १६ दिन आ जाते हैं—अर्थात् पक्ष में कोई तिथि क्षय हो जाने की स्थिति में १४ दिन, तिथि वृद्धि होने पर १६ दिन तथा तिथि क्षय या वृद्धि न होने की स्थिति में १५ दिन ही होते हैं। कई बार चन्द्र और सूर्य की स्पष्ट **गणित प्रक्रिया के कारण** किसी पक्ष में दो बार तिथि का क्षय हो जाने से १३ दिन का पक्ष भी आ जाता है। इसको **विश्वधम्र** पक्ष भी कहते हैं। महाभारत में भी तेरह दिन के पक्ष के अशुभत्व के सम्बन्ध में वर्णन मिलता है। अन्य शास्त्रकारों ने भी त्रयोदश दिनात्मक पक्ष के अशुभत्व के विषय में अनेकत्र प्रमाण मिलते हैं, यथा—

अनेक युग साहस्रयां दैवयोगात् प्रजायते। त्रयोदश दिने पक्षः तदा संहरते जगत्॥

अर्थात् कई एक युगों में प्रजा का नाश करने के निमित्त तेरह दिन का पक्ष आता है, अर्थात् जिस पक्ष में तेरह दिन हों, वह पक्ष लोगों में क्लिष्ट रोग उत्पादक, महँगाई, विग्रह, उपद्रव एवं हिंसा आदि अशुभ फलकारक होता है। समाज में सर्वत्र अशान्ति का वातावरण फैलता है। अन्यत्र भी इसके सम्बन्ध में अशुभ फल कहे गए हैं—

यदा च जायते पक्षस्त्रयोदश दिनात्मकः। भवेल्लोक क्षयो—घोरो रूण्डमुण्डमाला युतामही।
त्रयोदश दिनः पक्षस्तदा संहरते जगत्। अपि वर्ष सहस्रेण कालयोगः प्रकीर्तितः॥

इस त्रयोदश दिनात्मक पक्ष के प्रभावस्वरूप भारत की राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ अस्थिर होंगी। राजनीतिक पार्टियों के मध्य विग्रह, टकराव एवं बिखराव पैदा होंगे। कहीं तोड़-फोड़, हिंसा, विस्फोटक घटनाएँ एवं छत्रभंग की आशंका होगी। कहीं भूस्खलन, दुर्भिक्ष आदि प्राकृतिक प्रकोप घटित होंगे। दैनिक उपभोग्य की वस्तुओं में जबरदस्त तेज़ी होने के योग बनेंगे। तेरह दिन के पक्ष में शास्त्र में विवाह, मुण्डन, गृह प्रवेश, उपनयन आदि शुभ कार्यों का निषेध माना गया है। ज्योतिर्निबन्धानुसार—

उपनयनं परिणयनं तुवेशमारम्भादि कर्माणि। यात्रा द्विक्षयपक्षे कुर्यात् न जिजीविषु पुरूषः॥

इसी कारण शास्त्र वचनानुसार संवत् २०६४ के अन्तर्गत श्रावण कृष्ण पक्ष तेरह दिन का होने से विवाह, मुण्डन, गृह-प्रवेश, विपणि आदि शुभ मुहूर्त्त नहीं लगाए गए हैं।

ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड)—इसमें भारतीय ज्योतिष के प्रारम्भिक इतिहास से लेकर ज्योतिष सम्बन्धी प्रारम्भिक ज्ञान—सम्पूर्ण बड़ी जन्मपत्री निर्माण शैली, ग्रहों से सप्तवर्गी बलाबल निकालना। भावों, राशियों एवं ग्रहों तथा फलादेश सम्बन्धी मूलभूत सिद्धान्तों को अत्यन्त सरल शैली में प्रस्तुत किया गया है।
(मूल्य 60 रुपए)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

सन 2007 ई. (ता. 20 मार्च से 2 अप्रैल तक) | भा. स्टैं. टा.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०६४, चैत्र शुक्ल पक्ष शाक: १९२८-२९

सन् 2007 ई. (ता. 20 मार्च से 2 अप्रैल तक)

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण-उत्तर गोल, वसन्त ऋतु

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	तारीखें शक फा.	सफर मु.	मार्च	चैत्र प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रहलोपदर्शन—प्रातः मंगल पूर्व में, बुध भी पूर्व में, गुरु याम्योत्तरवृत्त के निकट होगा। सायं श. पूर्व कपाल में तथा शुक्र पश्चिम में दिखेगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	भा. स्टैं. टा. जालन्धर सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२९.५३	१	चंद्र	५४	४८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	19	०	००	प्रतिपदा का क्षय, चैत्र नवरात्र प्रारंभ (19 मार्च) ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२९.५५	२	मंग	४५	४३	रेव	४६	२०	ब्रह्म	३७	२३	बा	२०	१६	२९	२९	20	७	मे. ४६/२०	चन्द्रदर्शन, ३० मु., पंचक समाप्त 25/08 घं. मिं., मंगल धनि. में A	११	०५	०५	१४	६	३६	१८	३४
३०.००	३	बुध	३७	०५	अश्वि	३९	४०	ऐंद्र	२६	५०	तै	११	२४	३०	रवि	21	८	मेष	गणगौरी तृतीया, मत्स्य जयंती, महाविषुव दिन, रबि उल्लावल १ मु.B	११	०६	०४	५०	६	३५	१८	३५
३०.०५	४	गुरु	२९	१८	भर	३३	५०	वैधृ	१७	२३	व	०३	१२	चै.	२	22	९	वृ. ४७/३३	भ. ३/१२ से २९/१८ तक, शक चैत्र व संवत् 1929 प्रारम्भ	११	०७	०४	२५	६	३४	१८	३६
३०.१०	५	शुक्र	२२	४५	कृति	२९	१८	विष्क	८	५३	बा	२२	४५	२	३	23	१०	वृष	श्री (लक्ष्मी) पंचमी, शुक्र भर. में ५५/३०,	११	०८	०३	५४	६	३२	१८	३७
३०.१७	६	शनि	१७	३८	रोहि	२६	१३	प्रीति आयु	१ ५५	२८ २३	तै	१७	३८	३	४	24	११	मि. ५५/१५	स्कन्द षष्ठी व्रत, पूजादि, स. सि. योग:	११	०९	०३	२४	६	३१	१८	३८
३०.२५	७	रवि	१४	१५	मृग	२४	५३	सौभा	५०	५०	व	१४	१५	४	५	25	१२	मिथुन	भ. १४/१५ से ४३/२८ तक,	११	१०	०२	५०	६	२९	१८	३९
३०.२७	८	चंद्र	१२	४०	आर्द्रा	२५	२०	शोभ	४७	४०	ब	१२	४०	५	६	26	१३	मिथुन	श्री दुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति, मेला बाहूफोर्ट (जम्मू)	११	११	०२	१६	६	२८	१८	३९
३०.३२	९	मंग	१२	५५	पुर्न	२७	३०	अति	४५	५५	कौ	१२	५५	६	७	27	१४	क. ११/४८	श्रीरामनवमी व्रत, नवरात्र समाप्त	११	१२	०१	३८	६	२७	१८	४०
३०.३५	१०	बुध	१४	५३	पुष्य	३१	१८	सुक	४५	२३	ग	१४	५३	७	८	28	१५	कर्क	भ. ४६/३७ से,	११	१३	००	५९	६	२६	१८	४०
३०.४२	११	गुरु	१८	२०	श्ले	३६	३०	धृति	४५	५५	वि	१८	२०	८	९	29	१६	सिं. ३६/३०	भ. १८/२० तक, मंगल कुम्भ में २७/०८, कामदा एकादशी व्रत, गं.मू.	११	१४	००	१४	६	२४	१८	४१
३०.४५	१२	शुक्र	२२	५८	मघा	४२	४५	शूल	४७	१३	बा	२२	५८	९	१०	30	१७	सिंह	प्रदोष व्रत, गण्डमूल	११	१४	५९	२९	६	२३	१८	४१
३०.५०	१३	शनि	२८	३०	पू.फा.	४९	४५	गंड	४९	१०	तै	२८	३०	१०	११	31	१८	सिंह	श्रीमहावीर जयंती, सूर्य रेव. में ४१/४८, बुध पू.भा. में ४/४०, अनङ्ग त्रयोदशी	११	१५	५८	४३	६	२२	१८	४२
३०.५७	१४	रवि	३५	५८	उ.फा.	५७	२०	वृद्धि	५१	३३	ग	२	१४	११	१२	अप्रै	१९	क. ६/४३	भ. ३५/५८ से, 1 अप्रैल प्रारम्भ, स. सि. योग:	११	१६	५७	५४	६	१९	१८	४३
३१.०३	१५	चंद्र	४१	०५	हस्त	६०	००	ध्रुव	५३	५८	वि	८	३२	१२	१३	2	२०	कन्या	भ. ८/३२ तक, चैत्र पूर्णिमा व्रतादि, श्रीहनुमान् जयंती (द. भारत) C	११	१७	५७	०२	६	१९	१८	४३

A ४४/०५, सूर्य सायन मेष में ५७/३३, उत्तर गोल प्रारम्भ, गण्डमूल B प्रारम्भ, शिवशक्ति पूजा C वैशाख स्नान प्रारम्भ, श्रीसत्यनारायण व्रत

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 26 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	९	१०	७	०	३	१०	४
१०	१३	२७	१३	२५	१५	२४	२१	२१
५९	५५	१९	३७	३७	४६	४४	१५	१५
५३	५३	३९	४५	४७	१९	४१	३०	३०
५९ २५	७८२ ३१	४६ ५६	७० ३४	१ ५८	७१ ५३	२ ३२	३ ११	३ ११
उभा ३	आर्द्रा ३	धनि २	शत ३	ज्ये. ३	भर १	श्ले ३	पूभा १	पूफा ३
—	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

१ शु. | ११ रा. बु. | १२ सू. | १० मं. | २ | ३ चं. | ९ | ४ श. | ६ | ८ गु. | ५ के. | ७

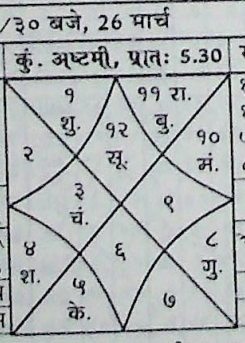

चन्द्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 2 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	१०	१०	७	०	३	१०	४
१७	१०	०२	२२	२५	२४	२४	२०	२०
५५	०७	४१	३३	४७	०७	२८	५३	५३
०१	३२	२७	१८	३८	३७	५९	१५	१५
५९ १०	७०९ २५	४६ ००	८३ ४९	० ४०	६१ १६	१ ५०	३ ११	३ ११
रेव १	हस्त १	धनि ३	पूभा १	ज्ये. ३	भर ४	श्ले ३	पूभा १	पूफा ३
—	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

१ शु. | बु. ११ रा. मं. | १२ सू. | १० | २ | ३ | ९ | ४ श. | ६ चं. | ८ गु. | ५ के. | ७

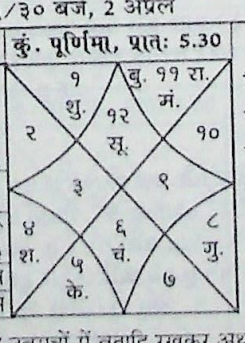

चैत्र शुक्ल पक्षफल–

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (19 मार्च, सोमवार) से **शर्वरी नामक नए** विक्रमी संवत्सर 2064 का प्रारम्भ होगा। अतएव आगामी नए सम्वत् काल में अनुष्ठान, शुभ संकल्प आदि कार्यों में इसी का प्रयोग होगा। नए सम्वत् का **राजा चन्द्र** तथा **मन्त्री शनि** है। नव-संवत्सर का नाम, वास, सवारी आदि का फल किसी प्रतिष्ठित ब्राह्मण, अग्रजन अथवा गुरु मुख से संवत् पूजनोपरान्त श्रवण करना चाहिए। सम्वत् आदि का फल श्रवण के पश्चात् प्रतिपदा को श्री दुर्गा की मूर्ति एवं घटस्थापन करके श्री दुर्गा मूर्ति के समक्ष प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त नित्य प्रातः घी की ज्योत जलाकर श्री दुर्गा पूजा एवं सप्तशती का पाठ करने का विधान है। इसके अतिरिक्त नवरात्रों में व्रतादि रखकर अथवा एकभुक्त भोजन करके धर्म स्थानों में सुयोग्य ब्राह्मण को पंचांग एवं धर्म ग्रन्थ, अनाज, फल, वस्त्रादि का दान करना कल्याणकारी होता है। अमा. की प्रातः को ग्रस्तोदय **खण्ड-सूर्यग्रहण**, उत्तर भारत के विभिन्न नगरों में सूर्योदय से प्रारम्भ होकर अमावस तिथि की समाप्ति (प्रातः 8-13 तक) से पूर्व ही समाप्त हो जाएगा। तदुपरान्त चैत्र प्रतिपदा काल (अभिजित मुहूर्त) में तीर्थों पर स्नान-दान-जप आदि का विशेष माहात्म्य रहेगा। **शर्वरी नामक संवत्** एवं **राजा चन्द्र** आदि के प्रभावस्वरूप गेहूँ, ईख धान्यादि की फसलें तथा अंगूर, सेब, संगतरा, मौसम्मी आदि रसदार फलों की पैदावार अच्छी होगी। अधिकांश लोगों में धन एवं सुख-साधनों व ऐश्वर्य प्रसाधनों का प्रसार बढ़ेगा। **मन्त्री शनि** के प्रभावस्वरूप राजनेताओं में स्वार्थपरता, द्वेष बढ़ेगा। उनका व्यवहार साधारण लोगों के प्रति कठोर रहेगा। आवश्यक वस्तुओं में अत्यधिक महंगाई एवं भ्रष्टाचार के कारण सामान्य लोगों में गहन असन्तोष व विक्षोभ होगा। ***आकाश लक्षण***—हि. प्र., ज. का., पंजाब व हरियाणा के कुछ क्षेत्रों में तेज़ हवाओं एवं खण्ड वर्षा के योग हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०६४, वैशाख कृष्ण पक्ष शाकः १९२९

सन् 2007 ई. (3 अप्रैल से 17 अप्रैल तक)

सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त ऋतु

भा. स्टैं. टा. — जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	तारीखें चै. शक	रवि मु.	अप्रैल	चै. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रहलोपदर्शन–प्रातः बुध एवं मंगल पूर्व में, गुरु याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में होगा। सायं शनि पूर्व क्षितिज के पास तथा शुक्र पश्चिम कपाल में होगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
३१.०५	१	मंग	४७	३५	हस्त	५	०३	व्या	५३	५८	बा	१४	२०	१३	१४	3	२१	तु. ३८/५३	श्री कच्छपावतार जयंती	११	१८	५६	०८	६	१८	१८	४४
३१.१०	२	बुध	५३	५३	चित्रा	१२	४३	हर्ष	५८	४८	तै	२०	४४	१४	१५	4	२२	तुला	शुक्र कृति. में ६/२८,	११	१९	५५	१३	६	१७	१८	४५
३१.१३	३	गुरु	५९	४३	स्वा	२०	०८	वज्र	६०	००	व	२६	४८	१५	१६	5	२३	तुला	भ. २६/४८ से ५९/४३ तक,	११	२०	५४	१६	६	१६	१८	४५
३१.२०	४	शुक्र	६०	००	विशा	२७	०३	वज्र	०	५३	ब	३२	२१	१६	१७	6	२४	वृ. १०/२३	गुरु वक्री १/४०, शुक्र वृष में ५५/४०, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत A	११	२१	५३	१७	६	१४	१८	४६
३१.२५	४	शनि	४	५८	अनु	३३	१०	सिद्धि	२	२०	बा	४	५८	१७	१८	7	२५	वृश्चिक	मंगल शत. में ९/१५, बुध मीन में ५/२८,	११	२२	५२	१५	६	१३	१८	४७
३१.२८	५	रवि	९	०८	ज्ये	३८	१३	व्य	३	०५	तै	९	०८	१८	१९	8	२६	ध. ३८/१३	गण्डमूल विचार A चन्द्रोदय 22/24 गुड फ्राइडे, अनुसूया जयन्ती,	११	२३	५१	१२	६	१२	१८	४७
३१.३५	६	चंद्र	१२	०३	मूल	४१	५८	वरी	२	५३	व	१२	०३	१९	२०	9	२७	धनु	भ. १२/०३ से ४२/४७ तक, बुध उ.भा. में १४/३०, गंडमूलादि	११	२४	५०	०८	६	११	१८	४९
३१.४०	७	मंग	१३	३०	पू.षा.	४४	१३	परि शिव	१ ५८	३५ ५५	बव	१३	३०	२०	२१	10	२८	म. ५९/२८		११	२५	४९	०१	६	०९	१८	४९
३१.४३	८	बुध	१३	१३	उ.षा.	४४	३८	सिद्ध	५४	५५	कौ	१३	१३	२१	२२	11	२९	मकर		११	२६	४७	५४	६	०८	१८	५०
३१.४८	९	गुरु	११	०८	श्रव	४३	१८	साध्य	४९	२५	ग	११	०८	२२	२३	12	३०	मकर	भ. ३९/११से प्रा.	११	२७	४६	४५	६	०७	१८	५१
३१.५३	१०	शुक्र	७	१३	धनि	४०	१५	शुभ	४२	३३	वि	७	१३	२३	२४	13	३१	कुं. १२/००	भ. ७/१३ तक, पंचक प्रारम्भ १२/०० (10/54 घं. मिं.), स. सि. यो.	११	२८	४५	३४	६	०६	१८	५१
३१.५८	११	शनि	१	३८	शत	३५	३८	शुक्ल	३४	२३	बा	१	३८	२४	२५	14	वै.	कुंभ	वरूथिनी एका. व्रत, सूर्य अश्वि (१) मेष में १५/५८, वैशाख B	११	२९	४४	२२	६	०५	१८	५२
०० ००	१२	शनि	५४	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	द्वादशी तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३२.०३	१३	रवि	४६	१५	पू.भा.	२९	४०	ब्रह्म	२५	०५	ग	२०	२३	२५	२६	15	२	मी. १६/१८	भ. ४६/१५ से, प्रदोष व्रत, शुक्र रोहि. में २७/२५,	०	००	४३	०७	६	०४	१८	५३
३२.०५	१४	चंद्र	३७	१०	उ.भा.	२२	४८	ऐंद्र	१५	०८	वि	११	४३	२६	२७	16	३	मीन	भ. ११/४३ तक, मास शिवरात्रि व्रत	०	०१	४१	५१	६	०३	१८	५४
३२.१३	३०	मंग	२७	४३	रेव	१५	२५	वैध्रु विष्कं	४ ५३	३८ ५३	च	२	२७	२७	२८	17	४	मे. १५/२५	भौमवती अमावस, पंचक समाप्त १५/२५, बुध रेव. में १०/४८ C	०	०२	४०	३१	६	०१	१८	५४

B संक्रान्ति, १५ मु., पुण्यकाल प्रातः सूर्योदय से, त्रिस्पर्शा महाद्वादशी, श्रीवल्लभाचार्य जयंती, डॉ. अम्बेदकर जयंती C स. सि. यो. 12/11 से,

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 11 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	१०	११	७	१	३	१०	४
२६	२९	०९	०६	२५	०४	२४	२०	२०
४६	४५	३५	०६	४६	४५	१६	२४	२४
२१	५२	४२	०२	५२	२८	०५	३८	३८
५८ ५३	७९९ ५९	४६ ३	९८ १०	१ २	७० २२	० ५५	३ ११	३ ११
रेव ४	उषा १	शत ३	उभा ३	ज्ये ३	कृत्ति ३	श्ले ३	पूभा ६	पूफा ३
—	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

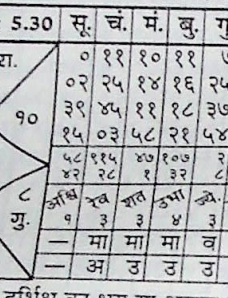

भौमे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 17 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	११	१०	११	७	१	३	१०	४
०२	२५	१४	१६	२५	११	२४	२०	२०
३९	४५	११	१८	३७	४६	१२	०५	०५
१५	०३	५८	२१	५४	०९	१४	३४	३४
५८ ४२	११५ २८	४७ १	१०७ ३२	२ ८	६९ ४४	० १६	३ ११	३ ११
अश्वि १	रेव ३	शत ३	उभा ४	ज्ये ३	रोहि १	श्ले ३	पूभा ९	पूफा ३
—	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व
—	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

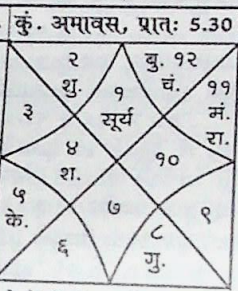

वैशाख कृष्ण पक्षफल–

वैशाख मास में (वैशाख पूर्णिमा तक) प्रातः किसी तीर्थ स्थान, जलाशय में अथवा अपने निवास स्थान पर ही तीर्थजल मिश्रित शुद्ध जल से स्नान करके तुलसीदल सहित भगवान विष्णु की नित्य प्रति पूजा करके श्रीविष्णु सहस्त्रनाम एवं वैशाख माहात्म्य का नियमित पाठ करके '**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**' मन्त्र का पाठ करना चाहिए। पाठोपरान्त ब्राह्मण को भोजन करवाकर यथाशक्ति मिष्ठान्न, फल-वस्त्रादि का दान करने से पापों की निवृत्ति एवं सुख-शान्ति एवं आरोग्य में वृद्धि होती है। **ता. 14** अप्रैल को वैशाख संक्रान्ति 15 मुहूर्त्ति, शनिवार को है। जिसके फलस्वरूप सब प्रकार के अनाज, धान्यादि महँगे होंगे। कहीं दुर्भिक्ष का भय या अनाज की कमी होगी। लोगों में रोग-शोक दुःखों आदि की बहुलता होगी तथा सुखों की कमी होगी—**सौरेश्चवारे संक्रमश्चेत् दुर्भिक्षमा याति च सर्वधान्यम्। पृथ्वी सरोगानृपतेः प्रजासु भवेत् महायुद्ध तदानीम्।** राजनेताओं में परस्पर विरोध, टकराव एवं द्वेष अधिक होंगे। 15 मुहूर्ति संक्रान्ति धान्य, चावल, उड़द एवं सर्व प्रकार के अनाज के भावों में तेजी कारक होगी। **वैशाख संक्रान्ति कुण्डली** में सूर्य पर **शनि की नीच** दृष्टि होने से इस मास किसी विशिष्ट राजनेता की आकस्मिक मृत्यु या अपदस्थ होने के योग हैं। ***व्यापारिक रूख***—पक्ष के आरम्भ में 6 अप्रैल को गुरू वृश्चिक में **वक्री होने** से अनाज (गेहूँ, धान्यादि) एवं रूई, कपास का संग्रह करके कार्तिक में बेचने से अच्छा लाभ प्राप्त होना सम्भव होगा। पक्षारम्भ से ही कुम्भ राशि पर **मंगल-राहु** का योग होने से कहीं असामयिक (अकालिक) वर्षा होगी, जिससे अनाज की फसलों को हानि पहुँचेगी। *राहुरंगारकश्च राशि ऋक्षगतौ तदा। महाभयं च सस्यानां न च वृष्टिः प्रजायते॥* व्यापारिक वस्तुओं के मूल्यों में तेजी होगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०६४, वैशाख शुक्ल पक्ष शाकः १९२९ — सन् 2007 ई. (18 अप्रैल से 2 मई तक)

सूर्य उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त-ग्रीष्म ऋतु

भा. स्टैं. टा. जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	तारीखें चैत्र शक	रवि मु.	अप्रैल	वैशाख	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रहलोपदर्शन–प्रातः मंगल याम्योत्तरवृत्त से कुछ पूर्व में, 20 अप्रै. से बुध पूर्व में अस्त। प्रातः ही गुरु पश्चिम कपाल में दिखेगा। सायं शनि याम्योत्तरवृत्तासन्न तथा शुक्र पश्चिम में दिखेगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
३२.२०	१	बुध	१८	१५	अश्वि	७	५५	प्रीति	४३	२५	बव	१८	१५	२८	२९	18	५	मेष	चन्द्रदर्शन, मु. १५, राहु शत (४) केतु पू.फा. (२) में ४३/१५, गं.मू.	००	०३	३९	१०	६	००	१८	५६
३२.२५	२	गुरु	९	१५	भा कृति	० ५४	४८ २८	आयु	३३	३०	कौ	९	१५	२९	रबि	19	६	वृ. १४/०८	अक्षय तृतीया, श्रीपरशुराम जयंती, शिवाजी जयंती, शनि मार्गी A	००	०४	३७	४९	५	५९	१८	५७
३२.२७	३	शुक्र	१	०८	रोहि	४९	३०	सौभा	२४	३३	ग	१	०८	३०	२	20	७	वृष	भ. २७/४४ से ५४/२० तक, बुध पूर्व में अस्त ४६/३३, सूर्य सायन B	००	०५	३६	२४	५	५८	१८	५७
०० ००	४	शुक्र	५४	२०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्थी तिथि का क्षय ०० ००	००	०	०	०	०	०	०	०
३२.३३	५	शनि	४९	१८	मृग	४६	१०	शोभ	१६	५०	बव	२१	४९	वैश	३	21	८	मि. १७/३८	आद्यगुरु श्रीशंकराचार्य जयंती, शक वैशाख प्रारम्भ, अगस्त्य अस्त	००	०६	३४	५८	५	५७	१८	५८
३२.३८	६	रवि	४६	१०	आर्द्रा	४४	४८	अति	१०	३५	कौ	१७	४४	२	४	22	९	मिथुन	श्रीरामानुजाचार्य जयंती	००	०७	३३	२९	५	५६	१८	५९
३२.४०	७	चंद्र	४५	१०	पुर्न	४५	३०	सुक	६	००	ग	१५	४०	३	५	23	१०	क. ३०/०८	भ. ४५/१० से, श्रीगंगा जयन्ती	००	०८	३१	५८	५	५५	१८	५९
३२.४५	८	मंग	४६	१८	पुष्य	४८	१३	धृति	३	०५	वि	१५	४४	४	६	24	११	कर्क	भ. १५/४४ तक, बुध अश्वि (1) मेष में १६/५३, मंगल पू.भा. में ३३/०३	००	०९	३०	२६	५	५४	१९	००
३२.५०	९	बुध	४९	१८	श्ले.	५२	४८	शूल	१	४८	बा	१७	४८	५	७	25	१२	सिं. ५२/४८	श्रीसीता नवमी, श्रीबगुलामुखी जयन्ती, गण्डमूलादि	००	१०	२८	५२	५	५३	१९	०१
३२.५३	१०	गुरु	५३	५०	मघा	५८	५३	गंड	१	५५	तै	२१	३४	६	८	26	१३	सिंह	गण्डमूलादि विचार	००	११	२७	१५	५	५२	१९	०१
३२.५८	११	शुक्र	५९	३३	पू.फा.	६०	००	वृद्धि	३	१०	व	२६	४२	७	९	27	१४	सिंह	भ. २६/४२ से ५९/३३ तक, मोहिनी एकादशी व्रत, सूर्य भर. में C	००	१२	२५	३६	५	५१	१९	०२
३३.०३	१२	शनि	६०	००	पू.फा.	६	००	ध्रुव	५	१५	ब	३२	४४	८	१०	28	१५	क. २२/५३		००	१३	२३	५४	५	५०	१९	०३
३३.०५	१२	रवि	५	५५	उ.फा.	१३	४३	व्या.	७	४८	बा	५	५५	९	११	29	१६	कन्या	प्रदोष व्रत, स. सि. योगः 11/18 घं. मिं. तक	००	१४	२२	१५	५	४९	१९	०३
३३.१०	१३	चंद्र	१२	२५	हस्त	२१	३३	हर्ष	१०	२८	तै	१२	२५	१०	१२	30	१७	तु. ५५/२३	श्रीनृसिंह जयन्ती, बुध भर. में ४७/०८	००	१५	२०	२६	५	४८	१९	०४
३३.१३	१४	मंग	१८	४५	चित्रा	२९	१०	वज्र	१३	००	व	१८	४५	११	१३	मई	१८	तुला	भ. १८/४५ से ५१/४४ तक, मई प्रारम्भ, मई दिवस, कूर्म जयन्ती D	००	१६	१८	३९	५	४८	१९	०५
३३.१५	१५	बुध	२४	४३	स्वा	३६	२०	सिद्धि	१५	१८	ब	२४	४३	१२	१४	2	१९	तुला	वैशाख पूर्णिमा, स्नानपुण्यादि, श्रीबुद्ध जयंती, शुक्र मिथुन में E	००	१७	१७	५१	५	४७	१९	०५

A ५१/०८ (26/26 घं.मिं.), रबि-उल्सानी (मुस्ल.) प्रारंभ B वृष में २६/४०, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ C ५५/५५, शुक्र मृग. में १/०३, D श्रीसत्यनारायण व्रत E ५४/००, वैशाख स्नान समाप्त

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 24 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	१०	११	७	१	३	१०	४
०९	०६	१९	२९	२५	१९	२४	१९	१९
२९	१४	३३	२४	१९	५१	१२	४३	४३
२८	१५	५७	३८	०८	४२	४०	१८	१८
५८ २८	७६१ १	४५ ५७	११८ ४१	३ २४	६८ ५१	० २९	३ १०	३ १०
अश्वि ३	पुष्य १	शत ४	रेव ४	ज्ये. ३	रोहि ३	श्ले. ३	शत ४	पूफा २
—	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
—	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

२ शु. | १२ बु. | १ सू. | ३ | ११ मं. रा. | ४ चं. श. | १० | ५ के. | ७ | ९ | ६ | ८ गु.

बुधे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 2 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	१०	०	७	१	३	१०	४
१७	१२	२५	१५	२४	२८	२४	१९	१९
१६	३८	४१	५३	४७	५८	१९	१७	१७
१२	०१	१२	३३	२२	२१	३७	५२	५२
५८ १२	७१७ ११	४५ ५०	१२८ ४४	४ ४२	६७ ३८	१ २०	३ १०	३ १०
भर. २	स्वा. २	पूभा २	भर. १	ज्ये. ३	मृग २	श्ले. ३	शत ४	पूफा २
—	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
—	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

२ शु. | १२ | १ सू. बु. | ११ मं. रा. | ३ | ४ श. | १० | ५ के. | ७ चं. | ९ | ६ | ८ गु.

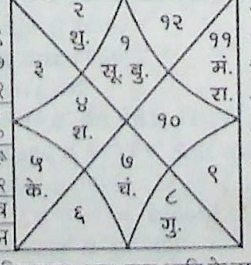

वैशाख शुक्ल पक्षफल–

19 अप्रैल, गुरुवार को अक्षय तृतीया तथा भगवान परशुराम के अवतार की पुण्य तिथि होगी। इसी दिन त्रेतायुग का भी आरम्भ हुआ था। अक्षय तृतीया बड़ी पवित्र और महान् पुण्य फल देने वाली तिथि है। इसको स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त भी माना जाता है। इस दिन किए गए जप, तप, स्नान, होम, दान आदि शुभ कर्मों का फल अनेक गुणा अधिक होता है। श्रीगंगा जयन्ती (23 अप्रैल) को हरिद्वार में प्रातः एवं मध्याह्न काल के समय श्री गंगा स्नान, जप, पाठ, दान एवं पुष्प-दीपादि सहित गंगा जी की पूजा करना विशेष कल्याणकारी होता है। ता. 25 को शक्तिस्वरूपा श्रीमाता बगुलामुखी की पूजार्चन करने से ऋण, रोग एवं शत्रुभय नहीं रहता। ता. 2 मई, बुधवार वैशाख पूर्णिमा के दिन हरिद्वार, कुरुक्षेत्र आदि तीर्थों पर जाकर जो व्यक्ति स्नान, जप, पाठ आदि के उपरान्त ब्राह्मणों को अन्न, वस्त्र, फल, जलापूरित कुम्भादि दक्षिणा सहित दान करता है, उसे अक्षय पुण्य फलों की प्राप्ति होती है। *लोक भविष्य*—वैशाख मास में पाँच मंगलवार होने से कहीं अग्निभय, तो कहीं उपयोगी वर्षा में कमी होगी। कुछ देशों के राष्ट्राध्यक्षों के मध्य टकराव एवं युद्ध के समाचार मिलेंगे। कहीं छत्रभंग (शासन परिवर्तन) या प्रमुख राजनेता की मृत्यु के योग हैं—"पंचभौमेभयं वह्णेः वृष्टिरोधस्तु कुत्रचित्। छत्रभंगस्तदा भवेत्॥" अग्निकाण्ड एवं हिंसक घटनाएं अधिक हों। पक्षारम्भ में ता. 20 को बुध पूर्व में अस्त होने से गेहूँ, धान्य, दालें, छोटी इलायची, खल-बिनौले, रूई, कपास आदि तेज भाव होंगे। ता. 24 को बुध मेष राशि में आने से सोना, चाँदी, लौह, पीतल, तांबा आदि धातुएं तेज होंगी। ता. 2 मई को मिथुन का शुक्र अरण्डी, तिल, तैल, सरसों, गुड़, अलसी में घटाबढ़ी तथा गेहूँ, चना, जौं, धान्य में तेजी करेगा।

आकाश लक्षण—इस पक्ष में उत्तरी भारत के उत्तरी क्षेत्रों में तेज हवाओं के साथ तेज बौछारें पड़ने के योग हैं। *शकुन*—अक्षय तीज को बादल चाल या बूंदाबांदी होना आगामी सुभिक्ष के संकेत हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०६४, प्रथम (शुद्ध) ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष शाक: १९२९ — सन् 2007 ई. (ता. 3 मई से 16 मई तक)

सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु:

भा. स्टै. टा. जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	तारीखें वैशा. शुक्ल	रवि. मु.	मई	वैशाख	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रह दर्शन—प्रात: मंग. पूर्व कपाल में तथा गुरु पश्चिम क्षितिज की ओर होगा। सायं श. याम्योत्तरवृत्त से कुछ पश्चिम में हटा होगा, शुक्र भी उससे कुछ ऊपर पश्चिम में होगा। (14) मई से बुध भी सायं पश्चिम में होगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
३३.२०	१	गुरु	३०	००	विशा	४२	५५	व्य.	१७	०५	कं.	३०	००	१३	१५	३	२०	वृ. २६/२०	प्रथम शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्षारम्भ	००	१८	५०	००	५	४६	१९	०६
३३.२५	२	शुक्र	३४	३३	अनु	४८	४५	वरी	१८	२०	तै	२	१७	१४	१६	४	२१	वृश्चिक	नारद जयन्ती, स. सि. योग:	००	१९	१३	०८	५	४५	१९	०७
३३.२८	३	शनि	३८	१५	ज्ये	५३	४३	परि	१८	५८	व	६	२४	१५	१७	५	२२	ध. ५३/४३	भ. ६/२४ से ३८/१५ तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 22/15(जालंधर)	००	२०	११	१४	५	४४	१९	०७
३३.३५	४	रवि	४०	५८	मूल	५७	४५	शिव	१८	५३	ब	९	३७	१६	१८	६	२३	धनु	बुध कृति. में ५८/५५ (29/16 घं. मिं.), स. सि. योग:	००	२१	०९	१८	५	४२	१९	०८
३३.३८	५	चंद्र	४२	३५	पू.षा.	६०	००	सिद्ध	१७	५८	बौ	११	४७	१७	१९	७	२४	धनु	मंगल मीन में ३८/३८, टेगौर जयन्ती	००	२२	०७	२१	५	४१	१९	०८
३३.४०	६	मंग	४२	५३	पू.षा.	०	३८	साध्य	१६	०५	गर	१२	४४	१८	२०	८	२५	म. १६/०८	भ. ४२/५३ से, बुध वृष में ३१/५३, शुक्र आर्द्रा में ५२/०८,	००	२३	०५	२५	५	४१	१९	०९
३३.४३	७	बुध	४१	४५	उ.षा.	२	१३	शुभ	१३	०८	वि	१२	१९	१९	२१	९	२६	मकर	भ. १२/१९ तक,	००	२४	०३	२५	५	४१	१९	१०
३३.४८	८	गुरु	३९	१५	श्रव	२	२५	शुक्ल	९	०५	बा	१०	३०	२०	२२	१०	२७	कुं. ३१/५८	पंचक प्रारम्भ ३१/५८,	००	२५	०१	२५	५	४०	१९	११
३३.५०	९	शुक्र	३५	१३	धनि शत	१ ५८	१० २५	ब्रह्म ऐंद्र	३ ५७	५० २३	तै	७	१४	२१	२३	११	२८	कुम्भ	सूर्य कृति. में ४२/०३,	००	२५	५९	२१	५	३९	१९	११
३३.५३	१०	शनि	२९	४३	पू.भा.	५४	१५	वैधृ	४९	४३	व	२	२८	२२	२४	१२	२९	मी. ४०/२५	भ. २/२८ से २९/४३ तक, मंगल उ.भा. में १/१८,	००	२६	५७	२०	५	३९	१९	१२
३३.५८	११	रवि	२२	३०	उ.भा.	४८	५५	विष्क	४१	०८	बा	२२	३०	२३	२५	१३	३०	मीन	बुध रोहि. में १८/२८, अपरा एकादशी व्रत, भद्रकाली एकादशी A	००	२७	५५	१५	५	३८	१९	१३
३४.००	१२	चंद्र	१५	०३	रेव	४२	३८	प्रीति	३१	४३	तै	१५	०३	२४	२६	१४	३१	मे. ४२/३८	सोम प्रदोष व्रत, बुध पश्चिम से उदय १५/२०, पंचक समाप्त ४२/३८	००	२८	५३	०८	५	३७	१९	१३
३४.०५	१३	मंग	६	२५	अश्वि	३५	४८	आयु	२१	४५	व	६	२५	२५	२७	१५	ज्ये	मेष	भ. ६/२५ से ३१/५४ तक, सूर्य वृष में ९/१५, ज्येष्ठ संक्रान्ति, ३० B	००	२९	५१	०३	५	३६	१९	१४
०० ००	१४	मंग	५७	२३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्दशी तिथि क्षय ०० ००	००	०	०	०	०	०	०	०
३४.०८	३०	बुध	४८	२५	भर	२८	४८	सौभा	११	३५	च	२२	५४	२६	२८	१६	२	वृ. ४२/०५	भावुका अमावस, वट सावित्री व्रत (राज.), शनैश्चर जयन्ती	०१	००	४८	५४	५	३५	१९	१४

A (पं.), स. सि. योग: B मु., पुण्यकाल प्रात: उषाकाल से, स. सि. योग:, वट सावित्री व्रतारम्भ

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 10 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	११	१	७	२	३	१०	४
२५	२२	०१	०३	२४	०७	२४	१८	१८
०१	४१	४७	०७	०५	५४	३३	५२	५२
०३	५६	२४	१७	४४	३९	१५	२६	२६
५७ ५९	८१६ ४५	४५ ४१	१२६ ३२	५ ५०	६६ १३	२ १०	३ १०	३ १०
भर ४	ध्रुव ४	पूभा ४	कृति २	ज्ये ३	आश्ले ९	श्ले ३	शत ४	पूफा २
—	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
—	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

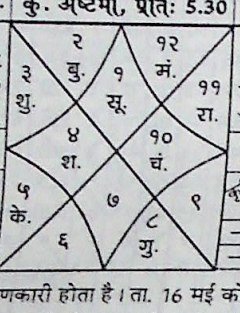

बुधे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 16 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	०	११	१	७	२	३	१०	४
००	१९	०६	१५	२३	१४	२४	१८	१८
४८	२२	२१	१८	२८	२९	४७	३३	३३
४२	०७	०७	३३	५५	०४	४५	२२	२२
५७ ५३	९०४ १२	४५ ३१	११३ ५१	६ ३२	६५ १	२ ४६	३ ११	३ ११
कृति २	भर २	उभा ९	रोहि २	ज्ये ३	आश्ले ३	श्ले ३	शत ४	पूफा २
—	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
—	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

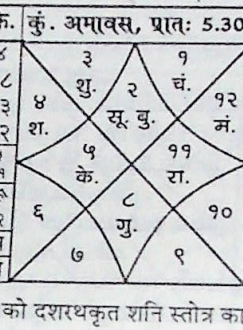

प्रथम शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्षफल—

इस पक्ष में अपरा एकादशी एवं भद्रकाली एकादशी (13 मई) का व्रत विधिपूर्वक रखने से अज्ञानतावश किए गए अनेकश: पापों से मुक्ति मिल जाती है। ता. 15 मई को **ज्येष्ठ संक्रान्ति** मंगलवार को प्रात: 9-18 बजे से वृष राशि में प्रवेश करेगी। संक्रान्ति को स्नान, जप, पाठ आदि का पुण्यकाल उषाकाल से प्रारम्भ हो जाएगा। **ज्येष्ठ मास** में स्नान, जप, ध्यानादि के पश्चात् वस्त्र, अन्न, मौसमी फल, जलापूरित-घट आदि का दान सुपात्र व्यक्ति को करना अत्यन्त कल्याणकारी होता है। इस पक्ष की त्रयोदशी से वट वृक्ष का पूजन करके अमावस तक तीन दिनों के लिए वटसावित्री का व्रत सौभाग्यशालिनी स्त्रियों को करना कल्याणकारी होता है। ता. 16 मई को **शनैश्चर** जयन्ती के दिन सायंकाल को दशरथकृत शनि स्तोत्र का पाठ शनि या शिव मन्दिर में करने से शनिजन्य दोषों की शान्ति होती है। ***व्यापारिक भविष्य***—पक्षारम्भ में ता. 7 मई को मंगल मीन राशि में आने से सोना, पीतल, पशुचारा, चौपाय, लकड़ी, कोयला, रूई, कपास के भाव तेज होंगे। चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी। ''**मीन राशि कुजश्चैव तृणं काष्ठं चतुष्पद:। महर्घं जायते सर्वगृह्यते तत्र पण्डितै:।**'' ता. 8 को बुध वृष में आने से तिल, तैल, रूई, कपास, गेहूँ, चना, मटर एवं धान्य आदि में तेजी करेगा। परन्तु ता. 9 को शुक्र **आर्द्रा** में आने से रूई, कपास, व अनाज में घटाबढ़ी एवं मन्दी रहेगी। ता. 13 को बुध रोहिणी में आने से सोना, चाँदी, तिल, तैल, सरसों, चावल, गुड़, चीनी आदि में तेजी होगी। ता. 15 को **ज्येष्ठ संक्रान्ति** मंगलवासरी होने से तिल, तैल, घी, कपूर व रसादि की वस्तुएं व सर्वप्रकार के अनाज तेज भाव होंगे। **भौमस्यवारे यदि संक्रमश्चकरोति पृथ्व्यामसुखं महर्घता। संक्रान्ति फल**—वृष, मिथुन, कन्या, तुला, वृश्चिक, मकर, व मीन राशि को प्राय: संक्रान्ति शुभ व लाभप्रद होगी। ***आकाश लक्षण***—पक्ष में गर्मी का प्रभाव बढ़ेगा। पक्षान्त में तेज हवाओं के साथ कहीं रुक-रुक कर बौछारें पड़ेगी।

वि. संवत् २०६४, प्रथम (अधि.) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष शाक: १९२९ — सन् 2007 ई. (ता. 17 मई से 1 जून तक)

सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु:

भा. स्टै. टा. जालन्धर

तारीखें	चंद्र राशि

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०६४, (प्रथम (अधि.) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष) शाकः १९२९ — सन् 2007 ई. (ता. 17 मई से 1 जून तक)

सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतुः

भा. स्टैं. टा. जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	तारीखें वैशा. शक	रवि मु.	मई	ज्येष्ठ प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रहदर्शन–प्रातः मंगल पूर्व कपाल में तथा गुरु पश्चिम में होगा। सायं शनि याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में हटा, सायं ही पश्चिम कपाल में तथा उससे ऊपर बुध दिखेगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
३४.१३	१	गुरु	३९	५८	कृति	२२	०८	शोभ अति	१ ५१	३३ ५८	किं	१४	१२	२७	२९	17	३	वृष	ज्येष्ठ अधिक मास प्रारम्भ, वक्री गुरु ज्ये. (२) में २१/०८	०१	०१	४६	४५	५	३४	१९	१५
३४.१५	२	शुक्र	३२	२३	रोहि	१६	१३	सुक	४३	१८	बा	६	११	२८	३०	18	४	मि. ४३/४३	चन्द्रदर्शन, मु. ३०,	०१	०२	४४	३१	५	३४	१९	१६
३४.२०	३	शनि	२६	१३	मृग	११	३५	धृति	३५	५०	ग	२६	१३	२९	जम	19	५	मिथुन	भ. ५३/५९ से, १ जमादिउलावल (मु.) प्रारम्भ,	०१	०३	४२	२१	५	३३	१९	१७
३४.२३	४	रवि	२१	४५	आर्द्रा	८	३५	शूल	२९	४८	वि	२१	४५	३०	२	20	६	क. ५२/३५	भ. २१/४५ तक, बुध मृग. में २५/१०,	०१	०४	४०	०८	५	३३	१९	१८
३४.२५	५	चंद्र	१९	२०	पुर्न	७	३५	गंड	२५	३०	बा	१९	२०	३१	३	21	७	कर्क	शुक्र पुर्न. में ७/३५, सूर्य सायन मिथुन में २५/२५, स. सि. यो. 8/34 से प्रा.	०१	०५	३७	५२	५	३२	१९	१८
३४.२८	६	मंग	१९	०३	पुष्य	८	३८	वृद्धि	२२	५०	तै	१९	०३	ज्ये	४	22	८	कर्क	शक ज्येष्ठ प्रारम्भ, स. सि. यो. 8/59 से प्रा.	०१	०६	३५	३४	५	३२	१९	१९
३४.३०	७	बुध	२०	५५	श्ले.	११	५०	ध्रुव	२१	५५	व	२०	५५	२	५	23	९	सिं. ११/५०	भ. २०/५५ से ५२/४७ तक,	०१	०७	३३	१३	५	३१	१९	१९
३४.३३	८	गुरु	२४	३८	मघा	१६	५०	व्या.	२२	२५	ब	२४	३८	३	६	24	१०	सिंह	बुध मिथुन राशि में ३५/५०	०१	०८	३०	५६	५	३१	१९	२०
३४.३५	९	शुक्र	२९	५०	पू.फा.	२३	२३	हर्ष	२४	०३	कौ	२९	५०	४	७	25	११	क. ४०/१०	सूर्य रोहिणी में ३२/४३, नैपच्यून वक्री २/५५	०१	०९	२८	३५	५	३०	१९	२०
३४.३८	१०	शनि	३५	५५	उ.फा.	३०	४५	वज्र	२६	२५	तै	२	५३	५	८	26	१२	कन्या	मेला गंङ्गा दशहरा (हरिद्वार), स्नान, दान, जपादि (देखें पृष्ठ 69)	०१	१०	२६	११	५	३०	१९	२१
३४.४३	११	रवि	४२	२०	हस्त	३८	३५	सिद्धि	२९	०८	व	९	०८	६	९	27	१३	कन्या	भ. ९/०८ से ४२/२० तक, पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत, स. सि. यो.	०१	११	२३	४८	५	२९	१९	२२
३४.४५	१२	चंद्र	४८	३३	चित्रा	४६	१३	व्य.	३१	४३	बव	१५	२७	७	१०	28	१४	तु. १२/२५		०१	१२	२१	२३	५	२९	१९	२३
३४.४५	१३	मंग	५४	१०	स्वा.	५३	१५	वरी	३३	५५	कौ	२१	२२	८	११	29	१५	तुला	मंगल रेव. में ४०/१३, बुध आर्द्रा में ३३/३८, प्रदोष व्रत	०१	१३	१८	५७	५	२९	१९	२३
३४.४८	१४	बुध	५८	५५	विशा	५९	३०	परि	३५	३३	ग	२६	३३	९	१२	30	१६	वृ. ४३/००	भ. ५८/५५ से, शुक्र कर्क में ४२/५८, स. सि. यो.	०१	१४	१६	२६	५	२९	१९	२४
३४.५०	१५	गुरु	६०	००	अनु	६०	००	शिव	३६	३०	वि	३०	५०	१०	१३	31	१७	वृश्चिक	भ. ३०/५० तक, श्रीसत्यनारायण व्रत	०१	१५	१३	५८	५	२८	१९	२४
३४.५०	१५	शुक्र	२	४५	अनु	४	५०	सिद्ध	३६	३८	बव	२	४५	११	१४	जून	१८	वृश्चिक	अधि-ज्येष्ठ पूर्णिमा, स. सि. यो., जून मास प्रारम्भ	०१	१६	११	२८	५	२८	१९	२४

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 24 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	११	१	७	२	३	१०	४
०८	०९	१२	२९	२२	२३	२५	१८	१८
३०	५४	२४	०६	३४	०२	१२	०७	०७
५६	२०	१३	३२	०१	३३	३१	५६	५६
५७ ३९	७२६ १४	४५ १३	८९ १९	७ १३	६३ १	३ ३१	३ ११	३ ११
कृति ४	मघा ३	उभा ३	मृग २	ज्ये. २	पुर्न १	श्ले. ३	शत ४	पूफा २
—	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

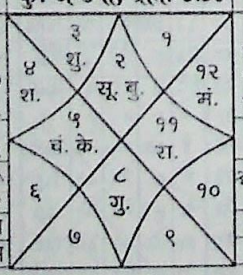

शुक्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 1 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	११	२	७	३	३	१०	४
१६	१५	१८	०९	२१	०१	२५	१७	१७
११	४१	२४	२५	३४	१८	४३	४२	४२
३३	२३	४६	३३	४६	१५	०४	३०	३०
५७ २९	७४५ १	४४ ५३	६१ २५	७ ३५	६० ३०	४ १३	३ ११	३ ११
रोहि २	अनु ४	रेव १	आर्द्रा १	ज्ये. २	पुर्न ४	श्ले. ३	शत ४	पूफा २
—	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

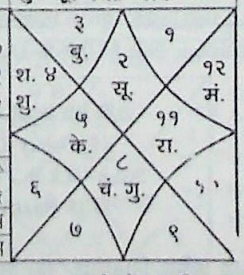

अधि. ज्येष्ठ शुक्ल पक्षफल–

17 मई, गुरूवार से ज्येष्ठ **अधिक मास** का प्रारम्भ होगा, जो कि 15 जून, शुक्रवार तक व्याप्त रहेगा। इस समयावधि में विवाह, मुण्डन, देव प्रतिष्ठा, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, यज्ञोपवीत संस्कार, काम्य व्रतानुष्ठानादि का आरम्भ, नववधू प्रवेश, नवीन आभूषण बनवाना, नई गाड़ी खरीदना आदि मांगलिक कार्यों के सम्पादन करने का त्याग करना चाहिए। परन्तु किसी रोग, ऋणादि कष्ट निवृत्ति के लिए किए जाने वाले जपादि अनुष्ठान, सन्तान के जन्म सम्बन्धी कृत्य, गर्भाधान, पुंसवन, और सीमान्त जैसे संस्कार तथा पूर्वागत एवं पूर्वनियोजित कार्य, प्रयोगादि किए जा सकते हैं। **अधिक मास** में शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ करके अमावस्या तक तीस दिनों में भगवान विष्णु की प्राप्ति के लिए जो व्रत, उपवास, स्नान, दान या पूजनादि किए जाते हैं, उनका अक्षय फल होता है और अनिष्ट नष्ट हो जाते हैं। अधिमास में एकभुक्त व्रत करके यथासामर्थ्य जप, दान, पुण्यादि करना चाहिए। यदि पूरे मास (30 दिन) व्रतादि करने की सामर्थ्य न हो, तो किसी एक शुभ दिन (एकादशी, पूर्णमाशी आदि) दोनों (पति-पत्नी) प्रातः स्नानादि नित्यकर्म करके वासुदेव को हृदय में रखकर व्रत करें। **अधिक मास** सम्बन्धी अधिक जानकारी के लिए **पुरूषोत्तम माहात्म्य** पुस्तक का पाठाध्ययन करना चाहिए। इस पक्ष की दशमी तिथि को मेला/पर्व **श्रीगंगा दशहरा** (हरिद्वार) तीर्थ पर बड़ी श्रद्धा भावना से मनाया जाएगा। यद्यपि **अधिमास** में प्रायः सभी पर्वों को मनाने का निषेध है, परन्तु गंगा दशहरा पर्व को मनाने की शास्त्राज्ञा अधिक मास में ही प्रदान की गई है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०६४, द्वितीय (अधि.) ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष शाक: १९२९ — सन् 2007 ई. (ता. 2 जून से 15 जून तक) — भा. स्टैं. टा. जालन्धर

सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु:

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रहलोपदर्शन–प्रातः मंगल पूर्व कपाल में तथा गुरु को पश्चिम में देखें। सायं शनि, मंग. पश्चिम कपाल में परस्पर आसन्न तथा बुध पश्चिम क्षितिजासन्न होगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
३४.५३	१	शनि	५	३०	ज्ये	९	१०	साध्य	३५	५८	कौ	५	३०	१२	१५	2	१९	ध. ९/१०	अधि-ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, शुक्र पुष्य में १/१३, गण्डमूलादि	०१	१७	०८	५५	५	२८	१९	२५
३४.५५	२	रवि	७	२०	मूल	१२	३५	शुभ	३४	३३	ग	७	२०	१३	१६	3	२०	धनु	भ. ३७/४४ से, स. सि. यो. 10/29 तक, गण्डमूलादि	०१	१८	०६	२३	५	२७	१९	२५
३४.५८	३	चंद्र	८	०८	पू.षा.	१४	५८	शुक्ल	३२	२३	वि	८	०८	१४	१७	4	२१	म. ३०/२५	भ. ८/०८ तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 22/41 (जालन्धर)	०१	१९	०३	५०	५	२७	१९	२६
३५.००	४	मंग	७	५८	उ.षा.	१६	२५	ब्रह्म	२९	२५	बा	७	५८	१५	१८	5	२२	मकर		०१	२०	०१	१६	५	२७	१९	२७
३५.००	५	बुध	६	४८	श्रव	१६	५५	ऐंद्र	२५	४०	तै	६	४८	१६	१९	6	२३	कुं. ४६/४८	पंचक प्रारम्भ ४६/४८,	०१	२०	५८	४२	५	२७	१९	२७
३५.००	६	गुरु	४	३८	धनि	१६	२५	वैधृ	२१	०८	व	४	३८	१७	२०	7	२४	कुम्भ	भ. ४/३८ से ३३/०२ तक,	०१	२१	५६	०७	५	२७	१९	२७
३५.०३	७	शुक्र	१	२५	शत	१४	५०	विष्क	१५	४०	बव	१	२५	१८	२१	8	२५	मी. ५७/५८	सूर्य मृग. में २७/४३,	०१	२२	५३	२८	५	२७	१९	२८
०० ००	८	शुक्र	५७	०८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	अष्टमी तिथि का क्षय ०० ०० ००	००	०	०	०	०	०	०	०
३५.०४	९	शनि	५१	४८	पू.भा.	१२	१३	प्रीति	९	२३	तै	२४	२८	१९	२२	9	२६	मीन		०१	२३	५०	५२	५	२७	१९	२८
३५.०५	१०	रवि	४५	३३	उ.भा.	८	३५	आयु सौभ	२ ५४	१८ २३	व	१८	४१	२०	२३	10	२७	मीन	भ. १८/४१ से ४५/३३ तक, गण्डमूलादि 8/52 उप., स. सि. यो.	०१	२४	४८	३५	५	२६	१९	२८
३५.०८	११	चंद्र	३८	२८	रेव अश्वि	४ ५८	०२ ४५	शोभ	४५	५०	बव	१२	०१	२१	२४	11	२८	मे. ४/०३	पंचक समाप्त ४/०३, पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत, गण्डमूलादि	०१	२५	४५	३८	५	२६	१९	२९
३५.०८	१२	मंग	३०	५०	भर	५३	०३	अति	३६	५५	कौ	४	३९	२२	२५	12	२९	मेष	भौम प्रदोष व्रत	०१	२६	४३	००	५	२६	१९	२९
३५.१०	१३	बुध	२३	०३	कृति	४७	१८	सुक	२७	५०	व	२३	०३	२३	२६	13	३०	वृ. ६/३८	भ. २३/०३ से ४९/१३ तक, वक्री गुरु ज्ये. (१) में २६/५५, शनि A	०१	२७	४०	२०	५	२६	१९	३०
३५.१०	१४	गुरु	१५	२३	रोहि	४१	५३	धृति	१८	५५	श	१५	२३	२४	२७	14	३१	वृष	अमावस पितृकार्येषु	०१	२८	३७	४४	५	२६	१९	३०
३५.१०	३०	शुक्र	८	१३	मृग	३७	१३	शूल	१०	२८	ना	८	१३	२५	२८	15	आ.	मि. ९/२५	ज्येष्ठ अधिक मास समाप्त, अमावस, सूर्य मिथुन में २६/०८, B	०१	२९	३५	०५	५	२६	१९	३०

A आश्ले. (4) में १४/५८, स. सि. योग: B आषाढ़ संक्रान्ति, ३० मु., पुण्यकाल सं. प्रात: 9/29 घं. मिं. बाद, बुध वक्री ५९/२३

शुक्रे सप्तम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 8 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	११	२	७	३	३	१०	४
२२	१६	२३	१५	२०	०८	२६	१७	१७
५३	३७	३७	१४	४१	१३	१४	२०	२०
३८	०८	५७	०६	२२	४९	१२	१५	१५
५७ २४	८३३ ७	४४ ३३	३३ ३२	७ ३९	५७ ४५	४ ४६	३ ११	३ ११
रोहि. ४	शत ३	रेव ३	आश्ले. ३	ज्ये. २	पुष्य २	मृगे. ३	शत ४	पुष्य २
—	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5.30

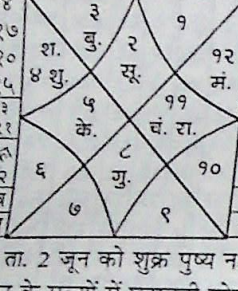

शुक्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 15 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	११	२	७	३	३	१०	४
२९	२७	२८	१७	१९	१४	२६	१६	१६
३५	४६	४८	३५	४८	४८	४९	५७	५७
१५	१९	३५	५९	२१	२९	०६	५९	५९
५७ २०	८७६ ४९	४४ १२	६ ४६	७ २९	५४ ५६	५ १२	३ ११	३ ११
मृग २	मृग २	रेव ४	आश्ले. ४	ज्ये. १	पुष्य ४	मृगे. ४	शत ४	पुष्य २
—	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
—	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रात: 5.30

अधि. ज्येष्ठ कृष्ण पक्षफल–

गतपक्ष की भान्ति इस पक्ष में भी विवाह, मुण्डन, गृह-प्रवेश आदि शुभ कृत्यों के सम्पादन का त्याग रहेगा। इस पक्ष में भी भगवान लक्ष्मीनारायण एवं सूर्य देव की पूजार्चन करके पुरूषोत्तमा एकादशी का व्रत रखना तथा यथाशक्ति अनाज, वस्त्र, फल, मिष्टान्न का दक्षिणा सहित दान करना कल्याणकारी होता है।

लोक भविष्य—द्वि-ज्येष्ठ मास होने से कहीं राजनेताओं में टकराव, छत्रभंग (राज्य-परिवर्तन) होने के संकेत हैं।

व्यापारिक रुख—आरम्भ में ता. 2 जून को शुक्र पुष्य नक्षत्र में प्रविष्ट होने से रूई, सूत, सन, रेशम, ऊन, पटसन, बारदाना एवं धान्य में तेजी होगी, परन्तु लाख, चमड़ा, हींग, गुड़, बाजरा में मन्दा होगा। चीनी व शक्कर के मूल्यों में घटाबढ़ी रहेगी। अष्टमी तिथि, ता. 8 जून को सूर्य मृगशिर में आने से उड़द, मोंठ, मूंग, बाजरा, रूई, कपास व अलसी के भाव तेज होंगे। सोना व चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी। त्रयोदशी (13 जून) को वक्री गुरु ज्येष्ठा १ में दाखिल होने से सोना व चांदी के भावों में अस्थिरता बनेगी। ता. 15 जून (अमावस) को ज्येष्ठ अधि-मास की समाप्ति होगी। इसी दिन बाद दोपहर से सूर्य मिथुन राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। उस पर मंगल की विशेष दृष्टि रहेगी। जिससे गेहूँ, चना, चावल, मक्की, घी, चीनी, शक्कर, तिल, तैल, फल, सब्जियाँ तेज भाव होंगी। सोना, चाँदी में भी मजबूती का माहौल बना रहेगा। *संक्रान्ति फल*—वृष, मिथुन, कन्या, वृश्चिक, मकर व मीन राशि वालों को शुभ एवं लाभदायक रहेगी। *आकाश लक्षण*—उत्तरी भारत के पूर्वी क्षेत्रों में तेज हवाओं के साथ तीव्र बौछारें पड़ने के योग हैं। पूर्वार्द्ध भाग में तीव्र गर्मी एवं लू से हानि होने के योग हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

वि. संवत् २०६४, द्वितीय (शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष शाक: १९२९ — तारीख — चंद्र राशि — सन् 2007 ई. (ता. 16 जून से 30 जून तक) — भा. स्टैं. टा.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०६४, द्वितीय (शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष शाकः १९२९ — तारीखें — चंद्र राशि प्रवेश घटी पल

सन् 2007 ई. (ता. 16 जून से 30 जून तक)

सूर्य उत्तर-दक्षिणायन, उत्तर गोल, ग्रीष्म-वर्षा ऋतुः

भा. स्टैं. टा. जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	ज्ये. शक.	जमा. मु.	जून	आषाढ़ प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रहलोपदर्शन—प्रातः मंगल पूर्व कपाल में होगा। सायं पूर्व में गुरु, मं.-श. पश्चिम क्षितिज से ऊपर परस्पर आसन्न होंगे। 20 जून से बुध पश्चिम में ही अस्त हो जाएगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
३५.१०	१	शनि	२	०३	आर्द्रा	३३	४३	गंड वृद्धि	२ ५६	४८ १५	बव	२	०३	२६	२९	16	२	मिथुन	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, मंगल अश्वि (1) मेष में ३७/१८,	०२	००	३२	२५	५	२६	१९	३०
०० ००	२	शनि	५७	१३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	द्वितीया तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३५.१३	३	रवि	५४	०३	पुर्न	३१	४५	ध्रुव	५१	०५	तै	२५	३८	२७	जम	17	३	क. १७/०३	शुक्र आश्ले. में ३/५३, रम्भा तृतीया व्रत, प्रताप जयंती, १ जमादि- A	०२	०१	३०	४४	५	२६	१९	३१
३५.१३	४	चंद्र	५२	५०	पुष्य	३१	३५	व्या.	४७	२८	व	२३	२७	२८	२	18	४	कर्क	भ. २३/२७ से ५२/५० तक, स. सि. यो.	०२	०२	२७	०२	५	२६	१९	३१
३५.१३	५	मंग	५३	३३	श्ले.	३३	२३	हर्ष	४५	२३	बव	२३	१२	२९	३	19	५	सिं. ३३/२३	गण्डमूल विचार, स. सि. यो.	०२	०३	२४	२३	५	२७	१९	३२
३५.१३	६	बुध	५६	१५	मघा	३७	१०	वज्र	४४	५३	कौ	२४	५४	३०	४	20	६	सिंह	राहु शत ३ केतु पू.फा. १ में ३९/०५, वक्री बुध पश्चिम में अस्त २३/२८	०२	०४	२१	४०	५	२७	१९	३२
३५.१३	७	गुरु	६०	००	पू.फा.	४२	३८	सिद्धि	४५	४५	ग	२८	२७	३१	५	21	७	कं. ५९/१३	सूर्य सायन कर्क में ४५/२५, सायन दक्षिणायन प्रा., वर्षा ऋतु प्रारम्भ	०२	०५	१८	५६	५	२७	१९	३२
३५.१३	७	शुक्र	०	३८	उ.फा.	४९	२३	व्य.	४७	३५	व	०	३८	आ.	६	22	८	कन्या	भ. ०/३८ से ३३/२४ तक, सूर्य आर्द्रा में २५/००, श्रीदुर्गाष्टमी B	०२	०६	१६	१२	५	२७	१९	३२
३५.१२	८	शनि	६	१०	हस्त	५६	५०	वरी	५०	००	बव	६	१०	२	७	23	९	कन्या	यूरेनस वक्री ३६/५५	०२	०७	१३	२७	५	२७	१९	३२
३५.११	९	रवि	१२	१३	चित्रा	६०	००	परि	५२	३०	कौ	१२	१३	३	८	24	१०	तु. ३०/३८		०२	०८	१०	४३	५	२८	१९	३२
३५.१०	१०	चंद्र	१८	१८	चित्रा	४	२३	शिव	५४	४८	ग	१८	१८	४	९	25	११	तुला	भ. ५१/०३ से	०२	०९	०७	५७	५	२८	१९	३२
३५.१०	११	मंग	२३	४८	स्वा.	११	२८	सिद्ध	५६	२५	वि	२३	४८	५	१०	26	१२	तुला	भ. २३/४८ तक, निर्जला एकादशी व्रत	०२	१०	०५	१३	५	२९	१९	३३
३५.१०	१२	बुध	२८	२०	विशा	१७	४३	साध्य	५७	१३	बा	२८	२०	६	११	27	१३	वृ. १/१५	प्रदोष व्रत	०२	११	०२	२५	५	२९	१९	३३
३५.१०	१३	गुरु	३१	४३	अनु	२२	५०	शुभ	५७	०३	तै	३१	४३	७	१२	28	१४	वृश्चिक	वट सावित्री व्रतारम्भ, स. सि. यो. 14/37 घं.मिं. तक	०२	११	५९	३७	५	२९	१९	३३
३५.१०	१४	शुक्र	३३	४५	ज्ये	२६	४५	शुक्ल	५५	५३	ग	२	४४	८	१३	29	१५	ध. २६/४५	भ. ३३/४५ से,	०२	१२	५६	४९	५	२९	१९	३३
३५.०९	१५	शनि	३४	३३	मूल	२९	२०	ब्रह्म	५३	४३	वि	४	०९	९	१४	30	१६	धनु	भ. ४/०९ तक, ज्येष्ठ पूर्णिमा, वट सावित्री व्रत, सन्त कबीर C	०२	१३	५४	०२	५	३०	१९	३३

A उल्सानी (मुस्लि.) प्रारम्भ B धूमावती जयन्ती, मेला खीर (क्षीर) भवानी (काश्मीर), शक आषाढ़ प्रारम्भ C जयंती, श्रीसत्यनारायण व्रत

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 23 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	०	२	७	३	३	१०	४
०७	१२	०४	१५	१८	२१	२७	१६	१६
१३	०७	३९	५५	५०	४६	३३	३२	३२
३४	५१	४५	०९	३८	५५	१२	३३	३३
५७ १४	७११ १	४३ ३५	२८ ५१	६ ५३	४९ २०	५ ४८	३ ११	३ ११
आर्द्रा १	हस्त १	अश्वि २	आर्द्रा ३	ज्ये. १	श्ले. २	श्ले. ४	शत ३	पूफा १
—	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
—	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

४ श. शु. | २ | ३ सू. बु. | ५ के. | १ मं. | ६ चं. | १२ | ७ | ९ | ११ रा. | ८ गुरु | १०

शनौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 30 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	०	२	७	३	३	१०	४
१३	०७	०९	१२	१८	२७	२८	१६	१६
५४	०३	४३	००	०४	१५	१५	१०	१०
०२	३१	१७	५७	३४	३४	०३	१७	१७
५७ ११	७७३ २५	४३ ४	३४ १३	६ १०	४३ २८	६ १३	३ ११	३ ११
आर्द्रा ३	मूल ३	अश्वि ३	आर्द्रा २	ज्ये. १	श्ले. ४	श्ले. ४	शत ३	पूफा १
—	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
—	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

४ श. शु. | २ | ३ सू. बु. | ५ के. | १ मं. | ६ | १२ | ७ | ९ चं. | १ रा. | ८ गुरु | १०

द्वितीय (शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष–

इस पक्ष की तृतीया (17 जून) को रम्भातीज का व्रत विधिपूर्वक रखने से स्त्रियों को विवाह, सन्तति एवं सौभाग्यादि सुखों की प्राप्ति होती है। इसमें मन्त्रपूर्वक गौरिमाता को फल, पुष्पाक्षतादि चढ़ाए जाते हैं। मन्त्र—"त्वं शक्तिस्त्वं स्वधा स्वाहा, त्वं सावित्री सरस्वती। पतिं देहिं गृहं देहि सुतान् देहि नमोऽस्तु ते॥" दशमी को श्रीगंगा दशहरा हरिद्वार का मुख्य पर्व, अधि ज्येष्ठ शुक्ल दशमी (26 मई) को ही मनाया जाएगा। प्रासंगिक रूप से दशमी तिथि 25 जून सोमवार के दिन श्रीगंगा तट (हरिद्वारादि) तीर्थों पर स्नान, दान-जपादि का माहात्म्य रहेगा। निर्जला एकादशी (26 जून) को निराहार व्रत रखकर स्नान, जप-पाठादि के बाद संकल्पपूर्वक अनाज, वस्त्र, फल, मिष्टान्न, जलपूरित पात्र, पंखा आदि का दान करना शुभ एवं प्रशस्त होता है। अष्टमी (22 जून) को मेला खीर (क्षीर) भवानी के दिन श्री दुर्गा मन्दिरों में (जम्मू-कश्मीर) खीर-पूरी का भोग लगा कर देवी माता की अर्चना की जाती है। *लोक भविष्य*—द्वि-ज्येष्ठ कृष्ण एवं ज्येष्ठ शुक्ल मास के बीच पाँच शनिवार होने से इस मास के मध्य सर्व प्रकार के अनाज एवं खाद्य तेल तेज़ भाव होंगे। नेताओं में परस्पर विरोध व टकराव पैदा होंगे। भारत में कहीं छत्र-भंग (शासन परिवर्तन) व हिंसक व अग्निकांड की घटनाएं घटित होंगी—शनिवारा यदा पंच जायन्ते रविपंचकमथवा। महर्घं जायते रोग शोक आकुला पृथिवी॥ पक्षारम्भ में शनिवार को चन्द्रदर्शन एवं मंगल अश्वि., मेष राशि में आने से मूँग, मिर्च, सोना, पीतल आदि धातुएँ तेज भाव होंगी। ता. 22 को सूर्य आर्द्रा में अष्टमी के दिन प्रविष्ट होने से सर्व प्रकार के अनाज तेज़ हों, कहीं वर्षा में कमी रहे, परन्तु शुक्रवार को होना सुभिक्षकारक होगा। *आकाश लक्षण*—पक्षारम्भ से शनि-मंगल के मध्य परस्पर दृष्टि होने से खण्ड वर्षा अर्थात् अनुकूल एवं उपयोगी वर्षा की कमी रहेगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०६४, आषाढ़ कृष्ण पक्ष शाकः १९२९ — सन् 2007 ई. (ता. 1 जुलाई से 14 जुलाई तक)

भा. स्टै. टा. — जालन्धर

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतुः

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	तारीखें आषा.	जमा.	जुलाई	आषाढ़	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रहलोपदर्शन—सायं शु.–श. पश्चिम कपाल में परस्पर आसन्न और गुरु पूर्व में काफी ऊपर होगा। प्रातः मंग. पूर्व कपाल में, 7 जुला. से बुध भी प्रातः पूर्व में दिखेगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
३५.०८	१	रवि	३४	१३	पू.षा.	३०	५३	ऐंद्र	५०	४५	बा	४	२३	१०	१५	1	१७	म. ४६/०५	जुलाई मास प्रारम्भ,	०२	१४	५१	१३	५	३०	१९	३३
३५.०७	२	चंद्र	३२	५३	उ.षा.	३१	२३	वैधृ	४६	५५	तै	३	३३	११	१६	2	१८	मकर		०२	१५	४८	२६	५	३०	१९	३३
३५.०५	३	मंग	३०	३८	श्रव	३१	००	विष्क	४२	२५	व	१	४६	१२	१७	3	१९	मकर	भ. १/४६ से ३०/३८ तक, अंङ्गारकी गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय A	०२	१६	४५	३७	५	३१	१९	३३
३५.०४	४	बुध	२७	३८	धनि	२९	५५	प्रीति	३७	२०	बा	२७	३८	१३	१८	4	२०	कुं. ०/३३	पंचक प्रारम्भ ०/३३, A 21/57, शुक्र मघा १ सिंह में ५४/४३,	०२	१७	४२	४८	५	३१	१९	३३
३५.०३	५	गुरु	२३	५५	शत	२८	०५	आयु	३१	४०	तै	२३	५५	१४	१९	5	२१	कुम्भ	मंगल भर. में २/५८,	०२	१८	४०	०२	५	३२	१९	३३
३५.०२	६	शुक्र	१९	४०	पू.भा.	२५	४०	सौभा	२५	३५	व	१९	४०	१५	२०	6	२२	मी. ११/२०	भ. १९/४० से ४७/१३ तक, सूर्य पुर्न. में २३/५८	०२	१९	३७	१६	५	३२	१९	३३
३५.००	७	शनि	१४	४५	उ.भा.	२२	४०	शोभ	१८	५५	ब	१४	४५	१६	२१	7	२३	मीन	वक्री बुध पूर्व में उदय २४/३५,	०२	२०	३४	२९	५	३३	१९	३३
३४.५६	८	रवि	९	२०	रेव	१९	०८	अति	११	५३	कौ	९	२०	१७	२२	8	२४	मे. १९/०८	पंचक समाप्त १९/०८, गण्डमूलादि विचार	०२	२१	३१	४१	५	३४	१९	३२
३४.५५	९	चंद्र	३	३०	अश्वि	१५	१५	सुक धृति	४ ५६	३० ५५	ग	३	३०	१८	२३	9	२५	मेष	भ. ३०/२७ से ५७/२३ तक, गण्डमूलादि	०२	२२	२८	५४	५	३४	१९	३२
०० ००	१०	चंद्र	५७	२३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	दशमी तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३४.५३	११	मंग	५१	०५	भर	११	०३	शूल	४९	१०	बव	२४	१४	१९	२४	10	२६	वृ. २४/५८	योगिनी एकादशी व्रत सर्वेषाम्, बुध मार्गी ५/१३	०२	२३	२६	०८	५	३५	१९	३२
३४.५२	१२	बुध	४४	५५	कृति	६	४८	गंड	४१	३०	कौ	१८	००	२०	२५	11	२७	वृष	स. सि. यो. 8/18 से,	०२	२४	२३	२३	५	३५	१९	३२
३४.४८	१३	गुरु	३९	०८	रोहि मृग	२ ५९	४० ०५	वृद्धि	३४	०८	ग	१२	०२	२१	२६	12	२८	मि. ३०/४८	भ. ३९/०८ से, प्रदोष व्रत	०२	२५	२०	३७	५	३६	१९	३१
३४.४५	१४	शुक्र	३३	५८	आर्द्रा	५६	१५	ध्रुव	२७	१५	वि	६	३३	२२	२७	13	२९	मिथुन	भ. ६/३३ तक,	०२	२६	१७	५३	५	३७	१९	३१
३४.४५	३०	शनि	२९	५३	पुर्न	५४	३३	व्या.	२१	१३	च	१	५६	२३	२८	14	३०	क. ३९/५०	शनैश्चरी अमावस, स्नानदान, तर्पणादि	०२	२७	१५	११	५	३७	१९	३१

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 8 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	०	२	७	४	३	१०	४
२१	२५	१५	०८	१७	०२	२९	१५	१५
३१	२६	२५	४१	१८	३४	०६	४४	४४
३२	०६	३५	२३	५१	१५	०८	५१	५१
५० १३	८५३ ४७	४२ २४	७ ५०	५ ६	३४ ४१	६ ३६	३ ११	३ ११
पुर्न ९	पूर्व ३	भर ९	आर्द्रा ९	ज्ये. ९	मघा ९	मूले. ४	शत ३	पूर्वा ०
—	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

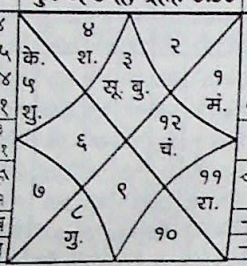

शनौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 14 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	०	२	७	४	३	१०	४
२७	२०	१९	०९	१६	०५	२९	१५	१५
१४	४८	३८	१०	५०	४१	४६	२५	२५
५४	१४	४०	१२	२७	५८	२६	४६	४६
५७ १४	८२१ ५४	४१ ५०	२३ १२	४ १२	२६ १०	६ ५२	३ ११	३ ११
पुर्न ३	पुर्न ९	भर २	आर्द्रा ९	ज्ये. १	मघा २	मूले. ४	शत ३	मूला १
—	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

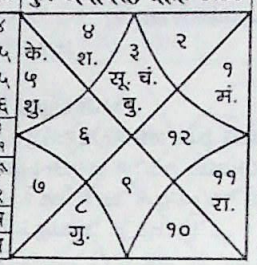

आषाढ़ कृष्ण पक्ष–

आषाढ़ मास में भगवान् श्रीविष्णु की प्रसन्नता के लिए ब्रह्मचारी रहते हुए स्नानोपरान्त नित्यप्रति श्री सहित विष्णु पूजार्चना के बाद ब्राह्मण दम्पत्ति को क्षीर सहित भोजन करवाना तथा यथाशक्ति छाता, जूते, आँवले, आम, खरबूजे, घड़ा (पात्र), वस्त्र, मिष्ठान्न का दान करना तथा स्वयं भी एक समय भोजन करने से विशेष पुण्य फलों की प्राप्ति होती है। *स्वास्थ्य*—आषाढ़ मास में स्वयं को (विशेषकर सिर को) धूप व गर्मी से बचाना चाहिए। इस मास में सादा भोजन, मौसमी फलों एवं शीतल जल का सेवन करना स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद होता है।

व्यापार रूख—पक्षारम्भ में ता. 3 को शुक्र सिंह राशि में प्रविष्ट होकर केतु के साथ मेल करेगा। जिससे गेहूँ, चना, धान्य, लाल चन्दन, मजीठ, लाल मिर्च, घृत, पशुचारा एवं पशुओं के मूल्यों में तेजी होगी। अलसी, सरसों व मूंगफली, सोना, चांदी के भावों में एक सप्ताह में विशेष तेज़ी होगी—दैत्य गुरूर्यदा मेषे सर्वधान्य महर्घता। महिषी पशु पीडा च मेघवर्षा भविष्यति॥ वर्षा अच्छी हो। ता. 6 जुलाई को सूर्य पुनर्वसु में आने से सोना, चांदी, रूई, खल, बिनौले, तिल, मूंगफली, अलसी, सरसों, उड़द, गुड़ व चीनी के भावों में भी तेज़ी होगी। आषाढ़ मास में पांच रविवार होने से देश में कहीं दुर्भिक्ष, (अनाज की कमी) एवं अनाज के मूल्यों में विशेष वृद्धि, कहीं छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन) तथा राजनीतिक संकट एवं प्रजा में भय हो—यत्र मासे रविवारा जायन्ते पंचसततम्। दुर्भिक्षं छत्रभंगस्यात् दास्ते च महद्भयम्॥ ता. 7 जुलाई शनिवार को बुध मिथुन राशि में पूर्व से उदय होगा। जिससे सर्व प्रकार की व्यापारिक वस्तुएँ तेज भाव होंगी। एकादशी (10 जुला.) से बुध मार्गी होने से मोंठ, मूंग, चनों में मन्दी का रूझान बनेगा। शनिवासरी अमावस्या आने वाले दिनों में थोक व वायदा बाज़ार में तेज़ी की चमक बनाये रखेगी।

आकाश लक्षण—भारत के अधिकांश प्रदेशों जैसे असम, महाराष्ट्र, बिहार, उड़ीसा, बंगाल, उत्तर प्रदेश में वर्षा होने के योग हैं।

वि. संवत् २०६४, आषाढ़ शुक्ल पक्ष शाकः [illegible] — [illegible] 15 जुलाई से 30 जुलाई तक)

भा. स्टै. टा. — जालन्धर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०६४, आषाढ़ शुक्ल पक्ष शाकः १९२९

सन् 2007 ई. (ता. 15 जुलाई से 30 जुलाई तक)

सूर्य दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतुः

भा. स्टैं. टा. जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	तारीखें आषा. क्र.	आषा. मा.	जुलाई	आषाढ़	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रहलोपदर्शन—साथ में—रा. पश्चिम क्षितिज से ऊपर परस्पर आसन्न तथा गु. पूर्व कपाल में दिखाई देगा। प्रातः बुध पूर्व में तथआ मंगल भी पूर्व कपाल में काफी ऊपर होगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्थ. क.	इष्ट. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
३४.४०	१	रवि	२७	००	पुष्य	५४	१३	हर्ष	१६	०८	बव	२७	००	२४	२९	15	३१	कर्क	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, शनि मघा १ सिंह में ५७/३८	०२	२८	१२	२५	५	३८	१९	३०
३४.४०	२	चंद्र	२५	४५	श्ले.	५५	३०	वज्र	१२	२०	कौ	२५	४५	२५	रज.	16	श्रा.	सिं. ५५/३०	सूर्य कर्क में ५२/४५, श्रावण संक्रान्ति, मु. १५, रथ यात्रा (पुरी) A	०२	२९	०९	४१	५	३८	१९	३०
३४.३५	३	मंग	२६	०८	मघा	५८	२८	सिद्धि	९	४८	गर	२६	०८	२६	२	17	२	सिंह	भ. ५७/१२ से, गण्डमूल विचार	०३	००	०६	५७	५	३९	१९	२९
३४.३५	४	बुध	२८	१५	पू.फा.	६०	००	व्य.	८	४०	वि	२८	१५	२७	३	18	३	सिंह	भ. २८/१५ तक,	०३	०१	०४	१३	५	३९	१९	२९
३४.३३	५	गुरु	३१	५८	पू.फा.	३	०३	वरी	८	४८	बव	०	०६	२८	४	19	४	कं. १९/२५		०३	०२	०१	३१	५	४०	१९	२९
३४.३०	६	शुक्र	३६	५८	उ.फा.	९	०५	परि	१०	०३	कौ	४	२८	२९	५	20	५	कन्या	सूर्य पुष्य में २२/१५, कुमार षष्ठी, स्कन्द षष्ठी	०३	०२	५८	४८	५	४०	१९	२८
३४.२८	७	शनि	४२	४५	हस्त	१६	०३	शिव	१२	०३	गर	९	५२	३०	६	21	६	तु. ४९/४५	भ. ४२/४५ से, विवस्वत सप्तमी	०३	०३	५६	०५	५	४१	१९	२८
३४.२७	८	रवि	४८	४५	चित्रा	२३	३०	सिद्ध	१४	२८	वि	१५	४५	३१	७	22	७	तुला	भ. १५/४५ तक, श्रीदुर्गाष्टमी	०३	०४	५३	२५	५	४१	१९	२८
३४.२३	९	चंद्र	५४	२३	स्वा	३०	४५	साध्य	१६	४८	बा	२१	३४	श्रा.	८	23	८	तुला	भढली नवमी, सूर्य सायन सिंह में १२/००, मेला शरीक भवानी (काश्) B	०३	०५	५०	४२	५	४२	१९	२७
३४.२०	१०	मंग	५९	०८	विशा	३७	२३	शुभ	१८	४०	तै	२६	४५	२	९	24	९	वृ. २०/४८	मंगल कृति में १०/४५, B शक श्रावण प्रारम्भ	०३	०६	४७	५९	५	४२	१९	२६
३४.१५	११	बुध	६०	००	अनु	४२	४८	शुक्ल	१९	४३	व	३०	५२	३	१०	25	१०	वृश्चिक	भ. ३०/५२ से प्रा., स. सि. यो.	०३	०७	४५	२०	५	४३	१९	२५
३४.१३	११	गुरु	२	३५	ज्ये.	४६	५०	ब्रह्म	१९	४३	वि	२	३५	४	११	26	११	ध. ४६/५०	भ. २/३५ तक, बुध पुर्न. में १७/३३, देवशयनी एकादशी व्रत, C	०३	०८	४२	३७	५	४३	१९	२४
३४.१०	१२	शुक्र	४	३०	मूल	४९	२०	ऐंद्र	१८	२८	बा	४	३०	५	१२	27	१२	धनु	शुक्र वक्री ४२/५८, प्रदोष व्रत C चातुर्मास्य व्रत नियमादि प्रारम्भ	०३	०९	३९	५७	५	४४	१९	२४
३४.०५	१३	शनि	४	५३	पू.षा.	५०	२३	वैधृ	१६	०३	तै	४	५३	६	१३	28	१३	धनु	मेला ज्वालामुखी (काश्मीर) प्रारम्भ,	०३	१०	३७	१८	५	४५	१९	२३
३४.०३	१४	रवि	३	४५	उ.षा.	५०	०३	विष्क	१२	२५	व	३	४५	७	१४	29	१४	म. ५/२३	भ. ३/४५ से ३२/३३ तक, मंगल वृष में ६/४८, गुरु पूर्णिमा, D	०३	११	३४	३९	५	४६	१९	२३
३४.००	१५	चंद्र	१	२०	श्रव.	४८	३५	प्रीति	७	४५	व	१	२०	८	१५	30	१५	मकर	आषाढ़ी पूर्णिमा स्नानदानादि, स. सि. यो., श्रावण प्रतिपदा तिथ्यारम्भ	०३	१२	३१	५९	५	४६	१९	२२

A पुण्यकाल संक्रां. अगले दिन प्रातः 9/08 तक, वक्री गुरु अनु. (४) में ३४/४३, निरयण दक्षिणायन प्रारम्भ, १ रजब (मुस्लि.) **D** व्यास पूजा, कोकिला व्रत, शिवशयनोत्सव, श्रीसत्यनारायणव्रत

रवी अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 22 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	०	२	७	४	४	१०	४
०४	०१	२५	१४	१६	०८	००	१५	१५
५३	५६	१०	४४	२१	२२	४२	००	००
५९	१६	२७	३२	३६	४३	२५	२०	२०
५७	०१२	४१	६५	२	११	७	३	२
१५	४४	८०	१०	५०	३३	९	११	११
पुष्य	श्रवण	भरणी	अश्वि	अनु	मघा	भरणी	भरणी	पूर्वा
९	३	४	३	४	३	९	३	९
—	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

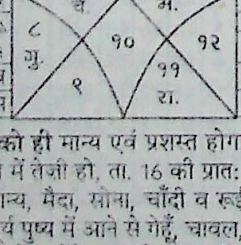

चन्द्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 30 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	१	२	७	४	४	१०	४
१२	१२	००	२५	१६	०८	०१	१४	१४
३१	०६	३५	३८	०३	५३	४०	३४	३४
२१	१६	१२	२७	५६	२६	२६	५४	५४
५७	८२२	४०	१०१	१	६	७	३	२
२१	६	४	१७	२३	३४	२२	११	११
पुष्य	श्रव.	कृत्ति	पुर्न.	अनु.	प्रवा.	भरणी	शत.	पूर्वा
३	१	२	२	४	३	९	३	१
—	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

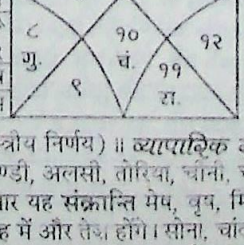

इस पक्ष की **द्वितीया तिथि** (16 जुलाई) सोमवार को भगवान् श्री जगन्नाथ की रथ यात्रा का भव्य उत्सव पुरी (उड़ीसा) तथा देश के अन्य नगरों में बड़े उत्साह एवं श्रद्धापूर्वक मनाया जाता है। **देवशयनी एकादशी** (26 जुलाई) से लेकर कार्तिक शुक्ल एकादशी पर्यन्त धर्मपरायण तपस्वी लोग चातुर्मास्य व्रतादि नियमों का पालन करेंगे। **गुरु पूर्णिमा** (29 जुलाई) को भगवान् विष्णु एवं ऋषि वेदव्यास की पूजार्चना करके अपने इष्ट गुरु के प्रति आस्था रखते हुए यथाशक्ति धन, मन, तनादि द्वारा सेवा करनी चाहिए। ध्यान दें, 30 जुलाई को पूर्णिमा मात्र 1 घड़ी, 20 पल— अर्थात् 3 घड़ी या 3 मुहूर्त्त से कम होने से गुरू पूर्णिमा **व व्यास** पूजा का पर्व 29 जुला., रविवार को ही मान्य एवं प्रशस्त होगा (देखें गत पृष्ठों में व्रत-पर्व का शास्त्रीय निर्णय)॥ *व्यापारिक रुख*—पक्षारम्भ में रविवार 15 ता. को **चन्द्रदर्शन** होने से सोना, चांदी, तिल, तैल, गुड़, शक्कर, चीनी में तेजी हो, ता. 16 की प्रातः **शनि सिंह** राशि में आकर सरसों, अरण्डी, अलसी, तोरिया, चीनी, चावल, तिल एवं खाद्य तैल आदि में तेजी होगी। इसी दिन **श्रावण संक्रान्ति 15 मुहूर्त्त** होने से गेहूँ, धान्य, मैदा, सोना, चाँदी व रूई में तेजी कारक होगी। ग्रहों के अनुसार यह **संक्रान्ति** मेष, वृष, मिथुन, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ एवं मीन राशि वाले जातकों के लिए लाभदायक होगी। ता. 20 को सूर्य पुष्य में आने से गेहूँ, चावल, गुड़, शक्कर, चीनी के भाव एक सप्ताह में और तेज होंगे। सोना, चांदी व पीतल भी तेज होंगे। ता. 27 को **शुक्र वक्री** होने से गेहूँ, चना, घी, तैल, धान्य, चीनी, शक्कर के भाव तेज होंगे। *यदा दैत्य गुरुश्चैव राशिवक्रं चरिष्यति। धान्यार्थं च क्षयं कुर्याद् घृततैल महर्घता॥* आषाढ़ में 5 रविवार होने से कहीं छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन) के योग होंगे। *आकाश लक्षण*—पक्ष में उत्तरी भारत के अनेक प्रान्तों जैसे उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर आदि में रुक-रुक कर व्यापक वर्षा होगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०६४, श्रावण कृष्ण पक्ष शाकः १९२९ | सन् 2007 ई. (ता. 30 जुलाई से 12 अगस्त तक) | भा. स्टैं. टा. जालन्धर

सूर्य दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतुः

ग्रह दर्शन—सायं शु.-श. पश्चिम क्षितिज में परस्पर आसन्न होंगे। 4 अग. से शनि तथा 7 अग. से शुक्र पश्चिम में अस्त हो जाएगा। सायं गु. पूर्व कपाल में होगा। प्रातः मंग. पूर्व में, 3 अग. से बुध पूर्व में अस्त।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	तारीखें श्रा. प्र.	राष्ट्री.	जुलाई	श्रावण प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
०० ००	१	चंद्र	५७	४८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	30	०	००	प्रतिपदा तिथि क्षय ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३३.५५	२	मंग	५३	२३	धनि	४६	१३	आयु सौभा	२ ५६	१३ ००	तै	२५	३६	९	१६	31	१६	कुं. १७/२८	पंचक प्रारम्भ १७/२८,	०३	१३	२९	२२	५	४७	१९	२१
३३.५३	३	बुध	४८	२०	शत	४३	१०	शोभ	४९	१८	व	२०	५१	१०	१७	अग.	१७	कुम्भ	भ. २०/५२ से ४८/२० तक, बुध कर्क में २१/५८, तिलक पुण्य तिथि A	०३	१४	२६	४३	५	४७	१९	२०
३३.५०	४	गुरु	४२	४८	पू.भा.	३९	३८	अति	४२	०८	बव	१५	३४	११	१८	2	१८	मी. २५/३३	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,** चंद्रोदय रात्रि 21/33 (जालन्धर)	०३	१५	२४	०९	५	४८	१९	१९
३३.४५	५	शुक्र	३७	००	उ.भा.	३५	५०	सुक	३४	४८	कौ	९	५४	१२	१९	3	१९	मीन	सूर्य आश्ले. में १९/१८, बुध पुष्य में १७/५८, नाग पंचमी (राज. B	०३	१६	२१	३४	५	४९	१९	१९
३३.४३	६	शनि	३१	१०	रेव	३१	५८	धृति	२७	२३	गर	४	०५	१३	२०	4	२०	मे. ३१/५८	भ. ३१/१० से ५४/१० तक, **शनि पश्चिम में अस्त** 5/10 घं.मिं., C	०३	१७	१८	५९	५	४९	१९	१८
३३.४०	७	रवि	२५	२०	अश्वि	२८	०५	शूल	२०	००	बव	२५	२०	१४	२१	5	२१	मेष	गण्डमूल २८/०५ तक, स. सि. यो.	०३	१८	१६	२६	५	५०	१९	१८
३३.३८	८	चंद्र	१९	४३	भर	२४	२८	गंड	१२	४५	कौ	१९	४३	१५	२२	6	२२	वृ. ३८/३५		०३	१९	१३	५४	५	५०	१९	१७
३३.३३	९	मंग	१४	२०	कृति	२१	०५	वृद्धि ध्रुव	५ ५९	४० ००	ग	१४	२०	१६	२३	7	२३	वृष	भ. ४१/५२ से, **गुरु मार्गी** ४/२५, **शुक्र पश्चिम में अस्त** ५७/०३,	०३	२०	११	२६	५	५१	१९	१६
३३.२८	१०	बुध	९	२३	रोहि	१८	१०	व्या	५२	४३	वि	९	२३	१७	२४	8	२४	मि. ४६/५५	भ. ९/२३ तक, स. सि. यो.	०३	२१	०८	५८	५	५२	१९	१५
३३.२५	११	गुरु	५	०५	मृग	१५	५०	हर्ष	४७	०३	बा	५	०५	१८	२५	9	२५	मिथुन	**कामिका एकादशी व्रत,** बुध आश्ले. में ५८/१५,	०३	२२	०६	२९	५	५२	१९	१४
३३.२०	१२	शुक्र	१	२५	आर्द्रा	१४	१५	वज्र	४२	००	तै	१	२५	१९	२६	10	२६	क. ५८/४३	भ. ५८/४३ से, प्रदोष व्रत	०३	२३	०४	०४	५	५३	१९	१३
०० ००	१३	शुक्र	५८	४३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	त्रयोदशी तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३३ १५	१४	शनि	५७	०३	पुर्न	१३	३५	सिद्धि	३७	४८	वि	२७	५३	२०	२७	11	२७	कर्क	भ. २७/५३ तक, मास शिवरात्रि व्रत	०३	२४	०१	३९	५	५४	१९	१२
३३.१२	०	रवि	५६	३८	पुष्य	१४	०३	व्य	३४	३३	च	२६	५१	२१	२८	12	२८	कर्क	**हरियाली अमावस,** शनि मघा (२) में १६/४५, रवि पुष्य योग	०३	२४	५९	१४	५	५४	१९	११

त्रयोदश दिनात्मक पक्ष

शुक्र अस्त 7 अगस्त

A स्वर्णगौरी व्रत **B** एवं बंगाल), बुध पूर्व में अस्त ४५/०३ **C** पंचक समाप्त ३१/५८, शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ ५७/०८

चंद्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 6 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	१	३	७	४	४	१०	४
१९	२०	०५	०८	१५	०७	०२	१४	१४
१३	४१	१३	३३	५८	१७	३२	१२	१२
०७	३४	०६	४६	००	५२	२८	३८	३८
५७ २८	८४९ १५	३९ ११	१२० २०	० ६	२२ ४६	७ ३१	३ ११	३ ११
श्ले. १	भर. ३	कृति ३	पुष्य २	अनु. ४	मघा ३	मघा १	शत ३	पूभा १
—	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
—	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

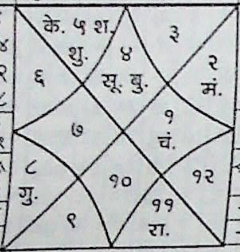

रवौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 12 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	१	३	७	४	४	१०	४
२४	१३	०९	२०	१६	०४	०३	१३	१३
५८	२२	०६	४८	००	३२	१७	५३	५३
१६	२३	०५	५९	०६	२५	४६	३३	३३
५७ ३६	७८२ ५	३८ १९	१२३ २७	१ ००	३३ २०	७ ३५	३ १०	३ १०
श्ले. ३	पुष्य ४	कृति ४	श्ले. २	अनु. ४	मघा २	मघा १	शत ३	पूभा १
—	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व
—	अ	उ	अ	उ	अ	अ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

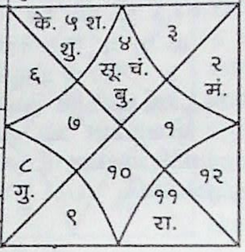

श्रावण कृष्ण पक्ष–

श्रावण मास में प्रतिदिन अथवा प्रति सोमवार का व्रतादि धारण करके भगवान् शिव का पूजन एवं पार्थिव शिव पूजा करने का विशेष माहात्म्य होता है। श्रावण के ही प्रत्येक मंगलवार को मङ्गलागौरी का विधिपूर्वक व्रत करने से स्त्रियों को विवाह, सन्तान, सौभाग्यादि सुखों की प्राप्ति होती है। **कामिका एकादशी** (9 अगस्त) का विधिवत व्रत रखना चाहिए। **श्रावण** कृष्ण पक्ष में प्रतिपदा और त्र्योदशी–दो तिथियों का क्षय होने से यह पक्ष तेरह (त्रयोदश) दिन का हो गया है। 30 जुलाई से 12 अगस्त के मध्य त्रयोदश दिन का पक्ष होने से *इस पक्ष में विवाह, मुण्डन, गृह-प्रवेश,* उपनयन आदि शुभ कार्य वर्जित रहेंगे—**उपनयनं परिणयनं तु वेश्मारम्भादि कर्माणि। यात्रां–द्विक्षयपक्षे कुर्यात् न जिजीविषु पुरुषः॥** (ज्यो. निबन्ध) ***लोक भविष्य*** *की दृष्टि से भी तेरह दिन के पक्ष का फल शुभ नहीं कहा गया है*—**अनेक युग साहस्रयां दैव योगात्प्रजायते त्रयोदश दिने पक्षस्तदा संहरते जगत्॥** अर्थात् तेरह दिन का पक्ष *प्रत्येक युग में प्रजा का नाश (हानि) करने वाला होता है।* इसके प्रभावस्वरूप प्रजा में रोग, महंगाई, उपद्रव एवं हिंसक घटनाएँ घटित होती हैं। कहीं छत्रभंग (शासन परिवर्तन), विस्फोट, भूस्खलन, दुर्भिक्ष, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोपों की सम्भावनाएं होती हैं। **श्रावण** मास में पाँच रविवार होने से प्रजा में संकट व भय रहे। अनाज के मूल्यों में अत्यधिक वृद्धि व छत्र भंग के योग हैं। इसी मास ता. 7 को **शुक्र पश्चिम** में अस्त होने से गेहूँ, धान्य, मकई व उड़द के भाव तेज़ होंगे। इसी दिन गुरु मार्गी होने से ईख, दूध आदि रसादिक वस्तुओं में कमी-बेशी होगी।

आकाश लक्षण—*इस पक्ष में भारत के पश्चिमोत्तर भागों—उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर आदि के क्षेत्रों में रुक-रुक कर व्यापक वर्षा के योग होंगे।*

वि. संवत् २०६४, श्रावण शुक्ल पक्ष शाकः १९२९ | तारीखें | चंद्र राशि प्रवेश | सन् 2007 ई. (ता. 13 अगस्त से 28 अगस्त तक) | भा. स्टैं. टा. जालन्धर

उत्तरगोल, वर्षा-शरद ऋतुः

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०६४, श्रावण शुक्ल पक्ष शाकः १९२९ — सन् 2007 ई. (ता. 13 अगस्त से 28 अगस्त तक)

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा-शरद् ऋतुः

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	तारीखें श्राव. शक	रज्जब मु.	अगस्त	श्रावण प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रहलोपदर्शन—प्रातः मंग. याम्योत्तरवृत्तासन्न, 24 अग. से शुक्र प्रातः पूर्व क्षितिजासन्न, सायं गुरु याम्योत्तरवृत्त के पास होगा। बुध एवं शनि अस्त हैं।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	भा. स्टैं. टा. जालन्धर सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३३.०७	१	चंद्र	५७	३०	श्ले.	१५	४३	वरी	३२	१८	किं	२७	०४	२२	२९	13	२९	सिं. १५/४३	मंगल रोहि. में २३/३०, मेला छिन्नमस्तिका (चिंतपूर्णी) प्रारम्भ	०३	२५	५६	५१	५	५५	१९	१०
३३.०२	२	मंग	५९	४८	मघा	१८	४५	परि	३१	१०	बा	२८	३९	२३	३०	14	३०	सिंह	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, वक्री शुक्र मघा (१) में ६/४०,	०३	२६	५४	२८	५	५५	१९	०८
३२.५७	३	बुध	६०	००	पू.फा.	२३	०५	शिव	३१	०५	तै	३१	३६	२४	श.	15	३१	कं. ३९/२३	भारत स्वतन्त्रता दिवस, सिंघारा तीज, १ शव्वान मुस्लि. प्रारम्भ	०३	२७	५२	०९	५	५६	१९	०७
३२.५३	३	गुरु	३	२३	उ.फा.	२८	४०	सिद्ध	३२	००	ग	३	२३	२५	२	16	३२	कन्या	बुध मघा १ सिंह में २८/५८, मधुस्रवा-हरियाली तीज, दूर्वा गणपति A	०३	२८	४९	५२	५	५७	१९	०६
३२.५०	४	शुक्र	८	१०	हस्त	३५	२०	साध्य	३३	४०	वि	८	१०	२६	३	17	भा.	कन्या	भ. ८/१० तक, सूर्य मघा (१) सिंह में १३/००, भाद्रपद संक्रांति, मु. ३०, B	०३	२९	४७	३२	५	५७	१९	०५
३२.४५	५	शनि	१३	४८	चित्रा	४२	३५	शुभ	३५	५३	बा	१३	४८	२७	४	18	२	तु. ८/५३	नाग पंचमी	०४	००	४५	१७	५	५८	१९	०४
३२.४३	६	रवि	१९	५३	स्वा	५०	०५	शुक्ल	३८	१८	तै	१९	५३	२८	५	19	३	तुला	श्रीकल्कि जयंती, वक्री शुक्र कर्क राशि में ३३/२०,	०४	०१	४२	५९	५	५८	१९	०३
३२.३७	७	चंद्र	२५	४८	विशा	५७	०८	ब्रह्म	४०	२८	व	२५	४८	२९	६	20	४	वृ. ४०/२५	भ. २५/४८ से ५८/२७ तक, गो. तुलसीदास जयन्ती	०४	०२	४०	४५	५	५९	१९	०२
३२.३५	८	मंग	३१	०५	अनु	६०	००	ऐंद्र	४२	०३	बव	३१	०५	३०	७	21	५	वृश्चिक	श्रीदुर्गाष्टमी, मेला चिन्तपूर्णी-चामुण्डादेवी-कांगड़ा, दूर्वाष्टमी व्रत	०४	०३	३८	३०	५	५९	१९	०१
३२.३३	९	बुध	३५	१०	अनु	३	२०	वैधृ	४२	४०	बा	३	०८	३१	८	22	६	वृश्चिक	राहु शत (२) केतु मघा (४) में ३२/१०,	०४	०४	३६	१८	६	००	१९	०१
३२.२८	१०	गुरु	३७	४३	ज्ये.	८	१०	विष्क	४२	०३	तै	६	२७	भा.	९	23	७	ध. ८/१०	शुक्र पूर्व से उदय ५६/५०, सूर्य सायन कन्या में २९/०३, बुध पू.फा. C	०४	०५	३४	०८	६	०१	१९	००
३२.२३	११	शुक्र	३८	३०	मूल	११	२५	प्रीति	४०	०५	व	८	०७	२	१०	24	८	धनु	भ. ८/०७ से ३८/३० तक, पवित्रा एकादशी व्रत	०४	०६	३१	५८	६	०२	१८	५९
३२.१८	१२	शनि	३७	३०	पू.षा.	१२	५८	आयु	३६	४३	बव	८	००	३	११	25	९	म. २८/०३	शुक्र बाल्यत्व विचार	०४	०७	२९	४८	६	०२	१८	५७
३२.१३	१३	रवि	३४	४८	उ.षा.	१२	४३	सौभा	३१	५५	कौ	६	०९	४	१२	26	१०	मकर	प्रदोष व्रत, शुक्र बाल्यत्व समाप्त ५६/५०, स. सि. यो.	०४	०८	२७	४१	६	०३	१८	५६
३२.०८	१४	चंद्र	३०	३३	श्रव	१०	५०	शोभ	२५	५३	ग	२	४१	५	१३	27	११	कुं. ३९/२५	भ. ३०/३३ से ५७/४८ तक, पंचक प्रारम्भ ३९/२५, ऋग्वेदि उपाकर्म	०४	०९	२५	३५	६	०४	१८	५५
३२.०५	१५	मंग	२५	०३	धनि	७	४३	अति	१८	४८	बव	२५	०३	६	१४	28	१२	कुम्भ	श्रावण पूर्णिमा, रक्षाबन्धन, गुरु ज्ये. में ३२/३५, श्रीअमरनाथ गुफा E	०४	१०	२३	२९	६	०४	१८	५४

शुक्र उदय 24 अग.

A व्रत, वरद् चतुर्थी, भद्रा ३५/४७ से प्रारंभ B पुण्यकाल संक्रां. प्रातः ऊषाकाल से प्रारम्भ, C में २०/१०, शरद् ऋतुः प्रा., शक भाद्रपद प्रा., E दर्शन, ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण, ऋषि तर्पणादि श्रावणी उपाकर्म, गायत्री जयंती

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 21 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	१	४	७	३	४	१०	४
०३	०३	१४	०८	१६	२९	०४	१३	१३
३७	४०	४५	५१	१५	०७	२६	२४	२४
२०	००	१०	३९	४१	३१	१९	५६	५६
५७ ४६	७२४ २८	३६ ५१	११४ ४४	२ ३८	३६ ८	७ ३८	३ ११	३ ११
मघा २	अनु. १	रोहि २	मघा ३	अनु. ४	श्ले. ४	मघा २	शत ३	पूफा १
—	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व
—	उ	उ	अ	उ	अ	अ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

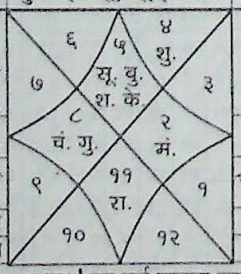

भौमे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 28 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	१	४	७	३	४	१०	४
१०	०४	१८	२१	१६	२५	०५	१३	१३
२२	३०	५९	४६	३७	१९	१९	०२	०२
०७	५०	२३	४३	४८	४१	४३	४१	४१
५७ ५५	८५८ ४४	३५ ३५	१०५ २४	३ ५१	२६ ०४	७ ३७	३ ११	३ ११
मघा ४	धनि ४	रोहि ३	पूफा ३	अनु ४	श्ले. ३	मघा २	शत २	मघा ४
—	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व
—	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

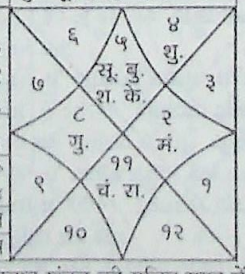

श्रावण शुक्ल पक्ष—

इस पक्ष की हरियाली तीज के दिन सुहागिन स्त्रियां अपने पीहर लौटकर, हाथों में मेंहदी रचाकर झूले झूलती हुई श्रावण के मलहार गीत गाती हैं। **नाग पंचमी** (18 अगस्त) को अपने गृह द्वार का दोनों ओर गोबर के सर्प बनाकर उनका दूध, दूर्वा, कुशा, गन्ध, पुष्प, अक्षत, लड्डुओं आदि से मन्त्रपूर्वक पूजा करने से सर्पों का भय नहीं रहता। श्रा० शुक्ल प्रतिपदा से अष्टमी तक (13 से 21 अग.) चिन्तपूर्णी (छिन्नमस्तिका) और चामुण्डा देवी (कांगड़ा) में श्रद्धालु जनों का पावन, भव्य एवं अखण्ड मेलों का आयोजन होता है। पूर्णिमा (28 अग.) को भाई-बहिन के पवित्र सम्बन्धों का प्रतीक **'रक्षा-बन्धन'** का पर्व मनाया जाता है। इसी दिन काश्मीर घाटी पर भगवान् शंकर की पवित्र गुफा में शिवलिङ्ग के अन्तिम दिव्य दर्शन करके शिव भक्त कृतार्थ होते हैं। **भाद्रपद संक्रान्ति**—17 अगस्त को सूर्य सिंह राशि में प्रविष्ट होकर शुक्र, शनि, बुध व केतु ग्रहों के साथ पंचग्रही योग बनेगा। यह योग गेहूँ, जौं, चने, धान्य, चावल, गुड़, तिल, खाद्य तैल, सरसों, चीनी, सोना, चांदी, पीतल आदि धातुओं में तेजी कारक होगा। शेयर मार्कीट में भी तेजी का रूझान बनेगा। यह तेजी तीन दिन के भीतर बनेगी। 22 अग. को सूर्य-शनि के मध्य **अंशात्मक युति** होने से राजनीतिक हालात अस्थिर बनेंगे। किसी मूर्धन्य नेता का निधन होने के योग हैं। ता. 24 को पूर्व में शुक्रोदय होने से पशुचारा व चौपाय तेज भाव होंगे। रूई में घटाबढ़ी हो। ता. 28 को गुरू ज्येष्ठा में आने से अनाज व चांदी के भावों में तीन दिन तक विशेष उतार-चढ़ाव रहेंगे।

आकाश लक्षण—उत्तरी भारत के अधिकांश भागों में खण्ड वर्षा के योग हैं। *शकुन*—भाद्रपद संक्रान्ति को बूंदाबादी हो, तो अनाजादि का संग्रह करना लाभप्रद होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०६४, भाद्रपद कृष्ण पक्ष शाकः १९२९ — सन् 2007 ई. (ता. 29 अगस्त से 11 सितम्बर तक)

भा. स्टै. टा. जालन्धर

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, शरद् ऋतुः

ग्रहलोपदर्शन—प्रातः शुक्र पूर्व में, मं. याम्योत्तरवृत्तासन्न, सायं गुरु याम्योत्तरवृत्त के पास. 30 अग. से बुध पूर्व से दिखेगा। 8 सित. से श. प्रातः पूर्व क्षितिज के पास होगा।

दिनमान घटी पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	भाद्र. शाके	भाद्र. गते	अगस्त	भाद्र. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	स्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३२.००	१	बुध	१८	३५	शत पूभा	३ ५८	२५ ३०	सुक	१०	५५	कौ	१८	३५	७	१५	29	१३	मी. ४४/४५	भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा, गायत्री जपम्	०४	११	२१	२६	६	०५	१८	५३
३१.५५	२	गुरु	११	३०	उभा	५३	१०	धृति शूल	२ ५३	१८ ४५	गर	११	३०	८	१६	30	१४	मीन	भ. ३७/४९ से, बुध उ.फा. में ४७/३०, **कज्जली तीज, बुध पश्चिम A**	०४	१२	१९	२३	६	०५	१८	५१
३१.५०	३	शुक्र	४	०८	रेव	४७	४३	गंड	४४	५५	वि	४	०८	९	१७	31	१५	मे. ४७/४३	भ. ४/०८ तक, सूर्य पू.फा. में २/४३, **श्रीगणेश बहुला चतुर्थी व्रत B**	०४	१३	१७	२४	६	०६	१८	५०
०० ००	४	शुक्र	५६	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**चतुर्थी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३१.४५	५	शनि	४९	३८	अश्वि	४२	३०	वृद्धि	३६	१८	कौ	२३	१२	१०	१८	सितं	१६	मेष	**बुध कन्या में ४६/००, सितम्बर प्रारम्भ**	०४	१४	१५	२६	६	०७	१८	४९
३१.४०	६	रवि	४३	०५	भर	३७	५०	ध्रुव	२८	०५	गर	१६	२२	११	१९	2	१७	वृ. ५१/४८	भ. ४३/०५ से, **चन्दन षष्ठी, हल षष्ठी** (चं. उ. रात्रि 9/54)	०४	१५	१३	३०	६	०८	१८	४८
३१.३७	७	चंद्र	३७	१८	कृति	३३	५५	व्या.	२०	२५	वि	१०	१२	१२	२०	3	१८	वृष	भ. १०/१२ तक, शीतला सप्तमी, **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मार्त, C**	०४	१६	११	३७	६	०९	१८	४७
३१.३०	८	मंग	३२	२८	रोहि	३०	५५	हर्ष	१३	३०	बा	४	५३	१३	२१	4	१९	मि. ५९/५०	मंगल मृग. में २५/४०, **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत वैष्णव**	०४	१७	०९	४२	६	०९	१८	४५
३१.२८	९	बुध	२८	३८	मृग	२८	५८	वज्र	७	२५	तै	०	३३	१४	२२	5	२०	मिथुन	भ. ५७/१७ से, **श्रीगुग्गा नवमी**, स. सि. यो.	०४	१८	०७	५४	६	१०	१८	४४
३१.२३	१०	गुरु	२५	५५	आर्द्रा	२८	०५	सिद्धि व्य	२ ५७	१३ ५५	वि	२५	५५	१५	२३	6	२१	मिथुन	भ. २५/५५ तक,	०४	१९	०६	०६	६	११	१८	४३
३१.१८	११	शुक्र	२४	२८	पुर्न	२८	२५	वरी	५४	३८	बा	२४	२८	१६	२४	7	२२	क. १३/१३	शनि मघा (३) में १६/०३, अजा एकादशी व्रत, स. सि. यो.	०४	२०	०४	१७	६	११	१८	४२
३१.१५	१२	शनि	२४	०८	पुष्य	२९	५०	परि	५२	१०	तै	२४	०८	१७	२५	8	२३	कर्क	बुध हस्त में ०/३३, **शुक्र मार्गी ३८/५५, शनि प्रदोष व्रत, शनि D**	०४	२१	०२	३३	६	१२	१८	४१
३१.१०	१३	रवि	२४	५८	श्ले.	३२	२८	शिव	५०	४०	व	२४	५८	१८	२६	9	२४	सिं. ३२/२८	भ. २४/५८ से ५५/५८ तक, D पूर्व में उदय ५०/००, वत्स द्वादशी	०४	२२	००	४९	६	१२	१८	४०
३१.०७	१४	चंद्र	२६	५८	मघा	३६	१०	सिद्ध	५०	००	श	२६	५८	१९	२७	10	२५	सिंह	गण्डमूल ३६/१० तक,	०४	२२	५९	१०	६	१३	१८	३८
३१.००	३०	मंग	३०	०३	पू.फा.	४०	५५	साध्य	५०	१३	ना	३०	०३	२०	२८	11	२६	क. ५७/१८	**कुशाग्रहणी भौमवासरी अमावस, 'ॐ हूं फट् स्वाह' इह मन्त्रेण E**	०४	२३	५७	२९	६	१३	१८	३७

A में उदय ६/५३ **B** चं.उ. रात्रि 20/38, पंचक समाप्त ४७/१३, स. सि. यो. **C** चन्द्रोदय रात्रि 22/42 (जालंधर), देखें पृष्ठ 70, अगस्त्य उदय **E** कुशोत्पाटनम्, पिठोरी अमावस, शक्ति पूजा

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 4 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	१	५	७	३	४	१०	४
१७	१५	२३	०३	१७	२३	०६	१२	१२
०८	४५	०४	३७	०८	०३	१२	४०	४०
०८	१०	२३	३०	१५	३८	४८	२६	२६
५८ ९	८३५ २	३४ २१	९६ ३४	५ ००	१० २	७ ३२	३ ११	३ ११
पूफा २	रोहि २	रोहि ४	उफा ३	ज्ये. १	श्ले. २	मघा २	शत २	मघा ४
—	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

भौमे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 11 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	१	५	७	३	४	१०	४
२३	१७	२६	१४	१७	२२	०७	१२	१२
५५	५४	५८	२८	४६	४३	०५	०८	०८
४५	००	५१	१५	३८	४३	१४	१०	१०
५८ २२	७३७ ३२	३२ ३३	८८ ११	६ ६	६ २७	७ २५	३ ११	३ ११
पूफा ४	पूफा २	मृग २	हस्त २	ज्ये. १	श्ले. २	मघा ३	शत २	मघा ४
—	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
—	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

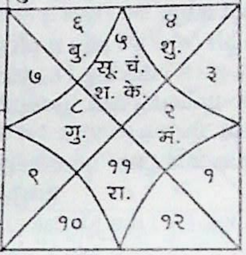

भाद्रपद कृष्ण पक्ष—

इस पक्ष में श्रीगणेश चतुर्थी (31 अग.) तथा **चन्दन षष्ठी** (2 सितं.) का व्रत विधिपूर्वक रखकर रात्रि में उदित चन्द्रमा को अर्घ्य देने से कष्टों की निवृत्ति तथा गृहस्थ सुख, सौभाग्य-सन्तति, धन आदि सुखों की प्राप्ति होती है। **श्री कृष्ण जन्माष्टमी** व्रत सप्तमी विद्धा अष्टमी स्मार्त्तानुसार अर्द्धरात्रि, रोहिणी नक्षत्र युक्त एवं वृष के चन्द्रमा का योग 3 सितम्बर के दिन प्रशस्त होगा। जबकि 4 सितम्बर मंगलवार को अष्टमी व रोहिणी का योग सायं 6 बजकर 31 मिनट तक रहेगा। वैष्णव मतानुसार श्री कृष्ण जन्माष्टमी इसी दिन ग्राह्य होगी। **गोकुलाष्टमी** पर्व भी इसी दिन होगा। **गुग्गा नवमी** (5 सितं.) को शिव मन्दिरों में शिवपूजन एवं विशेषतः नागपूजा करने का विधान है। पिठौरी **भौमवासरी** अमावस के दिन दैव एवं पितरि तर्पणादि कर्मों के निमित्त मन्त्रपूर्वक कुशोत्पाटन करना चाहिए।

व्यापारिक रुख—ता. 30 अग. द्वितीया को बुध पश्चिम में उदय होने से रूई, शेयर व सोने में घटाबढ़ी के बाद कुछ मन्दी हो। चांदी में तेजी होगी। ता. 31 को सूर्य पू.फा में आने से सोना, रूई, गेहूँ, चावल, घी, सरसों, तिल, तैलादि में तेजी का रुझान रहेगा। ता. 1 को **बुध कन्या** में आने से गेहूँ, जौं, चना, धान्य, सोना, चीनी आदि के भावों में तेजी का झुकाव बना रहेगा। ता. 8 को **शुक्र मार्गी** होने से सोना, चांदी, तांबा, मोती, नगीने आदि तेज हों। अलसी, गुड़, घृत, धान्यादि के संग्रह से 1 मास के भीतर अच्छा लाभ हो। ता. 11 को मंगलवार की अमावस सर्व प्रकार के अनाज, दालें जैसे धान्य, हेगूँ, उड़द, मूंग, चने, खली, मूंगफली, गुड़, शक्कर, खाद्य तैल तेज भाव होंगे। ता. 30 अग. को सिंह राशि में सूर्य-केतु का अंशात्मक योग होने से किसी मूर्धन्य नेता के अपदस्थ या अपमृत्यु होने के योग हैं।

आकाश लक्षण—उत्तरी भारत के विभिन्न क्षेत्रों में कहीं खण्ड एवं रुक-रुक कर वर्षा होगी। ***शकुन***—अष्टमी के दिन वर्षा होना आयन्दा सुभिक्ष के संकेत हैं।

वि. संवत् २०६४, भाद्रपद शुक्ल पक्ष शाकः १९२९ तारीखें चंद्र राशि प्रवेश सन् 2007 ई. (ता. 12 सितम्बर से 26 सितम्बर तक) भा. स्टै. टा. जालन्धर
उत्तर-दक्षिण गोल, शरद् ऋतुः सूर्योदय सूर्यास्त

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०६४, भाद्रपद शुक्ल पक्ष शाकः १९२९ — सन् 2007 ई. (ता. 12 सितम्बर से 26 सितम्बर तक)

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर-दक्षिण गोल, शरद् ऋतुः

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	तारीखें भाद्र. शक	शव्वा. मु.	सितंबर	भाद्रपद	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रह दर्शन—प्रातः शुक्र पूर्व में, शनि पूर्व क्षितिज से ऊपर तथा मंग. याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा। सायं बुध पश्चिम में तथा गुरु याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम की ओर होगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	भा. स्टै. टा. जालन्धर सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३०.५५	१	बुध	३४	१३	उ.फा.	४६	४०	शुभ	५१	१०	किं	२	०८	२१	२९	12	२७	कन्या	भाद्र. शुक्ल प्रतिपदा	०४	२४	५५	५१	६	१३	१८	३५
३०.५०	२	गुरु	३९	१३	हस्त	५३	१३	शुक्ल	५२	४५	बा	६	४३	२२	३०	13	२८	कन्या	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, सूर्य उ.फा. में ४७/००,	०४	२५	५४	१६	६	१४	१८	३४
३०.४५	३	शुक्र	४४	५५	चित्रा	६०	००	ब्रह्म	५४	४८	तै	१२	०४	२३	रम	14	२९	तु. २६/४३	हरितालिका तृतीया, गौरी तीज, श्रीवाराह जयंती, रमज़ान (मु.) प्रा.	०४	२६	५२	४५	६	१५	१८	३३
३०.४३	४	शनि	५१	०५	चित्रा	०	२३	ऐंद्र	५७	१०	व	१८	००	२४	२	15	३०	तुला	भ. १८/०० से ५१/०५ तक, सिद्धि विनायक व्रत, कलंक चतुर्थी A	०४	२७	५१	१२	६	१५	१८	३२
३०.३८	५	रवि	५७	१८	स्वा	७	५३	वैधृ	५९	३०	बव	२४	१२	२५	३	16	३१	वृ. ५८/३०	मंगल मिथुन में ३८/२३, ऋषि पंचमी व्रत	०४	२८	५९	४२	६	१६	१८	३१
३०.३३	६	चंद्र	६०	००	विशा	१५	२०	विष्क	६०	००	कौ	३०	१२	२६	४	17	आ.	वृश्चिक	सूर्य कन्या में १२/०८, आश्विन संक्रान्ति, ४५ मु., पुण्यकाल सं. B	०४	२९	४८	१३	६	१६	१८	२९
३०.२८	६	मंग	३	०५	अनु	२२	१८	विष्क	१	३५	तै	३	०५	२७	५	18	२	वृश्चिक	सूर्य षष्ठी व्रत, ललिता षष्ठी व्रत, मुक्ताभरण-संतान सप्तमी व्रत	०५	००	४६	४७	६	१७	१८	२८
३०.२५	७	बुध	८	०३	ज्ये	२८	१८	प्रीति	३	००	व	८	०३	२८	६	19	३	ध. २८/१८	भ. ८/०३ से ३९/५१ तक, श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ,	०५	०१	४५	२१	६	१७	१८	२७
३०.१८	८	गुरु	११	३८	मूल	३२	५०	आयु	३	२३	बव	११	३८	२९	७	20	४	धनु	श्रीराधाष्टमी	०५	०२	४३	५८	६	१८	१८	२५
३०.१३	९	शुक्र	१३	३५	पू.षा.	३५	४३	सौभा	२	३३	कौ	१३	३५	३०	८	21	५	म. ५१/१०	श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन सम्प्रदाय), श्रीभागवत सप्ताह प्रारम्भ	०५	०३	४२	३७	६	१८	१८	२३
३०.०५	१०	शनि	१३	३५	उ.षा.	३६	४०	शोभ अति	० ५६	१३ २०	गर	१३	३५	३१	९	22	६	मकर	भ. ४२/३७ से, बुध तुला में २४/१८,	०५	०४	४१	१८	६	१९	१८	२१
३०.००	११	रवि	११	३८	श्रव	३५	४०	सुक	५०	५३	वि	११	३८	आ.	१०	23	७	मकर	भ. ११/३८ तक, पद्मा एकादशी व्रत, वामन जयन्ती, सूर्य सायन C	०५	०५	३९	५९	६	२०	१८	२०
२९.५५	१२	चंद्र	७	४५	धनि	३२	५३	धृति	४४	००	बा	७	४५	२	११	24	८	कुं. ४/२८	पंचक शुरु ४/२८, सोम प्रदोष व्रत	०५	०६	३८	४३	६	२१	१८	१९
२९.५३	१३	मंग	२	१३	शत	२८	३०	शूल	३५	५३	तै	२	१३	३	१२	25	९	कुम्भ	भ. ५५/१८ से, अनन्त चौदश व्रत, मेला सोढल (जालंधर), कदली व्रत	०५	०७	३७	२७	६	२१	१८	१८
०० ००	१४	मंग	५५	१८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२९.५०	१५	बुध	४७	१५	पू.भा.	२२	५५	गंड	२६	४८	वि	२१	१७	४	१३	26	१०	मी. ९/२५	भ. २१/१७ तक, भाद्रपद पूर्णिमा, प्रौष्ठपदी पूर्णिमा का श्राद्ध D	०५	०८	३६	१३	६	२१	१८	१७

A (पत्थर ४), चन्द्रदर्शन निषेध (चन्द्रास्त रात्रि 20/22 पर) B सूर्योदय से, बुध चित्रा में १३/४५, C तुला में २२/३३, दक्षिण गोल प्रारम्भ, शक आश्विन प्रारम्भ D श्रीसत्यनारायण व्रत

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 20 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	२	५	७	३	४	१०	४
०२	०६	०१	२६	१८	२४	०८	११	११
४२	०६	४२	५६	४६	५६	११	४९	४९
०१	२०	१३	४२	५६	१९	०२	३४	३४
५८ ३७	७५१ ८	३० ६	७६ २४	७ २४	२४ १३	७ १०	३ ११	३ ११
उफा २	मूला २	मृग ३	चित्रा २	ज्ये. १	श्ले. ३	मघा ३	शत २	मघा ४
—	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

७ | ५ के. श. | ६ सू. बु. | ८ गु. | ४ शु. | ९ चं. | ३ मं. | १० | १२ | २ | ११ रा. | १

बुधे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 26 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	१०	२	६	७	३	४	१०	४
०८	२७	०४	०४	१९	२७	०८	११	११
३४	०९	३८	१०	३३	४५	५३	३०	३०
०८	५३	१८	१३	२६	४७	३१	२९	२९
५८ ४७	८९२ २३	२८ १६	६५ ४६	८ १५	३३ ३१	६ ५८	३ ११	३ ११
उफा ४	पूभा ३	मृग ४	चित्रा ४	ज्ये १	श्ले. ४	मघा ३	शत २	मघा ४
—	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

७ बु. | ५ के. श. | ८ गु. | ६ सू. | ४ शु. | ९ | ३ मं. | १० | १२ | २ | ११ चं. रा. | १

भाद्रपद शुक्ल पक्ष—

इस पक्ष की तृतीया को सौभाग्यवती स्त्रियों को अखण्ड सुहाग की कामना से हरितालिका तीज (14 सितं.) का व्रत विधिपूर्वक करना चाहिए। श्रीगणेश चतुर्थी (पत्थर चौथ) का व्रत रखकर श्रीगणेश जी को मीठे पूओं व लड्डुओं का भोग लगाना चाहिए। इस दिन सायं को चन्द्रदर्शन करना निषेध माना जाता है। अनन्त चतुर्दशी (25 सितं.) को विधिवत् भगवान् विष्णु की पूजा करने का विधान है। इसी दिन जालन्धर में मेला बाबा सोढल का भव्य आयोजन होता है तथा मुम्बई में गणपति विसर्जन के रूप में। 26 सितं. को भाद्र. पूर्णिमा है। पूर्णिमा तिथि का श्राद्ध इसी दिन होगा। *आश्विन संक्रान्ति*—17 सितं., षष्ठी तिथि, सोमवार को होने से मूंगा, मोती, चांदी एवं सर्व प्रकार के धान्य मन्दे होंगे। गेहूं, चना, रूई, बाजरा, मक्का, उड़द, मूंग, तिल, तैल, मूंगफली, अलसी, लोहा, तांबा, गुड़ व कोयला में तेजी होगी। प्रवाल मुक्ताधन धान्यसुंकला प्रजासुखं नंदति सर्वदा जनः। सर्व समर्घभवतीह धान्यं करोति चन्द्रेरवि संक्रमश्चेत्॥ विश्व में सुख-साधनों एवं सुविधाओं के साधनों में वृद्धि होगी। अधिकांश धनी लोग आनन्दित रहें। फल—मेष, मिथुन, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर व मीन राशि वालों को इस संक्रान्ति का फल लाभदायक रहेगा। *व्यापारिक रूख*—दूज का चन्द्र गुरुवार को हस्त नक्षत्र में दृश्य होने से रूई, कपास व अनाज के भावों में तेजी होगी। इसी दिन सूर्य उ.फा नक्षत्र में सोना, चांदी, लोहा, सीसा, घी, तिल, तैल, उड़द, चावलों के भावों में 3 दिन के भीतर तेजी करेगा। ता. 16 को मंगल मिथुन में आने से गुड़, शक्कर, मजीठ, सरसों, सोना, तांबा, पीतल, लाल मिर्च तेज भाव होंगे। *लोक भविष्य*—मंगल की सूर्य पर विशेष दृष्टि होने से राजनीतिक क्षेत्र में विशेष उतार-चढ़ाव होंगे। नेताओं में परस्पर टकराव होंगे। कहीं अग्निकाण्ड व विस्फोट घटनाएँ हों। *आकाश लक्षण*—इस पक्ष में भारत के उत्तर-पश्चिम क्षेत्रों में रुक-रुक कर खण्ड वर्षा होने के योग हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०६४, आश्विन कृष्ण पक्ष शाकः १९२९ — सन् 2007 ई. (ता. 27 सितम्बर से 11 अक्तूबर तक)

भा. स्टैं. टा. जालन्धर

सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद ऋतुः

ग्रहलोपदर्शन—प्रातः शु.–श. पूर्व में परस्पर एक–दूसरे से ऊपर–नीचे होंगे। मंग. याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा। सायं गुरु पश्चिम कपाल में, उससे ऊपर बुध दिखेगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	तारीखें: शक	रम.	सितंबर	आश्विन	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.
२९.४५	१	गुरु	३८	३३	उ.भा.	१६	२५	वृद्धि	१७	००	बा	१२	५४	५	१४	27	११	मीन	पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रारम्भ, सूर्य हस्त में २५/३०, प्रतिपदा का श्राद्ध	०५	०९	३५	०३	६	२२	१८	१६
२९.४३	२	शुक्र	२९	३८	रेव	९	३३	ध्रुव व्या.	६ ५६	५० ४३	तै	४	०६	६	१५	28	१२	मे. ९/३३	भ. ५५/१४ से, बुध स्वा. में १७/४८, पंचक समा. ९/३३, द्वितीया का श्राद्ध	०५	१०	३३	५२	६	२२	१८	१५
२९.३५	३	शनि	२०	५०	अश्वि भर	२ ५६	३५ ०८	हर्ष	४६	४८	वि	२०	५०	७	१६	29	१३	मेष	भ. २०/५० तक, शुक्र मघा १ सिंह में ४५/१०, तृतीया श्राद्ध, फिर A	०५	११	३२	४६	६	२३	१८	१३
२९.३०	४	रवि	१२	३५	कृति	५०	२८	वज्र	३७	३३	बा	१२	३५	८	१७	30	१४	वृ. ९/३५	मंगल आर्द्रा में २१/२५, पंचमी का श्राद्ध (प्रातः 11.26 के बाद)	०५	१२	३१	४३	६	२४	१८	१२
२९.२५	५	चंद्र	५	१५	रोहि	४५	५५	सिद्धि	२९	१०	तै	५	१५	९	१८	अक्तू	१५	वृष	भ. ५९/१३ से, षष्ठी का श्राद्ध, अक्तूबर प्रारम्भ, स. सि. यो.	०५	१३	३०	४१	६	२५	१८	१०
०० ००	६	चंद्र	५९	१३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	षष्ठी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२९.२०	७	मंग	५४	३८	मृग	४२	५०	व्य.	२१	५५	वि	२६	५६	१०	१९	2	१६	मि. १४/१०	भ. २६/५६ तक, महात्मा गाँधी जयन्ती, सप्तमी का श्राद्ध	०५	१४	२९	३९	६	२५	१८	१०
२९.१५	८	बुध	५१	४०	आर्द्रा	४१	१८	वरी	१५	५५	बा	२३	०९	११	२०	3	१७	मिथुन	महालक्ष्मी व्रत समाप्त, जीवित्पुत्रिका व्रत, अष्टमी का श्राद्ध	०५	१५	२८	४३	६	२६	१८	०८
२९.१३	९	गुरु	५०	२३	पुर्न	४१	२५	परि	११	१५	तै	२१	०२	१२	२१	4	१८	क. २६/१५	मातृ नवमी, सौभाग्यवती श्राद्ध, नवमी का श्राद्ध, स. सि. यो.	०५	१६	२७	४६	६	२६	१८	०७
२९.०८	१०	शुक्र	५०	४०	पुष्य	४३	०५	शिव	७	५०	व	२०	३२	१३	२२	5	१९	कर्क	भ. २०/३२ से ५०/४० तक, शनि मघा ४ में ४६/५०, दशमी श्राद्ध	०५	१७	२६	५३	६	२७	१८	०६
२९.०३	११	शनि	५२	२८	श्ले.	४६	१५	सिद्ध	५	४३	बव	२१	३४	१४	२३	6	२०	सिं. ४६/१५	इन्दिरा एकादशी व्रत, एकादशी का श्राद्ध	०५	१८	२६	००	६	२७	१८	०४
२८.५८	१२	रवि	५५	३०	मघा	५०	३८	साध्य	४	३८	कौ	२३	५९	१५	२४	7	२१	सिंह	संन्यासीनां श्राद्ध, द्वादशी का श्राद्ध	०५	१९	२५	१३	६	२८	१८	०३
२८.५३	१३	चंद्र	५९	३३	पू.फा.	५६	००	शुभ	४	३०	गर	२७	३२	१६	२५	8	२२	सिंह	भ. ५९/३३ से, सोम प्रदोष व्रत, त्रयोदशी का श्राद्ध	०५	२०	२४	२७	६	२९	१८	०२
२८.५०	१४	मंग	६०	००	उ.फा.	६०	००	शुक्ल	५	१०	वि	३२	०१	१७	२६	9	२३	कं. १२/३०	भ. ३२/०१ तक, शस्त्र, विष, दुर्घटनादि से मृतों का श्राद्ध	०५	२१	२३	४१	६	२९	१८	०१
२८.४३	१४	बुध	४	२८	उ.फा.	२	१०	ब्रह्म	६	२५	श	४	२८	१८	२७	10	२४	कन्या	सर्वपितृ श्राद्ध, गजच्छाया योग (प्रातः 8/17 से 29/13 तक), B	०५	२२	२३	०१	६	३०	१७	५९
२८.३८	३०	गुरु	१०	००	हस्त	८	५८	ऐंद्र	८	०५	ना	१०	००	१९	२८	11	२५	तु. ४२/३३	अमावस स्नानदानादि, मातामह (नाना) का श्राद्ध,	०५	२३	२२	२१	६	३१	१७	५८

A चतुर्थी का श्राद्ध (दुपै. 2.43 के बाद) (देखें पृष्ठ 72), गुरु ज्येष्ठा २ में ८/३५, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि 19/50 पर **B** महालय श्राद्ध समाप्त, सूर्य चित्रा में ५७/४०, पितृ विसर्जन

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 3 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	२	६	७	४	४	१०	४
१५	१०	०७	१०	२०	०२	०९	११	११
२६	०५	४८	५८	३३	०७	४१	०८	०८
२५	४४	५९	२७	३१	३७	२१	१४	१४
५९ ३	८१४ २५	२५ ५०	४६ २२	९ ३	४२ ९	६ ३९	३ ११	३ ११
हस्त २	आर्द्रा २	आर्द्रा १	स्वा. २	ज्ये. २	मघा १	मघा ३	शत २	मघा ४
—	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

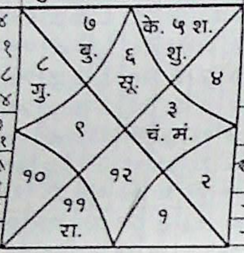

गुरौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 11 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	२	६	७	४	४	१०	४
२३	२१	११	१५	२१	०८	१०	१०	१०
१९	०२	०४	०१	४९	१२	३३	४२	४२
५२	४४	११	५४	१५	१९	१४	१८	१८
५९ २०	७१४ ३१	२२ २८	४ ४६	९ ५८	४९ ३४	६ १५	३ ११	३ ११
हस्त ४	हस्त ४	आर्द्रा २	स्वा. ३	ज्ये. २	मघा ३	मघा ४	शत २	मघा ४
—	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
—	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

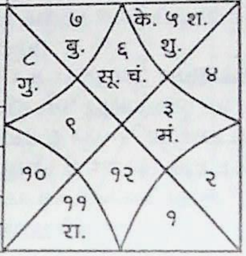

आश्विन कृष्ण पक्ष—

श्राद्धों में अपने दिवंगत पूर्वजों की मृत्यु की तिथ्यानुसार, तिल, जौं, चावल, कुशा, गंगाजल, सहित तर्पण एवं ब्राह्मण भोजन, दानादि व गौग्रास देने से पितर संतृप्त रहते हैं तथा श्राद्धकर्त्ता को आयु, सन्तान, धन, ज्ञान, स्वर्ग–मोक्षादि सुखों की प्राप्ति होती है—"**आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गं मोक्षं सुखानि च प्रयच्छन्ति नृणां पितृ पूजनात्॥**" जो कोई व्यक्ति जान–बूझकर श्राद्ध नहीं करता, वह पाप का भागी होकर दुःखों से पीड़ित रहता है। दिवंगत की निधन तिथि का ज्ञान न होने पर अमावस को श्राद्धादि कर्म करने चाहिएं। इसी पक्ष की अष्टमी तिथि को जीवित्पुत्रिका (**श्री महालक्ष्मी**) व्रत सौभाग्यवती स्त्रियां पुत्र सुख की कामना से करती हैं। अमावस, **सर्वपितृ** श्राद्ध की तिथि 10 अक्तू. बुधवार को होगी। ***व्यापारिक रूख***—प्रतिपदा (27 सित.) को सूर्य हस्त नक्षत्र में आने से गेहूं, धान्य, चावल, जौं, गुड़, चीनी, सूत, कपास, हल्दी, हींग, लकड़ी, पैट्रोल आदि में तेजी होगी। ता. 29 को **शुक्र** मघा (1) **सिंह** राशि में प्रवेश करके शनि व केतु के साथ मेल करेगा, जिससे सोना, चांदी, तांबा, गेहूँ, चना, मजीठ, लाल चन्दन, पटसन, खल, बिनौले, पशुचारा व चौपाय तेज भाव होंगे—**यदा दैत्य गुरु सिंहे हेमरक्त चतुष्पदः। धान्यानि–महर्घाणियावन्ति हि दिनानि च॥** ता. 10 को सूर्य चित्रा में आने से गेहूँ, चना, रूई, कपास, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, अरहर, लाख, चमड़ा, केसर, कपूर आदि में तेजी का रूख होगा। ***लोक भविष्य***—पक्ष में **सिंह राशि** पर शनि, शुक्र व केतु का मेल होने से राजनेताओं में परस्पर टकराव व विरोध होंगे। *आश्विन मास में 5 बृहस्पतिवार होने से पश्चिमी क्षेत्रों में कहीं युद्ध, विग्रह व हिंसक घटनाएँ, घटित होंगी*—**यत्र मासे पंचवाराः जायन्ते च बृहस्पते। विग्रह पश्चिमे देशे खड्ग युद्धं च जायते॥** ***आकाश लक्षण***—*पक्ष के पूर्वार्द्ध भाग में कहीं खण्ड वर्षा के योग हैं।* **उत्तरार्द्ध** में आकाश प्रायः निर्मल रहेगा। ***शकुन***—पंचमी को रोहिणी नक्षत्र काले बूंदाबांदी हो, तो इस मास अनाज, उड़द आदि दालें संग्रह करने से अच्छा मुनाफा होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

आश्विन शुक्ल पक्ष शाकः १९२९ तारीखें चंद्र राशि ... 12 अक्तूबर से 26 अक्तूबर तक) भा. स्टैं. टा. जालन्धर
दक्षिण गोल, शरद–हेमन्त ऋतुः

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०६४, आश्विन शुक्ल पक्ष शाकः १९२९ — सन् 2007 ई. (ता. 12 अक्तूबर से 26 अक्तूबर तक)

भा. स्टैं. टा. जालन्धर

सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद्-हेमन्त ऋतुः

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	तारीखें आश्वि. श.	रम. मु.	अक्तूबर	आश्विन	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रहलोपदर्शन—प्रातः शु.–श. पूर्व में परस्पर आसन्न, मंग. पश्चिम कपाल में होगा। सायं गु. पश्चिम में दिखेगा। 18 अक्तू. से बुध पश्चिम में अस्त होगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
२८.३३	१	शुक्र	१५	५८	चित्रा	१६	१०	वैधृ	१०	०८	ब	१५	५८	२०	२९	12	२६	तुला	शरद् नवरात्र प्रारम्भ, घटस्थापन, बुध वक्री ६/५५, दुर्गापूजन **A**	०५	२४	२१	४५	६	३२	१७	५७
२८.२८	२	शनि	२२	१३	स्वा.	२३	३८	विष्क	१२	२३	कौ	२२	१३	२१	३०	13	२७	तुला	चन्द्रदर्शन, मु. ४५,	०५	२५	२१	१०	६	३३	१७	५६
२८.२३	३	रवि	२८	३३	विशा	३१	१०	प्रीति	१४	४३	ग	२८	३३	२२	श.	14	२८	वृ. १४/१८	शव्वाल (मुस्लि.) प्रारम्भ,	०५	२६	२०	३४	६	३३	१७	५४
२८.१८	४	चंद्र	३४	३३	अनु	३८	२३	आयु	१६	५०	व	१	३३	२३	२	15	२९	वृश्चिक	भ. १/३३ से ३४/३३ तक, स. सि. यो.	०५	२७	२०	०४	६	३४	१७	५३
२८.१३	५	मंग	४०	००	ज्ये.	४५	०३	सौभा	१८	३८	ब	७	१७	२४	३	16	३०	ध. ४५/०३	उपाङ्ग ललिता व्रत, शुक्र पू.फा. में ५६/१८, गण्डमूल	०५	२८	१९	३५	६	३५	१७	५२
२८.१०	६	बुध	४४	३३	मूल	५०	४८	शोभ	१९	४८	कौ	१२	१७	२५	४	17	का.	धनु	**सूर्य तुला में ४१/१५, कार्तिक संक्रान्ति**, मु. ३०, पुण्यकाल सं. **B**	०५	२९	१९	०५	६	३५	१७	५१
२८.०५	७	गुरु	४७	४०	पू.षा.	५५	१०	अति	२०	०३	ग	१६	०७	२६	५	18	२	धनु	भ. ४७/४० से, वक्री बुध पश्चिम में अस्त १४/३३, सरस्वती पूजन	०६	००	१८	४०	६	३६	१७	५०
२८.००	८	शुक्र	४९	०५	उ.षा.	५७	५०	सुक	१९	०५	वि	१८	२३	२७	६	19	३	म. १०/५८	भ. १८/२३ तक, गुरु ज्ये. ३ में ४२/५३, महाष्टमी, **श्रीदुर्गाष्टमी, C**	०६	०१	१८	१६	६	३७	१७	४९
२७.५८	९	शनि	४८	४०	श्रव	५८	४३	धृति	१६	४५	बा	१८	५३	२८	७	20	४	मकर	सरस्वती विसर्जन, बलिदान दिवस, महानवमी, **नवरात्र समाप्त, D**	०६	०२	१७	५२	६	३७	१७	४८
२७.५३	१०	रवि	४६	१०	धनि	५७	३३	शूल	१२	४८	तै	१७	१०	२९	८	21	५	कुं. २८/२०	पंचक प्रारम्भ २८/२०, **विजयादशमी (दशहरा)**, अपराजिता +	०६	०३	१७	३२	६	३८	१७	४७
२७.४८	११	चंद्र	४१	४०	शत	५४	२५	गंड	७	१५	व	१३	५५	३०	९	22	६	कुम्भ	भ. १३/५५ से ४१/४० तक, **पापांकुशा एकादशी व्रत, भरत मिलाप**	०६	०४	१७	१५	६	३९	१७	४६
२७.४३	१२	मंग	३५	२५	पू.भा.	४९	३५	वृद्धि ध्रुव	० ५१	१० ४५	व	८	३३	का	१०	23	७	मी. ३५/५८	सूर्य सायन वृश्चिक में ४५/१५, शक कार्तिक प्रारम्भ, हेमन्त ऋतु प्रारंभ	०६	०५	१६	५९	६	४०	१७	४५
२७.४०	१३	बुध	२७	४०	उ.भा.	४३	२५	व्या.	४२	१०	कौ	१	३३	२	११	24	८	मीन	सूर्य स्वा. में २३/२८, राहु शत १ केतु मघा ३ में २५/०५, प्रदोष व्रत	०६	०६	१६	४१	६	४०	१७	४४
२७.३५	१४	गुरु	१८	४५	रेव	३६	१०	हर्ष	३१	४३	व	१८	४५	३	१२	25	९	मे. ३६/१०	भ. १८/४५ से ४३/५८ तक, पंचक समाप्त ३६/१०, **शरद् पूर्णिमा E**	०६	०७	१६	२७	६	४१	१७	४३
२७.३०	१५	शुक्र	९	१०	अश्वि	२८	२३	वज्र	२०	४५	ब	९	१०	४	१३	26	१०	मेष	**आश्विन पूर्णिमा** स्नानदानादि, महर्षि वाल्मीकि जयन्ती, कार्तिक **F**	०६	०८	१६	१७	६	४२	१७	४२

A महाराजा अग्रसेन जयन्ती **B** मध्याह्न बाद, सरस्वती आवाहन **C** भद्रकाली जयन्ती + पूजन प्रातः 6/16 तक **D** शस्त्रादि पूजा **E** व्रत, कोजागर व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत **F** स्नान प्रारम्भ

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 19 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	८	२	६	७	४	४	१०	४
०१	२७	१३	११	२३	१५	११	१०	१०
१५	०६	५०	५८	११	०९	२१	१७	१७
३१	३०	३७	२२	४९	१५	३३	२२	२२
५९ ३६	७६५ १५	१८ ३३	५९ १२	१० ४५	५५ ६	५ ४६	३ ११	३ ११
चित्रा ३	कृष्ण ९	आर्द्रा ३	स्वा. २	ज्ये. २	पूर्षा ९	मघा ४	भरत २	मघा ४
—	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
—	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

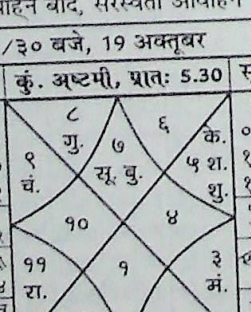

शुक्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 26 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	०	२	६	७	४	४	१०	४
०८	०५	१५	०३	२४	२१	१२	०९	०९
१३	१९	४८	४७	२८	४६	००	५५	५५
१७	१८	५२	२१	५९	४४	२८	०७	०७
५९ ४८	९२० ३	१४ ३५	६६ १	११ २२	५८ ५४	४ ३२	३ ११	३ ११
स्वा. १	अश्वि २	आर्द्रा ३	चित्रा ४	ज्ये. ३	पूर्षा ३	मघा ४	भरत १	मघा ३
—	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
—	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

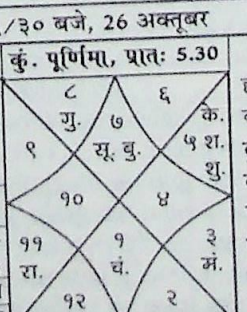

आश्विन शुक्ल पक्ष–

आश्विन शुक्ल प्रतिपदा (12 अक्तू.) से शारदीय **नवरात्रारम्भ** होंगे। तिपदा को घटस्थापन, षोडशोपचार सहित श्री दुर्गापूजन करें। पूजा मन्त्र—ॐ **जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते। आगच्छ वरदे देवी। पूजां गृहाण समुखि नमस्ते शंकरप्रिये॥** नवरात्रों में श्री दुर्गा पूजा एवं कुमारी कन्या पूजन, दानादि का विशेष महत्त्व है। **विजयादशमी** (21 अक्तू.) को सायंकाले रावणदाह श्री रामचन्द्रजी की पूजा एवं अपराजिता पूजन करना चाहिए। **शरद् पूर्णिमा** 25 अक्तू. की रात्रि को खीर (मेवा-किशमिश युक्त) छिटकती चांदनी में रात भर सुरक्षित रखकर दूसरे दिन सेवन करने से मानसिक एवं अनेक क्लिष्ट रोगों की शान्ति होती है। ***व्यापारिक दृष्टि***—पक्षारम्भ में बुध तुला में वक्री होने से खाण्ड, बिनौले, तिल, तैल, घी, गुड़, शक्कर, मैदा, किशमिश, काली मिर्च आदि वस्तुओं के भाव 5 दिनों में तेज होंगे। ता. 13 को **शनिवार** के दिन विशाखा में चन्द्रदर्शन होने से गेहूँ, मूँग, उड़द, गुड़, खाण्ड, सरसों, अलसी, सोना, चांदी व रूई व मूंगफली में तेजी होगी। आगे ता. 17 को बुधवार की **कार्तिक संक्रान्ति** 30 मुहूर्ति तिल, तैल, लाल मिर्च, केसर, हल्दी, ऊन, रेशम, पशुचारा, गाय आदि चौपायों के भाव तेज़ होंगे। का. संक्रान्ति, मेष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, धन, कुम्भ व मीन राशि वालों को लाभदायक होगी। ता. 18 को तुलागत बुध पश्चिम में अस्त होगा, जिससे गेहूँ, चने, चावल, दूध, पनीर, फल, सब्ज़ियाँ आदि तेज भाव होंगे। ता. 24 अक्तू. को राहु शतभिषा प्रथम चरण में आने से गुड़, चीनी, शक्कर, गेहूँ, मैदा, चावल, घी आदि में तेजी करेगा। **आश्विन** में पाँच बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार होने से देश की उत्तर-पश्चिमी सीमाओं जैसे कश्मीर, राजस्थान आदि पर हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित होने के संकेत हैं।

आकाश लक्षण—भारत के उत्तर-पश्चिम भागों में तेज़ हवाओं के साथ खण्ड वर्षा के योग हैं। ***शकुन***—पूर्णिमा के दिन बूंदाबांदी हो, तो आगामी अच्छी फसल होने के संकेत हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०६४, कार्तिक कृष्ण पक्ष शाकः १९२९ — सन् 2007 ई. (ता. 27 अक्तूबर से 9 नवम्बर तक)

सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतुः

भा. स्टै. टा. — जालन्धर

दिनमान घटी पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	क्रांति उ.	क्रांति द.	अक्तूबर	कार्तिक	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रह दर्शन—बुध 30 अक्तू. से प्रातः पूर्व क्षितिजासन्न, शु. तथा शनि भी पूर्व कपाल में होंगे। मंग. पश्चिम कपाल में होगा। सायं गु. पश्चिम में दीखेगा।	दै. रा.	सू. अ.	रप. क.	घ. वि.	सूर्योदय घं. मि.		सूर्यास्त घं. मि.	
०० ००	१	शुक्र	५९	२३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	26	०	००	प्रतिपदा तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२७.२५	२	शनि	४९	४८	भर	२०	३३	सिद्धि ध्व.	९ ५८	४३ ५८	तै	२४	३६	५	१४	27	११	वृ. ३३/३८		०६	०९	१६	०७	६	४३	१७	४१
२७.२३	३	रवि	४०	५८	कृति	१३	१०	वरी	४८	५३	व	१५	२३	६	१५	28	१२	वृष	भ. १५/२३ से ४०/५८ तक,	०६	१०	१५	५७	६	४३	१७	४०
२७.१८	४	चंद्र	३३	१५	रोहि	६	४३	परि	३९	४८	ब	७	०७	७	१६	29	१३	मि. ३४/००	करक चतुर्थी (व्रत करवा चौथ), चं.उ. रात्रि 20/17 पर **A**	०६	११	१५	५२	६	४४	१७	३९
२७.१३	५	मंग	२७	०३	मृग आर्द्रा	१ ५८	३५ १५	शिव	३१	५८	कौ	०	०९	८	१७	30	१४	मिथुन	वक्री बुध कन्या में २५/५३, शुक्र उ.फा. में ५१/०८,	०६	१२	१५	४९	६	४५	१७	३८
२७.०८	६	बुध	२२	४३	पुर्न	५७	२०	सिद्ध	२५	४०	व	२२	४३	९	१८	31	१५	क. ४१/५५	भ. २२/४३ से ५१/३४ तक, **स्कन्द षष्ठी**, नैपच्यून मार्गी ४७/१८	०६	१३	१५	४९	६	४६	१७	३७
२७.०३	७	गुरु	२०	२५	पुष्य	५७	१८	साध्य	२०	५८	बव	२०	२५	१०	१९	नवं	१६	कर्क	अहोई अष्टमी व्रत, राधाष्टमी, गुरु पुष्य योग, बुध मार्गी ५४/३३	०६	१४	१५	४९	६	४७	१७	३६
२७.००	८	शुक्र	२०	१३	श्ले.	५९	४८	शुभ	१७	५३	कौ	२०	१३	११	२०	2	१७	सिं. ५९/४८	गण्डमूल विचार, बुध मार्गी 4/36 घं.मिं.	०६	१५	१५	५०	६	४७	१७	३५
२६.५८	९	शनि	२१	५३	मघा	६०	००	शुक्ल	१६	१८	ग	२१	५३	१२	२१	3	१८	सिंह	भ. ५३/३३ से, शुक्र कन्या में ५/५८, गण्डमूल	०६	१६	१५	५६	६	४८	१७	३५
२६.५३	१०	रवि	२५	१३	मघा	३	५५	ब्रह्म	१५	५८	वि	२५	१३	१३	२२	4	१९	सिंह	भ. २५/१३ तक, बुध तुला में २७/३८, गण्डमूल ३/५५ तक,	०६	१७	१६	०४	६	४९	१७	३४
२६.४८	११	चंद्र	२९	५३	पू.फा.	९	२८	ऐंद्र	१६	४०	बा	२९	५३	१४	२३	5	२०	कं. २६/०३	रमा एकादशी व्रत	०६	१८	१६	१४	६	५०	१७	३३
२६.४५	१२	मंग	३५	२८	उ.फा.	१६	०३	वैधृ	१८	१०	कौ	२	४१	१५	२४	6	२१	कन्या	सूर्य विशा. में ४३/३०, गुरु ज्ये. (४) में ५/३०, **गोवत्स द्वादशी**	०६	१९	१६	२३	६	५०	१७	३२
२६.४३	१३	बुध	४१	३३	हस्त	२३	१०	विष्क	२०	०३	ग	८	३१	१६	२५	7	२२	तु. ५६/५०	भ. ४१/३३ से, प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी, धनवन्तरी जयन्ती, **B**	०६	२०	१६	४०	६	५१	१७	३२
२६.३८	१४	गुरु	४७	५३	चित्रा	३०	३३	प्रीति	२२	१३	वि	१४	४३	१७	२६	8	२३	तुला	भ. १४/४३ तक, नरक चतुर्दशी, श्रीहनुमान जयन्ती, यम तर्पण	०६	२१	१६	५३	६	५२	१७	३१
२६.३५	३०	शुक्र	५४	१३	स्वा	३८	०५	आयु	२४	२५	च	२१	०३	१८	२७	9	२४	तुला	कार्तिक अमावस, **दीपावली**, श्रीमहालक्ष्मी पूजन, श्रीमहावीर **C**	०६	२२	१७	०९	६	५२	१७	३०

A (जालन्धर) (देखें पृष्ठ 72 तथा 75), श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, वक्री बुध पूर्व में उदय ५७/४५, स. सि. यो. **B** यम तर्पण, दीपदान **C** निर्वाण (जैन), काली पूजा, कुबेर पूजा (देखें पृष्ठ 73)

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 2 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	२	५	७	४	४	१०	४
१५	१६	१७	२९	२५	२८	१२	०९	०९
१२	३३	१७	२३	५०	४८	३५	३२	३२
३८	३९	३९	२६	२४	३१	५०	५१	५१
६० ०३	७६८ २९	१० ००	६ १	११ ४१	६१ ५७	४ ४५	३ ११	३ ११
स्वा. ३	पुष्य ४	आर्द्रा ४	चित्रा २	ज्ये. ३	उफा ९	मघा ४	शत ९	मघा ३
—	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

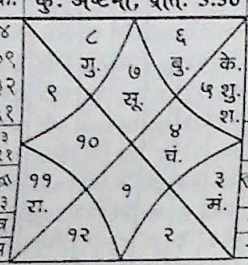

शुक्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 9 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	२	६	७	५	४	१०	४
२२	११	१८	०३	२७	०६	१३	०९	०९
१३	४८	१२	२३	१५	०९	०७	१०	१०
४४	२४	२१	००	००	४३	१८	३५	३५
६० १७	७११ २१	४ ४७	६३ ५८	१२ २१	६४ २१	४ ९	३ १०	३ १०
विशा. १	स्वा. २	आर्द्रा ४	चित्रा ४	ज्ये. ४	उफा ३	मघा ४	शत ९	मघा ३
—	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
—	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

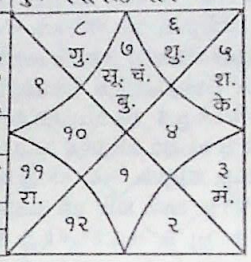

कार्तिक कृष्ण पक्ष—

कार्तिक कृष्ण चतुर्थी (29 अक्तू.) को करवा चौथ का व्रत सुहागिन स्त्रियां पति की मंगल कामना एवं आयु वृद्धि के लिए करती है। सायं श्रीगणेश पूजन करके चन्द्रमा को अर्घ्य देने के पश्चात् भोजन किया जाता है। अहोई अष्टमी का व्रत, पूजन भी सन्तान व पति के कल्याण हेतु किया जाता है। धन त्र्योदशी को औषधदान तथा नवीन बर्तन का क्रय करना शुभ होता है। ता. 9 नवं. को **श्रीमहालक्ष्मी** का पूजन व **दीपमाला** का पूजन शुभ पर्व है। इस रात्रि को किए गए जप, तप, मन्त्र, अनुष्ठानादि करने का विशेष महत्त्व होता है। (देखें पृष्ठ 73)

व्यापारिक रुख—प्रतिपदा तिथि को क्षय हुआ है, जिससे रूई, कपास, धान्यादि चाँदी के भावों में घटाबढ़ी के बाद तीन दिनों में तेजी आएगी। ता. 30 को वक्री बुध कन्या में आने से अनाज व धान्यादि में घटाबढ़ी के बाद कुछ मन्दा हो, परन्तु ता. 31 को शुक्र उ.फा. में आने से अनाज के भावों में पुनः मजबूती होगी। सोना व चांदी में भी तेजी की चमक होगी। ता. 2 नवं से बुध मार्गी होने से छोटी इलायची, नारियल, किशमिश, चन्दन, एवं औषधियों में तेजी होगी। ता. 3 नवं को शुक्र कन्या राशि में आने से गेहूँ, धान्य, चने, चावल आदि अनाज, गुड़, खाण्ड, ऊन, रेशमी वस्त्रों में तेजी होगी। चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी। ता. 4 को बुध तुला में आने से गुड़, चीनी, रूई, अफीम अलसी, सरसों, एरण्ड बिनौला, मूंगफली एवं सुवर्ण में तेजी बनेगी। कार्तिक मास में पाँच शनिवार होने से देश में कहीं विशेषकर (पूर्वोत्तर) क्षेत्र में सत्ता परिवर्तन, विग्रह, महंगाई, अग्निकाण्ड, जनांदोलन, उपद्रव आदि होने के समाचार मिलेंगे—शनिवारा यदा पंच पाताले कम्पते फणीः। ईशान देश भङ्गश्च वह्णि दाहो, महर्घता॥

आकाश लक्षण—पक्ष के उत्तरार्ध भाग में पश्चिमोत्तर कुछ क्षेत्रों में रुक-रुक कर खण्ड वर्षा के योग होंगे। ***शकुन***—1 नवं. को गुरुपुष्य योग में बादल छाए रहें, तो आगामी अच्छी फसल के संकेत हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

कार्तिक शुक्ल पक्ष शाकः १९२९ तारीखें चंद्र राशि सन् 2007 ई. (ता. 10 नवम्बर से 24 नवम्बर तक) भा. स्टै. टा. जालन्धर

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०६४, कार्तिक शुक्ल पक्ष शाकः १९२९ — सन् 2007 ई. (ता. 10 नवम्बर से 24 नवम्बर तक)

सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतुः

भा. स्टैं. टा. जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	तारीखें कार्ति. श.	शव्वा. मु.	नवंबर	कार्तिक	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रह दर्शन–प्रातः बुध–शुक्र पूर्व में तथा शनि याम्योत्तरवृत्त की ओर बढ़ रहा दिखाई देगा। मं. पश्चिम कपाल में होगा। साय गु. पश्चिम में दिखेगा। 24 नवं. से बुध पूर्व में अस्त हो जाएगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२६.३३	१	शनि	६०	००	विशा	४५	२५	सौभा	२६	३५	किं	२७	१८	१९	२८	10	२५	वृ. २८/३८	अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, बली पूजा, विश्वकर्मा पूजा (पंजाब)	०६	२३	१७	२६	६	५२	१७	२९
२६.३०	१	रवि	०	२३	अनु	५२	३०	शोभ	२८	३०	बव	०	२३	२०	२९	11	२६	वृश्चिक	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, बुध स्वा. में ४९/०३, **भ्रातृ दूज**, यम द्वितीया **A**	०६	२४	१७	४७	६	५३	१७	२९
२६.२५	२	चंद्र	६	१०	ज्ये.	५९	०५	अति	३०	०८	कौ	६	१०	२१	जि	12	२७	ध. ५९/०५	शुक्र हस्त में २९/५५, शनि पू.फा. १ में ४/२५, जिल्काद (मुस्लि.) प्रा.	०६	२५	१८	१०	६	५४	१७	२८
२६.२३	३	मंग	११	३०	मूल	६०	००	सुक	३१	२०	ग	११	३०	२२	२	13	२८	धनु	भ. ४३/४८ से, दूर्वा गणपति व्रत	०६	२६	१८	३२	६	५४	१७	२८
२६.१८	४	बुध	१६	०५	मूल	५	००	धृति	३१	५३	वि	१६	०५	२३	३	14	२९	धनु	भ. १६/०५ तक, नेहरू जयन्ती (बाल दिवस)	०६	२७	१९	०१	६	५६	१७	२७
२६.१३	५	गुरु	१९	३८	पू.षा.	१०	०३	शूल	३१	४०	बा	१९	३८	२४	४	15	३०	म. २६/०८	ज्ञान पंचमी, मंगल वक्री १७/२० **B** दुपै. के बाद, सूर्य षष्ठी व्रत	०६	२८	१९	३१	६	५८	१७	२७
२६.०८	६	शुक्र	२२	००	उ.षा.	१३	५५	गंड	३०	२८	तै	२२	००	२५	५	16	मा.	मकर	**सूर्य वृश्चिक में ३९/१५, मार्गशीर्ष संक्रान्ति**, मु. ३०, पुण्यकाल **B**	०६	२९	२०	००	६	५९	१७	२६
२६.०३	७	शनि	२२	५०	श्रव	१६	२३	वृद्धि	२८	०३	व	२२	५०	२६	६	17	२	कुं. ४७/०३	भ. २२/५० से ५९/०५ तक, **पंचक प्रारम्भ** ४७/०३,	०७	००	२०	३१	७	००	१७	२५
२६.००	८	रवि	२१	५५	धनि	१७	१०	ध्रुव	२४	१५	ब	२१	५५	२७	७	18	३	कुम्भ	गोपाष्टमी	०७	०१	२१	०२	७	०१	१७	२५
२५.५५	९	चंद्र	१९	०८	शत	१६	०८	व्या.	१९	००	कौ	१९	०८	२८	८	19	४	मी. ५९/१३	सूर्य अनु. में ५७/५३, अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी, आरोग्य व्रत	०७	०२	२१	३६	७	०२	१७	२४
२५.५३	१०	मंग	१४	२८	पू.भा.	१३	१८	हर्ष	१२	१५	ग	१४	२८	२९	९	20	५	मीन	भ. ४१/१९ से, **भीष्मपंचक प्रारम्भ**	०७	०३	२२	११	७	०३	१७	२४
२५.५१	११	बुध	८	१०	उ.भा.	८	४५	वज्र सिद्धि	४ ५४	१३ ५५	वि	८	१०	३०	१०	21	६	मीन	भ. ८/१० तक, हरिप्रबोधिनी एका., गुरू मूले १ धनु में ५५/००, बुध **C**	०७	०४	२२	४४	७	०३	१७	२४
२५.४८	१२	गुरु	०	२३	रेव अश्वि	२ ५५	४८ ४८	व्य.	४४	३८	बा	०	२३	मा	११	22	७	मे. २/४८	**पंचक समाप्त** २/४८, प्रदोष व्र., सूर्य सायन धनु में ३८/१०, शक मार्ग.	०७	०५	२३	२०	७	०४	१७	२३
०० ००	१३	गुरु	५१	३३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**त्रयोदशी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२५.४५	१४	शुक्र	४२	००	भर	४८	०५	वरी	३३	५०	ग	१६	४७	२	१२	23	८	मेष	भ. ४२/०० से, **बैकुण्ठ चौदश**	०७	०६	२३	५८	७	०५	१७	२३
२५.४३	१५	शनि	३२	१५	कृति	४०	१८	परि	२२	४८	वि	७	०८	३	१३	24	९	वृ. १/०५	भ. ७/०८ तक, **कार्तिक पूर्णिमा** व्रत, श्री गुरूनानक जयंती, बुध **E**	०७	०७	२४	३८	७	०६	१७	२३

A (प्रातः 7/02 के बाद) (देखें पृष्ठ 72), श्रीविश्वकर्मा जयन्ती, यमुना स्नान **C** विशा. 1 में ९/२५, चातुर्मास्य व्रतादि समाप्त, तुलसी विवाह

E पूर्व में अस्त ४/००, भीष्मपंचक समाप्त, दीपदान, कार्तिक स्नान समाप्त, शुक्र चित्रा में २८/२५, मेला पुष्कर, मेला रामतीर्थ (अमृतसर), श्रीसत्यनारायण व्रत, यूरेनस मार्गी २१/४३

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 18 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	२	६	७	५	४	१०	४
०१	०२	१८	१५	२९	१५	१३	०८	०८
१७	०१	२५	०८	०८	५९	४१	४१	४१
१५	३८	५७	२५	२८	०८	२२	५८	५८
६० ३०	८०४ ४९	२ ४०	८९ २९	१२ ५३	६६ ४७	३ १९	३ १०	३ १०
विशा ४	धनि ३	आर्द्रा ४	स्वा ३	ज्ये. ४	हस्त २	पूफा १	शत १	मघा ३
—	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

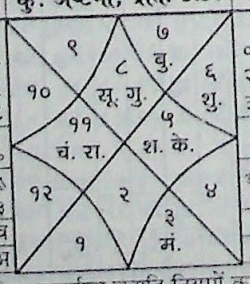

शनौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 24 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	०	२	६	८	५	४	१०	४
०७	२८	१७	२४	००	२२	१३	०८	०८
२०	४१	५७	१७	२६	४३	५९	२२	२२
३७	५४	०२	१४	२४	१२	४७	५४	५४
६० ३७	९१८ १४	७ ४०	९३ १६	१३ ९	६८ ५	२ ४३	३ ११	३ ११
अनु २	कृति १	आर्द्रा ४	विशा २	मूला १	हस्त ४	पूफा १	शत १	मघा ३
—	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

कार्तिक शुक्ल पक्ष–

प्रतिपदा (10 नवं.) को श्री भगवान् के निमित्त छप्पन योग, अर्थात् अनेक प्रकार के पकवान (मिष्ठान्न सहित) तैयार कर के भोग लगाते हैं, इसी दिन गौ के गोबर से गोवर्धन बनाकर श्रीकृष्ण की पूजार्चना की जाती है। ता. 11 को द्वितीया को **भ्रातृ दूज** का पवित्र पर्व होगा। मध्याह्न व्यापिनी द्वितीया रविवार (11 नवं.) को होने के कारणं इसी दिन यह पर्व मनाना शास्त्र सम्मत एवं प्रशस्त होगा। ता. 12 को द्वितीया तिथि प्रातः मात्र 9.22 बजे तक ही रहेगी। विशेष प्रमाण हेतु देखें पृष्ठ नं. 74 **भीष्म पंचक** ता. 20 नवं. को दशमी विद्धा एका. से प्रारम्भ होकर **24 नवं.** को समाप्त होंगे। ता. 21 नवं. को हरिप्रबोधिनी एका. के दिन चातुर्मास्य व्रतादि नियमों का उद्यापन तथा इसी दिन द्वादशी विद्धा एका. में तुलसी विवाह का पर्व होगा। ता. 24 को कार्तिक पूर्णिमा के दिन श्रीगुरुनानक देव जी का पवित्र जन्म दिन मनाया जाएगा। **मार्गशीर्ष संक्रान्ति** 16 नवम्बर, शुक्रवार को 30 मुहूर्त्ति है। गेहूँ, चना, बाजरा, मक्की एवं सर्व प्रकार के धान्य, रूई, कपास, तिल, तैल, उड़द, गुड़ आदि तेज भाव होंगे—**शुक्रस्य वारे रवि संक्रमश्चेत् समर्घतां याति तदा च धान्यम्। निर्मोल्यं अश्वाश्च गजाश्च उष्ट्रागतार्थमोलं गुडमर्घतां च॥** यह संक्रान्ति मेष, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ व मीन राशि वालों को लाभदायक रहेगी। **कार्तिक मास** में पाँच शनिवार होने से इस मास में पूर्वोत्तर क्षेत्रों में कहीं राज्य परिवर्तन, किसी प्रमुख नेता का अपदस्थ या आकस्मिक मृत्यु होने के संकेत हैं।

आकाश लक्षण—पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश व जम्मू-कश्मीर के उत्तरी भागों में तेज हवाओं के साथ बौछारें पड़ने के योग हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०६४, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष शाकः १९२९ — सन् 2007 ई. (ता. 25 नवम्बर से 9 दिसम्बर तक)

सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतुः — भा. स्टैं. टा. जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	मार्ग. कृ.	हिज.	नवंबर	मार्ग. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रहलोपदर्शन—प्रातः शुक्र पूर्व में, शनि याम्योत्तरवृत्तासन्न तथा मं. पश्चिम में दिखाई देगा। सायं गु. पश्चिम में दिखाई देगा। बुध अस्त है।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	घ्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.
२५.४०	१	रवि	२२	५०	रोहि	३२	५३	शिव	११	५५	कौ	२२	५०	४	१४	25	१०	मि. ५९/२८	**मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,** मृगछोड़ी स्नान प्रारम्भ	०७	०८	२५	१८	७	०७	१७	२३
२५.३८	२	चंद्र	१४	१०	मृग	२६	१८	सिद्ध साध्य	१ ५२	३५ १३	ग	१४	१०	५	१५	26	११	मिथुन	भ. ४०/२९ से, स. सि. यो.	०७	०९	२६	०२	७	०८	१७	२३
२५.३३	३	मंग	६	४८	आर्द्रा	२१	०५	शुभ	४४	०८	वि	६	४८	६	१६	27	१२	मिथुन	भ. ६/४८ तक, **बुध वृश्चिक में** ३५/४५, अंगारकी श्रीगणेश A	०७	१०	२६	४६	७	०९	१७	२२
२५.३०	४	बुध	१	०३	पुर्न	१७	३८	शुक्ल	३७	३०	बा	१	०३	७	१७	28	१३	क. ३/१८		०७	११	२७	३२	७	१०	१७	२२
०० ००	५	बुध	५७	२३	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	पंचमी तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२५.२९	६	गुरु	५५	५३	पुष्य	१६	१५	ब्रह्म	३२	४०	ग	२६	३८	८	१८	29	१४	कर्क	भ. ५५/५३ से, बुध अनु. में ४३/२८, स. सि. यो.	०७	१२	२८	१६	७	१०	१७	२२
२५.२८	७	शुक्र	५६	३०	श्ले.	१६	५८	ऐंद्र	२९	२८	वि	२६	१२	९	१९	30	१५	सिं. १६/५८	भ. २६/१२ तक, **शुक्र तुला में १७/४५,**	०७	१३	२९	०३	७	११	१७	२२
२५.२५	८	शनि	५९	१०	मघा	१९	४५	वैधृ	२७	५३	बा	२७	५०	१०	२०	दिसं	१६	सिंह	**कालभैरवाष्टमी,** दिसम्बर प्रारम्भ, गंडमूलादि	०७	१४	२९	५३	७	१३	१७	२२
२५.२३	९	रवि	६०	००	पू.फा.	२४	२५	विष्क	२७	४८	तै	३१	२३	११	२१	2	१७	कं. ४०/५०		०७	१५	३०	४४	७	१३	१७	२२
२५.२२	९	चंद्र	३	३५	उ.फा.	३०	३५	प्रीति	२८	५०	ग	३	३५	१२	२२	3	१८	कन्या	भ. ३६/२३ से प्रा., सूर्य ज्ये. में ८/२३,	०७	१६	३१	३४	७	१३	१७	२२
२५.२०	१०	मंग	९	१०	हस्त	३७	३८	आयु	३०	३५	वि	९	१०	१३	२३	4	१९	कन्या	भ. ९/१० तक,	०७	१७	३२	२९	७	१४	१७	२२
२५.१८	११	बुध	१५	२८	चित्रा	४५	०८	सौभा	३२	४५	बा	१५	२८	१४	२४	5	२०	तु. ११/२३	**उत्पन्ना एकादशी व्रत**	०७	१८	३३	२१	७	१५	१७	२२
२५.१५	१२	गुरु	२२	००	स्वा.	५२	४३	शोभ	३४	५८	तै	२२	००	१५	२५	6	२१	तुला	शुक्र स्वा. में २/००, गुरु मूल (२) में ५५/३०,	०७	१९	३४	१८	७	१६	१७	२२
२५.१३	१३	शुक्र	२८	२५	विशा	५९	५७	अति	३७	०३	व	२८	२५	१६	२६	7	२२	वृ. ४३/१३	भ. २८/२५ से, गुरु वार्धक्य प्रारम्भ २३/०३, **प्रदोष व्रत,** मेला पुरमंडल प्रा.	०७	२०	३५	१६	७	१७	१७	२२
२५.११	१४	शनि	३४	२०	अनु	६०	००	सुक	३८	४५	वि	१	२३	१७	२७	8	२३	वृश्चिक	भ. १/२३ तक, बुध ज्ये. में १३/४०,	०७	२१	३६	१४	७	१८	१७	२२
२५.१०	३०	रवि	३९	४३	अनु	६	४३	धृति	४०	०३	च	७	०२	१८	२८	9	२४	वृश्चिक	**अमावस स्नानदान, तर्पणादि,** मेला पुरमण्डल (जम्मू)	०७	२२	३७	१५	७	१८	१७	२२

A चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 20/12 (जालन्धर), सौभाग्य सुन्दरी व्रत

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 1 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	२	७	८	६	४	१०	४
१४	०८	१६	०५	०१	००	१४	०८	०८
२५	१७	४४	१३	५९	४३	१६	००	००
३४	१८	१६	२९	१२	५७	४०	३८	३८
६० ४९	७५० १०	१३ ४५	९४ २	१३ २३	६९ २४	२ १०	३ ११	३ ११
अनु ४	मघा ३	आर्द्रा ४	अनु १	मूला १	चित्रा ३	पूफा १	शत १	मघा ३
—	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
—	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

रवौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 9 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	२	७	८	६	४	१०	४
२२	१४	१४	१७	०३	१०	१४	०७	०७
३२	२५	३२	४५	४७	०३	२९	३५	३५
४१	१८	५९	३६	१०	२७	३६	१२	१२
६० ५९	७२३ ४०	१९ ३१	९४ १	१३ ३६	७० ३४	१ ८	३ ११	३ ११
ज्ये. २	अनु ४	आर्द्रा ३	ज्ये. १	मूला २	स्वा. २	पूफा १	शत १	मघा ३
—	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
—	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

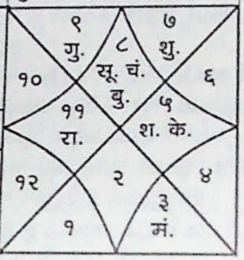

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष–

इस पक्ष की अष्टमी (1 दिसं.) को **शिव मन्दिर** में जाकर श्रीमहाकाल **भैरव** के रूप में **भगवान् शंकर** की पूजा, जप व संकीर्तन करने का विशेष माहात्मय कहा गया है। **उत्पन्ना एका.** (5 दिसं.) का विधिपूर्वक व्रत रखने से सर्व प्रकार के अभीष्टों की सिद्धि होती है। त्रयोदशी से अमावस्या (7 से 9 दिसं.) तक जम्मू के निकट **मेला पुरमण्डल** तथा देविका स्नान कुरुक्षेत्र में पुण्य पर्व मनाया जाता है। रविवार को मार्गशीर्ष अमावस होने से हरिद्वार आदि तीर्थों पर विशेष मेला होगा। ***व्यापारिक रुख***— ता. 27 से बुध वृश्चिक राशि में आने से रूई, सन, सूत व चांदी व चौपायों के भावों में तेजी होगी। खल, बिनौले व लाख में भी वृद्धि होगी। सोना, घी, व गेहूँ में मन्दी का वातावरण होगा। ता. 30 को शुक्र तुला में आने से सोने के भाव तेज परन्तु चांदी, रूई, धान्य व गेहूँ के भावों में घटाबढ़ी होगी। ता. 3 दिसं. को सूर्य ज्येष्ठा में आने से चावल, अलसी, सरसों, अरण्डी, गुड़, चीनी, गुड़, शक्कर के भावों में तेजी हो। सोना व चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी। ता. 8 को बुध भी ज्येष्ठा में गेहूँ, चना, बाजरा, खाण्ड, मूंगफली व गुड़-शक्कर में तेज़ी का रूझान रहेगा। ***लोक भविष्य***—मार्गशीर्ष मास में पाँच रविवार होने से कहीं प्राकृतिक प्रकोप, दुर्भिक्ष, अनाज में कमी, किसी विशिष्ट राजनेता की पदच्युति (छत्र भंग), उपद्रव राजनीतिक टकराव आदि होंगे—**यत्र मासे रवेवाराः जायन्ते पंचसततम्। दुर्भिक्षं छत्रभंग, स्यात् दास्ते च महद्भयम्॥** ***आकाश लक्षण***—पूर्वार्द्ध भाग में मौसम सुहावना रहेगा। उत्तरार्ध भाग में शीत हवाओं के साथ कहीं खण्ड वर्षा होगी।

वि. संवत् २०६४, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष शाकः १९२९ तारीखें चंद्र राशि प्रवेश सन् 2007 ई. (ता. 10 दिसम्बर से 23 दिसम्बर तक) भा. स्टैं. टा. जालन्धर

दक्षिण गोल, हेमन्त-शिशिर ऋतुः

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०६४, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष शाकः १९२९ — सन् 2007 ई. (ता. 10 दिसम्बर से 23 दिसम्बर तक) — भा. स्टैं. टा. जालन्धर

सूर्य दक्षिण-उत्तरायण, दक्षिण गोल, हेमन्त-शिशिर ऋतुः

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	तारीखें मार्ग. शक	तारीखें जिल्क मु.	तारीखें दिसंबर	तारीखें मार्ग प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रहलोपदर्शन—प्रातः शुक्र पूर्व में, शनि पश्चिम कपाल में, मं. भी पश्चिम क्षितिज की ओर होगा। 10 दिसं. से गुरु पश्चिम में अस्त होगा। बुध भी अस्त है।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२५.०९	१	चंद्र	४४	२०	ज्ये.	१२	५३	शूल	४०	४८	किं	१२	०२	१९	२९	10	२५	ध. १२/५३	गुरु पश्चिम में अस्त २२/५८, गण्डमूलादि	०७	२३	३८	१७	७	१९	१७	२२
२५.०८	२	मंग	४८	१३	मूल	१८	२०	गंड	४०	५८	बा	१६	१७	२०	३०	11	२६	धनु	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, गण्डमूल १८/२०, तक,	०७	२४	३९	१८	७	२०	१७	२३
२५.०६	३	बुध	५१	१५	पू.षा.	२३	००	वृद्धि	४०	३०	तै	१९	४४	२१	जिल	12	२७	म. ३९/०३	जिल्हेज (मुस्लि.) प्रारम्भ	०७	२५	४०	२२	७	२१	१७	२३
२५.०४	४	गुरु	५३	२०	उ.षा.	२६	५०	ध्रुव	३९	२३	व	२२	१८	२२	२	13	२८	मकर	भ. २२/१८ से ५३/२० तक,	०७	२६	४१	२३	७	२१	१७	२३
२५.०३	५	शुक्र	५४	२०	श्रव	२९	४०	व्या.	३७	२५	ब	२३	५०	२३	३	14	२९	मकर	श्रीराम विवाहोत्सव, स. सि. योग	०७	२७	४२	२६	७	२२	१७	२३
२५.०३	६	शनि	५४	०५	धनि	३१	२३	हर्ष	३४	३३	कौ	२४	१३	२४	४	15	३०	कुं. ०/४०	चम्पा षष्ठी, स्कन्द षष्ठी	०७	२८	४३	३२	७	२२	१७	२४
२५.०३	७	रवि	५२	२५	शत	३१	४५	वज्र	३०	३५	ग	२३	१५	२५	५	16	पौ.	कुम्भ	भ. ५२/२५ से, सूर्य मूला १ धनु में १५/१०, पौष संक्रान्ति, मु. १५,A	०७	२९	४४	३४	७	२३	१७	२४
२५.०२	८	चंद्र	४९	१८	पू.भा.	३०	४५	सिद्धि	२५	३०	वि	२०	५२	२६	६	17	२	मी. १६/०८	भ. २०/५२ तक, शुक्र विशा. में १९/२५, श्रीदुर्गाष्टमी	०८	००	४५	४०	७	२३	१७	२४
२५.०२	९	मंग	४४	४०	उ.भा.	२८	१३	व्य.	१९	१५	बा	१६	५९	२७	७	18	३	मीन	नन्दा नवमी, स. सि. योग	०८	०१	४६	४८	७	२४	१७	२५
२५.०१	१०	बुध	३८	४३	रेव	२४	२३	वरी	११	५३	तै	११	४२	२८	८	19	४	मे. २४/२३	शनि वक्री ३०/४० (19/40 घं.मिं.), पंचक समाप्त २४/२३, गं.मू.	०८	०२	४७	५०	७	२४	१७	२६
२५.००	११	गुरु	३१	३३	अश्वि	१९	१५	परि शिव	३ ५४	२५ १०	व	५	०८	२९	९	20	५	मेष	भ. ५/०८ से ३१/३३ तक, मोक्षदा एकादशी व्रत, गीता जयंती, गं.मू.	०८	०३	४८	५६	७	२५	१७	२६
२५.००	१२	शुक्र	२३	३३	भर	१३	१३	सिद्ध	४४	१८	बा	२३	३३	३०	१०	21	६	वृ. २६/३५	गुरु मूला (३) में ३२/३३, प्रदोष व्रत, अखण्ड द्वादशी	०८	०४	५०	०१	७	२६	१७	२६
२५.०१	१३	शनि	१५	०३	कृति रोहि	६ ५९	३८ ५५	साध्य	३४	१३	तै	१५	०३	पौ	११	22	७	वृष	पिशाचमोचन श्राद्ध, शक पौष प्रारम्भ, सूर्य सायन मकर में १०/३०, B	०८	०५	५१	०९	७	२६	१७	२७
२५.०१	१४	रवि	६	२८	मृग	५३	२८	शुभ	२४	०८	व	६	२८	२	१२	23	८	मि. २६/३५	भ. ६/२८ से ३२/२३ तक, मार्गशीर्ष पूर्णिमा, श्रीदत्तात्रेय जयन्ती, C	०८	०६	५२	१४	७	२७	१७	२७
०० ००	१५	रवि	५८	१८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	पूर्णिमा तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरु अस्त 10 दिसम्बर

A पुण्यकाल प्रातः सूर्योदय से, बुध मूला १ धनु में ४३/०३, B सायन उत्तरायण प्रारम्भ, शिशिर ऋतु प्रारम्भ C त्रिपुरभैरव जयन्ती

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 17 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	१०	२	८	८	६	४	१०	४
००	२५	११	००	०५	१९	१४	०७	०७
४०	१७	४२	१९	३६	३१	३५	०९	०९
५१	०४	३८	१६	३०	१८	२८	४६	४६
६१ ३	८२२ ४	२३ २	९४ ३६	१३ ४३	७१ २७	० १४	३ ११	३ ११
मूला १	पूषा २	आर्द्रा २	मूला १	मूला २	स्वा ४	पूषा १	शत १	मघा ३
—	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
—	उ	उ	अ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

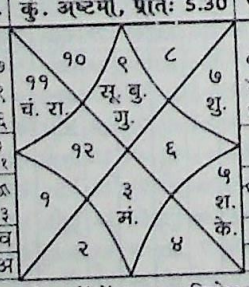

रवौ चतुर्दश्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 23 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	१	२	८	८	६	४	१०	४
०६	२२	०९	०९	०६	२६	१४	०६	०६
४७	०८	२१	४९	५८	४१	३५	५०	५०
१७	५४	५३	१९	५८	२५	११	४१	४१
६१ ६	८९५ ५९	२३ ४२	९५ ४१	१३ ४४	७२ १	० २६	३ ११	३ ११
मूला ३	रोहि ४	आर्द्रा १	मूला ३	मूला ३	विशा ३	पूषा १	शत १	मघा ३
—	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
—	उ	उ	अ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. चतुर्दशी, प्रातः 5.30

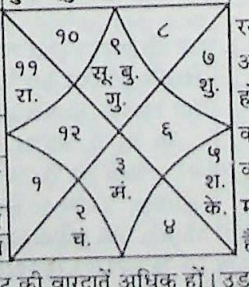

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षफल

इस पक्ष में **मोक्षदा एकादशी** का व्रत (20 दिसं.) विधिपूर्वक रखने तथा भगवान् विष्णु की पूजा, यथाशक्ति दानादि करने से अनेक मानसिक व कायिक पापों की निवृत्ति तथा पुण्यों की प्राप्ति होती है। इसी दिन **गीता जयन्ती** के उपलक्ष्य में **श्रीमद्भगवद्गीता** की सुगन्धित फूलों द्वारा पूजा, पाठ, स्वाध्याय, मनन व चिन्तन करना चाहिए। 23 दिसं. को **मार्ग. पूर्णिमा** को **ब्रह्मा, विष्णु, महेश** के अंश अवतार **श्रीदत्तात्रेय** की बालरूप में पूजा की जाती है। ***लोक भविष्य***—पक्षारम्भ में ही प्रतिपदा (10 दिसं.) को बृहस्पति धनु राशि में अस्त होने से राजनेताओं में परस्परपर विरोध एवं टकराव पैदा हों, चोरी व लूट खसूट की वारदातें अधिक हों। उड़द व तिलों की पैदावार अच्छी हो—''**राजा भयान्यलिनितस्कर लुंठनानि माषा तिलाश्च बहवो धनुषास्तमास्ते॥**'' द्वितीया को मंगलवार को सायं को चन्द्रदर्शन होने से रूई, कपास, गेहूँ, चावल, अलसी के भावों में तेजी होगी। चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी आएगी। **ता. 16 को रविवार की पौष संक्रान्ति** होने से राजनेताओं में परस्पर विग्रह एवं टकराव हों। राजनीतिक हालात अस्थिर होंगे। पौष संक्रान्ति १५ मुहूर्त्ति है। धान्यादि अनाजों के भाव अत्यधिक तेज होने से सामान्य लोग दुःखी हों। ता. 17 को शुक्र विशाखा में आने से रूई व धान्यादि अनाज 15 दिनों में मन्दे होंगे। ता. 19 दिसं. को शनि **पू.फा. में वक्री** होगा, जिससे गेहूं, अलसी, सरसों, तेल, तम्बाकू, मूंगफली, घी, तैलादि एवं शेयरों में तेजीकारक होगा। राजनेताओं में भी विग्रह एवं कहीं दुर्भिक्षादि का भय हो—**शनि वक्रे दुर्भिक्षं राजा युद्धं परस्परम्।**

आकाश लक्षण—इस पक्ष में शीत लहर का प्रभाव बढ़ेगा। पक्ष के उत्तरार्ध में कहीं खण्ड वर्षा के योग हैं। ***शकुन***—ता. 22 दिसं. को रोहिणी नक्षत्रकालीन वर्षा हो, तो आगे सुर्भिक्ष के संकेत हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०६४, पौष कृष्ण पक्ष शाकः १९२९ — सन् 2007-08 ई. (ता. 24 दिसम्बर से 8 जनवरी तक)

सूर्य उत्तरायणे, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतुः

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	तारीखें: पौष शक	जिल्ह. मु.	दिसंबर	पौष प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रह दर्शन–प्रातः शुक्र पूर्व में, 5 जन. से गुरु भी पूर्व में दिखाई देगा। इस समय शनि पश्चिम कपाल में, म. पश्चिम में डूबने को होगा। 8 जन. से सायं बुध पश्चिम से उदय होगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	भा. स्टैं. टा. जालन्धर: सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२५.०२	१	चंद्र	५०	५५	आर्द्रा	४७	५०	शुक्ल	१४	३३	बा	२४	३७	३	१३	24	९	मिथुन	पौष कृष्ण पक्षारम्भ,	०८	०७	५३	२०	७	२७	१७	२८
२५.०२	२	मंग	४४	४८	पुर्न	४३	२३	ब्रह्म ऐंद्र	५ ५७	४३ ५८	तै	१७	५२	४	१४	25	१०	क. २९/२३	शुक्र वृश्चिक में ४०/२५, बुध पू.षा. में ७/०५, क्रिसमिस दिवस	०८	०८	५४	२५	७	२७	१७	२८
२५.०३	३	बुध	४०	१८	पुष्य	४०	३३	वैधृ	५१	३८	व	१२	३३	५	१५	26	११	कर्क	भ. १२/३३ से ४०/१८ तक, राहु धनि ४ केतु मघा २ में १६/२३,	०८	०९	५५	३५	७	२७	१७	२९
२५.०३	४	गुरु	३७	४०	श्ले.	३९	३३	विष्क	४६	४५	बव	८	५९	६	१६	27	१२	सिं. ३९/३३	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि 21/12 (जालन्धर)	०८	१०	५६	४२	७	२८	१७	२९
२५.०३	५	शुक्र	३७	१०	मघा	४०	३५	प्रीति	४३	३३	कौ	७	२५	७	१७	28	१३	सिंह	शुक्र अनु. में २६/१८, गण्डमूल	०८	११	५७	५२	७	२९	१७	३०
२५.०५	६	शनि	३८	४८	पू.फा.	४३	४३	आयु	४१	५८	ग	७	५९	८	१८	29	१४	कं. ५९/४५	भ. ३८/४८ से, सूर्य पू.षा. में २०/३८, वक्री मंगल मृग (४) में ५१/३८,	०८	१२	५९	००	७	२९	१७	३१
२५.०५	७	रवि	४२	१८	उ.फा.	४८	३५	सौभा	४१	५०	वि	१०	३३	९	१९	30	१५	कन्या	भ. १०/३३ तक, स. सि. यो.	०८	१४	००	०८	७	२९	१७	३१
२५.०६	८	चंद्र	४७	१८	हस्त	५४	५३	शोभ	४२	४८	बा	१४	४८	१०	२०	31	१६	कन्या	रुक्मणी अष्टमी, अष्टका श्राद्ध,	०८	१५	०१	२०	७	३०	१७	३२
२५.०८	९	मंग	५३	२३	चित्रा	६०	००	अति	४४	३३	तै	२०	२१	११	२१	जन	१७	तु. २८/२३	जनवरी, सन् 2008 ई. प्रारम्भ	०८	१६	०२	२९	७	३०	१७	३३
२५.१०	१०	बुध	५९	५३	चित्रा	२	०५	सुक	४६	४३	व	२६	३८	१२	२२	2	१८	तुला	भ. २६/३८ से ५९/५३ तक, बुध उ.षा. में २२/०८, श्रीपार्श्वनाथ जयंती (जैन)	०८	१७	०३	४२	७	३०	१७	३४
२५.११	११	गुरु	६०	००	स्वा	९	३८	धृति	४८	५३	बव	३३	०६	१३	२३	3	१९	तुला		०८	१८	०४	५२	७	३०	१७	३४
२५.१३	११	शुक्र	६	१८	विशा	१७	००	शूल	५०	४३	बा	६	१८	१४	२४	4	२०	वृ. ०/१३	बुध मकर में २४/५०, सफला एकादशी व्रत A गुरु मूला (४) में ६/००,	०८	१९	०६	०२	७	३०	१७	३५
२५.१५	१२	शनि	१२	०८	अनु	२३	५०	गंड	५१	५८	तै	१२	०८	१५	२५	5	२१	वृश्चिक	शनि प्रदोष व्रत, गुरु पूर्व में उदय ५५/३८, गुरु गोबिंद सिंह जयंती A	०८	२०	०७	१३	७	३०	१७	३६
२५.१७	१३	रवि	१७	०८	ज्ये.	२९	४८	वृद्धि	५२	३०	व	१७	०८	१६	२६	6	२२	ध. २९/४८	भ. १७/०८ से ४९/०७ तक, गुरू बाल्यत्व प्रा.	०८	२१	०८	२३	७	३०	१७	३७
२५.१८	१४	चंद्र	२१	०५	मूल	३४	४५	ध्रुव	५२	१३	श	२१	०५	१७	२७	7	२३	धनु	गण्डमूलादि विचार	०८	२२	०९	३४	७	३१	१७	३८
२५.२०	३०	मंग	२४	२५	पूषा	३८	४३	व्या.	५१	०८	ना	२४	२५	१८	२८	8	२४	म. ५४/३३	भौमवती पौष अमावस, बुध पश्चिम में उदय ४१/५०, शुक्र ज्ये. B	०८	२३	१०	४५	७	३१	१७	३९

गुरु उदय 5 जनवरी

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 31 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	२	८	८	७	४	१०	४
१४	११	०६	२२	०८	०६	१४	०६	०६
५६	१८	१६	४०	४८	१९	२८	२५	२५
१५	२९	२५	५०	५७	४७	३७	१५	१५
६१ ९	७२३ १३	२१ ५८	९७ २४	१३ ४३	७२ ३८	१ १८	३ ११	३ ११
पूषा ९	हस्त १	मृग ४	पूषा ३	मूला ३	अनु १	पूफा १	धनि ४	मघा २
—	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
—	उ	उ	अ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

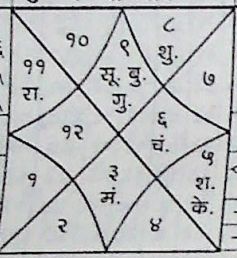

भौमे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 8 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	२	९	८	७	४	१०	४
२३	१७	०३	०५	१०	१६	१४	०५	०५
०५	३१	३४	४२	३८	०२	१५	५९	५९
३७	४२	३६	२४	२६	३६	०९	४९	४९
६१ ९	७५३ ४८	१७ ३५	९७ १५	१३ ३७	७३ ६	२ ९	३ ११	३ ११
पूषा ३	पूषा २	मृग ४	उषा ३	मूला ४	अनु ४	पूफा १	धनि ४	मघा २
—	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
—	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

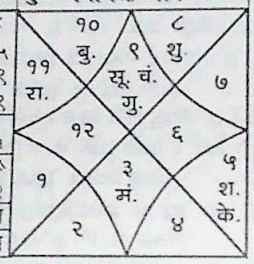

पौष कृष्ण पक्षफल–पौष मास में गेहूँ, धान्यादि, अनाज, कम्बलादि गर्म वस्त्र, ईंधन सामग्री, मौसमी फल दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। (4 जन.) को **सफला एकादशी** का व्रत विधिपूर्वक करने से सर्व प्रकार के पापों का क्षय होता है। इस दिन भगवान् विष्णु की पूजा के उपरान्त ब्राह्मणों को भोजन, दक्षिणा आदि का दान करने का विशेष फल होता है। **भौमवती अमावस** (8 जन.) को हरिद्वार आदि तीर्थों पर स्नानदान आदि करने का विशेष माहात्म्य होता है। मन्त्र-तन्त्र आदि सिद्धि के लिए भी भौमवती अमावस विशेष रूप से प्रशस्त मानी गई है। ***व्यापारिक रूख***–पक्षारम्भ में ता. 25 दिसं. को शुक्र वृश्चिक राशि में आने से गेहूँ, उड़द, मूँग, मोंठ, अलसी, गुड़, शक्कर, मूंगफली, खल-बिनौले तेज भाव होंगे। ता. 29 दिसं. को सूर्य पू.षा. में आने से तिल, तैल, सरसों, बिनौले, गुड़, खाण्ड, हल्दी, चमड़ा, ऊन व ऊनी वस्त्र, व सोना तेज़ होंगे। चांदी में घटाबढ़ी रहेगी। ता. 2 जन. को बुध उ.षा में आने से अनाज में कुछ मन्दी हो, परन्तु ता. 4 जन. को बुध मकर में आने से चांदी, सोना, चांदी, चन्दन, सरसों एवं मूंगफली में तेजी परन्तु गेहूँ, धान्यादि के भाव मध्यम रहे। ता. 6 को **गुरु धनु राशि में** उदय होने से सर्व प्रकार के अनाज, रूई व सोने में तेजी रहे, परन्तु घी, तिल, तैल, गुड़ आदि में घटाबढ़ी होगी। पौष मास में पाँच मंगलवार होने से कहीं छत्रभंग (शासन परिवर्तन), पदच्युति या किसी प्रधान नेता का आकस्मिक निधन हो। कहीं उपद्रव, जनादोलन व हिंसक घटनाएं घटित हों–"रक्तेन पूरिता पृथिवी छत्रभंगस्तदाभवेत्॥" ***आकाश लक्षण***–इस पक्ष में कहीं शीत हवाओं के साथ कहीं खण्ड वर्षा एवं ओलावृष्टि होने के योग हैं। ***शकुन***–नवमी तिथि को मेघ गरजे तो एक सप्ताह के भीतर अनाज में विशेष तेजी हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०६४, पौष शुक्ल पक्ष शाकः १९२९ — सन् 2008 ई. (ता. 9 जनवरी से 22 जनवरी तक)

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतुः

भा. स्टैं. टा. जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	तारीखें पौष शक	तारीखें जिल्ह मु.	तारीखें जनवरी	तारीखें पौष प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रहलोपदर्शन—प्रातः गु.-शु. पूर्व में, इसी समय शनि पश्चिमी क्षितिज की ओर जा रहा होगा। सायं मं. पूर्व में तथा बुध पश्चिम से दृश्य होगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२५.२१	१	बुध	२५	५३	उ.षा.	४१	४०	हर्ष	४९	१८	ब	२५	५३	१९	२९	9	२५	मकर	पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. ४५	०८	२४	११	५४	७	३१	१७	३९
२५.२३	२	गुरु	२६	४३	श्रव	४३	४०	वज्र	४६	४०	कौ	२६	४३	२०	मु.	10	२६	मकर	बुध श्रवण में ३४/३५, **मुहर्रम**, हिजरी सन् 1429 प्रारम्भ,	०८	२५	१३	०५	७	३१	१७	४०
२५.२५	३	शुक्र	२६	३५	धनि	४४	४३	सिद्धि	४३	२०	ग	२६	३५	२१	२	11	२७	कुं. १४/१८	भ. ५६/०३ से, सूर्य उ.षा. में २५/१८, **पंचक प्रारम्भ** १४/१८, गौरी तृतीया	०८	२६	१४	१५	७	३१	१७	४१
२५.२८	४	शनि	२५	३०	शत	४४	५०	व्य	३९	१३	वि	२५	३०	२२	३	12	२८	कुम्भ	भ. २५/३० तक, स्वा. विवेकानन्द जयन्ती	०८	२७	१५	२५	७	३१	१७	४२
२५.३२	५	रवि	२३	३०	पू.भा.	४४	०५	वरी	३४	२५	बा	२३	३०	२३	४	13	२९	मी. २९/२०	**लोहड़ी पर्व** (पंजाब, हिमाचल, हरि. दिल्ली)	०८	२८	१६	३१	७	३१	१७	४३
२५.३३	६	चंद्र	२०	३३	उ.भा.	४२	२५	परि	२८	५३	तै	२०	३३	२४	५	14	मा.	मीन	**सूर्य मकर में ४१/३३, माघ संक्रान्ति**, मु. ४५, पुण्यकाल मध्याह्न **A**	०८	२९	१७	३९	७	३०	१७	४३
२५.३५	७	मंग	१६	४०	रेव	३९	५०	शिव	२२	३५	व	१६	४०	२५	६	15	२	मे. ३९/५०	भ. १६/४० से ४४/१८ तक, **पंचक समाप्त ३९/५०**	०९	००	१८	४७	७	३०	१७	४४
२५.३८	८	बुध	११	५५	अश्वि	३६	२८	सिद्ध	१५	३८	बव	११	५५	२६	७	16	३	मेष	गण्डमूल ३६/३८ तक,	०९	०१	१९	५४	७	३०	१७	४५
२५.४०	९	गुरु	६	२३	भर	३२	२०	साध्य शुभ	८ ५९	०३ ५५	कौ	६	२३	२७	८	17	४	वृ. ४६/१३		०९	०२	२१	०१	७	३०	१७	४६
२५.४३	१०	शुक्र	०	१३	कृति	२७	४३	शुक्ल	५१	३०	ग	०	१३	२८	९	18	५	वृष	भ. २६/५६ से ५३/३८ तक, **पुत्रदा एकादशी व्रत स्मार्त**	०९	०३	२२	०३	७	३०	१७	४७
०० ००	११	शुक्र	५३	३८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**एकादशी तिथि का क्षय** ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२५.५०	१२	शनि	४६	५८	रोहि	२२	४८	ब्रह्म	४२	५८	बव	२०	१८	२९	१०	19	६	मि. ५०/२०	बुध धनि. में ३७/०८, गुरु पू.षा. में ५४/३८, **शुक्र धनु में २०/२५ B**	०९	०४	२३	०८	७	२९	१७	४९
२५.५३	१३	रवि	४०	२३	मृग	१७	५३	ऐंद्र	३४	३०	कौ	१३	४१	३०	११	20	७	मिथुन	**प्रदोष व्रत**, सूर्य सायन धनु में ३६/५३,	०९	०५	२४	१२	७	२९	१७	५०
२५.५५	१४	चंद्र	३४	१५	आर्द्रा	१३	१८	वैधृ	२६	२५	ग	७	१९	मा.	१२	21	८	क. ५५/१८	भ. ३४/१५ से, सूर्य अभिजित नक्षत्र में १४/३०, शक माघ प्रारम्भ	०९	०६	२५	१५	७	२९	१७	५१
२६.०३	१५	मंग	२९	०३	पुर्न	९	२८	विष्क	१९	००	वि	१	३९	२	१३	22	९	कर्क	भ. १/३९ तक, **पौष पूर्णिमा, माघस्नान प्रारम्भ**, श्रीसत्यनारायण व्रत	०९	०७	२६	१४	७	२८	१७	५३

A बाद, निरयण उत्तरायण प्रारम्भ **B** पुत्रदा एकादशी व्रत (वैष्णव)

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 16 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	२	९	८	७	४	१०	४
०१	०३	०१	१८	१२	२५	१३	०५	०५
१४	३३	३४	१५	२६	४८	५५	३४	३४
४९	०६	२९	४१	४०	३२	११	२३	२३
६१ ७	८५१ ३०	११ ३२	८६ ४६	१३ २४	७३ २५	२ ५५	३ ११	३ ११
उषा २	अश्वि २	मृग ३	श्रव ३	मूला ४	ज्ये. ३	पूफा ९	धनि ४	मघा २
—	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

११ रा. | १० सू. बु. | ९ गु. | ८ शु. | १२ | १ चं. | ७ | २ | ३ मं. | ४ | ५ श. के. | ६

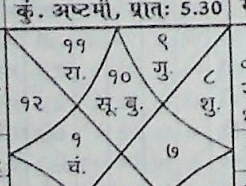

भौमे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 22 जनवरी (2008 ई.)

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	२	२	९	८	८	४	१०	४
०७	२९	००	२५	१३	०३	१३	०५	०५
२१	५६	३७	५९	४६	०९	३६	१५	१५
१५	१५	३०	४१	३४	३२	२२	१८	१८
६१ २	८४३ ४३	६ ४०	५९ १९	१३ ११	७३ ३७	३ २६	३ १०	३ १०
उषा ४	पुर्न ३	मृग ३	धनि १	पूषा १	मूला १	पूफा १	धनि ४	मघा २
—	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

११ रा. | १० सू. बु. | ९ शु. गु. | १२ | ८ | १ | ७ | २ | ३ चं. मं. | ४ | ५ श. के. | ६

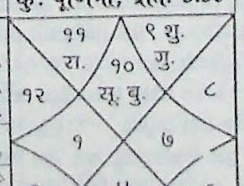

पौष शुक्ल पक्षफल

इस पक्ष में माघ संक्रान्ति के एक दिन पूर्व लोहड़ी पर्व (13 जन.) सारे पंजाब व अन्य प्रदेशों में लकड़ियां, समिधा, रेवड़ियां, तिल सहित अग्नि प्रदीप्त करके अग्नि पूजा के रूप में मनाया जाता है। **मकर संक्रान्ति** (14 जन.) को स्नानादि उपरान्त तिलों से हवन, तिलयुक्त वस्तुओं का दान व **भगवान् विष्णु** व सूर्यदेव की उपासना का विधान है। इस दिन हरिद्वार आदि तीर्थों पर स्नानदानादि का भी विशेष माहात्म्य होता है। वहाँ न जा सके तो गृह में ही श्रद्धापूर्वक स्नान करें, वहीं उनका स्मरण करें अथवा **''गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु॥''** का उच्चारण करें। **पुत्रदा एकादशी** (18 जन.) का विधिपूर्वक व्रत रखने से दम्पत्ति को मनोवांछित पुत्र संतति की प्राप्ति होती है। **पौष पूर्णिमा** (22 जन.) को हरिद्वार, कुरुक्षेत्र, प्रयाग आदि तीर्थों पर स्नान, दान आदि का विशेष माहात्म्य होता है। *व्यापार विमर्श*—ता. 9 जन. बुधवार को चन्द्रदर्शन होने से अनाज, मूंगफली व घी में तेजी हो परन्तु रूई, सोना व चांदी में घटाबढ़ी रहे। ता. 10 को बुध श्रवण में आने से धान्य, चावल, चने, अलसी, मूंगफली गुड़, चीनी में तीन दिन में तेजी हो। ता. 11 को सूर्य उ.षा में आने से उड़द, मूंग, चावल, गेहूं, गुड़, शक्कर, कपास, सरसों तेज भाव हों। ता. 14 को सूर्य मकर राशि में प्रविष्ट होकर बुध के साथ मेल करेगा। मंगल की विशेष दृष्टि होगी। घी, गुड़, खाण्ड, अलसी, तेल (खाद्य), दालें आदि तेज भाव होंगी। **सूर्य का शनि** तथा मंगल-दोनों ग्रहों के साथ षडाष्टक योग होने से राजनीतिक टकराव, विग्रह एवं हिंसक घटनाएँ अधिक होंगी। राजनीतिक अस्थिरता होगी। अत्यधिक महंगाई के कारण प्रजा में विक्षोभ पैदा हो। *आकाश लक्षण*—पक्ष के पूर्वार्द्ध भाग में कहीं शीत लहर के साथ वर्षा एवं ओलावृष्टि होगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०६४, माघ कृष्ण पक्ष शाकः १९२९ — सन् 2008 ई. (ता. 23 जनवरी से 7 फरवरी तक)

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतुः

भा. स्टैं. टा. जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	माघ शक	मुह. म.	जनवरी	माघ प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रह दर्शन–प्रातः गुरु–शुक्र पूर्व में परस्पर आसन्न तथा श. पश्चिमी क्षितिज की ओर जा रहा होगा। सायं पूर्व में मंगल होगा। 30 जन. से बुध पश्चिम में अस्त हो जाएगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
२६.०३	१	बुध	२४	५८	पुष्य	६	३८	प्रीति	१२	२५	कौ	२४	५८	३	१४	23	१०	कर्क	**नेताजी सुभाषचन्द्र जयन्ती**	०९	०८	२७	१६	७	२८	१७	५३
२६.०५	२	गुरु	२२	२०	श्ले.	५	०८	आयु	६	५८	ग	२२	२०	४	१५	24	११	सिं. ५/०८	भ. ५१/५३ से, सूर्य श्रवण में ३१/१५,	०९	०९	२८	१७	७	२८	१७	५४
२६.०८	३	शुक्र	२१	२५	मघा	५	१८	सौभा	२	५०	वि	२१	२५	५	१६	25	१२	सिंह	भ. २१/२५ तक, **श्रीगणेश संकट चौथ व्रत**, चन्द्रोदय रात्रि 20.58 घं.मिं.A	०९	१०	२९	१५	७	२७	१७	५४
२६.१०	४	शनि	२२	१८	पू.फा.	७	०८	शोभ अति	० ५८	०३ ४०	बा	२२	१८	६	१७	26	१३	कं. २२/५३	**भारत गणतन्त्र दिवस**, शनि मघा (४) में ३०/१३,	०९	११	३०	१५	७	२७	१७	५५
२६.१०	५	रवि	२४	५८	उ.फा.	१०	४३	सुक	५८	३८	तै	२४	५८	७	१८	27	१४	कन्या	स. सि. योग	०९	१२	३१	१४	७	२७	१७	५५
२६.१५	६	चंद्र	२९	१५	हस्त	१५	५५	धृति	५९	३५	व	२९	१५	८	१९	28	१५	तु. ४९/००	भ. २९/१५ से, **बुध वक्री** ४६/२०, लाला लाजपतराय जयन्ती	०९	१३	३२	१०	७	२६	१७	५६
२६.१८	७	मंग	३४	४५	चित्रा	२२	२०	शूल	६०	००	वि	२	००	९	२०	29	१६	तुला	भ. २/०० तक, स्वा. विवेकानन्द जयं. (मतान्तरे)	०९	१४	३३	०७	७	२६	१७	५७
२६.२३	८	बुध	४१	००	स्वा	२९	३३	शूल	१	२०	बा	७	५३	१०	२१	30	१७	तुला	शुक्र पू.षा. में १२/००, शहीदी दिन महात्मा गाँधी, **मंगल मार्गी** ५१/४०,	०९	१५	३४	०३	७	२५	१७	५८
२६.२८	९	गुरु	४७	२०	विशा	३७	००	गंड	३	२८	तै	१४	१०	११	२२	31	१८	वृ. २०/१०	**वक्री बुध पश्चिम में अस्त** २९/१३	०९	१६	३४	५९	७	२४	१७	५९
२६.३०	१०	शुक्र	५३	१३	अनु	४४	०५	वृद्धि	५	२८	व	२०	१७	१२	२३	फर	१९	वृश्चिक	भ. २०/१७ से ५३/१३ तक, **फरवरी मास प्रारम्भ**,	०९	१७	३५	५२	७	२४	१८	००
२६.३३	११	शनि	५८	१३	ज्ये	५०	२०	ध्रुव	७	०८	ब	२५	४३	१३	२४	2	२०	ध. ५०/२०	**षट्तिला एकादशी व्रत**, गण्डमूल विचार	०९	१८	३६	४७	७	२४	१८	०१
२६.३५	१२	रवि	६०	००	मूल	५५	३०	व्या	७	५८	कौ	३०	०६	१४	२५	3	२१	धनु.	**तिल द्वादशी**, गण्डमूल 29/35 घं.मिं. तक, स. सि. यो.	०९	१९	३७	३९	७	२३	१८	०१
२६.३८	१२	चंद्र	१	५८	पू.षा.	५९	१५	हर्ष	७	५०	तै	१	५८	१५	२६	4	२२	धनु	**सोम प्रदोष व्रत**	०९	२०	३८	३२	७	२३	१८	०२
२६.४३	१३	मंग	४	२०	उ.षा.	६०	००	वज्र	६	४३	व	४	२०	१६	२७	5	२३	म. १५/०३	भ. ४/२० से ३४/४८ तक,	०९	२१	३९	२२	७	२२	१८	०३
२६.४८	१४	बुध	५	१५	उ.षा.	१	४५	सिद्धि	४	२८	श	५	१५	१७	२८	6	२४	मकर	सूर्य धनि. में ३९/२०, वक्री बुध श्रव. ४ में ४२/४०, **मौनी अमावस B**	०९	२२	४०	११	७	२१	१८	०४
२६.५३	३०	गुरु	४	४८	श्रव	२	५०	व्य वती	१ ५६	१० ५३	ना	४	४८	१८	२९	7	२५	कुं. ३२/५५	**मौनी माघ अमावस**, पुण्यस्नानदानादि, पंचक प्रारम्भ ३२/५५ C	०९	२३	४०	५८	७	२०	१८	०५

A सूर्य अभिजित नक्षत्र से निवृत्ति २३/४० **B** अमावस स्नानपितृतर्पणादि 9/27 घं.मिं. उपरान्त **C** अमा.—देव ऋषि आदि कार्येषु

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 30 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	२	९	८	८	४	१०	४
१५	१३	००	२९	१५	१२	१३	०४	०४
२९	११	०६	४६	३०	५९	०६	४९	४९
११	५२	३८	५८	५२	१८	४८	५२	५२
६० ५६	७१२ ४०	० २०	१८ ४०	१२ ४९	७३ ५१	४ ००	३ ११	३ ११
श्रव २	स्वा. २	मृग ३	धनि २	पूषा १	पूषा ४	मघा ४	धनि ४	मघा २
—	मा	बव	व	मा	मा	व	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

११ रा. | १० सू. बु. | ९ शु. गु. | ८ | ७ चं. | ६ | ५ श. के. | ४ | ३ मं. | २ | १ | १२

गुरौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 7 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	२	९	८	८	४	१०	४
२३	२१	००	२३	१७	२२	१२	०४	०४
३६	४२	२४	०४	११	५०	३३	२४	२४
१९	०४	३९	४४	५७	३९	०४	२६	२६
६० ४९	८०० ५	५ २८	७२ २८	१२ २२	७४ ००	४ २७	३ ११	३ ११
धनि १	श्रव ४	मृग ३	श्रव ४	पूषा २	पूषा ३	मघा ४	धनि ४	मघा २
—	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
—	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

११ रा. | १० सू. चं. बु. | ९ शु. गु. | ८ | ७ | ६ | ५ श. के. | ४ | ३ मं. | २ | १ | १२

माघ कृष्ण पक्षफल

इस पक्ष में **श्रीगणेश संकट चौथ** (25 जन.) का व्रत रखकर प्रातः स्नानादि के बाद श्रीगणेश पूजन एवं तदुपरान्त श्री गणपति के स्तोत्र–मन्त्रादि का पाठ करना चाहिए। रात्रि को पुनः पूजन करके लड्डुओं से भोग लगाकर चन्द्रार्घ्य देने के पश्चात् स्वयं प्रसाद–भोजनादि ग्रहण करना चाहिए। इससे अनेक दैहिक व मानसिक कष्टों से निवृत्ति होती है। **षट्तिला एकादशी** (2 फर.) का व्रत विधिपूर्वक रखकर तिलयुक्त पदार्थों का दानादि करके स्वयं भोजन करना चाहिए। माघ मौनी अमावस बुधवार (6 फर.) को स्नान दान हेतु (पितरि आदि कार्यों के निमित्त) विशेष माहात्म्य रहेगा। जबकि देव, ऋषि आदि हेतु स्नान, दान, जपादि का माहात्म्य पर्व 7 फर. गुरूवार को रहेगा। *व्यापारिक लक्ष्य*—पक्षारम्भ में ता. 24 जन. को सूर्य श्रवण में आकर गेहूँ, धान्य, चावल, अलसी, तोरिया, सोना, पीतल व चाँदी में तेजी का माहौल होगा। ता. 28 को बुध मकर राशि में वक्री होने से ईख, खाण्ड, शक्कर, तिल, तैल, पैट्रोल, कैमिकल्ज़ आदि रसदार वस्तुएं तेजभाव होंगी। ता. 30 को शुक्र पू.षा में आने से मूंग, मोठ, उड़द, तिल, तैल, सरसों में मन्दी का वातावरण होगा। ता. 31 को वक्री बुध मकर में अस्त होने से चाँदी व चावलों में तेजी होगी। परन्तु रूई, कपास व शेयरों में मन्दी का रूझान होगा। *आकाश लक्षण*—पूर्वार्द्ध भाग में कश्मीर, हिमाचल प्रदेश व पंजाब के उत्तरी क्षेत्रों में शीत लहर के साथ खण्ड वर्षा हो। **शकुन**—माघ त्रयोदशी सोम अथवा मंगलवार को बूंदाबांदी हो, तो अनाज एवं धान्य के व्यापारियों के लाभ के लिए शुभ संकेत हैं।

वि. संवत् २०६४, माघ शुक्ल पक्ष शाकः १९२९ — सन् 2008 ई. (ता. 8 फरवरी से 21 फरवरी तक)

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर–वसन्त ऋतुः

भा. स्टैं. टा. जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	माघ शक	मुह. म.	जनवरी	माघ प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रह दर्शन–प्रातः गुरु–शुक्र पूर्व में परस्पर आसन्न तथा श. पश्चिमी क्षितिज की ओर जा रहा होगा। सायं पूर्व में मंगल होगा। 30 जन. से बुध पश्चिम में अस्त हो जाएगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
२६.०३	१	बुध	२४	५८	पुष्य	६	३८	प्रीति	१२	२५	कौ	२४	५८	३	१४	23	१०	कर्क	**नेताजी सुभाषचन्द्र जयन्ती**	०९	०८	२७	१६	७	२८	१७	५३
२६.०५	२	गुरु	२२	२०	श्ले.	५	०८	आयु	६	५८	ग	२२	२०	४	१५	24	११	सिं. ५/०८	भ. ५१/५३ से, सूर्य श्रवण में ३१/१५,	०९	०९	२८	१७	७	२८	१७	५४
२६.०८	३	शुक्र	२१	२५	मघा	५	१८	सौभा	२	५०	वि	२१	२५	५	१६	25	१२	सिंह	भ. २१/२५ तक, **श्रीगणेश संकट चौथ व्रत**, चन्द्रोदय रात्रि 20.58 घं.मिं.A	०९	१०	२९	१५	७	२७	१७	५४
२६.१०	४	शनि	२२	१८	पू.फा.	७	०८	शोभ अति	० ५८	०३ ४०	बा	२२	१८	६	१७	26	१३	कं. २२/५३	**भारत गणतन्त्र दिवस**, शनि मघा (४) में ३०/१३,	०९	११	३०	१५	७	२७	१७	५५
२६.१०	५	रवि	२४	५८	उ.फा.	१०	४३	सुक	५८	३८	तै	२४	५८	७	१८	27	१४	कन्या	स. सि. योग	०९	१२	३१	१४	७	२७	१७	५५
२६.१५	६	चंद्र	२९	१५	हस्त	१५	५५	धृति	५९	३५	व	२९	१५	८	१९	28	१५	तु. ४९/००	भ. २९/१५ से, **बुध वक्री** ४६/२०, लाला लाजपतराय जयन्ती	०९	१३	३२	१०	७	२६	१७	५६
२६.१८	७	मंग	३४	४५	चित्रा	२२	२०	शूल	६०	००	वि	२	००	९	२०	29	१६	तुला	भ. २/०० तक, स्वा. विवेकानन्द जयं. (मतान्तरे)	०९	१४	३३	०७	७	२६	१७	५७
२६.२३	८	बुध	४१	००	स्वा	२९	३३	शूल	१	२०	बा	७	५३	१०	२१	30	१७	तुला	शुक्र पू.षा. में १२/००, शहीदी दिन महात्मा गाँधी, **मंगल मार्गी** ५१/४०,	०९	१५	३४	०३	७	२५	१७	५८
२६.२८	९	गुरु	४७	२०	विशा	३७	००	गंड	३	२८	तै	१४	१०	११	२२	31	१८	वृ. २०/१०	**वक्री बुध पश्चिम में अस्त** २९/१३	०९	१६	३४	५९	७	२४	१७	५९
२६.३०	१०	शुक्र	५३	१३	अनु	४४	०५	वृद्धि	५	२८	व	२०	१७	१२	२३	फर	१९	वृश्चिक	भ. २०/१७ से ५३/१३ तक, **फरवरी मास प्रारम्भ**,	०९	१७	३५	५२	७	२४	१८	००
२६.३३	११	शनि	५८	१३	ज्ये	५०	२०	ध्रुव	७	०८	ब	२५	४३	१३	२४	2	२०	ध. ५०/२०	**षट्तिला एकादशी व्रत**, गण्डमूल विचार	०९	१८	३६	४७	७	२४	१८	०१
२६.३५	१२	रवि	६०	००	मूल	५५	३०	व्या	७	५८	कौ	३०	०६	१४	२५	3	२१	धनु.	**तिल द्वादशी**, गण्डमूल 29/35 घं.मिं. तक, स. सि. यो.	०९	१९	३७	३९	७	२३	१८	०१
२६.३८	१२	चंद्र	१	५८	पू.षा.	५९	१५	हर्ष	७	५०	तै	१	५८	१५	२६	4	२२	धनु	**सोम प्रदोष व्रत**	०९	२०	३८	३२	७	२३	१८	०२
२६.४३	१३	मंग	४	२०	उ.षा.	६०	००	वज्र	६	४३	व	४	२०	१६	२७	5	२३	म. १५/०३	भ. ४/२० से ३४/४८ तक,	०९	२१	३९	२२	७	२२	१८	०३
२६.४८	१४	बुध	५	१५	उ.षा.	१	४५	सिद्धि	४	२८	श	५	१५	१७	२८	6	२४	मकर	सूर्य धनि. में ३९/२०, वक्री बुध श्रव. ४ में ४२/४०, **मौनी अमावस B**	०९	२२	४०	११	७	२१	१८	०४
२६.५३	३०	गुरु	४	४८	श्रव	२	५०	व्य वती	१ ५६	१० ५३	ना	४	४८	१८	२९	7	२५	कुं. ३२/५५	**मौनी माघ अमावस**, पुण्यस्नानदानादि, पंचक प्रारम्भ ३२/५५ C	०९	२३	४०	५८	७	२०	१८	०५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०६४, माघ शुक्ल पक्ष शाकः १९२९ — सन् 2008 ई. (ता: 8 फरवरी से 21 फरवरी तक)

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर-वसन्त ऋतुः

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	तारीखें माघ शक	मु.	फरवरी	माघ प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रहलोपदर्शन—प्रातः बु., शु., गु. पूर्व में दृश्य होंगे, शनि पश्चिम में होगा। सायं मंगल पूर्व कपाल में दिखाई देगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२६.५८	१	शुक्र	३	०५	धनि	२	४३	परि	५१	४५	ब	३	०५	१९	३०	8	२६	कुम्भ	चन्द्रदर्शन, मु. १५, माघ शुक्ल पक्षारम्भः	०९	२४	४१	४४	७	१९	१८	०६
२७.०३	२	शनि	०	२०	शत पूभा	१ ५९	२५ ३५	शिव	४५	५८	कौ	०	२०	२०	स.	9	२७	मी. ४५/१०	गौरी तृतीया व्रत, बाबा लाल जयन्ती, सफर (मुस्लि.) प्रारम्भ	०९	२५	४२	२८	७	१८	१८	०७
०० ००	३	शनि	५६	४३	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	तृतीया तिथि का क्षय A १/२५, वरद् चौथ, कुन्द चतुर्थी, स.सि.यो.	०	०	०	०	०	०	०	०
२७.०५	४	रवि	५२	२३	उ.भा.	५६	५८	सिद्ध	३९	३३	ब	२४	३३	२१	२	10	२८	मीन	भ. २४/३३ से ५२/२३ तक, श्रीगणेश तिल चतुर्थी, शुक्र उ.षा. में A	०९	२६	४३	१४	७	१८	१८	०८
२७.०७	५	चंद्र	४७	३८	रेव	५३	५३	साध्य	३२	४८	ब	१९	३१	२२	३	11	२९	मे. ५३/५३	पंचक समाप्त ५३/५३, बसन्त पंचमी, श्री ५, सरस्वती जयन्ती	०९	२७	४३	५६	७	१७	१८	०८
२७.१३	६	मंग	४२	३३	अश्वि	५०	२८	शुभ	२५	४३	कौ	१५	०६	२३	४	12	३०	मेष	वक्री बुध पूर्व में उदय ३८/२३, शुक्र मकर में ४३/३५,	०९	२८	४४	३६	७	१६	१८	०९
२७.१८	७	बुध	३७	१३	भर	४६	५३	शुक्ल	१८	२५	ग	९	५३	२४	५	13	फा	मेष	भ. ३७/१३ से प्रा., सूर्य कुम्भ में १४/३५, फाल्गुन संक्रान्ति, B	०९	२९	४५	१६	७	१५	१८	१०
२७.२३	८	गुरु	३१	५३	कृति	४३	१८	ब्रह्म	११	०५	वि	४	३३	२५	६	14	२	वृ. १/००	भ. ४/३३ तक, भीष्माष्टमी	१०	००	४५	५४	७	१४	१८	११
२७.२८	९	शुक्र	२६	३५	रोहि	३९	४५	एंद्र वैध	३ ५६	४५ ३०	कौ	२६	३५	२६	७	15	३	वृष		१०	०१	४६	२९	७	१३	१८	१२
२७.३३	१०	शनि	२१	२८	मृग	३६	२८	विष्क	४९	३०	ग	२१	२८	२७	८	16	४	मि. ८/०५	भ. ४९/०७ से प्रारम्भ	१०	०२	४७	०४	७	१२	१८	१३
२७.३८	११	रवि	१६	४५	आर्द्रा	३३	३५	प्रीति	४२	५०	वि	१६	४५	२८	९	17	५	मिथुन	भ. १६/४५ तक, जया एकादशी व्रत, भीष्म द्वादशी	१०	०३	४७	३५	७	११	१८	१४
२७.४३	१२	चंद्र	१२	३०	पुर्न	३१	१५	आयु	३६	४०	बा	१२	३०	२९	१०	18	६	क. १६/४८	तिल द्वादशी, सोम प्रदोष व्रत	१०	०४	४८	०६	७	१०	१८	१५
२७.४८	१३	मंग	८	५८	पुष्य	२९	४०	सौभा	३१	१०	तै	८	५८	३०	११	19	७	कर्क	सूर्य शत. में ५१/०३, बुध मार्गी ३/४३, सूर्य सायन मीन में १२/५८, C	१०	०५	४८	३५	७	०९	१८	१६
२७.५३	१४	बुध	६	१८	श्ले	२९	०३	शोभ	२६	२३	ब	६	१८	फा	१२	20	८	सिं. २९/०३	भ. ६/३८ से ३५/४२ तक, शुक्र श्रव. में ४९/५३, श्रीसत्यनारायण व्रत, D	१०	०६	४९	०२	७	०८	१८	१७
२७.५५	१५	गुरु	४	४५	मघा	२९	३०	अति	२२	३०	ब	४	४५	२	१३	21	९	सिंह	माघ पूर्णिमा स्नानादि, गुरु पू.षा. (३) में ३/०३, श्रीगुरु रविदास जयं. E	१०	०७	४९	२७	७	०७	१८	१७

B मु. १५, पुण्यकाल सूर्योदय से, रथ-आरोग्य सप्तमी, पुत्र सप्तमी, अचला सप्तमी, श्रीमाधवाचार्य जयंती C वसन्त ऋतु प्रारम्भ D शक फाल्गुन प्रारम्भ E माघस्नान समाप्त

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 14 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	०	२	९	८	९	४	१०	४
००	२८	०१	१५	१८	०१	१२	०४	०४
४१	४४	१६	५९	३७	२८	०१	०२	०२
३२	१२	४३	१२	०७	५१	०४	११	११
६० ३८	८५१ ४५	९ ५६	३५ १५	११ ५४	७४ ४	४ ४३	३ ११	३ ११
धनि ३	कृति १	मृग ३	श्रव २	पुष्य २	उषा २	मघा ४	धनि ४	मघा २
—	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

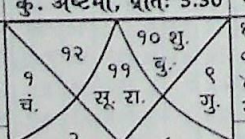

गुरौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 21 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	२	९	८	९	४	१०	४
०७	०५	०२	१४	१९	१०	११	०३	०३
४५	५८	३८	३२	५८	०७	२७	३९	३९
२३	०७	०८	४०	४१	२८	४२	५५	५५
६० २६	७८७ १४	१३ ४६	१५ २४	११ २०	७४ ७	४ ५०	३ ११	३ ११
शत १	मघा २	मृग ३	श्रव २	पुष्य २	श्रव १	मघा ४	धनि ४	मघा २
—	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

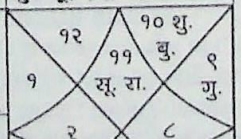

माघ शुक्ल पक्ष—

इस पक्ष में **तिल चतुर्थी को श्री गणेश जी** का व्रत एवं पूजन, तिल, फल व गुड़ लड्डुओं सहित करने का विधान है। **बसन्त पंचमी** (11 फर.) को भगवान श्री विष्णु व सरस्वती की धूप, दीप, नैवेद्य व गुलाल के साथ पूजा करनी चाहिए तथा पीले एवं मीठे चावलों का भोग लगाने की परम्परा है। **रथ सप्तमी** को सूर्य भगवान को मन्त्रपूर्वक अर्घ्य प्रदान तथा षोडशोपचार सहित पूजन करने से स्वास्थ्य एवं आरोग्यता बनी रहती है। यह व्रत सर्वारिष्ट निवारक है। **माघ पूर्णिमा** को गंगा आदि तीर्थ पर स्नान दानादि करने का विशेष माहात्म्य होगा। *व्यापारिक कथन*—8 फर. शुक्रवार को द्वितीया का चन्द्रदर्शन कुम्भ राशि में होगा, जिससे अनाज, राजमाह, मूंग, दालवाले, मोंठ, उड़द, चना, अरहर, मसूर तेज भाव होंगे। सोना, चांदी में घटाबढ़ी होकर बाद में तेजी होगी। ता. 10 को शुक्र उ.षा. में आकर गुड़, खांड, अलसी तथा सोना, चांदी में कुछ मन्दी का वातावरण रहे। ता. 12 को शुक्र मकर राशि में जाकर बुध के साथ मेल करेगा, उस पर मंगल की विशेष दृष्टि पड़ेगी, जिससे गेहूं, घी, चना, चावल, गुड़, चीनी तेज भाव होंगे। शेयरों में भी तेज़ी का रूख होगा। ता. 13 को सूर्य कुम्भ राशि में जाकर राहु के साथ मेल करेगा। **फाल्गुन संक्रान्ति** 15 मुहूर्ति है। गेहूँ, घी, तैल, सरसों, मूंगफली, खल-बिनौले, चौपाय व पशुचारा तेज भाव होंगे। **सूर्य व राहु** का सम्बन्ध होने से किसी प्रधान राजनेता के लिए अनिष्टकारी होगा। **माघ मास** में पाँच बृहस्पतिवार होने से पश्चिमी देशों में कहीं युद्ध एवं फौजी टकराव होने के समाचार मिलेंगे—यत्र मासे पंचवाराः जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रह पश्चिम देशे—खड्गयुद्धं च जायते। *आकाश लक्षण*—पूर्वार्द्ध भाग में उत्तरी क्षेत्रों में कहीं बादल चाल बनी रहेगी। कहीं बूंदाबादी व वर्षा के छींटे पड़ें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०६४, फाल्गुन कृष्ण पक्ष शाकः १९२९

सन् 2008 ई. (ता. 22 फरवरी से 7 मार्च तक) — भा. स्टै. टा. — जालन्धर

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, वसन्त ऋतुः

ग्रहलोपदर्शन—प्रातः बु.-शु. गु. पूर्व में दृश्य, शनि पश्चिम तथा मंगल सायं पूर्वी कपाल में दृष्टि गोचर होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	तारीखें मु.	तारीखें प्र.	फरवरी	फाल्गुन प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल		दे. रा.	सू. अ.	स्प. क.	स्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.
२८.००	१	शुक्र	४	२५	पू.फा.	३१	१५	सुक	१९	३८	कौ	४	२५	३	१४	22	१०	कं. ४६/५३	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ	१०	०८	४९	५०	७	०६	१८	१८
२८.०५	२	शनि	५	२८	उ.फा.	३४	२०	धृति	१७	४८	ग	५	२८	४	१५	23	११	कन्या	भ. ३६/४२ से प्रारम्भ	१०	०९	५०	१२	७	०५	१८	१९
२८.०८	३	रवि	७	५५	हस्त	३८	५०	शूल	१७	०८	वि	७	५५	५	१६	24	१२	कन्या	भ. ७/५५ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत**, चन्द्रोदय रात्रि 21/35 **A**	१०	१०	५०	३४	७	०४	१८	१९
२८.१३	४	चंद्र	११	४८	चित्रा	४४	३३	गंड	१७	२८	बा	११	४८	६	१७	25	१३	तु. ११/३३		१०	११	५०	५२	७	०३	१८	२०
२८.१८	५	मंग	१६	५०	स्वा	५१	१५	वृद्धि	१८	४०	तै	१६	५०	७	१८	26	१४	तुला		१०	१२	५१	११	७	०२	१८	२१
२८.२३	६	बुध	२२	४३	विशा	५८	३३	ध्रुव	२०	३०	व	२२	४३	८	१९	27	१५	वृ. ४१/४३	भ. २२/४३ से ५५/५१ तक, राहु धनि ३, केतु मघा १ में १२/२५,	१०	१३	५१	२६	७	०१	१८	२२
२८.२७	७	गुरु	२८	५८	अनु	६०	००	व्या	२२	३८	बव	२८	५८	९	२०	28	१६	वृश्चिक	सर्वार्थ सिद्ध योग प्रातः 6/26 से प्रारम्भ	१०	१४	५१	४२	७	००	१८	२३
२८.३०	८	शुक्र	३५	००	अनु	५	५५	हर्ष	२४	४०	बा	१	५९	१०	२१	29	१७	वृश्चिक	श्रीजानकी अष्टमी (मतान्तरे), गण्डमूल प्रातः 9 घं. 21 मिं. बाद, स.सि.यो.	१०	१५	५१	५६	६	५९	१८	२३
२८.३३	९	शनि	४०	२०	ज्ये	१२	४८	वज्र	२६	१३	तै	७	४०	११	२२	मा.	१८	ध. १२/४८	**मार्च 2008 ई० प्रारम्भ**, गण्डमूलादि	१०	१६	५२	०६	६	५८	१८	२३
२८.३८	१०	रवि	४४	२३	मूल	१८	४३	सिद्धि	२६	५३	व	१२	२२	१२	२३	2	१९	धनु	भ. १२/२२ से ४४/२३ तक, शुक्र धनि. में ३७/३५, स्वामी दयानंद **B**	१०	१७	५२	१६	६	५७	१८	२४
२८.४३	११	चंद्र	४६	५३	पू.षा.	२३	१०	व्य	२६	२८	ब	१५	३८	१३	२४	3	२०	म. ३९/०३	**विजया एकादशी व्रतम्**	१०	१८	५२	२५	६	५६	१८	२५
२८.४५	१२	मंग	४७	३५	उ.षा.	२६	०३	वरी	२४	४०	कौ	१७	१४	१४	२५	4	२१	मकर	सूर्य पू.भा. में ७/३०, बुध धनि. में ३३/५३	१०	१९	५२	३२	६	५५	१८	२५
२८.५०	१३	बुध	४६	३३	श्रव	२७	०८	परि	२१	३३	ग	१७	०४	१५	२६	5	२२	कुं. ५७/००	भ. ४६/३३ से, **पंचक प्रारम्भ** ५७/००, **प्रदोष व्रत**, मे. महाशिवरात्रि **C**	१०	२०	५२	३८	६	५४	१८	२६
२८.५८	१४	गुरु	४३	५०	धनि	२६	३५	शिव	१७	०३	वि	१५	१२	१६	२७	6	२३	कुम्भ	भ. १५/१२ तक, **श्रीमहाशिवरात्रि व्रत**, मंगल आर्द्रा में २०/२३	१०	२१	५२	३९	६	५३	१८	२७
२९.००	३०	शुक्र	३९	४०	शत	२४	३३	सिद्ध	११	२०	च	११	४५	१७	२८	7	२४	कुम्भ	फाल्गुन अमावस स्नानदानादि	१०	२२	५२	४१	६	५२	१८	२७

A (जालन्धर), स. सि. योग **B** जयन्ती, गण्डमूल विचार **C** (काश्मीर) प्रारम्भ

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 29 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	२	९	८	९	४	१०	४
१५	१४	०४	१८	२१	२०	१०	०३	०३
४८	४५	४१	५६	२६	००	४९	१४	१४
१२	२२	२९	३७	५१	३९	०३	२९	२९
६० १४	७१६ ४१	१७ २६	५१ ३१	१० ३७	७४ १०	४ ४८	३ १०	३ १०
शत ३	अनु ४	मृग ४	श्रव ३	पूभा ३	श्रव ४	मघा ४	धनि ३	मघा १
—	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

शुक्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 7 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	२	९	८	९	४	१०	४
२२	१३	०६	२५	२२	२८	१०	०२	०२
४९	३१	५१	५६	३८	३९	१५	५२	५२
१९	४८	५४	३९	५८	५८	४९	१४	१४
६० ३	८३८ ५०	२० ९	६९ ४३	९ ५३	७४ १२	४ ३९	३ ११	३ ११
पूभा १	शत ३	आर्द्रा १	धनि १	पूभा ३	धनि २	मघा ४	धनि ३	मघा १
—	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
—	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

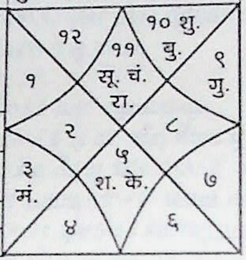

फाल्गुन कृष्ण पक्ष–

फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी (6 मार्च) को **श्री महाशिवरात्रि का** सर्वकल्याणकर व्रत रखने से अश्वमेघ यज्ञ के तुल्य फल प्राप्त होता है। इस दिन काले तिलों सहित स्नानकर, व्रत धारण कर रात्रि में **भगवान् शिव-शंकर** की विधिवत् पूजा करनी चाहिए। पूजन के समय शिवकथा, शिवसहस्रनाम तथा शिवस्तोत्रादि का पाठ करना चाहिए। दूसरे दिन ब्राह्मण को भोजन एवं दानादि के पश्चात् स्वयं भोजन करना चाहिए। *व्यापारिक रुख*—इस पक्ष की 27 फर. को राहु धनिष्ठा के तृतीय चरण में आने से गेहूँ, चावल, मूंग, उड़द, मसूर, राई, काली मिर्च, खल-बिनौलों में तेजी छाई रहेगी। दशमी तिथि ता. 2 मार्च को शुक्र धनिष्ठा में आने से गेहूँ में मन्दी, किन्तु रूई, कपास, सोना, चांदी में तेजी की चमक बनी रहेगी। ता. **4 मार्च** को **सूर्य पू.भा.** में प्रविष्ट होने से गेहूं, चावल, चना, घृत, सरसों, तिल, तैल, गुड़, खांड, गुग्गल में तेजी होगी। इसी दिन बुध धनिष्ठा में आने से सोना, चांदी व रूई में घटाबढ़ी रहेगी। ता. 6 मार्च को **मंगल आर्द्रा** में आने से रूई, कपास, अलसी, एरण्डी, गुड़, चीनी, तिल, तैल, खल-बिनौले व सुवर्ण में तेजी होगी, परन्तु चांदी में कुछ मन्दी का माहौल रहेगा। *लोकभविष्य*—फाल्गुन मास में **पाँच शुक्रवार** होने से जनसंख्या में वृद्धि होने के संकेत हैं। धन, धान्य एवं अनाज के उत्पादन में वृद्धि होगी। प्रजा में सुख-सुविधाओं के साधन बढ़ेंगे—**शुक्रस्य पंचवारा–स्यु यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजा वृद्धि, सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तते॥** *आकाश लक्षण*—पक्ष के उत्तरार्द्ध भाग में उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में धूलभरी आँधियां चलने के योग हैं। *शकुन*—फा. कृ. तृतीया को बादल चाल या बूंदाबांदी हो, तो आगामी दिनों में प्राकृतिक विपदा से कृषि, जन व धन की क्षति हो।

वि. संवत् २०६४, फाल्गुन शुक्ल पक्ष शाकः १९२९-३० तारीखें चंद्र राशि प्रवेश

सन् 2008 ई. (ता. 8 मार्च से 21 मार्च तक) — भा. स्टै. टा. — जालन्धर

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण-उत्तर गोल, वसन्त ऋतुः

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०६४, फाल्गुन शुक्ल पक्ष शाकः १९२९-३० — सन् 2008 ई. (ता. 8 मार्च से 21 मार्च तक)

भा. स्टै. टा. जालन्धर

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण-उत्तर गोल, वसन्त ऋतुः

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	तारीख कालु शक	तारीख सफर मु.	तारीख मार्च	तारीख फाल्गुन प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रहलोपदर्शन--प्रातः बु.-शु. पूर्व में दृश्य, गुरु पूर्व से यान्योत्तर की ओर, सायं शनि पूर्व तथा मंग. याम्योत्तरवृत्त के पास होगा।	दै. रा.	सू. अ.	रप. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
२९.०५	१	शनि	३४	२५	पू.भा.	२१	१८	साध्य	४	३५	किं	७	०३	१८	२९	8	२५	मी. ७/१३	शुक्र कुम्भ राशि में १/२३,	१०	२३	५२	४२	६	५०	१८	२८
२९.१०	२	रवि	२८	१८	उ.भा.	१७	१०	शुभ शुक्ल	५७ ४८	०० ५३	बा	१	२२	१९	३०	9	२६	मीन	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, श्रीरामकृष्ण परमहंस जयंती, शिवाजी जयंती, स.सि.यो.	१०	२४	५२	४०	६	४९	१८	२९
२९.१३	३	चंद्र	२१	४०	रेव	१२	२८	ब्रह्म	४०	२८	ग	२१	४०	२०	रवि	10	२७	मे. १२/२८	भ. ४८/१८ से, पंचक समाप्त १२/२८, बुध कुम्भ में १९/१३, शनि A	१०	२५	५२	३७	६	४८	१८	२९
२९.१८	४	मंग	१४	५५	अश्वि	७	३०	ऐंद्र	३२	००	वि	१४	५५	२१	२	11	२८	मेष	भ. १४/५५ तक, गुरु पू.षा. (४) में १०/४३, स.सि.यो. प्रातः 9/47 तक,	१०	२६	५२	३१	६	४७	१८	३०
२९.२३	५	बुध	८	१८	भर	२	४५	वैधृ	२३	४८	बा	८	१८	२२	३	12	२९	वृ. १६/३५	याज्ञवल्क्य जयन्ती, स. सि. यो. 7/51 उपरान्त	१०	२७	५२	२०	६	४५	१८	३०
२९.२८	६	गुरु	२	०३	रोहि	५४	२३	विष्क	१५	५३	तै	२	०३	२३	४	13	३०	वृष	भ. ५६/२३ से, शुक्र शत. में २५/१०,	१०	२८	५२	११	६	४४	१८	३१
०० ००	७	गुरु	५६	२३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	सप्तमी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२९.३०	८	शुक्र	५१	३०	मृग	५१	१८	प्रीति	८	३३	वि	२३	५७	२४	५	14	चैत्र	मि. २२/४५	भ. २३/५७ तक, सूर्य मीन में ८/०५, चैत्र संक्रान्ति, मु. ३०, B	१०	२९	५१	५८	६	४३	१८	३१
२९.३५	९	शनि	४७	३५	आर्द्रा	४९	०५	आयु सौभा	१ ५५	५३ ५०	बा	१९	३३	२५	६	15	२	मिथुन	बुध शत. में २१/३५,	११	००	५१	४१	६	४१	१८	३१
२९.४०	१०	रवि	४४	३०	पुर्न	४७	४८	शोभ	५०	३८	तै	१६	०३	२६	७	16	३	क. ३३/०३		११	०१	५१	२५	६	४०	१८	३२
२९.४५	११	चंद्र	४२	२५	पुष्य	४७	२५	अति	४६	१०	व	१३	२८	२७	८	17	४	कर्क	भ. १३/२८ से ४२/२५ तक, सूर्य उ.भा. में २९/०८, आमलकी C	११	०२	५१	०४	६	३९	१८	३३
२९.४८	१२	मंग	४१	१८	श्ले.	४८	०३	सुक	४२	२८	व	११	५२	२८	९	18	५	सिं. ४८/०३	गोविन्द द्वादशी, गण्डमूलादि C एकादशी व्रत	११	०३	५०	४०	६	३८	१८	३३
२९.५३	१३	बुध	४१	१०	मघा	४९	३५	धृति	३९	३५	कौ	११	१४	२९	१०	19	६	सिंह	प्रदोष व्रत, गण्डमूल विचार D उत्तर गोलार्द्ध प्रारम्भ	११	०४	५०	१६	६	३७	१८	३४
२९.५७	१४	गुरु	४२	०३	पू.फा.	५२	१०	शूल	३७	२८	ग	११	३७	३०	११	20	७	सिंह	भ. ४२/०३ से, सूर्य सायन मेष में ११/४५, महाविषुव दिवस, D	११	०५	४९	४८	६	३६	१८	३४
३०.००	१५	शुक्र	४३	५८	उ.फा.	५५	४३	गंड	३६	०८	वि	१३	०१	चै. १२		21	८	क. ७/५८	भ. १३/०१ तक, फागुन पूर्णिमा, होली पर्व, होलाष्टक समाप्त E	११	०६	४९	२३	६	३५	१८	३५

A मघा (३) में २३/०५, रवि उल्लावल (मुस्लि.) प्रारम्भ B पुण्यकाल सायं 16 घं. 21 मिं. तक, होलाष्टक प्रारम्भ, अन्नपूर्णा अष्टमी E होलिका दहन दोप. 11/48 उपरान्त भद्रा के बाद, +

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 14 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	२	१०	८	१०	४	१०	४
२९	२३	०९	०४	२३	०७	०९	०२	०२
४८	५६	२०	४३	४५	१९	४४	२९	२९
५६	०३	१०	४७	४४	१७	०५	५८	५८
५९ ४८	८४३ १७	२२ २९	८२ ३	१६ ५	७४ १०	४ २१	३ ११	३ ११
पूर्वा ३	मृग ५	आर्द्रा ९	चित्रा ४	पूर्वा ४	शत ९	मघा ३	चित्रा ३	मघा १
—	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

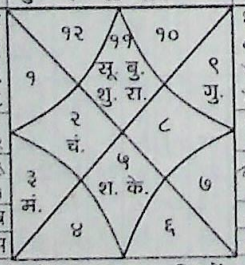

शुक्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 21 मार्च

मू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	४	२	१०	८	१०	४	१०	४
०६	२७	१२	१४	२४	१५	०९	०२	०२
४६	४४	०३	४८	४६	५८	१४	०७	०७
४४	४५	२७	३८	३८	२३	४५	४३	४३
५९ ३२	७५५ ७	२४ २४	९२ १	८ ११	७४ ८	३ ५७	३ ११	३ ११
उत्तरा १	उत्तरा १	आर्द्रा २	शत ३	पूर्वा ४	शत ३	मघा ३	चित्रा ३	मघा १
—	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

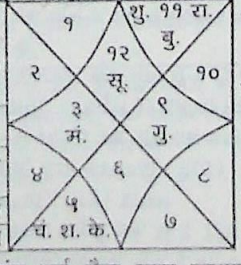

फाल्गुन शुक्ल पक्ष–फाल्गुन शुक्लाष्टमी (14 मार्च) से होलाष्टक प्रारम्भ होंगे। इन दिनों ग्रह प्रवेश, मुण्डन आदि शुभ कार्यों के आरम्भ का निषेध माना जाता है। **आमलकी एकादशी** (17 मार्च) के दिन आँवले के वृक्ष के नीचे बैठकर भगवान् विष्णु की विधिपूर्वक उपासना करने का विधान है। आँवलों का दान तथा स्वयं भी आँवलों सहित भोजन करने का विशेष माहात्म्य होता है। 21 मार्च सायं प्रदोष काल में भद्रामुख रहित काल में होलिका दहन करना चाहिए।

व्यापारिक रुख–ता. 8 मार्च को शुक्र कुम्भ राशि में आने से गुड़, चीनी, गेहूँ, चना, जौं, मूंग, रूई, मैदा, ज्वार, बाजरा आदि के भावों में घटाबढ़ी के बाद मन्दी का माहौल रहेगा। ता. 9 को रविवार के दिन चन्द्रदर्शन होने से अनाज, चावल, गुड़, तैल, सोना, चांदी में तेजी तथा रूई में घटाबढ़ी होगी। ता. 10 को बुध भी कुम्भ राशि में शुक्र-राहु से मेल करेगा। जिससे सर्व प्रकार के अनाजों में तेजी का वातावरण बना रहेगा। खल-बिनौले, सरसों, छोटी इलायची, पशुचारा व चौपाय तेज भाव होंगे। ता. 14 को सूर्य मीन में प्रविष्ट होगा। **चैत्र संक्रान्ति** 30 मुहूर्त्त है। तिल, तैल, अलसी, खाण्ड, सरसों, गुड़, शक्कर, व सोने में तेजी होगी। सर्व प्रकार के अनाजों, गेहूँ, धान्य, चावल, मक्का आदि में पहले तेजी रहने के बाद मन्दा हो। ***संक्रान्ति फल***–मेष, वृष, तुला, धनु, कुम्भ व मीन राशि वालों को यह संक्रान्ति लाभदायक रहेगी। ता. 17 को सूर्य उ.भा. में आने से गेहूँ, चावल, गुड़, चीनी, शक्कर, तैलादि में तेजी की चमक रहेगी। ***आकाश लक्षण***–इस पक्ष में तेज हवाओं के साथ कहीं खण्ड वर्षा होने के योग हैं। ***शकुन***–फाल्गुन अष्टमी को वर्षा हो, तो आगामी अच्छी फसलों के संकेत हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०६४, चैत्र कृष्ण पक्ष शाकः १९३०

सन् 2008 ई. (ता. 22 मार्च से 6 अप्रैल तक)

भा. स्टै. टा. — जालन्धर

सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त ऋतुः

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	तारीखें चैत्र शुक्ल	रवि मार्च	मार्च	चैत्र प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रहदर्शन–प्रातः बुध, शुक्र पूर्व में, 3 अप्रै. से बुध पूर्व में अदृश्य, गुरु याम्योत्तरवृत्त के आस-पास, सायं श. पूर्व में तथा मं. याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा।	दे. रा.	सू. अ.	स्थ. क.	इष्ट. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
३०.०५	१	शनि	४६	५५	हस्त	६०	००	वृद्धि	३५	३८	बा	१५	२७	२	१३	22	९	कन्या	धुलण्डी, वसन्तोत्सव प्रारम्भ, **होला मेला** (आनंदपुर व पांओटा सा.) **A**	११	०७	४८	५३	६	३४	१८	३६
३०.१०	२	रवि	५०	५८	हस्त	०	२३	ध्रुव	३५	५८	तै	१८	५७	३	१४	23	१०	तु. ३३/००	सन्त तुकाराम जयन्ती	११	०८	४८	१९	६	३२	१८	३७
३०.१७	३	चंद्र	५५	५३	चित्रा	५	५५	व्या	३६	५८	व	२३	२६	४	१५	24	११	तुला	भ. २३/२६ से ५५/५३ तक, बुध पू.भा. में १७/०३,	११	०९	४७	४५	६	३१	१८	३८
३०.२५	४	मंग	६०	००	स्वा	१२	२३	हर्ष	३८	४०	बव	२८	४६	५	१६	25	१२	तुला	**अङ्गारकी गणेश चतुर्थी व्रत**, चं.उ. रात्रि 22/16, श्रीभगवान्नारायण जयं.	११	१०	४७	०७	६	२९	१८	३९
३०.२७	४	बुध	१	३८	विशा	१९	२८	वज्र	४०	४५	बा	१	३८	६	१७	26	१३	वृ. २/३८	मेला नवचण्डी (मेरठ) प्रारम्भ	११	११	४६	३०	६	२८	१८	३९
३०.३२	५	गुरु	७	४८	अनु	२६	५३	सिद्धि	४३	०३	तै	७	४८	७	१८	27	१४	वृश्चिक	श्रीरंग पंचमी, मेला नवचण्डी (मेरठ)	११	१२	४५	५०	६	२७	१८	४०
३०.३५	६	शुक्र	१४	००	ज्ये	३४	१३	व्य.	४५	०८	व	१४	००	८	१९	28	१५	ध. ३४/१३	भ. १४/०० से ४६/५३ तक, एकनाथ षष्ठी, गण्डमूल	११	१३	४५	०९	६	२६	१८	४०
३०.४२	७	शनि	१९	४५	मूल	४१	००	वरी	४६	४५	ब	१९	४५	९	२०	29	१६	धनु	शीतला सप्तमी, गण्डमूल 22/48 घं. मिं. तक,	११	१४	४४	२४	६	२४	१८	४१
३०.४५	८	रवि	२४	२८	पू.षा.	४६	३५	परि	४७	२३	कौ	२४	२८	१०	२१	30	१७	धनु	सूर्य रेव में ५७/०३, **बुध मीन में १८/००, शीतलाष्टमी व्रत**	११	१५	४३	३८	६	२३	१८	४१
३०.५०	९	चंद्र	२७	४०	उ.षा.	५०	४०	शिव	४६	४८	ग	२७	४०	११	२२	31	१८	म. २/४८	भ. ५८/२४ से,	११	१६	४२	५२	६	२२	१८	४२
३०.५७	१०	मंग	२९	०८	श्रव	५२	५५	सिद्ध	४४	४८	वि	२९	०८	१२	२३	अप्रै	१९	मकर	भ. २९/०८ तक, बुध उ.भा. में १२/१०, **शुक्र मीन में १९/१३**	११	१७	४२	०३	६	१९	१८	४३
३१.०३	११	बुध	२८	२८	धनि	५३	०८	साध्य	४१	०८	बा	२८	२८	१३	२४	2	२०	कुं. २३/१५	**पंचक प्रारम्भ** २३/१५, पापमोचनी एकादशी व्रत, प्लूटो वक्री २१/०८	११	१८	४१	११	६	१९	१८	४३
३१. ५	१२	गुरु	२५	५०	शत	५१	२५	शुभ	३५	५३	तै	२५	५०	१४	२५	3	२१	कुम्भ	**बुध पूर्व में** अस्त १२/५८, प्रदोष व्रत, **वारुणी योग** 16/38 से **B**	११	१९	४०	१८	६	१८	१८	४४
३१.१०	१३	शुक्र	२१	२०	पू.भा.	४७	५८	शुक्ल	२९	१०	व	२१	२०	१५	२६	4	२२	मी. ३३/५८	भ. २१/२० से ४८/१८ तक, शुक्र उ.भा. में १/१३	११	२०	३९	२३	६	१७	१८	४५
३१.१३	१४	शनि	१५	१५	उ.भा.	४३	०८	ब्रह्म	२१	१५	श	१५	१५	१६	२७	5	२३	मीन	गुरु उ.षा. (१) में ४९/५८, अमावस (पितृकार्येषु), मेला पिहोवातीर्थ (हरियाणा)	११	२१	३८	२७	६	१६	१८	४५
३१.२०	३०	रवि	७	५८	रेव	३७	१५	ऐंद्र	१२	२३	ना	७	५८	१७	२८	6	२४	मे. ३७/१५	**चैत्र अमावस** स्नानादि (प्रातः 9/25 तक), **चैत्र नवरात्र प्रारम्भ, C**	११	२२	३७	२९	६	१४	१८	४६
अवम्	प्रति	रवि	५९	५०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०

A ध्वजारोहण **B** 26/52 तक, **C** वि. संवत् २०६५ प्रारम्भ, घटस्थापन, श्रीदुर्गा पूजारंभ, पंचक समाप्त ३७/१५,

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 30 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	२	१०	८	१०	४	१०	४
१५	१६	१५	२९	२५	२७	०८	०१	०१
४१	४३	५१	२५	५५	०५	४१	३९	३९
२८	०३	३०	००	२५	३३	४१	०६	०६
५९ १६	७३५ २२	२६ २६	१०४ ८	६ ५६	७४ ७	३ १८	३ ११	३ ११
उभा ४	धृवा २	आर्द्रा ३	धृवा ३	धृवा ४	धृवा ३	भद्रा ३	धनि ३	भद्रा १
—	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

रवौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 6 अप्रैल (2008 ई०)

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	२	११	८	११	४	१०	४
२२	२०	१९	१२	२६	०५	०८	०१	०१
३५	२०	००	३	४०	४४	२०	१६	१६
४१	३२	४९	२२	४९	१६	२१	५०	५०
५९ २	८९१ २२	२७ ४९	११४ १	५ ५२	७४ ३५	२ ४२	३ १०	३ १०
धृव २	धृव २	आर्द्रा ४	उभा ३	उभा ९	उभा ९	भद्रा ३	धनि ३	भद्रा १
—	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
—	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

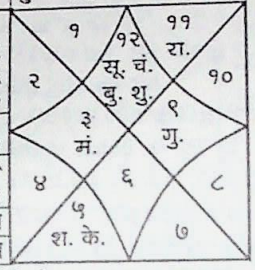

चैत्र कृष्ण पक्ष–

प्रतिपदा (22 मार्च) को होला-मेला तथा दुलन्दी का उत्सव पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश आदि अनेक प्रदेशों में मनाया जाता है। इसी दिन कई स्थलों पर ध्वजारोहण भी किया जाता है। ता. 25 मंगलवार को **अंगारकी गणेश चतुर्थी** का व्रत विधिपूर्वक रखने से अनिष्ट ग्रहों सम्बन्धी कष्टों से निवृत्ति होती है। इसी पक्ष में पापमोचनी एकादशी (2 अप्रैल) का व्रत विधि अनुसार रखने से ज्ञाताज्ञात अनिष्ट पापों से निवृत्ति होती है। ता. 3 अप्रै. गुरूवार को **वारूणी पर्व** (स्नान, दान जपादि हेतु विशेष मुहूर्त्त) सायं 4-38 से अर्धरात्रि को 2 बजकर 52 मिनट तक रहेगा। **ता. 6 रविवार** को अमावस के दिन ही चैत्र प्रतिपदा तिथि का क्षय होने से **वासन्त नवरात्र** घटस्थापन एवं **विक्रमी सम्वत् २०६५** का शुभारम्भ भी इसी दिन होगा। घटस्थापन, श्री दुर्गापूजनारम्भ आदि शुभ कृत्य (शास्त्र वचनानुसार) इसी दिन से प्रारम्भ किए जाएंगे। ***व्यापारिक रूख***–ता. 24 को बुध प्रभा में आने से गेहूं, धान्यादि अनाज तथा सोना, चांदी, लोहादि अनाज तथा सोना, चांदी, लोहादि की मार्कीट में मन्दी का माहौल होगा। ता. 30 को बुध मीन (नीच) राशि में प्रविष्ट होने से रूई, गुड़, शक्कर में मन्दी हो, सोना, चांदी में घटाबढ़ी के बाद पुनः तेजी हो। *खल-बिनौले* तेज हो। ता. 31 को सूर्य रेवती में आने से गेहूँ, चना, चावल, अलसी, सरसों, अरण्डी, मूंगफली, सब्जियों में तेजी होगी। ता. 1 अप्रैल को शुक्र, मीन में आकर अनाज, *तिल व दालों में घटाबढ़ी करेगा। आकस्मिक* ***रूख***–पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू, काश्मीर, हरियाणा के कुछ क्षेत्रों में (पक्ष के उत्तरार्ध) में तीव्र हवाओं के साथ खण्ड वर्षा रहे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् 2063-64, मार्च महीने का तिथ्यादि पंचांग, घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2007 ई.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.		नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.		योग	समाप्ति काल घं. मिं.		चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
फा. शु.	1	13	गुरु	25	19	पुष्य	13	18	शोभ	19	45	कर्क	प्रदोष व्रत, बुध पूर्व से उदय 13/05, शुक्र रेवती में 29/24, गुरू पुष्य योग	1	7/03	18/22	6/50	18/17	6/53	18/17	7/02	18/40
	2	14	शुक्र	26	52	अश्ले	15	11	अति	19	46	सिं. 15/11	भ. 26/52 से, गण्डमूलादि, महेश्वर व्रत	2	7/02	18/23	6/49	18/18	6/52	18/17	7/02	18/40
	3	15	शनि	28	48	मघा	17	27	सुक	20	04	सिंह	भ. 15/50 तक, फा. पूर्णिमा, **होली पर्व**, होलिका दहन सायं 3/50 A	3	7/01	18/24	6/48	18/18	6/51	18/18	7/01	18/41
चैत्र कृष्ण पक्ष	4	1	रवि	पूरा	दिन	पू.फा.	20	03	धृति	20	39	कं. 26/44	चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, सूर्य पू.भा. में 27/50, होला मेला (आनंदपुर B	4	7/00	18/25	6/47	18/19	6/50	18/19	7/00	18/41
	5	1	चंद्र	7	02	उ.फा.	22	55	शूल	21	26	कन्या	चन्द्रग्रहण 3/4 मार्च	5	6/58	18/26	6/46	18/20	6/49	18/19	7/00	18/42
	6	2	मंग	9	32	हस्त	25	57	गंड	22	21	कन्या	भ. 22/51 से, सन्त तुकाराम जयन्ती,	6	6/57	18/27	6/45	18/20	6/47	18/20	6/59	18/42
	7	3	बुध	12	09	चित्रा	29	03	वृद्धि	23	20	तु. 15/30	भ. 12/09 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत**, चं. उ. 20/45 (जालन्धर)	7	6/55	18/28	6/44	18/21	6/46	18/21	6/58	18/42
	8	4	गुरु	14	46	स्वा.	पूरा	दिन	ध्रुव	24	15	तुला	**बुध मार्गी** 10/26,	8	6/54	18/29	6/43	18/22	6/45	18/21	6/57	18/43
	9	5	शुक्र	17	12	स्वा.	8	02	व्या.	25	00	वृ. 28/07	रंग पंचमी	9	6/53	18/30	6/42	18/22	6/44	18/22	6/56	18/43
	10	6	शनि	19	18	विशा	10	44	हर्ष	25	27	वृश्चिक	भ. 19/18 से, सूर्यग्रहण–19 मार्च	10	6/52	18/31	6/41	18/23	6/43	18/23	6/55	18/44
	11	7	रवि	20	52	अनु	13	00	वज्र	25	28	वृश्चिक	भ. 8/05 तक, शीतला सप्तमी	11	6/50	18/32	6/40	18/23	6/41	18/23	6/54	18/44
	12	8	चंद्र	21	46	ज्ये.	14	40	सिद्धि	24	58	ध. 14/40	**शुक्र अश्वि. मेष में 27/49, शीतलाष्टमी**, गण्डमूल	12	6/49	18/32	6/38	18/24	6/40	18/24	6/53	18/44
	13	9	मंग	21	54	मूल	15	38	व्य.	23	53	धनु	गण्डमूलादि	13	6/48	18/33	6/37	18/24	6/39	18/25	6/53	18/44
	14	10	बुध	21	15	पू.षा.	15	49	वरी	22	10	म. 21/45	भ. 9/35 से 21/15 तक, सूर्य मीन में 27/59, **चैत्र संक्रान्ति**, मु. 45, C	14	6/47	18/33	6/36	18/25	6/38	18/25	6/52	18/44
	15	11	गुरु	19	49	उ.षा.	15	14	परि	19	51	मकर	पापमोचिनी एकादशी व्रत	15	6/45	18/33	6/35	18/25	6/37	18/26	6/51	18/44
	16	12	शुक्र	17	41	श्रव	13	56	शिव	16	57	कुं. 25/03	पंचक प्रारम्भ 25/03, प्रदोष व्रत	16	6/44	18/34	6/34	18/26	6/36	18/26	6/51	18/44
	17	13	शनि	14	56	धनि	12	02	सिद्ध	13	34	कुम्भ	भ. 14/56 से 25/20 तक, वारुणी पर्व, महावारुणी (दुपै. 12/02 से D	17	6/43	18/34	6/33	18/26	6/34	18/27	6/50	18/44
	18	14	रवि	11	44	शत	9	38	साध्य शुभ	9 29	48 45	मी. 25/36	मेला पृथूदक पिहोवातीर्थ (हरि.), अमावस-पितृतर्पणादि, सूर्य उ.भा. E	18	6/42	18/35	6/31	18/27	6/33	18/27	6/49	18/45
	19	30/	चंद्र	8	13	पू.भा.	6	54	शुक्ल	25	34	मीन	सोमवती अमावस स्नानदानादि, खण्ड सूर्यग्रहण, चैत्र नवरात्रे व नव F	19	6/41	18/36	6/30	18/28	6/32	18/28	6/48	18/45
	–	1	चंद्र	28	32	उ.भा.	28	01	–	–	–	––	प्रतिपदा का क्षय oo oo oo oo	—	—	—	—	—	—	—	—	—
चैत्र शुक्ल पक्ष	20	2	मंग	24	53	रेव	25	08	ब्रह्म	21	33	मे. 25/08	पंचक समाप्त 25/08, चन्द्रदर्शन, मंगल धनि. में 24/14, गं. मू.	20	6/40	18/36	6/29	18/28	6/30	18/29	6/47	18/45
	21	3	बुध	21	25	अश्वि	22	27	ऐंद्र	17	19	मेष	गणगौरी तृतीया, मत्स्य जयंती, महाविषुव दिन, सूर्य सायन मेष में G	21	6/39	18/37	6/28	18/29	6/29	18/30	6/46	18/45
	22	4	गुरु	18	17	भर	20	06	वैधृ	13	31	वृ. 25/35	भ. 7/51 से 18/17 तक, शक चैत्र (सं. 1929) प्रारम्भ	22	6/38	18/38	6/27	18/29	6/28	18/30	6/45	18/46
	23	5	शुक्र	15	38	कृति	18	15	विष्क	10	05	वृष	श्री (लक्ष्मी) पंचमी, शुक्र भरणी में 28/44	23	6/36	18/38	6/26	18/30	6/27	18/31	6/45	18/46
	24	6	शनि	13	34	रोहि.	17	00	प्रीति आयु	7 28	06 40	मि. 28/37	**स्कन्द षष्ठी**	24	6/35	18/39	6/25	18/30	6/26	18/32	6/44	18/46
	25	7	रवि	12	11	मृग	16	26	सौभा	26	49	मिथुन	भ. 12/11 से 23/51 तक,	25	6/34	18/40	6/24	18/31	6/24	18/32	6/44	18/47
	26	8	चंद्र	11	32	आर्द्रा	16	36	शोभ	25	32	मिथुन	**श्रीदुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति**, मेला बाहूफोर्ट (जम्मू)	26	6/33	18/41	6/23	18/31	6/23	18/33	6/43	18/47
	27	9	मंग	11	37	पुर्न	17	27	अति	24	49	क. 11/10	**श्रीरामनवमी व्रत, नवरात्र समाप्त**	27	6/32	18/41	6/22	18/32	6/22	18/34	6/42	18/47
	28	10	बुध	12	23	पुष्य	18	57	सुक	24	35	कर्क	भ. 25/04 से प्रा.	28	6/30	18/42	6/20	18/32	6/20	18/35	6/41	18/48
	29	11	गुरु	13	44	अश्ले	21	00	धृति	24	46	सिं. 21/00	भ. 13/44 तक, **कामदा एकादशी व्रत, मंगल कुम्भ** में 17/15, गं. मू.	29	6/28	18/42	6/19	18/33	6/19	18/35	6/40	18/48
	30	12	शुक्र	15	34	मघा	23	29	शूल	25	16	सिंह	**प्रदोष व्रत**, गण्ड-मूलादि	30	6/26	18/43	6/18	18/33	6/18	18/36	6/39	18/48
	31	13	शनि	17	46	पू.फा.	26	16	गंड	26	02	सिंह	**श्रीमहावीर जयं.**, सूर्य रेवती में 23/05, बुध पू.भा. में 8/14, अनंग त्रयोदशी	31	6/25	18/44	6/17	18/34	6/16	18/36	6/38	18/49

A बाद, भद्रोत्तरे, होलाष्टक समाप्त, **खग्रास चन्द्रग्रहण** (भारत में दृश्य), मंगल श्रवण में 12/24, श्रीसत्यनारायण व्रत, ग्रहणशूल B व पांओटा साहिब), वसन्तोत्सव, धुलैण्डी, ग्रहण शूल C पुण्यकाल संक्रान्ति अगले दिन प्रातः 10/23 तक D 14/56 तक) E में 12/17, ग्रहणशूल F संवत् 2064 प्रारंभ, (देखें पृष्ठ 68), घटस्थापन (अभिजित मुहू. प्रशस्त), G 5/38, रबिउल्लावल (मु.) प्रारम्भ, उत्तर गोल प्रारम्भ

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् 2064, अप्रैल महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2007 ई.

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिनटों में (भा. स्टै. टा.)	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
वै. शु.	1	14	रवि	20	12	उ.फा.	29	15	वृद्धि	26	56	कं. 9/00	भ. 20/12 से, ता. 1 अप्रैल प्रारम्भः	1	6/24	18/45	6/15	18/35	6/15	18/37	6/36	18/49
	2	15	चंद्र	22	45	हस्त	पूरा	दिन	ध्रुव	27	54	कन्या	भ. 9/29 तक, चैत्र पूर्णिमा व्रतादौ, श्रीहनुमान जयंती (द. भारत) A	2	6/23	18/45	6/14	18/36	6/14	18/37	6/35	18/49
वैशाख कृष्ण पक्ष	3	1	मंग	25	20	हस्त	8	19	व्या.	28	53	तु. 21/51	वैशाख कृष्ण प्रतिपदा	3	6/21	18/46	6/13	18/36	6/13	18/38	6/34	18/49
	4	2	बुध	27	50	चित्रा	11	22	हर्ष	29	48	तुला	शुक्र कृतिका में 8/52,	4	6/19	18/47	6/12	18/37	6/12	18/39	6/34	18/49
	5	3	गुरु	30	09	स्वा.	14	19	वज्र	पूरा	दिन	तुला	भ. 17/00 से 30/09 तक,	5	6/18	18/48	6/11	18/38	6/11	18/40	6/33	18/49
	6	4	शुक्र	पूरा	दिन	विशा	17	03	वज्र	6	35	वृ. 10/23	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, गुरु वक्री 6/54, शुक्र वृष में 28/30, गुड फ्राइडे,R	6	6/17	18/49	6/10	18/38	6/09	18/40	6/32	18/49
	7	4	शनि	8	12	अनु.	19	29	सिद्धि	7	09	वृश्चिक	मंगल शत. में 9/55, बुध मीन में 8/24	7	6/16	18/50	6/09	18/39	6/08	18/41	6/31	18/49
	8	5	रवि	9	51	ज्ये.	21	29	व्या.	7	26	ध. 21/29		8	6/15	18/51	6/08	18/39	6/07	18/42	6/30	18/50
	9	6	चंद्र	11	00	मूल	22	58	वरी	7	20	धनु	भ. 11/00 से 23/17 तक, बुध उ.भा. में 11/59	9	6/14	18/52	6/07	18/40	6/06	18/42	6/30	18/50
	10	7	मंग	11	33	पू.षा.	23	50	परि शिव	6 29	47 43	म. 29/56		10	6/12	18/52	6/05	18/40	6/05	18/43	6/29	18/50
	11	8	बुध	11	25	उ.षा.	23	59	सिद्ध	28	06	मकर		11	6/11	18/53	6/04	18/41	6/04	18/44	6/29	18/51
	12	9	गुरु	10	34	श्रव.	23	26	साध्य	25	53	मकर	भ. 21/47 से प्रारम्भ	12	6/10	18/54	6/03	18/41	6/02	18/45	6/28	18/51
	13	10	शुक्र	8	59	धनि	22	12	शुभ	23	07	कुं. 10/54	भ. 8/59 तक, पंचक शुरु 10/54	13	6/08	18/54	6/02	18/42	6/01	18/45	6/27	18/51
	14	11	शनि	6	44	शत.	20	20	शुक्ल	19	50	कुम्भ	वरुथिनी एकादशी, सूर्य अश्वि. मेष में 12/28, वैशाख संक्रांति B	14	6/07	18/55	6/01	18/43	6/00	18/46	6/26	18/51
	—	12	शनि	27	53	—	—	—	—	—	—	——	द्वादशी तिथि क्षय	—	—	—	—	—	—	—	—	—
	15	13	रवि	24	34	पू.भा.	17	56	ब्रह्म	16	08	मी. 12/35	भ. 24/34 से, प्रदोष व्रत, शुक्र रोहिणी में 17/02	15	6/06	18/56	6/00	18/43	5/59	18/46	6/25	18/52
	16	14	चंद्र	20	55	उ.भा.	15	10	ऐंद्र	12	06	मीन	भ. 10/45 तक, मास शिवरात्रि व्रत	16	6/04	18/56	5/59	18/44	5/58	18/47	6/24	18/52
	17	30	मंग	17	06	रेव	12	11	वैधृ विष्क	7 27	52 34	मे. 12/11	पंचक समाप्त 12/11, भौमवती अमावस, बुध रेवती में 10/20	17	6/03	18/57	5/58	18/44	5/57	18/47	6/23	18/52
वैशाख शुक्ल पक्ष	18	1	बुध	13	18	अश्वि	9	10	प्रीति	23	22	मेष	वैशाः शुक्ल पक्षारम्भ, चन्द्रदर्शन, राहु शत. (4), केतु पूफा. (2) में 23/18	18	6/02	18/58	5/57	18/45	5/56	18/48	6/23	18/53
	19	2	गुरु	9	41	भर कृति	6 27	18 46	आयु	19	23	वृ. 11/38	शिवाजी जयंती, श्रीपरशुराम जयंती, **अक्षय तृतीया,** 1 रबिउलसानी Z	19	6/01	18/58	5/56	18/45	5/55	18/49	6/22	18/53
	20	3	शुक्र	6	25	रोहि	25	46	सौभा	15	47	वृष	भ. 17/04 से 27/42 तक, **शनि मार्गी** 2/56, सूर्य सायन वृष में 16/38 C	20	6/00	18/59	5/55	18/46	5/54	18/49	6/21	18/53
	—	4	शुक्र	27	42	—	—	—	—	—	—	——	चतुर्थी तिथि क्षय	—	—	—	—	—	—	—	—	—
	21	5	शनि	25	40	मृग	24	25	शोभ	12	41	मि. 13/00	आद्य गुरु श्रीशंकराचार्य जयंती, शक वैशाख प्रारम्भ, अगस्त्य अस्त होगा	21	5/59	19/00	5/54	18/46	5/52	18/50	6/21	18/53
	22	6	रवि	24	24	आर्द्रा	23	51	अति	10	10	मिथुन	श्रीरामानुजाचार्य जयंती	22	5/58	19/00	5/53	18/47	5/51	18/51	6/20	18/54
	23	7	चंद्र	23	59	पुर्न	24	07	सुक	8	19	क. 17/58	भ. 23/59 से प्रा., श्रीगङ्गा जयन्ती	23	5/57	19/01	5/52	18/48	5/50	18/52	6/19	18/54
	24	8	मंग	24	25	पुष्य	25	11	धृति	7	08	कर्क	भ. 12/12 तक, बुध अश्वि. 1 मेष में 12/39, मंगल पू.भा. में 19/07	24	5/55	19/02	5/51	18/48	5/49	18/52	6/19	18/54
	25	9	बुध	25	36	अश्ले	27	00	शूल	6	36	सिं. 27/00	श्रीसीता नवमी, श्रीबगुलामुखी जयन्ती, गण्डमूलादि	25	5/54	19/02	5/50	18/49	5/48	18/53	6/18	18/54
	26	10	गुरु	27	24	मघा	29	25	गंड	6	38	सिंह		26	5/53	19/03	5/49	18/49	5/47	18/54	6/17	18/55
	27	11	शुक्र	29	40	पू.फा.	पूरा	दिन	वृद्धि	7	07	सिंह	भ. 16/32 से 29/40 तक, मोहिनी एकादशी व्रत, सूर्य भर. में 28/13, D	27	5/52	19/04	5/48	18/50	5/46	18/54	6/17	18/55
	28	12	शनि	पूरा	दिन	पू.फा.	8	14	ध्रुव	7	56	कं.14/59		28	5/51	19/05	5/47	18/50	5/45	18/55	6/16	18/56
	29	12	रवि	8	11	उ.फा.	11	18	व्या.	8	56	कन्या	प्रदोष व्रत	29	5/50	19/06	5/46	18/51	5/44	18/55	6/16	18/56
	30	13	चंद्र	10	46	हस्त	14	25	हर्ष	9	59	तु. 27/57	श्रीनृसिंह जयन्ती, बुध भरणी में 24/39	30	5/49	19/07	5/46	18/52	5/43	18/56	6/15	18/56

A वैशाख स्नानारम्भः श्रीसत्यनारायण व्रत R अनुसूया जयन्ती B पुण्यकाल संक्रान्ति सूर्योदय से सूर्यास्त तक, डॉ. अम्बेदकर जयन्ती, त्रिस्पर्शा महाद्वादशी, वल्लभाचार्य जयंती Z (मुस्लि.) प्रारम्भ

C बुध पूर्व में अस्त 24/35, ग्रीष्म ऋतु प्रारंभ D शुक्र मृगशिर में 6/16

वि. संवत् 2064, मई महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2007 ई.

समाप्ति | चंद्र-राशि | भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश | तारीख | जम्मू | दिल्ली | चण्डीगढ़ | मुम्बई

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

वि. संवत् 2064, मई महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2007 ई.

मास पक्ष	मई	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	चंद्र-राशि प्रवेश घं.	मि.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.	मि.	जम्मू सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	मुम्बई सूर्योदय घं.	मि.	मुम्बई सूर्यास्त घं.	मि.
वै.शु.	1	14	मंग	13	18	चित्रा	17	28	वज्र	11	00	तुला		भ. 13/18 से 26/29 तक, मई दिवस, श्रीकूर्म जयंती, श्रीसत्यनारायण व्रत	1	5/48	19/08	5/45	18/53	5/43	18/57	6/15	18/56
	2	15	बुध	15	40	स्वा.	20	19	सिद्धि	11	54	तुला		वैशाख पूर्णिमा स्नानपुण्यादि, श्रीबुद्ध पूर्णिमा, शुक्र मिथुन में 27/23, A	2	5/47	19/08	5/44	18/53	5/42	18/58	6/14	18/56
प्र. ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष (शुद्ध)	3	1	गुरु	17	46	विशा	22	56	व्य.	12	36	वृ. 16/18		प्रथम शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्षारम्भ	3	5/46	19/09	5/46	18/54	5/41	18/58	6/14	18/57
	4	2	शुक्र	19	34	अनु	25	15	वरी	13	05	वृश्चिक		नारद जयन्ती	4	5/45	19/09	5/42	18/54	5/40	18/59	6/13	18/57
	5	3	शनि	21	02	ज्ये.	27	13	परि	13	19	ध. 27/13		भ. 8/18 से 21/02 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 22/15 (जालंधर)	5	5/44	19/10	5/41	18/55	5/39	18/59	6/13	18/58
	6	4	रवि	22	05	मूल	28	48	शिव	13	15	धनु			6	5/43	19/11	5/41	18/55	5/38	19/00	6/12	18/58
	7	5	चंद्र	22	43	पू.षा.	पूरा	दिन	सिद्ध	12	52	धनु		मंगल मीन में 21/08, बुध कृति. में 5/16, टैगोर जयन्ती	7	5/43	19/11	5/40	18/56	5/38	19/01	6/12	18/58
	8	6	मंग	22	50	पू.षा.	5	56	साध्य	12	07	म. 12/08		भ. 22/50 से, बुध वृष में 18/26, शुक्र आर्द्रा में 26/32	8	5/42	19/12	5/39	18/57	5/37	19/01	6/12	18/59
	9	7	बुध	22	23	उ.षा.	6	34	शुभ	10	56	मकर		भ. 10/37 तक,	9	5/41	19/13	5/38	18/57	5/36	19/02	6/11	18/59
	10	8	गुरु	21	22	श्रव	6	38	शुक्ल	9	18	कुं. 18/27		पंचक शुरु 18/27	10	5/41	19/14	5/38	18/58	5/35	19/03	6/11	18/59
	11	9	शुक्र	19	44	धनि शत	6 29	07 01	ब्रह्म इंद्र	7 28	11 36	कुम्भ		सूर्य कृतिका में 22/28	11	5/40	19/15	5/37	18/59	5/34	19/03	6/10	19/01
	12	10	शनि	17	32	पू.भा.	27	21	वैधृ	25	32	मी. 21/49		भ. 6/38 से 17/32 तक, मंगल उ.भा. में 6/10	12	5/39	19/16	5/36	18/59	5/33	19/04	6/10	19/01
	13	11	रवि	14	48	उ.भा.	25	12	विष्क	22	05	मीन		अपरा एकादशी व्रत, भद्रकाली एकादशी (पं.) बुध रोहिणी में 13/01	13	5/39	19/17	5/36	19/00	5/33	19/05	6/09	19/01
	14	12	चंद्र	11	38	रेव	22	40	प्रीति	18	18	मे. 22/40		सोम प्रदोष व्रत, पंचक समाप्त 22/40, बुध पश्चिम में उदय 11/45	14	5/38	19/17	5/35	19/00	5/32	19/05	6/09	19/02
	15	13/	मंग	8	10	अश्वि	19	55	आयु	14	18	मेष		भ. 8/10 से 18/22 तक, सूर्य वृष में 9/18, **ज्येष्ठ संक्रान्ति**, 30 मु. B	15	5/37	19/18	5/34	19/01	5/32	19/06	6/09	19/02
	—	14	मंग	28	33	—	—	—	—	—	—	—		चतुर्दशी का क्षय ०० ०० ००	—	—	—	—	—	—	—	—	—
	16	30	बुध	24	57	भर	17	06	सौभा	10	13	वृ. 22/25		**भावुका अमावस**, वटसावित्री व्रत (राज.), शनैश्चरी जयंती	16	5/36	19/18	5/34	19/01	5/31	19/07	6/09	19/02
अधिक ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	17	1	गुरु	21	33	कृति	14	25	शोभ अति	6 26	11 21	वृष		**ज्येष्ठ अधिक मास प्रारम्भ**, वक्री गुरु ज्ये. (2) में 14/01	17	5/36	19/11	5/33	19/02	5/31	19/07	6/09	19/03
	18	2	शुक्र	18	31	रोहि	12	03	सुक	22	53	मि. 23/03		चन्द्रदर्शनम् (मु. 30)	18	5/35	19/20	5/32	19/02	5/30	19/08	6/08	19/03
	19	3	शनि	16	02	मृग	10	11	धृति	19	53	मिथुन		भ. 27/09 से प्रा., 1 जमादिलावल (मुस्लि.) प्रारम्भ	19	5/35	19/21	5/32	19/03	5/30	19/08	6/08	19/03
	20	4	रवि	14	15	आर्द्रा	8	59	शूल	17	28	क. 26/35		भ. 14/15 तक, बुध मृग. में 15/37,	20	5/34	19/21	5/32	19/03	5/29	19/09	6/07	19/04
	21	5	चंद्र	13	16	पुर्न	8	34	गंड	15	44	कर्क		शुक्र पुर्न. में 8/34, सूर्य सायन मिथुन में 15/42	21	5/33	19/22	5/31	19/04	5/29	19/10	6/07	19/04
	22	6	मंग	13	09	पुष्य	8	59	वृद्धि	14	40	कर्क		शक ज्येष्ठ प्रारम्भ	22	5/33	19/23	5/31	19/04	5/28	19/11	6/07	19/04
	23	7	बुध	13	53	अश्ले	10	15	ध्रुव	14	17	सिं. 10/15		भ. 13/53 से 26/38 तक,	23	5/32	19/24	5/31	19/05	5/27	19/11	6/06	19/05
	24	8	गुरु	15	22	मघा	12	15	व्या.	14	29	सिंह		बुध मिथुन में 19/51	24	5/31	19/25	5/30	19/06	5/27	19/12	6/06	19/05
	25	9	शुक्र	17	26	पू.फा.	14	51	हर्ष	15	07	कं. 21/34		सूर्य रोहिणी में 18/35, नैपच्यून वक्री 6/40	25	5/30	19/25	5/30	19/06	5/27	19/12	6/06	19/05
	26	10	शनि	19	52	उ.फा.	17	48	वज्र	16	04	कन्या		**मे. गंङ्गा दशहरा (हरिद्वार)** (देखें पृष्ठ 69)	26	5/30	19/25	5/30	19/06	5/26	19/13	6/06	19/06
	27	11	रवि	22	25	हस्त	20	55	सिद्धि	17	08	कन्या		भ. 9/09 से 22/25 तक, पुरुषोत्तमा एकादशी व्रतं	27	5/30	19/26	5/30	19/07	5/26	19/13	6/06	19/06
	28	12	चंद्र	24	54	चित्रा	23	58	व्य.	18	10	तु. 10/27			28	5/29	19/26	5/29	19/08	5/26	19/14	6/05	19/07
	29	13	मंग	27	09	स्वा.	26	47	वरी	19	03	तुला		प्रदोष व्रत, मंगल रेवती में 21/34, बुध आर्द्रा में 18/56	29	5/29	19/27	5/29	19/08	5/25	19/15	6/05	19/07
	30	14	बुध	29	03	विशा	29	17	परि	19	42	वृ. 22/41		भ. 29/03 से, शुक्र कर्क राशि में 22/40	30	5/29	19/28	5/29	19/09	5/25	19/15	6/05	19/08
	31	15	गुरु	पूरा	दिन	अनु	पूरा	दिन	शिव	20	04	वृश्चिक		भ. 17/49 तक, व्रत सत्यनारायण	31	5/29	19/28	5/28	19/10	5/25	19/16	6/05	19/08

A वैशाख स्नान समाप्त, श्री बुद्ध जयन्ती B पुण्यकाल संक्रान्ति प्रातः ऊषाकाल से दोपहर 15/42 तक

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् 2064, जून महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2007 ई.

मास पक्ष	जून	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.		नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.		योग	समाप्ति काल घं. मिं.		चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
	1	15	शुक्र	6	34	अनु	7	24	सिद्ध	20	07	वृश्चिक	अधि. ज्येष्ठ पूर्णिमा, जून मास प्रारम्भ	1	5/28	19/29	5/28	19/10	5/25	19/26	6/05	19/08
द्वि. अधिक ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	2	1	शनि	7	40	ज्ये.	9	08	साध्य	19	51	ध. 9/08	अधि. ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, शुक्र पुष्य में 5/57	2	5/28	19/29	5/28	19/11	5/24	19/17	6/05	19/09
	3	2	रवि	8	23	मूल	10	29	शुभ	19	16	धनु	भ. 20/33 से प्रा., गण्डमूल 10/29 तक,	3	5/28	19/30	5/28	19/11	5/24	19/17	6/05	19/09
	4	3	चंद्र	8	42	पू.षा.	11	26	शुक्ल	18	24	म. 17/37	भ. 8/42 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 22/41 (जालन्धर)	4	5/28	19/30	5/28	19/11	5/24	19/18	6/05	19/09
	5	4	मंग	8	38	उ.षा.	12	01	ब्रह्म	17	13	मकर		5	5/28	19/31	5/27	19/12	5/24	19/18	6/05	19/10
	6	5	बुध	8	10	श्रव	12	13	ऐंद्र	15	43	कुं. 24/10	पंचक शुरू 24/10	6	5/28	19/32	5/27	19/12	5/24	19/19	6/05	19/10
	7	6	गुरु	7	18	धनि.	12	01	वैधृ	13	54	कुम्भ	भ. 7/18 से 18/40 तक	7	5/27	19/32	5/27	19/13	5/24	19/19	6/05	19/10
	8	7	शुक्र	6	01	शत	11	23	विष्कु	11	43	मी 28/38	सूर्य मृगशिर में 16/32	8	5/27	19/32	5/27	19/13	5/23	19/20	6/05	19/11
	—	8	शुक्र	28	18	—	—	—	—	—	—	—	अष्टमी तिथि का क्षय ०० ००	—	—	—	—	—	—	—	—	—
	9	9	शनि	26	10	पू.भा.	10	20	प्रीति	9	12	मीन		9	5/27	19/33	5/27	19/14	5/23	19/20	6/05	19/11
	10	10	रवि	23	39	उ.भा.	8	52	आयु सौभ	6 27	21 11	मीन	भ. 12/55 से 23/39 तक,	10	5/27	19/33	5/27	19/14	5/23	19/20	6/05	19/11
	11	11	चंद्र	20	49	रेव अश्वि	7 28	03 56	शोभ	23	46	मे. 7/03	पंचक समाप्त 7/03, पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत	11	5/26	19/34	5/27	19/15	5/23	19/21	6/05	19/11
	12	12	मंग	17	46	भर	26	39	अति	20	12	मेष	भौम प्रदोष व्रत	12	5/26	19/34	5/27	19/15	5/23	19/21	6/05	19/12
	13	13	बुध	14	39	कृति	24	21	सुक	16	34	वृ. 8/05	भ. 14/39 से 25/07 तक, शनि अश्ले. (4) में 11/25, वक्री गुरु A	13	5/26	19/34	5/27	19/16	5/23	19/22	6/05	19/12
	14	14	गुरु	11	35	रोहि	22	11	धृति	13	00	वृष	अमावस (पितृ कार्यों के लिए)	14	5/26	19/35	5/27	19/16	5/23	19/22	6/05	19/12
	15	30	शुक्र	8	43	मृग	20	19	शूल	9	37	मि. 9/12	ज्येष्ठ अधिक मास समाप्त, अमावस, सूर्य मिथुन में 15/53, आषाढ़ B	15	5/26	19/35	5/27	19/16	5/24	19/22	6/05	19/12
द्वि. (शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	16	1	शनि	6	15	आर्द्रा	18	55	गंड वृद्धि	6 27	33 56	मिथुन	चन्द्रदर्शन (मु. 45), मंगल अश्वि मेष में 20/21, बुध वक्री 5/11	16	5/26	19/35	5/27	19/17	5/24	19/23	6/05	19/13
	—	2	शनि	28	19	—	—	—	—	—	—	—	द्वितीया तिथिक्षय	—	—	—	—	—	—	—	—	—
	17	3	रवि	27	03	पुर्न	18	08	ध्रुव	25	52	क. 12/15	रम्भा तृतीया व्रत, प्रताप जयंती, जमादिलावल 9 मु., शुक्र अश्ले. में 6/59	17	5/27	19/36	5/27	19/17	5/24	19/23	6/06	19/13
	18	4	चंद्र	26	34	पुष्य	18	04	व्या.	24	25	कर्क	भ. 14/49 से 26/34 तक,	18	5/27	19/36	5/27	19/17	5/24	19/23	6/06	19/13
	19	5	मंग	26	52	अश्ले	18	48	हर्ष	23	36	सिं. 18/48	गण्डमूल विचार,	19	5/27	19/36	5/28	19/17	5/24	19/24	6/06	19/13
	20	6	बुध	27	57	मघा	20	19	वज्र	23	24	सिंह	राहु शत. 3, केतु पू.फा. 1 में 21/05, वक्री बुध पश्चिम में अस्त 14/50	20	5/27	19/37	5/28	19/18	5/24	19/24	6/06	19/14
	21	7	गुरु	पूरा	दिन	पू.फा.	22	30	सिद्धि	23	45	कं. 29/08	सूर्य सायन कर्क में 23/37, सायन दक्षिणायन प्रारम्भ, वर्षा ऋतु प्रा.	21	5/28	19/37	5/28	19/18	5/25	19/24	6/06	19/14
	22	7	शुक्र	5	42	उ.फा.	25	12	व्य.	24	29	कन्या	भ. 5/42 से 18/49 तक, श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती जयंती, सूर्य आर्द्रा C	22	5/28	19/37	5/28	19/18	5/25	19/24	6/07	19/14
	23	8	शनि	7	55	हस्त	28	11	वरी	25	27	कन्या	यूरेनस वक्री 20/13	23	5/28	19/37	5/28	19/18	5/25	19/24	6/07	19/14
	24	9	रवि	10	21	चित्रा	पूरा	दिन	परि	26	28	तु. 17/43		24	5/29	19/37	5/29	19/18	5/25	19/24	6/07	19/14
	25	10	चंद्र	12	47	चित्रा	7	13	शिव	27	23	तुला	भ. 25/54 से	25	5/29	19/37	5/29	19/18	5/26	19/25	6/07	19/15
	26	11	मंग	15	00	स्वा.	10	04	सिद्ध	28	03	तुला	भ. 15/00 तक, निर्जला एकादशी व्रत	26	5/29	19/38	5/29	19/19	5/26	19/25	6/07	19/15
	27	12	बुध	16	49	विशा.	12	34	साध्य	28	22	वृ. 5/59	प्रदोष व्रत	27	5/30	19/38	5/30	19/19	5/26	19/25	6/07	19/15
	28	13	गुरु	18	10	अनु.	14	37	शुभ	28	18	वृश्चिक	वटसावित्री व्रतारम्भः	28	5/30	19/38	5/30	19/19	5/26	19/25	6/07	19/15
	29	14	शुक्र	18	59	ज्ये.	16	11	शुक्ल	27	50	ध. 16/11	भ. 18/59 से	29	5/30	19/38	5/30	19/19	5/27	19/25	6/08	19/16
	30	15	शनि	19	19	मूल	17	14	ब्रह्म	26	59	धनु	भ. 7/09 तक, ज्येष्ठ पूर्णिमा व्रत, वटसावित्री व्रत, सन्त कबीर जयंती, D	30	5/31	19/38	5/31	19/19	5/27	19/25	6/08	19/16

A ज्येष्ठा 1 में 16/12 B संक्रांति, 30 मु., पुण्यकाल संक्रांति प्रातः 9/29 के बाद C में 15/27, शक आषाढ़ प्रारम्भ, मेला कश्मीर भवानी (कश्मीर) D श्री सत्यनारायण व्रत

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् 2064, जुलाई महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2007 ई.

मास पक्ष	जुलाई	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.		नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.		योग	समाप्ति काल घं. मिं.		चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	1	1	रवि	19	11	पू.षा.	17	51	ऐंद्र	25	48	म. 23/56	आषाढ़ कृष्ण पक्षारम्भः, जुलाई मास प्रारम्भ	1	5/31	19/38	5/31	19/19	5/28	19/25	6/09	19/16
	2	2	चंद्र	18	39	उ.षा.	18	03	वैधृ	24	16	मकर		2	5/31	19/38	5/31	19/19	5/28	19/25	6/09	19/16
	3	3	मंग	17	46	श्रव	17	55	विष्क	22	29	मकर	भ. 6/13 से 17/46 तक, अङ्गारकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, शुक्र मघा । A	3	5/32	19/38	5/32	19/19	5/28	19/25	6/10	19/16
	4	4	बुध	16	34	धनि	17	29	प्रीति	20	27	कुं. 5/44	पंचक प्रारम्भ 5/44	4	5/32	19/38	5/32	19/19	5/29	19/25	6/10	19/16
	5	5	गुरु	15	06	शत	16	46	आयु	18	12	कुम्भ	मंगल भरणी में 6/43	5	5/32	19/38	5/33	19/19	5/29	19/25	6/10	19/16
	6	6	शुक्र	13	24	पू.भा.	15	48	सौभा	15	46	मी. 10/04	भ. 13/24 से 24/26 तक, सूर्य पुनर्वसु में 15/07	6	5/33	19/38	5/33	19/18	5/30	19/25	6/11	19/16
	7	7	शनि	11	27	उ.भा.	14	37	शोभ	13	07	मीन	वक्री बुध पूर्व से उदय 15/23	7	5/33	19/38	5/34	19/18	5/30	19/24	6/11	19/16
	8	8	रवि	9	18	रेव	13	13	अति	10	19	मे. 13/13	पंचक समाप्त 13/13	8	5/34	19/38	5/34	19/18	5/31	19/24	6/12	19/16
	9	9/	चंद्र	6	58	अश्वि	11	40	सुक धृति	7 28	22 20	मेष	भ. 17/45 से 28/31 तक,	9	5/34	19/37	5/34	19/18	5/31	19/24	6/12	19/16
	—	10	चंद्र	28	31	—	—	—	—	—	—	—	दशमी तिथि का क्षय	—	—	—	—	—	—	—	—	—
	10	11	मंग	26	01	भर	10	00	शूल	25	15	वृ. 15/34	योगिनी एकादशी व्रत स्मार्त, बुध मार्गी 7/40	10	5/35	19/37	5/35	19/18	5/32	19/24	6/12	19/16
	11	12	बुध	23	33	कृति	8	18	गंड	22	11	वृष	योगिनी एका. व्रत वैष्णव.	11	5/36	19/37	5/35	19/18	5/32	19/23	6/13	19/16
	12	13	गुरु	21	15	रोहि	6	40	वृद्धि	19	15	मि. 17/55	भ. 21/15 से प्रा., प्रदोष व्रत	12	5/36	19/37	5/36	19/18	5/33	19/23	6/13	19/16
	13	14	शुक्र	19	12	आर्द्रा	29 28	14 07	ध्रुव	16	31	मिथुन	भ. 8/14 तक,	13	5/37	19/36	5/36	19/17	5/33	19/23	6/13	19/15
	14	30	शनि	17	34	पुर्न	27	26	व्या.	14	06	क. 21/33	शनैश्चरी अमावस, स्नानदान, तर्पणादि	14	5/37	19/36	5/37	19/17	5/34	19/23	6/14	19/15
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	15	1	रवि	16	26	पुष्य	27	19	हर्ष	12	05	कर्क	चन्द्रदर्शन (मु. 30), शनि मघा (1) सिंह में 28/41	15	5/38	19/36	5/37	19/17	5/34	19/22	6/14	19/15
	16	2	चंद्र	15	56	अश्ले	27	50	वज्र	10	34	सिं. 27/50	रथ यात्रा (श्रीजगन्नाथपुरी), सूर्य कर्क में 26/44, श्रावण संक्रांति B	16	5/38	19/36	5/38	19/16	5/35	19/22	6/14	19/15
	17	3	मंग	16	06	मघा	29	02	सिद्धि	9	34	सिंह	भ. 28/32 से प्रा., गण्डमूलादि विचार	17	5/39	19/35	5/38	19/16	5/35	19/22	6/14	19/15
	18	4	बुध	16	57	पू.फा.	पूरा	दिन	व्य.	9	07	सिंह	भ. 16/57 तक,	18	5/39	19/35	5/38	19/16	5/36	19/21	6/15	19/14
	19	5	गुरु	18	27	पू.फा.	6	53	वरी	9	11	कं. 13/26		19	5/40	19/35	5/39	19/15	5/36	19/21	6/15	19/14
	20	6	शुक्र	20	27	उ.फा.	9	18	परि	9	41	कन्या	कुमार षष्ठी, सूर्य पुष्य में 14/34, स्कन्द षष्ठी	20	5/40	19/35	5/40	19/15	5/37	19/21	6/15	19/14
	21	7	शनि	22	47	हस्त	12	06	शिव	10	30	तु. 25/35	भ. 22/47 से, विवस्वत सप्तमी	21	5/41	19/34	5/41	19/14	5/38	19/20	6/16	19/14
	22	8	रवि	25	11	चित्रा	15	05	सिद्ध	11	28	तुला	भ. 11/59 तक, श्रीदुर्गाष्टमी	22	5/42	19/34	5/41	19/14	5/38	19/20	6/16	19/14
	23	9	चंद्र	27	27	स्वा.	18	00	साध्य	12	25	तुला	भढली नवमी, मे. शरीफ भवानी (का.), सूर्य सायन सिंह में 10/30,	23	5/42	19/33	5/42	19/13	5/39	19/19	6/16	19/13
	24	10	मंग	29	21	विशा	20	39	शुभ	13	10	वृ. 14/01	मंगल कृतिका में 10/00	24	5/43	19/32	5/42	19/13	5/40	19/19	6/17	19/13
	25	11	बुध	पूरा	दिन	अनु.	22	50	शुक्ल	13	36	वृश्चिक	भ. 18/03 से,	25	5/44	19/32	5/43	19/12	5/40	19/18	6/17	19/13
	26	11	गुरु	6	45	ज्ये.	24	27	ब्रह्म	13	36	ध. 24/27	भ. 6/45 तक, बुध पुर्न. में 12/44, देवशयनी एकादशी, चातुर्मास व्रत,+	26	5/45	19/31	5/43	19/12	5/41	19/18	6/17	19/12
	27	12	शुक्र	7	32	मूल	25	28	ऐंद्र	13	07	धनु	प्रदोष व्रत, शुक्र वक्री (सिंहे) 22/55 + नियमादि प्रारम्भ	27	5/45	19/30	5/44	19/11	5/42	19/17	6/18	19/12
	28	13	शनि	7	42	पू.षा.	25	54	वैधृ	12	09	धनु	मेला ज्वालामुखी (कश्मीर) प्रा.	28	5/46	19/30	5/44	19/11	5/42	19/17	6/18	19/12
	29	14	रवि	7	16	उ.षा.	25	47	विष्क	10	43	म. 7/55	भ. 7/16 से 18/47 तक, मंगल वृष में 8/29, गुरु पूर्णिमा (देखें पृष्ठ 69) C	29	5/47	19/29	5/44	19/10	5/43	19/17	6/18	19/11
	30	15/	चंद्र	6	18	श्रव	25	12	प्रीति	8	52	मकर	आषाढ़ पूर्णिमा स्नान, दानादौ	30	5/47	19/27	5/45	19/09	5/43	19/16	6/19	19/11
	00	1	चंद्र	28	53	00	00	00	00	00	00	00	श्रा. कृ. प्रतिपदा तिथि क्षय	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	31	2	मंग	27	08	धनि	24	16	आयु सौभा	6 28	40 11	कुं. 12/46	पंचक प्रारम्भ 12/46,	31	5/48	19/27	5/46	19/09	5/44	19/15	6/19	19/10

13 दिन का पक्ष, 30 जुला. से 12 अग. तक

A सिंह में 27/24 B पुण्य संक्रान्ति अगले दिन प्रातः 9/08 तक, निरयण दक्षिणायन प्रारम्भ, वक्री गुरु अनु. (4) 19/31 C व्यास पूजा, कोकिला व्रत, शिव शयनोत्सव, श्रीसत्यनारायण व्रत

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् 2064, अगस्त महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2007 ई.

मास पक्ष	अगस्त	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.		नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.		योग	समाप्ति काल घं. मिं.		चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
श्रावण कृष्ण पक्ष	1	3	बुध	25	07	शत	23	03	शोभ	25	30	कुम्भ	भ. 14/08 से 25/07 तक, बुध कर्क में 17/46, तिलक पुण्य तिथि	1	5/48	19/25	5/46	19/08	5/45	19/13	6/20	19/10
	2	4	गुरु	22	55	पू.भा.	21	39	अति	22	39	मी. 16/01	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, वं. उ. रात्रि 9/33 पर	2	5/49	19/25	5/47	19/07	5/45	19/12	6/20	19/09
	3	5	शुक्र	20	37	उ.भा.	20	09	सुक	19	44	मीन	नाग पंचमी (राज. बंगाल), सूर्य आश्लेषा में 13/32, बुध पुष्य में 13/00R	3	5/49	19/24	5/47	19/07	5/45	19/11	6/20	19/09
	4	6	शनि	18	17	रेव	18	36	धृति	16	46	मे. 18/36	भ. 18/17 से 29/08 तक, पंचक समाप्त 18/36, M	4	5/50	19/23	5/48	19/06	5/46	19/11	6/21	19/08
	5	7	रवि	15	58	अश्वि	17	04	शूल	13	50	मेष	गण्डमूल विचार 18/36 तक	5	5/51	19/23	5/49	19/05	5/46	19/10	6/21	19/08
	6	8	चंद्र	13	43	भर	15	37	गंड	10	56	वृ. 21/16		6	5/52	19/22	5/49	19/04	5/47	19/09	6/21	19/07
	7	9	मंग	11	35	कृति	14	17	वृदि ध्रुव	8 29	07 27	वृष	भ. 22/36 से, शुक्र पश्चिम में अस्त 28/40, गुरु मार्गी 7/37	7	5/52	19/21	5/50	19/03	5/48	19/08	6/22	19/07
	8	10	बुध	9	37	रोहि	13	08	व्या.	26	57	मि. 24/38	भ. 9/37 तक,	8	5/53	19/20	5/51	19/02	5/49	19/07	6/22	19/06
	9	11	गुरु	7	54	मृग	12	12	हर्ष	24	41	मिथुन	कामिका एकादशी व्रत	9	5/53	19/19	5/51	19/01	5/49	19/06	6/22	19/05
	10	12	शुक्र	6	27	आर्द्रा	11	35	वज्र	22	41	क. 29/22	भ. 29/22 से, बुध आश्ले. में 5/10, प्रदोष व्रत	10	5/54	19/18	5/52	19/00	5/50	19/05	6/22	19/05
	—	13	शुक्र	29	22	—	—	—	—	—	—	—	त्रयोदशी तिथि क्षय	—	—	—	—	—	—	—	—	—
	11	14	शनि	28	43	पुर्न	11	20	सिद्धि	21	01	कर्क	भ. 17/03 तक, मास शिवरात्रि व्रत	11	5/55	19/17	5/52	18/59	5/50	19/04	6/22	19/04
	12	30	रवि	28	33	पुष्य	11	31	व्य.	19	43	कर्क	हरियाली अमावस, रवि पुष्य योग, शनि मघा (2) में 12/36	12	5/56	19/16	5/53	18/58	5/51	19/03	6/23	19/03
श्रावण शुक्ल पक्ष	13	1	चंद्र	28	55	अश्ले	12	12	वरी	18	50	सिं. 12/12	मेला अष्टमी प्रारम्भ, मंगल रोहिणी में 15/19	13	5/57	19/15	5/54	18/58	5/52	19/02	6/23	19/03
	14	2	मंग	29	50	मघा	13	25	परि	18	23	सिंह	चन्द्रदर्शन (मु. ३०), वक्री शुक्र मघा 9 में 8/35	14	5/57	19/13	5/54	18/57	5/52	19/02	6/23	19/02
	15	3	बुध	पूरा	दिन	पू.फा.	15	10	शिव	18	22	कं. 21/41	भारत स्वतन्त्रता दिवस, सिंघारा तीज, शवान मुस्लि. प्रारम्भ	15	5/58	19/12	5/55	18/56	5/53	19/01	6/23	19/02
	16	3	गुरु	7	18	उ.फा.	17	25	सिद्ध	18	44	कन्या	भ. 20/16 से, मधुसवा-हरियाली तीज, बुध मघा 9 सिंह में A	16	5/59	19/11	5/55	18/55	5/53	19/00	6/24	19/01
	17	4	शुक्र	9	13	हस्त	20	05	साध्य	19	25	कन्या	भ. 9/13 तक, सूर्य मघा 9 सिंह में 11/09, भाद्रपद संक्रान्ति, मु. 30, +	17	5/59	19/10	5/56	18/54	5/54	18/59	6/24	19/01
	18	5	शनि	11	29	चित्रा	23	00	शुभ	20	19	तु. 9/31	नाग पंचमी + पुण्य संक्रान्ति प्रातः ऊषाकाल से	18	6/00	19/09	5/56	18/53	5/55	18/58	6/24	19/00
	19	6	रवि	13	55	स्वा.	26	00	शुक्ल	21	17	तुला	श्रीकल्कि जयन्ती, वक्री शुक्र कर्क में 19/18	19	6/00	19/08	5/57	18/52	5/55	18/56	6/24	19/00
	20	7	चंद्र	16	18	विशा	28	50	ब्रह्म	22	10	वृ. 22/09	भ. 16/18 से 29/22 तक, गो. तुलसीदास जयन्ती	20	6/01	19/06	5/57	18/51	5/56	18/55	6/24	19/00
	21	8	मंग	18	25	अनु	पूरा	दिन	ऐंद्र	22	48	वृश्चिक	श्रीदुर्गाष्टमी, मेला चिन्तपूर्णी, कांगड़ा, नैना देवी, दूर्वाष्टमी व्रत (देखें पृष्ठ 69)	21	6/01	19/05	5/58	18/50	5/56	18/54	6/25	18/59
	22	9	बुध	20	04	अनु	7	20	वैधृ	23	04	वृश्चिक	राहु शत (२), व केतु मघा (४) में 18/52	22	6/02	19/04	5/58	18/49	5/57	18/53	6/25	18/58
	23	10	गुरु	21	06	ज्ये.	9	17	विष्क	22	50	ध. 9/17	सूर्य सायन कन्या में 17/38, बुध पू.फा. में 14/05, शरद् ऋतु प्रा., P	23	6/02	19/03	5/59	18/48	5/58	18/52	6/25	18/57
	24	11	शुक्र	21	26	मूल	10	36	प्रीति	22	04	धनु	भ. 9/16 से 21/26 तक, पवित्रा एका. व्रत, शुक्रोदय पूर्व 4/45, गं. मू.	24	6/03	19/02	5/59	18/47	5/58	18/51	6/25	18/56
	25	12	शनि	21	02	पू.षा.	11	13	आयु	20	43	म. 17/15		25	6/04	19/01	5/59	18/46	5/59	18/50	6/26	18/55
	26	13	रवि	19	58	उ.षा.	11	08	सौभा	18	49	मकर	प्रदोष व्रत, शुक्र बाल्यत्व समाप्त 28/45	26	6/04	19/00	6/00	18/45	5/59	18/49	6/26	18/54
	27	14	चंद्र	18	17	श्रव	10	24	शोभ	16	25	कुं. 21/50	भ. 18/17 से 29/11 तक, पंचक शुरू 21/50, ऋग्वेदि उपाकर्म प्रारंभ	27	6/05	18/59	6/00	18/44	6/00	18/47	6/26	18/53
	28	15	मंग	16	05	धनि	9	09	अति	13	35	कुम्भ	श्रावण पूर्णिमा, रक्षा बन्धन, श्रावणी उपाकर्म, गुरु ज्ये. (1) में 19/06, B	28	6/06	18/57	6/01	18/43	6/00	18/46	6/27	18/52
भाद्र. कृष्ण	29	1	बुध	13	31	शत पू.भा.	7 29	27 29	सुक	10	27	मी. 23/59	भाद्र. कृष्ण पक्षारम्भः, गायत्री जपम्	29	6/07	18/55	6/01	18/42	6/01	18/45	6/27	18/51
	30	2	गुरु	10	41	उ.भा.	27	21	धृति शूल	7 27	04 35	मीन	भ. 21/13 से, कज्जली तीज, बुध उफा में 25/03, बुध पश्चिम से उदय C	30	6/07	18/54	6/02	18/40	6/02	18/44	6/28	18/50
	31	3	शुक्र	7	45	रेव	25	11	गंड	24	04	मे. 25/11	भ. 7/45 तक, सूर्य पू.फा. में 7/11, श्रीगणेश बहुला चतुर्थी वं.उ. 20/38 (जालंधर) D	31	6/08	18/53	6/02	18/39	6/02	18/43	6/28	18/49
	—	4	शुक्र	28	48	—	—	—	—	—	—	—	00 00 00 00	—	—	—	—	—	—	—	—	—

R बुध पूर्व में अस्त 23/50 M शनि पश्चिम में अस्त 5/10, शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ 28/40 A 17/32, दूर्वागणपति व्रत, वरद् चतुर्थी B बलभद्र पूजा (उड़ीसा), ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्रग्रहण (देखें पृष्ठ 11-12), ऋषि तर्पण दर्शन पवित्र गुफा श्रीअमरनाथ काश्मीर C 8/50, P शक भाद्रपद प्रारम्भ D पंचक समाप्त 25/11

शनि अस्त 4 अगस्त

शुक्र अस्त 7 अगस्त

शुक्र उदय 24 अगस्त

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् 2064, सितम्बर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2007 ई.

मास पक्ष	सितम्बर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.		नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.		योग	समाप्ति काल घं. मिं.		चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	1	5	शनि	25	58	अश्वि	23	07	वृद्धि	20	38	मेष	सितम्बर मास प्रारम्भ, बुध कन्या में 24/31	1	6/08	18/52	6/03	18/39	6/03	18/42	6/29	18/48
	2	6	रवि	23	22	भर	21	16	ध्रुव	17	22	वृ. 26/51	भ. 23/22 से प्रा., चन्दन षष्ठी (हल ६), चन्द्रोदय रात्रि 9/54 (जालंधर)	2	6/09	18/51	6/04	18/38	6/03	18/41	6/29	18/47
	3	7	चंद्र	21	04	कृति	19	43	व्या.	14	19	वृष	भ. 10/13 तक, शीतला सप्तमी, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मार्त Y	3	6/10	18/50	6/04	18/36	6/04	18/40	6/29	18/46
	4	8	मंग	19	08	रोहि	18	31	हर्ष	11	33	वृष	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्र. वैष्णव (चन्द्रोदय 23 घं. 36 मिं.), मंगल O	4	6/11	18/49	6/05	18/35	6/04	18/38	6/29	18/45
	5	9	बुध	17	37	मृग	17	45	वज्र	9	08	मि. 6/05	भ. 29/05 से प्रा., श्रीगुग्गा नवमी	5	6/11	18/48	6/05	18/34	6/05	18/37	6/29	18/44
	6	10	गुरु	16	33	आर्द्रा	17	25	सिद्ध	7	04	मिथुन	भ. 16/33 तक,	6	6/12	18/47	6/06	18/33	6/06	18/35	6/29	18/44
	7	11	शुक्र	15	58	पुर्न	17	33	वरी	28	02	क. 11/28	अजा एकादशी व्रत, शनि मघा (3) में 12/36	7	6/12	18/45	6/06	18/32	6/06	18/34	6/30	18/43
	8	12	शनि	15	51	पुष्य	18	08	परि	27	04	कर्क	शनि प्रदोष व्रत, शुक्र मार्गी 21/46, बुध हस्त में 6/25, शनि पूर्व से उदय A	8	6/13	18/43	6/06	18/31	6/07	18/33	6/30	18/43
	9	13	रवि	16	11	अश्ले	19	11	शिव	26	28	सिं. 19/11	भ. 16/11 से 28/36 तक,	9	6/14	18/42	6/07	18/29	6/07	18/32	6/30	18/42
	10	14	चंद्र	17	00	मघा	20	41	सिद्ध	26	13	सिंह	गण्डमूलादि विचार	10	6/14	18/40	6/07	18/28	6/08	18/30	6/30	18/41
	11	30	मंग	18	14	पू.फा.	22	35	साध्य	26	18	कं. 29/08	कुशाग्रहणी भौमवासरी, पिठोरी अमावस, शक्ति पूजा	11	6/15	18/38	6/08	18/27	6/08	18/29	6/30	18/40
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	12	1	बुध	19	54	उ.फा.	24	53	शुभ	26	41	कन्या	भाद्रपद शुक्ल पक्षारम्भः	12	6/16	18/37	6/08	18/26	6/09	18/28	6/30	18/40
	13	2	गुरु	21	55	हस्त	27	31	शुक्ल	27	20	कन्या	चन्द्रदर्शन (मु. ३०), सूर्य उ.फा. में 25/02	13	6/16	18/37	6/09	18/25	6/09	18/27	6/30	18/39
	14	3	शुक्र	24	13	चित्रा	पूरा	दिन	ब्रह्म	28	10	तु. 16/56	हरितालिका तीज, गौरी तृतीया, साम उपाकर्म, श्रीवराह जयन्ती Z	14	6/17	18/36	6/09	18/23	6/10	18/25	6/30	18/38
	15	4	शनि	26	41	चित्रा	6	24	ऐन्द्र	29	07	तुला	भ. 13/27 से 26/41 तक, सिद्धि विनायक व्रत, कलंक चतुर्थी (पत्थर G	15	6/17	18/35	6/10	18/22	6/11	18/24	6/30	18/37
	16	5	रवि	29	11	स्वा.	9	25	वैधृ	30	04	वृ. 29/40	ऋषि पंचमी, मंगल मिथुन में 21/37	16	6/18	18/33	6/10	18/21	6/11	18/23	6/31	18/36
	17	6	चंद्र	पूरा	दिन	विशा	12	24	विष्क	पूरा	दिन	वृश्चिक	सूर्य कन्या में 11/07, आश्विन संक्रांति ४५ मु., बुध चित्रा में 11/46 B	17	6/18	18/31	6/11	18/20	6/12	18/22	6/31	18/35
	18	6	मंग	7	31	अनु	15	12	विष्क	6	55	वृश्चिक	सूर्य षष्ठी, ललिता षष्ठी व्रत, सन्तान सप्तमी, मुक्ताभरण व्रत	18	6/19	18/30	6/11	18/19	6/12	18/20	6/31	18/34
	19	7	बुध	9	30	ज्ये.	17	36	प्रीति	7	29	ध. 17/36	भ. 9/30 से 22/14 तक, महालक्ष्मी व्रतारम्भः	19	6/20	18/28	6/12	18/17	6/13	18/19	6/31	18/34
	20	8	गुरु	10	57	मूल	19	26	आयु	7	39	धनु	राधाष्टमी	20	6/21	18/27	6/12	18/16	6/13	18/18	6/31	18/33
	21	9	शुक्र	11	44	पू.षा.	20	35	सौभा	7	19	म. 26/46	श्रीचन्द्र नवमी (जयन्ती) उदासीन, श्रीभागवत सप्ताह पाठ प्रारम्भ	21	6/22	18/26	6/13	18/15	6/14	18/16	6/32	18/32
	22	10	शनि	11	45	उ.षा.	20	59	शोभ अति	6 28	24 51	मकर	भ. 23/22 से, बुध तुला में 16/02	22	6/22	18/25	6/13	18/14	6/15	18/15	6/32	18/31
	23	11	रवि	10	59	श्रव	20	36	सुक	26	41	मकर	भ. 10/59 तक, पद्मा एकादशी व्रत, वामन जयंती, सूर्य सायन तुला C	23	6/23	18/24	6/14	18/13	6/15	18/14	6/32	18/30
	24	12	चंद्र	9	27	धनि	19	30	धृति	23	57	कुं. 8/08	पंचक शुरू 8/08, सोम प्रदोष व्रत	24	6/24	18/23	6/14	18/12	6/16	18/13	6/32	18/29
	25	13/	मंग	7	14	शत	17	45	शूल	20	42	कुम्भ	भ. 28/28 से प्रा., अनन्त चौदश, मेला सोढल जालन्धर, कदली व्रत	25	6/24	18/21	6/15	18/10	6/16	18/11	6/33	18/28
	—	14	मंग	28	28	—	—	—	—	—	—	—	चतुर्दशी तिथि क्षय oo oo	—	—	—	—	—	—	—	—	—
	26	15	बुध	25	15	पू.भा.	15	31	गंड	17	04	मी. 10/07	भ. 14/52 तक, भाद्रपद पूर्णिमा, प्रौष्ठपदी पूर्णिमा का श्राद्ध, D	26	6/25	18/20	6/15	18/09	6/17	18/10	6/33	18/27
आश्वि. कृष्ण	27	1	गुरु	21	47	उ.भा.	12	56	वृद्धि	13	10	मीन	आश्विन पितृ पक्षारम्भः, श्राद्ध शुरु, सूर्य हस्त में 16/34, श्राद्ध प्रतिपदा	27	6/25	18/18	6/16	18/08	6/17	18/09	6/33	18/26
	28	2	शुक्र	18	13	रेवु	10	11	ध्रुव	9	06	मे. 10/11	भ. 28/28 से प्रा., पंचक समा. 10/11, बुध स्वा. में 13/29 E	28	6/26	18/16	6/16	18/07	6/18	18/08	6/33	18/25
	29	3	शनि	14	43	अश्वि	7	25	व्या.	29	03	मेष	भ. 14/43 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, शुक्र मघा 9 सिंह में 24/27 F	29	6/26	18/15	6/17	18/06	6/19	18/06	6/33	18/24
	30	4	रवि	11	26	कृति	26	35	वज्र	21	25	वृ. 10/14	मंगल आर्द्रा में 14/58, पंचमी का श्राद्ध प्रातः 11/26 के बाद	30	6/27	18/14	6/18	18/04	6/19	18/05	6/33	18/23

Y (चन्द्रोदय 22 घं. 42 मिं.), (देखें पृष्ठ 70) अगस्त्य तारा उदय O मृग. में 16/25 A 26/12, वत्स द्वादशी Z 1 रमज़ान (मु.) प्रारम्भ B पुण्य संक्रांति प्रातः ऊषाकाल से प्रारम्भ, C में 15/21, दक्षिण गोल प्रारम्भ, शक आश्विन प्रारम्भ D श्रीसत्यनारायण व्रत, दानादौ E द्वितीया का श्राद्ध F तृतीया का श्राद्ध, चतुर्थी का श्राद्ध दुपै. 14/43 बाद (देखें पृष्ठ 72), गुरु ज्ये. (२) में 9/49 G चौथ) चन्द्रदर्शन निषेध, चन्द्रास्त रात्रि 20/22 पर

शनि उदय 8 सितंबर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् 2064, अक्तूबर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2007 ई.

मास पक्ष	अक्तूबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.		नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.		योग	समाप्ति काल घं. मिं.		चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
आश्विन कृष्ण पक्ष	1	5/	चंद्र	8	31	रोहि	24	47	सिद्धि	18	05	वृष	भ. 30/06 से प्रा., अक्तूबर मास प्रारम्भ, षष्ठी तिथि का श्राद्ध	1	6/28	18/12	6/18	18/03	6/20	18/04	6/34	18/23
	–	6	चंद्र	30	06	–	–	–	–	–	–	–	षष्ठी तिथि क्षय ०० ००	—	—	—	—	—	—	—	—	—
	2	7	मंग	28	16	मृग	23	33	व्य.	15	11	मि. 12/05	भ. 17/11 तक, महात्मा गाँधी जयंती, सप्तमी का श्राद्ध	2	6/28	18/10	6/19	18/02	6/20	18/03	6/34	18/22
	3	8	बुध	27	06	आर्द्रा	22	57	वरी	12	48	मिथुन	महालक्ष्मी व्रत समाप्त, जीवित पुत्रिका व्रत, अष्टमी का श्राद्ध	3	6/29	18/09	6/19	18/00	6/21	18/01	6/34	18/21
	4	9	गुरु	26	35	पुर्न	23	00	परि	10	56	क. 16/56	मातृ नवमी, सौभाग्यवतीनां श्राद्ध, नवमी का श्राद्ध	4	6/30	18/08	6/20	17/59	6/22	18/00	6/34	18/21
	5	10	शुक्र	26	43	पुष्य	23	41	शिव	9	35	कर्क	भ. 14/39 से 26/43 तक, शनि मघा (4) में 25/11, श्राद्ध दशमी	5	6/30	18/07	6/20	17/58	6/22	17/59	6/34	18/20
	6	11	शनि	27	26	अश्ले	24	57	सिद्ध	8	44	सिं. 24/57	इन्दिरा एकादशी व्रत, एकादशी का श्राद्ध	6	6/31	18/06	6/21	17/57	6/23	17/58	6/35	18/19
	7	12	रवि	28	40	मघा	26	43	साध्य	8	19	सिंह	संन्यासीनां श्राद्ध, द्वादशी का श्राद्ध	7	6/31	18/05	6/21	17/56	6/24	17/56	6/35	18/19
	8	13	चंद्र	30	18	पू.फा.	28	53	शुभ	8	17	सिंह	भ. 30/18 से प्रा., सोम प्रदोष व्रत, त्रयोदशी का श्राद्ध	8	6/32	18/04	6/22	17/55	6/24	17/55	6/35	18/18
	9	14	मंग	पूरा	दिन	उ.फा.	पूरा	दिन	शुक्ल	8	33	कं. 11/29	भ. 19/18 तक, चौदश का श्राद्ध, शस्त्र-विष-दुर्घटनादि से मृत का श्राद्ध	9	6/33	18/03	6/22	17/54	6/25	17/54	6/35	18/17
	10	14	बुध	8	17	उ.फा.	7	22	ब्रह्म	9	04	कन्या	अमा. (8/17 उप.), सर्वपितृ श्राद्धम्, गजच्छाया योग प्रातः 8/17 A	10	6/33	18/01	6/23	17/52	6/25	17/53	6/35	18/16
	11	30	गुरु	10	31	हस्त	10	06	ऐंद्र	9	45	तु. 23/32	अमावस स्नानदानादि, मातामह श्राद्ध, सूर्य चित्रा में 5/34	11	6/34	18/00	6/23	17/51	6/26	17/52	6/36	18/15
आश्विन शुक्ल पक्ष	12	1	शुक्र	12	55	चित्रा	13	00	वैधृ	10	35	तुला	शरद् नवरात्रारम्भः, घटस्थापन, अग्रसेन जयंती, बुध वक्री 9/18	12	6/35	17/59	6/24	17/50	6/27	17/51	6/36	18/14
	13	2	शनि	15	26	स्वा.	16	00	विष्क	11	30	तुला	चन्द्रदर्शन (मु. 45)	13	6/36	17/57	6/25	17/49	6/27	17/49	6/36	18/14
	14	3	रवि	17	58	विशा	19	01	प्रीति	12	26	वृ. 12/16	9 शव्वाल (मुस्लिम) प्रारम्भ	14	6/37	17/55	6/25	17/48	6/28	17/48	6/37	18/13
	15	4	चंद्र	20	23	अनु	21	55	आयु	13	18	वृश्चिक	भ. 7/11 से 20/23 तक,	15	6/38	17/54	6/26	17/47	6/28	17/47	6/37	18/12
	16	5	मंग	22	35	ज्ये.	24	36	सौभा	14	02	ध. 24/36	उपाङ्ग ललिता व्रत, शुक्र पू.फा. में 29/06, गण्डमूल विचार	16	6/38	17/53	6/26	17/46	6/29	17/46	6/37	18/11
	17	6	बुध	24	24	मूल	26	54	शोभ	14	30	धनु	सूर्य तुला में 23/05, कार्तिक संक्रांति, सरस्वती आवाहनं मूल में, B	17	6/39	17/52	6/27	17/45	6/30	17/45	6/38	18/10
	18	7	गुरु	25	40	पू.षा.	28	40	अति	14	37	धनु	भ. 25/40 से प्रा., वक्री बुध पश्चिम में अस्त 12/25, सरस्वती पूजनं	18	6/40	17/51	6/28	17/44	6/31	17/44	6/38	18/09
	19	8	शुक्र	26	15	उ.षा.	29	45	सुक	14	15	म. 11/00	भ. 13/58 तक, महाष्टमी, दुर्गा ८, भद्रकाली जयं, गुरु ज्ये. (3) में 23/46,	19	6/41	17/50	6/28	17/43	6/32	17/43	6/38	18/08
	20	9	शनि	26	05	श्रव	30	06	धृति	13	19	मकर	सरस्वती विसर्जनं (श्रवणे), महानवमी, नवरात्र समाप्त, शस्त्रादि पूजा, C	20	6/41	17/49	6/29	17/42	6/32	17/42	6/39	18/07
	21	10	रवि	25	06	धनि	29	39	शूल	11	45	कुं. 17/58	पंचक शुरू 17/58, विजयादशमी (दशहरा), अपराजिता पू. प्रातः 6/6 तक	21	6/42	17/48	6/30	17/41	6/33	17/41	6/39	18/06
	22	11	चंद्र	23	19	शत	28	25	गंड	9	33	कुम्भ	भ. 12/13 से 23/19 तक, पापांकुशा एकादशी व्रत, भरत मिलाप	22	6/43	17/47	6/30	17/40	6/34	17/40	6/39	18/06
	23	12	मंग	20	50	पू.भा.	26	30	वृद्धि ध्रुव	6 27	44 22	मी. 21/03	सूर्य सायन वृश्चिक में 24/46, शक कार्तिक प्रा., हेमन्त ऋतु प्रारम्भ	23	6/43	17/46	6/31	17/39	6/34	17/39	6/40	18/05
	24	13	बुध	17	44	उ.भा.	24	02	व्या.	23	32	मीन	प्रदोष व्रत, सूर्य स्वाती में 16/03, राहु शत (1), केतु मघा (3) में 16/42,	24	6/44	17/45	6/32	17/38	6/35	17/38	6/40	18/05
	25	14/	गुरु	14	11	रेव	21	09	हर्ष	19	22	मे. 21/09	भ. 14/11 से 24/17 तक, पंचक समाप्त 21/09, व्रत शरद् पूर्णिमा S	25	6/45	17/44	6/32	17/37	6/36	17/37	6/40	18/04
	26	15/	शुक्र	10	22	अश्वि	18	03	वज्र	15	00	मेष	आश्विन पूर्णिमा स्नानदानादि, महर्षि वाल्मीकि जयंती, कार्तिक स्नान प्रारंभ	26	6/46	17/43	6/33	17/37	6/37	17/36	6/41	18/04
	–	1	शुक्र	30	27	–	–	–	–	–	–	–	कार्तिक कृष्ण प्रति. का क्षय ०० ००	—	—	—	—	—	—	—	—	—
कार्तिक कृष्ण	27	2	शनि	26	38	भर	14	56	सिद्धि व्य	10 30	36 18	वृ. 20/10	कार्तिक कृष्ण द्वितीया	27	6/47	17/42	6/34	17/36	6/37	17/35	6/41	18/04
	28	3	रवि	23	06	कृति	11	59	वरी	26	16	वृष	भ. 12/52 से 23/06 तक,	28	6/48	17/41	6/34	17/35	6/38	17/34	6/41	18/03
	29	4	चंद्र	20	02	रोहि	9	25	परि	22	39	मि. 20/20	करक चतुर्थी, व्रत करवा चौथ, चं. उ. रात्रि लगभग 8/17 (देखें पृष्ठ 72)	29	6/49	17/39	6/35	17/34	6/39	17/33	6/42	18/03
	30	5	मंग	17	34	मृग आर्द्रा	7 30	23 03	शिव	19	32	मिथुन	वक्री बुध कन्या में 17/06, शुक्र उ.फा. में 27/12, वक्री बुध पूर्व में उदय 5/50	30	6/50	17/38	6/36	17/33	6/40	17/32	6/42	18/03
	31	6	बुध	15	51	पुर्न	29	42	सिद्ध	17	02	क. 23/32	भ. 15/51 से 27/24 तक, स्कन्द षष्ठी, नैपच्यून मार्गी 25/41	31	6/51	17/38	6/37	17/33	6/41	17/31	6/43	18/02

A से 29/13 तक, महालय श्राद्ध समाप्त, पितृ विसर्जन B पुण्य संक्रान्ति मध्याह्न बाद, C बलिदान दिवस S कोजागर व्रत., श्रीसत्यनारायण व्रत

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् 2064, नवम्बर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2007 ई.

मास पक्ष	नवंबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.		नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.		योग	समाप्ति काल घं. मिं.		चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
कार्तिक कृष्ण पक्ष	1	7	गुरु	14	57	पुष्य	29	42	साध्य	15	10	कर्क	अहोई अष्टमी व्रत, राधाष्टमी, बुध मार्गी 28/36, गुरुपुष्य योग	1	6/51	17/35	6/38	17/32	6/41	17/30	6/43	18/02
	2	8	शुक्र	14	52	अश्ले	30	42	शुभ	13	56	सिं. 30/42	बुध मार्गी 04/36, गण्डमूल विचार	2	6/52	17/34	6/39	17/34	6/42	17/30	6/44	18/01
	3	9	शनि	15	33	मघा	पूरा	दिन	शुक्ल	13	19	सिंह	भ. 28/14 से प्रा., शुक्र कन्या में 9/11, गण्डमूलादि	3	6/53	17/33	6/39	17/33	6/43	17/29	6/44	18/01
	4	10	रवि	16	54	मघा	8	23	ब्रह्म	13	12	सिंह	भ. 16/54 तक, बुध तुला राशि में 17/52, गं. मू. 8/23 तक	4	6/54	17/32	6/40	17/32	6/44	17/28	6/45	18/00
	5	11	चंद्र	18	47	पू.फा.	10	37	ऐंद्र	13	30	कं. 17/15	रमा एकादशी व्रत	5	6/54	17/31	6/41	17/31	6/45	17/27	6/45	18/00
	6	12	मंग	21	01	उ.फा.	13	15	वैधृ	14	06	कन्या	गोवत्स द्वादशी, सूर्य विशाखा में 24/14, गुरु ज्ये. (4) में 9/02	6	6/55	17/30	6/42	17/30	6/45	17/26	6/45	17/59
	7	13	बुध	23	28	हस्त	16	07	विष्क	14	52	तु. 29/35	भ. 23/28 बाद, प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी, धन्वन्तरी जयं., यम तर्पण, दीपदान	7	6/56	17/30	6/42	17/30	6/46	17/26	6/46	17/59
	8	14	गुरु	26	01	चित्रा	19	05	प्रीति	15	45	तुला	भ. 12/45 तक, नरक चौदश, श्रीहनुमान जयंती, यम तर्पण	8	6/57	17/29	6/43	17/29	6/47	17/25	6/46	17/58
	9	30	शुक्र	28	33	स्वा.	22	06	आयु	16	38	तुला	कार्ति. अमावस, दीपावली पर्व, महालक्ष्मी पूजनं, महावीर निर्वाण, काली A	9	6/58	17/28	6/44	17/28	6/48	17/24	6/47	17/58
कार्तिक शुक्ल पक्ष	10	1	शनि	पूरा	दिन	विशा	25	02	सौभा	17	30	वृ. 18/19	कार्तिक शुक्ल (1), गोवर्धन पूजा, अन्नकूट, बली पूजा	10	6/59	17/28	6/44	17/28	6/49	17/24	6/47	17/58
	11	1	रवि	7	02	अनु.	27	53	शोभ	18	17	वृश्चिक	चन्द्रदर्शन, भ्रातृ दूज (यम द्वितीया) प्रातः 7/02 उप., बुध स्वाती (1) B	11	7/00	17/27	6/45	17/27	6/50	17/23	6/48	17/57
	12	2	चंद्र	9	22	ज्ये.	30	32	अति	18	57	वृ. 30/32	1 जिल्काद (मु.), शुक्र हस्त में 18/52, शनि पू.फा. (1) में 8/40	12	7/01	17/26	6/46	17/26	6/51	17/22	6/49	17/57
	13	3	मंग	11	30	मूल	पूरा	दिन	सुक	19	26	धनु	भ. 24/26 से प्रा., दूर्वागणपति व्रत	13	7/02	17/26	6/46	17/26	6/51	17/22	6/49	17/57
	14	4	बुध	13	22	मूला	8	56	धृति	19	41	धनु	भ. 13/22 तक, बाल दिवस (नेहरू जयंती)	14	7/03	17/26	6/47	17/25	6/52	17/21	6/50	17/56
	15	5	गुरु	14	49	पू.षा.	10	59	शूल	19	38	म. 17/25	ज्ञान पंचमी, मंगल वक्री 13/54 + मध्याह्न बाद,	15	7/04	17/25	6/48	17/25	6/53	17/21	6/50	17/56
	16	6	शुक्र	15	47	उ.षा.	12	33	गंड	19	10	मकर	सूर्य वृश्चिक में 22/51, मार्गशीर्ष संक्रांति, सूर्य षष्ठी, पुण्य सक्रांति +	16	7/05	17/25	6/49	17/24	6/54	17/20	6/51	17/56
	17	7	शनि	16	08	श्रव	13	33	वृद्धि	18	13	कुं. 25/49	भ. 16/08 से 27/58 तक, पंचक शुरु 25/49	17	7/06	17/24	6/50	17/24	6/55	17/20	6/51	17/55
	18	8	रवि	15	47	धनि	13	53	ध्रुव	16	43	कुम्भ	गोपाष्टमी	18	7/07	17/23	6/51	17/23	6/56	17/19	6/52	17/55
	19	9	चंद्र	14	41	शत	13	29	व्या.	14	38	मी. 30/43	कूष्माण्ड नवमी, अक्षया नवमी,	19	7/08	17/23	6/51	17/23	6/56	17/19	6/52	17/55
	20	10	मंग	12	50	पू.भा.	12	22	हर्ष	11	57	मीन	भ. 23/35 से, सूर्य अनु. (1) में 6/11, भीष्म पंचक प्रारम्भ	20	7/09	17/23	6/52	17/22	6/57	17/19	6/53	17/55
	21	11	बुध	10	19	उ.भा.	10	33	वज्र सिद्धि	8 29	44 01	मीन	भ. 10/19 तक, हरिप्रबोधिनी एका., तुलसी विवाह, गुरु मूला (1) C	21	7/10	17/22	6/53	17/22	6/58	17/18	6/54	17/55
	22	12/	गुरु	7	13	रेव अश्वि	8 29	11 23	व्य.	24	56	मे. 8/11	पंचक समाप्त 8/11, प्रदोष व्रत, सूर्य सायन धनु में 22/20	22	7/11	17/22	6/54	17/22	6/59	17/18	6/54	17/55
	—	13	गुरु	27	41	—	—	—	—	—	—	—	त्रयोदशी तिथि का क्षय oo oo	—	—	—	—	—	—	—	—	—
	23	14	शुक्र	23	53	भर	26	19	वरी	20	37	मेष	भ. 23/53 से प्रा., बैकुण्ठ चौदश	23	7/12	17/22	6/54	17/21	7/00	17/18	6/55	17/55
	24	15	शनि	20	00	कृति	23	13	परि	16	13	वृ. 7/32	भ. 9/57 तक, कार्तिक पूर्णिमा व्रत., श्रीगुरु नानक जयंती, भीष्मपंचक D	24	7/13	17/21	6/55	17/21	7/00	17/18	6/55	17/55
मार्गशीर्ष कृष्ण	25	1	रवि	16	15	रोहि	20	16	शिव	11	53	मि. 30/54	मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षारम्भः	25	7/14	17/21	6/56	17/21	7/02	17/17	6/56	17/55
	26	2	चंद्र	12	48	मृग	17	39	सिद्ध साध्य	7 28	46 01	मिथुन	भ. 23/20 से प्रा.	26	7/15	17/21	6/57	17/20	7/02	17/17	6/56	17/55
	27	3	मंग	9	52	आर्द्रा	15	35	शुभ	24	48	मिथुन	भ. 9/52 तक, अंगारकी गणेश चतुर्थी, बुध वृश्चिक में 21/27	27	7/16	17/20	6/58	17/20	7/03	17/17	6/57	17/55
	28	4/	बुध	7	35	पुर्न	14	13	शुक्ल	22	10	क. 8/29		28	7/16	17/20	6/58	17/20	7/04	17/17	6/57	17/55
	—	5	बुध	30	07	—	—	—	—	—	—	—	पंचमी तिथि का क्षय oo oo	—	—	—	—	—	—	—	—	—
	29	6	गुरु	29	31	पुष्य	13	40	ब्रह्म	20	14	कर्क	भ. 29/31 से प्रा., बुध अनु. (1) में 24/33	29	7/17	17/20	6/59	17/20	7/05	17/17	6/58	17/55
	30	7	शुक्र	29	47	अश्ले	13	58	ऐंद्र	18	58	सिं. 13/58	भ. 17/39 तक, शुक्र तुला राशि में 14/17	30	7/18	17/20	7/00	17/20	7/06	17/17	6/59	17/55

A पूजा, कुबेर पूजा (देखें पृष्ठ 73), B में 26/30, विश्वकर्मा जयंती, यमुना स्नान C धनु में 29/03, बुध विशा. में 10/49, चातुर्मास्य व्रत, नियमादि समाप्त D समाप्त, दीपदानादि, कार्तिक स्नान पूर्ति, मेला पुष्कर, मेला रामतीर्थ (अमृतसर), शुक्र चित्रा में 18/28, बुध-पूर्व में अस्त 8/42, यूरेनस मार्गी 15/47

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् 2064, दिसम्बर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2007 ई.

मास पक्ष	दिसम्बर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.		नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.		योग	समाप्ति काल घं. मिं.		चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	1	8	शनि	30	53	मघा	15	07	वैधृ	18	22	सिंह	दिसंबर मास प्रारम्भ, काल भैरवाष्टमी, गंडमूलादि
	2	9	रवि	पूरा	दिन	पू.फा.	16	59	विष्क	18	20	कं. 23/33	
	3	9	चंद्र	8	39	उ.फा.	19	27	प्रीति	18	45	कन्या	भ. 21/47 से प्रा., सूर्य ज्येष्ठा में 10/34
	4	10	मंग	10	54	हस्त	22	17	आयु	19	28	कन्या	भ. 10/54 तक,
	5	11	बुध	13	26	चित्रा	25	18	सौभा	20	21	तु. 11/47	उत्पन्ना एकादशी व्रत
	6	12	गुरु	16	04	स्वा.	28	21	शोभ	21	15	तुला	शुक्र स्वाती में 8/04
	7	13	शुक्र	18	38	विशा	31	16	अति	22	06	वृ. 24/33	भ. 18/38 से, गुरु मूला (2) में 5/28, प्रदोष व्रत, गुरु वार्धक्य प्रारंभ 16/30
	8	14	शनि	21	01	अनु	पूरा	दिन	सुक	22	48	वृश्चिक	भ. 7/50 तक, बुध ज्ये. में 12/46
	9	30	रवि	23	11	अनु	9	59	धृति	23	19	वृश्चिक	**अमावस** स्नानदान, तर्पणादि
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	10	1	चंद्र	25	03	ज्ये.	12	28	शूल	23	38	ध. 12/28	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष, गुरु पश्चिम में अस्त 16/30, गं. मू.
	11	2	मंग	26	37	मूल	14	40	गंड	23	43	धनु	चन्द्रदर्शन (मु. 30), गण्डमूलादि
	12	3	बुध	27	51	पू.षा.	16	33	वृद्धि	23	33	म. 22/58	ता. 1 जिल्हेज (मु.) प्रारम्भ,
	13	4	गुरु	28	41	उ.षा.	18	05	ध्रुव	23	06	मकर	भ. 16/16 से 28/41 तक,
	14	5	शुक्र	29	06	श्रव	19	14	व्या.	22	20	मकर	श्रीराम विवाहोत्सव, स. सि. योगः
	15	6	शनि	29	00	धनि	19	55	हर्ष	21	11	कुं. 7/38	**चम्पा षष्ठी**, स्कन्द षष्ठी
	16	7	रवि	28	21	शत	20	05	वज्र	19	37	कुम्भ	भ. 28/21 से, **सूर्य मूले (1) धनु में 13/27, पौष संक्रांति**, बुध मूले A
	17	8	चंद्र	27	06	पू.भा.	19	41	सिद्धि	17	35	मी. 13/50	भ. 15/44 तक, शुक्र विशाखा में 15/09, श्रीदुर्गाष्टमी
	18	9	मंग	25	16	उ.भा.	18	41	व्य.	15	06	मीन	नन्दा नवमी, स. सि. योगः
	19	10	बुध	22	53	रेव	17	09	वरी	12	09	मे. 17/09	**पंचक समाप्त 17/09, शनि वक्री** (सिंह में) 19/40, गं. मू.
	20	11	गुरु	20	02	अश्वि	15	07	परि शिव	8 29	47 05	मेष	भ. 9/28 से 20/02 तक, **मोक्षदा एकादशी व्रत, गीता जयंती**, गं. मू.
	21	12	शुक्र	16	51	भर	12	43	सिद्ध	25	09	वृ. 18/04	प्रदोष व्रत, अखण्ड द्वादशी, गुरु मूले (3) में 20/27
	22	13	शनि	13	27	कृति रोहि	10 31	05 24	साध्य	21	07	वृष	पिशाचमोचन श्राद्ध, सूर्य सायन मकर में 11/38, सायन उत्तरायण B
	23	14/	रवि	10	02	मृग	28	50	शुभ	17	06	मि. 18/05	भ. 10/02 से 20/24 तक, मार्ग. पूर्णिमा व्र., दत्तात्रेय जयं., त्रिपुरभैरव जयं.
	–	15	रवि	30	46	–	–	–	–	–	–	–	पूर्णिमा तिथि का क्षय ०० ००
पौष कृष्ण पक्ष	24	1 कृ.	चंद्र	27	49	आर्द्रा	26	35	शुक्ल	13	16	मिथुन	पौष कृष्ण पक्षारम्भः
	25	2	मंग	25	22	पुर्न	24	48	ब्रह्म इंद्र	9 30	44 38	क. 19/12	शुक्र वृश्चिक में 23/37, क्रिसमिस दिवस, बुध पू.षा. में 10/17
	26	3	बुध	23	34	पुष्य	23	40	वैधृ	28	06	कर्क	भ. 12/28 से 23/34 तक, राहु धनि. (4) में, केतु मघा (२) में 14/00
	27	4	गुरु	22	32	अश्ले	23	17	विष्क	26	10	सिं. 23/17	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चं. उ. रात्रि 9/12 पर, गं. मू.
	28	5	शुक्र	22	21	मघा	23	43	प्रीति	24	54	सिंह	शुक्र अनु. में. 18/00, गण्डमूल
	29	6	शनि	23	00	पू.फा.	24	58	आयु	24	16	कं.31/23	भ. 23/00 से प्रा., सूर्य पू.षा. में 15/44, वक्री मंगल मृग (4) में 28/08
	30	7	रवि	24	24	उ.फा.	26	55	सौभा	24	13	कन्या	भ. 11/42 तक, स. सि. योगः
	31	8	चंद्र	26	25	हस्त	29	27	शोभ	24	37	कन्या	रुक्मणी अष्टमी, अष्टका श्राद्ध

गुरु अस्त 10 दिसंबर

तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
1	7/19	17/20	7/00	17/20	7/07	17/16	6/59	17/56
2	7/19	17/20	7/01	17/20	7/07	17/16	7/00	17/56
3	7/20	17/20	7/02	17/20	7/08	17/16	7/01	17/56
4	7/21	17/20	7/02	17/20	7/09	17/16	7/01	17/56
5	7/22	17/20	7/03	17/20	7/10	17/16	7/02	17/57
6	7/23	17/20	7/04	17/20	7/11	17/16	7/03	17/57
7	7/23	17/20	7/05	17/20	7/11	17/17	7/03	17/57
8	7/24	17/20	7/06	17/20	7/12	17/17	7/04	17/57
9	7/25	17/20	7/07	17/21	7/13	17/17	7/05	17/58
10	7/26	17/21	7/07	17/21	7/13	17/17	7/05	17/58
11	7/27	17/21	7/08	17/21	7/14	17/17	7/06	17/58
12	7/28	17/21	7/09	17/21	7/15	17/17	7/07	17/59
13	7/28	17/21	7/09	17/21	7/16	17/18	7/07	17/59
14	7/29	17/22	7/10	17/22	7/16	17/18	7/08	17/59
15	7/30	17/22	7/11	17/22	7/17	17/18	7/08	17/59
16	7/30	17/22	7/12	17/22	7/17	17/19	7/09	18/00
17	7/31	17/23	7/12	17/23	7/18	17/19	7/09	18/00
18	7/31	17/23	7/13	17/23	7/19	17/20	7/10	18/01
19	7/32	17/23	7/13	17/23	7/19	17/20	7/10	18/01
20	7/32	17/23	7/14	17/24	7/20	17/20	7/11	18/02
21	7/33	17/24	7/14	17/24	7/20	17/21	7/11	18/02
22	7/33	17/24	7/15	17/25	7/21	17/21	7/12	18/03
23	7/34	17/25	7/15	17/26	7/21	17/22	7/12	18/03
—	—	—	—	—	—	—	—	—
24	7/34	17/26	7/15	17/26	7/22	17/23	7/13	18/04
25	7/35	17/26	7/16	17/27	7/22	17/23	7/13	18/04
26	7/35	17/27	7/16	17/27	7/22	17/24	7/14	18/05
27	7/36	17/27	7/17	17/28	7/23	17/24	7/14	18/05
28	7/36	17/28	7/17	17/29	7/23	17/25	7/14	18/06
29	7/36	17/29	7/17	17/29	7/24	17/26	7/15	18/06
30	7/37	17/30	7/18	17/30	7/24	17/26	7/15	18/07
31	7/37	17/31	7/18	17/31	7/25	17/27	7/15	18/07

A धन राशि में 24/36, पुण्यकाल संक्रां. प्रातः सूर्योदय से प्रारम्भ. B प्रारम्भ, शिशिर ऋतु प्रारम्भ, शक पौष प्रारम्भ

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

वि. संवत् 2064, दिसम्बर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2008 ई.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् 2064, जनवरी महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2008 ई.

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.		नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.		योग	समाप्ति काल घं. मिं.		चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
पौष कृष्ण पक्ष	1	9	मंग	28	51	चित्रा	पूरा	दिन	अति	25	19	तु. 18/51	ता. 1 जनवरी, 2008 ईसवी प्रारम्भ	1	7/37	17/29	7/18	17/31	7/25	17/28	7/16	18/08
	2	10	बुध	31	27	चित्रा	8	20	सुक	26	11	तुला	भ. 18/09 से 31/27 तक, पार्श्वनाथ जयंती (जैन), बुध उ.षा. में 16/21	2	7/37	17/30	7/19	17/32	7/25	17/28	7/16	18/09
	3	11	गुरु	पूरा	दिन	स्वा.	11	21	धृति	27	03	तुला		3	7/37	17/31	7/19	17/32	7/25	17/29	7/16	18/10
	4	11	शुक्र	10	01	विशा	14	18	शूल	27	47	वृ. 7/35	सफला एकादशी व्रत, बुध मकर में 17/26	4	7/38	17/32	7/19	17/33	7/25	17/30	7/17	18/10
	5	12	शनि	12	21	अनु	17	02	गंड	28	17	वृश्चिक	शनि प्रदोष व्रत, गुरु मूला (4) में 9/54, गुरु पूर्व से उदय 29/45	5	7/38	17/32	7/19	17/34	7/25	17/31	7/17	18/11
	6	13	रवि	14	21	ज्ये.	19	25	वृद्धि	28	30	ध. 19/25	भ. 14/21 से 27/09 तक, गुरु उदय 5 जनवरी	6	7/38	17/33	7/19	17/35	7/26	17/31	7/17	18/11
	7	14	चंद्र	15	57	मूल	21	25	ध्रुव	28	24	धनु		7	7/38	17/34	7/19	17/36	7/26	17/32	7/17	18/12
	8	30	मंग	17	17	पू.षा.	23	00	व्या.	27	58	म. 29/20	भौमवती पौष अमावस, बुध पश्चिम में उदय 24/15, शुक्र ज्येष्ठा में 17/46	8	7/38	17/36	7/19	17/36	7/26	17/33	7/17	18/12
पौष शुक्ल पक्ष	9	1	बुध	17	52	उ.षा.	24	11	हर्ष	27	14	मकर	पौष शुक्ल पक्षारम्भः, चन्द्रदर्शन, गुरु बाल्यत्व दोष समाप्त 5/45	9	7/39	17/37	7/19	17/37	7/26	17/34	7/17	18/13
	10	2	गुरु	18	12	श्रव	24	59	वज्र	26	11	मकर	बुध श्रवण में 21/21, मुहर्रम, सन् 1429 हिजरी प्रारम्भ	10	7/39	17/38	7/19	17/38	7/26	17/35	7/18	18/14
	11	3	शुक्र	18	09	धनि	25	24	सिद्धि	24	51	कुं. 13/14	भ. 29/56 से, पंचक शुरु 13/14, सूर्यः उ.षा. में 17/38, गौरी तृतीया	11	7/39	17/38	7/20	17/39	7/26	17/36	7/18	18/14
	12	4	शनि	17	43	शत	25	27	व्य.	23	12	कुम्भ	भ. 17/43 तक, स्वा. विवेकानन्द जयंती	12	7/38	17/39	7/20	17/40	7/26	17/36	7/18	18/15
	13	5	रवि	16	55	पू.भा.	25	09	वरी	21	17	मी. 19/15	लोहड़ी पर्व (पंजाब, हिमाचल, हरि., दिल्ली)	13	7/38	17/39	7/19	17/40	7/26	17/37	7/19	18/16
	14	6	चंद्र	15	43	उ.भा.	24	28	परि	19	03	मीन	सूर्य मकर में 24/07, माघ संक्रांति, पुण्यकाल संक्रांति मध्याह्न बाद Z	14	7/38	17/40	7/19	17/41	7/25	17/38	7/19	18/17
	15	7	मंग	14	10	रेव	23	26	शिव	16	32	मे. 23/26	भ. 14/10 से 25/13 तक, पञ्चक समाप्त 23/26	15	7/38	17/42	7/19	17/42	7/25	17/39	7/19	18/17
	16	8	बुध	12	16	अश्वि	22	05	सिद्ध	13	45	मेष	गण्डमूलादि विचार	16	7/37	17/43	7/19	17/43	7/25	17/40	7/19	18/18
	17	9	गुरु	10	03	भर	20	26	साध्य शुभ	10 31	43 28	वृ. 25/59		17	7/37	17/43	7/19	17/44	7/25	17/41	7/19	18/18
	18	10/	शुक्र	7	35	कृति	18	35	शुक्ल	28	06	वृष	भ. 18/16 से 28/57 तक, पुत्रदा एकादशी व्रत स्मार्त.	18	7/37	17/44	7/19	17/45	7/25	17/42	7/19	18/19
	—	11	शुक्र	28	57	—	—	—	—	—	—	—	एकादशी तिथि क्षय ○○ ○○	—	—	—	—	—	—	—	—	—
	19	12	शनि	26	16	रोहि	16	36	ब्रह्म	24	40	मि. 27/37	पुत्रदा एकादशी व्र. वैष्ण, बुध धनि. में 22/20, शुक्र धनु में 15/39, A	19	7/36	17/45	7/18	17/46	7/24	17/43	7/19	18/20
	20	13	रवि	23	38	मृग	14	38	ऐंद्र	21	17	मिथुन	प्रदोष व्रत, सूर्य सायन कुम्भ में 22/14	20	7/36	17/46	7/18	17/47	7/24	17/43	7/19	18/20
	21	14	चंद्र	21	11	आर्द्रा	12	48	वैधृ	18	03	क. 29/36	भ. 21/11 से, सूर्य अभिजित नक्षत्र में 13/17, शक माघ शुरु	21	7/36	17/47	7/18	17/48	7/24	17/44	7/19	18/21
	22	15	मंग	19	05	पुर्न	11	15	विष्क	15	04	कर्क	भ. 8/08 तक, पौष पूर्णिमा, माघ स्नान प्रारम्भ, श्रीसत्यनारायण व्रत	22	7/35	17/48	7/17	17/49	7/24	17/45	7/19	18/22
माघ कृष्ण पक्ष	23	1	बुध	17	27	पुष्य	10	07	प्रीति	12	26	कर्क	माघ कृष्ण प्रतिपदा प्रारम्भ, नेताजी सुभाष चन्द्र जयंती	23	7/35	17/49	7/17	17/50	7/23	17/46	7/19	18/22
	24	2	गुरु	16	24	अश्ले	9	31	आयु	10	15	सिं. 9/31	भ. 28/13 से प्रा., सूर्य श्रवण में 19/58	24	7/35	17/50	7/17	17/50	7/23	17/47	7/19	18/23
	25	3	शुक्र	16	01	मघा	9	34	सौभा	8	35	सिंह	भ. 16/01 तक, श्रीगणेश संकट चौथ व्रत (चं. उ. रात 8/58) B	25	7/35	17/51	7/17	17/51	7/23	17/48	7/19	18/23
	26	4	शनि	16	22	पू.फा.	10	18	शोभ अति	7 30	28 55	कं. 16/36	भारत गणतन्त्र दिवस, शनि मघा (4) में 19/32	26	7/34	17/52	7/16	17/52	7/22	17/49	7/18	18/24
	27	5	रवि	17	26	उ.फा.	11	44	सुक	30	53	कन्या	सर्वार्थ सिद्ध योगः सू. उ. से	27	7/33	17/53	7/16	17/53	7/21	17/50	7/18	18/24
	28	6	चंद्र	19	08	हस्त	13	48	धृति	31	16	तु. 27/02	भ. 19/08 से, बुध वक्री 25/58, शीतला षष्ठी, लाला लाजपतराय जयंती	28	7/32	17/54	7/15	17/53	7/21	17/51	7/18	18/25
	29	7	मंग	21	20	चित्रा	16	22	शूल	पूरा	दिन	तुला	भ. 8/14 तक, स्वा. विवेकानंद जयं. (मतांतरे)	29	7/32	17/55	7/15	17/54	7/20	17/52	7/18	18/25
	30	8	बुध	23	49	स्वा.	19	14	शूल	7	57	तुला	शुक्र पू.षा. में 12/13, शहीदी दि. महात्मा गाँधी,	30	7/31	17/56	7/15	17/55	7/20	17/53	7/18	18/26
	31	9	गुरु	26	20	विशा.	22	12	गंड	8	47	वृ. 15/28	मंगल मार्गी 4/05, वक्री बुध पश्चिम में अस्त 19/05	31	7/31	17/57	7/15	17/56	7/19	17/54	7/18	18/27

Z प्रारम्भ, निरयन उत्तरायण प्रारम्भ A गुरु पू.षा. (1) में 29/20, स. सि. यो. B सूर्य अभिजित् नक्षत्र से निवृत्त 16/55

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् 2064, फरवरी महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2008 ई.

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.		नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.		योग	समाप्ति काल घं. मिं.		चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
माघ कृष्ण पक्ष	1	10	शुक्र	28	41	अनु	25	02	वृद्धि	9	35	वृश्चिक	भ. 15/31 से 28/41 तक, फरवरी मास प्रारम्भ	1	7/30	17/57	7/13	17/56	7/19	17/54	7/17	18/28
	2	11	शनि	30	41	ज्ये.	27	32	ध्रुव	10	15	ध. 27/32	षट्तिला एकादशी व्रत, गण्डमूलादि विचार	2	7/29	17/58	7/13	17/57	7/18	17/55	7/17	18/28
	3	12	रवि	पूरा	दिन	मूल	29	35	व्या.	10	34	धनु	तिल द्वादशी, गण्डमूलादि विचार	3	7/29	17/58	7/12	17/58	7/17	17/56	7/17	18/29
	4	12	चंद्र	8	10	पू.षा.	31	05	हर्ष	10	31	धनु		4	7/28	17/59	7/12	17/59	7/17	17/57	7/16	18/29
	5	13	मंग	9	06	उ.षा.	पूरा	दिन	वज्र	10	03	म. 13/23	भ. 9/06 से 21/17 तक,	5	7/28	18/00	7/11	18/00	7/16	17/58	7/16	18/30
	6	14	बुध	9	27	उ.षा.	8	03	सिद्धि	9	08	मकर	अमावस (मौनी), स्नान पितृतर्पण दानादि (9/27 उप.), सूर्य धनि. A	6	7/27	18/02	7/10	18/00	7/15	17/59	7/16	18/30
	7	30	गुरु	9	15	श्रव	8	28	व्य. वरी	7 30	48 05	कुं. 20/30	पंचक शुरू 20/30, मौनी माघ अमावस, पुण्य स्नानदानादि	7	7/26	18/03	7/10	18/01	7/15	17/59	7/15	18/31
माघ शुक्ल पक्ष	8	1	शुक्र	8	33	धनि	8	24	परि	28	01	कुम्भ	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. १५	8	7/25	18/04	7/09	18/02	7/14	18/00	7/15	18/31
	9	2	शनि	7	26	शत. पू.भा.	7 31	56 08	शिव	25	41	मी. 25/22	बाबा लाल जयन्ती, गौरी तृतीया व्रत, सफर (मुस्लि.) प्रारम्भ	9	7/24	18/05	7/08	18/02	7/13	18/01	7/14	18/32
	—	3	शनि	29	59	—	—	—	—	—	—	—	तृतीया तिथि क्षय oo oo	—	—	—	—	—	—	—	—	—
	10	4	रवि	28	15	उ.भा.	30	05	सिद्ध	23	07	मीन	भ. 17/07 से 28/15 तक, वरद् चतुर्थी, श्रीगणेश तिल-चौथ, शुक्र उ.षा. B	10	7/23	18/06	7/08	18/03	7/12	18/02	7/14	18/32
	11	5	चंद्र	26	20	रेव	28	50	साध्य	20	24	मे. 28/50	पंचक समाप्त 28/50, बसन्त पंचमी, श्री ५, सरस्वती जयन्ती	11	7/23	18/07	7/07	18/04	7/11	18/03	7/13	18/33
	12	6	मंग	24	17	अश्वि	27	27	शुभ	17	33	मेष	शुक्र मकर में 24/42, वक्री बुध पूर्व से उदित 22/37	12	7/22	18/07	7/06	18/05	7/10	18/04	7/13	18/33
	13	7	बुध	22	08	भर	26	00	शुक्ल	14	37	मेष	भ. 22/08 से, सूर्य कुम्भ में 13/05, फाल्गुण संक्रांति, 15 मुहू., C	13	7/21	18/08	7/05	18/06	7/09	18/04	7/12	18/34
	14	8	गुरु	19	59	कृति	24	33	ब्रह्म	11	40	वृ. 7/38	भ. 9/04 तक, भीष्माष्टमी	14	7/20	18/09	7/04	18/07	7/08	18/05	7/12	18/34
	15	9	शुक्र	17	51	रोहि	23	07	ऐंद्र वैधृ	8 29	43 49	वृष		15	7/19	18/09	7/03	18/08	7/08	18/06	7/11	18/35
	16	10	शनि	15	47	मृग	21	47	विष्क	27	00	मि. 10/26	भ. 26/50 से,	16	7/18	18/10	7/03	18/09	7/07	18/07	7/11	18/35
	17	11	रवि	13	53	आर्द्रा	20	37	प्रीति	24	19	मिथुन	भ. 13/53 तक, जया एकादशी व्रत, भीष्म द्वादशी	17	7/17	18/11	7/02	18/10	7/06	18/08	7/10	18/36
	18	12	चंद्र	12	10	पुर्न	19	40	आयु	21	50	क. 13/53	तिल द्वादशी, सोम प्रदोष व्रत + 12/20, वसन्त ऋतु प्रारम्भ	18	7/16	18/12	7/01	18/10	7/05	18/09	7/09	18/36
	19	13	मंग	10	44	पुष्य	19	01	सौभा	19	37	कर्क	सूर्य शत. में 27/34, बुध मार्गी 8/38, सूर्य सायन मीन में + .	19	7/15	18/13	7/00	18/11	7/04	18/09	7/09	18/37
	20	14	बुध	9	39	अश्ले	18	45	शोभ	17	41	सिं. 18/45	भ. 9/39 से 21/20 तक, व्रत सत्यनारायण, शुक्र श्रवण में 27/05 D	20	7/14	18/14	6/59	18/12	7/03	18/10	7/08	18/37
	21	15	गुरु	9	01	मघा	18	55	अति	16	07	सिंह	माघ पूर्णिमा, स्नानादि, गुरु रविदास जयंती, माघ स्नान समाप्त E	21	7/13	18/15	6/58	18/12	7/02	18/11	7/08	18/37
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	22	1	शुक्र	8	52	पू.फा.	19	36	सुक	14	57	कं. 25/51	फाल्गुण कृष्ण पक्षारम्भः E गुरु पू.षा. (3) में 8/20	22	7/12	18/16	6/57	18/13	7/01	18/12	7/07	18/38
	23	2	शनि	9	16	उ.फा.	20	49	धृति	14	12	कन्या	भ. 21/45 से प्रा.	23	7/11	18/17	6/56	18/14	7/00	18/13	7/06	18/38
	24	3	रवि	10	14	हस्त	22	36	शूल	13	55	कन्या	भ. 10/14 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत चं. उ. रात 9/35 (जालं.), स. सि. यो.	24	7/10	18/17	6/55	18/14	6/59	18/14	7/06	18/38
	25	4	चंद्र	11	46	चित्रा	24	52	गंड	14	02	तु. 11/40		25	7/09	18/18	6/54	18/15	6/58	18/15	7/05	18/39
	26	5	मंग	13	46	स्वा.	27	32	वृद्धि	14	30	तुला		26	7/07	18/19	6/53	18/16	6/57	18/15	7/04	18/39
	27	6	बुध	16	06	विशा.	30	26	ध्रुव	15	13	वृ. 23/42	भ. 16/06 से 29/21 तक, राहु धनि. (3), केतु मघा 9 में 11/59	27	7/06	18/20	6/52	18/17	6/55	18/16	7/03	18/39
	28	7	गुरु	18	35	अनु.	पूरा	दिन	व्या.	16	03	वृश्चिक	सर्वार्थ सिद्ध योगः प्रातः 6/26 से प्रा.	28	7/05	18/20	6/52	18/17	6/55	18/16	7/03	18/39
	29	8	शुक्र	20	59	अनु.	9	21	हर्ष	16	51	वृश्चिक	श्रीजानकी अष्टमी, गण्डमूल 9/21 उप., स. सि. यो. 9/21 तक	29	7/04	18/20	6/51	18/17	6/54	18/16	7/02	18/39

A (1) में 23/05, वक्री बुध श्रवण (४) में 24/25 B में 7/52, स. सि. यो. C पुण्यकाल संक्रांति प्रातः सूर्योदय से प्रारम्भ, रथ सप्तमी, आरोग्य सप्तमी, अचला सप्तमी, श्रीमाध्वाचार्य जयंती D शक फाल्गुन प्रारम्भ

वि. संवत् 2064, मार्च महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2008 ई.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
1	7/30	17/57	7/13	17/56	7/19	17/54	7/17	18/28
2	7/29	17/58	7/13	17/57	7/18	17/55	7/17	18/28
3	7/29	17/58	7/12	17/58	7/17	17/56	7/17	18/29
4	7/28	17/59	7/12	17/59	7/17	17/57	7/16	18/29
5	7/28	18/00	7/11	18/00	7/16	17/58	7/16	18/30
6	7/27	18/02	7/10	18/00	7/15	17/59	7/16	18/30
7	7/26	18/03	7/10	18/01	7/15	17/59	7/15	18/31
8	7/25	18/04	7/09	18/02	7/14	18/00	7/15	18/31
9	7/24	18/05	7/08	18/02	7/13	18/01	7/14	18/32
—	—	—	—	—	—	—	—	—
10	7/23	18/06	7/08	18/03	7/12	18/02	7/14	18/32
11	7/23	18/07	7/07	18/04	7/11	18/03	7/13	18/33
12	7/22	18/07	7/06	18/05	7/10	18/04	7/13	18/33
13	7/21	18/08	7/05	18/06	7/09	18/04	7/12	18/34
14	7/20	18/09	7/04	18/07	7/08	18/05	7/12	18/34
15	7/19	18/09	7/03	18/08	7/08	18/06	7/11	18/35
16	7/18	18/10	7/03	18/09	7/07	18/07	7/11	18/35
17	7/17	18/11	7/02	18/10	7/06	18/08	7/10	18/36
18	7/16	18/12	7/01	18/10	7/05	18/09	7/09	18/36
19	7/15	18/13	7/00	18/11	7/04	18/09	7/09	18/37
20	7/14	18/14	6/59	18/12	7/03	18/10	7/08	18/37
21	7/13	18/15	6/58	18/12	7/02	18/11	7/08	18/37
22	7/12	18/16	6/57	18/13	7/01	18/12	7/07	18/38
23	7/11	18/17	6/56	18/14	7/00	18/13	7/06	18/38
24	7/10	18/17	6/55	18/14	6/59	18/14	7/06	18/38
25	7/09	18/18	6/54	18/15	6/58	18/15	7/05	18/39
26	7/07	18/19	6/53	18/16	6/57	18/15	7/04	18/39
27	7/06	18/20	6/52	18/17	6/55	18/16	7/03	18/39
28	7/05	18/20	6/52	18/17	6/55	18/16	7/03	18/39
29	7/04	18/20	6/51	18/17	6/54	18/16	7/02	18/39

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् 2064, मार्च महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2008 ई.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं.	मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.	मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.	मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.	मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.	मिं.
फाल्गुन कृष्ण	1	9	शनि	23	06	ज्ये.	12	05	वज्र	17	27	ध.	12/05	मार्च मास, 2008 ई.	1	7/03	18/22	6/50	18/17	6/53	18/17	7/02	18/40								
	2	10	रवि	24	42	मूला	14	26	सिद्धि	17	42	धनु		भ. 11/54 से 24/42 तक, शुक्र धनिष्ठा में 21/59, स्वा. दयानंद जयंती	2	7/02	18/23	6/49	18/18	6/52	18/17	7/01	18/40								
	3	11	चंद्र	25	41	पू.षा.	16	12	व्य.	17	31	म.	22/33	विजया एकादशी व्रत	3	7/01	18/24	6/48	18/18	6/51	18/18	7/01	18/41								
	4	12	मंग	25	57	उ.षा.	17	20	वरी	16	47	मकर		सूर्य पू.भा. (1) में 9/55, बुध धनिष्ठा में 20/28	4	7/00	18/25	6/47	18/19	6/49	18/19	7/00	18/41								
	5	13	बुध	25	31	श्रव	17	45	परि	15	31	कुं.	29/42	भ. 25/31 से, पंचक शुरू 29/42, प्रदोष व्रत, मे. शिवरात्रि (काश्मीर)	5	6/58	18/26	6/46	18/20	6/48	18/19	7/00	18/42								
	6	14	गुरु	24	25	धनि	17	31	शिव	13	42	कुम्भ		भ. 12/58 तक, **श्रीमहाशिवरात्रि व्रत**, मंगल आर्द्रा में 15/02	6	6/57	18/27	6/45	18/20	6/47	18/20	6/59	18/42								
	7	30	शुक्र	22	44	शत	16	41	सिद्ध	11	24	कुम्भ		फाल्गुन अमावस, स्नान दानादि	7	6/55	18/28	6/44	18/21	6/46	18/21	6/58	18/42								
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	8	1	शनि	20	36	पू.भा.	15	21	मध्य शुभ	8 29	40 38	मी.	9/43	फागुन शुक्ल पक्षारंभ, शुक्र कुम्भ राशि में 7/23	8	6/54	18/29	6/43	18/22	6/45	18/21	6/57	18/43								
	9	2	रवि	18	08	उ.भा.	13	41	शुक्ल	26	22	मीन		**चन्द्रदर्शन (मु. 30)**, श्रीरामकृष्ण परमहंस जयंती, स. सि. यो.	9	6/53	18/30	6/42	18/22	6/44	18/22	6/56	18/43								
	10	3	चंद्र	15	28	रेव	11	47	ब्रह्म	22	59	मे.	11/47	भ. 26/07 से प्रा., पंचक समाप्त 11/47, **बुध कुम्भ में 14/29 A**	10	6/52	18/31	6/41	18/23	6/43	18/23	6/55	18/44								
	11	4	मंग	12	45	अश्वि	9	47	ऐंद्र	19	35	मेष		भ. 12/45 तक, गुरु पू.षा. (4) में 11/4, स. सि. यो. 9/47 तक	11	6/50	18/32	6/40	18/23	6/41	18/23	6/54	18/44								
	12	5	बुध	10	04	भर	7 30	51 03	वैधृ	16	16	वृ.	13/23	याज्ञवल्क्य जयन्ती, स. सि. योगः 7/51 उपरान्त	12	6/49	18/32	6/38	18/24	6/40	18/24	6/53	18/44								
	13	6/	गुरु	7	33	रोहि	28	29	विष्क	13	05	वृष		भ. 29/17 से प्रा., शुक्र शत. 1 में 16/48	13	6/48	18/33	6/37	18/24	6/39	18/25	6/53	18/44								
	—	7	गुरु	29	17	-	—	—	—	—	—	—		सप्तमी तिथि का क्षय oo oo	—	—	—	—	—	—	—	—	—								
	14	8	शुक्र	27	19	मृग	27	14	प्रीति	10	08	मि.	15/49	भ. 16/18 तक, **सूर्य मीन राशि में 9/57, चैत्र संक्रांति, 30 मु. B**	14	6/47	18/33	6/36	18/25	6/38	18/25	6/52	18/44								
	15	9	शनि	25	43	आर्द्रा	26	19	आयु सौभा	7 29	26 01	मिथुन		बुध शत. (1) में 15/19	15	6/45	18/33	6/35	18/25	6/37	18/26	6/51	18/44								
	16	10	रवि	24	28	पुर्न	25	47	शोभ	26	55	क.	19/53		16	6/44	18/34	6/34	18/26	6/36	18/26	6/51	18/44								
	17	11	चंद्र	23	37	पुष्य	25	37	अति	25	07	कर्क		भ. 12/03 से 23/37 तक, सूर्य उ.भा. में 18/18, **आमलकी एकादशी व्रत**	17	6/43	18/34	6/33	18/26	6/34	18/27	6/50	18/44								
	18	12	मंग.	23	09	अश्ले	25	51	सुक	23	37	सिं.	25/51	**गोविन्द द्वादशी**, गण्डमूलादि, स. सि. यो.	18	6/42	18/35	6/31	18/27	6/33	18/27	6/49	18/45								
	19	13	बुध	23	05	मघा	26	27	धृति	22	27	सिंह		गण्डमूलादि विचार, प्रदोष व्रत	19	6/41	18/36	6/30	18/28	6/32	18/28	6/48	18/45								
	20	14	गुरु	23	25	पू.फा.	27	28	शूल	21	35	सिंह		भ. 23/25 से, महेश्वर व्रत, सूर्य सायन मेष में 11/18, महाविषुव C	20	6/40	18/36	6/29	18/28	6/30	18/29	6/47	18/45								
	21	15	शुक्र	24	10	उ.फा.	28	52	गंड	21	02	कं.	9/46	भ. 11/48 तक, **फा. पूर्णिमा, होली पर्व**, होलाष्टक समा., होलिका D	21	6/39	18/37	6/28	18/29	6/29	18/30	6/46	18/45								
चैत्र कृष्ण पक्ष	22	1	शनि	25	20	हस्त	पूरा	दिन	वृद्धि	20	49	कन्या		चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, वसन्तोत्सव, **होला मेला** (आनंदपुर व पांओटा)	22	6/38	18/38	6/27	18/29	6/28	18/30	6/45	18/46								
	23	2	रवि	26	55	हस्त	6	41	ध्रुव	20	55	तु.	19/44	सन्त तुका राम जयन्ती	23	6/36	18/38	6/26	18/30	6/27	18/31	6/45	18/46								
	24	3	चंद्र	28	52	चित्रा	8	53	व्या.	21	18	तुला		भ. 15/54 से 28/52 तक, बुध पू.भा. में 13/20	24	6/35	18/39	6/25	18/30	6/26	18/32	6/44	18/46								
	25	4	मंग	पूरा	दिन	स्वा.	11	26	हर्ष	21	57	तुला		अङ्गारकी गणेश चतुर्थी व्रत, भगवान्नारायण जयंती चं.उ. रात्रि . 2/16	25	6/34	18/40	6/24	18/31	6/24	18/32	6/44	18/47								
	26	4	बुध	7	07	विशा	14	15	वज्र	22	46	वृ.	7/31	मेला नवचण्डी प्रा. (२ दिन)	26	6/33	18/41	6/23	18/31	6/23	18/33	6/43	18/47								
	27	5	गुरु	9	34	अनु	17	12	सिद्धि	23	40	वृश्चिक		श्री रंग पंचमी, मेला नवचण्डी (मेरठ)	27	6/32	18/41	6/22	18/32	6/22	18/34	6/42	18/47								
	28	6	शुक्र	12	02	ज्ये.	20	07	व्य.	24	29	ध.	20/07	भ. 12/02 से 25/10 तक, एकनाथ षष्ठी, गण्डमूल	28	6/30	18/42	6/20	18/32	6/20	18/35	6/41	18/48								
	29	7	शनि	14	18	मूल	22	48	वरी	25	06	धनु		शीतला सप्तमी, गण्डमूलादि	29	6/28	18/42	6/19	18/33	6/19	18/35	6/40	18/48								
	30	8	रवि	16	10	पू.षा.	25	01	परि	25	20	धनु		**बुध मीन राशि में 13/35, शीतला अष्टमी व्रत**	30	6/26	18/43	6/18	18/33	6/18	18/36	6/39	18/48								
	31	9	चंद्र	17	26	उ.षा.	26	38	शिव	25	05	म.	7/29	भ. 29/42 से, सूर्य रेवती में 5/12	31	6/25	18/44	6/17	18/34	6/16	18/36	6/38	18/49								

A 1 रबिउल्लावल (मुस्लिम), शनि मघा (3) में 16/02 B पुण्यकाल सं. प्रातः ऊषाकाल से, होलाष्टक प्रारम्भ, अन्नपूर्णा अष्टमी C दिवस, उत्तर गोलार्ध शुरु,
D दहनं सायंकाले, चैतन्य महाप्रभु जयंती, शक चैत्र प्रारम्भ, शाकः सन् 1930 प्रा.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् 2064, अप्रैल महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2008 ई.

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.		नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.		योग	समाप्ति काल घं. मि.		चंद्र-राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिनटों में (भा. स्टै. टा.)	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मि.	जम्मू सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	मुम्बई सूर्योदय घं. मि.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मि.
चैत्र कृष्ण पक्ष	1	10	मंग	17	58	श्रव	27	29	सिद्ध	24	14	मकर	भ. 17/58 तक, अप्रैल प्रा. शुक्र मीन में 14/00, बुध उ.भा. में 11/11	1	6/24	18/45	6/15	18/35	6/15	18/37	6/36	18/49
	2	11	बुध	17	42	धनि	27	34	साध्य	22	46	कुं. 15/37	पंचक शुरू 15/37, पापमोचनी एकादशी व्रत, प्लूटो वक्री 14/46	2	6/23	18/45	6/14	18/36	6/14	18/37	6/35	18/49
	3	12	गुरु	16	38	शत	26	52	शुभ	20	39	कुम्भ	प्रदोष व्रत, वारूणी योग 16/38 से 26/52 तक, बुध पूर्व में अस्त 11/29	3	6/21	18/46	6/13	18/36	6/13	18/38	6/34	18/49
	4	13	शुक्र	14	49	पू.भा.	25	28	शुक्ल	17	57	मी. 19/52	भ. 14/49 से 25/36 तक, शुक्र उ.भा. में 6/46	4	6/19	18/47	6/12	18/37	6/12	18/39	6/34	18/49
	5	14	शनि	12	22	उ.भा.	23	31	ब्रह्म	14	46	मीन	गुरू उ.षा. (1) में 26/15, अमावस्या पितृ आदि तर्पण, A	5	6/18	18/48	6/11	18/38	6/11	18/40	6/33	18/49
	6	30	रवि	9	25	रेव	21	08	ऐंद्र	11	11	मे. 21/08	चैत्र अमावस, (प्रातः 9/25 तक), संवत् 2065 प्रारम्भ, चैत्र नवरात्र B	6	6/17	18/49	6/10	18/38	6/09	18/40	6/32	18/49

A मेला पिहोवातीर्थ (हरि.) B प्रारम्भ, घटस्थापन (अभिजित मुहूर्त्त प्रशस्त), पंचक समाप्त 21/08

—विवाह में दोष निवृत्ति के लिए पुनर्विवाह का विचार—

आचार्य श्रीधर के अनुसार-स्त्री और पुरूष का विवाह हो जाने के बाद मिलान, विवाह मुहूर्त्त आदि के दोष बारे में ज्ञान के बाद मिलान, विवाह मुहूर्त्त आदि के दोष सम्बन्धी ज्ञान हो जाने पर, उन दोनों (वर और वधू) को फिर से विवाह कर लेना चाहिए। लग्न तथा चन्द्र लग्न के दोष में, ग्रह तारा आदि के मिलान की स्थिति में और अन्य कालों में, दुष्टयोगादि की सम्भावना में और विवाह में दम्पत्ति के अशौच आदि की स्थिति में उनके दोष की निवृत्ति अर्थात् दोष की शान्ति के लिए वर-वधू में परस्पर फिर से विवाह (पुनर्विवाह) कराने का परामर्श दिया गया है—**पुनर्विवाहं वक्ष्यामि दम्पत्योः शुभवृद्धिदम्॥ लग्नेन्दुलग्न योर्दोषे ग्रहतारादि सम्भवे। अन्येष्व-शुभकालेषु दुष्टयोगादि सम्भवे। विवाहेचापि-दम्पत्यो राशौचादि समुद्भवे॥ तस्य दोषस्य शान्त्यर्थं पुनर्वैवाह्यमिष्यते॥ (निर्णय सिन्धुः)**

—त्रिखल जन्म फल एवं शान्ति—

तीन कन्याओं के पश्चात् लड़का उत्पन्न होना तथा तीन लड़कों के पश्चात् कन्या की उत्पत्ति त्रिखल दोषकारक मानी जाती है। इसके कारण लड़का पिता, नानके पक्ष को हानि तथा कन्या माता के लिए कष्टप्रद होते हैं। त्रिखल शान्ति करवा लेने से गृह में सुख शान्ति रहती है। शान्ति हेतु सूतकादि के उपरान्त किसी शुभ मुहूर्त्त में पत्नी सहित शुद्ध आसन पर पूर्वाभिमुख होकर संकल्पपूर्वक श्रीगणपति-पूजन व नवग्रहादि पूजनोपरान्त कलश स्थापन करते हुए उसके ऊपर ताम्र पात्र रखकर उसमें श्री विष्णु भगवान् की स्वर्णमयी मूर्त्ति (उसके अभाव में ताम्र की) पूजा करके रखें। फिर विधिपूर्वक त्रिखलशान्ति कर्म किसी सुयोग्य ब्राह्मण द्वारा करवा लेनी चाहिए। यदि किसी कारणवश आप पूजा न कर पाए हों तो फिर बच्चे के जन्मदिन के आसपास किसी मुहूर्त्त में त्रिखल पूजा करवा लेनी कल्याणकारी होगी। दान में तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (सोना, चाँदी, ताँबा) तथा साथ में गुड़, एक लाल परना व नारियल दक्षिणा सहित संकल्पपूर्वक बच्चे व उसकी माता का हाथ लगवाकर मन्दिर में या ब्राह्मण को दान करें।

शिव मन्त्रावली

(शिव उपासना एवं मन्त्र-तन्त्र साधना के लिए एक प्रामाणिक पुस्तक)

प्रस्तुत पुस्तक में प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों का अनुशीलन करके दुर्लभ मन्त्रों एवं यन्त्रों का संग्रह तथा उन्हें सिद्ध करने की विधियाँ दी गई हैं। मन्त्रानुष्ठान प्रयोग एवं उनकी सिद्धि हेतु अनेक गूढ़ रहस्य बतलाए गये हैं, जिनके सम्बन्ध में सामान्य लोग अनभिज्ञ होने से मन्त्र-जाप व अनुष्ठान के बावजूद अभिलषित लाभ नहीं प्राप्त कर पाते। प्रस्तुत पुस्तक में अनेक दुर्लभ सिद्ध मन्त्रों, स्तोत्रों विशेषकर शिव मन्त्रों एवं स्तोत्रों का विशेष संग्रह किया गया है। पुस्तक में वर्णित मन्त्रों की सहायता से सभी प्रकार के साधक वांछित लाभ उठा सकते हैं। भगवान् शिव, विष्णु, कृष्ण, श्री दुर्गा, काली, श्री सरस्वती, महालक्ष्मी, श्रीगणेश, सूर्य आदि देवताओं तथा शनि आदि ग्रहों के वैदिक मन्त्रों का संग्रह शास्त्रोक्त प्रयोग विधि सहित किया गया है। धर्म परायण लोगों के लिए अनमोल पुस्तक। शीघ्र प्रकाशिताधीन।

पता—जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर—144008, फोन—0181—2457252

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) वि. संवत् 2064 (सन् 2007-08 ई.)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

चन्द्रमा का नक्षत्र–चरणों में प्रवेश काल घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. व.) विक्रम संवत् 2064 (सन् 2007–08 ई.)

आगे लिखे चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश का समय घण्टे मिनटों में भा. स्टैं. व. अनुसार दिया जा रहा है। रात्रि बारह (12) बजे के बाद के समय को आगामी तारीख के रूप में दर्शाया गया है। आगामी पृष्ठों पर दिया गया चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश का प्रारम्भ काल है, न कि समाप्तिकाल। इस सारिणी के प्रयोग से किसी जातक के जन्म समय (घण्टा-मिनटों में) के आधार पर शीघ्र ही जातक का जन्म नक्षत्र एवं उसका चरण आदि सुगमता से जान सकते हैं। प्राचीन परिपाटी के अनुसार घड़ी-पलों या भयात्-भभोग की गणित प्रक्रिया से नक्षत्र-चरण निकालने का झंझट नहीं होगा।

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
मार्च 2007	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
1/2 मार्च	अश्ले	13	18	19	46	2	15	8	43
2/3 मार्च	मघा	15	11	21	45	4	19	10	53
3/4 मार्च	पू.फा.	17	27	0	06	6	45	13	24
4/5 मार्च	उ.फा.	20	03	2	44	9	28	16	12
5/6 मार्च	हस्त	22	55	5	40	12	26	19	12
7 मार्च	चित्रा	1	57	8	43	15	30	22	17
8/9 मार्च	स्वाती	5	03	11	48	18	32	1	17
9/10 मार्च	विशाखा	8	02	14	42	21	25	4	07
10/11 मार्च	अनु.	10	44	7	18	23	52	6	26
11/12 मार्च	ज्येष्ठा	13	00	19	25	1	50	8	15
12/13 मार्च	मूल	14	40	20	54	3	09	9	24
13/14 मार्च	पू.षा.	15	38	21	41	3	43	9	46
14/15 मार्च	उ.षा.	15	49	21	45	3	34	9	25
15/16 मार्च	श्रवण	15	14	20	54	2	35	8	16
16/17 मार्च	धनिष्ठा	13	56	19	28	1	03	6	32
17/18 मार्च	शत.	12	02	17	26	22	50	4	14
18/19 मार्च	पू.भा.	9	38	14	57	20	16	1	36
19/20 मार्च	उ.भा.	6	54	12	11	17	27	22	44
20 मार्च	रेवती	4	01	9	18	14	34	19	51
21 मार्च	अश्वि.	1	08	6	27	11	47	17	07
21/22 मार्च	भरणी	22	27	3	52	9	17	14	42
22/23 मार्च	कृतिका	20	06	1	35	7	08	12	43
23/24 मार्च	रोहिणी	18	15	23	56	5	37	11	19
24/25 मार्च	मृगशिर	17	00	22	51	4	37	10	31
25/26 मार्च	आर्द्रा	16	26	22	28	4	31	10	33
26/27 मार्च	पुर्न	16	36	22	49	5	00	11	10
27/28 मार्च	पुष्य	17	27	23	49	6	12	12	34
28/29 मार्च	अश्ले	18	57	1	28	7	59	14	30
30/31 मार्च	मघा	21	00	3	37	10	15	16	52
31/1 अप्रैल	पू.फा.	23	29	6	11	12	53	19	34

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
अप्रै. 2007	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
1 अप्रैल	उ.फा.	2	16	9	00	15	46	22	30
2/3 अप्रै.	हस्त	5	15	12	01	18	47	1	33
3/4 अप्रै.	चित्रा	8	19	15	05	21	51	4	36
4/5 अप्रै.	स्वाती	11	22	18	06	0	50	7	35
5/6 अप्रै.	विशाखा	14	19	21	00	3	41	10	23
6/7 अप्रै.	अनु.	17	03	23	39	6	15	12	52
7/8 अप्रै.	ज्येष्ठा	19	29	1	59	8	29	14	59
8/9 अप्रै.	मूल	21	29	3	51	10	14	16	36
9/10 अप्रै.	पू.षा.	22	58	5	11	11	24	17	37
10/11 अप्रै.	उ.षा.	23	50	5	56	11	58	17	57
11/12 अप्रै.	श्रवण	23	59	5	51	11	42	17	34
12/13 अप्रै.	धनिष्ठा	23	26	5	07	10	54	16	34
13/14 अप्रै.	शत	22	12	3	44	9	16	14	48
14/15 अप्रै.	पूभा	20	20	1	44	7	10	12	35
15/16 अप्रै.	उभा	17	56	23	14	4	33	9	51
16/17 अप्रै.	रेवती	15	10	20	25	1	41	6	56
17/18 अप्रै.	अश्वि	12	11	17	26	22	40	3	55
18/19 अप्रै.	भरणी	9	10	14	27	19	44	1	01
19 अप्रै.	कृति	6	18	11	38	17	01	22	24
20 अप्रै.	रोहि	3	46	9	16	14	46	20	16
21 अप्रै.	मृग	1	46	7	26	13	00	18	43
22 अप्रै.	आर्द्रा	0	25	6	16	12	08	17	59
22/23 अप्रै.	पुर्न	23	51	5	55	11	56	17	58
24 अप्रै.	पुष्य	0	07	6	23	12	39	18	55
25 अप्रै.	अश्ले	1	11	7	38	14	06	20	33
26 अप्रै.	मघा	3	00	9	36	16	13	22	49
27/28 अप्रै.	पू.फा.	5	25	12	07	18	50	1	32
28/29 अप्रै.	उ.फा.	8	14	14	59	21	46	4	32
29/30 अप्रै.	हस्त	11	18	18	05	0	51	7	38
30/1 मई	चित्रा	14	25	21	11	3	57	10	42

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
मई 2007	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
1/2 मई	स्वाती	17	28	0	11	6	53	13	36
2/3 मई	विशाखा	20	19	2	58	9	38	16	18
3/4 मई	अनु.	22	56	5	31	12	05	18	40
5 मई	ज्येष्ठा	1	15	7	44	14	14	20	43
6 मई	मूल	3	13	9	37	16	00	22	24
7 मई	पू.षा.	4	48	11	05	17	22	23	39
8/9 मई	उ.षा.	5	56	12	08	18	16	0	24
9/10 मई	श्रवण	6	34	12	35	18	36	0	37
10/11 मई	धनि.	6	38	12	30	18	27	0	17
11 मई	शत.	6	07	11	50	17	34	23	17
12 मई	पू.भा.	5	01	10	36	16	11	21	49
13 मई	उ.भा.	3	21	8	49	14	16	19	44
14 मई	रेवती	1	12	6	34	11	56	17	18
14/15 मई	अश्वि.	22	40	3	59	9	17	14	36
15/16 मई	भरणी	19	55	1	13	6	30	11	48
16/17 मई	कृतिका	17	06	22	25	3	45	9	05
17/18 मई	रोहिणी	14	25	19	49	1	14	6	38
18/19 मई	मृगशिर	12	03	17	35	23	03	4	39
19/20 मई	आर्द्रा	10	11	15	53	21	34	3	17
20/21 मई	पुर्न	8	59	14	53	20	44	2	35
21/22 मई	पुष्य	8	34	14	40	20	47	2	53
22/23 मई	अश्ले	8	59	15	18	21	37	3	56
23/24 मई	मघा	10	15	16	45	23	15	5	45
24/25 मई	पू.फा.	12	15	18	54	1	33	8	12
25/26 मई	उ.फा.	14	51	21	34	4	20	11	04
26/27 मई	हस्त	17	48	0	35	7	21	14	08
27/28 मई	चित्रा	20	55	3	41	10	27	17	12
28/29 मई	स्वाती	23	58	6	40	13	22	20	05
30 मई	विशाखा	2	47	9	24	16	02	22	41
31/1 जून	अनु.	5	17	11	49	18	21	0	52

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्रमा का नक्षत्र–चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
जून 2007	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
1/2 जून	ज्ये.	7	24	13	50	20	16	2	42
2/3 जून	मूला	9	08	15	28	21	49	4	09
3/4 जून	पूषा	10	29	16	43	22	58	5	12
4/5 जून	उषा	11	26	17	37	23	43	5	52
5/6 जून	श्रवण	12	01	18	04	0	07	6	10
6/7 जून	धनि.	12	13	18	10	0	10	6	04
7/8 जून	शत	12	01	17	51	23	42	5	32
8/9 जून	पूभा	11	23	17	07	22	52	4	38
9/10 जून	उभा	10	20	15	58	21	36	3	14
10/11 जून	रेवती	8	52	14	25	19	57	1	30
11 जून	अश्वि	7	03	12	31	18	00	23	28
1. जून	भरणी	4	56	10	22	15	47	21	13
13 जून	कृतिका	2	39	8	05	13	30	18	55
14 जून	रोहिणी	0	21	5	48	11	16	16	43
14/15 जून	मृगशिर	22	11	3	43	9	12	14	45
15/16 जून	आर्द्रा	20	19	1	58	7	37	13	16
16/17 जून	पुर्न	18	55	0	43	6	29	12	15
17/18 जून	पुष्य	18	08	0	07	6	06	12	05
18/19 जून	अश्ले	18	04	0	15	6	26	12	37
19/20 जून	मघा	18	48	1	11	7	33	13	56
20/21 जून	पू.फा.	20	19	2	52	9	24	15	57
21/22 जून	उ.फा.	22	30	5	08	11	50	18	31
23 जून	हस्त	1	12	7	57	14	41	21	26
24/25 जून	चित्रा	4	11	10	56	17	43	0	27
25/26 जून	स्वाती	7	13	13	56	20	38	3	21
26/27 जून	विशाखा	10	04	16	41	23	21	5	59
27/28 जून	अनु.	12	34	19	05	1	35	8	06
28/29 जून	ज्ये.	14	37	21	00	3	24	9	47
29/30 जून	मूला	16	11	22	27	4	42	10	58
30/1 जुला.	पूषा	17	14	23	23	5	33	11	42

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
जुला. 2007	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
1/2 जुला.	उषा	17	51	23	56	5	58	12	00
2/3 जुला.	श्रवण	18	03	0	01	5	59	11	57
3/4 जुला.	धनिष्ठा	17	55	23	48	5	44	11	36
4/5 जुला.	शत.	17	29	23	18	5	08	10	57
5/6 जुला.	पूभा	16	46	22	31	4	17	10	04
6/7 जुला.	उभा	15	48	21	30	3	13	8	55
7/8 जुला.	रेवती	14	37	20	16	1	55	7	34
8/9 जुला.	अश्वि	13	13	18	50	0	26	6	03
9/10 जुला.	भरणी	11	40	17	15	22	50	4	25
10/11जुला.	कृति	10	00	15	34	21	09	2	43
11/12जुला.	रोहि.	8	18	13	53	19	29	1	04
12 जुला.	मृग	6	40	12	18	17	55	23	35
13 जुला.	आर्द्रा	5	14	10	57	16	41	22	24
14 जुला.	पुर्न	4	07	9	57	15	44	21	33
15 जुला.	पुष्य	3	26	9	24	15	23	21	21
16 जुला.	अश्ले.	3	19	9	27	15	34	21	42
17 जुला.	मघा	3	50	10	08	16	26	22	44
18/19जुला.	पूफा	5	02	11	30	17	57	0	25
19/20जुला.	उफा	6	53	13	26	20	04	2	42
20/21जुला.	हस्त	9	18	16	00	22	42	5	24
21/22जुला.	चित्रा	12	06	18	51	1	35	8	20
22/23जुला.	स्वाती	15	05	21	49	4	32	11	16
23/24जुला.	विशाखा	18	00	0	40	7	19	14	01
24/25जुला.	अनु.	20	39	3	12	9	44	16	17
25/26जुला.	ज्ये.	22	50	5	14	11	39	18	03
27 जुला.	मूला	0	27	6	42	12	58	19	13
28 जुला.	पूषा	1	28	7	34	13	41	19	47
29 जुला.	उषा	1	54	7	55	13	53	19	50
30 जुला.	श्रवण	1	47	7	38	13	30	19	21
31 जुला.	धनिष्ठा	1	12	6	58	12	46	18	31

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
अग. 2007	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
1 अगस्त	शत	0	16	5	58	11	40	17	21
1/2 अग.	पूभा	23	03	4	42	10	21	16	01
2/3 अग.	उभा	21	39	3	16	8	54	14	31
3/4 अग.	रेवती	20	09	1	46	7	22	12	59
4/5 अग.	अश्वि	18	36	0	13	5	50	11	27
5/6 अग.	भरणी	17	04	22	42	4	21	9	59
6/7 अग.	कृतिका	15	37	21	16	2	57	8	37
7/8 अग.	रोहिणी	14	17	20	00	1	42	7	25
8/9 अग.	मृगशिर	13	08	18	54	0	38	6	25
9/10 अग.	आर्द्रा	12	12	18	03	23	53	5	44
10/11 अग.	पुर्न	11	35	17	31	23	28	5	22
11/12 अग.	पुष्य	11	20	17	23	23	25	5	28
12/13 अग.	अश्ले	11	31	17	41	23	52	6	02
13/14 अग.	मघा	12	12	18	30	0	49	7	07
14/15 अग.	पूफा	13	25	19	51	2	18	8	44
15/16 अग.	उफा	15	10	21	41	4	16	10	51
16/17 अग.	हस्त	17	25	0	05	6	45	13	25
17/18 अग.	चित्रा	20	05	2	49	9	31	16	16
18/19 अग.	स्वाती	23	00	5	45	12	30	19	15
20 अग.	विशाखा	2	00	8	42	15	25	22	09
21/22 अग.	अनु.	4	50	11	27	18	05	0	42
22/23 अग.	ज्येष्ठा	7	20	13	49	20	19	2	48
23/24 अग.	मूला	9	17	15	37	21	56	4	16
24/25 अग.	पूषा	10	36	16	45	22	55	5	04
25/26 अग.	उषा	11	13	17	15	23	11	5	10
26/27 अग.	श्रवण	11	08	16	57	22	46	4	35
27/28 अग.	धनिष्ठा	10	24	16	06	21	50	3	29
28/29 अग.	शत	9	09	14	43	20	18	1	52
29 अग.	पूभा	7	27	12	57	18	28	23	59
30 अग.	उभा	5	29	10	57	16	25	21	53
31 अग.	रेवती	3	21	8	48	14	16	19	43

चन्द्रमा का नक्षत्र–चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्रमा का नक्षत्र–चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
सितं. 2007	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
1 सितंबर	अश्वि	1	11	6	40	12	09	17	38
1/2 सितं.	भरणी	23	07	4	39	10	12	15	44
2/3 सितं.	कृतिका	21	16	2	51	8	28	14	06
3/4 सितं.	रोहिणी	19	43	1	25	7	07	12	49
4/5 सितं.	मृगशिर	18	31	0	19	6	05	11	55
5/6 सितं.	आर्द्रा	17	45	23	40	5	35	11	30
6/7 सितं.	पुर्न	17	25	23	27	5	27	11	28
7/8 सितं.	पुष्य	17	33	23	42	5	50	11	59
8/9 सितं.	अश्ले.	18	08	0	24	6	39	12	55
9/10 सितं.	मघा	19	11	1	33	7	56	14	18
10/11 सितं.	पू.फा.	20	41	3	09	9	38	16	06
11/12 सितं.	उफा	22	35	5	08	11	44	18	18
13 सितं.	हस्त	0	53	7	32	14	12	20	51
14 सितं.	चित्रा	3	31	10	14	16	56	23	40
15/16 सितं.	स्वाती	6	24	13	09	19	55	2	40
16/17 सितं.	विशाखा	9	25	16	10	22	54	5	40
17/18 सितं.	अनुराधा	12	24	19	06	1	48	8	30
18/19 सितं.	ज्येष्ठा	15	12	21	48	4	24	11	00
19/20 सितं.	मूला	17	36	0	03	6	31	12	58
20/21 सितं.	पूषा	19	26	1	43	8	01	14	18
21/22 सितं.	उ.षा.	20	35	2	46	8	49	14	53
22/23 सितं.	श्रवण	20	59	2	53	8	48	14	42
23/24 सितं.	धनिष्ठा	20	36	2	21	8	08	13	47
24/25 सितं.	शतभिषा	19	30	1	04	6	37	12	11
25/26 सितं.	पूभा	17	45	23	11	4	38	10	07
26/27 सितं.	उभा	15	31	20	52	2	14	7	35
27/28 सितं.	रेवती	12	56	18	15	23	33	4	52
28/29 सितं.	अश्वि	10	11	15	30	20	50	2	09
29 सितं.	भरणी	7	28	12	48	18	09	23	29
30 सितं.	कृतिका	4	50	10	14	15	43	21	09

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
अक्तू. 2007	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
1 अक्तूबर	रोहिणी	2	35	8	08	13	41	19	14
2 अक्तू.	मृगशिर	0	47	6	26	12	05	17	50
2/3 अक्तू.	आर्द्रा	23	33	5	24	11	15	17	06
3/4 अक्तू.	पुर्न	22	57	4	58	10	56	16	56
4/5 अक्तू.	पुष्य	23	00	5	10	11	21	17	31
5/6 अक्तू.	अश्ले	23	41	6	00	12	19	18	38
7 अक्तू.	मघा	0	57	7	23	13	50	20	16
8 अक्तू.	पूफा	2	43	9	15	15	48	22	20
9/10 अक्तू.	उफा	4	53	11	29	18	08	0	45
10/11 अक्तू.	हस्त	7	22	14	03	20	44	3	25
11/12 अक्तू.	चित्रा	10	06	16	49	23	32	6	16
12/13 अक्तू.	स्वाती	13	00	19	45	2	30	9	15
13/14 अक्तू.	विशाखा	16	00	22	45	5	31	12	16
14/15 अक्तू.	अनु.	19	01	1	44	8	28	15	11
15/16 अक्तू.	ज्येष्ठा	21	55	4	35	11	16	17	56
17 अक्तू.	मूला	0	36	7	10	13	45	20	19
18 अक्तू.	पूषा	2	54	9	20	15	47	22	13
19 अक्तू.	उषा	4	40	11	00	17	15	23	29
20/21 अक्तू.	श्रवण	5	45	11	50	17	56	0	01
21 अक्तू.	धनिष्ठा	6	06	11	59	17	58	23	48
22 अक्तू.	शतभिषा	5	39	11	20	17	02	22	43
23 अक्तू.	पूभा	4	25	9	56	15	30	21	03
24 अक्तू.	उभा	2	30	7	53	13	16	18	39
25 अक्तू.	रेवती	0	02	5	19	10	35	15	52
25/26 अक्तू.	अश्वि.	21	09	2	22	7	36	12	49
26/27 अक्तू.	भरणी	18	03	23	16	4	30	9	43
27/28 अक्तू.	कृतिका	14	56	20	10	1	10	6	15
28/29 अक्तू.	रोहिणी	11	19	16	50	22	22	3	53
29/30 अक्तू.	मृगशिर	9	25	14	54	20	20	1	51
30/31 अक्तू.	आर्द्रा	7	23	13	03	18	43	0	23
31 अक्तू.	पुर्न	6	03	11	58	17	50	23	32

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
नवं. 2007	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
1 नवम्बर	पुष्य	5	42	11	42	17	42	23	42
2/3 नवं.	आश्ले	5	42	11	57	18	12	0	27
3/4 नवं.	मघा	6	42	13	07	19	33	1	58
4/5 नवं.	पूफा	8	23	14	56	21	30	4	03
5/6 नवं.	उफा	10	37	17	15	23	56	6	35
6/7 नवं.	हस्त	13	15	19	58	2	41	9	24
7/8 नवं.	चित्रा	16	07	22	51	5	35	12	20
8/9 नवं.	स्वाती	19	05	1	50	8	36	15	21
9/10 नवं.	विशाखा	22	06	4	50	11	34	18	19
11 नवं.	अनु.	1	02	7	45	14	27	21	10
12 नवं.	ज्येष्ठा	3	53	10	33	17	12	23	52
13/14 नवं.	मूला	6	32	13	08	19	44	2	20
14/15 नवं.	पूषा	8	56	15	27	21	57	4	28
15/16 नवं.	उषा	10	59	17	25	23	48	6	09
16/17 नवं.	श्रवण	12	33	18	33	0	33	6	33
17/18 नवं.	धनि.	13	33	19	38	1	49	7	50
18/19 नवं.	शतभिषा	13	53	19	47	1	41	7	35
19/20 नवं.	पूभा	13	29	19	12	0	56	6	43
20/21 नवं.	उभा	12	22	17	55	23	27	5	00
21/22 नवं.	रेवती	10	33	15	57	21	22	2	43
22/23 नवं.	अश्वि.	8	11	13	29	18	47	0	05
23 नवं.	भरणी	5	23	10	37	15	51	21	05
24 नवं.	कृतिका	2	19	7	32	12	46	17	59
24/25 नवं.	रोहिणी	23	13	4	29	9	44	15	00
25/26 नवं.	मृगशिर	20	16	1	37	6	54	12	18
26/27 नवं.	आर्द्रा	17	39	23	08	4	37	10	06
27/28 नवं.	पुर्न	15	35	21	14	2	52	8	29
28/29 नवं.	पुष्य	14	13	20	05	1	56	7	48
29/30 नवं.	अश्ले.	13	40	19	44	1	49	7	53
30/1 दिसं.	मघा	13	58	20	15	2	33	8	50

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्रमा का नक्षत्र–चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
दिसं. 2007	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
1/2 दिसं.	पू.फा.	15	07	21	35	4	03	10	31
2/3 दिसं.	उ.फा.	16	59	23	33	6	13	12	50
3/4 दिसं.	हस्त	19	27	2	09	8	52	15	34
4/5 दिसं.	चित्रा	22	17	5	02	11	47	18	33
6 दिसं.	स्वाती	1	08	8	04	14	49	21	35
7/8 दिसं.	विशाखा	4	21	11	05	17	48	0	33
8/9 दिसं.	अनु.	7	16	13	57	20	37	3	18
9/10 दिसं.	ज्येष्ठा	9	59	16	36	23	14	5	51
10/11 दिसं.	मूला	12	28	19	01	1	34	8	07
11/12 दिसं.	पू.षा.	14	40	21	08	3	37	10	05
12/13 दिसं.	उ.षा.	16	33	22	58	5	19	11	42
13/14 दिसं.	श्रवण	18	05	0	22	6	40	12	57
14/15 दिसं.	धनिष्ठा	19	14	1	24	7	38	13	45
15/16 दिसं.	शत.	19	55	1	57	8	00	14	02
16/17 दिसं.	पूभा	20	05	2	01	7	56	13	50
17/18 दिसं.	उभा	19	41	1	26	7	11	12	56
18/19 दिसं.	रेवती	18	41	0	18	5	55	11	32
19/20 दिसं.	अश्वि.	17	09	22	38	4	08	9	37
20/21 दिसं.	भरणी	15	07	20	31	1	55	7	19
21/22 दिसं.	कृतिका	12	43	18	04	23	24	4	44
22/23 दिसं.	रोहिणी	10	05	15	25	20	44	2	04
23 दिसं.	मृगशिर	7	24	12	45	18	05	23	28
24 दिसं.	आर्द्रा	4	50	10	16	15	43	21	09
25 दिसं.	पुर्न	2	35	8	08	13	42	19	12
26 दिसं.	पुष्य	0	48	6	23	11	59	17	34
26/27 दिसं.	अश्ले.	23	40	5	34	11	29	17	23
27/28 दिसं.	मघा	23	17	5	23	11	30	17	36
28/29 दिसं.	पू.फा.	23	43	6	02	12	20	18	39
30 दिसं.	उ.फा.	0	58	7	23	13	55	20	26
31 दिसं.	हस्त	2	55	9	33	16	11	22	49

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
जन. 2008	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
1/2 जन.	चित्रा	5	27	12	10	18	51	1	37
2/3 जन.	स्वाती	8	20	15	05	21	50	4	36
3/4 जन.	विशाखा	11	21	18	05	0	50	7	35
4/5 जन.	अनु.	14	18	20	59	3	40	10	21
5/6 जन.	ज्येष्ठा	17	02	23	38	6	13	12	49
6/7 जन.	मूला	19	25	1	55	8	25	14	55
7/8 जन.	पूषा	21	25	3	49	10	12	16	36
8/9 जन.	उषा	23	00	5	20	11	35	17	53
10 जन.	श्रवण	0	11	6	23	12	35	18	47
11 जन.	धनिष्ठा	0	59	7	05	13	14	19	18
12 जन.	शतभिषा	1	24	7	25	13	25	19	26
13 जन.	पूभा	1	27	7	22	13	18	19	15
14 जन.	उभा	1	09	6	59	12	48	18	38
15 जन.	रेवती	0	28	6	12	11	57	17	42
15/16 जन.	अश्वि.	23	26	5	06	10	45	16	25
16/17 जन.	भरणी	22	05	3	40	9	16	14	51
17/18 जन.	कृतिका	20	26	1	59	7	31	13	03
18/19 जन.	रोहिणी	18	35	0	05	5	36	11	06
19/20 जन.	मृगशिर	16	36	22	06	3	37	9	07
20/21 जन.	आर्द्रा	14	38	20	10	1	43	7	15
21/22 जन.	पुर्न	12	48	18	25	0	01	5	36
22/23 जन.	पुष्य	11	15	16	58	22	41	4	24
23/24 जन.	अश्ले.	10	07	15	58	21	49	3	40
24/25 जन.	मघा	9	31	15	32	21	32	3	33
25/26 जन.	पूफा	9	34	15	45	21	56	4	07
26/27 जन.	उफा	10	18	16	36	23	01	5	22
27/28 जन.	हस्त	11	44	18	15	0	46	7	17
28/29 जन.	चित्रा	13	48	20	26	3	02	9	43
29/30 जन.	स्वाती	16	22	23	05	5	48	12	31
30/31 जन.	विशाखा	19	14	1	58	8	43	15	28
31–1 फर.	अनु.	22	12	4	39	11	07	17	34

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
फर. 2008	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
2 फरवरी	ज्येष्ठा	1	02	7	39	14	17	20	54
3 फर.	मूला	3	32	10	03	16	33	23	04
4/5 फर.	पू.षा.	5	35	11	57	18	20	0	42
5/6 फर.	उषा	7	05	13	23	19	34	1	48
6/7 फर.	श्रवण	8	03	14	09	20	16	2	22
7/8 फर.	धनि.	8	28	14	27	20	30	2	25
8/9 फर.	शतभिषा	8	24	14	17	20	10	2	03
9/10 फर.	पूभा	7	56	13	44	19	32	1	22
10/11 फर.	उभा	7	08	12	52	18	37	0	21
11 फर.	रेवती	6	05	11	45	17	27	23	08
12 फर.	अश्विनी	4	50	9	29	15	09	20	48
13 फर.	भरणी	3	27	9	05	14	44	20	22
14 फर.	कृतिका	2	00	7	38	13	17	18	55
15 फर.	रोहिणी	0	33	6	11	11	50	17	28
15/16 फर.	मृगशिर	23	07	4	47	10	26	16	07
16/17 फर.	आर्द्रा	21	47	3	29	9	12	14	54
17/18 फर.	पुर्न	20	37	2	23	8	08	13	53
18/19 फर.	पुष्य	19	40	1	30	7	21	13	11
19/20 फर.	अश्ले.	19	01	0	57	6	53	12	49
20/21 फर.	मघा	18	45	0	47	6	50	12	52
21/22 फर.	पू.फा.	18	55	1	05	7	16	13	26
22/23 फर.	उ.फा.	19	36	1	51	8	13	14	31
23/24 फर.	हस्त	20	49	3	16	9	42	16	09
24/25 फर.	चित्रा	22	36	5	08	11	40	18	17
26 फर.	स्वाती	0	52	7	32	14	12	20	52
27 फर.	विशाखा	3	32	10	15	16	59	23	42
28/29 फर.	अनु.	6	26	13	10	19	53	2	37
29/1 मार्च	ज्येष्ठा	9	21	16	02	22	43	5	24
1/2 मार्च	मूला	12	05	18	40	1	16	7	51
2/3 मार्च	पू.षा.	14	26	20	52	3	19	9	45
3/4 मार्च	उ.षा.	16	12	22	29	4	46	11	03
4/5 मार्च	श्रवण	17	20	23	26	5	33	11	39
5/6 मार्च	धनिष्ठा	17	45	23	41	5	38	11	34

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

पृष्ठ 19 का शेष भाग

ज्वालामुखी योग

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्रमा का नक्षत्र–चरणों में प्रवेश काल

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
मार्च 2008	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
6/7 मार्च	शतभिषा	17	31	23	18	5	06	10	53
7/8 मार्च	पूभा	16	41	22	21	4	01	9	41
8/9 मार्च	उभा	15	21	20	56	2	31	8	06
9/10 मार्च	रेवती	13	41	19	12	0	44	6	15
10/11 मार्च	अश्वि.	11	47	17	17	22	47	4	17
11/12 मार्च	भरणी	9	47	15	18	20	49	2	20
12/13 मार्च	कृतिका	7	51	13	24	18	57	0	30
13 मार्च	रोहिणी	6	03	11	39	17	16	22	52
14 मार्च	मृगशिर	4	29	10	10	15	52	21	33
15 मार्च	आर्द्रा	3	14	9	00	14	47	20	33
16 मार्च	पुर्न	2	19	8	11	14	03	19	55
17 मार्च	पुष्य	1	47	7	44	13	42	19	39
18 मार्च	अश्लेषा	1	37	7	40	13	44	19	47
19 मार्च	मघा	1	51	8	00	14	09	20	18
20 मार्च	पूफा	2	27	8	42	14	58	21	13
21 मार्च	उफा	3	28	9	49	16	10	22	31
22/23 मार्च	हस्त	4	52	11	19	17	47	0	14
23/24 मार्च	चित्रा	6	41	13	14	19	47	2	20
24/25 मार्च	स्वाती	8	53	15	31	22	10	4	48
25/26 मार्च	विशाखा	11	26	18	08	0	51	7	33
26/27 मार्च	अनु.	14	15	20	59	3	44	10	28
27/28 मार्च	ज्येष्ठा	17	12	23	56	6	39	13	23
28/29 मार्च	मूला	20	07	2	47	9	28	16	08
29/30 मार्च	पूषा	22	48	5	06	11	25	17	43
31 मार्च	उषा	1	01	7	25	13	50	20	14
1 अप्रैल	श्रवण	2	38	8	51	15	03	21	16
2 अप्रैल	धनिष्ठा	3	29	9	30	15	32	21	33
3 अप्रैल	शतभिषा	3	34	9	23	15	13	21	02
4 अप्रैल	पूभा	2	52	8	31	14	10	19	49
5 अप्रैल	उभा	1	28	6	59	12	29	18	00
5/6 अप्रैल	रेवती	23	31	4	55	10	20	15	44

वास्तु दोष निवारण हेतु चमत्कारी उपाये

यदि आपका भवन/निवास स्थान वास्तु सिद्धान्त के विपरीत हो तो कुछ निम्न दैनिक दिनचर्या में परिवर्तन कर आप शुभ फल प्राप्त तथा अनिष्ट प्रभाव से बच सकते हैं।

1. जब भी पानी पीएं अपना मुख उत्तर-पूर्व की ओर रखें।

2. जब भी भोजन ग्रहण करें थाली दक्षिण-पूर्व की ओर रखें और पूर्वाभिमुख होकर भोजन करें।

3. जब भी सोएं दक्षिण-पश्चिम कोण में दक्षिण की ओर सिरहाना करके सोने से नींद गहरी और अच्छी आती है।

4. जब भी पूजा करें तो मुख उत्तर-पूर्व या उत्तर-पश्चिम की ओर करके बैठें।

5. सम्यक उन्नति हेतु लक्ष्मी, गणेश, कुबेर, स्वास्तिक, ॐ, मीन, एवं आदि मांगलिक चिह्न मुख्यद्वार के ऊपर स्थापित करें।

6. यदि घर में कोई पूजा-स्थल नहीं है तो उस उत्तर-पूर्व (ईशान) कोण में रखें।

7. दक्षिण-पूर्व, उत्तर-पश्चिम या दक्षिण-पश्चिम कोण में कुआं या ट्यूबवैल है तो उसे भरवाकर उत्तर-पूर्व कोण में ट्यूबवैल या कुआँ खुदवाएँ। अन्य दिशा में कुएँ को भरवा न सकें तो उसे प्रयोग में लाना बन्द कर दें अथवा उत्तर-पूर्व में एक और ट्यूबवैल या कुआँ लगवाएँ जिससे वास्तु का सन्तुलन हो सके।

8. दक्षिण-पश्चिम दिशा में अधिक दरवाजे और खिड़कियां हों तो उन्हें बन्द करके उनकी संख्या कम कर दें।

9. रसोईघर गलत स्थान पर हो तो अग्निकोण में एक बल्ब लगा दें और सुबह-शाम उसे अनिवार्य रूप में जलायें।

10. बीम के दोष को शान्त करने के लिए बीम को सीलिंग टॉयल्स से ढंक देवें। बीम के दोनों ओर बाँस की बाँसुरी लगायें।

11. दुकान की शुभता बढ़ाने के लिए प्रवेश द्वार के दोनों ओर गणपति की मूर्ति या स्टिकर लगायें। एक गणपति की दृष्टि दुकान पर पड़ेगी, दूसरे गणपति की बाहर की ओर।

12. द्वार दोष और वेध दोष को दूर करने के लिए शंख, सीप, समुद्र झाग, कौड़ी, ताम्बे या सोने की तुश लाल कपड़े में या मोली में दरवाजे पर लटकायें।

13. यदि दुकान में चोरी होती हो या अग्नि लगती हो तो भौम यन्त्र की स्थापना करें। यह यन्त्र पूर्वोत्तर कोण या पूर्व दिशा में, फर्श के नीचे दो फीट गहरा गड्ढा खोदकर स्थापित किया जाता है।

14. घर के सभी प्रकार के वास्तु दोष दूर करने के लिए मुख्य द्वार पर एक ओर केले का वृक्ष, दूसरी ओर तुलसी का पौधा गमले में लगायें।

15. यदि प्लाट खरीदे हुए बहुत समय हो गया हो और मकान बनने का योग न आ रहा हो तो उस प्लाट में अनार का पौधा पुष्य नक्षत्र में लगायें।

16. घर के दरवाजे पर घुड़नाल (लोहे की) लगायें। यह अपने आप गिरि होनी चाहिए।

इन नियमों को व्यवहार में लाकर सुख-समृद्धि को अपनी अंगशयनी बनाएं।

पृष्ठ 19 का शेष भाग

ज्वालामुखी योग

ज्वालामुखी योग अत्यन्त अनिष्टकारी योगों में से एक माना गया है। इसमें आरम्भ किए कार्य में बार-बार विघ्न पड़ते है। इसके सम्बन्ध में निम्नलिखित लोकोक्ति का प्रचलन है—

जन्मे तो जीवे नहीं, बसे तो उजड़े गांव,
नारी पहने चूड़ियाँ, पुरुष विहीनी होय।
बोवे तो काटे नहीं, कूएँ उपजे न नीर॥

यद्यपि यह लोकोक्ति अतिशयोक्तपूर्ण हो सकती है परन्तु इसके अशुभ प्रभाव के सम्बन्ध का उल्लेख कई ग्रन्थों में मिलता है। **ज्वालामुखी योगानुसार यदि बालक इस योग में पैदा हो तो उसे** अरिष्ट योग होता है। यदि इस योग में विवाह किया जाए तो वैधव्य का भय होता है। यदि बीजवपन किया जाए तो फसल अच्छी नहीं होती तथा जल आदि हेतु कुआँ खोदा जावे तो जलाशय (कूआँ) शीघ्र सूख जाए- यदि कोई रोग ग्रस्त हो जल्दी ठीक न हो—इत्यादि अशुभ फल घटित होते हैं।

ज्वालामुखी योग–2007-08 ई.

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2007-08	घं. मिं.	2007-08	घं. मिं.
24 फर.	02 13	24 फर.	11 03
25 फर.	00 46	25 फर.	10 29
22 मार्च	18 17	22 मार्च	20 06
10 दिसं.	12 28	10 दिसं.	25 03
13 फर.	26 00	14 फर.	19 59
14 फर.	24 33	15 फर.	17 51
11 मार्च	12 45	12 मार्च	07 51

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रातः साढ़े पाँच (5/30 घं. मिं.) से अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करना

यदि आपको प्रातः साढ़े पाँच बजे के ग्रह स्पष्ट के अतिरिक्त किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों, तो नीचे लिखी तालिका (Table) का प्रयोग करके अभीष्ट समय के ग्रह स्पष्ट प्राप्त कर सकते हैं—मान लीजिए, आपको **5 अप्रैल, 2007 ई.** की दोपहर एक (1) बजे का सूर्य स्पष्ट करना है। आगामी पृष्ठों में **5 अप्रैल** के सामने सूर्य स्पष्ट 11.20.52.25 राशि-अंशादि लिखे गए हैं, जो कि प्रातः साढ़े पाँच बजे के हैं। हमें दोपहर 1 अर्थात् 13 बजे के सूर्य स्पष्ट चाहिए। तेरह (13) से साढ़े पाँच का अन्तर 7 घंटे 30 मिंट हुआ। अब 7 घण्टे 30 मिंट की गति को 5 अप्रैल में जोड़ दें, तो हमें दोपहर 1 बजे का स्पष्ट प्राप्त हो जाएगा। (6) अप्रै. से 5 अप्रै. का सूर्य स्पष्ट घटा देने से हमें सूर्य की दैनिक गति (59'.04") प्राप्त हुई। इस दै. गति द्वारा नीचे लिखी तालिका में 7 घंटे की गति (17.12) कला तथा 30 मिनट की गति (1.14) कला प्राप्त हुई। जमा करने पर साढ़े सात घण्टे की गति (18'.26) हुई, इसको 5 अप्रैल प्रातः सूर्य स्पष्ट में जमा कर देने पर हमें 5 अप्रैल की दुपै. एक बजे का सूर्य स्पष्ट (11.21.10.51) प्राप्त हो जाएगा॥ ग्रहस्पष्ट करने की अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी पुस्तक ज्योतिषी तत्त्व (गणित खण्ड) का अध्ययन करें॥

ग्रहों की दैनिक गति के अनुसार प्रति घण्टा मिनटादि की तालिका

दै. गति (24 घं.)	गति (30 मिंट)	गति 1 घण्टे	गति 2 घण्टे	गति (3 घं.)	गति (4 घं.)	गति (5 घं.)	गति (6 घं.)	गति (7 घं.)	गति (8 घं.)	गति (9 घं.)
कला	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.
3'	0.04	0.07	0.15	0.22	0.30	0.37	0.45	0.52	1.00	1.07
5'	0.06	0.12	0.25	0.37	0.50	1.02	1.11	1.27	1.40	1.52
7'	0.09	0.17	0.35	0.52	1.10	1.27	1.45	2.02	2.20	2.37
9'	0.11	0.22	0.45	1.07	1.30	1.52	2.15	2.37	3.00	3.22
11'	0.14	0.27	0.55	1.22	1.50	2.17	2.45	3.12	3.40	4.07
13'	0.16	0.32	1.05	1.37	2.10	2.42	3.15	3.47	4.20	4.52
15'	0.19	0.37	1.15	1.52	2.30	3.07	3.45	4.22	5.00	5.37
17'	0.21	0.42	1.25	2.07	2.50	3.32	4.15	4.57	5.40	6.22
19'	0.24	0.47	1.35	2.22	3.10	3.57	4.45	5.32	6.20	7.07
21'	0.26	0.52	1.45	2.37	3.30	4.22	5.15	6.07	7.00	7.52
23'	0.29	0.57	1.55	2.52	3.50	4.47	5.45	6.42	7.40	8.37
25'	0.31	1.02	2.05	3.07	4.10	5.12	6.15	7.17	8.20	9.22
27'	0.34	1.07	2.15	3.22	4.30	5.37	6.45	7.52	9.00	10.07
29'	0.36	1.12	2.25	3.37	4.50	6.02	7.15	8.27	9.40	10.52
31'	0.39	1.17	2.35	3.52	5.10	6.27	7.45	9.02	10.20	11.37
33'	0.41	1.22	2.45	4.07	5.30	6.52	8.15	9.37	11.00	12.22
35'	0.44	1.27	2.55	4.22	5.50	7.17	8.45	10.12	11.40	13.07
37'	0.46	1.32	3.05	4.37	6.10	7.42	9.15	10.47	12.20	13.52
39'	0.49	1.37	3.15	4.52	6.30	8.07	9.45	11.22	13.00	14.37
41'	0.51	1.42	3.25	5.07	6.50	8.32	10.15	11.57	13.40	15.22
43'	0.54	1.47	3.35	5.22	7.10	8.57	10.45	12.32	14.20	16.07
45'	0.56	1.52	3.45	5.37	7.30	9.22	11.15	13.07	15.00	16.52
47'	0.59	1.57	3.55	5.52	7.50	9.47	11.45	13.42	15.40	17.37
49'	1.01	2.02	4.05	6.07	8.10	10.12	12.15	14.17	16.20	18.22
51'	1.04	2.07	4.15	6.22	8.30	10.37	12.45	14.52	17.00	19.07
53'	1.06	2.12	4.25	6.37	8.50	11.02	13.15	15.27	17.40	19.52
55'	1.09	2.17	4.35	6.52	9.10	11.27	13.45	16.02	18.20	20.37
57'	1.11	2.22	4.45	7.07	9.30	11.52	14.15	16.37	19.00	21.22
58'	1.12	2.25	4.50	7.15	9.40	12.05	14.30	16.55	19.20	21.45
59'	1.14	2.27	4.55	7.27	9.50	12.17	14.45	17.12	19.40	22.07
60'	1.15	2.30	5.00	7.30	10.00	12.30	15.00	17.30	20.00	22.30

दै.गति (24 घं.)	गति (30 मिं.)	गति (1 घं.)	गति (2 घं.)	गति (3 घं.)	गति (4 घं.)	गति (5 घं.)	गति (6 घं.)	गति (7 घं.)	गति 8 घण्टे	गति 9 घण्टे
कला	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.
61'	1.16	2.32	5.05	7.37	10.10	12.42	15.15	17.47	20.20	22.52
63'	1.19	2.37	5.15	7.52	10.30	13.07	15.45	18.22	21.00	23.37
65'	1.21	2.42	5.25	8.07	10.50	13.32	16.15	18.57	21.40	24.22
67'	1.24	2.47	5.35	8.22	11.10	13.57	16.45	19.25	22.20	25.07
69'	1.26	2.52	5.45	8.37	11.30	14.22	17.15	20.07	23.00	25.52
71'	1.29	2.57	5.55	8.52	11.50	14.57	17.45	20.42	23.40	26.37
73'	1.31	3.02	6.05	9.07	12.10	15.12	18.15	21.17	24.20	27.22
75'	1.34	3.07	6.15	9.22	12.30	15.37	18.45	21.52	25.00	28.07
77'	1.36	3.12	6.25	9.37	12.50	16.02	19.15	22.27	25.40	28.52
79'	1.39	3.17	6.35	9.52	13.10	16.27	19.45	23.02	26.20	29.37
81'	1.41	3.22	6.45	10.07	13.30	16.52	20.15	23.37	27.00	30.22
83'	1.44	3.27	6.55	10.22	13.50	17.17	20.45	24.12	27.40	31.07
85'	1.46	3.32	7.05	10.37	14.10	17.42	21.15	24.47	28.20	31.52
87'	1.49	3.37	7.15	10.52	14.30	18.07	21.45	25.22	29.00	32.37
89'	1.51	3.42	7.25	11.07	14.50	18.32	22.15	25.57	29.40	33.22
90'	1.52	3.45	7.30	11.15	15.00	18.45	22.30	26.15	30.00	33.45
92'	1.55	3.50	7.40	11.30	15.20	19.10	23.00	26.50	30.40	34.30
94'	1.57	3.55	7.50	11.45	15.40	19.35	23.30	27.25	31.20	35.15
96'	2.00	4.00	8.00	12.00	16.00	20.00	24.00	28.00	32.00	36.00
98'	2.02	4.05	8.10	12.15	16.20	20.25	24.30	28.35	32.40	36.45
99'	2.04	4.07	8.15	12.22	16.30	20.37	24.45	28.52	33.00	37.07
100'	2.05	4.10	8.20	12.30	16.40	20.50	25.00	29.10	33.20	37.30
102'	2.07	4.15	8.30	12.45	17.00	21.15	25.30	29.45	34.00	38.15
104'	2.10	4.20	8.40	13.00	17.20	21.30	26.00	30.20	34.40	39.00
106'	2.12	4.25	8.50	13.15	17.40	22.05	26.30	30.55	35.20	39.45
108'	2.15	4.30	9.00	13.30	18.00	22.30	27.00	31.30	36.00	40.30
110'	2.17	4.35	9.10	13.45	18.20	22.55	27.30	32.05	36.40	41.15
112'	2.20	4.40	9.20	14.00	18.40	23.20	28.00	32.40	37.20	42.00
114'	2.22	4.45	9.30	14.15	19.00	23.45	28.30	33.15	38.00	42.45
116'	2.25	4.50	9.40	14.30	19.20	24.10	29.00	33.50	38.40	43.30
118'	2.27	4.55	9.50	14.45	19.40	24.35	29.30	34.25	39.20	44.15

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिंट बजे (भा.स्टैं.टा.) वि. संवत् 2064 (सन् 2007–08 ई.)

नोट–अपने इष्ट समय के अनुसार ग्रह स्पष्ट करने के लिए गत पृष्ठ पर दी गई सारिणी का अवलोकन करें। (1 मार्च से 7 अप्रै. तक) 1 मार्च, 2007 ई. को अयनांश 23°/57′/31″

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रांति	चं. क्रांति	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	प्र. मि.
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
मार्च	10 16 03 33	03 12 36 14	09 08 15 56	10 04 21 56	07 23 51 51	11 15 26 47	03 26 14 50	10 22 34 58	−7 49	+21 54	16 06	5 31	मार्च
2	10 17 03 45	03 25 02 23	09 09 01 26	10 03 36 38	07 23 58 03	11 16 40 17	03 26 10 25	10 22 31 48	−7 26	+17 26	17 04	6 05	2
3	10 18 03 56	04 07 17 42	09 09 46 57	10 02 57 51	07 24 04 07	11 17 53 45	03 26 06 04	10 22 28 37	−7 03	+12 18	18 02	6 35	3
4	10 19 04 05	04 19 23 47	09 10 32 29	10 02 25 54	07 24 10 01	11 19 07 09	03 26 01 47	10 22 25 26	−6 40	+6 47	18 57	7 01	4
5	10 20 04 12	05 01 22 20	09 11 18 03	10 02 00 55	07 24 15 46	11 20 20 29	03 25 57 31	10 22 22 15	−6 17	+1 05	19 51	7 26	5
6	10 21 04 17	05 13 15 10	09 12 03 39	10 01 42 54	07 24 21 21	11 21 33 46	03 25 53 20	10 22 19 05	−5 54	−4 37	20 45	7 50	6
7	10 22 04 20	05 25 04 41	09 12 49 15	10 01 31 44	07 24 26 47	11 22 47 00	03 25 49 12	10 22 15 54	−5 31	−10 07	21 39	8 16	7
8	10 23 04 22	06 06 53 30	09 13 34 54	10 01 27 13	07 24 32 03	11 24 00 10	03 25 45 08	10 22 12 43	−5 07	−15 16	22 35	8 43	8
9	10 24 04 22	06 18 44 47	09 14 20 34	10 01 29 08	07 24 37 10	11 25 13 16	03 25 41 07	10 22 09 33	−4 44	−19 51	23 33	9 15	9
10	10 25 04 20	07 00 42 10	09 15 06 15	10 01 37 08	07 24 42 07	11 26 26 19	03 25 37 11	10 22 06 22	−4 21	−23 43	——	9 50	10
11	10 26 04 17	07 12 49 43	09 15 51 57	10 01 50 55	07 24 46 53	11 27 39 18	03 25 33 18	10 22 03 11	−3 57	−26 35	0 32	10 30	11
12	10 27 04 12	07 25 11 40	09 16 37 41	10 02 10 11	07 24 51 30	11 28 52 14	03 25 29 30	10 22 00 00	−3 33	−28 16	1 31	11 19	12
13	10 28 04 06	08 07 52 20	09 17 23 26	10 02 34 36	07 24 55 57	00 00 05 06	03 25 25 46	10 21 56 50	−3 10	−28 31	2 28	12 15	13
14	10 29 03 58	08 20 55 32	09 18 09 12	10 03 03 51	07 25 00 14	00 01 17 55	03 25 22 07	10 21 53 39	−2 46	−27 13	3 21	13 18	14
15	11 00 03 48	09 04 24 14	09 18 55 00	10 03 37 37	07 25 04 20	00 02 30 39	03 25 18 33	10 21 50 28	−2 22	−24 20	4 08	14 26	15
16	11 01 03 37	09 18 19 48	09 19 40 48	10 04 15 36	07 25 08 15	00 03 43 20	03 25 15 03	10 21 47 17	−1 59	−19 57	4 50	15 35	16
17	11 02 03 23	10 02 41 33	09 20 26 38	10 04 57 35	07 25 12 01	00 04 55 57	03 25 11 37	10 21 44 07	−1 35	−14 18	5 27	16 46	17
18	11 03 03 08	10 17 26 04	09 21 12 28	10 05 43 15	07 25 15 36	00 06 08 30	03 25 08 16	10 21 40 56	−1 11	−7 42	6 01	17 56	18
19	11 04 02 53	11 02 27 12	09 21 58 20	10 06 32 24	07 25 19 00	00 07 20 59	03 25 05 01	10 21 37 45	−0 48	−0 34	6 35	19 06	19
20	11 05 02 35	11 17 36 37	09 22 44 12	10 07 24 48	07 25 22 15	00 08 33 24	03 25 01 55	10 21 34 35	−0 24	+6 40	7 07	20 19	20
21	11 06 02 11	00 02 44 44	09 23 30 04	10 08 20 16	07 25 25 15	00 09 45 44	03 24 58 46	10 21 31 24	−0 00	+13 20	07 44	21 30	21
22	11 07 01 48	00 17 42 29	09 24 15 57	10 09 18 36	07 25 28 08	00 10 58 00	03 24 55 46	10 21 28 13	+0 24	+19 28	08 23	22 42	22
23	11 08 01 22	01 02 22 11	09 25 01 52	10 10 19 40	07 25 30 49	00 12 10 12	03 24 52 51	10 21 25 02	+0 47	+24 09	09 08	23 53	23
24	11 09 00 55	01 16 38 49	09 25 47 47	10 11 23 18	07 25 33 19	00 13 22 20	03 24 50 03	10 21 21 52	+1 11	+27 14	10 00	——	24
25	11 10 00 25	02 00 29 59	09 26 33 42	10 12 29 21	07 25 35 39	00 14 34 22	03 24 47 19	10 21 18 41	+1 35	+28 32	10 56	00 58	25
26	11 10 59 53	02 13 55 53	09 27 19 39	10 13 37 45	07 25 37 47	00 15 46 19	03 24 44 41	10 21 15 30	+1 58	+28 05	11 58	01 57	26
27	11 11 59 18	02 26 58 24	09 28 05 35	10 14 48 19	07 25 39 45	00 16 58 12	03 24 42 09	10 21 12 19	+2 22	+26 05	13 00	02 48	27
28	11 12 58 41	03 09 40 35	09 28 51 33	10 16 01 00	07 25 41 31	00 18 09 59	03 24 39 43	10 21 09 09	+2 45	+22 48	14 01	03 30	28
29	11 13 58 01	03 22 05 58	09 29 37 30	10 17 15 42	07 25 43 07	00 19 21 41	03 24 37 22	10 21 05 58	+3 09	+18 33	15 01	04 06	29
30	11 14 57 19	04 04 18 10	10 00 23 29	10 18 32 20	07 25 44 31	00 20 33 19	03 24 35 08	10 21 02 47	+3 32	+13 36	15 58	04 37	30
31	11 15 56 35	04 16 20 34	10 01 09 28	10 19 50 52	07 25 45 45	00 21 44 50	03 24 32 59	10 20 59 36	+3 55	+8 12	16 54	05 04	31
अप्रै.	11 16 55 49	04 28 16 09	10 01 55 27	10 21 11 12	07 25 46 47	00 22 56 16	03 24 30 56	10 20 56 26	+4 19	+2 34	17 45	05 29	अप्रै.
2	11 17 55 01	05 10 07 32	10 02 41 27	10 22 33 18	07 25 47 38	00 24 07 37	03 24 28 59	10 20 53 15	+4 42	−3 06	18 39	05 55	2
3	11 18 54 11	05 21 56 57	10 03 27 27	10 23 57 07	07 25 48 18	00 25 18 53	03 24 27 09	10 20 50 04	+5 05	−8 40	19 33	06 20	3
4	11 19 53 19	06 03 46 28	10 04 13 28	10 25 22 37	07 25 48 46	00 26 30 02	03 24 25 24	10 20 46 53	+5 28	−13 55	20 29	06 46	4
5	11 20 52 25	06 15 38 00	10 04 59 29	10 26 49 46	07 25 49 04	00 27 41 06	03 24 23 45	10 20 43 43	+5 51	−18 40	21 26	07 17	5
6	11 21 51 29	06 27 33 33	10 05 45 30	10 28 18 32	07 25 49 10	00 28 52 04	03 24 22 13	10 20 40 32	+6 13	−22 43	22 24	07 50	6
7	11 22 50 31	07 09 35 32	10 06 31 32	10 29 48 53	07 25 49 05	01 00 02 57	03 24 20 47	10 20 37 21	+6 36	−25 51	23 23	08 29	7

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट

(8 अप्रै. से 18 मई तक) 1 अप्रैल, 2007 ई. को अयनांश 23° /57′/34″

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रांति	चं. क्रांति	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	तारीख
अप्रै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
8	11 23 49 31	07 21 46 33	10 07 17 34	11 01 20 50	07 25 48 48	01 01 13 43	03 24 19 27	10 20 34 10	+6 59	−27 51	— —	09 14	8
9	11 24 48 30	08 04 09 39	10 08 03 37	11 02 54 20	07 25 48 21	01 02 24 24	03 24 18 13	10 20 31 00	+7 21	−28 30	00 20	10 07	9
10	11 25 47 26	08 16 48 16	10 08 49 39	11 04 29 24	07 25 47 42	01 03 34 59	03 24 17 06	10 20 27 49	+7 43	−27 42	01 13	11 05	10
11	11 26 46 21	08 29 45 52	10 09 35 42	11 06 06 02	07 25 46 52	01 04 45 28	03 24 16 05	10 20 24 38	+8 06	−25 24	02 01	12 10	11
12	11 27 45 14	09 13 05 51	10 10 21 45	11 07 44 12	07 25 45 50	01 05 55 50	03 24 15 10	10 20 21 27	+8 28	−21 39	02 44	13 15	12
13	11 28 44 06	09 26 50 43	10 11 07 48	11 09 23 55	07 25 44 37	01 07 06 06	03 24 14 22	10 20 18 17	+8 50	−16 38	03 22	14 23	13
14	11 29 42 56	10 11 01 36	10 11 53 51	11 11 05 11	07 25 43 13	01 08 16 17	03 24 13 40	10 20 15 06	+9 11	−10 35	03 56	15 30	14
15	00 00 41 44	10 25 37 24	10 12 39 53	11 12 48 01	07 25 41 38	01 09 26 21	03 24 13 05	10 20 11 55	+9 33	−3 48	04 29	16 39	15
16	00 01 40 30	11 10 34 13	10 13 25 56	11 14 32 23	07 25 39 52	01 10 36 18	03 24 12 36	10 20 08 44	+9 55	+3 20	05 02	17 50	16
17	00 02 39 15	11 25 45 03	10 14 11 58	11 16 18 21	07 25 37 54	01 11 46 09	03 24 12 14	10 20 05 34	+10 16	+10 24	05 36	19 03	17
18	00 03 37 57	00 11 00 31	10 14 58 59	11 18 05 53	07 25 35 46	01 12 55 53	03 24 11 58	10 20 02 23	+10 37	+16 52	06 13	20 17	18
19	00 04 36 38	00 26 10 03	10 15 44 01	11 19 55 01	07 25 33 26	01 14 05 30	03 24 11 49	10 19 59 12	+10 58	+22 16	06 55	21 31	19
20	00 05 35 16	01 11 03 43	10 16 30 01	11 21 45 45	07 25 30 56	01 15 14 59	03 24 11 46	10 19 56 01	+11 19	+26 07	07 44	22 43	20
21	00 06 33 52	01 25 33 53	10 17 16 01	11 23 38 04	07 25 28 15	01 16 24 22	03 24 11 49	10 19 52 51	+11 39	+28 09	08 41	23 48	21
22	00 07 32 26	02 09 36 02	10 18 02 01	11 25 32 01	07 25 25 23	01 17 33 36	03 24 12 00	10 19 49 40	+12 00	+28 17	09 42	— —	22
23	00 08 30 58	02 23 09 00	10 18 47 59	11 27 27 32	07 25 22 21	01 18 42 43	03 24 12 16	10 19 46 29	+12 20	+26 41	10 47	00 44	23
24	00 09 29 28	03 06 14 15	10 19 33 57	11 29 24 38	07 25 19 08	01 19 51 42	03 24 12 40	10 19 43 18	+12 40	+23 40	11 51	01 30	24
25	00 10 27 56	03 18 55 16	10 20 19 54	00 01 23 19	07 25 15 44	01 21 00 33	03 24 13 09	10 19 40 08	+13 00	+19 35	12 52	02 08	25
26	00 11 26 22	04 01 16 31	10 21 05 51	00 03 23 32	07 25 12 11	01 22 09 15	03 24 13 46	10 19 36 57	+13 19	+14 46	13 50	02 42	26
27	00 12 24 45	04 13 22 46	10 21 51 46	00 05 25 16	07 25 08 27	01 23 17 49	03 24 14 28	10 19 33 46	+13 39	+9 28	14 46	03 09	27
28	00 13 23 06	04 25 18 50	10 22 37 41	00 07 28 25	07 25 04 34	01 24 26 13	03 24 15 17	10 19 30 35	+13 58	+3 54	15 41	03 34	28
29	00 14 21 26	05 07 09 01	10 23 23 35	00 09 32 56	07 25 00 30	01 25 34 29	03 24 16 12	10 19 27 25	+14 17	−1 43	16 34	04 00	29
30	00 15 19 43	05 18 57 01	10 24 09 28	00 11 38 42	07 24 56 17	01 26 42 36	03 24 17 14	10 19 24 14	+14 35	−7 18	17 28	04 24	30
मई	00 16 17 58	06 00 45 54	10 24 55 20	00 13 45 37	07 24 51 54	01 27 50 33	03 24 18 22	10 19 21 03	+14 54	−12 37	18 23	04 50	मई
2	00 17 16 12	06 12 38 01	10 25 41 12	00 15 53 33	07 24 47 22	01 28 58 21	03 24 19 37	10 19 17 52	+15 12	−17 29	19 19	05 19	2
3	00 18 14 24	06 24 35 12	10 26 27 02	00 18 02 17	07 24 42 40	02 00 05 59	03 24 20 57	10 19 14 42	+15 30	−21 43	20 18	05 52	3
4	00 19 12 34	07 06 38 55	10 27 12 51	00 20 11 40	07 24 37 50	02 01 13 27	03 24 22 24	10 19 11 31	+15 48	−25 05	21 17	06 29	4
5	00 20 10 43	07 18 50 26	10 27 58 40	00 22 21 27	07 24 32 50	02 02 20 46	03 24 23 57	10 19 08 20	+16 05	−27 21	22 15	07 12	5
6	00 21 08 49	08 01 11 03	10 28 44 27	00 24 31 24	07 24 27 42	02 03 27 53	03 24 25 37	10 19 05 09	+16 22	−28 19	23 09	08 03	6
7	00 22 06 54	08 13 42 21	10 29 30 13	00 26 41 15	07 24 22 25	02 04 34 51	03 24 27 22	10 19 01 59	+16 39	−27 51	23 57	09 00	7
8	00 23 04 58	08 26 26 19	11 00 15 58	00 28 50 42	07 24 16 59	02 05 41 38	03 24 29 14	10 18 58 48	+16 56	25 57	— —	10 01	8
9	00 24 03 01	09 09 25 17	11 01 01 42	01 00 59 28	07 24 11 25	02 06 48 14	03 24 31 12	10 18 55 37	+17 12	22 36	00 42	11 06	9
10	00 25 01 03	09 22 41 56	11 01 47 24	01 03 07 17	07 24 05 44	02 07 54 39	03 24 33 15	10 18 52 26	+17 28	−18 03	01 20	12 10	10
11	00 25 59 02	10 06 18 41	11 02 33 05	01 05 13 49	07 23 59 54	02 09 00 52	03 24 35 25	10 18 49 16	+17 44	−12 29	01 53	13 16	11
12	00 26 57 01	10 20 17 22	11 03 18 45	01 07 18 50	07 23 53 56	02 10 06 55	03 24 37 42	10 18 46 05	+17 59	−6 10	02 27	14 22	12
13	00 27 54 58	11 04 38 19	11 04 04 23	01 09 22 02	07 23 47 52	02 11 12 45	03 24 40 03	10 18 42 54	+18 14	+0 38	02 58	15 28	13
14	00 28 52 54	11 19 19 39	11 04 49 59	01 11 23 12	07 23 41 40	02 12 18 24	03 24 42 31	10 18 39 43	+18 29	+7 33	03 30	16 37	14
15	00 29 50 49	00 04 16 44	11 05 35 34	01 13 22 06	07 23 35 20	02 13 23 50	03 24 45 05	10 18 36 32	+18 44	14 10	04 04	17 50	15
16	01 00 48 42	00 19 22 07	11 06 21 07	01 15 18 33	07 23 28 55	02 14 29 04	03 24 47 45	10 18 33 22	+18 58	+19 59	04 44	19 04	16
17	01 01 46 35	01 04 26 19	11 07 06 38	01 17 12 24	07 23 22 23	02 15 34 05	03 24 50 31	10 18 30 11	+19 12	+24 32	05 30	20 19	17
18	01 02 44 24	01 19 19 19	11 07 52 06	01 19 03 28	07 23 15 44	02 16 38 53	03 24 53 22	10 18 27 00	+19 25	+27 23	06 24	21 28	18

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट

(19 मई से 18 जून तक) 1 मई, 2007 ई. को अयनांश 23° /57′/38″ 1 जून, 2007 ई. को अयनांश 23° /57′/43″

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (19 मई से 18 जून तक) 1 मई, 2007 ई. को अयनांश 23°/57′/38″ 1 जून, 2007 ई. को अयनांश 23°/57′/43″

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रांति	चं. क्रांति	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	ता.
मई	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	मई
19	01 03 42 14	02 03 52 25	11 08 37 33	01 20 51 40	07 23 09 00	02 17 43 26	03 24 56 20	10 18 23 49	+19 38	+28 17	07 24	22 30	19
20	01 04 40 01	02 17 59 33	11 09 22 58	01 22 36 53	07 23 02 10	02 18 47 46	03 24 59 23	10 18 20 39	+19 51	+27 17	08 29	23 22	20
21	01 05 37 47	03 01 37 54	11 10 08 20	01 24 19 03	07 22 55 15	02 19 51 51	03 25 02 31	10 18 17 28	+20 04	+24 40	09 36	— —	21
22	01 06 35 32	03 14 47 44	11 10 53 40	01 25 58 05	07 22 48 15	02 20 55 41	03 25 05 46	10 18 14 17	+20 16	+20 48	10 41	00 05	22
23	01 07 33 15	03 27 31 47	11 11 38 57	01 27 33 55	07 22 41 11	02 21 59 15	03 25 09 05	10 18 11 06	+20 28	+16 04	11 42	00 40	23
24	01 08 30 56	04 09 54 20	11 12 24 13	01 29 06 32	07 22 34 01	02 23 02 33	03 25 12 31	10 18 07 56	+20 39	+10 49	12 39	01 11	24
25	01 09 28 35	04 22 00 34	11 13 09 26	02 00 35 51	07 22 26 48	02 24 05 34	03 25 16 02	10 18 04 45	+20 51	+5 16	13 35	01 37	25
26	01 10 26 13	05 03 55 49	11 13 54 36	02 02 01 51	07 22 19 31	02 25 08 18	03 25 19 38	10 18 01 34	+21 01	−00 23	14 27	02 03	26
27	01 11 23 50	05 15 45 16	11 14 39 44	02 03 24 29	07 22 12 11	02 26 10 45	03 25 23 19	10 17 58 24	+21 12	−05 58	15 22	02 28	27
28	01 12 21 25	05 27 33 34	11 15 24 50	02 04 43 41	07 22 04 47	02 27 12 53	03 25 27 06	10 17 55 13	+21 22	−11 20	16 17	02 54	28
29	01 13 18 59	06 09 24 39	11 16 09 53	02 05 59 28	07 21 57 20	02 28 14 43	03 25 30 58	10 17 52 02	+21 32	−16 18	17 12	03 21	29
30	01 14 16 31	06 21 21 36	11 16 54 53	02 07 11 44	07 21 49 51	02 29 16 14	03 25 34 55	10 17 48 51	+21 41	−20 42	18 11	03 53	30
31	01 15 14 03	07 03 26 42	11 17 39 51	02 08 20 27	07 21 42 20	03 00 17 26	03 25 38 57	10 17 45 41	+21 50	−24 17	19 09	04 28	31
जून	01 16 11 33	07 15 41 23	11 18 24 46	02 09 25 33	07 21 34 46	03 01 18 15	03 25 43 04	10 17 42 30	+21 58	−26 50	20 09	05 11	जून
2	01 17 09 02	07 28 06 24	11 19 09 39	02 10 26 58	07 21 27 11	03 02 18 45	03 25 47 17	10 17 39 19	+22 07	−28 06	21 03	06 00	2
3	01 18 06 30	08 10 42 07	11 19 54 29	02 11 24 38	07 21 19 35	03 03 18 53	03 25 51 34	10 17 36 08	+22 14	−27 57	21 55	06 55	3
4	01 19 03 57	08 23 28 45	11 20 39 17	02 12 18 29	07 21 11 57	03 04 18 39	03 25 55 56	10 17 32 58	+22 22	−26 19	22 41	07 55	4
5	01 20 01 23	09 06 26 41	11 21 24 01	02 13 08 27	07 21 04 19	03 05 18 02	03 26 00 23	10 17 29 47	+22 29	−23 16	23 20	08 59	5
6	01 20 58 49	09 19 36 37	11 22 08 43	02 13 54 25	07 20 56 40	03 06 17 02	03 26 04 54	10 17 26 36	+22 35	−18 58	23 56	10 03	6
7	01 21 56 14	10 02 59 40	11 22 53 21	02 14 36 20	07 20 49 01	03 07 15 38	03 26 09 31	10 17 23 25	+22 42	−13 41	— —	11 08	7
8	01 22 53 38	10 16 37 08	11 23 37 57	02 15 14 06	07 20 41 22	03 08 13 49	03 26 14 12	10 17 20 15	+22 47	−7 38	00 28	12 12	8
9	01 23 51 02	11 00 30 15	11 24 22 30	02 15 47 38	07 20 33 43	03 09 11 34	03 26 18 58	10 17 17 04	+22 53	−1 07	00 58	13 16	9
10	01 24 48 25	11 14 39 31	11 25 06 59	02 16 16 51	07 20 26 06	03 10 08 54	03 26 23 48	10 17 13 53	+22 58	+5 34	01 29	14 22	10
11	01 25 45 48	11 29 04 01	11 25 51 25	02 16 41 41	07 20 18 29	03 11 05 46	03 26 28 43	10 17 10 42	+23 03	+12 05	02 01	15 31	11
12	01 26 43 10	00 13 40 52	11 26 35 48	02 17 02 03	07 20 10 54	03 12 02 11	03 26 33 42	10 17 07 32	+23 07	+18 02	02 37	16 42	12
13	01 27 40 33	00 28 25 01	11 27 20 08	02 17 17 54	07 20 03 21	03 12 58 07	03 26 38 46	10 17 04 21	+23 11	+22 58	03 18	17 55	13
14	01 28 37 54	01 13 09 30	11 28 04 23	02 17 29 13	07 19 55 50	03 13 53 33	03 26 43 54	10 17 01 10	+23 14	26 26	04 08	19 06	14
15	01 29 35 15	01 27 46 19	11 28 48 35	02 17 35 59	07 19 48 21	03 14 48 29	03 26 49 06	10 16 57 59	+23 17	28 05	05 05	20 13	15
16	02 00 32 35	02 12 07 50	11 29 32 43	02 17 38 10	07 19 40 55	03 15 42 53	03 26 54 23	10 16 54 49	+23 20	27 49	06 09	21 09	16
17	02 01 29 54	02 26 08 03	00 00 16 47	02 17 35 51	07 19 33 32	03 16 36 43	03 26 59 44	10 16 51 38	+23 22	25 45	07 17	21 57	17
18	02 02 27 12	03 09 43 24	00 01 00 47	02 17 29 07	07 19 26 13	03 17 30 00	03 27 05 09	10 16 48 27	+23 24	22 14	08 24	22 36	18
19	02 03 24 30	03 22 53 00	00 01 44 43	02 17 18 04	07 19 18 57	03 18 22 40	03 27 10 38	10 16 45 16	+23 25	+17 40	09 28	23 09	19
20	02 04 21 47	04 05 38 22	00 02 28 35	02 17 02 53	07 19 11 45	03 19 14 43	03 27 16 10	10 16 42 05	+23 26	+12 27	10 28	23 38	20
21	02 05 19 03	04 18 02 50	00 03 12 22	02 16 43 49	07 19 04 38	03 20 06 08	03 27 21 47	10 16 38 54	+23 26	+6 52	11 25	— —	21
22	02 06 16 19	05 00 10 57	00 03 56 06	02 16 21 08	07 18 57 36	03 20 56 52	03 27 27 28	10 16 35 44	+23 26	+1 10	12 20	00 04	22
23	02 07 13 34	05 12 07 51	00 04 39 45	02 15 55 09	07 18 50 38	03 21 46 55	03 27 33 12	10 16 32 33	+23 26	−4 29	13 14	00 30	23
24	02 08 10 48	05 23 58 52	00 05 23 20	02 15 26 18	07 18 43 45	03 22 36 15	03 27 39 00	10 16 29 22	+23 25	−9 56	14 08	00 56	24
25	02 09 08 02	06 05 49 11	00 06 06 51	02 14 55 01	07 18 36 58	03 23 24 51	03 27 44 52	10 16 26 11	+23 24	−15 02	15 03	01 23	25
26	02 10 05 15	06 17 43 20	00 06 50 17	02 14 21 48	07 18 30 17	03 24 12 40	03 27 50 48	10 16 23 00	+23 23	−19 35	16 01	01 52	26
27	02 11 02 27	06 29 45 21	00 07 33 39	02 13 47 12	07 18 23 42	03 24 59 40	03 27 56 47	10 16 19 50	+23 21	−23 25	17 00	02 26	27
28	02 11 59 39	07 11 58 12	00 08 16 56	02 13 11 47	07 18 17 12	03 25 45 50	03 28 02 49	10 16 16 39	+23 18	−26 16	17 59	03 06	28

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (29 जून से 8 अगस्त तक) 1 जुलाई, 2007 ई. को अयनांश 23°/57'/49'' 1 अग., 2007 ई. को अयनांश 23°/57'/54''

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रांति	चं. क्रांति	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	ता.
जून	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	जुलाई
29	02 12 56 51	07 24 23 55	00 09 00 08	02 12 36 10	07 18 10 50	03 26 31 09	03 28 08 54	10 16 13 28	+23 16	−27 54	18 57	03 53	29
30	02 13 54 02	08 07 03 31	00 09 43 17	02 12 00 57	07 18 04 34	03 27 15 34	03 28 15 03	10 16 10 17	+23 12	−28 07	19 50	04 47	30
जुला	02 14 51 13	08 19 56 56	00 10 26 21	02 11 26 44	07 17 58 24	03 27 59 02	03 28 21 16	10 16 07 06	+23 09	−26 50	20 38	05 46	जुला
2	02 15 48 24	09 03 03 35	00 11 09 20	02 10 54 10	07 17 52 22	03 28 41 33	03 28 27 31	10 16 03 56	+23 05	−24 04	21 20	06 50	2
3	02 16 45 35	09 16 22 23	00 11 52 15	02 10 23 45	07 17 46 28	03 29 23 04	03 28 33 50	10 16 00 45	+23 00	−19 58	21 57	07 56	3
4	02 17 42 46	09 29 52 12	00 12 35 04	02 09 56 03	07 17 40 41	04 00 03 32	03 28 40 11	10 15 57 34	+22 56	−14 48	22 30	09 01	4
5	02 18 39 57	10 13 32 03	00 13 17 49	02 09 31 33	07 17 35 01	04 00 42 56	03 28 46 36	10 15 54 23	+22 50	−8 50	23 00	10 05	5
6	02 19 37 09	10 27 21 19	00 14 00 30	02 09 10 41	07 17 29 30	04 01 21 12	03 28 53 04	10 15 51 12	+22 45	−2 24	23 31	11 10	6
7	02 20 34 20	11 11 19 32	00 14 43 05	02 08 53 51	07 17 24 06	04 01 58 20	03 28 59 34	10 15 48 01	+22 39	+4 13	— —	12 14	7
8	02 21 31 32	11 25 26 06	00 15 25 35	02 08 41 23	07 17 18 51	04 02 34 15	03 29 06 08	10 15 44 51	+22 32	+10 42	00 02	13 20	8
9	02 22 28 45	00 09 39 53	00 16 07 59	02 08 33 33	07 17 13 45	04 03 08 56	03 29 12 44	10 15 41 40	+22 26	16 40	00 36	14 29	9
10	02 23 25 59	00 23 58 52	00 16 50 19	02 08 30 35	07 17 08 47	04 03 42 19	03 29 19 23	10 15 38 29	+22 19	21 47	01 15	15 40	10
11	02 24 23 11	01 18 19 50	00 17 32 32	02 08 32 39	07 17 03 58	04 04 14 21	03 29 26 05	10 15 35 18	+22 11	25 36	01 59	16 50	11
12	02 25 20 25	01 22 38 24	00 18 14 41	02 08 39 53	07 16 59 18	04 04 45 01	03 29 32 50	10 15 32 08	+22 03	+27 48	02 52	17 57	12
13	02 26 17 39	02 06 49 34	00 18 56 43	02 08 52 23	07 16 54 48	04 05 14 14	03 29 39 37	10 15 28 57	+21 55	28 10	03 52	18 57	13
14	02 27 14 54	02 20 48 14	00 19 38 40	02 09 10 12	07 16 50 27	04 05 41 58	03 29 46 26	10 15 25 46	+21 46	26 42	04 58	19 48	14
15	02 28 12 08	03 04 30 08	00 20 20 30	02 09 33 24	07 16 46 15	04 06 08 08	03 29 53 18	10 15 22 35	+21 37	23 40	06 05	20 31	15
16	02 29 09 24	03 17 52 20	00 21 02 14	02 10 01 57	07 16 42 14	04 06 32 41	04 00 00 14	10 15 19 25	+21 28	+19 24	07 11	21 06	16
17	03 00 06 38	04 00 53 40	00 21 43 53	02 10 35 52	07 16 38 22	04 06 55 34	04 00 07 10	10 15 16 14	+21 18	14 19	08 13	21 37	17
18	03 01 03 54	04 13 34 44	00 22 25 24	02 11 15 07	07 16 34 40	04 07 16 43	04 00 14 08	10 15 13 03	+21 08	8 45	09 12	22 04	18
19	03 02 01 10	04 25 57 43	00 23 06 50	02 11 59 39	07 16 31 09	04 07 36 04	04 00 21 10	10 15 09 52	+20 57	+2 59	10 09	22 31	19
20	03 02 58 25	05 08 06 03	00 23 48 09	02 12 49 27	07 16 27 48	04 07 53 34	04 00 28 13	10 15 06 42	+20 46	−2 47	11 03	22 56	20
21	03 03 55 41	05 20 03 57	00 24 29 21	02 13 44 26	07 16 24 37	04 08 09 08	04 00 35 18	10 15 03 31	+20 35	−8 22	11 58	23 23	21
22	03 04 52 59	06 01 56 16	00 25 10 27	02 14 44 32	07 16 21 36	04 08 22 43	04 00 42 25	10 15 00 20	+20 24	−13 36	12 54	23 51	22
23	03 05 50 14	06 13 48 00	00 25 51 27	02 15 49 42	07 16 18 46	04 08 34 16	04 00 49 34	10 14 57 09	+20 12	−18 21	13 49	— —	23
24	03 06 47 31	06 25 44 01	00 26 32 19	02 16 59 51	07 16 16 07	04 08 43 42	04 00 56 45	10 14 53 58	+19 59	−22 24	14 48	00 24	24
25	03 07 44 49	07 07 48 54	00 27 13 05	02 18 14 51	07 16 13 38	04 08 50 59	04 01 03 59	10 14 50 47	+19 47	−25 34	15 47	01 00	25
26	03 08 42 06	07 20 06 29	00 27 53 45	02 19 34 36	07 16 11 20	04 08 56 04	04 01 11 13	10 14 47 37	+19 34	−27 36	16 46	01 44	26
27	03 09 39 24	08 02 39 48	00 28 34 17	02 20 59 00	07 16 09 13	04 08 58 53	04 01 18 29	10 14 44 26	+19 21	−28 18	17 41	02 35	27
28	03 10 36 42	08 15 30 42	00 29 14 42	02 22 27 54	07 16 07 17	04 08 59 25	04 01 25 46	10 14 41 15	+19 07	−27 30	18 31	03 33	28
29	03 11 34 01	08 28 39 45	00 29 55 01	02 24 01 07	07 16 05 31	04 08 57 36	04 01 33 06	10 14 38 04	+18 53	−25 09	19 15	04 36	29
30	03 12 31 21	09 12 06 16	01 00 35 12	02 25 38 27	07 16 03 56	04 08 53 26	04 01 40 26	10 14 34 54	+18 39	−21 23	19 55	05 42	30
31	03 13 28 42	09 25 48 22	01 01 15 16	02 27 19 44	07 16 02 33	04 08 46 52	04 01 47 48	10 14 31 43	+18 25	−16 23	20 30	06 50	31
अग	03 14 26 03	10 09 43 18	01 01 55 13	02 29 04 40	07 16 01 20	04 08 37 55	04 01 55 12	10 14 28 32	+18 10	−10 28	21 03	07 56	अग.
2	03 15 23 26	10 23 47 54	01 02 35 03	03 00 52 58	07 16 00 18	04 08 26 35	04 02 02 37	10 14 25 21	+17 55	−3 58	21 33	09 01	2
3	03 16 20 49	11 07 58 56	01 03 14 45	03 02 44 23	07 15 59 27	04 08 12 53	04 02 10 03	10 14 22 10	+17 40	+2 47	22 04	10 06	3
4	03 17 18 14	11 22 13 19	01 03 54 20	03 04 38 33	07 15 58 47	04 07 56 50	04 02 17 30	10 14 19 00	+17 24	9 24	22 38	11 13	4
5	03 18 15 39	00 06 28 20	01 04 33 47	03 06 35 07	07 15 58 18	04 07 38 28	04 02 25 00	10 14 15 49	+17 08	15 33	23 14	12 21	5
6	03 19 13 07	00 20 41 34	01 05 13 06	03 08 33 46	07 15 58 00	04 07 17 52	04 02 32 28	10 14 12 38	+16 52	20 51	23 56	13 31	6
7	03 20 10 35	01 04 50 49	01 05 52 17	03 10 34 06	07 15 57 54	04 06 55 06	04 02 39 59	10 14 09 27	+16 35	24 55	— —	14 40	7
8	03 21 08 05	01 18 53 56	01 06 31 20	03 12 35 45	07 15 57 58	04 06 30 16	04 02 47 30	10 14 06 16	+16 18	27 31	00 46	15 48	8

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (8 अगस्त से 18 सितंबर तक) 1 सितं., 2007 ई. को अयनांश 23°/57'/58''

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट

(9 अगस्त से 18 सितंबर तक) 1 सितं., 2007 ई. को अयनांश 23°/57'/58''

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रांति	चं. क्रांति	आलम्बर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	अगस्त
अग.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
9	03 22 05 36	02 02 48 44	01 07 10 14	03 14 38 24	07 15 58 13	04 06 03 26	04 02 55 03	10 14 03 06	+16 01	28 20	01 43	16 49	9
10	03 23 03 08	02 16 33 04	01 07 49 00	03 16 41 41	07 15 58 40	04 05 34 46	04 03 02 36	10 13 59 55	+15 44	+27 24	02 44	17 41	10
11	03 24 00 41	03 00 04 52	01 08 27 37	03 18 45 19	07 15 59 18	04 05 04 22	04 03 10 11	10 13 56 44	+15 27	24 50	03 51	18 27	11
12	03 24 58 16	03 13 22 23	01 09 06 05	03 20 48 59	07 16 00 06	04 04 32 25	04 03 17 46	10 13 53 33	+15 09	20 58	04 56	19 04	12
13	03 25 55 52	03 26 24 28	01 09 44 24	03 22 52 26	07 16 01 06	04 03 59 05	04 03 25 21	10 13 50 23	+14 51	16 08	06 00	19 36	13
14	03 26 53 29	04 09 10 43	01 10 22 33	03 24 55 29	07 16 02 17	04 03 24 33	04 03 32 57	10 13 47 12	+14 33	10 41	07 00	20 05	14
15	03 27 51 07	04 21 41 35	01 11 00 34	03 26 57 53	07 16 03 39	04 02 49 02	04 03 40 34	10 13 44 01	+14 14	+4 56	07 58	20 31	15
16	03 28 48 47	05 03 58 31	01 11 38 24	03 28 59 30	07 16 05 12	04 02 12 43	04 03 48 11	10 13 40 50	+13 55	−0 54	08 53	20 58	16
17	03 29 46 27	05 16 03 49	01 12 16 05	04 01 00 11	07 16 06 56	04 01 35 51	04 03 55 48	10 13 37 39	+13 37	−6 37	09 48	21 23	17
18	04 00 44 09	05 28 00 36	01 12 53 37	04 02 59 49	07 16 08 51	04 00 58 39	04 04 03 26	10 13 34 28	+13 17	−12 01	10 43	21 50	18
19	04 01 41 51	06 09 52 42	01 13 30 58	04 04 58 19	07 16 10 57	04 00 21 23	04 04 11 03	10 13 31 18	+12 58	−16 57	11 39	22 21	19
20	04 02 39 35	06 21 44 18	01 14 08 09	04 06 55 37	07 16 13 14	03 29 44 16	04 04 18 41	10 13 28 07	+12 38	−21 14	12 37	22 56	20
21	04 03 37 20	07 03 40 00	01 14 45 10	04 08 51 39	07 16 15 41	03 29 07 31	04 04 26 19	10 13 24 56	+12 19	−24 42	13 34	23 36	21
22	04 04 35 06	07 15 44 28	01 15 22 01	04 10 46 23	07 16 18 19	03 28 31 23	04 04 33 57	10 13 21 45	+11 59	−27 07	14 33	— —	22
23	04 05 32 53	07 28 02 08	01 15 58 42	04 12 39 48	07 16 21 08	03 27 56 07	04 04 41 34	10 13 18 34	+11 39	−28 18	15 29	00 23	23
24	04 06 30 41	08 10 37 03	01 16 35 11	04 14 31 53	07 16 24 07	03 27 21 55	04 04 49 12	10 13 15 24	+11 18	−28 03	16 22	01 17	24
25	04 07 28 31	08 23 32 18	01 17 11 31	04 16 22 36	07 16 27 17	03 26 48 59	04 04 56 50	10 13 12 13	+10 58	−26 17	17 08	02 18	25
26	04 08 26 21	09 06 49 46	01 17 47 39	04 18 11 59	07 16 30 37	03 26 17 32	04 05 04 29	10 13 09 02	+10 37	−23 02	17 50	03 23	26
27	04 09 24 13	09 20 29 47	01 18 23 37	04 20 00 01	07 16 34 08	03 25 47 42	04 05 12 06	10 13 05 51	+10 16	−18 27	18 27	04 20	27
28	04 10 22 07	10 04 30 50	01 18 59 23	04 21 46 43	07 16 37 48	03 25 19 41	04 05 19 43	10 13 02 41	+9 55	−12 45	19 01	05 38	28
29	04 11 20 02	10 18 49 34	01 19 34 58	04 23 32 07	07 16 41 39	03 24 53 37	04 05 27 20	10 12 59 30	+9 34	−6 17	19 33	06 45	29
30	04 12 17 59	11 03 21 00	01 20 10 22	04 25 16 11	07 16 45 40	03 24 29 37	04 05 34 56	10 12 56 19	+9 13	+0 37	20 05	07 53	30
31	04 13 15 57	11 17 59 14	01 20 45 35	04 26 58 58	07 16 49 51	03 24 07 47	04 05 42 32	10 12 53 08	+8 51	+7 30	20 38	09 01	31
सितं	04 14 13 57	00 02 37 57	01 21 20 35	04 28 40 29	07 16 54 12	03 23 48 13	04 05 50 07	10 12 49 48	+8 30	+14 00	21 14	10 10	सितं
2	04 15 11 59	00 17 11 26	01 21 55 24	05 00 20 44	07 16 58 43	03 23 30 58	04 05 57 41	10 12 46 47	+8 08	+19 41	21 54	11 20	2
3	04 16 10 03	01 01 34 56	01 22 30 00	05 01 59 44	07 17 03 24	03 23 16 06	04 06 05 15	10 12 43 36	+7 46	+24 10	22 42	12 32	3
4	04 17 08 08	01 15 45 10	01 23 04 23	05 03 37 30	07 17 08 15	03 23 03 38	04 06 12 48	10 12 40 26	+7 24	+27 07	23 36	13 40	4
5	04 18 06 17	01 29 40 12	01 23 38 34	05 05 14 04	07 17 13 15	03 22 53 36	04 06 20 20	10 12 37 15	+7 02	+28 21	— —	14 43	5
6	04 19 04 27	02 13 19 20	01 24 12 32	05 06 49 25	07 17 18 25	03 22 45 59	04 06 27 52	10 12 34 04	+6 40	+27 48	00 37	15 38	6
7	04 20 02 38	02 26 42 39	01 24 46 16	05 08 23 34	07 17 23 45	03 22 40 48	04 06 35 22	10 12 30 53	+6 18	+25 38	01 42	16 25	7
8	04 21 00 52	03 09 50 50	01 25 19 46	05 09 56 31	07 17 29 14	03 22 38 00	04 06 42 52	10 12 27 43	+5 55	+22 07	02 46	17 04	8
9	04 21 59 08	03 22 44 46	01 25 53 02	05 11 28 17	07 17 34 53	03 22 37 35	04 06 50 21	10 12 24 32	+5 33	+17 35	03 50	17 38	9
10	04 22 57 26	04 05 25 28	01 26 26 04	05 12 58 51	07 17 40 41	03 22 39 30	04 06 57 48	10 12 21 21	+5 10	+12 21	04 50	18 07	10
11	04 23 55 45	04 17 54 00	01 26 58 51	05 14 28 15	07 17 46 38	03 22 43 43	04 07 05 14	10 12 18 10	+4 47	+6 43	05 49	18 34	11
12	04 24 54 07	05 00 11 32	01 27 31 24	05 15 56 26	07 17 52 44	03 22 50 10	04 07 12 39	10 12 15 00	+4 24	+0 54	06 44	19 00	12
13	04 25 52 30	05 12 19 26	01 28 03 41	05 17 23 24	07 17 59 00	03 22 58 50	04 07 20 02	10 12 11 49	+4 01	−4 51	07 40	19 25	13
14	04 26 50 55	05 24 19 24	01 28 35 43	05 18 49 10	07 18 05 25	03 23 09 39	04 07 27 24	10 12 08 38	+3 38	−10 23	08 34	19 52	14
15	04 27 49 22	06 06 13 31	01 29 07 29	05 20 13 43	07 18 11 58	03 23 22 32	04 07 34 44	10 12 05 27	+3 15	−15 29	09 30	20 22	15
16	04 28 47 50	06 18 04 24	01 29 38 59	05 21 36 58	07 18 18 40	03 23 37 28	04 07 42 04	10 12 02 17	+2 52	−19 59	10 27	20 54	16
17	04 29 46 21	06 29 55 13	02 00 10 12	05 22 58 56	07 18 25 31	03 23 54 22	04 07 49 21	10 11 59 07	+2 29	−23 42	11 24	21 32	17
18	05 00 44 52	07 11 49 41	02 00 41 09	05 24 19 35	07 18 32 31	03 24 13 11	04 07 56 36	10 11 55 56	+2 06	−26 26	12 22	22 15	18

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (19 सितंबर से 29 अक्तूबर तक) 1 अक्तू., 2007 ई. को अयनांश 23°/58'/02''

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रांति	चं. क्रांति	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	सितंबर
सितं	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
19	05 01 43 26	07 23 51 55	02 01 11 50	05 25 38 51	07 18 39 39	03 24 33 51	04 08 03 50	10 11 52 45	+1 43	–28 01	13 28	23 05	19
20	05 02 42 01	08 06 06 20	02 01 42 13	05 26 56 42	07 18 46 56	03 24 56 19	04 08 11 02	10 11 49 34	+1 20	–28 16	14 11	— —	20
21	05 03 40 38	08 18 37 28	02 02 12 19	05 28 13 06	07 18 54 20	03 25 20 32	04 08 18 12	10 11 46 23	+0 56	–27 06	14 59	00 05	21
22	05 04 39 16	09 01 29 27	02 02 42 07	05 29 27 57	07 19 01 54	03 25 46 26	04 08 25 20	10 11 43 12	+0 33	–24 28	15 43	01 04	22
23	05 05 37 56	09 14 45 42	02 03 11 38	06 00 41 10	07 19 09 35	03 26 13 58	04 08 32 26	10 11 40 02	+0 10	–20 29	16 21	02 09	23
24	05 06 36 38	09 28 28 15	02 03 40 50	06 01 52 41	07 19 17 24	03 26 43 04	04 08 39 30	10 11 36 51	–0 14	–15 17	16 56	03 16	24
25	05 07 35 22	10 12 37 08	02 04 09 43	06 03 02 25	07 19 25 21	03 27 13 41	04 08 46 32	10 11 33 40	–0 37	–9 08	17 29	04 23	25
26	05 08 34 08	10 27 09 53	02 04 38 18	06 04 10 13	07 19 33 26	03 27 45 47	04 08 53 31	10 11 30 29	–1 00	–2 21	18 01	05 31	26
27	05 09 32 55	11 12 01 16	02 05 06 34	06 05 15 59	07 19 41 39	03 28 19 18	04 09 00 29	10 11 27 18	–1 24	+4 42	18 34	06 39	27
28	05 10 31 44	11 27 03 37	02 05 34 30	06 06 19 35	07 19 49 59	03 28 54 12	04 09 07 23	10 11 24 08	–1 47	+11 34	19 09	07 50	28
29	05 11 30 36	00 12 07 50	02 06 02 06	06 07 20 50	07 19 58 27	03 29 30 25	04 09 14 16	10 11 20 57	–2 11	+17 47	19 50	09 03	29
30	05 12 29 30	00 27 04 44	02 06 29 21	06 08 19 32	07 20 07 02	04 00 07 54	04 09 21 06	10 11 17 46	–2 34	+22 51	20 37	10 17	30
अक्तू	05 13 28 26	01 11 46 31	02 06 56 16	06 09 15 33	07 20 15 44	04 00 46 38	04 09 27 53	10 11 14 35	–2 57	+26 23	21 31	11 29	अक्तू
2	05 14 27 24	01 26 07 46	02 07 22 48	06 10 08 35	07 20 24 34	04 01 26 33	04 09 34 38	10 11 11 25	–3 20	+28 07	22 30	12 36	2
3	05 15 26 25	02 10 05 44	02 07 48 59	06 10 58 27	07 20 33 31	04 02 07 37	04 09 41 21	10 11 08 14	–3 44	+28 00	23 35	13 34	3
4	05 16 25 28	02 23 40 09	02 08 14 49	06 11 44 49	07 20 42 34	04 02 49 46	04 09 48 00	10 11 05 03	–4 07	+26 11	— —	14 24	4
5	05 17 24 33	03 06 52 35	02 08 40 13	06 12 27 25	07 20 51 46	04 03 32 59	04 09 54 37	10 11 01 52	–4 30	+22 57	00 40	15 06	5
6	05 18 23 40	03 19 45 36	02 09 05 15	06 13 05 52	07 21 01 04	04 04 17 13	04 10 01 11	10 10 58 42	–4 53	+18 39	01 44	15 40	6
7	05 19 22 50	04 02 22 18	02 09 29 53	06 13 39 48	07 21 10 28	04 05 02 25	04 10 07 41	10 10 55 31	–5 16	+13 37	02 44	16 10	7
8	05 20 22 02	04 14 45 49	02 09 54 06	06 14 08 50	07 21 20 00	04 05 48 34	04 10 14 09	10 10 52 20	–5 39	+8 08	03 42	16 37	8
9	05 21 21 16	04 26 58 51	02 10 17 54	06 14 32 30	07 21 29 39	04 06 35 37	04 10 20 34	10 10 49 09	–6 02	+2 25	04 39	17 04	9
10	05 22 20 33	05 09 03 51	02 10 41 16	06 14 50 21	07 21 39 24	04 07 23 33	04 10 26 55	10 10 45 59	–6 25	–3 19	05 33	17 29	10
11	05 23 19 52	05 21 02 44	02 11 04 11	06 15 01 54	07 21 49 15	04 08 12 19	04 10 33 14	10 10 42 48	–6 48	–8 52	06 28	17 56	11
12	05 24 19 12	06 02 57 15	02 11 26 39	06 15 06 40	07 21 59 13	04 09 01 53	04 10 39 29	10 10 39 37	–7 10	–14 04	07 23	18 24	12
13	05 25 18 35	06 14 48 59	02 11 48 40	06 15 04 11	07 22 09 17	04 09 52 14	04 10 45 40	10 10 36 26	–7 33	–18 44	08 19	18 56	13
14	05 26 17 59	06 26 39 39	02 12 10 13	06 14 53 58	07 22 19 28	04 10 43 21	04 10 51 48	10 10 33 16	–7 55	–22 40	09 16	19 31	14
15	05 27 17 26	07 08 31 17	02 12 31 18	06 14 35 40	07 22 29 44	04 11 35 10	04 10 57 53	10 10 30 05	–8 18	–25 40	10 13	20 13	15
16	05 28 16 55	07 20 26 25	02 12 51 53	06 14 08 58	07 22 40 07	04 12 27 42	04 11 03 54	10 10 26 54	–8 40	–27 34	11 10	21 00	16
17	05 29 16 25	08 02 28 09	02 13 11 58	06 13 33 46	07 22 50 35	04 13 20 54	04 11 09 51	10 10 23 43	–9 02	–28 12	12 06	21 59	17
18	06 00 15 57	08 14 40 06	02 13 31 33	06 12 50 07	07 23 01 10	04 14 14 46	04 11 15 44	10 10 20 33	–9 24	–27 28	12 52	22 57	18
19	06 01 15 31	08 27 06 30	02 13 50 37	06 11 58 22	07 23 11 49	04 15 09 15	04 11 21 33	10 10 17 22	–9 46	–25 22	13 36	23 54	19
20	06 02 15 07	09 09 51 45	02 14 09 10	06 10 59 10	07 23 22 34	04 16 04 21	04 11 27 19	10 10 14 11	–10 07	–21 56	14 15	— —	20
21	06 03 14 44	09 23 00 07	02 14 27 10	06 09 53 30	07 23 33 25	04 17 00 02	04 11 33 01	10 10 11 00	–10 29	–17 20	14 51	00 57	21
22	06 04 14 23	10 06 35 05	02 14 44 39	06 08 42 46	07 23 44 22	04 17 56 18	04 11 38 38	10 10 07 50	–10 50	–11 43	15 24	02 02	22
23	06 05 14 04	10 20 38 39	02 15 01 33	06 07 28 41	07 23 55 23	04 18 53 07	04 11 44 12	10 10 04 39	–11 11	–5 20	15 55	03 08	23
24	06 06 13 46	11 05 10 17	02 15 17 54	06 06 13 16	07 24 06 30	04 19 50 28	04 11 49 42	10 10 01 28	–11 32	+1 31	16 28	04 15	24
25	06 07 13 30	11 20 06 15	02 15 33 41	06 04 58 44	07 24 17 42	04 20 48 21	04 11 55 07	10 09 58 17	–11 53	+8 28	17 02	05 24	25
26	06 08 13 17	00 05 19 18	02 15 48 52	06 03 47 21	07 24 28 59	04 21 46 44	04 12 00 28	10 09 55 07	–12 14	+15 03	17 41	06 37	26
27	06 09 13 05	00 20 39 21	02 16 03 27	06 02 41 20	07 24 40 21	04 22 45 38	04 12 05 45	10 09 51 56	–12 35	+20 45	18 25	07 52	27
28	06 10 12 55	01 05 54 55	02 16 17 26	06 01 42 41	07 25 51 47	04 23 44 59	04 12 10 57	10 09 48 45	–12 55	+25 03	19 18	09 07	28
29	06 11 12 47	01 20 55 17	02 16 30 47	06 00 53 02	07 25 03 18	04 24 44 49	04 12 16 05	10 09 45 34	–13 15	+27 33	20 18	10 20	29

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (30 अक्तू. से 9 दिसं. तक) 1 नवं., 2007 ई. को अयनांश 23°/58'/06'' 1 दिसंबर, 2007 ई. को अयनांश 23°/58'/11''

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रांति	चं. क्रांति	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	अक्तूबर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh-Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट

(30 अक्तू. से 9 दिसं. तक) 1 नवं., 2007 ई. को अयनांश 23°/58'/06" 1 दिसंबर, 2007 ई. को अयनांश 23°/58'/11"

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रांति	चं. क्रांति	जालन्धर (भा. स्टै. स.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	अक्तूबर
अक्तू.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
30	06 12 12 42	02 05 32 18	02 16 43 29	06 00 13 40	07 25 14 55	04 25 45 07	04 12 21 08	10 09 42 23	-13 35	+28 04	21 23	11 24	30
31	06 13 12 39	02 19 41 19	02 16 55 33	05 29 45 25	07 25 26 35	04 26 45 50	04 12 26 07	10 09 39 13	-13 55	+26 41	22 30	12 19	31
नवं.	06 14 12 37	03 03 21 13	02 17 06 56	05 29 28 39	07 25 38 13	04 27 46 58	04 12 31 01	10 09 36 02	-14 14	+23 44	23 36	13 04	नवं.
2	06 15 12 38	03 16 33 39	02 17 17 39	05 29 23 26	07 25 50 24	04 28 48 31	04 12 35 50	10 09 32 51	-14 33	+19 37	— —	13 41	2
3	06 16 12 41	03 29 22 08	02 17 27 39	05 29 29 27	07 26 02 05	04 29 50 28	04 12 40 35	10 09 29 40	-14 52	+14 42	00 38	14 13	3
4	06 17 12 47	04 11 51 03	02 17 36 57	05 29 46 12	07 26 14 03	05 00 52 47	04 12 45 15	10 09 26 29	-15 11	+9 18	01 38	14 41	4
5	06 18 12 54	04 24 05 01	02 17 45 32	06 00 12 57	07 26 26 06	05 01 55 29	04 12 49 50	10 09 23 19	-15 30	+3 40	02 34	15 07	5
6	06 19 13 03	05 06 08 20	02 17 53 23	06 00 48 53	07 26 38 13	05 02 58 32	04 12 54 19	10 09 20 08	-15 48	-2 01	03 28	15 34	6
7	06 20 13 15	05 18 04 46	02 18 00 28	06 01 33 06	07 26 50 24	05 04 01 56	04 12 58 44	10 09 16 57	-16 06	-7 35	04 23	15 59	7
8	06 21 13 28	05 29 57 20	02 18 06 48	06 02 24 46	07 27 02 39	05 05 05 40	04 13 03 04	10 09 13 46	-16 24	-12 50	05 18	16 27	8
9	06 22 13 44	06 11 48 24	02 18 12 21	06 03 23 00	07 27 15 00	05 06 09 43	04 13 07 18	10 09 10 35	-16 41	-17 36	06 13	16 57	9
10	06 23 14 01	06 23 39 45	02 18 17 08	06 04 26 58	07 27 27 21	05 07 14 04	04 13 11 27	10 09 07 25	-16 58	-21 41	07 10	17 31	10
11	06 24 14 20	07 05 32 44	02 18 21 06	06 05 35 54	07 27 39 47	05 08 18 44	04 13 15 31	10 09 04 14	-17 15	-24 55	08 07	18 12	11
12	06 25 14 40	07 17 28 41	02 18 24 16	06 06 49 08	07 27 52 18	05 09 23 42	04 13 19 29	10 09 01 03	-17 32	-27 04	09 04	18 57	12
13	06 26 15 02	07 29 29 02	02 18 26 38	06 08 06 02	07 28 04 51	05 10 28 57	04 13 23 22	10 08 57 52	-17 48	-27 59	09 59	19 48	13
14	06 27 15 26	08 11 35 35	02 18 28 10	06 09 26 02	07 28 17 28	05 11 34 28	04 13 27 09	10 08 54 42	-18 04	-27 34	10 48	20 45	14
15	06 28 15 51	08 23 50 47	02 18 28 52	06 10 48 40	07 28 30 08	05 12 40 15	04 13 30 51	10 08 51 31	-18 20	-25 48	11 33	21 45	15
16	06 29 16 18	09 06 17 43	02 18 28 45	06 12 13 31	07 28 42 52	05 13 46 18	04 13 34 27	10 08 48 20	-18 35	-22 46	12 13	22 47	16
17	07 00 16 46	09 19 00 00	02 18 27 46	06 13 40 12	07 28 55 38	05 14 52 35	04 13 37 57	10 08 45 09	-18 50	-18 35	12 49	23 48	17
18	07 01 17 15	10 02 01 38	02 18 25 57	06 15 08 25	07 29 08 28	05 15 59 08	04 13 41 22	10 08 41 58	-19 05	-13 27	13 21	— —	18
19	07 02 17 45	10 15 26 27	02 18 23 17	06 16 37 54	07 29 21 21	05 17 05 55	04 13 44 41	10 08 38 48	-19 19	-7 32	13 53	00 51	19
20	07 03 18 17	10 29 17 25	02 18 19 44	06 18 08 24	07 29 34 16	05 18 12 55	04 13 47 54	10 08 35 37	-19 33	-1 05	14 23	01 55	20
21	07 04 18 50	11 13 35 46	02 18 15 21	06 19 39 44	07 29 47 14	05 19 20 10	04 13 51 01	10 08 32 26	-19 47	+5 37	14 55	03 00	21
22	07 05 19 24	11 28 19 55	02 18 10 07	06 21 11 44	08 00 00 15	05 20 27 37	04 13 54 02	10 08 29 15	-20 00	+12 13	15 30	04 09	22
23	07 06 19 59	00 13 24 49	02 18 04 01	06 22 44 16	08 00 13 18	05 21 35 18	04 13 56 58	10 08 26 04	-20 13	18 15	16 12	05 22	23
24	07 07 20 37	00 28 41 54	02 17 57 02	06 24 17 14	08 00 26 24	05 22 43 12	04 13 59 47	10 08 22 54	-20 25	23 12	17 00	06 38	24
25	07 08 21 14	01 14 00 08	02 17 49 12	06 25 50 30	08 00 39 33	05 23 51 17	04 14 02 30	10 08 19 43	-20 38	26 33	17 58	07 53	25
26	07 09 21 54	01 29 07 55	02 17 40 30	06 27 24 02	08 00 52 44	05 24 59 35	04 14 05 07	10 08 16 32	-20 49	27 56	19 03	09 03	26
27	07 10 22 35	02 13 55 11	02 17 30 57	06 28 57 44	08 01 05 57	05 26 08 05	04 14 07 39	10 08 13 21	-21 01	27 16	20 12	10 05	27
28	07 11 23 18	02 28 15 12	02 17 20 33	07 00 31 34	08 01 19 12	05 27 16 47	04 14 10 13	10 08 10 10	-21 12	24 47	21 20	10 56	28
29	07 12 24 02	03 12 04 51	02 17 09 17	07 02 05 29	08 01 32 30	05 28 25 39	04 14 12 [illegible]	10 08 07 00	-21 22	20 53	22 27	11 38	29
30	07 13 24 47	03 25 24 35	02 16 57 11	07 03 39 28	08 01 45 50	05 29 34 43	04 14 14 34	10 08 03 49	-21 33	+16 03	23 29	12 12	30
दिसं.	07 14 25 34	04 08 17 18	02 16 44 16	07 05 13 29	08 01 59 12	06 00 43 57	04 14 16 40	10 08 00 38	-21 42	+10 38	— —	12 43	दिसं.
2	07 15 26 23	04 20 47 28	02 16 30 31	07 06 47 31	08 02 12 35	06 01 53 21	04 14 18 40	10 07 57 27	-21 52	+04 58	00 28	13 10	2
3	07 16 27 13	05 03 00 14	02 16 15 58	07 08 21 32	08 02 26 01	06 03 02 55	04 14 20 33	10 07 54 17	-22 01	-00 46	01 23	13 36	3
4	07 17 28 05	05 15 00 49	02 16 00 38	07 09 55 34	08 02 39 28	06 04 12 38	04 14 22 20	10 07 51 06	-22 09	-06 21	02 17	14 02	4
5	07 18 28 57	05 26 54 03	02 15 44 32	07 11 29 35	08 02 52 58	06 05 22 31	04 14 24 01	10 07 47 55	-22 17	-11 40	03 11	14 29	5
6	07 19 29 52	06 08 44 07	02 15 27 41	07 13 03 35	08 03 06 28	06 06 32 32	04 14 25 34	10 07 44 44	-22 25	-16 32	04 07	14 59	6
7	07 20 30 47	06 20 34 25	02 15 10 08	07 14 37 35	08 03 20 01	06 07 42 42	04 14 27 02	10 07 41 34	-22 32	-20 46	05 03	15 32	7
8	07 21 31 43	07 02 27 33	02 14 51 53	07 16 11 35	08 03 33 35	06 08 53 01	04 14 28 22	10 07 38 23	-22 39	-24 12	06 01	16 10	8
9	07 22 32 41	07 14 25 18	02 14 32 59	07 17 45 36	08 03 47 10	06 10 03 27	04 14 29 36	10 07 35 12	-22 45	-26 36	06 58	16 54	9

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (10 दिसं. (07) से 19 जन. (08) तक) 1 जन., 2008 ई. को अयनांश 23°/58'/17"

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रांति	चं. क्रांति	जालन्धर (भा. स्टै. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	दिसम्बर
दिसं	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
10	07 23 33 40	07 26 28 58	02 14 13 28	07 19 19 37	08 04 00 46	06 11 14 01	04 14 30 44	10 07 32 01	–22 51	–27 48	07 53	17 44	10
11	07 24 34 39	08 08 39 25	02 13 53 21	07 20 53 40	08 04 14 24	06 12 24 43	04 14 31 44	10 07 28 51	–22 57	–27 40	08 46	18 40	11
12	07 25 35 40	08 20 57 32	02 13 32 41	07 22 27 45	08 04 28 03	06 13 35 32	04 14 32 38	10 07 25 40	–23 02	–26 10	09 32	19 39	12
13	07 26 36 41	09 03 24 21	02 13 11 31	07 24 01 54	08 04 41 43	06 14 46 28	04 14 33 26	10 07 22 29	–23 06	–23 22	10 14	20 41	13
14	07 27 37 42	09 16 01 26	02 12 49 53	07 25 36 06	08 04 55 23	06 15 57 30	04 14 34 06	10 07 19 18	–23 10	–19 25	10 50	21 42	14
15	07 28 38 45	09 28 50 50	02 12 27 50	07 27 10 23	08 05 09 05	06 17 08 39	04 14 34 40	10 07 16 08	–23 14	–14 31	11 23	22 14	15
16	07 29 39 47	10 11 55 08	02 12 05 24	07 28 44 46	08 05 22 47	06 18 19 54	04 14 35 08	10 07 12 57	–23 17	–08 52	11 53	23 46	16
17	08 00 40 51	10 25 17 04	02 11 42 38	08 00 19 16	08 05 36 30	06 19 31 16	04 14 35 28	10 07 09 46	–23 20	–02 43	12 23	— —	17
18	08 01 41 54	11 08 59 08	02 11 19 36	08 01 53 52	08 05 50 13	06 20 42 43	04 14 35 42	10 07 06 35	–23 22	+03 43	12 54	00 47	18
19	08 02 42 58	11 23 02 52	02 10 56 20	08 03 28 38	08 06 03 58	06 21 54 16	04 14 35 49	10 07 03 25	–23 24	+10 07	13 26	01 52	19
20	08 03 44 02	00 07 27 57	02 10 32 52	08 05 03 32	08 06 17 42	06 23 05 55	04 14 35 50	10 07 00 14	–23 25	+16 09	14 02	03 00	20
21	08 04 45 07	00 22 11 32	02 10 09 17	08 06 38 37	08 06 31 27	06 24 17 40	04 14 35 43	10 06 57 03	–23 26	+21 23	14 45	04 11	21
22	08 05 46 12	01 07 07 55	02 09 45 36	08 08 13 52	08 06 45 12	06 25 29 30	04 14 35 31	10 06 53 52	–23 26	+25 20	15 38	05 26	22
23	08 06 47 17	01 22 08 52	02 09 21 53	08 09 49 19	08 06 58 58	06 26 41 25	04 14 35 11	10 06 50 41	–23 26	+27 33	16 39	06 38	23
24	08 07 48 23	02 07 04 54	02 08 58 11	08 11 25 00	08 07 12 42	06 27 53 26	04 14 34 45	10 06 47 30	–23 26	+27 45	17 47	07 44	24
25	08 08 49 28	02 21 46 31	02 08 34 32	08 13 00 51	08 07 26 27	06 29 05 31	04 14 34 12	10 06 44 20	–23 25	+25 59	18 57	08 41	25
26	08 09 50 36	03 06 06 29	02 08 10 59	08 14 36 57	08 07 40 13	07 00 17 42	04 14 33 33	10 06 41 09	–23 23	+22 33	20 07	09 29	26
27	08 10 51 43	03 20 00 10	02 07 47 35	08 16 13 17	08 07 53 58	07 01 29 58	04 14 32 47	10 06 37 58	–23 21	+17 55	21 12	10 08	27
28	08 11 52 50	04 03 26 04	02 07 24 23	08 17 49 50	08 08 07 43	07 02 42 18	04 14 31 54	10 06 34 47	–23 19	+12 31	22 14	10 41	28
29	08 12 53 58	04 16 25 25	02 07 01 25	08 19 26 37	08 08 21 28	07 03 54 44	04 14 30 55	10 06 31 37	–23 16	+06 44	23 13	11 10	29
30	08 13 55 06	04 29 01 25	02 06 38 45	08 21 03 38	08 08 35 13	07 05 07 13	04 14 29 49	10 06 28 26	–23 12	+00 52	— —	11 37	30
31	08 14 56 15	05 11 18 29	02 06 16 28	08 22 40 50	08 08 48 57	07 06 19 47	04 14 28 37	10 06 25 15	–23 08	–04 53	00 08	12 03	31
जन.	08 15 57 24	05 23 21 42	02 05 54 26	08 24 18 14	08 09 02 40	07 07 32 25	04 14 27 19	10 06 22 04	–23 04	–10 21	01 04	12 31	जन.
2	08 16 58 34	06 05 16 15	02 05 32 55	08 25 55 50	08 09 16 24	07 08 45 07	04 14 25 53	10 06 18 54	–22 59	–15 22	01 59	12 59	2
3	08 17 59 44	06 17 06 59	02 05 11 50	08 27 33 34	08 09 30 06	07 09 57 53	04 14 24 22	10 06 15 43	–22 54	–19 47	02 55	13 31	3
4	08 19 00 54	06 28 58 22	02 04 51 14	08 29 11 23	08 09 43 48	07 11 10 43	04 14 22 44	10 06 12 32	–22 48	–23 36	03 52	14 07	4
5	08 20 02 05	07 10 54 03	02 04 31 11	09 00 49 14	08 09 57 29	07 12 23 36	04 14 20 59	10 06 09 21	–22 42	–26 07	04 49	14 48	5
6	08 21 03 15	07 22 56 55	02 04 11 43	09 02 27 05	08 10 11 09	07 13 36 33	04 14 19 09	10 06 06 10	–22 36	–27 39	05 46	15 38	6
7	08 22 04 26	08 05 09 03	02 03 52 50	09 04 04 51	08 10 24 48	07 14 49 32	04 14 17 12	10 06 03 00	–22 29	–27 51	06 40	16 32	7
8	08 23 05 37	08 17 31 42	02 03 34 36	09 05 42 24	08 10 38 26	07 16 02 36	04 14 15 09	10 05 59 49	–22 21	–26 41	07 28	17 31	8
9	08 24 06 46	09 00 05 30	02 03 17 01	09 07 19 39	08 10 52 03	07 17 15 42	04 14 13 00	10 05 56 38	–22·13	–24 09	08 12	18 33	9
10	08 25 07 57	09 12 50 42	02 03 00 08	09 08 56 26	08 11 05 39	07 18 28 49	04 14 10 45	10 05 53 27	–22 05	–20 24	08 51	19 36	10
11	08 26 09 07	09 25 47 23	02 02 43 58	09 10 32 36	08 11 19 13	07 19 42 01	04 14 08 23	10 05 50 17	–21 56	–15 37	09 24	20 38	11
12	08 27 10 17	10 08 55 39	02 02 28 32	09 12 07 57	08 11 32 45	07 20 55 14	04 14 05 56	10 05 47 06	–21 47	–10 02	09 56	21 40	12
13	08 28 11 26	10 22 15 52	02 02 13 51	09 13 42 14	08 11 46 16	07 22 08 30	04 14 03 24	10 05 43 55	–21 37	–3 57	10 26	22 41	13
14	08 29 12 34	11 05 48 31	02 01 59 56	09 15 15 10	08 11 59 46	07 23 21 49	04 14 00 45	10 05 40 44	–21 27	+2 25	10 56	23 44	14
15	09 00 13 42	11 19 34 13	02 01 46 48	09 16 46 27	08 12 13 14	07 24 35 09	04 13 58 01	10 05 37 34	–21 16	+8 45	11 26	— —	15
16	09 01 14 49	00 03 33 06	02 01 34 29	09 18 15 41	08 12 26 40	07 25 48 32	04 13 55 11	10 05 34 23	–21 06	+14 46	12 00	00 49	16
17	09 02 15 56	00 17 44 36	02 01 22 57	09 19 42 27	08 12 40 04	07 27 01 57	04 13 52 16	10 05 31 12	–20 54	+20 05	12 40	01 57	17
18	09 03 17 01	01 02 06 51	02 01 12 14	09 21 06 16	08 12 53 26	07 28 15 24	04 13 49 15	10 05 28 01	–20 43	+24 19	13 26	03 08	18
19	09 04 18 06	01 16 36 28	02 01 02 19	09 22 26 32	08 13 06 46	07 29 28 53	04 13 46 09	10 05 24 51	–20 30	+27 04	14 22	04 19	19

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (20 जन. से 29 फर. तक) 1 फर., 2008 ई. को अयनांश 23°/58'/22"

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रांति	चं. क्रांति	जालन्धर (भा. स्टै. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	फ़र

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट

(20 जन. से 29 फर. तक) 1 फर., 2008 ई. को अयनांश 23°/58'/22''

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रांति	चं. क्रांति	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	जनवरी
जन.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
20	09 05 19 10	02 01 08 35	02 00 53 14	09 23 42 40	08 13 20 05	08 00 42 24	04 13 42 58	10 05 21 40	-20 18	+27 59	15 25	05 27	20
21	09 06 20 13	02 15 37 15	02 00 44 57	09 24 53 58	08 13 33 20	08 01 55 57	04 13 39 43	10 05 18 29	-20 05	+26 59	16 33	06 26	21
22	09 07 21 15	02 29 56 15	02 00 37 30	09 25 59 41	08 13 46 34	08 03 09 32	04 13 36 22	10 05 15 18	-19 52	+24 12	17 43	07 18	22
23	09 08 22 17	03 13 59 58	02 00 30 50	09 26 59 00	08 13 59 45	08 04 23 09	04 13 32 56	10 05 12 08	-19 38	+20 00	18 52	08 00	23
24	09 09 23 18	03 27 44 10	02 00 25 01	09 27 51 04	08 14 12 54	08 05 36 48	04 13 29 25	10 05 08 57	-19 24	+14 48	19 57	08 37	24
25	09 10 24 18	04 11 06 32	02 00 19 58	09 28 35 02	08 14 26 00	08 06 50 28	04 13 25 50	10 05 05 46	-19 10	+9 02	20 58	09 08	25
26	09 11 25 18	04 24 06 39	02 00 15 44	09 29 10 05	08 14 39 04	08 08 04 11	04 13 22 10	10 05 02 35	-18 55	+3 02	21 55	09 36	26
27	09 12 26 17	05 06 45 55	02 00 12 17	09 29 35 25	08 14 52 05	08 09 17 55	04 13 18 26	10 04 59 25	-18 40	-2 55	22 52	10 04	27
28	09 13 27 16	05 19 07 12	02 00 09 38	09 29 50 20	08 15 05 03	08 10 31 41	04 13 14 38	10 04 56 14	-18 25	-8 36	23 48	10 30	28
29	09 14 28 13	06 01 14 21	02 00 07 45	09 29 54 19	08 15 17 52	08 11 45 29	04 13 10 45	10 04 53 03	-18 09	-13 52	— —	10 58	29
30	09 15 29 11	06 13 11 52	02 00 06 38	09 29 46 58	08 15 30 52	08 12 59 18	04 13 06 48	10 04 49 52	-17 53	-18 33	00 44	11 29	30
31	09 16 30 07	06 25 04 32	02 00 06 18	09 29 28 18	08 15 43 41	08 14 13 09	04 13 02 48	10 04 46 41	-17 37	-22 28	01 42	12 03	31
फर.	09 17 31 03	07 06 57 10	02 00 06 43	09 28 58 31	08 15 56 28	08 15 27 01	04 12 58 43	10 04 43 30	-17 20	-25 29	02 39	12 43	फर.
2	09 18 31 58	07 18 54 19	02 00 07 54	09 28 18 14	08 16 09 11	08 16 40 55	04 12 54 35	10 04 40 20	-17 03	-27 23	03 35	13 29	2
3	09 19 32 52	08 01 00 03	02 00 09 48	09 27 28 25	08 16 21 51	08 17 54 49	04 12 50 24	10 04 37 09	-16 46	-28 01	04 31	14 21	3
4	09 20 33 45	08 13 17 41	02 00 12 27	09 26 30 25	08 16 34 28	08 19 08 45	04 12 46 09	10 04 33 58	-16 28	-27 18	05 21	15 19	4
5	09 21 34 38	08 25 49 47	02 00 15 48	09 25 25 50	08 16 47 01	08 20 22 42	04 12 41 50	10 04 30 47	-16 11	-25 11	06 07	16 19	5
6	09 22 35 29	09 08 37 45	02 00 19 53	09 24 16 36	08 16 59 31	08 21 36 40	04 12 37 29	10 04 27 37	-15 52	-21 46	06 49	17 23	6
7	09 23 36 19	09 21 42 04	02 00 24 39	09 23 04 44	08 17 11 57	08 22 50 39	04 12 33 04	10 04 24 26	-15 34	-17 12	07 24	18 26	7
8	09 24 37 08	10 05 02 09	02 00 30 07	09 21 52 16	08 17 24 19	08 24 04 39	04 12 28 37	10 04 21 15	-15 15	-11 43	07 57	19 30	8
9	09 25 37 56	10 18 36 35	02 00 36 16	09 20 41 11	08 17 36 37	08 25 18 40	04 12 24 07	10 04 18 04	-14 56	-5 35	08 28	20 33	9
10	09 26 38 42	11 02 23 18	02 00 43 04	09 19 33 16	08 17 48 52	08 26 32 41	04 12 19 35	10 04 14 54	-14 37	+0 53	08 58	21 36	10
11	09 27 39 27	11 16 19 53	02 00 50 32	09 18 30 02	08 18 01 02	08 27 46 43	04 12 15 00	10 04 11 43	-14 18	+7 22	09 29	22 42	11
12	09 28 40 10	00 00 23 51	02 00 58 39	09 17 32 43	08 18 13 08	08 29 00 45	04 12 10 23	10 04 08 32	-13 58	+13 33	10 02	23 50	12
13	09 29 40 52	00 14 32 45	02 01 07 22	09 16 42 15	08 18 25 10	09 00 14 48	04 12 05 44	10 04 05 21	-13 38	+19 04	10 40	— —	13
14	10 00 41 32	00 28 44 12	02 01 16 43	09 15 59 12	08 18 37 07	09 01 28 51	04 12 01 04	10 04 02 11	-13 18	+23 32	11 23	01 00	14
15	10 01 42 10	01 12 55 57	02 01 26 39	09 15 23 57	08 18 49 01	09 02 42 55	04 11 56 21	10 03 59 00	-12 58	+26 36	12 14	02 09	15
16	10 02 42 47	01 27 05 41	02 01 37 11	09 14 56 37	08 19 00 49	09 03 56 59	04 11 51 38	10 03 55 49	-12 37	+27 59	13 12	03 17	16
17	10 03 43 21	02 11 11 02	02 01 48 17	09 14 37 09	08 19 12 33	09 05 11 04	04 11 46 52	10 03 52 38	-12 16	+27 32	14 18	04 17	17
18	10 04 43 54	02 25 09 27	02 01 59 57	09 14 25 20	08 19 24 13	09 06 25 09	04 11 42 [illegible]	10 03 49 28	-11 56	+25 21	15 26	05 10	18
19	10 05 44 26	03 08 58 21	02 02 12 09	09 14 20 53	08 19 35 47	09 07 39 15	04 11 37 [illegible]	10 03 46 17	-11 34	+21 40	16 34	05 55	19
20	10 06 44 55	03 22 35 17	02 02 24 53	09 14 23 28	08 19 47 16	09 08 53 21	04 11 32 30	10 03 43 06	-11 13	+16 51	17 39	06 33	20
21	10 07 45 23	04 05 58 07	02 02 38 08	09 14 32 40	08 19 58 41	09 10 07 28	04 11 27 42	10 03 39 55	-10 52	+11 18	18 41	07 06	21
22	10 08 45 49	04 19 05 21	02 02 51 54	09 14 48 04	08 20 10 01	09 11 21 35	04 11 22 52	10 03 36 45	-10 30	+5 22	19 41	07 35	22
23	10 09 46 14	05 01 56 19	02 03 06 09	09 15 09 16	08 20 21 16	09 12 35 43	04 11 18 02	10 03 33 34	-10 08	-0 40	20 38	08 03	23
24	10 10 46 38	05 14 31 21	02 03 20 54	09 15 35 50	08 20 32 25	09 13 49 51	04 11 13 12	10 03 30 23	-9 46	-6 32	21 35	08 30	24
25	10 11 46 59	05 26 51 44	02 03 36 06	09 16 07 25	08 20 43 29	09 15 03 59	04 11 08 22	10 03 27 12	-9 24	-12 02	22 33	08 58	25
26	10 12 47 20	06 08 59 49	02 03 51 47	09 16 43 37	08 20 54 28	09 16 18 09	04 11 03 31	10 03 24 02	-9 02	-17 00	23 29	09 28	26
27	10 13 47 38	06 20 58 46	02 04 07 55	09 17 24 05	08 21 05 21	09 17 32 18	04 10 58 41	10 03 20 51	-8 39	-21 14	— —	10 00	27
28	10 14 47 56	07 02 52 30	02 04 24 29	09 18 08 31	08 21 16 09	09 18 46 28	04 10 53 52	10 03 17 40	-8 17	-24 35	00 27	10 39	28
29	10 15 48 12	07 14 45 22	02 04 41 29	09 18 56 37	08 21 26 51	09 20 00 39	04 10 49 03	10 03 14 29	-7 54	-26 52	01 24	11 21	29

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (1 मार्च से 10 अप्रैल तक) 1 मार्च, 2008 ई. को अयनांश 23°/58′/26″ 1 अप्रै., 2008 ई. को अयनांश 23°/58′/30″

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रांति	चं. क्रांति	जालन्धर (भा. स्टै. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	ता.
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	मार्च
मार्च	10 16 48 26	07 26 42 03	02 04 58 55	09 19 48 08	08 21 37 28	09 21 14 49	04 10 44 15	10 03 11 19	−7 32	−27 57	02 19	12 10	मार्च
2	10 17 48 39	08 08 47 17	02 05 16 45	09 20 42 49	08 21 47 58	09 22 29 00	04 10 39 27	10 03 08 08	−7 09	−27 44	03 11	13 05	2
3	10 18 48 50	08 21 05 32	02 05 35 00	09 21 40 26	08 21 58 23	09 23 43 12	04 10 34 41	10 03 04 57	−6 46	−26 08	03 59	14 04	3
4	10 19 49 00	09 03 40 46	02 05 53 39	09 22 40 48	08 22 08 41	09 24 57 23	04 10 29 55	10 03 01 46	−6 23	−23 13	04 42	15 06	4
5	10 20 49 08	09 16 36 01	02 06 12 41	09 23 43 44	08 22 18 53	09 26 11 35	04 10 25 12	10 02 58 35	−5 59	−19 05	05 20	16 09	5
6	10 21 49 14	09 29 53 01	02 06 32 06	09 24 49 03	08 22 28 59	09 27 25 46	04 10 20 29	10 02 55 25	−5 36	−13 55	05 54	17 13	6
7	10 22 49 19	10 13 31 48	02 06 51 54	09 25 56 39	08 22 38 58	09 28 39 58	04 10 15 49	10 02 52 14	−5 13	−07 56	06 26	18 18	7
8	10 23 49 22	10 27 30 38	02 07 12 03	09 27 06 22	08 22 48 51	09 29 54 10	04 10 11 10	10 02 49 03	−4 49	−01 26	06 57	19 22	8
9	10 24 49 23	11 11 45 52	02 07 32 34	09 28 18 06	08 22 58 37	10 01 08 22	04 10 06 33	10 02 45 52	−4 26	+05 14	07 29	20 29	9
10	10 25 49 22	11 26 12 22	02 07 53 25	09 29 31 45	08 23 08 17	10 02 22 33	04 10 01 59	10 02 42 41	−4 02	+11 44	08 02	21 38	10
11	10 26 49 19	00 10 44 10	02 08 14 37	10 00 47 13	08 23 17 50	10 03 36 45	04 09 57 26	10 02 39 30	−3 39	+17 37	08 39	22 49	11
12	10 27 49 13	00 25 15 17	02 08 36 09	10 02 04 25	08 23 27 14	10 04 50 56	04 09 52 57	10 02 36 20	−3 15	+22 30	09 30	23 59	12
13	10 28 49 06	01 09 40 33	02 08 58 00	10 03 23 17	08 23 36 33	10 06 05 06	04 09 48 30	10 02 33 09	−2 52	+25 59	10 10	— —	13
14	10 29 48 56	01 23 56 03	02 09 20 10	10 04 43 47	08 23 45 44	10 07 19 17	04 09 44 05	10 02 29 58	−2 28	+27 46	11 07	01 10	14
15	11 00 48 44	02 07 59 20	02 09 42 39	10 06 05 50	08 23 54 49	10 08 33 27	04 09 39 44	10 02 26 47	−2 04	+27 44	12 11	02 12	15
16	11 01 48 30	02 21 49 18	02 10 05 25	10 07 29 23	08 24 03 46	10 09 47 37	04 09 35 26	10 02 23 37	−1 41	+25 58	13 17	03 07	16
17	11 02 48 12	03 05 25 46	02 10 28 28	10 08 54 25	08 24 12 35	10 11 01 47	04 09 31 11	10 02 20 26	−1 17	+22 41	14 23	03 54	17
18	11 03 47 53	03 18 49 03	02 10 51 49	10 10 20 53	08 24 21 17	10 12 15 56	04 09 26 59	10 02 17 15	−0 53	+18 15	15 28	04 32	18
19	11 04 47 32	04 01 59 40	02 11 15 26	10 11 48 45	08 24 29 52	10 13 30 05	04 09 22 51	10 02 14 04	−0 29	+13 00	16 30	05 06	19
20	11 05 47 09	04 14 58 07	02 11 39 18	10 13 18 01	08 24 38 19	10 14 44 14	04 09 18 46	10 02 10 53	−0 06	+07 16	17 30	05 36	20
21	11 06 46 44	04 27 44 45	02 12 03 27	10 14 48 38	08 24 46 38	10 15 58 23	04 09 14 45	10 02 07 43	+0 18	+01 20	18 27	06 04	21
22	11 07 46 16	05 10 19 52	02 12 27 51	10 16 20 39	08 24 54 49	10 17 12 31	04 09 10 48	10 02 04 32	+0 42	−04 34	19 25	06 32	22
23	11 08 45 47	05 22 43 55	02 12 52 29	10 17 53 59	08 25 02 52	10 18 26 39	04 09 06 55	10 02 01 21	+1 05	−10 11	20 21	06 59	23
24	11 09 45 16	06 04 57 38	02 13 17 22	10 19 28 40	08 25 10 48	10 19 40 48	04 09 03 05	10 01 58 10	+1 29	−15 21	21 18	07 27	24
25	11 10 44 42	06 17 02 18	02 13 42 30	10 21 04 42	08 25 18 35	10 20 54 56	04 08 59 20	10 01 55 00	+1 52	−19 50	22 16	08 00	25
26	11 11 44 07	06 28 59 51	02 14 07 51	10 22 42 04	08 25 26 14	10 22 09 03	04 08 55 39	10 01 51 49	+2 16	−23 29	23 13	08 35	26
27	11 12 43 30	07 10 52 59	02 14 33 26	10 24 20 46	08 25 33 44	10 23 23 11	04 08 52 03	10 01 48 38	+3 40	−26 08	— —	09 16	27
28	11 13 42 51	07 22 45 04	02 14 59 14	10 26 00 49	08 25 41 07	10 24 37 18	04 08 48 31	10 01 45 27	+3 03	−27 37	00 10	10 02	28
29	11 14 42 11	08 04 40 14	02 15 25 15	10 27 42 13	08 25 48 20	10 25 51 26	04 08 45 04	10 01 42 17	+3 26	−27 49	01 03	10 53	29
30	11 15 41 28	08 16 43 03	02 15 51 30	10 29 25 00	08 25 55 25	10 27 05 33	04 08 41 41	10 01 39 06	+3 50	−26 44	01 51	11 50	30
31	11 16 40 44	08 28 58 25	02 16 17 56	11 01 09 08	08 26 02 21	10 28 19 40	04 08 38 23	10 01 35 55	+4 13	−24 20	02 35	12 50	31
अप्रै.	11 17 39 58	09 11 31 12	02 16 44 36	11 02 54 39	08 26 09 09	10 29 33 47	04 08 35 10	10 01 32 44	+4 36	−20 43	03 14	13 52	अप्रै.
2	11 18 39 10	09 24 25 51	02 17 11 27	11 04 41 34	08 26 15 47	11 00 47 53	04 08 32 02	10 01 29 34	+4 59	−16 02	03 50	14 54	2
3	11 19 38 21	10 07 45 41	02 17 38 30	11 06 29 54	08 26 22 16	11 02 01 59	04 08 28 59	10 01 26 23	+5 22	−10 27	04 22	15 57	3
4	11 20 37 29	10 21 32 24	02 18 05 45	11 08 19 38	08 26 28 37	11 03 16 05	04 08 26 01	10 01 23 12	+5 45	−4 12	04 53	17 02	4
5	11 21 36 36	11 05 45 13	02 18 33 11	11 10 10 47	08 26 34 47	11 04 30 11	04 08 23 08	10 01 20 01	+6 08	+2 27	05 25	18 08	5
6	11 22 35 41	11 20 20 32	02 19 00 49	11 12 03 22	08 26 40 49	11 05 44 16	04 08 20 21	10 01 16 50	+6 31	+09 07	05 57	19 17	6
7	11 23 34 43	00 05 11 54	02 19 28 38	11 13 57 23	08 26 46 41	11 06 58 21	04 08 17 39	10 01 13 40	+6 53	+15 25	06 35	20 30	7
8	11 24 33 44	00 20 10 44	02 19 56 37	11 15 52 49	08 26 52 23	11 08 12 25	04 08 15 03	10 01 10 29	+7 16	+20 50	07 15	21 44	8
9	11 25 32 43	01 05 07 44	02 20 24 47	11 17 49 39	08 26 57 56	11 09 26 28	04 08 12 32	10 01 07 18	+7 38	+24 55	08 03	22 56	9
10	11 26 31 39	01 19 54 22	02 20 53 07	11 19 47 53	08 27 03 19	11 10 40 31	04 08 10 07	10 01 04 07	+8 01	+27 17	09 00	24 03	10

यूरेनस, नैपच्यून एवं प्लूटो ग्रहों का निरयण मान क्रमशः 5/30 बढ़े भा. स्टै. टा. वि. २०६४ (2007–08 ई.)

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यूरेनस, नैपच्यून एवं प्लूटो ग्रहों का निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे भा. स्टै. टा. वि. २०६४ (2007-08 ई.)

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
1	10 20 27 24	9 26 18	8 04 46
4	10 20 37 45	9 26 25	8 04 49
7	10 20 48 01	9 26 31	8 04 51
10	10 20 58 21	9 26 37	8 04 53
13	10 21 08 38	9 26 43	8 04 55
16	10 21 18 51	9 26 49	8 04 57
19	10 21 29 03	9 26 55	8 04 58
22	10 21 39 08	9 27 01	8 04 59
25	10 21 49 02	9 27 06	8 05 00
28	10 21 58 56	9 27 11	8 05 00
31	10 22 08 38	9 27 16	8 05 00
अप्रै.	10 22 11 49	9 27 18	8 05 00
4	10 22 21 20	9 27 23	8 05 00
7	10 22 31 38	9 27 28	8 05 00
10	10 22 39 49	9 27 32	8 04 59
13	10 22 48 44	9 27 36	8 04 58
16	10 22 57 25	9 27 40	8 04 56
19	10 23 05 50	9 27 43	8 04 55
22	10 23 14 02	9 27 47	8 04 53
25	10 23 21 55	9 27 50	8 03 51
28	10 23 29 32	9 27 52	8 04 48
मई	10 23 36 49	9 27 55	8 04 46
4	10 23 43 44	9 27 57	8 04 43
7	10 23 50 26	9 27 59	8 04 40
10	10 23 56 43	9 28 01	8 04 36
13	10 24 02 38	9 28 02	8 04 33
16	10 24 08 13	9 28 03	8 04 29
19	10 24 13 26	9 28 04	8 04 25
22	10 24 18 20	9 28 04	8 04 21
25	10 24 22 43	9 28 04	8 04 17
28	10 24 26 40	9 28 04	8 04 13
31	10 24 30 20	9 28 04	8 04 09
जून	10 24 31 26	9 28 04	8 04 07
4	10 24 34 32	9 28 03	8 04 03
7	10 24 37 08	9 28 02	8 03 58

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
जून	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
10	10 24 39 20	9 28 00	8 03 54
13	10 24 41 02	9 27 59	8 03 49
16	10 24 42 26	9 27 57	8 03 44
19	10 24 43 20	9 27 55	8 03 40
22	10 24 43 44	9 27 52	8 03 35
25	10 24 43 43	9 27 49	8 03 30
28	10 24 43 20	9 27 47	8 03 26
30	10 24 42 50	9 27 45	8 03 23
जुला	10 24 42 32	9 27 43	8 03 21
4	10 24 41 14	9 27 40	8 03 17
7	10 24 39 32	9 27 37	8 03 12
10	10 24 37 25	9 27 33	8 03 08
13	10 24 34 56	9 27 29	8 03 03
16	10 24 32 02	9 27 25	8 02 59
19	10 24 28 37	9 27 21	8 02 55
22	10 24 25 02	9 27 16	8 02 52
25	10 24 20 56	9 27 12	8 02 48
28	10 24 16 32	9 27 07	8 02 44
31	10 24 11 50	9 27 02	8 02 41
अग.	10 24 10 14	9 27 01	8 02 40
4	10 24 05 02	9 26 56	8 02 37
7	10 23 59 38	9 26 51	8 02 34
10	10 23 53 56	9 26 46	8 02 32
13	10 23 47 54	9 26 41	8 02 29
16	10 24 41 44	9 26 36	8 02 26
19	10 23 35 20	9 26 32	8 02 27
22	10 23 28 44	9 26 27	8 02 24
25	10 23 21 56	9 26 22	8 02 23
28	10 23 15 02	9 26 17	8 02 22
31	10 23 08 02	9 26 12	8 02 21
सितं.	10 23 05 38	9 26 11	8 02 21
4	10 22 58 32	9 26 06	8 02 20
7	10 22 51 20	9 26 02	8 02 20
10	10 22 44 07	9 25 58	8 02 20
13	10 22 36 56	9 25 53	8 02 21

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
सितं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
16	10 22 29 50	9 25 49	8 02 21
19	10 22 22 38	9 25 46	8 02 23
22	10 22 15 36	9 25 42	8 02 24
25	10 22 08 43	9 25 38	8 02 25
28	10 22 01 56	9 25 35	8 02 27
30	10 21 57 32	9 25 32	8 02 29
अक्टू.	10 21 55 20	9 25 32	8 02 30
4	10 21 48 56	9 25 30	8 02 32
7	10 21 42 38	9 25 27	8 02 35
10	10 21 36 37	9 25 25	8 02 38
13	10 21 30 56	9 25 23	8 02 41
16	10 21 25 32	9 25 21	8 02 44
19	10 21 20 20	9 25 19	8 02 48
22	10 21 15 32	9 25 19	8 02 52
25	10 12 11 02	9 25 18	8 02 56
28	10 21 06 56	9 25 17	8 03 01
31	10 21 03 41	9 25 17	8 03 06
नवं.	10 21 02 03	9 25 17	8 03 07
4	10 20 58 50	9 25 17	8 03 12
7	10 20 56 02	9 25 17	8 03 17
10	10 20 53 38	9 25 18	8 03 23
13	10 20 51 38	9 25 19	8 03 28
16	10 20 50 08	9 25 21	8 03 34
19	10 20 49 08	9 25 22	8 03 40
22	10 20 48 32	9 25 24	8 03 46
25	10 20 48 20	9 25 27	8 03 52
28	10 20 48 38	9 25 29	8 03 58
30	10 20 49 08	9 25 31	8 04 02
दिस.	10 20 49 26	9 25 32	8 04 04
4	10 20 50 38	9 25 35	8 04 11
7	10 20 52 20	9 25 39	8 04 17
10	10 20 54 26	9 25 43	8 04 24
13	10 20 57 08	9 25 46	8 04 30
16	10 21 00 08	9 25 51	8 04 37
19	10 21 03 38	9 25 55	8 04 44

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
दिसं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
22	10 21 07 38	9 26 00	8 04 50
25	10 21 12 02	9 26 05	8 04 57
28	10 21 16 44	9 26 10	8 05 03
31	10 21 22 02	9 26 15	8 05 10
जन. 2008	10 21 23 50	9 26 17	8 05 12
4	10 21 29 32	9 26 23	8 05 19
7	10 21 35 38	9 26 29	8 05 25
10	10 21 42 08	9 26 34	8 05 31
13	10 21 49 02	9 26 41	8 05 38
16	10 21 56 08	9 26 47	8 05 44
19	10 22 03 44	9 26 53	8 05 50
22	10 22 11 32	9 27 00	8 05 56
25	10 22 19 37	9 27 06	8 06 01
28	10 22 28 02	9 27 13	8 06 07
31	10 22 36 38	9 27 20	8 06 12
फर.	10 22 39 32	9 27 22	8 06 14
4	10 22 48 31	9 27 29	8 06 19
7	10 22 57 44	9 27 35	8 06 24
10	10 23 07 08	9 27 42	8 06 29
13	10 23 16 38	9 27 49	8 06 34
16	10 23 26 20	9 27 56	8 06 38
19	10 23 36 14	9 28 03	8 06 42
22	10 23 46 14	9 28 09	8 06 46
25	10 23 56 20	9 28 16	8 06 49
28	10 24 06 26	9 28 23	8 06 53
मार्च	10 24 13 14	9 28 27	8 06 55
4	10 24 23 31	9 28 34	8 06 57
7	10 24 33 50	9 28 40	8 07 00
10	10 24 44 08	9 28 46	8 07 02
13	10 24 54 27	9 28 53	8 07 04
16	10 25 04 44	9 28 59	8 07 06
19	10 25 14 56	9 29 05	8 07 08
22	10 25 25 03	9 29 10	8 07 09
25	10 25 35 08	9 29 16	8 07 10
28	10 25 45 07	9 29 21	8 07 10

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शुद्ध एवं शुभ विवाह मुहूर्त्त–वि. संवत् २०६४ (सं. २००७-०८ ई.)

समय शुद्धि विचार—

ज्येष्ठ अधिक मास—17 मई से 15 जून (2007 ई०) के मध्य ज्येष्ठ अधिक मास रहेगा। अधिक मास में विवाहादि शुभ कार्य गुरू शुक्रास्त की भांति शास्त्रकारों ने वर्जित कहे हैं—

गृह प्रवेशश्चूडामौंजी बंध विवाहास्तीर्थादि यात्रा वास्तु कर्मे तान्यधिवर्ज्यानि॥ (धर्मसिन्धु)

त्रयोदश (तेरह) दिन का पक्ष—श्रावण कृष्ण पक्ष (30 जुला. से 12 अग. के मध्य) में दो तिथियों (प्रतिपदा एवं त्रयोदशी) का क्षय होने से "त्रयोदश दिनात्मक" (तेरह दिन वाला) विश्वघस्र पक्ष बना है। मुहूर्त्त शास्त्रों में इस पक्ष में भी विवाह, मुण्डन, गृह प्रवेश, उपनयन आदि शुभ कृत्य वर्जित कहे हैं—

उपनयनं परिणयनं तु वेश्मारम्भादि कर्माणि। यात्रा–द्विक्षयपक्षे कुर्यात् न जिजीविषु पुरूषः॥ (ज्योतिर्निबन्ध)

शुक्रास्त—7 अगस्त से 23 अगस्त तक शुक्र पश्चिम में अस्त रहेगा। अस्त से तीन दिन पूर्व वार्धक्य तथा उदय होने के तीन दिन पश्चात् शुक्र बाल्यत्व दोष रहेगा।

खग्रास चन्द्रग्रहण (28 अग. मंगलवार)—यह ग्रहण ग्रस्तोदय रूप में अरूणांचल, मेघालय, त्रिपुरा एवं असम व बंगाल के सुदूर पूर्वी क्षेत्रों में अल्पकाल के लिए दृश्य होगा। शेष भारत के अधिकांश भागों जैसे—उ. प्र., पंजाब, हिमाचल, राजस्थान, जम्मू-कश्मीर, उत्तरांचल, दिल्ली, हरियाणा, महाराष्ट्र, गुजरात, म. प्रदेश आदि में दिखाई नहीं देगा। अतएव इन स्थानों पर विवाह आदि शुभ कार्यों में निषेधादि का महत्त्व नहीं होगा।

श्राद्ध एवं पितृपक्ष—26 सितम्बर से 11 अक्तूबर तक श्राद्ध रहेंगे। अतएव इन दिनों के मध्य शुभ मुहूर्त्त नहीं लगाए गए हैं।

गुरू अस्तोदय—10 दिसम्बर से 5 जनवरी (2008 ई०) के मध्य गुरु पश्चिम में अस्त रहेगा। अस्त से तीन दिन पूर्व गुरु वार्धक्य तथा तीन दिन पश्चात् गुरु बाल्यत्व दोष रहेगा।

पौष मास—16 दिसं. से 13 जन. 2008 ई. तक पौष मास में विवाहादि शुभ कार्य नहीं किए जाते।

भीष्मपंचक—20 नवम्बर से 24 नवम्बर के मध्य भीष्मपंचक रहेंगे। इनमें विवाह आदि शुभ कार्यों के निषेध के सम्बन्ध में शास्त्रों में स्पष्टतः निर्देश नहीं मिलते। हिमाचल प्रदेश में इसके बारे कहीं-कहीं विचार किया जाता है।

नीचे विवाह मुहूर्त्तों में लता (१), पात (२), युति (३), वेध (४), जामित्र (५), मृत्युबाण (६), एकार्गल (७), उपग्रह (८), क्रान्तिसाम्य (९), दग्धा तिथि (१०)—इस क्रमानुसार दस गुण दोषों की गणना की गई हैं। सीधी रेखा (।) दोषाभाव अर्थात् गुण की सूचक है जबकि आड़ी रेखा (S) दोष की सूचक है। मुहूर्त्तों में क्रूर ग्रह की युति, वेध, मृत्युबाण, क्रान्तिसाम्य, भद्रादि दोषों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। परन्तु जहाँ पर इन दोषों के शास्त्र सम्मत परिहार मिल जाते हैं, वहाँ सम्बद्ध ग्रह की पूजा, दानादि के पश्चात् विवाह मुहूर्त्त को शुभ एवं ग्राह्य मान लिया गया है। **मुहूर्त्तों में सूक्ष्म क्रान्ति-साम्य गणित प्रक्रिया का आश्रय** लिया गया है।

विवाह मुहूर्त्तों में लग्न विवरण में १ को मेष, २ को वृष, ३ को मिथुन, ४ को कर्क, ५ को सिंह, ६ को कन्या, ७ को तुला, ८ को वृश्चिक, ९ को धनु, १० को मकर, ११ को कुम्भ तथा १२ की संख्या को मीन लग्न जानें॥

नोट—आगे **वृश्चिक और धनु राशि में संचरण काल में गुरु द्वारा मीन, कर्क, वृष एवं मेष लग्नों पर** दृष्टि पड़ने के कारण **परिहारस्वरूप इन लग्नों को प्रशस्त एवं ग्राह्य मान लिया गया है।**

❖ वैशाख मासे ❖ (अप्रैल–मई) सन् २००७ ई.

दि. ल. = दिन लग्न——रा. ल. = रात्रि लग्न

पक्ष	तिथि	वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण–दोष रेखाएँ	शुद्ध विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घं./मिं में)
वैशा. शुक्ल	२/३	गुरू	19 अप्रै.	६ वैशा.	रोहिणी	वृष	।।Sशु. ।।।।।।।	रा. ल. १२ (मीने मं.-शु. का दान), (अक्षया तीज), (शुक्र युति परिहार.)
वैशा. शुक्ल	३/४	शुक्र	20 अप्रै.	७ वैशा.	रोहिणी	वृष	।।Sशु. ।।S चौ. ।।।।	दि. ल. २ (चं. गु. का दान), ३ (चं. दा.), ६ (बु. सप्तमे दान), गोधूली रा. ल. ८ (शु. रा. का दान)॥ कन्या व वृश्चि. लग्ने, भद्रा स्वर्गे शुभप्रदा॥
वैशा. शुक्ल	४	शुक्रे	20 अप्रै.	७ वैशा.	मृग.	वृष	S शु.।।।Sगु.S चो S S ।।	रा. ल. १२ (मीने मं. शु का दान)
वैशा. शु.	५	शनि	21 अप्रै.	८ वैशा.	मृग.	वृ./मिथु.	S रा. ।।।S गु. ।S S।।	दि. ल. २ (चं गु. दान), ३ (चं. दा.), ६ (बु. दा.), गोधूली च. रा. ल. ८ (च.दा.), वृश्चिके अष्टम चंद्र परिहारः, गणितेन क्रान्तिसाम्यSभावः
वैशा. शु.	१०	गुरु	26 अप्रै.	१३ वैशा.	मघा	सिंह	।S ।।।।।S ।।	दि. ल. २ (गुरु 7वें पू. दान वा), गोधूली च. रा. ल. ८ (शुक्र 7वें पूज्य-दान वा) क्रान्तिसाम्य अभावः
वैशा. शु.	१२	शनि	28 अप्रै.	१५ वैशा.	उ.फा.	सिं/कन्या	।।।।S मं.।S व्या.।।।	दि. ल. २ (गु. 7वें पू. दान व. वृष ल. 8/14 उप.), ३; गोधूली, दिवसलग्ने व्याघात योगे श्रीहनुमद की पूजा, रा. ल. ८ (शु. रा. दान), १२ (चं.दा.)
वैशा. शु.	१२	रवि	29 अप्रै.	१६ वैशा.	उ.फा.	कन्या	।।।। S मं.।S व्या ।।।	दि. ल. २ (गु. दा.), ३ (बु. दा.) (वृष लग्ने व्याघात, श्री हनुमद् पूजा)
वैशा. शु.	१२	रवि	29 अप्रै.	१६ वैशा.	हस्त	कन्या	S सू. S।।। S चो. ।।।।	ल. गोधू., रा. ल. ८ (शु.-रा. का दान), १२ (चं. दा.)
वैशा. शु.	१३	चन्द्रे	30 अप्रै.	१७ वैशा.	हस्त	कन्या	S सू. S ।।। S ।।।।	दि. ल. २ (गु. दा.), ३ (बु. दा.)
ज्ये. कृष्ण	३/४	शनि	5 मई	२२ वैशा.	मूल	धनु	।।।।।।।S ।।	रा. ल. १२ (चं. दा., मीन लग्न 27.13 के बाद)
प्र. ज्ये. कृ.	४	रवि	6 मई	२३ वैशा.	मूल	धनु	।।।।।।।।S ।।	दि. ल. ३ (चं. बु. दा.), गोधूलि, रा. ल. १२ (मं. दा.)
प्र. ज्ये. कृ.	६	मंग.	8 मई	२५ वैशा.	उषा.	धनु		रा. ल. ९ (शु. दा.) धनु में भद्रा पाताले शुभप्रदा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पक्ष	तिथि	वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लग्नादि दश गुण–दोष रेखाएं	शुद्ध विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घ. मि में)
प्र. ज्ये. कृ.	६	मंग.	8 मई	२५ वैशा.	उषा.	धनु/मक.	। S सा. । S शु. । । । । । S	दि. ल. ३ (चं. मं. दान), गोधू., रा. ल. ९ (शु. दा.) धनु में भद्रा पाताले शुभप्रदा।
प्र. ज्ये. कृ.	७	बुधे	9 मई	२६ वैशा.	श्रवण	मकर	। । । । । S चौ. । । । ।	ल. गोधूलि, रात्रि ल. ९ (धनु में शुक्र ७वें पूज्य दान व)

❖ आषाढ़ मास ❖ (जून–जुलाई)

द्वि. ज्ये. शु.	५	मंग.	19 जून	५ आषा.	मघा	सिंह	। S हर्ष. । । । S नृ. । । । ।	दि. ल. ८ (राहु दान), गोधूलि, रा. ल. २ (गु. व मं. पूज्य दान वा.)
द्वि. ज्ये. शु.	६	बुध	20 जून	६ आषा.	मघा	सिंह	। S । । । । । । । ।	दि. ल. ८ (राहु दान), गोधू., रात्रौ लग्नSभावः
द्वि. ज्ये. शु.	७	गुरु	21 जून	७ आषा.	उ.फा.	सिंह	। । । । । । S चौ. । । । ।	रात्रौ लग्न २ (वृषे गुरु सप्तम, शुक्र ३रे पूज्य दानं वा)
द्वि. ज्ये. शु.७/८		शुक्र	22 जून	८ आषा.	हस्त	कन्या	। । । । । । । । S । S	रात्रि ल. १२ (चंद्र 7वें पूज्य दानं व); २ (वृष लग्ने शु. व. गु. दान)
द्वि. ज्ये. शु.	८	शनि	23 जून	९ आषा.	हस्त	कन्या	। । । । । । । । S । ।	दि. ल. ८ (राहु दान), गोधू., रात्रि ल. १२ (चंद्र 7वें पूज्य दान वा); २ (वृष लग्ने गु. व मं. का दान) वृष ल. 24 जून की प्रातः 4/11 बजे तक
द्वि. ज्ये. शु.८/९		शनि	23 जून	९ आषा.	चित्रा	कन्या	। । । । । । S रो.Sपरि. । । ।	रात्रि लग्न २ (मं. व शु. का दान) परिघ दोष (पूर्वार्धे)
द्वि. ज्ये. शु.	९	रवि	24 जून	१० आषा.	चित्रा	कन्ये/तुले	। । । । । । S रो. S । । ।	सायं ल. ८ (चं. रा. दा.) (गुरु केन्द्रे प्रशस्त), गोधू., रात्रि लग्नाभाव (परिघ विचार प्रातः 8.30 तक)
द्वि. ज्ये. शु.	१२	बुधे	27 जून	१३ आषा.	अनु.	वृश्चिक	Sसू.Sसा. । । । Sअ. । । । ।	दि. ल. ८ (रा. दा. लग्ने चंद्र-गुरु योग प्रशस्तः), गोधूलि च., रात्रि ल. १२, २ (वृष लग्ने चंद्र, गुरु का दान)
द्वि. ज्ये. शु.	१४	शुक्रे	29 जून	१५ आषा.	मूले	धनुषि	। । । । । । Sनृ. । S । ।	दि. ल. ८ (राहु. दा.), गोधूलि, रा. ल. १२ (मीने गुरु दृष्ट्या प्रशस्तः)
द्वि. ज्येष्ठ पूर्णिमा		शनौ	30 जून	१६ आषा.	मूले	धनुषि	। । । । । । । । S । ।	दि. ल. ८ (राहु. दा., वृश्चिक लग्न सायं 17/14 तक ग्राह्य)
आषा. कृष्ण	१	रवि	1 जुला.	१७ आषा.	उ.षा.	ध./मक.	। । । । । । Sचौ. । । । ।	दि. ल. ८ (रा. दा. वृश्चिक ल. 17/51 उप.), गोधूलि रात्रि ल. १२, २ (गु. श. का दान), गणितेन क्रान्ति साम्याभावः
आषा. कृष्ण	२	सोम	2 जुला.	१८ आषा.	श्रवण	मकर	। S । । । । S । । ।	रात्रि ल. १२ (गुरु दृश्ट्या प्रशस्तः), २ (वृषे गुरु दान)
आषा. कृष्ण	३	मंग.	3 जुला.	१९ आषा.	श्रवण	मकर	। S । । । S रो. S । । ।	दि. ल. ८ (राहु. दा., वृश्चि. ल. सायं 17/55 तक), आवश्यके
आषा. कृष्ण	६/७	शुक्रे	6 जुला.	२२ आषा.	उ.भा.	मीन	। । । । । S अ. S । । ।	रात्रि लग्न २ (गु., मं. का दान)
आषा. कृष्ण	७/८	शनि	7 जुला.	२३ आषा.	रेवती	मीन	S बु. । । । । । S । । S	गोधू., रात्रि ल. २ (वृषे गु., मं. का दान)
आषा. कृष्ण	८/९	रवि	8 जुला.	२४ आषा.	रेवती	मीन	Sबु । । । । । S अति । । S	दि. ल. ६ (चं. दा., भौमाष्टम पूज्य दान व), आवश्यके, कन्यालग्ने दग्धतिथि दोषSभावः
आषा. कृष्ण	१२	बुध	11 जुला.	२७ आषा.	रोहिणी	वृष	S मं S गं । । । । । S । ।	दि. ल. ८ (वं. दा., केन्द्रे गुरु शुभः), गोधू., रा. ल. १२ (शु. दा., षष्ठे शुक्र परिहारः), २ (वृषे मं., गु. का दान)

❖ श्रावण मास ❖ (जुलाई—अगस्त)

आषा. शुक्ल	३	मंग.	17 जुला.	२ श्राव.	मघा	सिंह	। । S शु. श. । । S । । । ।	दि. ल. ८ (राहु दा.), ९ (बु. दा.) गोधू., रा. ल. २ (गु. दा.) मिथुन लग्ने 27/53 उपरान्त मृत्युपंचक एवं भद्रादोष॥ क्रूर युति परिहारः)
आषा. शुक्ल	५	गुरु	19 जुला.	४ श्राव.	उ.फा.	सिं/कं.	। Sपरि । । । S अ. । । । S	दि. ल. ८ (रा. दा.), ९ (बु. दा.), गोधू., रा. ल. १२ (शु. दा.), २ (मं. गु. दा.), ३ (शु. दा.)
आषा. शुक्ल	६	शुक्र	20 जुला.	५ श्राव.	हस्त	कन्या	। । । । । । S S । S	दि. ल. ८ (रा. दा., गुरु केन्द्रे शुभः), ९ (बु. दा.), गोधू. रा. ल. १२ (वं. शु. दान), २ (गु., मं. का दान), ३ (शु. का दान)
आषा. शुक्ल	७	शनि	21 जुला.	६ श्राव.	चित्रा	कं./तुले	। । । । । S नृ. S S । ।	दि. ल. ८ (रा. दा., गुरु केन्द्रे शुभः) ९ (बु. का दान), गोधू. रा. ल. १२ (वं. शु का दान), ल. ३ (शु. दा.)–रात्रौ लग्ने भद्रापाताले शुभप्रदा
आषा. शुक्ल	८	रवि	22 जुला.	७ श्राव.	चित्रा	तुला	। । । । । । S S । ।	दि. ल. ८ (वं. रा. दा., केन्द्रे गुरु शुभः) वृश्चिक ल. दुपै. 15/05 तक

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण–दोष रेखाएँ	शुद्ध विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. चं./मिं में)
आषा शुक्ल १० मंग.	24 जुला.	९ श्राव.	अनु.	वृश्चिके	ऽश. ।ऽ गु. । ऽमं. । । ऽ । ।	रात्रि ल. १२ (शु. दा.), २ (चं. गु. का दान), ३ (चं. शु. दान, चंद्र षष्ठ परिहार)
आषा शुक्ल ११ बुधे	25 जुला.	१० श्राव.	अनु.	वृश्चिके	ऽश। ऽ गु । ऽ मं.।। ऽ । ।	दि. ल. ८ (चं., राहु दा., गुरु कन्द्रे शुभः), ९ (चं., बु. दा.), गोधूलि च रात्रि ल. १२ (शु. दा.–मीन ल. रात 22/50 तक) वृश्चिक राशिस्थ भद्रा शुभप्रदा.
आषा शुक्ल११/१२ गुरु	26 जुला.	११ श्राव.	मूले	धनु	ऽसू. । । ऽबु. । । । । । ।	रात्रि लग्न ३ (मिथुने चंद्र-शुक्र पूज्य दान व.)
आषा शुक्ल१३/१४ शनि	28 जुला.	१३ श्राव.	उ.षा.	धनु	। । । । ऽ बु. ऽ अ. ऽ ऽ । ।	रात्रि ल. ३ (शु. मं., व चंद्र का दान)
आषा शुक्ल१४/१५ रवि	29 जुला.	१४ श्राव.	उ.षा.	मकर	। । । । ऽ बु. । ऽ ऽ । ।	दि. ल. ६ (शु., श. दान), ९ (बु. दा.)–कन्या व धनु लग्ने भद्रा पाताल में शुभप्रदा, गोधू. च. रात्रि ल. १२ (शुक्र दान)

30 जुलाई से 12 अगस्त तक त्रयोदश (13) दिन का पक्ष तथा 7 अगस्त से 23 अगस्त तक शुक्रास्त रहेगा॥

❖ भाद्रपद मास ❖ (अगस्त–सितम्बर)

श्राव. शुक्ल १४ चंद्र	27 अग.	११ भाद्र.	धनि.	मकर	। । । ऽ शु. ऽ । ऽ ऽ । ।	दि. ल. ९ (शु. दान)–आवश्यके रात्रौ भद्रा दोष एवं मृत्युबाण दोष व्याप्ति॥
भाद्र. कृष्ण २ गुरु	30 अग.	१४ भाद्र.	रेवती	मीन	। ऽ । ऽ बु । ऽ नृ. ऽ ऽ । ।	रात्रि ल. ४ (कर्क ल. विशेषतः 27/21 उपरांत, लग्ने गुरु दृष्ट्या प्रशस्त)
भाद्र. कृष्ण ३/४ शुक्र	31 अग.	१५ भाद्र.	रेवती	मीन	। ऽ गं. । ऽ बु । । । । । ।	दि. ल. ६ [प्रातः 8/15 तक] (चं., श. दा.) [8/16 से 11/58 तक क्रान्तिसाम्य दोष] प्रातः गंड योग की ६ घटी व्यक्ता, ९ (शु. दा.), गोधू, रा. ल. १२ (चंद्र लग्ने गुरु दृष्ट्या प्रशस्त), ३ (रात्रि 25/11 तक)
भाद्र. कृष्ण ७ चंद्र	3 सितं.	१८ भाद्र.	रोहि.	वृष	। ऽह. ऽमं. । । ऽ रो. । । । ।	रा. ल. १२ (19/43 के बाद, बु. दान), ३ (चं. दा.), ४ (भौम युति दोष परिहारः)
भाद्र. कृष्ण ८ मंग	4 सितं.	१९ भाद्र.	रोहि.	वृष	। ऽ ह. ऽ मं. । । ऽरो. । । । ।	दि. ल. ६ (श. दा.), ९ (शु. दा.), गोधूलि, भौम युति परिहारः
भाद्र. कृष्ण ८ मंग	4 सितं.	१९ भाद्र.	मृग.	वृष	ऽ शु.रा. । ऽमं. । ऽगु. ।ऽऽ । ।	रा. ल. १२ (बु. दा.), ३ (चं. दा.), ४ (गुरु दृष्टि)–भौम युति परिहारः
भाद्र. कृष्ण ९ बुध	5 सितं.	२० भाद्र.	मृग.	मिथुन	ऽशु.रा. । ऽमं. । ऽ गु. ।ऽऽ । ।	दि. ल. ६ (श. दान), ९ (शु. ८वें पूज्य दान व), भौम युति परिहारः
भाद्र. शुक्ल १ बुध	12 सितं.	२७ भाद्र.	उ.फा.	कन्या	। ऽ । । । । । । । ।	दि. ल. ९ (शु. दा.), गोधू., रात्रि ल. १२ (चं., बु. दा.), ३ (लग्न रात 24/53 तक)
भाद्र. शुक्ल १ बुध	12 सितं.	२७ भाद्र	हस्त	कन्या	। । ऽ बु. । । । ऽ । । ।	रात्रि ल. ३ (मिथुन ल. 24/05 तक), 24/06 से 28/14 तक क्रान्तिसाम्य दोष
भाद्र. शुक्ल २ गुरु	13 सितं.	२८ भाद्र.	हस्त	कन्या	। । ऽ बु. । । ऽरो. ऽ । । ।	दि. ल. ९ (शु. दा.), गोधूली, रात्रि लग्न १२ (चं. दा.), ३ (मिथुन), ४ (27/31 तक)
भाद्र. शुक्ल २/३ गुरु	13 सितं.	२८ भाद्र.	चित्रा	कन्या	। । । । । । । ऽ । । ।	रात्रि ल. ४ (कर्क लग्ने गुरु दृष्टि प्रशस्तः)
भाद्र. शुक्ल ३ शुक्र	14 सितं.	२९ भाद्र.	चित्रा	कं./तुला	। । । । । । । ऽ । । ।	दि. ल. ७ (चं. दा.), ९ (शु. दा.), गोधू., रात्रि ल. ३, ४ (मिथुन व कर्क)

❖ आश्विन मास ❖ (सितं.—अक्तू.)

भाद्र. शुक्ल ६ मंग	18 सितं.	२ आश्विन	अनु.	वृश्चिक	ऽ श. । । । । ऽ । । । ।	दि. ल. ७ (चं. दा., 10/51 तक), दुपै. 11/42 के बाद मृत्युबाण प्रारम्भ
भाद्र. शुक्ल ८ गुरु	20 सितं.	४ आश्वि.	मूल	धनु	। । । । ऽ मं. । । ऽ । ऽ	दि. ल. ७ (चं. दा.), ८ (चं. दा., केन्द्रे गुरु शुभः, भौमाष्टम परिहार)
भाद्र. शुक्ल११/१२ रवि	23 सितं.	७ आश्वि.	धनि.	मकर	ऽसू.गु। ।ऽशु.ऽ ऽचो. ऽ । । ।	रा. ल. २ (गु. दा.), ४ (कर्के चं., मं. का दान), पादेन शुक्र वेधाभावः
भाद्र. शुक्ल १२ सोम	24 सितं.	८ आश्वि.	धनि.	कुम्भ	ऽ सू.गु । । ऽ शु.ऽ। ऽ । । ।	दि. ल. ७, ८ (केन्द्रे गुरु प्रशस्त., भौमाष्टम परिहार)

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंदराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुद्ध विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. चं./मिं में)
आश्वि. शुक्ल ३ रवि	14 अक्तू.	२८ आश्वि	अनु.	वृश्चिक	S श । । । । । । । । । ।	रा. ल. २ (चं. गु. सप्तमे दानं), ४ (चं. दान, लग्ने गुरु दृष्टि प्रशस्तः)
आश्वि. शुक्ल ४ सोम	15 अक्तू.	२९ आश्वि	अनु.	वृश्चिक	S श । । । । । । । । । ।	दि. ल. ७, गोधू., रात्रि ल. १ (चं., बु. दा.), २ (चं. गु. दा.)

❖ कार्तिक मास ❖ (पर्वतीय प्रदेशेषु)

आश्वि. शुक्ल ८ शुक्र	19 अक्तू.	३ कार्तिक	उ.षा.	मकर	। । । । । S । S । ।	दि. ल. १२ (शु. दा.) प्रातः 11/20 तक मृत्युबाण, गोधूलि रा. ल. २ (गु. दा.), ४ (चं. दा.), ६ (शं. मं. दा.) (कन्या ल. 20 ता. की प्रातः 5/49 तक)
आश्वि. शु. १० रवि	21 अक्तू.	५ कार्ति.	धनि.	मक/कुं	। Sशू. । । । Sनृ. S S । ।	दि. ल. १२ (शु. दा.) (दुपै. 11/45 तक शूल योग), गोधू., रा. ल. २ (गु. दा.), दशहरा पर्व प्रशस्त योग
आश्वि. शु. १२/१३ मंग	23 अक्तू.	७ कार्ति.	उ.भा.	मीन	। । । । । । S चौ. । । । ।	रात्रि लग्न ६ (कन्या, श. का दान)
आश्वि. शु. १३ बुध	24 अक्तू.	८ कार्ति.	उ.भा.	मीन	। Sव्या. । । । S चौ. S । । ।	दि. ल. ८ (गुरु केन्द्रे, भौमाष्टम परि., मं. दा.), १२ (शु. दा., चंद्र लग्ने गुरु दृष्ट्या शुभः), गोधूलि रात्रि ल. २ (गु. दा.), ४ (कर्क लग्न रात्रि 24/02 तक)
आश्वि. शु. १३/१४ बुध	24 अक्तू.	८ कार्ति.	रेवती	मीन	। S । । । । । । । । ।	रात्रि लग्न ४, ६ (चं., श., मं., का दान)
आश्वि. शु. १४/१५ गुरु	25 अक्तू.	९ कार्ति.	अश्वि	मेष	। । । S शु.Sबु.Sरो.SS । ।	रात्रि ल. ४ (कर्क लग्न रात्रि 24/17 के बाद), भद्रोत्तरे
आश्वि. शु. १५ शुक्र	26 अक्तू.	१० कार्ति.	अश्वि	मेष	। । । S शु.Sबु.Sरो.SS । ।	दि. ल. १२ (शुक्र-शनि दान)
कार्ति. कृष्ण ३ रवि	28 अक्तू.	१२ कार्ति.	रोहि.	वृष	। । । । । S । । । ।	दि. ल. १२ (शु. दा. गुरु दृष्टिः), गोधू., रा. ल. २ (गु. दा.), ४ (शु. दा.), ६ (मं. दा.) मीन व वृष लग्न काले भद्रा स्वर्गे शुभप्रदा॥
कार्ति. कृ. ४ सोम	29 अक्तू.	१३ कार्ति.	रोहि.	वृष	। । । । । S अ. । । । ।	दिवा लग्न ८ (चन्द्र दान)
कार्ति. कृ. ४ सोम	29 अक्तू.	१३ कार्ति.	मृग	वृष/मि.	Sरा। । । Sगु.SअSपरिS । ।	दि. ल. ८ (चं. मं. दा.), १२ (शु. दान-गुरू दृष्टि शुभा), गोधू, रात्रि ल. २ (गु. दान व दृष्टि), ४ (. दा.), ६ (मं. दा.)
कार्ति. कृ. ९ शनि	3 नवं.	१८ कार्ति.	मघा	सिंह	। । S श के । । S रो ।S । ।	दि. ल. ८ (मं. दा. भौमाष्टम परि.), गोधू., रात्रि ल. २ (गु. दा.), ४ (शु. दा.), ६ (मं. शु. दा.) रा. कन्या लग्न 28/13 तक, भद्रा पूर्वे) मघायां क्रूर ग्रह युति परिहारः
कार्ति. कृ. १० रवि	4 नवं.	१९ कार्ति.	मघा	सिंह	। । S श. के.। । S रो ।S । ।	दि. ल. ८ (8/23 तक) मघायां क्रूरयुति परिहारः
कार्ति. कृ. ११ सोम	5 नवं.	२० कार्ति.	उ.फा.	सिं./कं.	। । । । । S । S । S	ल. गोधू., रा. ल. २ (गु. का दा.), ४ (कर्के शुक्र दान, लग्न रात 24/15 तक) कर्क लग्न पर गुरू दृष्टि होने से दग्धा परिहार॥ रात्रि 24/17 से मृत्युबाण प्रारंभ
कार्ति. कृ. १२ मंग	6 नवं.	२१ कार्ति.	हस्त	कन्या	। । । । । । । S । S	दि. ल. १२ (शु. दा.), गोधू., रा. ल. २ (गु. दा.) गुरू दृष्ट्या दग्धा परिहारः
कार्ति. शु. १ शनि	10 नवं.	२५ कार्ति.	अनु.	वृश्चिक	। । । । । S चौ । । । ।	रात्रि लग्न ६ (कन्या लग्ने मं. शु. का दान)
कार्ति. शु. १/२ रवि	11 नवं.	२६ कार्ति.	अनु.	वृश्चिक	। । । । । S चौ । । । ।	दि. ल. १२ (शुक्र दान), गोधूली च, रात्रि ल. २ (चं. गु. दान), ४ (कर्के चं. शु. दा.), ६ (मं. दा. कन्या ल. 27/53 तक)
कार्ति. शु. ३ मंग	13 नवं.	२८ कार्ति.	मूले	धनु	। । । । । S रो. । । । ।	दि. ल. १२ (शुक्र 7वें पूज्य दान व), गोधू., रा. ल. ६ (मं. दा.) रात्रिलग्ने भद्रा पातालगते शुभफलप्रदा
कार्ति. शु. ४ बुध	14 नवं.	२९ कार्ति.	मूले	धनु	। । । । । । । । । । ।	दि. ल. ८ (गुरू केन्द्रे प्रशस्त, भौमाष्टम व भद्रा परिहारः) [लग्न प्रातः 8/56 तक-आवश्यके]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

❖ मार्गशीर्ष मास ❖ (नवम्बर–दिसम्बर)

पक्ष	तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण–दोष रेखाएँ	शुद्ध विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टं. टा. चं./मिं में)
कार्ति. शुक्ल	७ शनि	17 नवं.	२ मार्ग.	धनि.	मकर	S गु । । । । S S S । ।	दि. ल. १२ (शु. दा.), गोधू. रा. ल. ४ (चं. शु. दान, गुरु दृष्टि प्रशस्त-कर्क लग्न रात्रि 22/38 तक ग्राह्य ॥ 22/39 उपरांत मृत्युबाण दोष प्रा.) कर्क लग्ने भद्रा पाताले शुभप्रदा ॥
कार्ति. शु.	१०/११ मंग	20 नवं.	५ मार्ग.	उ.भा.	मीन	। । । S शु. । S नृ. S S । ।	दि. ल. १२ (च. शु. दा., लग्नस्थ चन्द्रे गुरु दृष्टि प्रशस्त), गोधू. च. रात्रि ल. ४ (शुक्र दा., कर्क लग्न रात्रि 23/34 तक–भद्रा पूर्वे
कार्ति. शु.	११/१२ बुध	21 नवं.	६ मार्ग.	रेवती	मीन	। । । । S शु. । । । । ।	दि. ल. १२ (चं. शु. दा., लग्नस्थ चंद्रे गुरु दृष्टि शुभा), गोधूली च. रात्रि ल. ४ (शु. दा.), ६ (चं., मं. का दान)
कार्ति. शु.	१५ शनि	24 नवं.	९ मार्ग.	रोहि.	वृष	। । । । S सू. । । S । ।	रात्रि लग्न ६ (मं. दा.)
मार्ग. कृ.	१ रवि	25 नवं.	१० मार्ग.	रोहि.	वृष	। । । । S सू.S रो । S । ।	दि. ल.१२ (शु. दा.), १ (बु. शु. दान), गोधू. (मेष लग्ने शुक्र षष्ठे परिहारः)
मार्ग. कृ.	१/२ रवि	25 नवं.	१० मार्ग.	मृग	वृ./मि.	S रा. । । । । । S । । ।	रात्रि लग्न ४ (शु. दा.), ६ (मं. दा.), ७ (शु. दा.)
मार्ग. कृ.	२ सोम	26 नवं.	११ मार्ग.	मृग	मिथुन	S रा. S सा. । । । । S । । ।	दि. ल. १२ (शु. दा.), १ (बु. शु. दान), गोधू., रात्रि 20/28 से मृत्युबाण प्रारम्भ
मार्ग. कृ.	७ शुक्र	30 नवं.	१५ मार्ग.	मघा	सिंह	S शु. । S के. । । । । । । ।	रात्रि ल. ४ (मं. दान), ६ (चं. मं. दा.), ७ (तुला)–केतु युति परिहारः
मार्ग. कृ.	९ रवि	2 दिसं.	१७ मार्ग.	उ.फा.	सिं./कं.	। । । । । । । S । ।	रात्रि ल. ४ (मं. दा.), ७ (चं. दा.)
मार्ग. कृ.	९/१० सोम	3 दिसं.	१८ मार्ग.	उ.फा.	कन्या	। । । । । S S S । S	दिवा ल. १ (शु. दा.), गोधूली च.
मार्ग. कृ.	१० सोम	3 दिसं.	१८ मार्ग.	हस्त	कन्या	। । । । । S रो । S । S	रात्रि ल. ४ (मं. दा.), ७ (चं. दा.), कर्क लग्ने भद्रा पाताले शुभप्रदा
मार्ग. कृ.	१० मंग	4 दिसं.	१९ मार्ग.	हस्त	कन्या	। । । । । । । S । S	दि. ल. १ (शु. दा.), गोधूलि च., रात्रि ल. ४ (मं. दा., कर्क लग्न रात्रि 22/17 तक)
मार्ग. कृ.	११ मंग	4 दिसं.	१९ मार्ग.	चित्रा	कन्या	। । S शु । । । S S । ।	रात्रि ल. ४ (मं. दा.), ७ (चं. दा.), पादेन शुक्र युत्यभावः
मार्ग. कृ.	११ बुध	5 दिसं.	२० मार्ग.	चित्रा	तुला	। । S शु । । S S S । ।	दि. ल. १ (चं. शु. दा.), गोधू. च., शुक्रपाद युत्यभावः, सायं । 7/43 से मृत्युबाण दोष प्रारम्भ

7 दिसम्बर से 9 दिसम्बर तक गुरु वार्धक्य दोष तथा 10 दिसम्बर से 4 जन. (2008 ई.) तक गुरु अस्त रहेगा। (6) से 8 जन. तक गुरु बाल्यत्व दोषः

❖ माघ मास ❖ (जनवरी–फरवरी 2008 ई०)

पक्ष	तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण–दोष रेखाएँ	शुद्ध विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टं. टा. चं./मिं में)
पौष शुक्ल	१०/११ शुक्र	18 जन.	५ माघ	रोहि.	वृष	S रा । । । । । । । S ।	रा. ल. ६ (शु. दा.) (भद्रा स्वर्गे शुभप्रदा) वृश्चिके भौमाष्टम परिहार, पर लग्नेश दोष–आवश्यके
पौष शुक्ल	१२ शनि	19 जन.	६ माघ	रोहि.	वृष	S रा । । । । । । । S S	दि. ल. १२, १, २ (चं. शु. दान) चन्द्र केन्द्रे उच्चगः, वृष लग्न आवश्यके
माघ कृष्ण	२ गुरु	24 जन.	११ माघ	मघा	सिंह	। । S के। Sनृ. बु. S । । । ।	दि. ल. १, गोधूलि, रात्रि 19/56 उपरान्त मृत्युबाण एवं सूर्य वेध दोष
माघ कृष्ण	४/५ शनि	26 जन.	१३ माघ	उ.फा.	सिंह/कं.	। । । । । । S अति S । ।	दि. ल. १, गोधूलि, रा. ल. ७ (चंद्र, शुक्र का दान)
माघ कृष्ण	५ रवि	27 जन.	१४ माघ	उ.फा.	कन्या	। । । । । । । S । ।	दि. ल. १२ (सप्तम चन्द्र पू. व दान), १ (चं. दा. मेष लग्न 11/44 तक), चंद्र षष्ठे परिहारः,
माघ कृष्ण	५/६ रवि	27 जन.	१४ माघ	हस्त	कन्या	। । । । । S नृ. S S । ।	दि. ल. १ (चं. दा., षष्ठे चन्द्र परिहारः), गोधूलि, रा. ल. ७ (चं., शु. दा.)
माघ कृष्ण	६ चंद्र	28 जन.	१५ माघ	हस्त	कन्या	। । । । । । S S । ।	दि. ल. १२ (सप्तम चन्द्र दान), १ (चंद्र दान, षष्ठे चन्द्र परिहार)
माघ कृष्ण	६/७ चंद्र	28 जन.	१५ माघ	चित्रा	कं./तुला	। । । । । । । । । । ।	गोधूलि, रा. ल. ७ (चं., शु. दा.) भद्रा पाताले शुभप्रदा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण–दोष रेखाएँ	शुद्ध विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घं./मिं में)
माघ कृष्ण ८ बुध	30 जन.	१७ माघ	स्वा.	तुला	S शु. S शू. I I I I Sगं I I I	दि. ल. १ (सप्तमे चन्द्र दा.) (आवश्यके) शूलयोग प्रातः 7/57 तक
माघ कृष्ण ९/१० गुरु	31 जन.	१८ माघ	अनु.	वृश्चिक	S बु. श. I I I I SरोSS I I	रा. ल. ६ (रात्रि 22/12 के बाद, चं.-मं. दा.), ७ (शु. दा.)
माघ कृष्ण १० शुक्र	1 फर.	१९ माघ	अनु.	वृश्चिक	S बु श I I I I I S S I I	दि. ल. १२ (चं. दा.), १ (चं. दा.), गोधूलि, रा. ल. ६ (चं. मं. दा.), ७ (रात्रि 25/02 तक, चं. शु. दा.), स्वर्गे भद्रा शुभ फलप्रदा.
माघ कृष्ण १२ रवि	3 फर.	२१ माघ	मूल	धनु	I S ह. I I Sमं.Sअ.S S IS	दि. ल. १२, १, गोधूलि, रा. ल. ६ (मं. दा.), ७ (शु. दा.)
माघ शुक्ल ४ रवि	10 फर.	२८ माघ	उ.भा.	मीन	I I I I I I I I I I	दि. ल. १ (चं. दा.), गोधूलि, रा. ल. ६ (चं. मं. दा.), रात्रि कन्या लग्ने (भद्रा दोष विचार) आवश्यके
माघ शुक्ल ५/६ चंद्र	11 फर.	२९ माघ	रेव	मीन	I S सा I I I I Sसा.S I I	दि. ल. १ (चं. दा.) (बसन्त पंचमी) 13/39 से 25/32 तक मृत्युबाण दोष रा. ल. ८ (मं. दा., 25/32 उपरान्त) भौमाष्टम परिहार लग्नेश मं. अष्टम पूज्य दान वा.–आवश्यके

❖ फाल्गुन मास ❖ (फरवरी–मार्च 2008 ई.)

माघ शुक्ल ८/९ गुरु	14 फर.	२ फाल्गु.	रोहिणी	वृष	S रा I I I I S S I I I	24/42 तक मृत्युबाण दोष, रा. ल. ८ (चं. मं. दा.) लग्नेश अष्टम भौम पर गुरू दृष्टि प्रशस्तः आवश्यके
माघ शुक्ल १०/११ शनि	16 फर.	४ फाल्गु.	मृग.	वृ./मिथु.	I S S मं S शु I I S वि.S I I	दि. ल. १२, १, २, ४ (चं. बु. गु. दान), गोधूलि, रा. ल. ६ (21/47 तक, मं. दा.) (भौम युति परिहारः) पादेन शुक्र वेधऽभावः–आवश्यके
माघ शुक्ल १३/१५ बुध	20 फर.	८ फाल्गु.	मघा	सिंह	I IS श.के Sशु.बु.Sरा I I S I I	रात्रि ल. ६ (चं. मं. दान, कन्या लग्न रात 21/20 उपरांत; भद्रोत्तरे, ७ (तुला)
माघ शुक्ल १५/१ गुरु	21 फर.	९ फाल्गु.	मघा	सिंह	ISअतिSश.के.Sबु.शु.Sरा.Sरो. IS II	दिवा ल. १, २, ४ (बु., शु. दान)
फागु. कृष्ण १/२ शुक्र	22 फर.	१० फागु	उ.फा.	सिं./कं.	I I I I I I I I I I	रा. ल. ६ (चं. मं. दा.), ७ (तुला लग्न)
फा. कृष्ण २/३ शनि	23 फर.	११ फागु	उ.फा.	कन्या	I I I I I S I I I I	दि. ल. १२, १ (चं. दा.), प्रातः 10/58 घं.मिं. के बाद मृत्युबाण दोष
फा. कृष्ण २/३ शनि	23 फर.	११ फागु	हस्त	कन्या	I S I I I S मृ. S I I I	रा. ल. ७ (चं. दा., तुला लग्न रात 22/55 उप. (22/54 तक मृत्युबाण दोष)
फा. कृष्ण ३/४ रवि	24 फर.	१२ फागु	चित्रा	कन्या	I S गं. I I I I I S I S	रा. ल. ७ (22/36 उपरान्त, चं. दा.), १० (शनि पूज्य दान वा.)
फा. कृष्ण ४/५ चंद्र	25 फर.	१३ फागु	चित्रा	कं./तु.	I S गं. I I I I S गं S S S	दि. ल. १२ (चं. दा.), १ (मेषे चं. दा.), २ (दुपैः 11/40 तक), सायं ४ (बु. शु. दा.), ६ (म. दा.)
फा. कृष्ण ७/८ गुरु	28 फर.	१६ फागु.	अनु	वृश्चिक	S श. I I I I S चो. S I I I	दि. ल. १२ (चं. दा.), १ (चं. दा.), २ (चं. दा.), गोधूलि रा. ल. ६ (चं., मं. दा.), ७ (चं. दा.)
फागु. कृष्ण ८ शुक्र	29 फर.	१७ फागु.	अनु	वृश्चिक	S श. I I I I I S I I I	दि. ल. १२-१ (चं. दा.) मेष लग्न प्रातः 9/21 तक ग्राह्य
फागु. कृष्ण ९ शनि	1 मार्च	१८ फागु.	मूल	धनु	I I I I S मं. S रो. S S I I	रा. ल. ६ (मं. दा.), गोधूलि, ७ (तुला)
फागु. कृष्ण १० रवि	2 मार्च	१९ फागु.	मूल	धनु	I I I I S मं. I S S I I	दि. ल. १२, १ (मीन व मेष लग्न) भद्रा परिहारः (पाताले)
फागु. शुक्ल १ शनि	8 मार्च	२५ फागु.	उ.भा.	मीन	I I I I I S चौ. S I I I	रा. ल. ८ (25/00 तक, मं. पूज्य दान व) भौमाष्टमे परिहार परं गुरू दृष्ट्या प्रशस्त, 25/01 से क्रान्तिसाम्य दोष
फागु. शुक्ल २ रवि	9 मार्च	२६ फागु.	उ.भा.	मीन	I I I I I I S I I I	दि. ल. १, २
फागु. शुक्ल २ रवि	9 मार्च	२६ फागु.	रेवती	मीन	I I I I I I S I I I	रा. ल. ८ (भौमे अष्टम परिहार, लग्नेश मंगल गुरु दृष्टिशुभः)
फागु. शुक्ल ३ चंद्र	10 मार्च	२७ फागु.	रेवती	मीन	I I I I I S रो. S I I I	दि. ल. १ (मेषे चन्द्र दान), २ (वृष)
फागु. शुक्ल ३ चंद्र	10 मार्च	२७ फागु.	अश्वि.	मेष	I I I I I S रो. I I I S	रा. ल. ७ (चं. दा.), १० (मकरे लग्नेश शनि अष्टमस्थ)
फागु. शुक्ल ४ मंग	11 मार्च	२८ फागु.	अश्वि.	मेष	I I I I I I I I I S	दि. ल. १२, १ (चं. दा., मेष लग्न 9/47 तक, चन्द्र लग्ने गुरू दृष्ट्या प्रशस्तः)

✡ **आगामी वर्ष सम्वत् २०६५ में शुक्र गुरू अस्त**–वैशाख कृष्ण सप्तमी को शुक्र लगभग 27 अप्रैल की अर्द्धरात्रि को पूर्व में अस्त होकर लगभग 6 जुलाई की प्रातः को पश्चिम से उदित होगा॥ गुरू देव लगभग 12 जन., 2008 ई. से पश्चिम में अस्त होकर लगभग 11 फरवरी को पूर्व से उदित होंगे। तदनुसार ही आगामी विवाह आदि मुहूर्त्तों के सम्बन्ध में निर्णय किया जावेगा॥ सम्पादक।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

त्रिबल शुद्धि पर आधारित

वर–कन्या की राशि के अनुसार शुभ विवाह–मुहूर्त्त संवत् २०६४ वि. (सन् 2007–08 ई.)

नीचे वर–कन्या की जन्म अथवा नाम राशि के अनुसार (त्रिबल शुद्धि–सूर्य, चन्द्र एवं गुरु पर आधारित) विवाह मुहूर्त्त दिए जा रहे हैं। वर–कन्या की कुण्डली मिलान के पश्चात उनकी राशियों में जो–जो तारीखें समान होंगी, उन तारीखों में वर–कन्या का विवाह शुभ एवं ग्राह्य होगा। विवाह लग्न का निर्णय करने के लिए गत पृष्ठों पर दिए गए शुद्ध मुहूर्त्तों में से चयन करें। (किसी विद्वान् पण्डित जी के परामर्शानुसार) उदाहरणार्थ–वृष राशि का लड़का तथा मेष राशि की लड़की का विवाह मुहूर्त्त जून, 2007 ई. में देखना हो तो दोनों की राशियों में जून २२, २३, २४ तारीखों में समानता मिलती है। इनमें से कोई भी तारीख अपनी सुविधानुसार ग्रहण कर सकते हैं।

कार्तिक मास के मुहूर्त्त केवल पर्वतीय (पहाड़ी) क्षेत्रों में ही ग्राह्य माने जाते हैं। ध्यान रहे, विवाह के मास का निर्धारण मुख्यतः लड़के (वर) की राश्यनुसार किया जाता है। कन्या की राशि से गुरु बल तथा दोनों में चन्द्र बल विचारणीय होता है। वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों में जबकि कन्याओं का विवाह बालिग होने पर ही करते हैं, अतः गुरु शुद्धि को गम्भीरतापूर्वक न लेते हुए एवं ४, ८, १२वें गुरु को वर्ज्य न समझते पूज्य के रूप में ग्रहण किया गया है।

ध्यान रहे, लड़के की जन्म (अथवा नाम) राशि से ३, ६, १०, ११वें पूर्य शुभ: १, २, ५, ७, ९ वें सूर्य पूज्य तथा ४, ८, १२वें सूर्य त्याज्य होता है। कन्या को १, ३, ६ व १०वें गुरु साधारण पूज्य एवं उन्हें ४, ८, १२वें गुरु विशेष रूपेण पूज्य होगा। विवाह समय में अशुभ ग्रहों का यथाशक्ति दान व पूजा करवा लेनी चाहिए।

वर (लड़का)	वर-कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	कन्या (लड़की)
मेष राशि–अप्रैल की १९, २०, २१, २६, २८, २९, ३०, **मई** की ५, ६, ८, ९, **जून** की १९, २०, २१, २२, २३, २४, २९, ३०, **जुला.** की १, २, ३, ६-७-८ (चं.दा.), ११, **अग.** की २७, ३०-३१ (चं.दा.), **सितं.** की ३, ४, ५, १२, १३, १४, २०, २३, २४, [**कार्तिक मासे अक्तू.** की १९, २१, २३-२४-२५-२६ (चं.दा.), २८, २९, **नवं.** की ३, ४, ५, ६, १३, १४] **जन. (2008 ई.)** की १८, १९, २४, २६, २७, २८, ३०, **फर.** की ३, १०-११ (चं.दा.), १४, १६, २०, २१, २२, २३, २४, २५, **मार्च** की १, २, ८-९-१०-११ (चं. दा.) तारीखें शुभ होंगी।	वर को आषाढ़, आश्विन, माघ व फाल्गुन मास शुभ तथा वैशाख, ज्येष्ठ, भाद्र व कार्तिक मासों में सूर्य दान, पूजादि करणीय हैं। श्रावण और मार्ग. त्याज्य हैं। कन्या को संवतारम्भ से 21 नवं. तक गुरु विशेष रूप से पूज्य रहेगा, तदुपरान्त शुभ रहेगा।	**मेष राशि**–अप्रै. की १९, २०, २१, २६, २८, २९, ३०, **मई** की ५, ६, ८, ९, **जून** की १९, २०, २१, २२, २३, २४, २९, ३०, **जुला.** की १, २, ३, ६-७-८ (चं.दा.), ११, १७, १९, २०, २१, २२, २६, २८, २९, **अग.** की २७, ३०-३१ (चं.दा.), **सितं.** की ३, ४, ५, १२, १३, १४, २०, २३, २४ [**कार्तिक मासे अक्तू.** की १९, २१, २३-२४-२५-२६ (चं.दा.), २८, २९, **नवं.** की ३, ४, ५, ६, १३, १४] **मार्गशीर्ष** में **नवं.** की १७, २०-२१ (चं.दा.), २४, २५, २६, ३०, **दिसं.** की २, ३, ४, ५, **जन. 2008 ई.** की १८, १९, २४, २६, २७, २८, ३०, **फर.** की ३, १०-११ (चं.दा.), १४, १६, २०, २१, २२, २३, २४, २५, **मार्च** की १, २, ८-९-१०-११ (चं.दा.) तारीखें शुभ होंगी।
वृष राशि–जून की २२, २३, २४, २७, **जुला.** की १ (23/56 बाद), २, ३, ६, ७, ८, ११, १९ (13/26 बाद), २०, २१, २२, २४, २५, २९, **सितं.** की १८, २३, २४, **अक्तू.** की १४, १५ [**कार्तिक मासे अक्तू.** की १९, २१, २३, २४, २५-२६ (चं.दा.) २८, २९, **नवं.** की ५ (17/15 बाद), ६, १०, ११] **मार्ग.** में **नवं.** की १७, २०, २१, २४, २५, २६, ३० (चं.दा.), **दिसं.** की २, ३, ४, ५, **जन. (2008 ई.)** की १८, १९, २४-२६ (चं.दा.), २७, २८, ३०, ३१, **फर.** की १, १०, ११, १४, १६, २०, २१-२२ (चं.दा.), २३, २४, २५, २८, २९, **मार्च** की ८, ९, १०-११ (चं. दा.) तारीखें ग्राह्य होंगी।	वर को श्रावण, कार्तिक, फाल्गुन मास शुभ तथा ज्येष्ठ, आषाढ़, आश्विन, मार्ग. एवं माघ मासों में सूर्य पूजा रहेगी। वैशाख व भाद्रपद मास त्याज्य होंगे। कन्या को 21 नवं. तक गुरु शुभ, तदुपरान्त गुरु की पूजा एवं दान विशेष रूप से प्रयोजनीय रहेगा।	**वृष राशि**–अप्रै. की १९, २०, २१, २८ (14/59 बाद), २९, ३०, **मई** की ८ (12/08 के बाद), ९, **जून** की २२, २३, २४, २७, **जुला.** की १ (23/56 के बाद), २, ३, ६, ७, ८, ११, १९ (13/26 बाद), २०, २१, २२, २४, २५, २९, **अग.** की २७, ३०, ३१, **सितं.** की ३, ४, ५, १२, १३, १४, १८, २३, २४, **अक्तू.** की १४, १५ [**कार्तिक मासे अक्तू.** की १९, २१, २३, २४, २५-२६ (चं.दा.), २८, २९, **नवं.** की ५ (17/15 बाद), ६, १०, ११] **मार्ग.** में **नवं.** की १७, २०, २१, २४, २५, २६, ३० (चं. दा.), **दिसं.** की २, ३, ४, ५, **जन. 2008 ई.** की १८, १९, २४-२६ (चं.दा.), २७, २८, ३०, ३१, **फर.** की १, १०, ११, १४, १६, २०-२१-२२ (चं. दा.), २३, २४, २५, २८, २९, **मार्च** की ८, ९, १०-११ (चं.दा.) तारीखें ग्राह्य होंगी।
मिथुन राशि–अप्रै. की १९-२०-२१ (चं.दा.), २६, २८ (14/58 तक), **मई** की ५, ६, ८ (12/07 तक), **जून** की १९, २०, २१, २४ (17/43 के बाद), २७, २९, ३०, **जुला.** की १ (23/55 तक), ६, ७, ८, ११ (चं.दा.), १७, १९ (13/25 तक), २१ (25/35 के बाद), २२, २४, २५, २६, २८, **अग.** की ३०, ३१, **सितं.** की ३-४ (चं.दा.), ५, १४ (16/56 बाद) [**कार्तिक मासे अक्तू.** की २१ (17/58 के बाद), २३, २४, २५, २६, २८-२९ (चं.दा.), **नवं.** की ३, ४, ५ (17/14 तक), १०, ११, १३, १४] **मार्ग.** में **नवं.** की २०, २१, २४-२५ (चं.दा.), २६, ३०, **दिसं.** की २ (23/32 तक), ५, **फर. 2008 ई.** की १४-१६ (चं.दा.), २०, २१, २२ (25/50 तक), २५ (11/40 बाद), २८, २९, **मार्च** की १, २, ८, ९, १०, ११ तारीखें शुभ होंगी।	वर को वैशाख, भाद्र., मार्गशीर्ष में विवाह शुभ, आषाढ़, श्रावण, कार्तिक व फाल्गुन में सूर्य पूजा, ज्येष्ठ, आश्विन व माघ मास त्याज्य हैं। मिथुन की कन्या को संवतारम्भ से 21 नवं. तक गुरु की पूजा एवं दान प्रयोजनीय होगा। तदुपरान्त शुभ होगा।	**मिथुन राशि**–अप्रै. की १९-२०-२१ (चं.दा.), २६, २८ (14/58 तक), **मई** की ५, ६, ८ (12/07 तक), **जून** की १९, २०, २१, २४ (17/43 के बाद), २७, २९, ३०, **जुला.** की १ (23/55 तक), ६, ७, ८, ११ (चं.दा.), १७, १९ (13/25 तक), २१ (23/35 के बाद), २२, २४, २५, २६, २८, **अग.** की ३०, ३१, **सितं.** की ३-४ (चं.दा.), ५, १४ (16/56 बाद), १८, २०, २४, **अक्तू.** की १४, १५ [**कार्तिक मासे अक्तू.** की २१ (17/58 बाद), २३, २४, २५, २६, २८-२९ (चं.दा.), **नवं.** की ३, ४, ५ (17/14 तक), १०, ११, १३, १४] **मार्ग.** में **नवं.** की २०, २१, २४-२५ (चं.दा.), २६, ३०, **दिसं.** की २ (23/32 तक), ५, **जन. 2008 ई.** की १८-१९ (चं.दा.), २४, २६ (16/35 तक), 28 (27/02 बाद), ३०, ३१, **फर.** की १, ३, १०, ११, १४-१६ (चं.दा.), २०, २१, २२ (25/50 तक), २५ (11/40 बाद), २८, २९, **मार्च** की १, २, ८, ९, १०, ११ तारीखें शुभ होंगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर (लड़का)	वर-कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	कन्या (लड़की)
कर्क राशि—अप्रैल की १९, २०, २१ (चं.दा.), २६, २८, २९, ३०, मई की ५, ६, ८, ९, जुला. की १७, १९, २०, २१ (25/34 तक), २४, २५, २६, २८, २९, अग. की २७, ३०, ३१, सितं. की ३, ४, ५ (चं.दा.), १२, १३, १४ (16/55 तक), १८, २०, २३, अक्तू. की १४, १५, नवं. की १७, २०, २१, २४, २५-२६ (चं.दा.), ३०, दिसं. की २, ३, ४, जन. 2008 ई. की १८, १९, २४, २६, २७, २८ (27/01 तक), ३१, फर. की १, ३, १०, ११ तारीखें शुभ होंगी।	कर्क के वर को वैशाख, ज्येष्ठ, आश्विन में विवाह शुभ, श्रावण, भाद्र., मार्ग. व माघ मासों में सूर्य पूजा, आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन मास त्याज्य होंगे। कन्या को संवतारम्भ से 21 नवं. तक गुरु शुभ, 22 नवं. से साधारण रूपेण पूज्य रहेगा।	**कर्क राशि**—अप्रै. की १९, २०, २१ (चं.दा.), २६, २८, २९, ३०, मई की ५, ६, ८, ९, जून की १९, २०, २१, २२, २३, २४ (17/42 तक), २७, २९, ३०, जुला. की १, २, ३, ६, ७, ८, ११, १७, १९, २०, २१ (25/34 तक), २४, २५, २६, २८, २९, अग. की २७, ३०, ३१, सितं. की ३, ४, ५ (चं.दा.), १२, १३, १४ (16/55 तक), १८, २०, २३, अक्तू. की १४, १५ [कार्तिक मासे अक्तू. की १९, २१ (17/57 तक), २३, २४, २५, २६, २८, २९ (चं.दा.), नवं. की ३, ४, ५, ६, १०, ११, १३, १४] मार्ग. में नवं. की १७, २०, २१, २४, २५, २५-२६ (चं.दा.), ३०, दिसं. की २, ३, ४, जन. 2008 ई. की १८, १९, २४, २६, २७, २८ (27/01 तक), ३१, फर. की १, ३, १०, ११, १४, १६ (चं.दा.), २०, २१, २२, २३, २४, २५ (11/39 तक), २८, २९, मार्च की १, २, ८, ९, १०, ११ तारीखें शुभ होंगी।
सिंह राशि—अप्रै. की १९, २०, २१, २६, २८, २९, ३०, मई की ५, ६, ८, ९, जून की १९, २०, २१, २२, २३, २४, २९, ३०, जुला. की १, २, ३, ११, अग. की २७, सितं. की ३, ४, ५, १२, १३, १४, २०, २३, २४ [कार्तिक मासे अक्तू. की १९, २१, २५, २६, २८, २९, नवं. की ३, ४, ५, ६, १३, १४] जन. 2008 ई. की १८, १९, २४, २६, २७, २८, ३०, फर. की ३, १४, १६, २०, २१, २२, २३, २४, २५, मार्च की १, २, १० (11/47 बाद), ११ तारीखें शुभ एवं ग्राह्य होंगी।	सिंह के वर को ज्येष्ठ, आषाढ़, कार्तिक व माघ शुभ, वैशाख, भाद्र., आश्विन व फाल्गुन में सूर्य पूजा तथा श्रावण, मार्गशीर्ष मास त्याज्य होंगे। कन्या को गुरु संवतारम्भ से 21 नवं. तक विशेषतः पूज्य एवं दान प्रयोजनीय रहेगा। तदुपरान्त 22 नवं. से शुभ रहेगा।	**सिंह राशि**—अप्रै. की १९, २०, २१, २६, २८, २९, ३०, मई की ५, ६, ८, ९, जून की १९, २०, २१, २२, २३, २४, २९, ३०, जुला. की १, २, ३, ११, १७, १९, २०, २१, २२, २६, २८, २९, अग. की २७, सितं. की ३, ४, ५, १२, १३, १४, २०, २३, २४ [कार्तिक मासे अक्तू. की १९, २१, २५, २६, २८, २९, नवं. की ३, ४, ५, ६, १३, १४] मार्ग. में नवं. की १७, २४, २५, २६, ३०, दिसं. की २, ३, ४, ५, जन. 2008 ई. की १८, १९, २४, २६, २७, २८, ३०, फर. की ३, १४, १६, २०, २१, २२, २३, २४, २५, मार्च की १, २, १० (11/47 बाद), ११ तारीखें शुभ होंगी।
कन्या राशि—जून की १९-२०-२१ (चं.दा.), २२, २३, २४, २७, जुला. की १ (23/56 बाद), २, ३, ६, ७, ८, ११, १७-१९ (चं.दा.), २०, २१, २२, २४, २५, २९, सितं. की १८, २३, २४, अक्तू. की १४, १५ [कार्तिक मासे अक्तू. की १९, २१, २३, २४, २८, २९, नवं. की ३-४ (चं.दा.), ५, ६, १०, ११] मार्ग. में नवं. की १७, २०, २१, २४, २५, २६, ३०-दिसं. की २ (चं.दा.), ३, ४, ५, जन. 2008 की १८, १९, २४-२६ (चं.दा.), २७, २८, ३०, ३१, फर. की १, १०, ११, १४, १६, २०-२१-२२ (चं.दा.), २३, २४, २५, २८, २९, मार्च की ८, ९, १० (11/46 तक) तारीखें शुभ होंगी।	कन्या राशि के वर को आषाढ़, श्रावण, मार्गशीर्ष व फाल्गुन मास शुभ, ज्येष्ठ, आश्विन, कार्तिक व माघ में सूर्य पूजा तथा वैशाख, भाद्र. त्याज्य होंगे। कन्या को 21 नवं तक गुरु साधारणतः पूज्य, 22 नवं. से विशेष रूप से पूज्य रहेगा।	**कन्या राशि**—अप्रै. की १९, २०, २१, २६-२८ (चं.दा.), २९, ३०, मई की ८ (12/08 के बाद), ९, जून की १९-२०-२१ (चं.दा.), २२, २३, २४, २७, जुला. की १ (23/56 बाद), २, ३, ६, ७, ८, ११, १७-१९ (चं.दा.), २०, २१, २२, २४, २५, २९, अग. की २७, ३०, ३१, सितं. की ३, ४, ५, १२, १३, १४, १८, २३, २४, अक्तू. की १४, १५ [कार्तिक मासे अक्तू. की १९, २१, २३, २४, २८, २९, नवं. की ३-४ (चं.दा.), ५, ६, १०, ११] मार्ग. में नवं. की १७, २०, २१, २४, २५, २६, ३०- दिसं. की २ (चं.दा.), ३, ४, ५, जन. 2008 ई. की १८, १९, २४-२६ (चं.दा.), २७, २८, ३०, ३१, फर. की १, १०, ११, १४, १६, २०-२१-२२ (चं.दा.), २३, २४, २५, २८, २९, मार्च की ८, ९, १० (11/46 तक) तारीखें शुभ होंगी।
तुला राशि—अप्रै. की २१ (13/00 के बाद), २६, २८-२९-३० (चं.दा.), मई की ५, ६, ८ (12/07 तक), जून की १९, २०, २१, २२-२३-२४ (चं.दा.), २७, २९, ३०, जुला. की १ (23/55 तक), ६, ७, ८, १७, १९-२०-२१ (चं.दा.), २२, २४, २५, २६, २८, अग. की ३०, ३१, सितं. की ५, १२-१३-१४ (चं.दा.), [कार्तिक मासे अक्तू. की २१ (17/58 बाद), २३, २४, २५, २६, २९ (20/20 बाद), नवं. की ३, ४, ५-६ (चं.दा.), १०, ११, १३, १४] मार्ग. में नवं. की २०, २१, २५ (30/54 बाद), २६, ३० दिसं. की २-३-४ (चं. दा.), ५, फर. 2008 ई. की १६ (10/26 बाद), २०, २१, २२-२३-२४-२५ (चं.दा.), २८, २९, मार्च की १, २, ८, ९, १०, ११ तारीखें शुभ एवं ग्राह्य होंगी।	तुला राशि के वर को वैशाख, आषाढ़, कार्तिक, मार्गशीर्ष व फाल्गुन में सूर्य पूजा, श्रावण-भादों शुभ तथा ज्येष्ठ, आश्विन, माघ मास त्याज्य होंगे। तुला की कन्या को संवतारम्भ से 21 नवं. तक शुभ, 22 नवं. से साधारण रूपेण पूज्य रहेगा।	**तुला राशि**—अप्रै. की २१ (13/00 बाद), २६, २८-२९-३० (चं.दा.), मई की ५, ६, ८ (12/07 तक), जून की १९, २०, २१, २२-२३-२४ (चं.दा.), २७, २९, ३०, जुला. की १(23/55 तक), ६, ७, ८, १७, १९-२०-२१ (चं.दा.), २२, २४, २५, २६, २८, अग. की ३०, ३१, सितं. की ५, १२-१३-१४ (चं.दा.), १८, २०, २४, अक्तू. की १४, १५ [कार्तिक मासे अक्तू. की २१ (17/58 बाद), २३, २४, २५, २६, २९ (20/20 बाद), नवं. की ३, ४, ५-६ (चं. दा.), १०, ११, १३, १४] मार्ग. में नवं. की २०, २१, २५ (30/54 बाद), २६, ३०, दिसं. की २-३-४ (चं. दा.), ५, जन. 2008 ई. की २४, २६-२७-२८ (चं.दा.), ३०, ३१, फर. की १, ३, १०, ११, १६ (10/26 बाद), २०, २१, २२-२३-२४-२५ (चं.दा.), २८, २९, मार्च की १, २, ८, ९, १०, ११ तारीखें शुभ हैं।
वृश्चिक राशि—अप्रै. की १९, २०, २१ (12/59 तक), २६, २८, २९, ३०, मई की ५, ६, ८, ९, जुला. की १७, १९, २०, २१-२२ (चं.दा.), २४, २५, २६, २८, २९, अग. की २७, ३०, ३१, सितं. की ३, ४, १२, १३, १४ (चं.दा.), १८, २०, २३, अक्तू. की १४, १५ नवं. की १७, २०, २१, २४, २५ (30/54 तक), ३०, दिसं. की २, ३, ४, ५ (चं.दा.), जन. 2008 ई. की १८, १९, २४, २६, २७, २८-३० (चं.दा.), ३१, फर. की १, ३, १०, ११ तारीखें शुभ होंगी।	वृश्चिक के वर को वैशाख, भाद्र., आश्वि., माघ शुभ, ज्ये., श्राव., मार्ग. में सूर्य पूजा तथा आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्या को सवंतारम्भ से 21 नवं. तक गुरु साधारण रूपेण पूज्य, तदुपरान्त शुभ रहेगा।	**वृश्चिक राशि**—अप्रै. की १९, २०, २१ (12/59 तक), २६, २८, २९, ३०, मई की ५, ६, ८, ९, जून की १९, २०, २१, २२, २३, २४ (चं.दा.), २७, २९, ३०, जुला. की १, २, ३, ६, ७, ८, ११, १७, १९, २०, २१-२२ (चं.दा.), २४, २५, २६, २८, २९, अग. की २७, ३०, ३१, सितं. की ३, ४, १२, १३, १४ (चं.दा.), १८, २०, २३, अक्तू. की १४, १५ [कार्तिक मासे अक्तू. की १९, २१ (17/57 तक), २३, २४, २५, २६, २८, २९ (20/19 तक), नवं. की ३, ४, ५, ६, १०, ११, १३, १४] मार्ग. में नवं. की १७, २०, २१, २४, २५ (30/54 तक), ३०, दिसं. की २, ३, ४, ५ (चं.दा.), जन. 2008 ई. की १८, १९, २४, २६, २७, २८-३० (चं.दा.), ३१, फर. की १, ३, १०, ११, १४, १६ (10/25 तक), २०, २१, २२, २३, २४, २५ (चं.दा.), २८, २९, मार्च की १, २, ८, ९, १०, ११ शुभ हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर (लड़का)	वर-कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	कन्या (लड़की)
धनु राशि—अप्रै. की १९, २०, २१, २६, २८, २९, ३०, **मई** की ५, ६, ८, ९, **जून** की १९, २०, २१, २२, २३, २४, २७ (चं.दा.), २९, ३०, **जुला.** की १, २, ३, ६-७-८ (चं.दा.,गु. दृष्टि), ११, **अग.** की २७, ३०-३१ (चं.दा.), **सितं.** की ३, ४, ५, १२, १३, १४, १८ (चं.दा.), २०, २३, २४, **अक्तू.** की १४-१५ (चं.दा.) [**कार्तिक मासे अक्तू.** की १९, २१, २३-२४ (चं.दा.), २५, २६, २८, २९, **नवं.** की ३, ४, ५, ६, १०-११ (चं.दा.), १३, १४] **जन. 2008 ई.** की १८, १९, २४, २६, २७, २८, ३०, ३१-**फर.** की १ (चं.दा.), ३, १४, १६. २०, २१, २२, २३, २४, २५, २८-२९ (चं.दा.), **मार्च** की १, २, १० (11/47 बाद), ११ तारीखें शुभ होंगी।	धनु राशि के वर को ज्ये., आश्विन, कार्तिक, फाल्गुन मास शुभ, वैशाख, आषाढ़, भाद्र., माघ में सूर्य पूज्य तथा श्राव. व मार्ग. मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्या को संवतारम्भ से 21 नवं. तक गुरु विशेष रूप से पूज्य, तदुपरान्त साधारण रूपेण पूज्य रहेगा।	**धनु राशि—अप्रै.** की १९, २०, २१, २६, २८, २९, ३०, **मई** की ५, ६, ८, ९, **जून** की १९, २०, २१, २२, २३, २४, २७ (चं.दा.), २९, ३०, **जुला.** की १, २, ३, ६-७-८ (चं.दा.), ११, १७, १९, २०, २१, २२, २४-२५ (चं.दा.), २६, २८, २९, **अग.** की २७, ३०-३१ (चं.दा.), **सितं.** की ३, ४, ५, १२, १३, १४, १८ (चं.दा.), २०, २३, २४, **अक्तू.** की १४-१५ (चं.दा.) [**कार्तिक मासे अक्तू.** की १९, २१, २३-२४ (चं.दा.), २५, २६, २८, २९, **नवं. की** ३, ४, ५, ६, १०-११ (चं. दा.), १३, १४] **मार्ग. में नवं.** की १७, २०-२१ (चं.दा.), २४, २५, २६, ३०, **दिसं.** की २, ३, ४, ५, **जन. 2008 ई.** की १८, १९, २४, २६, २७, २८, ३०, ३१-**फर.** की १ (चं.दा.), ३, १४, १६, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २८-२९ (चं.दा.), **मार्च** की १, २, १० (11/47 बाद), ११ तारीखें शुभ होंगी।
मकर राशि—जून की २२,२३, २४, २७, २९-३०-**जुला.** की १ (चं.दा.), २, ३, ६, ७, ८, ११, १९ (13/26 बाद), २०, २१, २२, २४, २५, २६-२८ (चं.दा.), २९, **सितं.** की १८, २० (चं.दा.), २३, २४, **अक्तू.** की १४, १५ [**कार्तिक मासे अक्तू.** की १९, २१, २३, २४, २८, २९, **नवं.** की ५ (17/15 के बाद), ६, १०, ११, १३-१४ (चं.दा.)], **मार्ग. में नवं.** की १७, २०, २१, २४, २५, २६, **दिसं.** की २ (23/33 बाद), ३, ४, ५, **जन., 2008 ई.** की १८, १९, २६ (16/36 बाद), २७, २८, ३०, ३१, **फर.** की १, ३ (चं.दा.), १०, ११, १४, १६, २२ (25/51 बाद), २३, २४, २५, २८, २९, **मार्च** की १-२ (चं.दा.), ८, ९, १०-११ (चं.द्रा.) तारीखें शुभ होंगी।	मकर के वर को आषाढ़, कार्तिक, मार्ग. मास शुभ, ज्येष्ठ, श्रावण, आश्विन, माघ व फाल्गुन मासों में सूर्य पूजा तथा वैशाख, भाद्र. मास त्याज्य होंगे। मकर की कन्या को 21 नवं. तक गुरु शुभ 22 नवं. से संवतान्त तक विशेष रूप से पूज्य रहेगा।	**मकर राशि—अप्रै.** की १९, २०, २१, २८ (14/59 के बाद), २९, ३०, **मई** की ५-६-८ (चं.दा.), ९, **जून** की २२, २३, २४, २७, २९-३०—**जुला.** की १ (चं.दा.), २, ३, ६, ७, ८, ११, १९ (13/26 बाद), २०, २१, २२, २४, २५, २६-२८ (चं.दा.), २९, **अग.** की २७, ३०, ३१, **सितं.** की ३, ४, ५, १२, १३, १४, १८, २० (चं.दा.), २३, २४, **अक्तू.** की १४, १५ [**कार्तिक मासे अक्तू.** की १९, २१, २३, २४, २८, २९, **नवं.** की ५ (17/15 बाद), ६, १०, ११, १३-१४ (चं.दा.)] **मार्ग.** में **नवं.** की १७, २०, २१, २४, २५, २६, **दिसं.** की २ (23/33 बाद), ३, ४, ५, **जन. 2008 ई.** की १८, १९, २६ (16/36 बाद), २७, २८, ३०, ३१, **फर.** की १, ३ (चं.दा.), १०, ११, १४, १६, २२ (25/51 बाद), २३, २४, २५, २८, २९, **मार्च** की १-२ (चं.दा.), ८, ९, १०-११ (चं.दा.) तारीखें शुभ होंगी।
कुम्भ राशि—अप्रै. की १९-२०-२१ (चं.दा., गु. दृष्टि), २६, २८ (14/58 तक), **मई** की ५, ६, ८-९ (चं.दा.), **जून** की १९, २०, २१, २४ (17/43 बाद), २७, २९, ३०, **जुला.** की १-२-३ (चं.दा.), ६, ७, ८, ११ (चं.दा.), १७, १९ (13/25 तक), २१ (25/35 बाद), २२, २४, २५, २६, २८, २९-**अग.** की २७ (चं.दा.), ३०, ३१, **सितं.** की ३-४ (चं.दा.), ५, १४ (16/56 बाद), [**कार्तिक मास में अक्तू.** की १९-२१ (चं.दा.), २३, २४, २५, २६, २८-२९ (चं.दा.), नवं. की ३, ४, ५ (17/14 तक), १०, ११, १३, १४] **मार्ग. में नवं.** की १७ (चं.दा.), २०, २१, २५ (30/54 बाद), २६, ३०, **दिसं.** की २ (23/32 तक), ५, **फर. 2008 ई.** की १६ (10/26 बाद), २०, २१, २२ (25/50 तक) २५ (11/40 बाद), २८, २९, **मार्च** की १, २, ८, ९, १०, ११ तारीखें शुभ होंगी।	कुम्भ के वर को वैशाख, मार्ग., श्रावण मास शुभ, आषाढ़, भाद्र., कार्तिक व फाल्गुन मासों में सूर्य की पूजा रहेगी। ज्येष्ठ, आश्विन, माघ मास त्याज्य होंगे। कुम्भ राशि की कन्या को संवतारम्भ से 21 नवं. तक गुरु की साधारण पूजा, 22 नवं. से शुभ रहेगा।	**कुम्भ राशि—अप्रै.** की १९-२०-२१ (चं.दा.), २६, २८ (14/58 तक), मई की ५, ६, ८-९ (चं.दा.), **जून** की १९, २०, २१, २४ (17/43 बाद), २७, २९, ३०, **जुला.** की १-२-३ (चं.दा.), ६, ७, ८, ११ (चं.दा.), १७, १९ (13/25 तक), २१ (25/35 बाद), २२, २४, २५, २६, २८, २९—**अग.** की २७ (चं.दा.), ३०, ३१, **सितं.** की ३-४ (चं.दा.), ५, १४ (16/56 बाद), १८, २०, २३ (चं.दा.), २४, **अक्तू.** की १४, १५ [**कार्तिक मासे अक्तू.** की १९-२१ (चं.दा.), २३, २४, २५, २६, २८-२९ (चं.दा.), नवं. की ३, ४, ५ (17/14 तक), १०, ११, १३, १४] मार्ग. में नवं. की १७ (चं.दा.), २०, २१, २५ (30/54 बाद), २६, ३०, **दिसं.** की २ (23/32 तक), ५, **जन. 2008 ई.** की २४, २६ (16/35 तक), २८ (27/02 बाद), ३०, ३१, **फर.** की १, ३, १०, ११, १६ (10/26 बाद), २०, २१, २२ (25/50 तक), २५ (11/40 बाद), २८, २९, **मार्च** की १, २, ८, ९, १०, ११ तारीखें।
मीन राशि—अप्रै. की १९, २०, २१ (12/59 तक), २६, २८, २९, ३०, **मई** की ५, ६, ८, ९, **जुला.** की १७, १९, २०, २१ (25/34 तक), २४, २५, २६, २८, २९, **अग.** की २७, ३०, ३१, **सितं.** की ३, ४, १२, १३, १४ (16/55 तक), १८, २०, २३, २४ (चं.दा.), **अक्तू.** की १४, १५, **नवं.** की १७, २०, २१, २४, २५-२६ (चं.दा.), ३०, **दिसं.** की २, ३, ४, ५ (11/46 तक), **जन. 2008 ई.** की १८, १९, २४, २६, २७, २८ (27/01 तक), ३१, **फर.** की १, ३, १०, ११ तारीखें शुभ एवं ग्राह्य होंगी।	मीन के वर को ज्येष्ठ, भाद्र. व माघ मास शुभ, वैशाख, श्रावण, आश्विन व मार्ग. पूज्य तथा आषाढ़, कार्तिक एवं फाल्गुन मास त्याज्य होंगे। मीन की कन्या को संवतारम्भ से 21 नवं. तक गुरु शुभ, 22 नवं. से संवतान्त तक साधारण रूपेण पूज्य रहेगा।	**मीन राशि—अप्रै.** की १९, २०, २१ (12/59 तक), २६, २८, २९, ३०, **मई** की ५, ६, ८, ९, **जून** की १९, २०, २१, २२, २३, २४ (17/42 तक), २७, २९, ३०, **जुला.** की १, २, ३, ६, ७, ८, ११, १७, १९, २०, २१ (25/34 तक), २४, २५, २६, २८, २९, **अग.** की २७, ३०, ३१, **सितं.** की ३, ४, १२, १३, १४ (16/55 तक), १८, २०, २३, २४ (चं.दा.), **अक्तू.** की १४, १५ [**कातिक मासे अक्तू.** की १९, २१ (चं.दा.), २३, २४, २५, २६, २८, २९ (20/19 तक), **नवं.** की ३, ४, ५, ६, १०, ११, १३, १४] **मार्ग. में नवं.** की १७, २०, २१, २४, २५-२६ (चं.दा.), ३०, **दिसं.** की २, ३, ४, ५ (11/46 तक), **जन. 2008 ई.** की १८, १९, २४, २६, २७, २८ (27/01 तक), ३१, **फर.** की १, ३, १०, ११, १४, १६ (चं.दा.), २०, २१, २२, २३, २४, २५ (11/39 तक), २८, २९, **मार्च** की १, २, ८, ९, १०, ११ तारीखें शुभ होंगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मुण्डन संस्कार मुहूर्त्त सं. २०६४

जन्म या गर्भाधान से १, ३, ५, ७ इत्यादि विषम वर्षों में कुलाचार के अनुसार उत्तरायणगत सूर्य में बालक की जन्म राशि एवं जन्म नक्षत्र ग्राह्य होता है, ज्येष्ठ (बड़े) लड़के के मुण्डन ज्येष्ठ मास में न करें। माता गर्भवती हो, तो पाँच वर्षायु से पूर्व बच्चे के मुण्डन न करें। ब्राह्मणों को रविवार, क्षत्रियों को मंगल एवं वैश्यों को शनिवार में भी ग्राह्य माने गए हैं, **परन्तु उक्त वारादि आवश्यक परिस्थितियों में ही ग्रहण करने चाहिएं।** अपनी कुल परम्परानुसार कुछ लोग **नवरात्रों में अथवा अक्षया तीज,** बसन्त आदि शुभ पर्वों पर शक्ति पीठों में, देवी (माता) के मन्दिर में अथवा सिद्ध तीर्थ स्थलों पर बिना निश्चित मुहूर्त्त के भी मुण्डन आदि शुभ कर्म कर लेते हैं।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वै. शु. ३/४, शु.	20 अप्रै.	७ वैशा.	रोहि.	ल. २, ३ (चं.गु.दा. अभि.)
वै. शु. ७, चंद्रे	23 अप्रै.	१० वैशा.	पुर्न	ल. २, अभिजित
वै. शु. १२, रवि	29 अप्रै.	१६ वैशा.	हस्त	11/18 बाद, अभि. (विप्राणां)
वै. शु. १३, चंद्र	30 अप्रै.	१७ वैशा.	हस्त	ल. २ (गु. दा.), ३, अभि.
प्र.ज्ये.कृ.३, शनि	5 मई	२२ वैशा.	ज्ये.	ल. २ (चं. गु. दा.), ३ (चं, दा.) वैश्यानां
ज्ये. कृ. ७, बुध	9 मई	२६ वैशा.	श्रव.	मु. 10/37 उप., अभि.
शु.ज्ये.शु. ३, र	17 जून	३ आषा	पुर्न	मु. अभि. (विप्राणां विशेष)
शु.ज्ये.शु. ४ चं.	18 जून	४ आषा	पुष्य	अभिजित
—सन् 2008 ईसवी में—				
पौष शु. १५, मं.	22 जन.	९ माघ	पुर्न.	प्रात: 8/08 बाद, भद्रोत्तरे (क्षत्रियाणां विशेष)
माघ कृ. १, बु.	23 जन.	१० माघ	पुष्य	मु. प्रात: 10/07 तक
मा. कृ. ५, रवि	27 जन.	१४ माघ	हस्त	11/44 उपरांत (विप्राणां विशेष)
मा. कृ. ६, चंद्र	28 जन.	१५ माघ	हस्त	ल. १२, अभिजित
मा. कृ. ८, बुध	30 जन.	१७ माघ	स्वा.	प्रात: 7/57 उप., १, अभि.
मा. कृ.११, शनि	2 फर.	२० माघ	ज्ये.	ल. १२, १, अभि. (वैश्यानां केवल)
मा. शु. ५, चंद्र	11 फर.	२९ माघ	रेव.	ल. १ (चं. दा.), अभि.
मा. शु. १२, चंद्र	18 फर.	६ फागु.	पुर्न.	ल. १२, १, अभि.
फा.कृ.४/५, चं.	25 फर.	१३ फागु.	चित्रा	ल. १२-१ (चं. दा.), २ वृष ल. प्रात: 11/39 तक
फागु. शु. ३ चं.	10 मार्च	२७ फागु.	रेव.	ल. मेष, वृष

गृहारम्भ एवं नींवादि मुहूर्त्त—सं. २०६४

नींव (शिलान्यास) एवं गृह निर्माण आदि के मुहूर्त्तों में गृहस्वामी की राशि अनुकूलता देखकर निम्न शुभ मुहूर्त्तों में वास्तु पूजन, नवग्रह शान्ति, होम यज्ञादि करके, शिलान्यास, नींव भरण, गृहारम्भ (निर्माण) प्रारम्भ करना चाहिए। गृहारम्भ में १, ५, ७, ९ आदि प्रविष्टों में भूमि-शयन (सुप्त भूमि) का भी विचार किया जाता है। एक अन्य मतानुसार सूर्य नक्षत्र से ५, ७, ९, १२, १९ एवं २६वें चन्द्र नक्षत्र पर भी भूमि शयन का विचार किया जाता है। नीचे दिए गए ***चिन्हित नक्षत्र** दिन सूर्य नक्षत्रात् भूमिशयन की तारीखें दी गई हैं। आवश्यक परिस्थितिवश नक्षत्र स्वामी ग्रह एवं सूर्यादि ग्रहों की पूजा दानादि के पश्चात् गृहारम्भ कार्य करना प्रशस्त होगा। अधिक सूक्ष्मता के लिए आगे दिए गए सूर्यभात् वृष चक्र का भी प्रयोग कर सकते हैं। लैंटर (छत) डालना और स्तम्भ आरोहणादि काल में पंचक नक्षत्रों का भी अवश्य विचार करना चाहिए॥

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. शु. ५ श.	*21 अप्रै.	८ वैशा.	मृग.	ल. २, ३ (चं.गु.दा.), अभि.
वै. शु. १२, शनि	28 अप्रै.	१५ वैशा.	उफा.	दि. ल. २ (गु. दा.) वृष ल. 8/14 उप.), ३, अभि.
वै. शु. १३, चंद्र	*30 अप्रै.	१७ वैशा.	हस्त	ल. २ (गु. दा.), ३, अभि. (दुपै. 14/25 तक)
ज्ये. कृ. ३, शनि	5 मई	२२ वैशा.	ज्ये.	ल. २ (गु. दा.), ३, अभि. (गुरू स्थित नक्षत्रे)
प्र.ज्ये.कृ.७, बुध	9 मई	२६ वैशा.	उषा.	प्रात: 6/34 तक
शु.ज्ये.शु.८, शनि	23 जून	९ आषा	हस्त	मु. 7/55 तक ग्राह्य
ज्ये.शु. १२, बुध	*27 जून	१३ आषा	अनु.	मु. दुपै. 12/34 उप.
आ. कृ. ५, गुरु	*5 जुला	२० आषा	शत	अभिजित
आ. कृ. ७, शनि	7 जुला	२३ आषा	उभा	अभिजित
आ.कृ. १२, बुध	11 जुला	२७ आषा	रोहि.	मु. 8/18 उप., अभिजित
आ. शु. ५, गुरू	19 जुला	४ श्राव.	उफा.	मु. 6/53 उप., अभि., ल. ८
आ. शु. ७, शनि	21 जुला	६ श्राव.	हस्त	अभि. (मु. दुपै. 12/06 तक)
आ.शु. ११, बु.	25 जुला	११ श्राव.	अनु.	अभि., ल. ८ आवश्यके
भा. कृ. ३, शुक्र	31 अग.	१५ भाद्र.	रेव.	ल. ६ (चं. श. दा.), अभि.
भा. कृ. ११, शु.	7 सितं.	२२ भाद्र.	पुर्न	ल. ६ (श. दा.), अभि., ९
भा.कृ. १२, शनि	8 सितं.	२३ भाद्र.	पुष्य	ल. ६ (श. दा.), अभिजित
भा. शु. १, बुध	12 सितं.	२७ भाद्र.	उफा	अभिजित, ल. ९ (शु. दा.)
भा. शु. २, गुरु	13 सितं.	२८ भाद्र.	हस्त	अभिजित, ल. ९ (शु. दा.)
भा. शु. ३, शुक्र	14 सितं.	२९ भाद्र.	चित्रा	अभिजित, ल. ९ (शु. दा.)
आ.शु. १३, बुध	24 अक्तू.	८ कार्ति.	उभा.	ल. ८, मं. दा., अभिजित
का. कृ. ६, बुध	31 अक्तू.	१५ कार्ति.	पुर्न.	ल. ८ (मं. दा.), अभि.
कार्ति. कृ. ७, गु.	1 नवं.	१६ कार्ति.	पुष्य	ल. ८ (मं. दा.), अभि.
का.कृ. ११, चंद्र	5 नवं.	२० कार्ति.	उफा.	मु. 10/37 उप., अभि.
का. शु. २, चंद्र	12 नवं.	२७ कार्ति.	ज्ये.	ल. ८ (मं. दा.), अभि. (गुरु स्थित नक्षत्रे)
का. शु. ७, शनि	17 नवं.	२ मार्ग.	धनि.	ल. १२ (शु. दा.), अभि.
का.शु.११/१२ बु.	21 नवं.	६ मार्ग.	उभा.	ल. १२ (शु. दा.) अभि. (प्रात: 10/19 उप. भद्रोत्तरे)
मार्ग. कृ. २ चं.	26 नवं.	११ मार्ग.	मृग.	ल. १२ (शु. दा.), अभि.
मार्ग. कृ. ५, बु.	28 नवं.	१३ मार्ग.	पुर्न.	ल. १२ (शु. दा.), अभि.
मार्ग. कृ. ६ गु.	*29 नवं.	१४ मार्ग.	पुष्य	ल. १२ (शु. दा.), अभि.
मार्ग. कृ.१० चं.	3 दिसं.	१८ मार्ग.	उ.फा.	अभि. ल. १ (मेष शु. दा.) (लग्न 8/39 के बाद)
मार्ग. कृ.११ बु.	5 दिसं.	२० मार्ग.	चित्रा	अभिजित
—सन् 2008 ईसवी में—				
पौ.शु.१२, शनि	19 जन	६ माघ	रोहि.	ल. १२, अभि. च.
मा. कृ. ६, चंद्र	*28 जन	१५ माघ	हस्त	ल. १२-१ (चं. दा.) गोधू.
मा. कृ. ८, बुध	30 जन.	१७ माघ	स्वा.	ल. १ (चं. दा.), अभि.
मा.कृ.१०, शुक्र	1 फर.	१९ माघ	अनु.	ल. १२ (चं. दा.), अभि.
मा. शु. १, शुक्र	8 फर.	२६ माघ	शत.	प्रात: 8/24 बाद ल. १२, अभि.
मा. शु. ५, चंद्र	*11 फर	२९ माघ	रेव.	१ (चं.दा.), अभि., बसंत ५, (दुपै. 13/39 बाद मृत्युबाण)
माघ शु. १० श.	16 फर.	४ फागु.	मृग.	ल. १२, २, अभि. (चं.गु.दा.)
मा.शु.१२, चंद्र	*18 फर	६ फागु.	पुर्न	ल. १२,१,२ (चं.गु.दा.), अभि.
फागु. कृ. २, श.	23 फर.	११ फागु.	उफा.	ल. १२-१ (चं.दा.),
फा. कृ. ५, चंद्र	25 फर.	१३ फागु.	चित्रा	प्रात: 11/46 बाद, अभि.
फा.कृ.७/८ गु.	28 फर.	१६ फागु.	अनु.	ल. १२-२ (चं. दा.), अभि.
फा. कृ. ८, शुक्र	29 फर.	१७ फागु.	अनु.	ल. १२-१ (चं. दा.) मेष ल. 9/21 तक
फा. कृ. ३, चंद्र	10 मार्च	२७ फागु.	रेव.	ल. १,२ (गु.दा.), अभि.

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त सं. २०६४

नूतन (नवीन) गृह प्रवेश में अपने पण्डित जी से पूछ कर रखे गए पूर्व निर्धारित मुहूर्त्त पर **नव-गृह में वास्तु-पूजा, शान्ति,** नवग्रह-पूजन-शान्ति, स्वस्ति वाचन एवं पंचदेव गोपूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों एवं आश्रितजनों को यथाशक्ति भोजन-दानादि एवं कन्या पूजन, सवत्सा गाय, जलपूर्ण कलश तथा ब्राह्मणों को आगे करके शंख ध्वनि एवं सुहागिनों द्वारा मंगल गान सहित नव गृह में प्रवेश करना चाहिए।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नूतन गृह–प्रवेश–सं. २०६४

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. शु. ३ शु.	20 अप्रै.	७ वैशा.	रोहि.	मु. प्रातः 6/25 पूर्व, विशेषतः
वैशा. शु. ५ श.	21 अप्रै.	८ वैशा.	मृग.	ल. २,३ (चं.गु.दा.) अभि.
वै. शु. ७, चंद्र	23 अप्रै.	१० वैशा.	पुर्न	ल.२(गु.दा.) अभि. (आव.)
वै.शु. १२, शनि	28 अप्रै.	१५ वैशा.	उफा	ल. २ (गु. दा.), ३, अभि.
वै.शु. १३, चंद्र	30 अप्रै.	१७ वैशा.	हस्त	ल. २ (गु. दा.), ३, अभि. (14/25 तक)
प्र.ज्ये.कृ. ७, बु.	9 मई	२६ वैशा.	श्रव.	ल. २ (गु. दा.), अभि.
शु.ज्ये.शु. ८, श.	23 जून	९ आषा.	हस्त	प्रातः 7/55 तक, आवश्यके
प्र.ज्ये.शु.१३, गु.	28 जून	१४ आषा.	अनु.	14/37 तक, अभि., आवश्यक
कार्ति. कृ.७ गु.	1 नवं.	१६ कार्ति.	पुष्य	ल. ८ (मं.दा.), अभि., सू. दा. आवश्यके
का.कृ. ११, चंद्र	5 नवं.	२० कार्ति.	उफा	10/37 बाद, अभि. सू. दा. आव.
का. शु. ७, शनि	17 नवं.	२ मार्ग.	धनि.	दुपै. 13/33 उप. ल. १२ (शु.दा.)
का.शु.११/१२,बु.	21 नवं.	६ मार्ग.	रेव.	ल. १२ (शु. दा.) अभि. (प्रातः 10/19 बाद, भद्रोत्तरे)
मार्ग. कृ. २, चं.	26 नवं.	११ मार्ग.	मृग.	ल. १२ (शु. दा.) अभि.
मा. कृ. ६, गु.	29 नवं.	१४ मार्ग.	पुष्य	मु. 13/40 तक अभि.
मा. कृ. ९०, चं.	3 दिसं.	१८ मार्ग.	उफा.	8/39 बाद,अभि., १ (शु. दा.)
मा.कृ.११, बुध	5 दिसं.	२० मार्ग.	चित्रा	अभि., १ (चं. शु. दा.)
—सन् 2008 ईसवी में—				
पौष शु. १२ श.	19 जन.	६ माघ	रोहि.	ल. १२, अभिजित च.
माघ कृ. १, बु.	23 जन.	१० माघ	पुष्य	ल. १२, अभिजित
मा. कृ. ६, चंद्र	28 जन.	१५ माघ	हस्त	ल. १२ (चं. दा.), अभि.
मा. कृ. ८, बुध	30 जन.	१७ माघ	स्वा.	प्रातः 7/57 के बाद, ल. १ (चं. दा.), अभिजित
मा.कृ.१०, शुक्र	1 फर.	१९ माघ	अनु.	ल. १२ (चं. दा.), अभि.
मा. शु. ५, चंद्र	11 फर.	२९ माघ	रेव.	ल. १ (चं.दा.), अभि. बसंत ५ (दुपै. 13/39 बाद मृत्युपंचक)
मा.शु.१०, शनि	16 फर.	४ फागु.	मृग.	ल. १२, २ (चं.गु.दा.), अभि.
फा. कृ. २, शनि	23 फर.	११ फागु.	उ.फा.	ल. १२-१, अभि.
फा. कृ. ५, चंद्र	25 फर.	१३ फागु.	चित्रा	प्रातः 11/46 के बाद, अभि.
फा. कृ. ७, गुरु	28 फर.	१६ फागु.	अनु.	ल. १२-१ (चं.दा.) अभि.
फा. कृ. ८, शुक्र	29 फर.	१७ फागु.	अनु.	ल. १२-१ (चं.दा.), मेष ल. 9/21 तक
फागु. शु. ३, चं.	10 मार्च	२७ फागु.	रेव.	ल. १, २ (गु. दा.), अभि.

पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्त सं. २०६४

अस्थायी तौर पर किराये आदि के मकान में प्रवेश अथवा पुराने गृह में प्रवेश के मुहूर्त्त के लिए ऊपर दिए गए **नवीन गृह प्रवेश मुहूर्त्तों के अतिरिक्त निम्नलिखित मुहूर्त्त भी ग्राह्य होंगे।** ध्यान रहे, पुराने निजी या किराये के मकान में प्रवेश के समय भी कलश पूजन, देव पूजन, नवग्रह शान्ति, ब्राह्मण भोजन आदि करवाना शुभ होता है।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
द्वि.ज्ये.शु.१०,चं.	25 जून	११ आषा.	चित्रा	मुहूर्त्त प्रातः 7/13 तक
द्वि.ज्ये.शु.१२,बु.	27 जून	१३ आषा.	अनु.	दुपै. 12/34 के बाद, अभि.
आषा. शु. ३ मं.	17 जुला.	२ श्राव.	मघा	मुहूर्त्त अभिजित तथा वृश्चि.
आ. शु. ५ गु.	19 जुला.	४ श्राव.	उषा	मुहू. अभिजित तथा वृश्चिक
आ. शु. ६, शु.	20 जुला.	५ श्राव.	हस्त	मु. अभिजित तथा वृश्चिक
आ. शु. ७, श.	21 जुला.	६ श्राव.	चित्रा	मुहूर्त्त अभि. तथा वृश्चिक
आ.शु.११, बु.	25 जुला.	१० श्राव.	अनु.	मुहूर्त्त अभि. तथा वृश्चिक
श्रा. शु. १४, चं.	27 अग.	११ भाद्र.	धनि.	लग्न ९ (शु. दा.), अभि.
भा.कृ.३/४, शु.	31 अग.	१५ भाद्र.	रेव.	ल. कन्या (चं. दा.), अभि.
भा. कृ. ९, बु.	5 सितं.	२० भाद्र.	मृग.	ल. कन्या (श. के. दा.), अभि.
भा.कृ.११, शु.	7 सितं.	२२ भाद्र.	पुर्न.	ल. ६ (श. के. दा.), अभि.
भा.कृ. १२, श.	8 सितं.	२३ भाद्र.	पुष्य	ल. ६ (श. के दान), अभि.
भा. शु. १, बु.	12 सितं.	२७ भाद्र.	उफा.	ल. ९ (शु. दा.), अभि.
भा. शु. २, गु.	13 सितं.	२८ भाद्र.	हस्त	ल. ९ (शु. दा.), अभि.
भा. शु. ३, शु.	14 सितं.	२९ भाद्र.	चित्रा.	ल. ७ (चं. दा.), अभि.
भा. शु. ६, मं.	18 सितं.	२ आश्वि	अनु.	ल. ७ (11/40 तक)
भा. शु. ८, गु.	20 सितं.	४ आश्वि	मूला	ल. ७, ८, अभिजित
भा.शु. १२, चं.	24 सितं.	८ आश्वि	धनि.	ल. ७, ८, अभिजित
आश्वि शु.४, चं.	15 अक्तू.	२९ आश्वि	अनु.	ल. ७ (चं. दा.), अभि.
आश्वि शु. ८ शु.	19 अक्तू.	३ कार्ति.	उषा.	मु. प्रातः 11/20 बाद, अभि.
आश्वि शु.१० र.	21 अक्तू.	५ कार्ति.	धनि.	अभिजित, सिद्ध योगः
आश्वि शु.१३ बु.	24 अक्तू.	८ कार्ति.	उ.भा.	ल. ८, अभि., १२
आश्वि शु.१५ शु.	26 अक्तू.	१० कार्ति.	अश्वि	ल. १२, अभिजित च.
का. कृ. ४ चं.	29 अक्तू.	१३ कार्ति.	रोहि.	ल. ८ (चं. दा.), अभि.
का. कृ. ७ गु.	1 नवं.	१६ कार्ति.	पुष्य	ल. ८ (मं. दा.), अभि.
का. कृ. ११ चं.	5 नवं.	२० कार्ति.	उफा	मु. 10/37 के बाद, अभि.

पुरातन (पुराने) गृह सम्बन्धी शेष अन्य मुहूर्त्त नवीन गृह प्रवेश के मुहूर्त्तों का अनुसरण करें।

व्यवसाय (व्यापार) में दुकान, कार्यालय आदि (विपणि) के मुहूर्त्त सं. २००७-०८

व्यवसाय में दुकान, कार्यालय आदि शुरु करने के मुहूर्त्त के समय किसी कर्मकाण्डी ब्राह्मण द्वारा सर्वदेव पूजा, नवग्रह पूजन के पश्चात् दृढ़ कलश स्थापन एवं कन्या पूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों, आश्रित एवं सहयोगी जनों को यथाशक्ति भोजन आदि करवाना चाहिए। कार्तिक मास में सूर्य की पूजा, दान आदि करना शुभ होगा।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. शु. ३,शु.	20 अप्रै.	७ वैशा.	रोहि.	मुहूर्त्त प्रातः 6/25 तक
वै. शु. ५, शनि	21 अप्रै.	८ वैशा.	मृग.	ल. २, ३ (चं.गु.दान), अभि.
वै. शु. ७, चंद्र	23 अप्रै.	१० वैशा.	पुर्न.	ल. २ (गु. दा.), अभिजित
वै.शु. १२, शनि	28 अप्रै.	१५ वैशा.	उफा.	ल. २ (गु. दा.), ३, अभि. (वृष ल. 8/14 उप.)
वैशा. शु.१२, र.	29 अप्रै.	१६ वैशा.	उ.फा.	ल. २ (गु. दा.), अभि.
वै. शु. १३, चंद्रे	30 अप्रै.	१७ वैशा.	हस्त	ल. २, अभिजित
प्र.ज्ये.कृ.७, बुध	9 मई	२६ वैशा.	श्रव.	ल. २ (गु. दा.), अभि.
द्वि.ज्ये.शु.३, र.	17 जून	३ आषा.	पुर्न.	अभिजित
द्वि.ज्ये.शु.८, शु.	22 जून	८ आषा.	उ.फा.	अभिजित
द्वि.ज्ये.शु.८, शु.	23 जून	९ आषा.	हस्त	प्रातः 7/55 तक (आवश्यके)
द्वि.ज्ये.शु.१०,र.	24 जून	१० आषा.	चित्रा	प्रातः 10/21 उप., अभि.
द्वि.ज्ये.शु.१०,चं.	25 जून	११ आषा.	चित्रा	मुहूर्त्त प्रातः 7/13 तक
द्वि.ज्ये.शु.१२,बु.	27 जून	१३ आषा.	अनु.	दुपै. 12/34 उपरांत
ज्ये.शु.१३, गुरू	28 जून	१४ आषा.	अनु.	मु. 14/37 तक
आ. कृ. ७, शनि	7 जुला.	२३ आषा.	उ.भा.	अभिजित, ६ (चं. दा.)
आ. कृ. ८, रवि	8 जुला.	२४ आषा.	रेव.	अभिजित, ६ (चं. दा.)
आ. कृ. १२, बु.	11 जुला.	२७ आषा.	रोहि.	मु. 8/18 उप., अभिजित
आषा. शु.५, गु.	19 जुला.	४ श्राव.	उ.षा.	अभि., बृश्चिक ल.
आ. शु. ६, शुक्र	20 जुला.	५ श्राव.	हस्त	अभिजित, ल. बृश्चिक
आ. शु. ७, शनि	21 जुला.	६ श्राव.	ह./चि.	अभिजित, बृश्चिक
आ. शु. ८, रवि	22 जुला.	७ श्राव.	चित्रा	अभिजित, बृश्चिक
आ.शु. ११, बुध	25 जुला.	१० श्राव.	अनु.	अभिजित, बृश्चिक
आ.शु.१५, रवि	29 जुला.	१४ श्राव.	उ.षा.	ल. ६ (शु. श. दा.), अभि. (भद्रा पाताल गते शुभा)
श्रा.शु.१३, रवि	26 अग.	१० भाद्र.	उषा/श्र.	ल. ६ (श. दा.), अभि., शु. बाल
भा. कृ. २, गुरू	30 अग.	१४ भाद्र.	रेव.	मुहूर्त्त प्रातः 7/04 तक
भा. कृ. ३, शुक्र	31 अग.	१५ भाद्र.	रेव.	मुहूर्त्त प्रातः 7/45 तक
भा.कृ. १२,शनि	8 सितं.	२३ भाद्र.	पुष्य	ल. ६ (श. दा.), अभि.

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

यज्ञोपवीत (उपनयन) संस्कार मुहूर्त्त २०६४

मुकलावा (द्विरागमन) मुहूर्त्त सं. २०६४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
भाद्र. शु. १ बु.	12 सितं.	२७ भाद्र.	उ.फा.	ल. ६ (चं. लग्ने पूज्य. दान व), अभिजित, ९
भा. शु. २, गुरू	13 सितं.	२८ भाद्र.	हस्त	ल. ६ (चं. पू. दान व), ९, अभि.
भा. शु. ३, शुक्र	14 सितं.	२९ भाद्र.	चित्रा	ल. ७ (चं. दा.), ९, अभि.
आश्वि. शु.८ शु.	19 अक्तू.	३ कार्ति.	उ.षा.	मुहू. 11/20 उप., अभि.
आ.शु.१०, रवि	21 अक्तू.	५ कार्ति.	धनि.	मुहू. 11/45 उप., अभि.
आ.शु.१३, बुध	24 अक्तू.	८ कार्ति.	उ.भा.	ल. ८ (मं. दा.), अभिजित
आ. शु. १५ शु.	26 अक्तू.	१० कार्ति.	अश्वि.	दि. ल. ८ (मं.दा.), अभि.
का. कृ. ३, रवि	28 अक्तू.	१२ कार्ति.	रोहि.	ल. ८ (चं. मं. दा.), अभि.
का. कृ. ११,चं.	5 नवं.	२० कार्ति.	उ.फा.	मु. 10/37 बाद, 10 (श. दा. पू.) अभिजित
का.शु.१/२, रवि	11 नवं.	२६ कार्ति.	अनु.	८ (चं. मं. दा.), अभि., आव.
का. शु. ७, शनि	17 नवं.	२ मार्ग.	धनि.	दुपै. 13/33 उपरांत ल. १२ (शु. दा.)
का. शु. ८, रवि	18 नवं.	३ मार्ग.	धनि.	मु. 13/53 तक, अभि.
का.शु. ११/१२ बु.	21 नवं.	६ मार्ग.	रेव.	10/19 बाद, अभि.
मार्ग. कृ. १, र.	25 नवं.	१० मार्ग.	रोहि.	अभिजित, ल. १२, (शु.दा.)
मा. कृ. २, चंद्र	26 नवं.	११ मार्ग.	मृग	अभि., ल. १२ (शु. दा.)
मा. कृ. ६, गुरू	29 नवं.	१४ मार्ग.	पुष्य	मुहूर्त्त अभि., 13/40 तक
मा. कृ.१०, चंद्र	3 दिसं.	१८ मार्ग.	उ.फा.	मु. प्रातः 8/39 उपरांत, अभि.
मा. कृ. ११ बुध	5 दिसं.	२० मार्ग.	चित्रा	अभि., मेष ल. (चं. श., दा.)
—सन् 2008 ईसवी में—				
पौष शु. १२ श.	19 जन.	६ माघ	रोहि.	ल. १२, १ अभि.
मा. कृ. १, बुध	23 जन.	१० माघ	पुष्य	ल. मीन, मेष, अभि. च.
मा. कृ. ५, रवि	27 जन.	१४ माघ	उ.फा.	ल. मीन (चं.दा.), १, अभि.
मा. कृ. ६, चंद्र	28 जन.	१५ माघ	हस्त	ल. १२ (चं. दा.), अभि.
मा. कृ. ८, बुध	30 जन.	१७ माघ	स्वा.	7/57 के बाद, ल. १, अभि.
मा. कृ. १०, शु.	1 फर.	१९ माघ	अनु.	ल. १२ (चं. दा.), अभि.
माघ शु. ५ चं.	11 फर.	२९ माघ	रेव.	ल. १ (चं. दा.), अभि. (दुपै. 13/38 तक)
मा.शु.१०, शनि	16 फर.	४ फागु.	मृग.	ल. १२-२ (चं. गु. दा.), अभि.
माघ शु. १२,चं.	18 फर.	६ फागु.	पुर्न.	ल. १२, २, अभि.
फा. कृ. २, शनि	23 फर.	११ फागु.	उ.फा.	ल. १२-२ (चं. गु. दा.), अभि.
फा. कृ. ५, चंद्र	25 फर.	१३ फागु.	चित्रा	प्रातः 11/46 उप., अभि.
फा. कृ. ७, गुरू	28 फर.	१६ फागु.	अनु.	ल. १२-१ (चं. दा.), अभि.
फा. कृ. ८, शुक्र	29 फर.	१७ फागु.	अनु.	ल. १२-१ (चं. दा.) मेष ल. 9/21 तक
फा. शु. २, रवि	9 मार्च	२६ फागु.	उ.भा.	ल. १ (चं.दा.), वृष, अभि.
फा. शु. ३, चंद्र	10 मार्च	२७ फागु.	रेव.	ल. १ (चं. दा.), २ (गु. दा.), अभि.

यज्ञोपवीत (उपनयन) संस्कार मुहूर्त्त २०६४

यज्ञोपवति को व्रत-बन्ध भी कहते हैं। यह संस्कार भारतीय जीवन पद्धति में उत्तरदायित्व का बोध कराने वाला पुण्य प्रतीक है। विशेष संस्कार या अनुष्ठान आदि के अवसर पर (उसमें भाग लेने वालों को यज्ञोपवीत बदलवा देना चाहिए। चैत्र और वैशा. में (बसन्त) में ब्राह्मण का, ग्रीष्म में क्षत्रिय का और शरद् ऋतु में वैश्य को यज्ञोपवीत धारण करना श्रेष्ठ होता है। निम्न मन्त्रपूर्वक नवीन यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए—

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं, प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुन्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

आगे संवत् २०६४ में आने वाले कुछ विशेष मुहूर्त्त दिए जा रहे हैं—

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. ७ र.	25 मार्च	१२ चैत्र	मृग	ल. २ (गु. दा.), अभि.
चै. शु.१०, बुध	28 मार्च	१५ चैत्र	पुष्य	ल. २ (गु. दा.), अभिजित
वैशा. कृ. ३, गु.	5 अप्रै.	२३ चैत्र	स्वा.	ल. ३, अभिजित
वै. कृ. ७, चंद्र	9 अप्रै.	२७ चैत्र	मूल	ल. ३ (चं. दा.), अभि.
वै. शु. ३, शुक्र	20 अप्रै.	७ वैशा.	रोहि.	मुहूर्त्त प्रातः 6/25 तक
वै. शु. ६, रवि	22 अप्रै.	९ वैशा.	आर्द्रा	ल. २ (गु. दा.), अभि.
वै. शु. ७, चंद्र	23 अप्रै.	१० वैशा.	पुर्न	ल. २ (गु. दा.), अभि.
वै. शु. ११,शुक्र	27 अप्रै.	१४ वैशा.	पूफा.	ल. २ (गु. दा.), ३, अभि.
वै. शु. १२, रवि	29 अप्रै.	१६ वैशा.	उ.फा.	ल. २ (गु. दा.), 8/11 तक
प्र.ज्ये.कृ. ५ चं.	7 मई	२४ वैशा.	पू.षा.	ल. ३ (चं. दा.), अभि.
प्र.ज्ये.कृ.७, बुध	9 मई	२६ वैशा.	श्रव.	ल. २ (गु. दा.), अभि.
द्वि.ज्ये.शु.३,रवि	17 जून	३ आषा.	पुर्न	अभिजित
—सन् 2008 ईसवी में—				
माघ कृ. १ बु.	23 जन.	१० माघ	पुष्य	ल. १२, अभिजित
मा. कृ. ५, रवि	27 जन.	१४ माघ	उ/ह.	ल. १२ (चं. दा.), अभि.
माघ शु. ५ चं.	11 फर.	२९ माघ	रेव.	ल. १ (चं. दा.), अभि., बसंत
मा. शु. ११,रवि	17 फर.	५ फागु.	आर्द्रा	ल. १२, १, अभि.
मा. शु. १२,चंद्र	18 फर.	६ फागु.	पुर्न.	ल. १२, १, अभिजित
फा. कृ. १, शुक्र	22 फर.	१० फागु.	पूफा.	ल. १, २, अभिजित
फा. कृ. ५, चंद्र	25 फर.	१३ फागु.	चित्रा	अभिजित
फा. कृ. ७, गुरू	28 फर.	१६ फागु.	अनु.	ल. १२, २ (चं. दा.), अभि.
फा. शु. २, रवि	9 मार्च	२६ फागु.	उ.भा.	ल. १, २, अभिजित
फा. शु. ३, चंद्र	10 मार्च	२७ फागु.	रेव.	ल. १ (चं. दा.), २, अभि.

मुकलावा (द्विरागमन) मुहूर्त्त सं. २०६४

विवाह उपरान्त पिता के गृह में आकर दूसरी बार पुनः पति के गृह में जाने को द्विरागमन (मुकलावा) कहते हैं। विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर ही द्विरागमन हो, तो निर्धारित मुहूर्त्तों के बिना भी वधू प्रवेश या द्विरागमन करवाना शुभ होता है। इसके अतिरिक्त, नवविवाहिता स्त्री को विवाह के बाद द्विरागमन अथवा यात्रा में सम्मुख शुक्र एवं दक्षिण शुक्र का भी विचार किया जाता है—अर्थात् शुक्र जिस दिशा (पूर्व या पश्चिम) में उदित होता हो, उस दिशा में शुक्र सम्मुख तथा उससे दाहिनी ओर की दिशा दक्षिणस्थ मानी जाती है। मुकलावा के आगे लिखे मुहूर्त्त विवाहोपरांत १६ दिन के पश्चात् ही विशेषतः ग्राह्य होंगे। आजकल कुछ पंचाँगकार परिस्थिति-वश एवं उपाय स्वरूप रवि एवं शनिवार भी ग्रहण करने लगे हैं।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वै. शु. ३, शुक्र	20 अप्रै.	७ वैशा.	रोहि	विशेष मु. प्रा. 6/25 तक
वै. शु. ५, शनि	21 अप्रै.	८ वैशा.	मृग.	ल. २, ३ (चं. गु. दा.), अभि.
वै. शु. ७, चंद्र	23 अप्रै.	१० वैशा.	पुर्न	ल. २ (गु. दा.), अभिजित
वै. शु. १२,शनि	28 अप्रै.	१५ वैशा.	उ.फा.	२ (गु. दा.), अभिजित
वै. शु. १२, रवि	29 अप्रै.	१६ वैशा.	उ.फा.	ल. २ (गु. दा.), ३, अभि., सूर्य दान आवश्यके
वै. शु. १३, चंद्र	30 अप्रै.	१७ वैशा.	हस्त	ल. २ (गु. दा.), ३, अभि. (14/25 तक)
प्र.ज्ये.कृ. ४ र.	6 मई	२३ वैशा.	मूल	ल. ३ (चं. दा.) अभि. च आवश्यके (सूर्य पूज्य दान)
प्र.ज्ये.कृ.७, बुध	9 मई	२६ वैशा.	श्रव.	ल. २ (गु. दा.), अभि.
का. शु. ७, शनि	17 नवं.	२ मार्ग.	धनि.	ल. १२ (शु. दा.), अभि.
का.शु. ११/१२, बु.	21 नवं.	६ मार्ग.	रेव.	मु. 10/19 बाद, अभि.
मार्ग. कृ. २,चं.	26 नवं.	११ मार्ग.	मृग.	ल. १२ (शु. दा.), अभि.
मा. कृ. ५, बुध	28 नवं.	१३ मार्ग.	पुर्न	ल. १२ (शु. दा.), अभि.
मा. कृ. ६, गुरू	29 नवं.	१४ मार्ग.	पुष्य	ल. १२ (शु. दा.), अभि.
मा. कृ. १०,चंद्र	3 दिसं.	१८ मार्ग.	उ.फा.	मु. 8/39 बाद, अभि.
पा. कृ.११, बुध	5 दिसं.	२० मार्ग.	चित्रा	अभिजित, मेष ल.
—सन् 2008 ईसवी में—				
माघ शु. १० श.	16 फर.	४ फागु.	मृग.	ल. १२, २ (चं.गु.दा.), अभि.
मा. शु. १२,चंद्र	18 फर.	६ फागु.	पुर्न	ल. १२,१,२ (चं.गु.), अभि.
मा. कृ. २, शनि	23 फर.	११ फागु.	उ.फा.	ल. १२, १ (चं. दा.)
मा. कृ. ५, चंद्र	25 फर.	१३ फागु	चित्रा	मु. 11/46 बाद, अभि.
फा.कृ.७/८, गुरु	28 फर.	१६ फागु.	अनु.	ल. १२-२ (चं.दा.), अभि.
फा. कृ. ८, शुक्र	29 फर.	१७ फागु.	अनु.	ल. १२-१ (चं.दा.) मेष 9/21 तक
फा. शु. ३, चंद्र	10 मार्च	२७ फागु.	रेव.	ल. १-२ (गु. दा.), अभि.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०६४ में सर्वदेव प्रतिष्ठा (मूर्त्ति स्थापना) मुहूर्त्त

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना, जलाशय, तालाब, बावड़ी, कुआं आदि के निर्माण हेतु भी ग्रहणीय होंगे। सात्त्विक देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना में उत्तरायण विशेष प्रशस्त माने जाते हैं।

श्री विष्णु, राम की मूर्त्ति स्थापना में वैशाख आदि उत्तरायण मासों के अतिरिक्त अक्षया तृतीया, रामनवमी, विजयादशमी, दीपावली आदि विशेष शुभ हैं। श्री विष्णु प्रतिमा में माघ मास वर्जित होता है। भैरव आदि तामस देवों के लिए मार्गशीर्ष मास विशेष ग्राह्य हैं। श्री कृष्ण की प्रतिमा के लिए उत्तरायण मास, भाद्र. कृष्णाष्टमी तथा मार्गशीर्ष मास शुभ माने जाते हैं।

श्री शिव मूर्त्ति, शिवलिंग की प्रतिष्ठा में श्रावण एवं फाल्गुण मास की चतुर्दशी (शिवरात्री) विशेषतया प्रशस्त है।

श्री दुर्गा माता, श्री महालक्ष्मी, सरस्वती, गौरी एवं काली माता की भी प्रतिष्ठा में दक्षिणायण (गुर्वास्तादि रहित) मास में नवरात्रे, अष्टमी/नवमी तिथि, मूल नक्षत्र, दीवाली एवं बसन्त पंचमी, नवरात्रे विशेष शुभ माने जाते हैं।

श्री हनुमान जी की मूर्त्ति स्थापना में चैत्र शु. पूर्णिमा, कार्तिक कृष्ण चौदश, मंगल, रविवार एवं आर्द्रा नक्षत्र विशेष शुभ माने जाते हैं। आगे दिए गए मुहूर्त्त भगवान् विष्णु, राम, शिव-शक्ति माता, श्री गणेश, हनुमान आदि देवों के लिए शुभ एवं ग्राह्य होंगे।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मि.)
वैशा. कृ.१४ चं.	16 अप्रै.	३ वैशा.	उ.भा.	ल. २ (गु.दा.),३,भगवान् शिव
वै. शु. ३, शुक्र	20 अप्रै.	७ वैशा.	रोहि.	२, ३, अभि., श्रीकृष्ण, विष्णुजी
वै. शु. ५, शनि	21 अप्रै.	८ वैशा.	मृग.	ल. २, ३, अभि.
वै. शु. ६, रवि	22 अप्रै.	९ वैशा.	आर्द्रा	प्रातः 10/10 बाद
वै. शु. ७, चंद्र	23 अप्रै.	१० वैशा.	पुर्न.	ल. २, अभिजित
वै. शु. ८, मंग.	24 अप्रै.	११ वैशा.	पुष्य	मु. 7/08 तक
वै. शु. १२,शनि	28 अप्रै.	१५ वैशा.	उ.फा.	ल. २, ३, अभि. प्रातः 8/14 बाद
वै. शु. १२, रवि	29 अप्रै.	१६ वैशा.	उ./ह.	ल. २, ३, अभिजित
वै. शु. १३, चंद्र	30 अप्रै.	१७ वैशा.	हस्ते	ल. २, ३, अभिजित
प्र.ज्ये.कृ.६,मंग.	8 मई	२५ वैशा.	उ.षा.	ल. ३ (चं. बु. दा.)
प्र.ज्ये.कृ.७, बुध	9 मई	२६ वैशा.	श्रव.	मु. 10/37 उप.
द्वि.ज्ये.शु.३,रवि	17 जून	३ आषा.	पुर्न.	अभिजित
—सन् 2008 ईसवी में—				
पौष शु. १२ श.	19 जन.	६ माघ	रोहि.	ल. १२, अभिजित
पौ. शु. १४, चं.	21 जन.	८ माघ	आर्द्रा	ल. १२, अभिजित
मा. कृ. १, बुध	23 जन.	१० माघ	पुष्य	ल. मीन, अभिजित
मा. कृ. ५, रवि	27 जन.	१४ माघ	उ.फा.	ल. मीन, अभिजित
मा. कृ. ६, चंद्र	28 जन.	१५ माघ	हस्त	ल. मीन, अभिजित
मा. कृ. ८, बुध	30 जन.	१७ माघ	स्वा.	ल. मेष, अभिजित (प्रा. 7/57 तक शूल दोष)
मा. कृ.१०,शुक्र	1 फर.	१९ माघ	अनु.	ल. १२ (चं. दा.), अभि.
मा. कृ. १२,रवि	3 फर.	२१ माघ	मूल	ल. १२, १, अभिजित
मा. शु. ४, रवि	10 फर.	२८ माघ	उ.भा.	ल. १२, अभिजित
माघ शु. ५ चं.	11 फर.	२९ माघ	रेव.	ल. १, अभिजित (बसन्त ५)
मा. शु. ९, शुक्र	15 फर.	३ फागु.	रोह.	मु. 8/43 तक
मा. शु.१०, शनि	16 फर.	४ फागु.	मृग	ल. १२-२, अभिजित
मा. शु. १२,रवि	17 फर.	५ फागु.	आर्द्रा	मु. 13/53 बाद, भद्रोतरे
मा. शु.१२, चंद्र	18 फर.	६ फागु.	पुर्न	ल. १२, १, २, अभि.
मा. शु. १३,मंग	19 फर.	७ फागु.	पुष्य	ल. १२, १, अभिजित
फा. कृ. २, शनि	23 फर.	११ फागु.	उ.फा.	ल. १२, २, अभिजित
फा. कृ. ५, चंद्र	25 फर.	१३ फागु.	चित्रा	प्रातः 11/46 बाद, अभि.
फा. कृः ७, गुरू	28 फर.	१६ फागु.	अनु.	ल. १२-१, अभिजित
फा. कृ. ८, शुक्र	29 फर.	१७ फागु.	अनु.	मु. प्रातः 9/21 तक
फा. शु. २, रवि	9 मार्च	२६ फागु.	उ.भा.	ल. १, २ अभिजित
फा. शु. ३, चंद्र	10 मार्च	२७ फागु.	रेव.	ल. १, २, अभिजित

श्री गणेश मूर्त्ति स्थापना मुहूर्त्त २०६४

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मि.)
वै. कृ. ४, शुक्र	6 अप्रै.	२४ चैत्र	विशा.	ल. २, अभिजित
प्र.ज्ये.कृ. ४, र.	6 मई	२३ वैशा.	मूल	ल. ३, अभिजित
आ. कृ. ४, बुध	4 जुला	२० आषा	धनि.	अभिजित
श्रा. कृ. ४, गुरू	2 अग.	१८ श्राव.	पूभा	ल. ७, अभिजित
भा. कृ. ४, शनि	31 अग.	१५ भादों	रेवती	ल. ६, अभिजित
भा. शु. ४, शनि	15 सितं.	३० भादों	चित्रा	ल. ६, अभिजित
मा. कृ. ४, मंग.	27 नवं.	१२ मार्ग.	आर्द्रा	अभिजित
—सन् 2008 ईसवी में—				
माघ कृ. ४ श.	26 जन.	१३ माघ	उफा.	ल. १, अभिजित
फा.कृ.३/४,रवि	24 फर.	१२ फागु.	हस्त	13/55 के बाद
चै. कृ. ४, मंग.	25 मार्च	१२ चैत्र	स्वा.	ल. १, अभिजित

श्री दुर्गा मन्दिर प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. ८ चंद्र	26 मार्च	१३ चैत्र	आर्द्रा	ल. २, अभिजित
वै. शु. ३, शुक्र	20 अप्रै.	७ वैशा.	रोहि.	मुहूर्त्त प्रातः 6/25 तक
वै. शु. ९, बुध	25 अप्रै.	१२ वैशा.	अश्ले	ल. २, अभि., बगुलामुखी माँ
प्र.ज्ये.कृ.४, रवि	6 मई	२३ वैशा.	मूले	ल. ३, अभि., श्वेत वस्त्र/चावल दान
द्वि.ज्ये.शु. ३, र.	17 जून	३ आषा.	पुर्न	अभिजित
द्वि.ज्ये.शु.९,रवि	24 जून	१० आषा.	चित्रा	मु. 10/21 तक
भा. शु. ८, गुरू	20 सितं.	४ अश्वि	मूला	ल. ८, अभिजित
आ. शु. ८, शुक्र	19 अक्तू	३ कार्ति.	उ.षा.	ल. ८, अभि., महाष्टमी
*आ. शु. ९, श.	20 अक्तू	४ कर्ति.	श्रव.	शनि-केतु वेध (त्याज्य)
का. शु. ९, चंद्र	19 नवं.	४ मार्ग.	पू.भा.	दुपै. 13/29 उप.
मा. शु. ९, मंग.	18 दिसं.	३ पौष	उ.भा.	ल. अभिजित
—सन् 2008 ईसवी में—				
मा. कृ. १२,रवि	3 फर.	२१ माघ	मूल	ल. १२, १, अभिजित
फा. कृ.१०,रवि	2 मार्च	१९ फागु.	मूल	ल. १२, १, अभिजित

नवग्रह पूजा विधान

(नवग्रह स्तोत्र, कवच तथा उपायों सहित)

नवग्रहों के पूजन विधान के सम्बन्ध में देश में अनेकों पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है। पण्डित हीरानन्द शर्मा द्वारा सम्पादित की प्रस्तुत पुस्तक उनका श्लाघनीय प्रयास है। इस पुस्तक में प्रत्येक ग्रह के पूजन सम्बन्धी पृथक्-पृथक् विस्तृत विवरण दिया गया है, जिससे प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त ब्राह्मण भी नवग्रहों के पूजन सुगमता पूर्वक करवा सकता है।

प्रस्तुत पुस्तक में नवग्रह मण्डल में ग्रह स्थापन की रचना की विधि तथा उत्तरार्ध भाग में संक्षेप से सूर्यादि नवग्रहों के उपाय, नवग्रह स्तोत्र, नवग्रह कवच, नवग्रह पीड़ाहर स्तोत्र, नवग्रह चालीसा आदि सरल एवं विशिष्ट रूप दिए गए हैं जिससे धर्मपरायण लोगों के लिए असान रूप से उपयोगी हो सके। मूल्य 25 रुपए।

पता—जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर- 144008

गृहारम्भ में शुभाशुभ जानने हेतु "सूर्यभात् वृष चक्र"

'गृह प्रवेश में कलश वास्तु चक्र'

नामकरण संस्कार मुहूर्त्त २०६४

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

गृहारम्भ में शुभाशुभ जानने हेतु ''सूर्यभात् वृष चक्र''

भाग	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	षष्ठ	सप्तम	अष्टम
बैल के अंग	शिर	अग्र-पाद	पृष्ठ-पाद	पृष्ठ	दक्ष-कुक्षि	पुच्छ	वाम-कुक्षि	मुख
नक्षत्र	३	४	४	३	४	३	४	३
फल	अग्नि दाह	शून्य	स्थिर	श्री लाभ	धन लाभ	स्वामी हानि	दरिद्रता	कष्ट दुख

विधि—बैल की आकृति बनाकर उसे आठ भागों में बांटे। सूर्य अधीष्ठित नक्षत्र से आरम्भ करके प्रत्येक भाग में उपरोक्त क्रमानुसार नक्षत्रों की स्थापना करके फल ज्ञात करें। जैसे—यदि गृह निर्माण के समय सूर्य मघा नक्षत्र में हो, तो मघा, पूफा, उफा—यह ३ नक्षत्र प्रथम भाग (शिर) पर आएंगे। इसी क्रम से अन्य सभी २७ नक्षत्रों की स्थापना क्रमानुसार करें। यदि फिर चक्र में लिखे फलानुसार मुहूर्त्त के शुभाशुभ का निर्णय करें। यदि सूर्य का नक्षत्र प्रथम भाग में पड़े तो मकान में अग्नि का भय हो, यदि पंचम भाग में पड़े तो धन लाभ होगा।

अभिजित मुहूर्त्त

पुराणानुसार अभिजित मुहूर्त्त काल में क्रियमाण सभी कर्म प्रायः सफल होते हैं। भगवान् विष्णु के सुदर्शन चक्र की भान्ति अभिजित् मुहूर्त्त सब दोषों को नाश कर देता है—

दिनमध्यगते सूर्ये मुहूर्त्ते हि अभिजित् प्रभुः।
चक्रमादाय गोविन्दः सर्वान्दोषान्निकृन्तति॥

दिनमान के अर्ध भाग में स्थानीय सूर्योदय जमा कर देने से अभिजित् मुहूर्त्त का मध्य भाग निकल आता है। **'नारद पुराण'** के अनुसार **अभिजित्** के मध्याह्न काल से १ घटी अर्थात् २४ मिनट पूर्व और मध्याह्न से २४ मिनट पश्चात् तक के समय को **अभिजित् काल** कहा जाता है।

उदाहरण—मान लो, आपने २८ नवम्बर को अभिजित मुहूर्त्त का समय जानना है, तो उस दिन के दिनमान (२५/३० घटी पल) का अर्धभाग १२ घड़ी, ४५ पल होंगे। इस अर्ध भाग के ५ घंटे, ६ मिनट बनते हैं। इनके उस दिन में जालन्धर के सूर्योदय ७/१० घं. मिं. में जमा कर देने से दुपै. १२ बजकर १६ मिनट पर अभिजित मुहूर्त्त का मध्यकाल होगा। इससे २४ मिनट पूर्व अर्थात् ११/५२ घं. मिं. से अभिजित का प्रारम्भ काल तथा (१२/१६ + ००/२४ मिनट = १२ घं. ४० मिनट पर अभिजित का समाप्ति काल (घंटा मिंट) होगा।

स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, श्रीरामनवमी, अक्षया तृतीया, विजयादशमी, दीपावली तिथियां स्वयं सिद्ध (अणपुच्छ) मुहूर्त्त कहलाती हैं। आवश्यक परिस्थितिवश गृहारंभादि मुहूर्त्तों में कोई मुहूर्त्त न बन पड़े तो इन स्वयं सिद्ध मुहूर्त्तों में से शुभ कार्य का सम्पादन कर सकते हैं।

'गृह प्रवेश में कलश वास्तु चक्र'

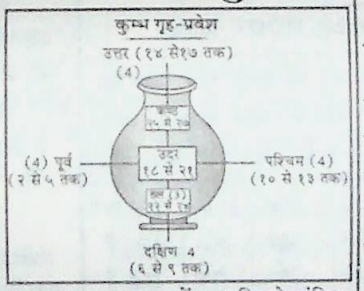

नव गृह प्रवेश सम्बन्धी मुहूर्त्तों में और अधिक सूक्ष्मता प्राप्ति के लिए कलश-वास्तु चक्र का प्रयोग किया जाता है। किसी काल्पनिक कलश को आठ विभागों में बाँट लें। मुहूर्त्त काल में सूर्याधीष्ठित नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र (मुहूर्त्त वाला नक्षत्र) तक यथाक्रम नक्षत्र रखें। घट चित्र रेखांकित किया गया है। सूर्य नक्षत्र से चंद्र नक्षत्र १ (समान) होने पर मुख पर स्थापित करें। सूर्य के नक्षत्र से आगे गिनने पर दो से पाँच अर्थात् आगे के चार नक्षत्र पूर्व दिशा में रखें, इसी प्रकार ६ से ९ तक चार नक्षत्र कलश के दक्षिण में रखें, फिर दस से तेरह तक चार नक्षत्र पश्चिम में रखें, फिर १४ से १७ तक चार नक्षत्र उत्तर में रखें तथा १८ से २१ तक चार नक्षत्र कलश के उदर में रखें, फिर २२ से २४ तक तीन नक्षत्र कलश के तल में रखें तथा शेष २५ से २७ तीन नक्षत्र कलश के कण्ठ में रखें। इसके बाद गृह प्रवेश का फल निम्न प्रकार जानें—

गृह-प्रवेश में नक्षत्र फल	फल
१. यदि मुख का नक्षत्र ही प्रवेश नक्षत्र हो	अग्नि से भय होता है।
२. पूर्व के चार नक्षत्रों में भवन	उजाड़ होने का भय होता है।
३. दक्षिण के चार नक्षत्रों में	धन लाभ होता है।
४. पश्चिम के चार नक्षत्रों में	धन-वैभव प्राप्त होता है।
५. उत्तर के चार नक्षत्रों में	कलह-क्लेश रहता है।
६. उदर के चार नक्षत्रों में	विनाश का भय रहता है।
७. तल के तीन नक्षत्रों में	स्थिरता (स्थायी वास) आती है।
८. कण्ठ के तीन नक्षत्रों में	गृहस्वामी की चिरायु हो।

गण्डमूल नक्षत्र शान्ति प्रयोग

—व्याख्याकार—पण्डित पन्ना लाल पंचांगकर्त्ता

अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा-मूला एवं रेवती—सभी 6 गण्डमूलक नक्षत्रों पर छपी अत्यन्त उपयोगी पुस्तक जिसमें नक्षत्र, ग्रहों के आवाहन, पूजन, हवन, दान आदि की व्याख्या शास्त्र विधि-विधान के साथ एवं हिन्दी व्याख्या सहित दी गई है। गण्डमूल के सभी छः नक्षत्रों पर ऐसी उपयोगी पुस्तक पहिले आपने नहीं देखी होगी। कर्मकाण्डी पण्डितों एवं नव-विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त लाभदायक पुस्तक है। मूल्य 35 रू.।

जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर।

नामकरण संस्कार मुहूर्त्त २०६४

(अन्न प्राशन मुहूर्त्त में भी ग्राह्य)

अपनी कुल परम्परा अनुसार सूतक समाप्ति के पश्चात् जन्मदिन से १०, ११, १२, १३, १६, १९ या २२वें या ४१वें तथा विपणि में दिए गए शुभ मुहूर्त्तों में नामकरण संस्कार करना चाहिए। मनुष्य के बाह्य एवं आन्तरिक व्यक्तित्व के विकास में उसकी प्रसिद्ध नाम राशि का विशेष महत्त्व होता है। व्यापार, व्यवहार, सर्विस, संकल्पपूर्वक दान दीक्षा-मंत्र-सिद्धि आदि कार्यों में नाम की ही प्रधानता रहती है। नामकरण संस्कार अपने कुल के वृद्ध व्यक्ति, महात्मा, गुरु, पण्डित, ज्योतिषी, पिता या कुल पुरोहित जी से परामर्श के अनुसार अथवा जन्म-नक्षत्र के चरणाक्षर से प्रारम्भ होने वाले अक्षर से युक्त किसी महान् पुरुष, कुलदेवता, ईश्वर या देववाचक, मंगल/कल्याणार्थक तथा कानों को मधुर लगने वाले अक्षर वाला नाम रखना चाहिए। यदि जन्म नक्षत्र/राशि पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो लग्न, लग्नेश या भाग्येश ग्रह से सम्बन्धित राशि वाले अक्षर से प्रारम्भ होने वाला नाम रखना चाहिए। उस दिन किसी ब्राह्मण द्वारा स्वास्ती वाचन, पंचदेव एवं नवग्रह पूजनादि करवा कर **ब्राह्मण** का भोजन, वस्त्र, फल दक्षिणा आदि द्वारा सत्कार करना चाहिए।

चुनाव में खड़े होने का मुहूर्त्त

शुभ तिथियाँ—(१ कृ.), २, ३, ५, ९, १०, १२ एवं १५ शुक्ल।

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार।

शुभ नक्षत्र—अश्विनी, रोहिणी, पुर्न, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्टा, रेवती।

शुभ लग्न—(इ) १, ४, ७, १०।

विशेष—केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११वें पाप ग्रह हो। लग्न एवं लग्नेश पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो। बुध, शुक्र, गुरु उदित हों। चन्द्र बली हो तथा प्रत्याशी की राशि मुहूर्त्त वाले दिन-छटे, आठवें एवं १२वें न हो।

संसद् में शपथ ग्रह के समय स्थिर लग्न प्रशस्त होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विवाहादि शुभ कार्यों में दोषपूर्ण, अशुद्ध एवं त्याज्य मुहूर्त्त-संवत् २०६४ वि.

नीचे वि. संवत् २०६४ में उन विशेष दोषपूर्ण एवं अशुद्ध विवाह मुहूर्त्तों का विवरण दिया जा रहा है, जिनके अन्तर्गत विवाह नक्षत्र होते हुए भी उनको शुद्ध विवाह मुहूर्त्तों में सम्मिलित नहीं किया गया। जिज्ञासु पाठकों की शंका समाधान के लिए आगे कुछ अशुद्ध एवं त्याज्य विवाह मुहूर्त्तों का विवरण लिख रहें हैं जिनका प्रत्यक्षतः कोई शास्त्रीय परिहार नहीं मिलता है। अति आवश्यक परिस्थितियों वश यदि निम्न मुहूर्त्तों में से कोई विवाह आदि शुभ कार्य करना हो, तो विवाह नक्षत्र व योग स्वामी एवं देवता की विशिष्ट संख्या में संकल्पपूर्वक पूजा-पाठ व दानादि करके शुभ कार्य सम्पादित करने चाहिएँ॥

(निवेदक—पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी॥)

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
15 अप्रैल	रवि	उ.भा.	क्षीणचन्द्र, मृत्युबाण
25 अप्रैल	बुध	मघा	लग्नऽभावः
30 अप्रैल	सोम	चित्रा	मंगल का वेध
1 मई	मंगल	चित्रा	मंगल का वेध
2 मई	बुध	स्वाती	राहु का वेध
1 मई	मंगल	स्वाती	राहु का वेध
3 मई	गुरु	अनु.	सूर्य वेध, मृत्युबाण
4 मई	शुक्र	अनु.	सूर्य वेध, मृत्युबाण
10 मई	गुरु	श्रवण	क्रान्तिसाम्य दोष
10 मई	गुरु	धनि.	शनि का वेध
11 मई	शुक्र	धनि.	शनि का वेध
12 मई	शनि	उभा.	भौमयुति, लग्नाभाव
13 मई	रवि	उभा.	भौमयुति, मृत्युबाण
13 मई	रवि	रेव.	लग्नऽभाव
14 मई	सोम	रेव.	मासान्त
17 मई से 15 जून तक ज्येष्ठ अधिक मास			
22 जून	शुक्र	उफा.	व्यतीपात, दग्धा भद्रा
25 जून	सोम	चित्रा	लग्नाभाव
25 जून	सोम	स्वा.	राहु का वेध
26 जून	मंगल	स्वा.	राहु का वेध
28 जून	गुरु	अनु.	लग्नाभाव
2 जुला.	सोम	उषा.	वैधृति दोष.
3 जुला.	मंगल	धनि.	शनि का वेध
4 जुला.	बुध	धनि.	शनि का वेध
7 जुला.	शनि	उ.भा.	लग्नाभावः
8 जुला.	रवि	अश्वि.	केतु युति व वेध
9 जुला.	सोम	अश्वि	केतु युति व वेध

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
16 जुला.	सोम	मघा	संक्रान्ति दोष
20 जुला.	शुक्र	उ.फा.	लग्नाभाव
21 जुला.	शनि	हस्त	लग्नाभाव
22 जुला.	रवि	स्वाती	राहु का वेध
23 जुला.	सोम	स्वाती	राहु का वेध
27 जुला.	शुक्र	मूल	मृत्युबाण, लग्नऽभाव
29 जुला.	रवि	श्रवण	शनि का वेध
30 जुलाई से 12 अगस्त तक तेरह दिन का पक्ष और 7 अग. से 23 अग. तक शुक्रास्त रहेगा।			
27 अग.	सोम	श्रवण	सूर्य, शनि, केतु का वेध
28 अग.	मंगल	धनि.	मृत्युबाण दोषः
30 अग.	गुरु	उ.भा.	शूल योग, भुजङ्गपात
31 अग.	शुक्र	अश्विनी	सूर्य का वेध
1 सितं.	शनि	अश्विनी	सूर्य का वेध
9 सितं.	रवि	मघा	क्षीण चन्द्र, भद्रा
15 सितं.	शनि	स्वाती	मृत्युबाण, राहु वेध
16 सितं.	रवि	स्वा.	राहु-वेध, मासान्त
17 सितं.	सोम	अनु.	संक्रान्ति
19 सितं.	बुध	मूल	लग्नाभाव
21 सितं.	शुक्र	उ.षा.	मंगल का वेध
22 सितं.	शनि	उ.षा.	मंगल का वेध
22 सितं.	शनि	श्रवण	शनि, केतु का वेध
23 सितं.	रवि	श्रवण	शनि-केतु का वेध
26 सितं.	बुध	उ.भा.	श्राद्ध-पूर्णिमा
27 सितं. से 11 अक्तू. तक श्राद्ध रहेंगे।			

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
12 अक्तू.	शुक्र	चित्रा	वैधृति योग, सूर्य युति
12 अक्तू.	शुक्र	स्वाती	राहु का वेध
13 अक्तू.	शनि	स्वाती	राहु का वेध
16 अक्तू.	मंगल	मूले	मासान्त, मृत्युबाण
17 अक्तू.	बुध	मूले	संक्रान्ति
18 अक्तू.	गुरु	उ.षा.	मृत्युबाण दोष (23-15 उप.)
20 अक्तू.	शनि	श्रव.	शनि-केतु का वेध, भुजङ्गपात
25 अक्तू.	गुरू	रेव.	भद्रा-दोष व्याप्ति
30 अक्तू.	मंगल	मृग	लग्नाभाव
6 नवं.	मंगल	उ.फा.	मृत्युबाण दोष, वैधृति
16 नवं.	शुक्र	उषा	संक्रान्ति
17 नवं.	शनि	श्रव.	केतु का वेध
18 नवं.	रवि	धनि.	मृत्युबाण दोष
21 नवं.	बुध	उभा.	लग्नऽभाव
22 नवं.	गुरू	रेव/अश्वि	लग्नऽभाव, व्यतिपात
1 दिसं.	शनि	मघा	केतु युति, वैधृति
5 दिसं.	बुध	स्वा.	राहु-वेध, मृत्युबाण दोष
6 दिसं.	गुरू	स्वा.	राहु-वेध
8/9 दिसं.	श./र.	अनु.	गुरु वार्धक्य दोष.
गुरू अस्त—10 दिसं. से 4 जन. 2008 तक			
गुरू बाल्यत्व दोष—6 जन. से 8 जन. तक			
पौष मास—16 दिसं. से 13 जन. (08) तक			
सन् 2008 ईसवी में			
15 जन.	मंगल	रेव.	भद्रा दोष व्याप्त
15 जन.	मंगल	अश्वि	शनि का वेध

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
16 जन.	बुध	अश्वि	शनि वेध, मृत्युबाण
19 जन.	शनि	मृग	सूर्य का वेध
20 जन.	रवि	मृग	सूर्य का वेध
24 जन.	गुरू	मघा	मृत्यु बा./सूर्य वेध-19/56 उपरांत
25 जन.	शुक्र	मघा	सूर्य वेध, केतु युति
29 जन.	मंगल	चित्रा	शूले, भुजङ्गपात
29 जन.	मंगल	स्वाती	शूले, भुजङ्गपात
2 फर.	शनि	मूले	मृत्युबाण दोष
8 फर.	शुक्र	धनि	राहु युति, क्षीण चंद्र
10 फर.	रवि	रेव.	लग्नाभाव
12 फर.	मंगल	अश्वि	मासान्त
15 फर.	शुक्र	रोहि	वैधृति दोष
15 फर.	शुक्र	मृग	वैधृति, भौम युति
23 फर.	शनि	उ.फा.	मृत्युबाण दोष
24 फर.	रवि	हस्त	शूले, भुजङ्गपात
25 फर.	सोम	स्वा.	सूर्य का वेध
26 फर.	मंगल	स्वा.	सूर्य का वेध
3 मार्च	सोम	उ.षा.	भौमे वेध, मृत्युबाण
4 मार्च	मंगल	उ.षा.	भौम वेध
4 मार्च	मंगल	श्रव.	शनि, केतु वेध, त्र्यो.
12 मार्च	बुध	रोहि.	लग्नाभाव
13 मार्च	गुरु	रोहि.	मासान्त
14 मार्च से चैत्र मासारम्भः			

विवाहादि मुहूर्तों में लग्न-शुद्धि विचार

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विवाहादि मुहूर्तों में त्रिबल-शुद्धि विचार

शुभ विवाह मुहूर्तों में वर-कन्या के विवाह में जब सूर्य, चन्द्र एवं गुरु इन तीनों महत्त्वपूर्ण ग्रहों की शुभ गोचर स्थिति को ध्यान में रखते हुए शुद्ध विवाह मुहूर्त्त-दिन का विचार किया जाता है, तो उसे **त्रिबल-शुद्धि** विचार कहा जाता है। **वर की जन्म** राशि से सूर्य व चन्द्र का बल तथा **कन्या** की जन्म राशि से **गुरु व चन्द्र** का बल विशेषतया देखा जाता है। इन तीनों ग्रहों (सूर्य, चन्द्र व गुरु) के बलाबल के बिना विवाह-कार्य शुभ नहीं माना जाता है। मुनि **गर्गाचार्य** अनुसार—

स्त्रीणां गुरुबलं श्रेष्ठं पुरुषाणां रवेर्बलम् ।
तयोः चन्द्रबलं श्रेष्ठमिति गर्गेण निश्चितम्॥—(ज्योतिर्निबन्ध)

(1) **वर की** जन्म राशि से विवाह मुहूर्त्त के समय गोचर में सूर्य ३, ६, १०, ११वें हो, तो शुभ तथा १, २, ५, ७, ९वें सूर्य हो, तो किंचित्-अशुभ एवं पूज्य होता है। परन्तु यदि ४, ८ या १२वें गोचरस्थ सूर्य हो, तो अशुभ एवं त्याज्य होता है।

(2) **कन्या** की जन्म राशि से विवाह मुहूर्त्त के समय गोचर में गुरु यदि २, ५, ७, ९ या ११वें हो तो वह शुभ है, १, ३, ६ या १०वें तो हो वह सामान्य पूज्य होता है तथा यदि ४, ८ या १२वें हो तो गुरु अशुभ समझा जाता है, परन्तु आजकल क्योंकि कन्याओं का विवाह प्रायः प्रौढ़ायु होने पर ही किया जाता है, अतएव आचार्यों द्वारा कन्या के लिए गुरु (४, ८, १२वें) निंद्य एवं त्याज्य न मानकर विशेषतः पूज्य माना जाता है।

(3) **वर तथा कन्या** दोनों की राशि से विवाह मुहूर्त्त समय की राशि (गोचर चन्द्र) १, ३, ६, ७, १० या ११वें हो, तो वह चन्द्र शुभ होता है एवं २, ५, ९ या १२वें चन्द्र हो, तो कुछ अशुभ एवं पूज्य होता है तथा ४ या ८वें चन्द्र हो, तो अशुभ एवं निन्द्य माना जाता है। (मु. पारिजात) आगे दिए गए **त्रिबल-शुद्धि** चक्र से वर-कन्या के शुभ विवाह मुहूर्त्त का निर्णय करने में सुविधा होगी—

"त्रिबल शुद्धि-चक्र"

त्रिग्रह बल→	सूर्यबल	चन्द्रबल	गुरूबल
शुभ एवं ग्राह्य	३, ६, १०, ११	१, ३, ६, ७, १०, ११	२, ५, ७, ९, ११
अल्प-शुभ एवं पूज्य	१, २, ५, ७, ९	२, ५, ९, १२	१, ३, ६, १०
निन्द्य एवं त्याज्य	४, ८, १२	४, ८	४, ८, १२

● **विवाह-मुहूर्त्त** के सम्बन्ध में और अधिक सूक्ष्मता एवं शुद्धता लाने के लिए वर-कन्या की राशि से **त्रिबल शुद्धि** द्वारा प्राप्त मास, दिनादि के समय गोचरस्थ सूर्य, चन्द्र, गुरु, यदि उच्च राशि में या स्वराशिगत अथवा गुरु आदि शुभ ग्रह से दृष्ट हो, तो ऐसा विवाह मुहूर्त्त अति उत्तम एवं विशेष शुभ होता है।

● यदि **वर-कन्या की** राशि से सूर्य, चन्द्रादि गोचर ग्रह नीच या शत्रु-राशिस्थ अथवा किसी शत्रु या अशुभ ग्रह से दृष्ट होगा, तो ऐसा मुहूर्त्त शास्त्रानुसार ग्राह्य होते हुए भी पूज्य (अर्थात् पूजा वाला) विवाह मुहूर्त्त माना जाएगा॥

उदाहरण स्वरूप, मिथुन राशि के वर/कन्या को यदि वैशाख मास में मघा नक्षत्र में विवाह करना अभीष्ट हो, तो **त्रिबल शुद्धि** चक्र अनुसार मिथुन राशि को वैशाख में सूर्य ११वें एवं मेष में उच्चराशिस्थ होने से यह महीना अत्यन्त शुभ होगा तथा मघा नक्षत्र कालीन-चन्द्रमा तृतीय स्थान में सिंह राशिस्थ (मित्र क्षेत्र में) होने से **मिथुन राशि** के लिए **श्रेष्ठ** एवं **उत्तम मुहूर्त्त** होगा।

इसी भान्ति, **कुम्भ राशि** के जातक/जातिका को यदि **मार्गशीर्ष** (नवम्बर) मास में एवं अनुराधा नक्षत्र (बृश्चिक राशि) कालीन विवाह करना अभीष्ट हो, तो मार्गशीर्ष मास में **कुम्भ जातक** को (त्रिबल-शुद्धि अनुसार), सूर्य दशम (१०वें) होने से, तथा बृश्चिक का चन्द्रमा भी गोचर वश दसवें होने से विवाह ग्राह्य माना जाएगा। परन्तु कुम्भ राशि का स्वामी ग्रह **शनि**, सूर्य और चन्द्रमा की राशि बृश्चिक के स्वामी ग्रह-**मंगल** का शत्रु ग्रह होने से प्राप्त **विवाह-मुहूर्त्त** सामान्य एवं मध्यम कोटि का होगा। इसमें **मंगल ग्रह** की विशेष पूजा व उससे सम्बन्धित ग्रह का दानादि करना शुभ होगा।

त्रिबल-शुद्धि के सम्बन्ध में परिहार वाक्य

सूर्य, चन्द्र एवं गुरु-तीनों ग्रहों पर आधारित त्रिबल-शुद्धि के अनुसार निर्णय किए गए **विवाह-मुहूर्त्तों** के सम्बन्ध में ज्योतिष आचार्यों द्वारा प्रतिपादित अनेक स्थलों पर परिहार वाक्य भी उपलब्ध होते हैं। पाठकों के उपयोगार्थ निम्नलिखित परिहार अत्यन्त आवश्यक परिस्थितिवश एवं **ग्रहोचित पूजार्चन, दान आदि के पश्चात्** ही ग्रहण करने चाहिएँ॥

सूर्यबल—**त्रिबलशुद्धि** अनुसार वर की जन्म-राशि से ४, ८ एवं १२वें सूर्य अशुभ एवं त्याज्य माना जाता है। परन्तु अपवाद स्वरूप।

गर्गाचार्य के अनुसार संक्रान्ति से १३ दिन के अनन्तर अशुभ फल न होकर शुभ फल होता है— **अनिष्टस्थानमें सूर्य शुभराशिःपुरो भवेत्।**
त्रयोदशदिनं त्यक्त्वा शेषस्थ शुभमादिशेत्॥ (गर्गाचार्य)

अर्थात् जन्मराशि से सूर्य अशुभ स्थान पर हो एवं सूर्य की अग्रिम राशि शुभ हो, तो संक्रान्ति से त्रयोदश (१३) दिन के अनन्तर, उसे शुभ मानना चाहिए॥

'वशिष्ठ' जी के अनुसार भी जन्म राशि से दुःस्थानों (४, ८, १२) में गोचरवश गए हुए सूर्य एवं गुरु दोनों में से किसी एक ग्रह की भी विधिपूर्वक पूजा, दानादि करके विवाह करना शुभप्रद होता है—

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यत्रार्क गुर्वोरपि नैधनान्त्य-जन्मादि दु:स्थानगयो द्वयोर्वा॥
एकस्य पूजामपि तत्र कृत्वा पाणिग्रहं कार्यमत: सुसम्यक्॥ –(वशिष्ठ)

● ४, १२ वें सूर्य या गुरु आदि द्विगुणित (दोगुणी) पूजा-दानादि से तथा ८ वें (सूर्य एवं गुरु) त्रिगुणित दान-पूजादि के पश्चात् शुभ फल प्रदान करता है—

द्वि:अर्च्यो द्वादशस्तुर्यस्थाष्टम: त्रिगुणार्चनात्॥''

भावार्थ बोधिनी 'फलदीपिका' के अनुसार गोचरवश अनिष्टभाव में गया कोई ग्रह यदि स्वाराशि या उच्च राशि में हो तो दोष नहीं करता। यदि ग्रह शुभ भाव में हो और स्वराशि या उच्चराशिस्थ भी हो, तो पूर्ण शुभ फल करता है—

अनिष्ट भावस्थित खेचरेन्द्र:स्वोच्च स्वगेहोपगतो यदि स्यात्।
न दोषकृच्चोत्तमभावगश्चेत् पूर्ण फलं यच्छति गोचरेषु ॥३१॥ ॥अध्याय॥२६॥

इसी भान्ति यदि कोई अशुभ ग्रह भी गोचर में गुरु आदि शुभ ग्रह से दृष्ट हो, तो उसकी अशुभता नष्ट हो जाती है—

असत्फल: सौम्य निरीक्षितो य: शुभप्रदश्च: = फ० दी० ॥३०॥

चन्द्रबल विचार—चन्द्रबल सभी कार्यों में अपेक्षित माना जाता है। सामान्यत: विवाह, यज्ञोपवति, अन्न-प्राशनादि में ४, ८ वे स्थान में, (कुछ विद्वानों के अनुसार १२वें भी) चन्द्र एवं व्याज्य माना जाता है। परन्तु आजकल १२ वें चन्द्र को निंद्य न मानते हुए पूज्य ही माना जाता है, यथा—

● गर्भाधाने जन्मकालेऽभिषेके मौञ्जिबन्धने।
पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशग: शुभ:॥ (दैवज्ञकल्पदुम)
अन्येऽपि–पाणिग्रहेस्त्रीषुरतेऽभिषेके निषेकयात्राव्रतबन्धने च।
व्रतोपवासादिषु गर्गपूर्वै:प्रोक्त:शुभो द्वादशगो हिमांशु॥ २॥

अर्थात्-विवाह, गर्भाधान, स्त्री-प्रसंग, उपनयन, यात्रा, व्रत-उपवास आदि कार्यों में द्वादश (१२वें) चन्द्र शुभ होता है।

● जन्मराशि से २, ५, ९ वें स्थान में चन्द्र शुक्ल पक्ष में प्रशस्त होता है—

शुक्लपक्षे शुभश्चन्द्रो, द्वितीयनवपंचगै:॥–नारदपुराण

अशुभस्थान में गोचरस्थ चन्द्रमा, स्वोच्च राशि में, अधि-मित्र की राश्यंश (नवांश) में, या शुभ नवांश में अथवा गुरु से दृष्ट हो, तो शुभफल दायक होता है—

अनिष्टस्थान संस्थोऽपि भवेत् शुभकर: शशी।
सौम्यभागेऽधिमित्रांशे गुरूणावाऽपि वीक्षिते॥ –राजमर्त्तण्ड

'पंचांग दिवाकर' में गोचरवश चतुर्थ चंद्र पर, जहाँ गुरू की शुभ दृष्टि पड़ रही है, उस मुहूर्त्त को ग्रहण किया गया है।

विवाहादि शुभ कार्यों में जन्मराशिस्थ चन्द्र कुछ आचार्यों के अनुसार अशुभ माना है—

जन्मग: फलश्चन्द्र: पंचकर्मसु वर्जयेत्। यात्रा युद्धविगहेषु प्रवेशे क्षौरकर्मणि॥ 'फलितनवरत्न'

परन्तु दैवज्ञकल्पद्रुम, वाराहमिहिर आदि आचार्यों के मतानुसार क्षौर एवं यात्रा को छोड़कर विवाह आदि में जन्मस्थ चन्द्र ग्राह्य मान लिया गया है।

चन्द्रमा जन्म राशि के साथ जन्म नक्षत्र का भी हो, तो विवाह, यात्रा, और कर्म एवं गृह प्रवेश आदि कर्मों में विशेषत: वर्जित माना गया है—

''पट्टबन्धन चौलान्न प्राशने चोपनयने शुभदं, जन्मनक्षत्रमशुभंतु अन्य कर्मणि॥''
–पुरुषार्थ चिन्तामणि

वर-कन्या, किसी भी पक्ष में चन्द्र अशुभ एवं दोषयुक्त हो, तो उसका यथाशक्ति जप, पाठ पूजन एवं दान अवश्य करवा लेना चाहिए।

गुरू बल—प्राचीनकाल में कन्या की जन्म राशि से ४, ८, १२वें अशुभ एवं त्याज्य माना जाता था, परन्तु चूंकि आजकल प्रौढ़ायु (लगभग २१ वर्ष) हो जाने पर ही लड़कियों का विवाह किया जाता है, अतएव कन्या की जन्म राशि से अशुभ गुरू होने पर गुरूवार के दिन गुरू की किसी ब्राह्मण से पूजा, जप-पाठ एवं दानादि कृत्यों द्वारा शान्ति करवा कर विवाह कार्य करवाना चाहिएं—

परिहार–1. रजस्वला यदा कन्या गुरुशुद्धिं न चिन्तयेत्।
अष्टमेऽपि प्रकर्त्तव्यो विवाह: स्त्रिगुणार्चनात्॥ ज्यो. नि.

'निर्णय सिन्धु' अनुसार वर/कन्या बड़े हो जाने पर ४, ८, १२वें गुरू भी दोगुणी पूजार्चन (जप-दानादि) से उपयुक्त फल प्रदान करता है—

व्रते जन्मत्रिकारिस्थो जीवोऽपीष्टोऽर्चनात्सकृत्।
शुभोऽतिकाले तुर्याष्टव्ययस्थो द्विगुणार्चनात्॥ निर्णयसिन्धु।

2. स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरु:॥
रिष्फाष्टतुर्यगोऽपीष्टो नीचारिस्थ: शुभोऽप्यसत्॥ (मुहूर्त्त चिन्तामणि)

अर्थात् ४, ८ एवं १२वें स्थान में भी स्थित गुरु यदि स्वोच्च, स्वराशि, स्वमित्र राशि, स्वनवांश व वर्गोत्तम में हो, तो शुभ हो जाता है और शुभ भी गुरु यदि अपने नीच स्थान में या अपने शत्रु भाव में हो, तो अशुभ एवं पूज्य होगा।

नवग्रह पूजा विधान (नवग्रह स्तोत्र, कवच तथा उपायों सहित)

नवग्रहों के पूजन विधान के सम्बन्ध में देश में अनेकों पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है। पण्डित हीरानन्द शर्मा द्वारा सम्पादित की प्रस्तुत पुस्तक उनका श्लाघनीय प्रयास है। इस पुस्तक में प्रत्येक ग्रह के पूजन सम्बन्धी पृथक्-पृथक् विस्तृत विवरण दिया गया है, जिससे प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त ब्राह्मण भी नवग्रहों के पूजन सुगमता पूर्वक करवा सकता है।

प्रस्तुत पुस्तक में नवग्रह मण्डल में ग्रह स्थापन की रचना की विधि तथा उत्तरार्ध भाग में संक्षेप से सूर्यादि नवग्रहों के उपाय, नवग्रह स्तोत्र, नवग्रह कवच, नवग्रह पीड़ाहर स्तोत्र, नवग्रह चालीसा आदि सरल एवं विशिष्ट रूप दिए गए हैं जिससे धर्मपरायण लोगों के लिए असान रूप से उपयोगी हो सके। मूल्य 25 रुपए।

पता—जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर-144008 (पंजाब)

विवाहादि शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि विचार

विवाह लग्न सम्बन्धी परिहार वाक्य

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विवाहादि शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि विचार

विवाह, मुण्डन, गृहारम्भादि शुभ कार्यों में मास, तिथि, नक्षत्र, योगादि की शुद्धि के साथ विवाह लग्न की शुद्धि को विशेष महत्त्व एवं प्रधानता दी गई है। तिथि को शरीर, चन्द्रमा को मन, योग–नक्षत्रों आदि को शरीर के अंग तथा लग्न को आत्मा माना गया है। यथा–

तिथिः शरीरं मन इन्दुवीर्यं विलग्नमात्माऽवयवास्तु-भाद्याः —ज्योतिर्निबंध

लग्न बल के बिना जो कुछ भी शुभ कार्य किया जाता है, उसका फल वैसे ही व्यर्थ हो जाता है, जैसे ग्रीष्मकाल में बिना जल के नदी।

लग्नवीर्यं विना यत्र यत्कर्म क्रियते बुधैः।
तत्फलं विलयं याति ग्रीष्मे कुसरिता यथा॥ —ज्योति. विदरणे

सभी शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि का विशेष महत्त्व है।

विवाह लग्न में अशुभ एवं पूज्य ग्रह

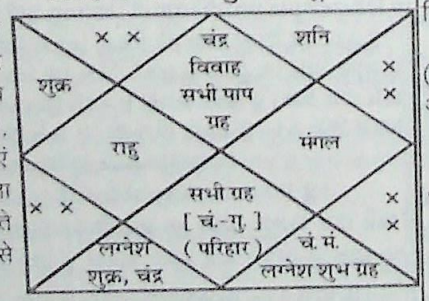

विवाह लग्न का निश्चय करना हो, तो त्रिविक्रम–संहितानुसार, **लग्न** स्थान में चन्द्र तथा सूर्य, शनि, मंगल, राहु, केतु आदि क्रूर ग्रह न हों, लग्न से छठे स्थान में शुक्र, चन्द्र, व लग्नेश न हो तथा आठवें स्थान में चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र व लग्नेश नहीं होने चाहिएं तथा सप्तम स्थान में कोई भी ग्रह नहीं होना चाहिए। **सातवें चन्द्र** और गुरु समफल करते हैं। अर्थात् चन्द्र, गुरु का दानादि करने से शान्ति हो जाती है।

"त्याज्या लग्नेऽब्दयो मंदः षष्ठे शुक्रेन्दुलग्नपाः।
रन्ध्रे-चन्द्रादयः पंच, सर्वेऽब्जगुरु समौ॥"

परिहारस्वरूप १२वें शनि, तीसरे शुक्र, चतुर्थ में राहु, दशम भाव में मंगल का दोष यथोचित दानादि करने से शान्ति हो जाती है। **'पंचांगदिवाकर'** में लगाए गए लग्न मुहूर्त्तों में इन तीनों भावों में शनि, शुक्र व मंगल ग्रहों की स्थिति हो वहां उचित दानादि करवा लें।

आगे षष्ठाष्टम एवं द्वादश चन्द्र, शुक्र, अष्टम भौम, लग्नस्थ एवं सप्तमस्थ चन्द्र गुरु आदि के अपवाद (परिहार) लिखे गए हैं।

विवाह में ग्राह्य शुभ लग्न–मुहूर्त ग्रन्थों के अनुसार विवाह लग्न काल में ३, ६, ८, ११वें सूर्य तथा इन्हीं स्थानों (३, ६, ११) में राहु, केतु और शनि भी शुभ होते हैं। ३, ६ और ११वें मंगल, २, ३, ११वें चंद्रमा, ३, ६, ७ शुभ और ८वें स्थानों को छोड़कर अन्य भावों में स्थित शुक्र शुभ होता है। ग्यारहवें भाव में सूर्य तथा केन्द्र त्रिकोण में गुरु लग्नगत अनेक दोषों का परिहार करते हैं–

लग्ने वर्गोत्तमे वेदो द्यूनाथे लाभगेऽथवा।
केन्द्र कोणे गुरौ दोषा नश्यन्ति सकलाऽपि॥ मु. गणपति॥

विवाह लग्न सम्बन्धी परिहार वाक्य

जन्म राशि से अष्टमस्थ लग्न–वर कन्या की जन्म राशि या लग्न से चतुर्थ, अष्टम तथा बारहवी राशिस्थ लग्न अशुभ कहे गए हैं। यथोक्तम्–

सुखघ्नं तुर्यमुद्वाहे द्वादश वित्तनाश कृत्। जन्म भात् जन्म लग्नाच्च मृत्युदंलग्नमष्टमम्॥

परन्तु परिहार स्वरूप जन्म राशि या लग्न राशि का स्वामी तथा विवाह लग्न का स्वामी ग्रह समान हो, अथवा मित्र क्षेत्री हो, अथवा अष्टमस्थ लग्न राशि का स्वामी, केन्द्र स्थित हो अथवा गुर्वादि शुभ ग्रह से वीक्षित हो तो अष्टम लग्न का दोष दूर होता है।

कर्तृरि दोष–लग्न में पापी ग्रह मार्गी होकर १२ भाव में तथा क्रूर (पापी) ग्रह वक्री गत होकर दूसरे भाव में हो, तो कर्तृरि दोष होता है। यह योग दारिद्रय, शोक व मृत्यु तुल्य कष्टकारी होता है।

परिहार–कर्तृरि दोष कारक ग्रह नीच, शत्रु क्षेत्री, अथवा अस्तगत हो, तो इस दोष का परिहार हो जाता है। इसके अतिरिक्त गुरु, शुक्र, बुध इनमें से कोई शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण में अथवा २रे या १२वें भावस्थ गुरु हो तो भी कृर्तरि दोष निवार्य हो जाता है।

अष्टम भौम का परिहार–मंगल अस्तंगत, नीच राशि का (कर्क) या शत्रु राशि (मिथुन एवं कन्या) का होकर अष्टम स्थान में हो, तो दोषकारक नहीं, परन्तु लग्नेश होकर अष्टमगत नहीं होना चाहिए। अस्तगे नीचगे भौमे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा।
कुजाष्टमोद्भवो दोषो न किंचिदपि विद्यते॥ कश्यप॥

छठे, बारहवें चन्द्र का परिहार–नीच राशि, शत्रु राशि या नीच–राशिगत चन्द्रमा ६ या १२वें स्थानस्थ होना दोषपूर्ण नहीं माना गया। जैसे–वृश्चिक, मिथुन, कन्या राशि ३, ६

नीचराशिगते चन्द्रे नीचांशगतेऽपि वा, चन्द्रे षष्ठारि–रिः फस्थे दोषो नास्ति न संशयः।

परन्तु लग्नेश होकर चन्द्र षष्ठाष्टम नहीं होना चाहिए।

लग्नस्थ चन्द्र का परिहार–"कर्किगोस्थः पूर्णो विधुस्तनौ"

व्रतबन्धोक्त अनुसार वृष, कर्क एवं पूर्ण चन्द्रमा या शुभग्रह से दृष्ट हो लग्न में दोषकारक नहीं होता। मु. मार्तंड

षष्ठाष्टमस्थ शुक्रापवाद–नीच एवं शत्रु राशिगत शुक्र छठे, आठवें हो तो दोषकारक नहीं परन्तु लग्नेश होकर इन भावों में न हो। जैसे–

नीच राशिगते शुक्रे शत्रु क्षेत्रगतेऽपि वा।
भृगु षट्कोत्थितो दोषो नास्ति तत्र न संशयः॥ मुहूर्त चिं. पीयूषधारा

सप्तम भावस्थ चन्द्र–गुरु–सप्तम भाव में यद्यपि सभी ग्रह वर्जित कहे हैं, परन्तु चन्द्र गुरु का परिहार है। "चन्द्र चान्द्री शुक्रजीवा यामित्रे शुभकारकाः।"

'मुहूर्त्तगणपति' अनुसार विवाहादि शुभ कार्य के लग्न में, केन्द्र–त्रिकोण में गुरु, शुक्र एवं बुध एवं ग्यारहवें भाव में चन्द्र या सूर्य अथवा सप्तमेश हो, तो अनेक दोषों का नाश हो जाता है।

वेध दोष परिहार–पंचशलाका चक्रानुसार विवाह नक्षत्र का क्रूर ग्रह द्वारा वेध हो जाने पर विवाहित नक्षत्र सर्वथा त्याज्य माना जाता है। परन्तु गुरु, बुध आदि सौम्य ग्रहों का चरण वेध (१ एवं ४थे चरण के मध्य तथा २ रे व ३ रे चरण ही अशुभ माना है। —ज्योतिर्निबन्ध

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

युतिदोष परिहार—पाप एवं क्रूर ग्रह की युति त्याज्य मानी जाती है। परन्तु यदि चन्द्रमा उच्चस्थ, स्वक्षेत्री या मित्रक्षेत्री (वृष, कर्क, मिथुन, सिंह एवं कन्या) राशि का हो तो युतिदोष अविचारणीय होता है।

दग्धा तिथि परिहार—विवाह लग्न समय केन्द्र-त्रिकोण गत गुरु हो एवं एकादश (११वां) भाव शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो दग्धातिथि का दोष नहीं रहता।—मु० गणपति

पंचांगदिवाकर में शुभ विवाह मुहूर्त्तों में जहाँ कहीं अशुभ योग का स्पर्श हुआ है, वहां पर सम्बन्धित देवता, ग्रहादि का दान व पूजा का उल्लेख कर दिया गया है।

भद्रा का शुभाशुभ विचार

भद्राकाल में विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, रक्षा बन्धन आदि मांगलिक कृत्यों का निषेध माना जाता है, परन्तु भद्रा काल में शत्रु का उच्चाटन करना, स्त्री प्रसंग में, यज्ञ करना, स्नान करना, अस्त्र-शस्त्र का प्रयोग, आप्रेशन करना, मुकद्दमा करना, अग्नि लगाना, किसी वस्तु को काटना, भैंस, घोड़ा, ऊँट सम्बन्धी कर्म प्रशस्त माने जाते हैं।

भद्रा परिहार विचार—सामान्य परिस्थितियों में विवाह आदि शुभ मुहूर्त्तों में भद्रा का याग ही करना चाहिए, परन्तु अत्याधिक परिस्थितिवश भूलोक की भद्रा, अथवा भद्रा मुख, कण्ठ एवं हृदयगत भद्रा को छोड़कर भद्रा पुच्छ में शुभ कृत्य किए जा सकते हैं।

कार्येत्वाश्यके विष्टेर्मुख, कण्ठहृदि मात्रं परित्येत्।

भविष्य पुराणानुसार—भद्रा की **पाँच घड़ी** मुख में, दो घड़ी **कण्ठ में**, ११ घड़ी **हृदय में**, चार घड़ी नाभि में, पाँच घड़ी कटि में और तीन घड़ी पुच्छ में स्थित रहती है। जब भद्रा मुख में रहती है, तब कार्य का नाश होता है, कण्ठ में धन का नाश, हृदय में प्राणों का भय, नाभि में कलह, कटि में अर्थभंश होता है, पर पुच्छ में निश्चित रूप में विजय एवं कार्य सिद्धि हो जाती है—

मुखेतु घटिकाः पंच द्वे कण्ठे तु सदा स्थिते। हृदि चैकादश प्रोक्ताश्चतस्त्रो नाभिमण्डले॥
कटयां पंचैव विज्ञेयातिस्त्राः पुच्छे जयावहाः। मुखे कार्य विनाशाय ग्रीवायां धननाशिनी॥

एक अन्य मतानुसार अत्यावश्यक स्थिति में रात्रि में तिथि के पूर्वार्द्ध की भद्रा, दिन में परार्ध की भद्रा ग्रहण कर सकते हैं।

तिथेः पूर्वार्धजा रात्रौ दिने भद्रा परार्धजा। भद्रा दोषो न तत्र स्यात् कार्येऽत्यावश्यके सति॥

भद्रा परिहार

कुछ आवश्यक स्थितियों में भद्रा दोष का परिहार हो जाता है। यथा—

तिथि पूर्वार्धजा भद्रा दिवा भद्रा प्रकीर्तिता। तिथिरुत्तरजा भद्रा रात्रिभद्रेति कथ्यते॥
दिवा भद्रा रात्रौ रात्रिभद्रा यदा दिवा। तदाविष्टिकृतो—दोषो न, भवेत्सर्व सौख्यदः॥

अर्थात् तिथि के पूर्वार्द्ध भाग में प्रारम्भ भद्रा अर्थात् तिथि दिवस के पूर्वार्ध भाग में प्रारम्भ भद्रायादि तिथ्यन्त में रात्रिव्यापिनी हो जाए, तो दोषकारक न होकर सुखदायिनी हो जाती है।

(ii) **पीयूषधारानुसार—दिन की भद्रा रात्रि को और रात्रि की भद्रा दिन को आ जाए, तो भद्रा दोषरहित हो जाती है।**

रात्रिभद्रा यदह्नि स्याद् दिवा भद्रा यदा निशि। न तत्र भद्रादोषः, सा भद्रा—भद्र दायिनी॥
—पीयूषधारा

(iii) "दिवा परार्द्धजा विष्टिः, पूर्वार्द्धोत्था निशि।
तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषितम्॥"

उत्तरार्ध की भद्रा दिन में, तथा पूर्वार्द्ध की रात्रि में शुभ होती है।

भद्रा लोक वास

मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक का चन्द्रमा होने से भद्रा **स्वर्ग लोक** में, कन्या, तुला, धनु, मकर का चन्द्रमा होने से **पाताल** में, कर्क, सिंह, कुम्भ व मीन राशि के चन्द्रमा में **भद्रा मर्त्यलोक (भू लोक)** में—अर्थात् **सम्मुख रहती है।** जब भद्रा भू-लोक में (सम्मुख) रहती है, **अशुभफल दायिनी** एवं वर्जित मानी जाती है, अन्य लोकों में हो, तो शुभ है—

लोकवास	स्वर्ग	पाताल	भू-लोक
चन्द्रराशि	१, २, ३, ८	६, ७, ९, १०	४, ५, ११, १२
भद्रा-मुख	ऊर्ध्वमुखी	अधोमुख	सम्मुख

मर्त्यलोकस्थ (४, ५, ११, १२) राशियों में स्थित **चन्द्रकालीन** भद्रा दिन में उत्तरार्ध वाली रात्रि में शुभ होगी।

(iv) शुक्ल पक्ष की भद्रा का नाम **वृश्चिकी** है। कृष्ण पक्ष की भद्रा का नाम **सर्पिणी** है। **मतान्तर से**, दिन की **भद्रा सर्पिणी**, रात्रि की भद्रा **वृश्चिकी** है। बिच्छू का विष डंक में तथा सर्प का विष मुख में होने के कारण **वृश्चिकी** भद्रा की पुच्छ और **सर्पिणी** भद्रा का मुख विशेषतः त्याज्य है।

(v) भद्रा दोष, मंगल-शनिवार जनित दोष, व्यतीपात, अष्टम भावस्थ एवं जन्म नक्षत्र दोष, मध्यान्ह के पश्चात् शुभकारक मानी जाती है।

गोधूलि काल

विवाह मुहूर्त्तों में क्रूर ग्रह युति, वेध, मृत्युबाण आदि दोषों की शुद्धि उपरान्त यदि अभिवांछित मुहूर्त्त में शुद्ध विवाह-लग्न न निकलता हो, तो मुहूर्त्त ग्रन्थाचार्यों ने गोधूलि का लग्न ग्रहण करने की सम्मति प्रदान की है।

गोधूलि काल—जब सूर्यास्त न हुआ हो (अर्थात् सूर्यास्त होने वाला हो) और गाय आदि चौपाय अपने-अपने गृहों को लौटते हुए अपने खुरों से पथ की धूलि को आकाश में उड़ाकर जाने लगें, तो उस काल को मुहूर्त्तकारों ने **गोधूलि काल** का नाम प्रदान करते हुए, इसे विवाहादि सब मांगलिक कार्यों में प्रशस्त कहा है। यह लग्न, मुहूर्त्त, अष्टम, जामित्रादि दोषों को नष्ट प्राय कर देता है।

नो वा योगो न मृतिभवनं नैव जामित्र दोषो,
गोधूलिः सा मुनिभिरुदिता सर्व कार्येषु शस्ता॥ —मु० चिन्तामणि

जब कोई अन्य शुभ लग्न न बनता हो, और कन्या [illegible]

यात्रादि मुहूर्त्त विचार

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जब कोई अन्य शुभ लग्न न बनता हो, और कन्या विवाह योग्य हो गई हो तो गोधूलि में विवाह शुभ होता है। ज्योतिनिर्बन्धानुसार–

लग्न शुद्धिर्यदा न स्याद् यौवने समुपास्थिते, तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥

गोधूलि लग्न काल के सम्बन्ध में विद्वानों ने मतान्तर पाए जाते हैं–

(i) पीयूषधारा के मतानुसार सूर्य के अर्ध–अस्त होने के अनन्तर २ घड़ी (४८ मिनट) का समय गोधूलि काल है।

(ii) मु० गणपति के अनुसार सूर्यार्ध बिम्ब के अस्त हो जाने के पूर्व एवं पश्चात् १५–१५ पल अर्थात् १२ मिनट का मध्यान्तर गोधूलि संज्ञक है।

(iii) आचार्य नारदानुसार सूर्योदय से सप्तम लग्न गोधूलि लग्न काल होता है।

चतुर्थमभिजित लग्नमुदयार्क्षात्तु सप्तमम्॥ –नारद

––क्षौरकर्म (हजामत) के लिए शुभाशुभ दिन––

गर्गादि आचार्यों के अनुसार रविवार, मंगलवार एवं शनिवार को क्षौर (हजामत) कर्म करवाने से आयु का क्षय होता है। **सोमवार, बुधवार, गुरुवार** और **शुक्रवार** को क्षौर कर्म (हजामत) करवाना शुभ होता है। मतान्तर से एक पुत्र सन्तान वाले गृहस्थी को सोमवार के दिन, तथा विद्या एवं धनाकांक्षी गृहस्थी को गुरुवार के दिन क्षौर नहीं करवाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त पर्व वाले दिन, जन्मदिन, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी (१४) आदि रिक्ता तिथियों में, व्रत के दिन, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति, श्राद्ध के दिन, भद्रा और व्यातिपात योग में तथा भोजन करने के बाद, देश-प्रदेश जाने के समय में शुभाकांक्षी और कर्म न करावें।

––तैलाभ्यंग—अर्थात् तैल मालिश करना––

रविवार, मंगलवार, गुरुवार तथा शुक्रवार को तैल लगाना शुभ नहीं माना जाता है। **निर्णय सिन्धु** के अनुसार रविवार तैल लगाने से ताप, मंगलवार को आयु क्षीणता, गुरुवार से धन–हानि, शुक्रवार को तैल लगाने से दुःख होता है। सोमवार, बुधवार तथा शनिवारों को तैल लगाना शुभ होता है।

निषिद्ध वारों में तैल लगाना हो, तो रविवार को पुष्प, गुरुवार को दूर्वा, मंगल को मिट्टी, और शुक्रवार को गोबर तेल में डालकर लगाने से दोष नहीं होता। गन्धयुक्त (सुगन्धित) तेल एवं प्रतिदिन तेल लगाने वालों को भी दोष नहीं लगता–(**नित्यं—अभ्यङ्गके चैव वासिते नैव दूषणम्॥**)

––फलित ज्योतिष की दुर्लभ पुस्तकें––

गलत एवंस अशुद्ध ज्ञान की अपेक्षा अल्प सही एवं शुद्ध ज्ञान की जानकारी श्रेष्ठ होती है। यह नियम सभी विषयों पर सटीक बैठता है। ज्योतिष में तो यह नियम और भी आवश्यक है। गणित एवं फलित ज्योतिष ज्ञान के लिए विश्वसनीय एवं प्रामाणिक ग्रन्थों एवं पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए। हमारे कार्यालय से प्रकाशित **ज्योतिष तत्त्व (तीन पुस्तकों का सैट)** का अध्ययन एवं अनुशीलन करने बाद आप ज्योतिष सम्बन्धी गूढ़ रहस्यों को सुगमता से हृदयगंम कर सकते हैं, क्योंकि मेष आदि द्वादश लग्नों को आधार मानकर कुण्डली में सभी ग्रहों की स्थितियों का विस्तृत फलादेश अनेक प्रसिद्ध उदाहरण कुण्डलियाँ देकर समझाया गया है। ज्योतिष ज्ञान प्राप्ति के लिए इच्छुक प्रत्येक विद्यार्थी के लिए उत्तम फलित ग्रंथ (दो भागों में) प्रत्येक भाग का मूल्य २५०) रुपये। **कुल मूल्य 565/–**

जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर। फोन–2457959

यात्रादि मुहूर्त्त विचार

किसी कार्य के उद्देश्य से देशान्तर गमन को यात्रा कहते हैं। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा और २, ३, ५, ७, १०, ११, १३—इन तिथियों में अश्वि., मृग. पुर्न, पुष्य, अनु, हस्त, श्रव., धनि, रेव.—इन नक्षत्रों में तथा चौर, वाण, भद्रा, वैधृति, व्यतियात और मासांत दिनादि दोष रहित समय में यात्रा करें। यात्रा करने से पूर्व क्रोध और मैथुन कर्म का त्याग करना चाहिए।

दिशाशूल

सोमवार, शनिवार को पूर्व, रविवार और शुक्रवार को पश्चिम, मंगलवार, बुधवार को उत्तर तथा गुरुवार को दक्षिण दिशा का दिशाशूल होता है, अतः उक्त वारों को उस दिशा की यात्रा नहीं करनी चाहिए। अत्यावश्यक होने पर रविवार को पान और घी खाकर, सोमवार को दर्पण देखकर या दूध पीकर, मंगलवार को गुड़ खाकर, बुधवार को धनिया या तिल खाकर, गुरुवार को दही खाकर, शुक्रवार को दूध पीकर और शनिवार को अदरक या उड़द खाकर प्रस्थान किया जा सकता है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पाँव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े, यात्रा सफल होगी।

चन्द्रवास ज्ञान चक्र

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

चन्द्रवास विचार

जाने वाली दिशा में चन्द्रमा का वास सम्मुख और दाहिनी ओर को हो तो धन का लाभ और सुख होता है। यदि पीठ की ओर अथवा बाईं तरफ चन्द्रवास हो तो कष्ट और धन की हानि होती है।

सम्मुख चन्द्रमा का विशेष फल

करणदोष, नक्षत्रदोष, वारदोष, संक्रान्ति दोष, अशुभतिथिदोष, कुलिक दोष, प्रहार्द्ध वारवेला दोष, मंगल, शनि, रवि, राहु-केतु के दोष को सम्मुख चन्द्रमा दूर करता है।

'यात्रा के समय शुभ शकुन'

यात्रा के समय श्वेत पुष्पों का दर्शन श्रेष्ठ माना गया है। भरे हुए घड़े का दिखाई देना तो बहुत ही उत्तम है। दूर का कोलाहल, अकेला वृद्ध पुरुष, पशुओं में बकरे, गौ, घोड़े तथा हाथी, देवप्रतिमा, प्रज्वलित अग्नि, दूर्वा, ताज़ा गोबर, सोना, चांदी, रत्न, बच, सरसों आदि औषधियां, मूँग, छाता, पीढ़ा, राजचिह्न, जिसके पास कोई रोता न हो ऐसा शव, फल, घी, दही, दूध, अक्षत, दर्पण, मधु, शंख, ईख, शुभ सूचक वचन, भक्त पुरुषों का गाना-बजाना, मेघ की गम्भीर गर्जना, बिजली की चमक तथा मन का सन्तोष—ये सब शुभ शकुन हैं। 'चले आओ'—यह शब्द यदि सामने की ओर से सुनाई पड़े तो उत्तम है। 'जाओ'—यह शब्द यदि पीछे की ओर से हो तो उत्तम है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विवाहादि शुभ कार्यों में शास्त्रीय विचार

विवाह में जन्म मास, नक्षत्रादि का विचार—

आद्य गर्भ, अर्थात् बड़े लड़के या बड़ी लड़की का विवाह जन्म मास, जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि, जन्म लग्न में न करें। **''आद्य गर्भ सुत कन्ययो र्द्वयो जन्म मास भतिथौ कर ग्रहः। नोचितोऽथ विबुधैः प्रशस्यते चेद् द्वितीय जनुषोः सुतप्रदः॥ मु. चिंतामणि॥''**

परन्तु ज्येष्ठ पुत्र के बाद उत्पन्न पुत्र या कन्या का विवाह जन्म मास, नक्षत्रादि में करना प्रशस्त है। ज्येष्ठ पुत्र-कन्या के अतिरिक्त अन्य स्थितियों में जन्म-मास, जन्म राशि, नक्षत्र एवं जन्म लग्न विशेष शुभ माना है।

जन्ममासे च पुत्राढया धनाढया च धनोदये। जन्म मे जन्मराशौ च कन्या हि ध्रुव सन्तति॥

आचार्य भृगु जी के अनुसार जन्म मास, जन्म नक्षत्र एवं जन्म लग्न में विवाह होने पर दम्पत्ति के सुख एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है तथा वह धन सम्पत्ति तथा सन्तान सुख से सौभाग्यशालिनी होती है।

जन्ममासेऽथ जन्मर्क्षे जन्मलग्नेऽथ जन्मनि।
उद्वाहेषु च नारीणां प्रतिष्ठा महती भवेत्। भृगुः
जन्ममासेऽथ पुत्राढ्या धनादया जन्मभोदये।
जन्मभे वा भवेदूढा वृद्धा संतति वर्धिनी॥ (यवनाचार्य)

ज्येष्ठ मास में विवाह का विचार

ज्येष्ठ मास, ज्येष्ठ पुत्र और ज्येष्ठ कन्या यह तीन ज्येष्ठ विवाह संस्कार में विशेषतया वर्जित माने जाते हैं। परन्तु यदि दो ज्येष्ठ वर्तमान हों अर्थात् लड़का-लड़की दोनों ज्येष्ठ (बड़े) हों, परन्तु महीना ज्येष्ठ के अतिरिक्त हो अथवा लड़का-लड़की में से एक ज्येष्ठ हो और दूसरा अनुज हो, तो ज्येष्ठ मास में भी विवाह करना सामान्य एवं मध्यम फल होता है—

द्वौ ज्येष्ठौ मध्यमौ प्रोत्तत्रवेक ज्येष्ठः शुभावहः।
ज्येष्ठ त्रयं न कर्वीत् विवाहे सर्वसम्मतम् —वाराहमिहिर॥

तथापि आवश्यक परिस्थितिवश ज्येष्ठ मास में कृतिका से सूर्य निकल जाने पर सूर्य दानादि करके विवाह करने में कोई हानि नहीं। **मुनि भारद्वाज** के मतानुसार ज्येष्ठ के महीने की भान्ति मार्गशीर्ष मास में भी अग्रज लड़का-लड़की एवं मार्ग मास-तीनों का यथासम्भव त्याग करें।

(३) सगे भाई-बहन के विवाह छः मास के भीतर नहीं करने चाहिएं। यदि इस बीच संवत् परिवर्तन हो जाए, तो कोई दोष नहीं **(मु. मार्तण्ड)**। पुत्र के विवाह के उपरान्त अपनी कन्या का विवाह ६ महीने तक न करें। इसी तरह विवाह के बाद ६ महीने तक मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि शुभ कार्य न करें। **(नारद)**, परन्तु कन्या-विवाह के पश्चात् पुत्र विवाह ६ मास के भीतर शुभ है। दो सगे भाईयों का विवाह दो सगी बहनों से न करें अथवा एक वर के साथ दो सगी बहनों का विवाह न करें **(वसिष्ठ)** तथा जिस वर को अपनी कन्या देवे, उसकी बहन के साथ अपने लड़के का विवाह न करे **(नारदः)**।

दो सगे भाईयों या दो सगी बहनों का एक संस्कार ६ महीने के भीतर करना सम्भव है **(वृन्द्धमनुः)**। दो सहोदर (भाई-बहन) के संस्कार आवश्यक स्थिति उत्पन्न होने पर नदी, पर्वत, स्थान एवं पुरोहित भेद (भिन्न) से एक ही दिन अथवा ६ महीने के भीतर शुभ होंगे **(शार्गंधर)** जुड़वें भाई-बहन के मांगलिक कार्य एक ही मण्डप में भी शुभ हैं। विवाहादि मंगल कार्य से ६ मास तक लघु मंगल कार्य न करें। यह ६ महीने का निषेध केवल तीन पीढ़ि तक के मनुष्यों के लिए कहा है।

मंगल संस्कार से ६ महीने तक पितृकर्म, श्राद्धादि न करे। वाग्दान अर्थात् विवाह सम्बन्ध का निश्चय हो जाने के बाद वर-कन्या के कुल में माता-पिता भाई आदि निकटस्थ बन्धु की दुःखद मृत्यु हो जाने पर एक वर्ष के पश्चात् विवाह आदि शुभ कार्य करना चाहिए (निर्णय सिंधु) परन्तु **अपवाद स्वरूप** संकट काल में अथवा अत्यावश्यक परिस्थितिवश एक मास के बाद अथवा सूतक निवृत्ति के बाद जप, पाठ, होम शान्ति एवं यथाशक्ति द्रव्य, वस्त्र, गोदानादि के बाद शुभ कार्य ग्राह्य होंगे—

प्रतिकूलेऽपि कर्त्तव्यो विवाहो मासमन्तरात्।
शान्ति विधाय गां दत्वा वाग्दानादि चरेत् पुनः॥

जन्म नक्षत्र विचार

जातक का जन्म नक्षत्र अन्न प्राशन, उपनयन, मुंडन (चूड़ाकरण), राज्याभिषेक, जन्मदिनादि कृत्यों में प्रशस्त माना गया है, परन्तु यात्रा, सीमान्तोन्नयन तथा विवाहादि कार्यों में जन्म नक्षत्र अनिष्टकर होता है—

बालान्नभुक्तौ व्रतबन्धनेऽपि राज्याभिषेके खलुजन्मधिण्यम्।
शुभं तु अनिष्टं सततं विवाह सीमन्त यात्रादिषु मंगलेषु॥ —वसिष्ठ

मतान्तर से ज्योतिर्निबन्ध एवं मुहूर्त्त दीपिकानुसार केवल चूड़ाकरण (मुण्डन), औषध सेवन, विवाद, यात्रा और कर्णवेध में ही **जन्म-नक्षत्र** का निषेध कहते है, अन्य सभी कार्यों में जन्म नक्षत्र शुभ कहा है—

जन्म नक्षत्रगश्चन्द्रः प्रशस्तः सर्वकर्मसु।
क्षौर भैषजविवादध्वकर्त्तनेषु विवर्जयेत्॥ (मुहूर्त्त दीपिका)

परन्तु जन्म नक्षत्र से २५वां तथा २७वां नक्षत्र शुभ कार्यों में त्याज्य माना जाता है।

जन्म मास अग्रज (बड़े) लड़के या लड़की का विवाह **जन्म नक्षत्र** एवं **जन्म मास** में करने का निर्विवादेन निषेध माना गया है—

न जन्ममासे जन्मर्क्षे न जन्मदिवसेऽपि वा। आद्य गर्भ सुतस्याथ दुहितुर्वा करग्रहः॥ —नारद

परन्तु अनुज लड़के या लड़की का विवाह **जन्म मास** में ग्रहणीय माना गया है—

विवुधैः प्रशस्यते चेत् द्वितीयजनुषोः सुतप्रदः —मुहूर्त्त चिंतामणि

वर—वरण एवं सगाई मुहूर्त्त

वर-कन्या की जन्मपत्रियों में परस्पर सम्यक् मिलान हो जाने के पश्चात् दोनों के माता-पिता विवाह के संकल्प (वाग्दान) को सम्पुष्ट करने के लिए वर-कन्या का वरण (सगाई) करते हैं। इसके लिए निम्नलिखित शुभ मुहूर्त्त में कन्या का भाई, कुल पुरोहित (ब्राह्मण) एवं परिवार के सन्निकट सगे सम्बन्धियों के साथ यज्ञोपवीत, नारियल, साबित सुपारी, हल्दी, अक्षत, छुहारे, गुड़, वस्त्र, अंगूठी, मिष्टान्न, फल, फूलादि अर्पण करके वर का शास्त्र प्रशस्त मांगलिक मन्त्रों के साथ वरण करें। (पूर्ण विधि जानने के लिए हमारी नवीन प्रकाशित **'विवाह पद्धति'** का अवलोकन करें।

विवाह में प्रतिपादित शुभ मासों **वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन मासों** में, रिक्ता (४, ९, १४) तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में (विशेषकर शुक्ल पक्ष प्रशस्त है), चन्द्र, बुध, गुरु एवं शुक्रवारों में तथा कृतिका, रोहिणी, तीनों पूर्वा, मृग, हस्त, श्रवण, चित्रा नक्षत्रों में शुभ लग्न कालीन वर का वरण करें।

कन्या वरण मुहूर्त्त—

उपरोक्त शुभ मासों, तिथियों में तथा कृतिका, तीनों पूर्वा, उत्तराषाढ़ा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा अनुराधादि विवाहोक्त नक्षत्रों में सुपारी, नारियल, मौसमी फल, सुगन्धित द्रव्य, वस्त्र, आभूषण मिष्टान्न, फल, फूलों आदि के साथ वर परिवार के किसी श्रेष्ठ अग्रज अथवा वृद्धजन के कर कमलों के द्वारा कन्या का विधिवत् वरण करें।

लता दोष

(वर-दोष कुल... में अतिनिन्दित है।)

युति-दोष

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लता दोष

सूर्य:	चन्द्र:	भौम:	बुध:	गुरु:	शुक्र:	शनि:	राहु:
१२	७	३	२२	६	२४	८	९
धन हानि	अशुभ	मृत्यु	अशुभ	बंधु-नाश	कार्य-नाश	कुल-क्षय	मरण

जैसे सूर्य स्थित नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र यदि १२वां हो तो सूर्य की लता एवं पूर्ण चन्द्र के दिन नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र ७वां हो तो चन्द्रमा की लता जाने।

(पात-दोष कुरु, जांगल, कलिंग बंग और मगध में अतिनिन्दित है।)

अश्वि	भर	कृति	रोहि	मृग	आर्द्रा	पुर्न	तिशा	अनु.	ज्येष्ठा	उषा	श्रव	धनि	शत	पूभा
मघा	हस्त	स्वा	मूला	मघा	रोह	रोहि	उफा	उषा	मृग	उषा	स्वा.	मृग	रोहि	उफा
अनु	उषा	उफा	००	हस्त	मृग	उषा	उषा	००	मघा	अनु.	००	स्वा.	हस्त	हस्त
रेव	उभा	००	००	मृग	उफा	००	००	००	मूला	००	००	मूला	उषा	अनु
००	००	००	००	००	अनु.	००	००	००	रेव	००	००	रेव	उभा	००

ऊपर के नक्षत्रों में सूर्य हो तो नीचे के नक्षत्रों को पात दोष लगता है, हर्षण, वैधृति साध्य, व्यतिपात, शूल—इन योगों के अन्त में विवाह का नक्षत्र हो तो भी पात दोष लगता है।

युति-दोष

जिस नक्षत्र का विवाह हो और उसी नक्षत्र पर यदि शुभ व पाप ग्रह हो तो युति दोष होता है, अथवा चंद्रमा की राशि में कोई ग्रह हो तो युति दोष होता है। क्रूर ग्रहों की युति विशेष करके वर्जित है। यह गौड़ देश में अतिनिन्दित है।

वेध दोष

रोहि	मृग	मघा	उफा	हस्त	स्वा	अनु	मूला	उषा	उभा	रेव
अभि	उषा	श्रव	रेव	उभा	शत	भर	पुन	मृग	हस्त	उफा

ऊपर के नक्षत्रों में से विवाह का नक्षत्र हो और उसके नीचे के नक्षत्र पर कोई ग्रह हो तो उस ग्रह का वेध होता है। यह क्रूर ग्रहों के वेध विशेषतया वर्जित माना गया है।

विवाह नक्षत्र से सातवें ग्रह हो तो जामित्र

रोहि	मृग	मघा	उफा	हस्त	स्वा	अनु	मूला	उषा	उभा	रेव
अभि	ज्ये.	धनि	पूभा	उभा	अश्वि	कृति	मृग	पुन	उफा	हस्त

ऊपर के नक्षत्रों में विवाह का नक्षत्र हो और नीचे के नक्षत्रों पर कोई ग्रह हो तो उस ग्रह का जामित्र दोष होता है सो पाप ग्रह का जामित्र विवाह में वर्जित कहा है यह यमुना प्रांत में अतिनिंद्य है।

बाण दोष

रोग	अग्नि	राजपं	चौरपंचक	मृत्यु	
८।१७ २६	२।११ २०।२९	४ १३।२२	६।१५ २४	१।१० १९।२८	सूर्यांश
व्रते रवौ रात्रौ	गृहकार्ये भौमे दिवा	सेवाया शनौ दिवां	यातंरा भौमे रात्रौ	विवाह बुधे संध्याया	कार्येषु वारे समये

एकार्गल दोष

वि.	अति	शू	गं	व्य	व	वै	यो

सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित सहित गणना करने से यदि विषम हो और इन विरुद्ध योगों में से कोई भी योग हो तो एकार्गल दोष होता है। यह काश्मीर में विशेष वर्जित है।

उप ग्रह दोष

सूर्य के नक्षत्र से ५वें, ७वें, ८वें, १०वें, १४वें, १५वें, १८वें, १९वें, २२वें, २३वें, २४वें, २५वें, नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

क्रान्ति साम्य दोष

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला	सूर्य	चन्द्र
सिंह	मकर	धन	वृश्चि.	मीन	कुम्भ	चन्द्र	सूर्य

ऊपर व नीचे की राशि पर सूर्य व चन्द्रमा हो तो स्थूल रूप से क्रान्ति-साम्य दोष हो जाने से विवाह में सर्वदा वर्जित है।

*वैशा., आषा., भाद्र., कार्ति., पौष., फा. मासों में शुक्ल पक्षीय तिथियां तथा ज्ये., श्रा., अश्वि., मार्ग व माघ में कृ. पक्षीया तिथियां ही वर्जित है।

दग्धा तिथि दोष

वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	मार्ग.	कार्ति	पौष	
श्रावण	फाल्गुन	आश्विन	भाद्र	माघ	चैत्र	मास
६	४	८	१०	१२	२	तिथि

इन २ मासों में से २ तिथियां दग्ध होती है सो विवाह में वर्जित कहीं हैं, मध्य देश में त्याज्य है। कुछ विद्वानों अनुसार*

भूमि खरीदने (क्रय) का मुहूर्त्त

वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (प्रवि. ७ तक) मार्गशीर्ष, माघ और फाल्गुन मास भूमि क्रय के लिए उत्तम कहे गए हैं।

शुभ तिथियाँ—प्रतिपदा (कृष्ण-पक्षे), कृष्ण तथा शुक्ल पक्षे २, ५, ६, १०, ११, १५ तिथियां।

शुभ नक्षत्र—मृगशिर, पुनर्वसु, अश्लेषा, मघा, विशाखा, अनुराधा, तीनों पूर्वा, मूला, रेवती, शतभिषा एवं स्वाती नक्षत्र।

शुभवार—सोमवार, बुधवार, वीरवार, शुक्रवार।

लत्तादि दोषाणां परिहारवाक्यानि-लत्ता मालवके (उज्जैनादि) देशे पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्र बांगर) जांगले (फिरोजपुर इत्यादि)। एकार्गले व काश्मीरे वेघं सर्वत्र वर्जयेत्॥ उपग्रहर्क्षे कुरु वाल्हिकेषु (आगरा आदि) कलिंगवंगेषु (जगन्नाथपुरी, बंगाल, अयोध्या च पातिते भम्॥ सौराष्ट्र (कठियावाड़) शाल्वे: लताभं त्यजेत् विद्धकिल सर्वदेशे युतिदोषो भवेद गौड़े (बंगाल) जार्मित्रस्य च यामुने (यमुना के प्रांत)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे तिथयो मध्यदेशें विवर्जित:। युतिपरिहार-स्वर्क्षस्थ: स्वोच्चगश्चंद्रो पित्रक्षेत्रगतोपिवा। गुरुश्च स्वीयवर्गस्थो वली केन्द्रगतो विधु:। लत्तापांप उपग्रह परिहार:-वनसंख्यं चरणे खेट स्तत्संख्यं चरणं त्यजेत्। लत्तोपग्रहदानेषु त्याज्या नैवाऽग्रय परे॥ परिहार-लत्तोपग्रहजामित्रयांतैकार्गलकर्त्तरी। एते दोषा विनश्यंति लग्नेऽकें दुर्बलान्विते॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आवश्यक मुहूर्त्त विचार

नाम मुहूर्त्त	शुभ ग्राह्य तिथियां	शुभ वार मास	शुभ नक्षत्र
बच्चे का नाम रखना	१ (कृष्ण), तथा दोनों पक्ष की २, ३, ७, १०, ११, १३ (शुक्ल) तिथियाँ॥	सूतकान्त (सप्ताह के बाद) १०, १२, १३, १६ आदि दिनों में एवं चंद्र, बुध, गुरु एवं शुक्र वारों में॥	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, श्रव, धनि, शत, रेवती।
बच्चे को स्कूल डालना (विद्यारम्भ)	२,३,५,७,१०,११,१२, १३ (शु.), १४, बुध एवं पूर्णिमा तिथि	उत्तरायण मासों में (२१ दिसं. से २० जून तक) ५वें ७वें वर्ष, रवि, चंद्र, बुध, गुरु व शुक्र वार।	अश्वि, मृग, रोह, पुन, पुष्य, श्ले, पूर्वा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, श्रव, धनि, शत, उत्तरा—तीनों।
मुंडन संस्कार	१ (कृष्ण), २,३,५,६,७, १०, ११, १३ (शुक्ल, १५ शुभ तिथियाँ।	जन्म से १, ३, ५ इत्यादि वर्षों में, वैशा, ज्ये., आषा. (२० जून तक), माघ, फागु. (उत्तरायणे), चं. बु. गु. शु.।	अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्ये., श्रव, धनि, शत, रेव एवं जन्म नक्षत्र ग्राह्य॥
दुकान/बही खाता शुरु करना	१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १० १२, १३(शुक्ल) तिथियां।	रवि, चंद्र, बुध, वीर, शुक्र, शनि। वैशा, ज्ये, आषा, श्रा, भा., मार्ग, माघ, फा।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा-३, हस्त, चित्रा, अनु, मूल, श्रव, धनि, पूभा, रेवती।
नौकरी करना	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११ १२, १५ तिथियां।	रवि, चन्द्र, बुध, वीर, शुक्र, उत्तरायण महीने प्रशस्त हैं।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, अनु, ज्ये, श्रव-रेव।
स्कूटर, कारादि सवारी खरीदना	१ (कृ.), २,३,५,६,७,१० ११, १२, १३ (शु.), १५।	चंद्र, बुध, गुरु व शुक्रवारों में।	अश्वि, उत्तरा-३, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा-३, पूर्वा-३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु. धनि, रेवती।
गृहारम्भ (मकान बनाना)	१ (कृ), २,३,५,६,७,१०, ११, १२, १३ (शु.)व १५।	चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्र, शनि, वैशा, ज्ये, श्रव, भादर, माघ, फागु. प्रशस्त हैं।	रोह, मृग, जुन, पुष्य, उत्तरी, ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, धनि, शत, रेव।
शिलान्यास (नींव खोदना)	गृहारम्भ वाली तिथियां ग्राह्य।	गृहारम्भ वाले वार एवं मास ग्राह्य। सुप्त भूमि के प्रविष्टे (१,५,७,९,१०,२१,२४ त्याज्य)	उपरोक्त नक्षत्रों के अतिरिक्त अश्विनी व श्रवण नक्षत्र सुप्त भूमि के प्रविष्ट।
नए घर में प्रवेश	१(कृ), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शुक्ल) १५ तिथियां।	वैशा, ज्ये, मार्ग, माघ एवं फाल्गु.॥ पुराने गृह में श्राव, भाद्र भी ग्राह्य, चंद्र, बुध, शुक्र व शनि।	अश्वि, रोह, मृग, उत्तरा, ३, हस्त, चित्रा, स्वा, पुष्य, अनु, धनि, रेव।

नाम मुहूर्त्त	शुभ ग्राह्य तिथियां	शुभ वार मास	शुभ नक्षत्र
सगाई मुहूर्त्त	१ (कृ), २,३,५,७,८,१०, ११, १२, १३ (शु.), १५ शुभ तिथियां॥	चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, वैशा, ज्ये, आ, श्रा, भा., आश्वि, मार्ग, माघ, फागु.।	अश्वि, कृति, रोह, मृग, मघा, पूर्वा ३, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु, मू, श्रव, धनि, रेवती।
विवाह मुहूर्त्त	१(कृ.),२,३,५,७,८,९,१० ११, १२, १३ (शुक्ल), १५।	वै., ज्ये, आषा, श्रा., भा, अश्वि, मार्ग, माघ, फागु. तथा कार्तिक (पर्वतीये केवल)। रवि, चंद्र बुध, गुरु, शुक्र प्रशस्त। मं. शं. (मध्यम)।	रोह, मृग, मघा, उत्तरा ३ (तीनों), हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, मूला, रेव।
मुहूर्त्त मुकलावा	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११ १२, १३ (शुक्ल) १५ तिथियां।	चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, वैशा., मार्ग, माघ व फाल्गुन मास।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु., मूल, श्रव, धनि, रेव।
बीज बोना (हल चलाना)	१ (कृ) २, ३, ५, ७, १० ११, १२, १३ (शु.) १५ तिथियां।	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, मघा, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, विशा, अनु, मूला, रेवती।
अनाज संग्रह (भरने का मुहूर्त्त)	२, ३, ५, ७, ८, ११, १२, १३, (शुक्ल), १५।	चन्द्र, बुध, गुरु व शुक्र।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, मूल, श्रव, धनि, शत, रेवती।
आप्रेशन कराने का मुहूर्त्त	२, ३, ५, ६, ७, १०, १२, १३	रवि, मंगल, गुरु	अश्वि, रोहि, मृग, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, अभि, श्रव
मन्त्र सिद्ध करने का मुहूर्त्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) १५ तिथि।	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र वारों में।	अश्वि, मृग, उफा, हस्त, श्रवण, विशाखा।
भूमि खरीदने का मुहूर्त्त	१(कृष्ण) तथा ५, ६, १०, ११, १५।	मंगल, गुरु, शुक्र।	मृग, पुन, श्ले, मघा, विशाखा, अनु, पूर्वा ३, मूला, रेवती।
मुकद्दमा दायर करना	३, ५, ८,१०,१३ (शुक्ल) १५, चंद्र व मंग. दोनों बलान्वित होने चाहिएं।	रवि, मंग, बुध, गुरु, वार प्रशस्त हैं।	भर, आर्द्रा, श्ले, मघा, पूर्वा-३, ज्ये., मूला, नक्षत्र।
पशु खरीदने का मुहूर्त्त	१(कृ)२,३,५,६,७,८,१०, ११,१२,१३(शुक्ल) १५।	रवि, चंद्र, बुध, गुरु शनि।	अश्वि, पुन, पुष्य, हस्त, विशा, ज्ये, धनि, शत, रेवती।
औषधि सेवन का मुहूर्त्त	१, (कृ),२, ३, ५, ७, १० ११, १२, १३ (शु.)।	रवि, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, जन्म नक्षत्र त्याज्य हैं।	अश्वि, मृग, पुष्य, चित्रा, पुर्न, हस्त, अनु, स्वा, अभि, श्रवण, धनिष्ठा हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आपको किस दिन क्या कार्य करना शुभ है ?

नाम वार	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	वीरवार	शुक्रवार	शनिवार
यात्रा में शुभ ग्राह्य-दिशाएँ	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षिण पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण वायव्य (उत्तर-पश्चिम)	दक्षिण-पूर्व आग्नेय (दक्षिण-पूर्व)	दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)	पूर्व, उत्तर ईशान (उत्तर-पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)
यात्रा में त्याज्य (दिशाशूले)	पश्चिम, वायव्य (उ. पश्चि. कोण)	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षि.-पश्चि.)	उत्तर, पश्चिम वायव्य (उत्तर पश्चि.)	उत्तर, पश्चिम ईशान (पूर्व-उत्तर)	दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षि. पश्चि.)	पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य कोण (द. पश्चि.)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)
विद्या एवं शिक्षा सम्बन्धी	विज्ञान, इंजीनियरिंग, सेना, उद्योग, बिजली, मैडिकल, एवं प्रशासनिक शिक्षा सम्बन्धी।	लेखनादि कार्य, मैडीकल शिक्षा, सौंदर्य प्रसाधन, औषधि निर्माण व योजना सम्बन्धी।	बिजली (इलैक्ट्रानिक), सर्जरी की शिक्षा, शस्त्र विद्या सीखना, अग्नि, स्पोर्टस, भूगर्भ विज्ञान, दंत चिकित्सा आदि।	गणित, लेखनादि, बौद्धिक कार्य, बैंक वकालत, तकनीकि हुनर, ज्योतिष, विज्ञान, वाहनादि चलाना सीखना।	दर्शन-शास्त्र, धर्म मंत्र ज्योतिष, वकालत, उच्च पद प्रशासनिक शिक्षा वैद्यक आदि।	नृत्य, वाद्य, गायन, कला, संगीत, ऐक्टिंग, गीत-काव्य, रचना, स्त्रियों एवं सौंदर्य सम्बन्धी शिक्षा।	तकनीकी शिल्प, कला, मशीनरी सम्बन्धी ज्ञान (Engineering) अंग्रेजी, उर्दू, फारसी का ज्ञान शुरु करना।
व्यापार सम्बन्धी कार्य	राज्य प्रशासनिक कार्य सेनाधिकारी, ज्यूलर्ज, औषधि, शस्त्र, अग्नि, अनाज, सोना, तांबा, चाँदी, गाय, बैलादि का क्रय-विक्रय, मैडीकल, इलैक्ट्रीकल, मंत्रानुष्ठान यज्ञादि।	कृषि, गाय, भैंस, दूध, घी डेयरी, फार्म, औषधि, सोडादि तरल पदार्थ, शंख, मोती, स्त्री, धन सम्पदा, सौंदर्य प्रसाधन, सुगन्धि (Perfumes) सम्बन्धी वस्तुओं का क्रय-विक्रय, विदेशी पत्राचार आदि।	शक्ति, अग्नि एवं बिजली से सम्बन्धित कार्य, बेकरी electronics, स्पोटर्स Goods, सोना, तांबा, मूंगा, पीतलादि का क्रय भूमि, सर्जरी एवं रक्षा सामग्री, सन्धि विच्छेद आदि कार्य।	कृषि एवं व्यापारिक वस्तुओं का क्रय-विक्रय, शेयरों का क्रय, पुस्तक, लेखन प्रशासन, लेखाकार्य (Accounts) शिक्षण, वकालत, शिल्प, एवं सम्पादन कार्य, वाहन क्रय-विक्रय।	धार्मिक अनुष्ठान, उच्च प्रशासनिक कार्य, उच्च शिक्षा के कार्य, आभूषण, औषधि, लकड़ी, भूमि, वाहनादि का लेन-देन, विदेश गमनादि कार्य।	संगीत, सिनेमा, विदेश बारे, टैलीविजन, स्त्रियों, एवं श्रृंगारिक वस्तुओं से संबन्धित कार्य, रूई, कपड़ा बैंकिंग, चाँदी, जवाहरात, रसायन, शराब, सोडा, सुगन्धित द्रव्य, वाहनादि क्रय-विक्र, खुशबूदार वस्तु।	मशीनरी, लोहा, लकड़ी चमड़ा, सीमेंट, तेल, पैट्रोल, पत्थर, भूमि, ठेकेदारी, शस्त्रों का क्रय-विक्रय, अन्वेषण एवं आप्रेशण कार्य, अधीनस्थ कर्मचारी, वाहनादि प्रयोग विदेश-यात्रादि कार्य।

नाम वार	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि
नवीन वस्त्र धारण करना	शुभ है	मध्यम	अशुभ	शुभ	शुभ	अति शुभ	अशुभ
नवीन आभूषण धारण	शुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ
तेल लगाना	अशुभ	शुभ	अशुभ	विशेष शुभ	अशुभ	शुभ	विशेष शुभ
हजामत करना	मध्यम	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम
नया जूता पहनना	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम
मुकद्दमा करना	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ

अनुष्ठान आरम्भ करने का मुहूर्त्त

मास—वैशाख, श्रावण, अश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ फाल्गुन।

तिथि (शुक्ला)—२, ३, ५, ७, १०, ११, १३।

वार—सू. गु. शु. (सोम मध्यम)।

नक्षत्र—अशिव. रो. मृ. पुन. पु. उत्तरा. ३. ह. स्वा. वि. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे।

लग्न—शिव की आराधना १, ४, ७, १० लग्नों में एवं विष्णु की २, ५, ८, ११ लग्नों में तथा देवी की ३, ६, ९, १२ लग्नों में कर्त्तव्य है।

अन्य देवताओं के अनुष्ठान में वह राशि लग्न ग्रहण करें, जब ३, ६, ११वें क्रूर ग्रह १, २, ४, ५, ७, ९, १०वें सौम्य ग्रह तथा ८, १२वें प्रहाभाव।

विशेष—आराध्य देवताओं के मास, तिथि, वार, नक्षत्र विशेष शुभ है। पुनश्च, गुरु-शुक्रास्त, बलहीन चन्द्र तथा कुयोग परित्याज्य हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मेलापक में मंगलीक योग एवं परिहार

विवाह योग्य लड़के-लड़की की जन्म कुण्डली में वर्ण, वश्य, तारा, ग्रहमैत्री, नाड़ी आदि अष्टकूट सम्बन्धी गुण मिलान के पश्चात् कुण्डली में मंगल एवं **मंगलीक दोष** पर विशेष रूप से विचार किया जाता है। मंगलीक दोष का आधार सामान्यतः निम्न श्लोक माना जाता है।

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तुविनाशाय भर्ता कन्या विनाशकः।

—मु. संग्रहदर्पण

अर्थात् जिस कन्या की कुण्डली में १, ४, ७, ८ या १२वें स्थान में मंगल हो, तो वह कन्या वर (पति) के लिए हानिकारक तथा इसी भान्ति जिस लड़के की कुण्डली में इन्हीं स्थानों में मंगल हो वह कन्या को हानिकारक होता है। इसी भांति लग्न, चन्द्र और कभी-कभी शुक्र की राशि से भी मंगल की उपर्युक्त स्थितियों का विचार किया जाता है।

अपवाद—(१) मंगल दोष वाली कन्या का विवाह मंगलीक दोष वाले वर के साथ करने से मंगल का अनिष्ट दोष नहीं होता तथा वर-वधू के मध्य दाम्पत्य सुख बढ़ता है—

कुज दोष वती देया कुजदोषवते किल। नास्ति दोषो न चानिष्टं दम्पत्योः सुखवर्धनम्॥

मंगलीक सम्बन्धी उपरोक्त श्लोक के परिहार स्वरूप मुहूर्त्त ग्रन्थों में अनेकत्र परिहार वाक्य मिलते हैं। यथा—

(२) यदि लड़की की कुण्डली में जिस स्थान पर मंगल स्थित (मंगलीक कारक) हो, और लड़के की कुण्डली में उसी स्थान पर शनि, मंगल, सूर्य, राहु आदि कोई पाप ग्रह स्थित हों, तो भौमदोष भंग हो जाता है। इसी प्रकार लड़के की कुण्डली में भौम दोष होने पर कन्या की कुण्डली में उसी भाव में कोई पाप ग्रह होने से भी भौमदोष नहीं रहता—

शनि भौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोष विनाश कृत्॥—फलित संग्रह अन्येऽपि—

भौमेन सदृशो भौमः पापो व तादृशो भवेत्। विवाहः शुभदः प्रोक्तश्चिरायुः पुत्रपौत्रदः॥

अर्थात् एक की कुण्डली में मंगल दोष हो, तो दूसरे की कुण्डली में भी उन्हीं स्थानों में शनि आदि पाप ग्रह होने से मंगलीक दोष भंग होकर विवाह में शुभ होता है।

यामित्रे च सदा सौरि लग्ने वा हिबुके तथा। अष्टमे द्वादशो चैव भौमदोषो न विद्यते॥

यह श्लोक भी लगभग इसी आशय का है।

(३) मेष राशि का मंगल लग्न में, वृश्चिक राशि का चौथे भाव में, मकर का सातवें, कर्क राशि का आठवें, एवं धनु राशि का मंगल १२वें हो, तो मंगल दोष नहीं होता।

यथोक्तम्—

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे।
द्यूने मृगे कर्किचाष्टौ भौमदोषो न विद्यते॥ —मु. पारिजात

प्रकारान्तर से, मीन का मंगल ७वें भाव तथा कुम्भ राशि का मंगल अष्टम में हो, तो भौम दोष नहीं होता।

''द्यूने मीने घटे चाष्टौ भौम दोषो न विद्यते'' —मु. चिंतामणि

(४) यदि द्वितीय भाव में चन्द्र-शुक्र का योग हो, या मंगल गुरु द्वारा दृष्ट हो, केन्द्र भावस्थ राहु हो, अथवा केन्द्र में राहु-मंगल का योग हो, तो मंगल दोष नहीं रहता—

न मंगली चन्द्र भृगु द्वितीये, न मंगली पश्यति यस्य जीवा।
न मंगली केन्द्रगते च राहुः, न मंगली मंगल-राहु योगे॥ —मुहूर्त्त दीपक

(५) बलान्वित गुरु वा शुक्र लग्न में हो, तो वक्री, नीचस्थ, अस्तंगत अथवा शत्रुक्षेत्री मंगल उपरोक्त दुष्ट स्थानों में होने पर भी भौम दोष नहीं होता—

सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽथवाभौमे।
वक्रे नीचारि गृहस्थे वाऽस्तेऽपि न कुज दोषः॥ —मुहूर्त्त दीपक

(६) इसी भांति केन्द्र व त्रिकोण में यदि शुभ ग्रह हों, तथा ३, ६, ११वें भावों में पाप-ग्रह हों तथा सप्तमेश ग्रह सप्तम में ही हो, तो मंगल दोष नहीं होता—

''केन्द्र कोणे शुभादये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः।
तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा॥'' —मु. चिंतामणि

अपरंच—

(७) यद्यपि १, २, ४, ७, ८, ११ और १२वें भावों में स्थित मंगल वर-वधू के वैवाहिक जीवन में विघटन उत्पन्न करता है, परन्तु यदि मंगल अपने घर (१, ८) का हो, **उच्चस्थ** (मकर) का **किंवा मित्र क्षेत्री** मंगल दोष कारक नहीं होता—

तनु धन सुख मदनायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघट्यति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा॥ —मु. चिंतामणि

(८) यदि वर-कन्या की कुण्डलियों में परस्पर राशिमैत्री हो, गणैक्य हो, २७ गुण या अधिक मिलान होता हो, तो भी भौम दोष अविचारणीय है।

राशिमैत्रं यदा याति गणैक्यं वा यदा भवेत्। अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते॥

—मुहूर्त्त दीपक

विवेचन—उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मुहूर्त्त संग्रह दर्पण में दिए गए मंगलीक सम्बन्धी उपरोक्त श्लोक (''लग्ने व्यये पाताले—'') के परिहारस्वरूप कुछ अर्वाचीन ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं, जिनमें परस्पर विरोध वाक्यता भी मिलती है।

उल्लेखनीय है कि प्राचीन सैद्धान्तिक एवं प्रतिष्ठित मुहूर्त्त ग्रंथों जैसे—विवाह वृन्दावन, मुहूर्त्त मार्तण्ड, सारावली, मु. चिन्तामणि (प्राचीन संस्करण), ज्योतिः निबन्ध आदि) में मंगलीक सम्बन्धी उपर्युक्त श्लोक एवं तत्सम्बन्ध विभिन्न परिहार वाक्यों का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता।

वर-कन्या की कुण्डली में मंगलीक दोष एवं उसके परिहार का निर्णय अत्यन्त सावधानीपूर्वक करना चाहिए। केवल १, ४, ७, ८ आदि भावों में मंगल को देखकर दाम्पत्य जीवन के सुख-दुःख का निर्णय कर देना उपयुक्त नहीं। मंगलीक वाले स्थानों (भावों) में मंगल के अतिरिक्त कोई अन्य क्रूर ग्रह भी १, २, ७ एवं १२वें स्थानों में हो, तो वह भी परिवारिक एवं वैवाहिक जीवन के लिए अनिष्टकारी होता है। यथा—

लग्ने क्रूरा व्यये क्रूरा धने क्रूराः कुजस्तथा। —मु. संग्रह दर्पण
सप्तमे भवने क्रूराः परिवार क्षयंकराः॥

(शेष पृष्ठ 161 पर देखें)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

वर-कन्या मिलान में वर्णादि अष्टकूटों का महत्त्व

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर-कन्या मिलान में वर्णादि अष्टकूटों का महत्त्व

विवाह गृहस्थाश्रम की आधारशिला है और उसी के मध्यम से मनुष्य, देव-ऋषि एवं पितरादि ऋण त्रय से उद्धृण होकर परम कल्याण को प्राप्त होता है। तद् हेतु उत्तम लक्षणों जैसे—सुन्दर, सुशीला, मधुरभाषिणी एवं पतिव्रता कन्या तथा कर्त्तव्यनिष्ठ, स्वस्थ, शिक्षित, सदाचारी एवं सुसंस्कृत लड़के के साथ विवाह सम्बन्ध शुभ होता है। विवाह सम्बन्ध करने से पूर्व लड़के-लड़की का कुल-गोत्र, सनाथता, विद्या, धन, स्वस्थ (शरीर) और आयु—इन सात गुणों की परीक्षा करने के पश्चात् ही कुण्डलियों में परस्पर **मंगलीक आदि अरिष्ट** योगों तथा वर्ग, **स्त्रीदूर, कर्तरि एवं वर्णादि अष्टकूटों** का विचार करना चाहिए।

मेलापक प्रक्रिया में **मंगलीक और अष्टकूट** तत्त्वों का विशेष महत्त्व है, क्योंकि वर-कन्या के दाम्पत्य जीवन को अधिकाधिक सुखी एवं मंगलमय बनाने के लिए उनके जन्म नक्षत्रों एवं जन्म कुण्डलियों के अनुसार मिलान करना अत्यन्त आवश्यक है। उपयुक्त मिलान न होने की स्थिति में पति-पत्नी के वैवाहिक जीवन में—विचार वैमनस्य, सन्तान कष्ट, वैधव्य, वैधुर्यादि दोष अथवा पारिवारिक कष्ट होने की सम्भावनाएं हो जाती है। **मंगलीक दोष** का विशेष विवरण इसी पंचांग के अन्य पृष्ठों में दिया गया है। यहाँ पर नक्षत्र मिलान के मुख्य तत्त्व अष्टकूट का विवेचन किया जा रहा है। ध्यान रहे, अष्ट (आठ) कुंटों का निर्णय वर-कन्या के जन्म नक्षत्रों से ही किया जाता है। अष्टकूटों के आठ कूट (अंग) निम्नलिखित हैं :—

(१) वर्ण (२) वश्य (३) तारा (४) योनि (५) ग्रहमैत्री (६) गणमैत्री (७) भकूट तथा **(८) नाड़ी** —ये आठ कूट हैं।

प्रत्येक कूट की क्रम संख्या अपने श्रेष्ठ गुणों की सूचक है। वर्णादि अष्टकूटों में **गुणों का योग ३६** होता है। इसमें क्रमानुसार वर्ण का १ गुण, वश्य के २, तारा के ३, योनि के ४, ग्रहमैत्री के ५, गण-मैत्री के ६, भकूट के ७ एवं नाड़ी के ८ (आठ) गुण जानने चाहिएं।

वर्णादि कुल ३६ गुणों के योग में से १ से १७ तक गुण मिलान तुच्छ एवं निन्दनीय (त्याज्य) माने जाते हैं, १८ से २१ तक मध्यम एवं ग्राह्य और २२ से २८ तक उत्तम तथा २९ से ३६ तक गुण सर्वोत्कृष्ट मिलान माना जाता है।

एकैकवृद्धितो ज्ञेया वर्णादीनां गुणाः क्रमात्।
विवाहः शुभदस्तेषां गुणे त्वष्टादशाधिके॥ —मु० गणपति

वर्णादि अष्टकूट

(१) वर्ण विचार—४, ५, १२ राशियों का **ब्राह्मण**, १, ५, ९ का **क्षत्रिय**, २, ६, १० **वैश्य** तथा ३, ७, ११ राशियों का **शूद्रवर्ण** होता है। वर का वर्ण कन्या के वर्ण से उच्च स्तरीय अथवा समान वर्ण होने पर **एक गुण** प्राप्त होता है। अन्यथा शून्य गुण होगा।

परिहार—यदि वर की राशि का वर्ण कन्या के राशि-वर्ण से हीन हो, परन्तु राशिपति उत्तम वर्ण हो, तो वर्ण मिलान शुभ हो जाता है।

(२) वश्य विचार—सिंह राशि के अतिरिक्त सभी राशियाँ नर (मनुष्य) राशि के वश में हैं। जल राशियाँ (४।१० उ.।१२) नर राशियों (३।६।७।९ पू.।११) का भक्ष्य है। वृश्चिक को छोड़कर शेष राशियाँ सिंह राशि के वश्य हैं। **समान वश्य होने पर २ गुण,** एक वश्य और दूसरा शत्रु होने पर एक गुण, एक वश्य और एक भक्ष्य होने पर आधा गुण तथा एक शत्रु और एक भक्ष्य होना शून्य अर्थात् गुणाभाव होगा।

(३) तारा विचार—कन्या के जन्म नक्षत्र से वर के जन्म नक्षत्र तक तथा वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर दोनों संख्याओं को अलग-अलग ९ द्वारा भाग देने पर यदि शेष ३, ५, ७ बचे तो अशुभ तारा होती है।

दोनों (वर-कन्या) ताराओं में अशुभ तारा हो तो शून्य गुण, एक में तारा शुभ और दूसरे में अशुभ हो तो डेढ़ गुण तथा दोनों में तारा शुभ हो तो ३ गुण होते हैं।

(४) योनि विचार—अश्विनी आदि नक्षत्रों के अनुसार जातक की योनि ज्ञात की जाती है। वर और कन्या की योनियों का आपसी वैर त्याज्य है। जैसे—गौ और व्याघ्र में, सिंह और गज, न्यौला और सर्प में, अश्व और महिष में, श्वान और हरिण में, वानर और मेष में, मूषक और मार्जार में, परस्पर महावैर है।

[**नोट**—योनि व महावैर योनि की तालिका चक्र गत पृष्ठों में दिया गया है।]

गुण—वर-कन्या की एक ही योनि होना शुभ है। योनियों में परस्पर अतिमित्र हो तो ४ गुण, मित्र हो तो ३, सहज प्रकृति समान हो तो २, सामान्य वैर हो तो १ गुण तथा योनियों में अतिशत्रुता हो तो शून्य-अर्थात् गुणाभाव होगा।

(५) ग्रह मैत्री—ग्रह मैत्री कूट के सन्दर्भ में वर-कन्या के राशि स्वामियों का एक्य अथवा मैत्री भावादि अभिप्रेत्य है। (राशि स्वामी का विवरण गत पृष्ठों में नक्षत्र, राशि, वर्णादि तालिका चक्र में दिया गया है।)

गुण विचार—वर-कन्या की राशियों में परस्पर अधि-मित्रता या राश्यैक होने पर ५ गुण, एक सम और दूसरा मित्र हो, तो ४ गुण, एक-दूसरे के सम हो, तो ३ गुण, एक मित्र दूसरा शत्रु हो, तो १ गुण, एक सम दूसरा शत्रु हो, तो आधा गुण, दोनों की राशियां परस्पर शत्रु हों, तो शून्य अर्थात् गुणाभाव होता है।

अष्टकूटों में राशि स्वामी की मैत्री को विशेष महत्त्व दिया गया है। मिलान में वर्ण, योनि, गण और षडाष्टक दोष होने पर भी यदि परस्पर राशि मैत्री पाई जाती हो तो अन्य किंचिद् दोषों का निवारण हो जाता है। यथा—

गणदोषो योनि दोषो वर्णदोषः षडाष्टकम्।
चत्वारि नैव दुष्यन्ति राशिमैत्री यदा भवेत्॥ —**बृहज्जयोतिः सार**

अपवाद—वर-कन्या के राशिपतियों में परस्पर वैर होने पर भी राशि नवांशपति परस्पर मित्र हो, तो विवाह शुभ माना जाता है। यथा—

राशिनाथे विरुद्धेऽपि सबल नवांशकाधिपौ।
तन्मैत्रेऽपि च कर्त्तव्य, दम्पज्योः शुभमिच्छता॥

(६) गण विचार—अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, स्वा., अनु., श्रव., रेवती नक्षत्रों का **देवता गण,** तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, भर० और आर्द्रा इन नक्षत्रों का **मनुष्यगण,** कृति., अश्ले, मघा, चित्रा, विशा., ज्ये., मूला, धनि. और शत. का **राक्षसगण।**

वर-कन्या का **एक ही गण** होने पर विवाह **उत्तम,** देव-मनुष्य हो तो शुभ, किसी एक का राक्षसगण और दूसरा मनुष्यगण हो अथवा किसी एक का देवगण और दूसरा राक्षस गण हो तो अशुभ एवं त्याज्य होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गुण विभाजन—वर-कन्या का एक ही गुण हो, तो ६ गुण, वर का देवगण एवं कन्या का मनुष्यगण हो तो भी ६ गुण, पर कन्या देवगण एवं वर का मनुष्य हो तो ५ गुण, एक का देवगण तथा दूसरा राक्षसगण अथवा एक का मनुष्यगण दूसरे का राक्षसगण हो, तो शून्य गुण होता है इत्यादि।

मनुष्यादि गणों का गुण बोधक चक्र

कन्या	गुण	देव	मनुष्य	राक्षस
	देव	६	५	१
	मनुष्य	६	६	०
	राक्षस	०	०	६

गुण दोष परिहार—

(क) राशिपतियों में परस्पर मित्रता या राशिनवांशपति में भिन्नता हो, तो गणदोष नहीं रहता।

ग्रहमैत्री च राशिश्च विद्यते नियतं यदि। न गणभाव जनितं दूषणंस्याद विरोधदम्॥

गर्ग—मु. चिन्तामणि च

(ख) ग्रहमैत्री तथा वर-कन्या के नक्षत्रों की नाड़ियों में भिन्नता हो, तो गणदोष होने पर भी दोष नहीं होता। —पीयूषधारा

(ग) इसी भान्ति तारा, वश्य, योनि ग्रहमैत्री तथा भकूट की शुद्धि होने पर कोई दोषपत्ति नहीं होती। —मुहूर्त्त मार्त्तण्ड

(७) भकूट विचार—इसे **राशिकूट** भी कहते हैं। वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर छठे एवं आठवें हो, तो **षडाष्टक दोष** होता है। यदि वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर पांचवीं-नौवीं हो, तो **नव पंचम दोष**, यदि दोनों की राशियाँ परस्पर दूसरी और बारहवीं हो, तो **द्विद्वादश दोष** कहलाता है। **षडाष्टक दोष** (विशेषकर शत्रु-षडाष्टक) होने की स्थिति में वर-कन्या, इनके माता-पिता अथवा उनके किसी निकटस्थ बन्धु को मृत्यु-तुल्य कष्ट होने की सम्भावना होती है। **नवपंचम दोष** की स्थिति में विवाहित दम्पत्ति को संतान सम्बन्धी दुःख होने का भय होता है तथा **द्विद्वादश दोष** (शत्रुकूट) होने पर वर कन्या को धन हानि एवं आर्थिक परेशानियों का सामना रहता है।

षडाष्टक परिहार—(i) मेष-वृश्चिक, वृष-तुला, मिथुन-मकर, कर्क-धनु, सिंह-मीन तथा कन्या-कुम्भ आदि मित्र राशियों का षडाष्टक शुभ होता है, जबकि वैर-षडाष्टक ही विशेषतया त्याज्य होता है। यथा—१-६, २-९, ३-८, ४-११, ५-१०, ७-१२ राशियों का शत्रुगत षडाष्टक होने से त्याज्य माना जाता है।

(ii) परन्तु परिहारस्वरूप **तारा-शुद्धि, राशीश-मैत्री, राशिवश्यैक्य,** अथवा राशि स्वामी ग्रह **समान** होने पर षडाष्टक दोष भी ग्राह्य होता है। यथा—

न वर्गवर्णौ न गणोः न योनिर्द्विद्वादशे चैव षडाष्टके वा।
तारा विरुद्धे नव पंचमे वा मैत्री यदा स्यात्शुभदो विवाहः॥ —बृ. ज्योतिस्सार

नव पंचम परिहार—

(i) वर की राशि से कन्या की राशि पांचवीं हो और कन्या की राशि से वर की राशि ९वीं हो, तो यह नव-पंचम शुभ होता है—

वरस्य पंचमे कन्या, कन्यायां नवमेवरः। एतत् त्रिकोणकं ग्राह्यां पुत्रपौत्र सुखावहम्॥
—बृहज्योतिषः सारः

(ii) मीन-कर्क, वृश्चिक-कर्क, मिथुन-कुम्भ और कन्या-मकर—ये चार नवपंचक विशेषतया त्याज्य माने जाते हैं।

मीनालिभ्यां युते कीटे कुम्भे मिथुन संगते। मकरे कन्यकायुक्ते न कुर्यान्नवजचमे॥ —शार्गंधर

(iii) वर-कन्या दोनों के चन्द्र राशि अधिपति अथवा राशि नवांशपति परस्पर मित्रक्षेत्री हों, तो नवपंचम अविचारणीय है।

द्वि-द्वादश दोष का परिहार—

(i) लड़के की राशि से कन्या की राशि दूसरी हो तो कन्या धन हानिकारक और १२वीं हो तो वह धनवती और पति प्रिया होती है।

(ii) १-२, ३-४, ५-६, ७-८, ९-१० एवं ११-१२ राशियों का द्वि-द्वादश शत्रु-द्विद्वादश एवं च अनिष्टकर मानते हैं।

(iii) मतान्तर में **सिंह और कन्या** द्वि-द्वादश ग्राह्य है। —मुहूर्त्तमार्त्तण्ड

इसके अतिरिक्त कुछ परिस्थितियों में वर-कन्या की परस्पर राशि-स्थिति विशेष शुभकारी होती है। जैसे—वर-कन्या, दोनों की एक ही राशि १०वें का होना, दोनों की राशियों का परस्पर ३-११वें (त्रिरेकादश) होना, दोनों की राशियों का आपस में ४-१०वें होना एवं च दोनों की राशियों का परस्पर सप्तम **(समसप्तक)** होना वर-कन्या के वैवाहिक जीवन के लिए शुभफल प्रद होता है। परन्तु **अपवाद** रूप में, कर्क-मकर का तथा सिंह-कुम्भ राशियों का समसप्तक योग वर-कन्या के विवाह में शुभ नहीं माना गया—

मकरे कर्कटे चैव कुम्भे सिंहे तथैव च।
परस्परं सप्तमे च वैधव्यं तु विनिर्दिशेत्॥ —ज्योतिनिबन्ध

(८) नाड़ी दोष विचार—अष्टकूट निर्धारक तत्त्वों में नाड़ी का विशेष महत्त्व है। वर-कन्या की एक ही नाड़ी होना विवाह में अशुभ माना गया है।

अश्वन्यादि २७ जन्म नक्षत्रों को तीन नाड़ियों (पंक्तियों) में विभाजित किया गया है—आदि, मध्य और अन्त्य। इनका विवरण निम्न चक्र में दिया गया है।

नाड़ी चक्र

आदि नाड़ी	अश्वि	आर्द्रा	पुन	उफा	हस्त	ज्ये.	मूले	शत	पूभा
मध्य नाड़ी	भर	मृग	पुष्य	पूफा	चित्रा	अनु.	पूषा	धनि	उभा
अन्त्य नाड़ी	कृति	रोह	श्ले.	मघा	स्वा	विशा	उषा	श्रव	रेव

वर-कन्या का जन्म नक्षत्र एक ही नाड़ी में पड़ना विवाह में अशुभ माना जाता है। दोनों की **आदि (प्रथम)** नाड़ी हो, तो विवाह के पश्चात् उनका परस्पर वियोग आदि, **मध्य नाड़ी** हो, तो दोनों की हानि तथा अन्त्य नाड़ी हो तो वैधव्य या अतिशय दुःख होता है। —बृहज्योतिषसार

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

नाड़ी गण विभाग—भिन्न नाड़ी में आठ गुण तथा समान नाड़ी (नाड्यैक्य) होने की स्थिति

...में मंगलीक योग एवं परिहार पृष्ठ 158 का शेष भाग

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नाड़ी गुण विभाग—भिन्न नाड़ी में आठ गुण तथा समान नाड़ी (नाड्यैक्य) होने की स्थिति में शून्य गुण-अर्थात् गुणाभाव होता है।

नाड़ी दोषापवाद एवं परिहार—

(i) नाड़ी दोष ब्राह्मणों के लिए, वर्णदोष क्षत्रियों के लिए, गण दोष वैश्यों के लिए तथा योनि दोष शूद्रों के लिए विशेष रूप से विचारणीय होता है—

नाड़ी दोषस्तु विप्राणां वर्णदोषश्च क्षत्रिये। गणदोषश्च वैश्येषु योनि दोषस्तु पाद्जान्॥

ध्यान रहे, ब्राह्मणेतर वर्ण जातियों के लिए नाड़ी दोष नितान्तः उपेक्षनीय नहीं होता॥

(ii) यदि वर-कन्या दोनों की एक राशि हो, परन्तु नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों अथवा यदि दोनों का नक्षत्र एक हो और राशि अलग-अलग हो, एवं च नक्षत्र चरण भिन्न (पाद भेद) हो, तो ऐसी स्थिति में नाड़ी एवं गण दोष नहीं होता—अर्थात् शुभ होता है।

राश्यैक्ये चेद् भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव।
नाड़ी दोषो नो गणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभंस्यात्॥ —मुहूर्त संग्रह दर्पण

यद्यपि वर-कन्या का एक ही नक्षत्र अथवा एक ही राशि का होने से नाड़ी दोष का परिहार माना गया है, परन्तु यदि दोनों के नक्षत्र चरणों में समानता हो अथवा नक्षत्रों में पाद वेध* हो, तो विवाह सर्वदा त्याज्य एवं वर्जित होगा। यथा—

एक नक्षत्र जातानां नाड़ी दोषो न विद्यते। अन्यर्क्षनाड़ीवेधेषु विवाहो वर्जितः सदा॥
—ज्योतिष तत्त्व प्रकाश

***नोट**—ध्यान रहे, किसी नक्षत्र के प्रथम पाद और चतुर्थ पाद तथा **दूसरे** एवं **तीसरे पाद** में परस्पर वेध होना भी पाद-वेध कहलाता है।

(iii) 'ज्योतिष चिन्तामणि' अनुसार रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, ज्येष्ठा, कृत्तिका, पुष्य, श्रवण, रेवती एवं उत्तराभाद्रपद—इन नक्षत्रों में उत्पन्न वर-कन्या को नाड़ी दोष नहीं लगता।

रोहिण्यार्द्रा मृगेन्द्राग्नी पुष्यश्रवणपौष्णभम्।
अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाड़ी दोषो न विद्यते॥ —ज्यो० चिन्तामणि

उपयुक्त उपायों से परिहार—

हमारे मतानुसार गण, योनि, षडाष्टक, द्विद्वादश, नाड़ी आदि अष्टकूटों में परिहार वाक्य उपलब्ध हो जाने पर भी अपनी शक्ति एवं सामर्थ्यानुसार यथोचित संख्या में जप, पाठ, दानादि करवा लेना चाहिए।

'बृहस्पति संहिता' के अनुसार नाड़ी दोष की शान्ति के लिए **श्री मृत्युञ्जय मन्त्र** का जाप (यथोचित संख्या में) करके ब्राह्मणों को गौ, वस्त्र, अनाज, घृतादि सहित भोजन एवं सुवर्ण, चांदी, रत्नों की दक्षिण आदि से सन्तुष्ट करने से नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है—

अन्यत्र भी लिखा है—श्री महामृत्युञ्जय के जप-पाठ के उपरान्त—

षडाष्टके गोमिथुनं प्रदेयं, कार्यं सरूप्यं नवपंचमेच।
नाड्यां सुवर्णान्नमथो सुधेनुं द्विद्वादशे ब्राह्मणतर्पणं च॥

अर्थात् दुष्ट षडाष्टक दोष होने पर गोमिथुन (एक गाय, एक बैल), **नवपंचम** में चांदी-कांसे का बर्तन, **नाड़ी दोष** में गाय, अन्न, सुवर्ण-वस्त्र का दान तथा **द्विद्वादश** में ब्राह्मणों एवं सुपात्र जनों को यथाशक्ति भोजन, दान-दक्षिणादि द्वारा सन्तुष्ट करने से मिलान सम्बन्धी **अष्टकूट दोषों** की शान्ति हो जाती है।

मेलापक में मंगलीक योग एवं परिहार

पृष्ठ 158 का शेष भाग

मंगल अथवा मंगलीक दोष का निर्णय कुण्डली विशेष में सभी ग्रहों के पारस्परिक अनुशीलन के पश्चात् ही करना चाहिए। सभी लग्न कुण्डलियों में मंगलीक दोष का प्रभाव एक जैसा नहीं होता। इसमें कोई सन्देह नहीं कि कुछ लग्न कुण्डलियों में मंगल अथवा मंगलीक दोष का अशुभ एवं अनिष्ट प्रभाव वर-कन्या के वैवाहिक जीवन पर पड़ता है, परन्तु यदि किसी कुण्डली में मंगल अन्य ग्रहों के सहचर्य से योगकारक हो, उच्चस्थ या स्वराशिगत हो अथवा गुरु आदि शुभ ग्रह की दृष्टि से प्रभावित हो, तो मंगल अशुभ की अपेक्षा **शुभ प्रभाव कारक** होगा। जैसे—मकर, मेष, वृश्चिक, सिंह, धनु और मीन राशि के मंगल को शुभ माना जाता है तथा **कर्क** एवं **सिंह लग्नों** में मंगल **केन्द्र त्रिकोणपति** होने से मंगल अशुभ न होकर योगकारक माना जाएगा—

''सर्वे त्रिकोणनेतारो ग्रहा शुभफलप्रदाः।
इसी भान्ति स्वोच्चस्थितः शुभफलं प्रकरोति पूर्णम्।
नीचर्क्षगस्तु विपलं रिपु मन्दिरेऽल्पम्॥ (सारावली)
भाव सर्वे शुभपतियुता वीक्षितः वा शुभेशै—
तत्तद्भावाः सकल फलदाः पापदृक्योगहीनाः॥''

अतएव वर-कन्या की कुण्डलियों का मिलान करते समय उनके सुखी एवं सम्पन्न दाम्पत्य जीवन के लिए केवल मंगल या मंगलीक पर ही अत्यधिक बल न देते हुए मेलापक सम्बन्धी **अन्य तत्त्वों** का भी सर्वाङ्ग रूप से विवेचन करना चाहिए। जिनमें कुछ मुख्य तत्त्व निम्नलिखित हैं—

(१) चलित भाव कुण्डली—जो ग्रह भाव मध्य होते हैं, वह भाव सम्बन्धी पूर्ण फल प्रकट करते हैं, जो ग्रह भाव सन्धि में होते हैं, वह शून्य फल दिखाते हैं। तदनुसार वर-कन्या की कुण्डलियों का मिलान करते समय दोनों की कुण्डलियों के ग्रह स्पष्ट, भाव स्पष्ट एवं चलित भाव कुण्डली बनी होनी चाहिए, तभी मंगल अथवा मंगलीक दोष की वास्तविक स्थिति का पता चल पाएगा। यदि दोनों की कुण्डलियों में **मंगल** सन्धिगत होगा, तो मंगलीक दोष भंग माना जाएगा।

(२) सप्तम भाव में सप्तमेश या शुभ एवं योगकारक ग्रहों की स्थिति अथवा मंगल या सप्तम भाव पर गुरु, शुक्र की दृष्टि अथवा सप्तमेश ग्रह की स्वगृही दृष्टि होने से मंगलीक दोष क्षीण होगा।

(३) सप्तमेश ग्रह उच्चस्थ या स्व-मित्रादि राशिगत होकर केन्द्र त्रिकोणादि भावों में स्थित हो तो विवाह में मंगल का दोष निष्प्रभावी होगा।

(४) इसके विपरीत, सप्तमेश त्रिक में हो, पापग्रह युक्त व पाप दृष्ट, नीच राशिगत अथवा अस्तंगत हो तो विवाह का पूर्ण सुख नहीं होता—

दुःस्थे कामपतौ तु पाप ग्रहैः पापेक्षिते-तद्युते। तज्जाया भवनस्य मध्यमफलं सर्वं शुभं चान्यथा॥

(५) इसके अतिरिक्त लग्नेश, कुटुम्बेश (द्वितीयेश), पंचमेश, अष्टमेश, सप्तमेश एवं चन्द्र, शुक्र, गुरु, मंगलादि ग्रहों के बलाबल का विचार करना भी नितान्त आवश्यक है।

(६) अष्टकूट नक्षत्र राशि मिलान पर यदि वर-कन्या में परस्पर राशिमैत्री उपलब्ध हो गुणाधिक्य (२७ या अधिक) गुण मिलते हों तो भी मंगलीक दोष अविचारणीय होगा।

इस प्रकार वर-कन्या की कुण्डली में मंगल के अतिरिक्त कुण्डलियों में अन्य सभी ग्रहों के शुभाशुभत्व का सम्यक् विचार करते हुए विद्वान् ज्योतिषी को मेलापक सम्बन्धी अपना अन्तिम निर्णय देना चाहिए।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

शुद्ध वर-कन्या मेलापक सारिणी (भाग-१)

वर/नक्षत्र →		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
कन्या नक्षत्र ↓		अश्वि 1 से 4	भर. 1 से 4	कृति 1	कृति 2,3,4	रोह 1 से 4	मृग 1,2	मृग 3,4	आर्द्रा 1 से 4	पुर्न 1,2,3	पुर्न 4	पुष्य 1 से 4	श्ले 1 से 4	मघा 1 से 4	पूफा 1 से 4	उफा 1	उफा 2,3,4	हस्त 1 से 4	चित्रा 1,2
मेष	अश्वि 1 से 4	२८ 8	३३ 4	२८ 3,6	१८ ॥ 1236	२१ ॥ 1,2,3	२२ ॥ 1,2,3	२६ 1,3,5	१७ 1,5,8	१९ 1358	२३ ॥ 3,8	३१ ॥ 3	२८ 6	२१ 6,9,व	२५ 9,व	१५ 389व	११ 3578	९ 14578	१३ ॥ 14567
	भर 1 से 4	३४ 4	२८ 8	२९ 6	१९ 1,2,6	२३ 1,2,3	१४ ॥ 1238	१८ 1358	२६ ॥ 1,3,5	२७ 1,3,5	३१ ॥ 3	२३ ॥ 3,8	२५ 3,6	२० 6,9,व	१८ ॥ 8,9व	२६ 9,व	२१ ॥ 1,5,7	२० 1357	५ 13578
	कृति 1 चरण	२७ ॥ 3,6	२९ 6	२८ 8	१८ 1,2,8	१० 1268	१६ ॥ 1236	२० 1356	२० ॥ 1356	२१ 1356	२५ ॥ 3,6	२६ ॥ 3,6	२३ ॥ 3,8	१७ 389व	२० 6,9व	२० 6,9व	१५ ॥ 1567	१६ 1567	१८ 1357
वृष	कृति 2,3,4	१९ 2,3,6	२० 2,6	१९ 2,8	२८ 8	२० 6,8	२६ ॥ 3,6	१७ ॥ 2,3,6	१७ ॥ 2,3,6	१८ ॥ 2,3,6	२२ 3,5,6	२३ 3,5,6	२० 3,5,8	१९ 358व	२२ 5,6व	२२ 5,6व	२१ 6,9	२१ 6,9	२३ ॥ 3,9
	रोह 1 से 4	२४ 2,3	२३ ॥ 2,3	११ 2,6,8	२० 6,8	२८ 8	३६	२७ 1,2	२४ 1,2,3	२३ 1234	२६ 3,4,5	२७ 3,5	१२ ॥ 3468	१० ॥ 3568	२४ ॥ 3,5व	२७ 5,व	२६ 4,9	२६ 4,9	२० 4,6,9
	मृग 1-2	२३ ॥ 2,3	१५ 2,3,8	१९ 2,3,6	२७ ॥ 3,6	३५ -	२८ 8	१९ ॥ 1,2,8	२४ ॥ 1,2,4	२३ 1234	२६ 3,4,5	१९ 3,5,8	२१ 3,5,6	१९ ॥ 456व	१५ 3458	२४ ॥ 3,5व	२४ 3,9	२६ 4,9	१३ 6,8,9
मिथुन	मृग 3-4	२७ 3,5	१८ 3,5,8	२२ 3,5,6	२० 2,3,6	२७ ॥ 2,व	२० 2,8,व	२८ 8	३३ 4	३१ ॥ 3,4	१९ ॥ 2,4,5	१२ 2358	१४ ॥ 2356	२४ 3,4,6	२० 348व	२८ ॥ 3,व	३१ ॥ 3	३४ 4	२१ 4,6,8
	आर्द्रा 1 से 4	१९ ॥ 3,5,8	२७ ॥ 3,5	२१ ॥ 3,5,6	१९ 2,3,6	२५ 2,3,4	२६ 2,4	३४ -	२८ 8	२५ 4,8	१३ 24568	२० ॥ 235व	१३ 2356	२४ 3,6,व	२९ ॥ 3,4व	२१ ॥ 3,4,8	२४ ॥ 3,4,8	२५ 3,4,8	२७ ॥ 4,6
	पुन. 1,2,3	२० 3,5,8	२७ 3,5	२३ ॥ 3,5,6	२० ॥ 2,3,6	२३ 2,3,4	२४ 2,3,4	३१ ॥ 3,4	२४ 4,8	२८ 8	१६ 258व	२३ 2,5,व	१७ 235व	२३ 346व	२७ 3,4व	२२ 3,8व	२५ 3,8	२६ 3,8	२७ ॥ 3,6
कर्क	पुन. 4	२३ 1,3,8	२९ ॥ 1,3	२५ ॥ 1,3,6	२२ 1356	२४ 1345	२५ 1345	१८ 1245	१० 12568	१५ 1258	२८ 8	३५ -	२९ ॥ 3,6	१६ ॥ 1246	२० ॥ 1234	१५ ॥ 1238	१८ 1358	१९ ॥ 1358	२१ 1356
	पुष्य 1 से 4	३० ॥ 1,3	२१ ॥ 1,3,8	२७ 1,3,6	२३ 1356	२५ 1,3,5	१८ 1358	११ ॥ 12358	१८ ॥ 1235	२२ 125व	३५ -	२८ 8	३० 6	२० 1236	१५ ॥ 1238	२३ ॥ 1,2,3	२६ 1,3,5	२७ 1,3,5	१२ ॥ 14568
	श्ले. 1 से 4	२६ 1,6	२५ 1,3,6	२३ 1,3,8	१९ 1358	११ ॥ 14568	१९ 1456	१३ 12456	१२ 12456	१५ ॥ 1256	२८ 3,6	२९ 6	२८ 8	१५ 1248	१५ ॥ 1246	१८ ॥ 1236	२१ ॥ 1356	२१ 1356	२६ 1,3,5
सिंह	मघा 1 से 4	२० 6,9,व	२० 6,9,व	१६ ॥ 8,9,व	१७ ॥ 158व	९ ॥ 1568व	१७ ॥ 156व	२१ ॥ 146व	२२ ॥ 136व	२१ 1346व	१६ ॥ 2,4,6	२० 2,3,6	१६ ॥ 2,4,8	२८ 8	३० 6	२७ 3,6	१६ 1236	१६ ॥ 1236	२१ ॥ 123व
	पूफा 1 से 4	२६ 9,व	१८ ॥ 8,9,व	२० 6,9,व	२१ 156व	२३ ॥ 145व	१५ ॥ 1458	२० 148व	२८ ॥ 1,3,व	२६ 1,4,व	२२ ॥ 2,3,4	१७ ॥ 2,3,8	१६ ॥ 2346	३० 6	२८ 8	३५ 0	२४ 1,2व	२३ 123व	७ ॥ 1268
	उफा 1	१७ 8,9,व	२६ 9,व	२१ 6,9,व	२१ 156व	२६ 1,5,व	२५ 135व	२८ ॥ 1,3व	२१ 1,3,8	२१ ॥ 1,3,8	१७ ॥ 2,3,8	२५ ॥ 2,3	२० 2,3,6	२७ ॥ 3,6	३५ -	२८ 8	१७ 128व	१६ ॥ 128व	१३ ॥ 1236
कन्या	उफा 2,3,4	१३ 3578	२२ ॥ 5,7	१६ 5,6,7	२१ 6,9	२६ 4,9	२४ ॥ 3,9	३१ ॥ 1,3	२३ ॥ 1,3,8	२४ ॥ 1,3,8	२० 3,5,8	२८ 3,5	२२ ॥ 3,5,6	१८ 2,6,व	२५ 2,व	१८ 2,8व	२८ 8	२७ ॥ 8	२५ 3,4,6
	हस्त 1 से 4	१० 34578	२० 3,5,7	१७ ॥ 5,6,7	२२ 6,9	२५ 9	२६ 9	३३ 1,4	२२ ॥ 1,3,8	२४ 1,3,8	२० 3,5,8	२८ 3,5	२३ 3,5,6	१८ ॥ 236व	२२ ॥ 2,3व	१६ 2,8व	२६ 8	२८ 8	२८ 4,6
	चित्रा 1,2	१३ 3567	४ ॥ 45678	१९ 3,5,7	२४ 3,4,9	२० 6,9	१२ ॥ 6,8,9	१९ 1,6,8	२६ 1,4,6	२५ ॥ 1,3,6	२१ ॥ 3,5,6	१२ ॥ 3568	२७ 3,5,व	२२ ॥ 2,3,व	८ ॥ 2368	१४ ॥ 2346	२४ ॥ 3,4,6	२७ ॥ 4,6	२८ 8

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1, 2, 3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

वर-कन्या मेलापक सारिणी — (भाग-२)

वर/नक्षत्र →		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
कन्या नक्षत्र ↓		अश्वि 1 से 4	भर. 1 से 4	कृति 1	कृति 2,3,4	रोह 1 से 4	मृग 1,2	मृग 3,4	आर्द्रा 1 से 4	पुर्न 1,2,3	पुर्न 4	पुष्य 1 से 4	श्ले 1 से 4	मघा 1 से 4	पूफा 1 से 4	उफा 1	उफा 2,3,4	हस्त 1 से 4	चित्रा 1,2
तुला	चित्रा 3,4	२२ ॥ 3,4,6	१४ 3468	२८ ॥ 3,4	२४ 3,7	२० ॥ 4,6,7	१२ 6,7,8	१३ 6,8,9	२१ 4,6,9	१९ ॥ 3,6,9	२० ॥ 3,5,6	११ 3568	२६ ॥ 3,5,व	२५ ॥ 3,5,व	११ ॥ 3568	१७ ॥ 456व	१७ ॥ 2346	२० 2,4,6	२१ 2,8
	स्वा. 1 से 4	२७ ॥ 3,4	२९ ॥ 3	१७ ॥ 3,6,8	१३ 3678	१५ ॥ 3,7,8	२६ 4,7	२७ 9	२६ ॥ 4,9	२८ 9	२९ 5,व	२७ 3,5	१४ 3568	१३ 3568	२५ ॥ 3,5व	२५ ॥ 3,5व	२६ 2,3	२७ ॥ 2,3	२१ 2,4,6
	विशा 1,2,3	२२ ॥ 3,4,6	२३ 3,4,6	२० ॥ 3,4,8	१५ ॥ 3478	१० ॥ 3678	१८ ॥ 3,6,7	२० 3,6,9	२० 4,6,9	२१ 4,6,9	२२ 56,व	२१ ॥ 4,5,6	१८ ॥ 3,5,8	१७ ॥ 358,व	१९ ॥ 358व	१७ ॥ 2346	१७ ॥ 2346	१९ 2346	२७ ॥ 2,3
वृश्चिक	विशा 4	१७ 1467	१७ 1467	१४ ॥ 1478	१९ ॥ 1,4,8	१४ ॥ 1368	२२ ॥ 1,3,6	१२ ॥ 1567	१३ 1567	१३ ॥ 1567	१९ ॥ 4,6,9	१८ ॥ 4,6,9	१५ ॥ 3,8,9	२२ 1,3,8	२३ ॥ 136व	२१ ॥ 146व	१७ ॥ 1456	१८ 1456	२७ 135व
	अनु. 1 से 4	२५ 1,3,7	१५ ॥ 1378	२० 1367	२४ ॥ 1,3,6	२७ ॥ 1,3,4	२० ॥ 1,3,8	१० 13578	१५ 13457	२० ॥ 1,5,7	२६ ॥ 9	१८ ॥ 8,9	२१ 6,9	२५ 1,3,6	२१ 13[illegible]	२९ ॥ [illegible],3व	२५ 135व	२६ 135व	११ ॥ 1358
	ज्ये. 1 से 4	१२ 1678	१८ ॥ 1367	२५ 1,3,7	२९ ॥ 1,3	२२ ॥ 1,3,6	२२ ॥ 1,3,6	१३ 13567	३ 134578	५ ॥ 135678	१० ॥ 3689	२० 6,9	२६ 9	३१ 1,4,व	२४ 136व	१७ 1368	१३ 13568	१३ 1568व	२४ ॥ 1345
धनु	मूला 1 से 4	१२ 4689	२१ 6,9	२५ 3,9	१९ ॥ 1,5,7	१३ 1567	१३ ॥ 1567	२१ 1356	१५ 1568	१२ 14568	७ ॥ 4678	१७ ॥ 3,6,7	२४ 4,7	२५ 9,व	२० 6,9व	९ ॥ 689व	१३ 1568	१३ 1568	२६ 1,4,5
	पूषा 1 से 4	२६ 9	१८ ॥ 8,9	१८ ॥ 4,6,9	१२ ॥ 14567	१८ ॥ 1457	११ 14578	१८ ॥ 1458	२७ 1,3,5	२७ 1,3,5	२३ ॥ 37,व	१३ 3478	१७ ॥ 3,6,7	१९ 6,9,व	१७ ॥ 8,9व	२५ 9,व	२८ ॥ 1,5	२७ 1,3,5	१३ ॥ 13568
	उषा 1	२५ 3,9	२६ 4,9	१२ 4689	६ 15678	१० 14578	१७ 1457	२५ 1,4,5	२७ 1,3,5	२७ ॥ 1,3,5	२३ ॥ 37,व	२३ ॥ 3,7,व	८ ॥ 678व	८ ॥ 4689	२४ 4,9व	२५ 9,व	२८ ॥ 1,5	२८ ॥ 1,5	२१ 1,5,6
मकर	उषा 2,3,4	२७ 3,4,5	२८ ॥ 4,5	१४ ॥ 4568	१२ 4689	१६ 4,8,9	२३ 3,4,9	२१ 1347	२२ 1,3,7	२२ ॥ 1,3,7	२८ 3,5	२८ 3,5	१४ 3568	४ ॥ 45678	२० 4,5,7	२१ 4,5,7	२४ ॥ 9,व	२५ 9,व	१७ ॥ 4,6,9
	श्रव 1234	२७ 3,4,5	२६ ॥ 3,4,5	१४ 4568	१२ 4689	१६ 4,8,9	२६ 4,9	२३ 147व	२१ 1,3,7	२२ 1,4,7	२८ 4,5	२६ 4,5	१५ 4568	६ ॥ 5678	१८ ॥ 4,5,7	२० 4,57	२४ 4,9व	२४ ॥ 4,9व	१९ ॥ 4,6,9
	धनि 1,2	२० 3456	११ ॥ 34568	२६ 3,4,5	२४ 3,4,9	२० ॥ 4,6,9	१२ 4689	९ 1678	१६ 1467	१६ 1467	२२ 4,5,6	१३ 4568	२८ 4,5	१९ ॥ 4,5,7	५ ॥ 5678	१२ ॥ 4567	१६ 469व	१८ 469व	१५ 489व
कुम्भ	धनि 3,4	२० 4,5,6	१० ॥ 4568	२६ 3,4,5	३० ॥ 3,4	२७ 4,6	१९ ॥ 4,6,8	१२ 4689	१९ 4,6,9	१८ ॥ 3469	१३ 4567	४ ॥ 45678	१९ ॥ 357व	२५ ॥ 3,5,व	११ 568व	१८ ॥ 456व	१८ 4,6,7	१९ 4,6,7	१७ 4,7,8
	शत 1 से 4	१५ 3568	२१ 3,5,6	२८ 3,5	३२ ॥ 3	२५ ॥ 3,4,6	२७ 4,6	२० 4,6,9	१२ 4698	१३ 6,9,8	८ 5678व	१४ 567व	२१ 5,7,व	२६ ॥ 3,5,व	२० ॥ 356व	१२ ॥ 568व	११ ॥ 3678	९ 4678	२५ 4,7
	पूभा 1,2,3	१८ 4,5,8	२५ 3,4,5	२० 4,5,6	२५ 3,4,6	३१ ॥ 3,4	३१ ॥ 3,4	२५ 3,4,9	१७ ॥ 4,8,9	१८ ॥ 4,8,9	१३ ॥ 4578व	२० 457व	१३ 3567व	१९ ॥ 5,6,व	२५ ॥ 4,5व	१६ ॥ 458व	१५ ॥ 4,7,8	१५ ॥ 3478	१७ ॥ 3467
मीन	पूभा 4	१४ ॥ 1248	२२ 1234	१६ ॥ 1246	१९ 1456	२६ 1345	२६ 1345	२६ 145व	१८ ॥ 1458	१९ 1458	१८ 4,8,9	२५ 4,9	१९ 4,6,9	१८ 1467	२३ ॥ 1347	१४ ॥ 1478	१६ 1458व	१७ 1458	१८ ॥ 1456
	उभा 1 से 4	२५ 1,2,3	१७ 1238	१९ 1236	२१ 1356	२६ 1345	१८ 1358	१७ ॥ 1358	२५ 135व	२८ 1,5,व	२७ ॥ 9	१९ ॥ 8,9	२१ ॥ 6,9	१९ 1367	१७ 1378	२६ 1,3,7	२७ ॥ 135व	२७ 135व	१० 14568
	रेव 1 से 4	२५ 1,2,4	२४ ॥ 1,2,3	११ 1268	१४ 1568	१७ ॥ 1358	२६ 1,3,5	२५ 135व	२४ ॥ 135व	२६ 1,3,5	२६ 3,9	२७ ॥ 9	१४ 6,8,9	१३ 1687	२३ ॥ 1,3,7	२४ 1,3,7	२६ 135व	२७ 135व	१९ ॥ 1456

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1, 2, 3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

वर-कन्या मेलापक सारिणी — (भाग-३)

वर/नक्षत्र →		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
कन्या नक्षत्र ↓		चित्रा 3,4	स्वा. 1 से 4	विशा 1,2,3	विशा 4	अनु 1 से 4	ज्ये 1 से 4	मूला 1 से 4	पूषा 1 से 4	उषा 1 चरण	उषा 2,3,4	श्रव 1 से 4	धनि 1,2	धनि 3,4	शत 1 से 4	पूभा 1,2,3	पूभा 4	उभा 1 से 4	रेव 1 से 4
मेष	अश्वि 1 से 4	२२ ॥ 1346	२६ ॥ 1,3,4	२२ ॥ 1346	१८ ॥ 3467	२५ ॥ 3,7	१४ ॥ 6,7,8	१३ 6,8,9	२५ 4,9	२३ ॥ 1,3,9	२५ 1,3,5	२६ 1,3,5	२० 1456	२० ॥ 1456	१५ 1358	१६ 1358	१५ 2348	२५ 2,3	२६ 2,4
	भर 1 से 4	१३ ॥ 1368	२९ 1,3	२१ ॥ 1,3,6	१७ ॥ 3467	१७ ॥ 378	२० 3,6,7	२० 6,9	१८ ॥ 8,9	२६ 4,9	२७ ॥ 1,5	२६ 1,3,5	१० 14568	९ ॥ 14568	२० 1356	२४ 1345	२३ 2,3,4	१७ ॥ 2,3,8	२७ 2,3
	कृति 1 चरण	२७ ॥ 1,3,4	१५ 1368	१९ ॥ 1348	१५ ॥ 3478	१९ ॥ 3,6,7	२५ ॥ 3,7	२५ 3,9	१८ ॥ 4,6,9	१२ ॥ 6,8,9	१३ ॥ 1568	१२ 14568	२५ 1,3,5	२५ ॥ 1,3,5	२७ 1,3,5	१९ ॥ 1356	१७ ॥ 2346	१९ ॥ 2,3,6	१२ 2368
वृष	कृति 2,3,4	२३ 1347	११ 13678	१४ ॥ 1378	२० ॥ 3,4,8	२४ ॥ 3,6	३० ॥ 3	२० 3,5,7	१४ 4567	७ 5678	१२ 6,9,8	१० ॥ 4689	२४ 3,4,9	२९ ॥ 1,3,4	३१ ॥ 1,3	२३ ॥ 1346	२० 3456	२२ 3,5,6	१४ 3568
	रोह 1 से 4	१९ ॥ 1,6,7	१५ ॥ 1378	९ ॥ 1678	१५ 1368	२९ ॥ 3,4	२४ 3,6	१४ ॥ 3567	१९ ॥ 3,5,7	११ ॥ 4578	१६ 4,8,9	१७ ॥ 4,8,9	२० ॥ 4,6,9	२६ 1,4,6	२५ 1,3,6	३१ 1,3,4	२७ 3,4,5	२७ 3,4,5	११ 3,5,6
	मृग 1-2	१२ 1678	२५ ॥ 1,7	१९ 1367	२५ 3,6	२१ ॥ 3,5,8	२४ ॥ 3,6	१५ 3567	१० ॥ 3578	१७ ॥ 3457	२२ 3,4,9	२५ ॥ 4,9	१३ 4689	१९ ॥ 1468	२७ 1,4,6	२९ ॥ 1,3,4	२६ 3,5	१८ 3,5,8	२७ 3,5
मिथुन	मृग 3-4	१४ 6,8,9	२७ 4,9	२१ 3,6,9	१४ 3567	११ 3578	१४ 3567	२३ 3,5,6	१८ ॥ 3458	२५ 3,4,5	२० ॥ 347व	२४ 4,7,व	११ 678व	१३ 6,8,9	२१ ॥ 6,9	२४ 3,9	२५ ॥ 3,5,व	१७ ॥ 3,5,8	२६ ॥ 3,5,व
	आर्द्रा 1 से 4	२१ 4,6,9	२७ 9	२० ॥ 4,6,9	१३ 4567	१७ ॥ 3457	३ 34567 8	१६ 3568	२८ 3,5	२८ 3,5	२३ ॥ 3,7व	२३ ॥ 3,7,व	१८ 467व	१९ ॥ 4,6,7	१२ ॥ 4689	१७ ॥ 4,8,9	१९ 5,8,व	२६ ॥ 3,5व	२७ 3,5,व
	पुन. 1,2,3	२१ 3,6,9	२८ 9	२२ 6,9	१५ 5,7व	२२ 5,7व	७ 35678	१४ 34568	२७ 3,5	२७ 3,5	२२ ॥ 3,7व	२३ ॥ 3,7,व	१७ ॥ 3467	१९ 3469	१४ 6,8,9	१६ 4689	१८ ॥ 4,8,9	२८ 5,व	२७ ॥ 3,5,व
कर्क	पुन. 4	२१ 1356	२८ 1,5व	२२ 156व	२० 6,9	२६ 9	१२ 3689	८ ॥ 14678	२१ 147व	२१ ॥ 147व	२६ 1,3,5	२७ 1,3,5	२१ 1456	१२ 14567	८ ॥ 1567	१० ॥ 14578	१६ ॥ 4,8,9	२६ ॥ 9	२६ 3,9
	पुष्य 1 से 4	११ 14568	२६ ॥ 1,3,5	२१ ॥ 1456	१९ ॥ 4,6,9	१८ ॥ 8,9	२१ 6,9	१७ ॥ 1367	११ ॥ 1478	२१ ॥ 1347	२६ 1,3,5	२५ 1345	१३ 13568	४ ॥ 145678	१४ 13567	१८ ॥ 1457	२४ 4,9	१८ ॥ 8,9	२७ 9
	श्ले. 1 से 4	२५ ॥ 1,3,5	१२ 1568	१७ ॥ 1,5,8	१५ 3,8,9	२० ॥ 6,9	२६ 9	२३ 1,4,7	१६ 1367	७ ॥ 3678	१३ 4568	१३ 4568	२६ 1,4,5	१७ ॥ 1457	२० 1357	११ 14567	१८ 4,6,9	२१ 6,9	१३ 6,8,9
सिंह	मघा 1 से 4	२४ ॥ 1,3,5	११ ॥ 13568	१६ ॥ 1358व	२२ ॥ 3,8व	२६ 3,6व	३३ व	२५ 9,व	१९ ॥ 6,9व	८ ॥ 689व	३ ॥ 15678	४ ॥ 15678	१८ ॥ 1,5,7	२४ ॥ 1,5,व	२५ ॥ 1,5,व	१८ ॥ 156व	१९ 3,6,7	२० 3,6,7	१३ ॥ 6,7,8
	पूफा 1 से 4	१० ॥ 1568	२५ ॥ 135व	१८ ॥ 156व	२४ 3,6व	२३ ॥ 3,8व	२५ ॥ 3,6व	२० 6,9व	१७ ॥ 8,9,व	२४ 4,9व	१९ 1,5,7	१८ ॥ 1,5,7	४ ॥ 15678	११ 1568	१९ ॥ 156व	२४ ॥ 135व	२५ 3,7	१७ ॥ 3,7,8	२६ 3,7
	उफा 1	१७ 13456	२५ ॥ 1,3,5	१६ ॥ 13456	२२ ॥ 3,4,6	३१ ॥ 3,व	१७ ॥ 3,6,8	९ ॥ 3689	२५ 9,व	२५ ॥ 9,व	२० 1,5,7	२० 1,5,7	११ ॥ 1567	१७ ॥ 1356	११ 3568	१५ ॥ 358व	१६ 3478	२६ ॥ 3,7	२६ 3,7
कन्या	उफा 2,3,4	१६ ॥ 1246	२५ ॥ 1,2,3	१७ 1246	१८ 456व	२७ ॥ 3,5व	१३ ॥ 568व	१४ 3568	२९ ॥ 5	२९ ॥ 5	२४ ॥ 9,व	२५ 9,व	१७ 3,6,9	१६ ॥ 1367	१० ॥ 3678	१४ ॥ 1378	१७ ॥ 3,5,8	२८ 3,5व	२७ ॥ 3,5,व
	हस्त 1 से 4	२० 1246	२६ ॥ 1,2,3	१८ ॥ 1236	२० 3456	२६ 3,5व	१३ ॥ 3568	१५ 3568	२७ 3,5	२८ ॥ 5	२४ 9,व	२४ 9,व	१९ 4 6,9	१९ 1467	८ ॥ 34678	१३ ॥ 1378	१६ ॥ 3458	२६ ॥ 3,5व	२७ ॥ 3,5,व
	चित्रा 1,2	२० 1,2,8	१९ 1246	२६ ॥ 1,2,3	२८ ॥ 3,5व	११ 3568	२५ 345व	२७ 3,4,5	१४ 3568	२२ 3,5,6	१७ ॥ 3,6,9	१९ 6,9,व	१५ ॥ 4,8,9	१६ 1478	२४ 1,4,7	१६ ॥ 1467	१९ ॥ 3456	१० 34568	१९ ॥ 3456

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh, Delhi Collection

वर-कन्या मेलापक सारिणी — (भाग-४)

वर/नक्षत्र ▶		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
कन्या नक्षत्र ▼		चित्रा 3,4	स्वा. 1 से 4	विशा 1,2,3	विशा 4	अनु 1 से 4	ज्ये 1 से 4	मूला 1 से 4	पूषा 1 से 4	उषा 1 चरण	उषा 2,3,4	श्रव 1 से 4	धनि 1,2	धनि 3,4	शत 1 से 4	पूभा 1,2,3	पूभा 4	उभा 1 से 4	रेव 1 से 4
तुला	चित्रा 3,4	२८ 8	२७ 4,6	३४ 3	२३॥ 2,3व	६ 2348व	२१ 234व	२७॥ 3,4,5	१४ 3568	२२ 3,5,6	२५ 3,6,व	२७ 6,व	२३॥ 4,8,व	१८॥ 4,8,9	२६ 4,9	१९ 3469	१२ 4567	३ 345678	१२ 34567
	स्वा. 1 से 4	२८ 4,6	२८ 8	२० 4,6,8	१० 248व	२१॥ 2,3व	१६॥ 236व	२३ 3,5,6	२७ 3,5	१९ 3,5,8	२२ 3,8,व	२३ 3,8,व	२७ 4,6	२१ 4,6,9	२० 4,6,9	२५ 4,9	१९ 457,व	१९॥ 3,7,व	१२ 3578
	विशा 1,2,3	३४॥ 3	१९ 4,6,8	२८ 8	१७॥ 2,8व	१६ 246व	२१॥ 234व	२७॥ 3,4,5	२२ 3,5,6	१४ 3568	१७ 368व	१७॥ 368व	३०॥ 3,4,व	२५ 3,4,9	२६ 4,9	२० 4,6,9	१४ 4567	१३॥ 4567	४ 45678
वृश्चिक	विशा 4	२३ 123व	७ 12468व	१६॥ 128व	२८ 8	२७॥ 4,6	३१॥ 3,4	२२ 1234	१७॥ 1362व	९ 12368	१२॥ 1368	१२॥ 13568	२५ 1345	२४ 1345	२६ 145,व	२० 1456	१९॥ 4,6,9	१८॥ 4,6,9	९॥ 4689
	अनु. 1 से 4	६॥ 12568	२२ 123व	१६ 1246	२८ 4,6	२८ 8	३१ 6	१५ 12346	१३॥ 1238व	२२ 123व	२५ 1,3,5	२६ 1,3,5	१२ 13568	११ 1358	२१ 1356	२४॥ 145व	२४ 4,9	१८॥ 8,9	२७॥ 9
	ज्ये. 1 से 4	१९॥ 1234	१५ 126व	१९॥ 1234	३१॥ 3,4	३० 6	२८ 8	१४॥ 1248	१७॥ 1236	१७॥ 1236	२० 1356	२० 1356	२५ 1,3,5	२४ 1345व	१८ 1358	१० 13568	९॥ 3689	२१॥ 6,9	२१ 6,9
धनु	मूला 1 से 4	२६ 1,4,5	२१ 1356	२६ 1,4,5	२३ 124व	१५॥ 1246	१५ 1248	२८ 8	२८ 4,6	२६॥ 3,6	१५॥ 1236	१५॥ 1236	२०॥ 1234	२८॥ 1,3,4	२१॥ 1,3,8	१४॥ 1468	१६॥ 3468	२५ 6,व	२७ 6,व
	पूषा 1 से 4	१३ 1568	२७ 1,3,5	२१ 1356	१८ 246व	१५॥ 238व	१८ 246व	२८ 4,6	२८ 8	३४ -	२३ 124व	२३॥ 1,2,व	५॥ 1268	१४॥ 1468	२३॥ 1,4,6	२८॥ 1,4	३०॥ 4,व	२३॥ 8,व	३१ 3,व
	उषा 1	२१ 1,5,6	१९ 1,5,8	१३ 1568	९॥ 268व	२४ 2,3व	१८॥ 2,3,6	२६॥ 3,4,6	३४ -	२८ 8	१६॥ 128व	१५ 1248व	१५॥ 1236व	२३॥ 1,3,6	२३॥ 1,3,6	२९॥ 1,3,4	३१ 3,व	३१ 3,व	२३ 3,8,व
मकर	उषा 2,3,4	२४ 1,3,6	२२॥ 1,3,8	१५॥ 1368	१३ 4568	२७ 4,5	२१ 4,5,6	१६ 246व	२४ 2,4व	१७॥ 2,8व	२८ 8	२६ 4,8	२६॥ 4,6	१७॥ 126व	१७॥ 126व	२३॥ 1234	३०॥ 3,4	३१ 3,4	२२॥ 3,4,8
	श्रव 1234	२७ 146व	२२॥ 148व	१७॥ 1468	१४ 3568	२७ 3,4,5	२२ 3456	१७॥ 246व	२३॥ 2,3व	१५ 248व	२५ 4,8	२८ 8	२८ 4,6	१९ 1246	१८ 1246	२१॥ 124व	२८॥ 3,4	२९॥ 3,4	२२॥ 3,4,8
	धनि 1,2	२३ 148व	२४॥ 146व	२९ 1,4व	२६ 3,4,5	१२ 4568	२६ 3,4,5	२१ 234व	७॥ 2468व	१६ 2346	२७ 3,4,6	२७॥ 4,6	२८ 8	१८॥ 126व	२४ 124व	२० 126व	२६॥ 3,6	१५॥ 4,6,8	२२॥ 3,4,6
कुम्भ	धनि 3,4	१८॥ 4,8,9	२० 4,6,9	२५ 3,4,9	२५ 4,5व	११ 4568	२५ 4,5व	२९॥ 3,4	१५॥ 3468	२४॥ 3,6	१८ 236व	१९ 246व	२० 2,8,व	२८ 8	३३ 4	२८॥ 3,6	१८ 236व	७ 2468व	१४॥ 246व
	शत 1 से 4	२६ 4,9	१९॥ 4,6,9	२६ 4,9	२६॥ 4,5व	२१ 356व	१९ 358व	२२॥ 3,4,8	२४॥ 3,4,6	२४॥ 3,4,6	१८॥ 236व	१८॥ 236व	२५ 2,4,व	३३ 4	२८ 8	१९॥ 4,6,8	८॥ 2468व	१७॥ 236व	१६ 236व
	पूभा 1,2,3	१९ 3469	२६ 4,9	२० 4,6,9	२०॥ 456व	२६॥ 4,5व	११ 456व	१५ 3468	२९॥ 3,4	३०॥ 3,4	२४॥ 234व	२३॥ 234व	२०॥ 236व	२९ 3,6	१९ 4,6,8	२८ 8	१७॥ 2,8,व	२२॥ 2,4,व	२०॥ 234व
मीन	पूभा 4	१२ 14567	१९॥ 1457	१३॥ 14567	१९॥ 4,6,9	२५ 4,9	९ 4689	१५॥ 1468	२९ 134व	३० 1,3व	२९॥ 1,3,4	२८॥ 1,3,4	२५॥ 1,3,6	१७ 1236व	८ 12468	१७ 128व	२८ 8	३३ 4	३०॥ 3,4
	उभा 1 से 4	३ 145678	१९॥ 1357	१२॥ 14567	१८॥ 4,6,9	१९॥ 8,9	२१॥ 6,9	२४॥ 136व	२२॥ 1,8व	३० 134व	२९॥ 1,3,4	२९॥ 1,3,4	१४॥ 1468	५॥ 12468	१६॥ 1236व	२२ 124व	३३ 4	२८ 8	३५ -
	रेव 1 से 4	१३ 14567	११ 1578व	४॥ 145678	१०॥ 4689	२७॥ 9	२२॥ 6,9	२७ 146व	२९॥ 1,3व	२१॥ 138व	२१ 1348	२१॥ 1348	२३ 1346	१४॥ 1246व	१६॥ 1236व	१८॥ 124व	३० 3,4	३४ -	२८ 8

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1, 2, 3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

तिथि, नक्षत्रादि गण्डान्त नक्षत्रों का विचार

अश्विनी नक्षत्र—मेष राशि एवं केतु के इस नक्षत्र में उत्पन्न हुए बच्चे का जीवन प्रायः संघर्षशील होता है। इस नक्षत्र में **प्रथम चरण** में जन्म होने से पिता के लिए कष्टकारी, **दूसरे चरण** में फिजूलखर्ची, **तीसरे चरण** में भ्रमणशील तथा **चतुर्थ नक्षत्र** में कृश शरीर (अपने शरीर के लिए) कष्ट रहता है।

आश्लेषा नक्षत्र—कर्क राशि एवं बुध के नक्षत्र के जातक प्रायः चंचल एवं चतुर बुद्धि वाले तथा परिवर्तनशील प्रकृति के होते हैं। **प्रथम चरण** में जन्म हो तो विशेष दोष नहीं, **दूसरे चरण** में पैतृक धन की हानि, **तीसरे चरण** में माता-पिता के लिए गण्डान्त शूल तथा **चतुर्थ चरण** में पिता के लिए अनिष्टकारी है—

आश्लेषाद्ये न गण्डं स्यातंधनगण्डं द्वितीयके। तृतीये मातृगण्डं तु पितृगण्डं चतुर्थके॥

मघा नक्षत्र—सूर्य राशि और केतु के नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्टवादी, शीघ्र क्रुद्ध होने वाले, उद्यमी और धनवान होते हैं। **प्रथम चरण** में उत्पन्न हो तो माता-पिता को कष्ट या मातृ पक्ष की हानि, **दूसरे चरण** में पिता को परेशानी, **तीसरे चरण** में जन्म हो तो शुभ फलदायक, **चतुर्थ चरण** में जन्म हो तो विद्या, धनादि के लिए शुभ होता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र—मंगल की राशि (वृश्चिक) एवं बुध के नक्षत्र में उत्पन्न जातक सरल हृदय, तीक्ष्ण बुद्धि, धर्म परायण तथा उन्नति के कार्यों में अनेक बाधाओं से युक्त होते हैं। ज्येष्ठा नक्षत्र के **प्रथम पाद** (चरण) में उत्पन्न बच्चा ज्येष्ठ (बड़े) को अरिष्टकर, **दूसरे चरण** में पैदा हो तो छोटे भाई को नेष्ट, **तीसरे चरण** में पिता के लिए अरिष्टकर तथा यदि **चतुर्थ चरण** में उत्पन्न हो जातक स्वयं अपने एवं पिता के लिए अनिष्टकारी होता है।

ज्येष्टाद्यपादेऽवज्रमाशुं हन्याद् द्वितीयपादे यदि तत्कानिष्ठम्।
तृतीयपादे पितरं निहन्ति चतुर्थे मृतमेति जातः॥

ज्येष्ठा नक्षत्र और मंगलवार के योग में उत्पन्न कन्या बड़े भाई के लिए अरिष्टकारक होती है।

अभुक्त मूल नक्षत्र—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम २ घटियाँ तथा मूला नक्षत्र के आरम्भ की २ घटियाँ—कुल चार घड़ियाँ **अभुक्त मूल** गण्ड नक्षत्र कहलाते हैं। इनमें उत्पन्न कन्या, पुत्र, पशु और नौकर कुल के लिए अनिष्टकारी होते हैं। इनमें उत्पन्न बच्चे को बिना शान्ति कराये न देखें।

अभुक्त मूं गठिका चतुष्टयं ज्येष्ठान्त्यमूलादि भवं हि नारदः।
जातं शिशुं तत्र परित्यजेत् वा मुखं पिताऽस्याष्ट समा न पश्येत्॥

अभुक्त मूल—नक्षत्रों की आद्यान्त घटियों के बारे में विद्वानाचार्यों में मतान्तर पाया जाता है। यथा-नारद के अनुसार ज्येष्ठा, मूला नक्षत्र की चार घटियाँ, वशिष्ठ के अनुसार २ घड़ियाँ तथा बृहस्पति के मतानुसार केवल १-१ अभुक्त-मूल संज्ञक है। अभुक्तमूलोत्पन्न बालक यदि जीवित रहे, तो अपने वंश की वृद्धि करने वाला, धनवान् एवं सम्पत्तिवान होता है।

मूला नक्षत्र—केतु के नक्षत्र और गुरु की राशि (धनु) में उत्पन्न जातक धार्मिक रुचि वाला, उदार हृदय, मिलनसार, परोपकारी, धन-वाहनादि सुखों से युक्त होता है। चरण भेदानुसार मूला के **प्रथम चरण** में उत्पन्न जातक पिता की हानि करता है। **दूसरे चरण** में माता की हानि, **तीसरे चरण** में धन का नाश तथा **चौथा चरण** शुभ होता है। नक्षत्र की विधिपूर्वक शान्ति करवा लेने से अनिष्ट का भय नहीं रहता।

मूलाद्यपादे पितरं निहन्याद् द्वितीयके मातरमाशु हन्ति।
तृतीयजो वित्तविनाशकः स्यात् चतुर्थपादे समुपैति सौख्यम्॥

मूला नक्षत्र और रविवार दोनों के योग में उत्पन्न कन्या श्वसुर के लिए अनिष्टकारी होती है—

भौमवासरे योगेन ज्येष्ठाजा ज्येष्ठ सोदरम्॥ भानुवासरयोगेन मूलजा श्वसुरं हरेत्॥

मूला नक्षत्र फल का अन्य प्रकार

मूला नक्षत्र की सम्पूर्ण घटियों को १५ द्वारा भाग देकर १५ खण्ड बना लें। प्रत्येक खण्ड का फल इस प्रकार से होगा। **प्रथम भाग** हो तो पिता के लिए अनिष्टकर, **दूसरे में** चाचा की हानि, **तीसरे में** बहनोई की हानि, **चौथे में** पितामह (दादा) की हानि, **आठवें में** चाची के लिए अनिष्टकर, **नवमे में** सबके लिए अनिष्टकर, **दसवें अंश में** पशु का नाश, **ग्यारहवें में** नौकर का नाश होता है। **बारहवें अंश में** स्वयं जातक का नाश होता है। **तेरहवें अंश में** हो तो उसके ज्येष्ठ भाई का नाश, **चौदहवें अंश में** जातक की बहिन का अनिष्ट होता है। अगर **पन्द्रहवें में** हो तो नाना का नाश (अनिष्ट) होता है।

उदाहरणार्थ यदि मूल का सर्वर्क्ष योग ६४ घड़ी १८ पल है, तो इसमें १५ द्वारा भाग देने से लब्ध प्रथम भाग में ४ घड़ी, १७ पल हुए। मान लो कि जन्मकालीन भयात् २८।४५ है। ४।१७ घट्यादि को ९ से गुणा करने पर पता चला कि ३८।३३ पर नौवां खण्ड (भाग) समाप्त होकर ३८।४५ पर दसवां भाग पड़ता है। तदनुसार फल चौपाय आदि पशु के लिए अनिष्ट रहेगा।

रेवती नक्षत्र—बुध के नक्षत्र और गुरु की राशि (मीन) में उत्पन्न जातक सर्वप्रिय, विद्यावान, सुन्दर आकृति, तर्कशील एवं धनवान् होता है। रेवती के **प्रथम चरण** में जन्म हो तो राजा के समान वैभवशाली, **दूसरे में** मन्त्री के समान सुख साधनों से युक्त, **तीसरे में** जन्म होने से धनवान तथा **चतुर्थ में** जन्म होने से माता-पिता के लिए अरिष्टकारी होता है।

दिवाजातस्तु पितरं रात्रिजो जननी तथा। आत्मानं संध्यायोहन्ति नास्ति गण्डे विपर्ययः॥

गण्डमूल नक्षत्र शान्ति के लिए हमारे कार्यालय से नवीन प्रकाशित सम्पूर्ण 'गण्डमूल नक्षत्र-शान्ति प्रयोग' पुस्तक मंगवा लेवें। मूल्य-35 रुपए।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जप-पूजन तथा संध्योपासना में आवश्यक नियम

पवित्री अथवा अँगूठी धारण—स्नान, संध्योपासना, जप-पूजन, वेदाध्ययन एवं पितृ तर्पण आदि कर्मों में पवित्री दर्भ से बनी धारण करना आवश्यक माना गया है।

पवित्री कुशा से बनाई जाती है। दो कुशाओं से बनाई हुई पवित्री दाहिने हाथ की अनामिका के मूल भाग में तथा तीन कुशाओं से निर्मित पवित्री बाएं हाथ की अनामिका के मूल में, "ॐ भूर्भुवः स्वः" मन्त्र पढ़कर धारण करे। दोनों प्रकार की पवित्रियाँ देवकर्म, षष्ठी कर्म एवं पितृ कर्मों में भी प्रशस्त मानी गई हैं। शास्त्रानुसार सोने की अँगूठी (मुद्रिका) भी पवित्री के काम में लाई जा सकती है।

कुशोत्पाटन विधि—कुशोत्पाटन ऐसे स्थान से करना चाहिए जहाँ सामान्य लोगों का आना जाना न हो, तालाब या नदी का किनारा हो, पास में खड़ा हुआ गन्दा पानी न हो। धर्म स्थान या स्वच्छ उद्यान हो। कुश उखाड़ते समय उत्तर या पूर्व की ओर मुख रहे। पहले 'ॐ' कहकर कुशाओं का स्पर्श करें और फिर निम्नलिखित कुशाओं को स्पर्श करते हुए निम्नलिखित मन्त्र से प्रार्थना करें—

विरंचिना सहोत्पन्न परमेष्ठि निसर्जन। नुद सर्वाणि दर्भ। स्वस्ति करो भव॥

फिर ॐ हूं फट् कहते हुए कुशाओं को एकदम झटके से उखाड़ लें। पूजा हेतु प्रतिदिन नवीन कुश का प्रयोग करें। यदि संभव न हो तो अमावस्या को कुशोत्पाटन करें। अमावस्या को उखाड़ा गया कुश एक मास तक चल सकता है। जबकि भद्रमास की अमावस्या को उत्पादित कुश एक वर्ष तक चल सकता है।

विशेष—पिण्ड के नीचे एवं ऊपर संस्पर्श हुई, तर्पणादि में प्रयुक्त कुशा तथा अपवित्र स्थान में पड़ी हुई कुशाओं को जपानुष्ठान में ग्रहण नहीं करना चाहिए।

तिलक धारण करना—देवपूजा, जप, संध्या, होम-यज्ञ, ऋषि, उपनयन आदि कार्यों में तिलक, त्रिपुण्ड आदि का तिलक लगाना आवश्यक माना गया है। तिलक के बिना सत्कर्म नहीं हो पाते—

सत्यं शौचं जपं होमस्तीर्थं देवादिपूजनम्। तस्य व्यर्थमिदं सर्वं यस्त्रिपुण्ड्रं न धारयेत्॥

(भविष्यपुराण)

तिलक, त्रिपुण्ड के बिना पूजन, जप, संध्या, होम, देव आदि कार्य पूर्ण सफलीभूत नहीं माने जाते। तिलक बैठकर लगाना चाहिए।

अनामिका अंगुली से तिलक करने से शान्ति, मध्यमा से आयुवृद्धि, अंगुष्ठ से पुष्टि, तर्जनी से तिलक करने से मोक्ष की वृत्ति में वृद्धि होती है।

तिलक चंदन, केशर, गोपी चन्दन, हल्दी, रोला, श्रीखण्ड, चन्दन (लाल या सफेद), भस्म आदि का लगाना चाहिए। विधिपूर्वक जो भस्म का त्रिपुण्ड लगाता है, शास्त्रों में तिलक या भस्म लगाने का बड़ा महत्त्व है। इसके द्वारा ईश्वर के स्मरण में सहायता मिलती है।

तिलक लगाने का लक्ष्यार्थ—तिलक या भस्म लगाने का यही भाव है कि अपने मस्तिष्क में एवं हृदय में अपने इष्टदेव के स्वरूप का स्मरण एवं ध्यान करना है तथा अपने आपको भगवान् कृष्ण के या भगवान् शिव के अनुरूप बनाकर उनके सौम्य रूप की अर्चना करनी है, जैसे कहा भी है कि **देवो भूत्वा यजेद् देवम्।** अपने जिस इष्टदेव की मंत्र द्वारा उपासना करनी हो, तो अन्दर और बाह्य—दोनों प्रकार से उस देवता के स्वरूप में स्थित होना लाभप्रद होगा।

१२ राशियों का घाती चक्र

द्वादश राशि के प्रत्येक मनुष्य को घाती चक्र में दिए अनुसार प्रत्येक तिथि, वार नक्षत्र, लग्न, चंद्रमास घातक होते हैं। अतः मनुष्य को चाहिये कि वे अपना कोई भी इष्ट और शुभ कार्य घातक समय वा मुहूर्त्त पर आरंभ न करे। नीचे दिया हुआ घात चक्र युद्ध, विवाद (शास्त्रार्थ) राज सेवा, वाहन, यात्रा, रोगादि कार्यों में देखना चाहिए। अर्थात् इन राशि वालों के लिए इन कार्यों में घात चन्द्र, वारादि शुभ नहीं और तीर्थ यात्रा, विवाहादि में घात चन्द्रादि का विचार न करें। विशेष फलादेश जानने के लिये पत्र व्यवहार करें।

राशयः	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घातमास	कार्तिक	मार्ग	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि	१-६-११	५-१०-१५	२-७-१२	२-७-१२	३-८-१३	५-१०-१५	४-९-१४	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	३-८-१३	५-१०-१५
घात वार	रवि	शनि	चन्द्र	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
घात नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूला	श्रवण	शत.	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात योग	विष्कुम्भ	सुकर्मा	परिघ	धृति	प्रीति	सुकर्मा	अतिगंड	ब्रह्म	वैधृति	गंड	व्याघात	वज्र
घात करण	बव	शकुनि	कौलव	नाग	बालव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	चतुष्पाद
घात लग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घात प्रहर	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	प्रथम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	चतुर्थ
पु. घा. चंद्र	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
स्त्री घा. चंद्र	मेष	धनु	धनु	मिथुन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धनु	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	मेष

ग्रहों का नैसर्गिक मैत्री चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मित्र	चंद्र मंगल गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चंद्र गुरु	सूर्य शुक्र	सूर्य चंद्र मंगल	बुध शनि	बुध शुक्र	शुक्र बुध शनि	बुध गुरु
सम	बुध	मंगल गुरु शुक्र शनि	शुक्र शनि	मंगल गुरु शनि	शनि	मंगल गुरु	गुरु	गुरु केतु	मंगल राहु शुक्र
शत्रु	शुक्र शनि	०० ००	बुध राहु	चंद्र	बुध शुक्र	सूर्य चंद्र	सूर्य मंगल चंद्र	सूर्य चंद्र मंगल	सूर्य चंद्र शनि
उच्चांश	मेष १०	वृषे ३	म. २८	कं. १५	कर्क ५	मी. २७	तु. २०	वृ. १५	
नीचांश	तु. १०	वृश्चि ३	क. २८	मी १५	म. ५	कं. २७	मे. २०	वृ. १५	

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नक्षत्र, राशि, वर्ण, योनि आदि ज्ञान चक्र

नक्षत्र	चरणाक्षर	राशि	वश्य	योनि	महावैर योनि	राशि स्वामी	गण	नाड़ी	तत्त्व हंसका	नाम (संज्ञा)	नक्षत्र देवता	कितने तारे	पंचशला का वेध
अश्विनी	चू. चे. चो. ला.	मेष	चतुष्पद	अश्व	महिष	मंगल	देव	आदि	अग्नि	क्षिप्र	अश्वि कु.	३	पू. फा.
भरणी	ली. लू. ले. लो.	मेष	चतुष्पद	गज	सिंह	मंगल	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	यम	३	अनु
कृत्तिका	अ. इ. उ. ए.	मे.१ वृष ३	चतुष्द	मेढ़ा	वानर	मं.१ शु.३	राक्षस	अन्त्य	अ.१ पृ.३	मिश्र	अग्नि	६	विशा
रोहिणी	ओ. वा. वी. वू.	वृष	चतुष्पद	सर्प	न्योला	शुक्र	मनुष्य	अन्त्य	पृथ्वी	ध्रुव	ब्रह्मा	५	अभि
मृगशिर	वे. वो. का. की.	वृ.२ मि.२	च.२ नर२	सर्प	न्योला	शु.२ बु.२	देव	मध्य	पृ.२ वा.२	मृदु	चन्द्रमा	५	उषा
आर्द्रा	कु. घ. ङ छ.	मिथुन	नर(मनुष)	श्वान	मृग	बुध	मनुष्य	आदि	वायु	तीक्ष्ण	शिव	१	पूषा
पुनर्वसु	के. को. हा. ही.	मि.३ क.१	न.३ ज.१	मार्जार	मूषक	बु.३ चं.१	देव	आदि	वा.३ ज.१	चर	अदिति	४	मूला
पुष्य	हू. हे. हो. डा.	कर्क	जलचर	मेढ़ा	वानर	चंद्र	देव	मध्य	जल	क्षिप्र	गुरु	३	ज्ये.
आश्लेषा	डी. डू. डे. डो.	कर्क	जलचर	मार्जा.	मूषक	चंद्र	राक्षस	अन्त्य	जल	तीक्ष्ण	सर्प	५	धनि
मघा	मा. मी. मू. मे.	सिंह	चतुष्पद	मूषक	बिडाल	सूर्य	राक्षस	अन्त्य	अग्नि	उग्र	पितर	५	श्रव
पू.फा.	मो. टा.टी. टू.	सिंह	चतुष्पद	मूषक	बिडाल	सूर्य	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	भग, सूर्य	२	अश्वि
उ.फा.	टे. टो. पा. पी.	सिं.१ कं.३	चं.१ न.३	गौ	व्याघ्र	सू.१ बु.३	मनुष्य	आदि	अ.१ पृ.३	ध्रुव	अर्यमा	२	रेव
हस्त	पू. ष. ण. ठ.	कन्या	नर	महिष	अश्व	बुध	देव	आदि	पृथ्वी	क्षिप्र	सूर्य	५	उभा
चित्रा	पे. पो. रा. री.	के.२ तु.२	नर	व्याघ्र	गौ	बु.२ शु.२	राक्षस	मध्य	पृ.२ वा.२	मृदु	विश्व	१	पूभा
स्वाती	रू. रे. रो. ता.	तुला	नर	महिष	अश्व	शुक्र	देव	अन्त्य	वायु	चर	वायु	१	शत
विशाखा	ती. तू. ते. तो.	तु.३ वृ.१	न.३ की.१	व्याघ्र	गौ	शु.३ मं.१	राक्षस	अन्त्य	वा.३ ज.१	मिश्र	इंद्राग्नि	४	कृति
अनुराधा	ना. नी. नू. ने.	वृश्चिक	कीट	मृग	श्वान	मंगल	देव	मध्य	जल	मृदु	मिश्र	४	भर
ज्येष्ठा	नो. या. यी. यू.	वृश्चिक	कीट	मृग	श्वान	मंगल	राक्षस	आदि	जल	तीक्ष्ण	इन्द्र	३	पुष्य
मूला	ये. यो. भा. भी.	धनु	नर	श्वान	मृग	गुरु	राक्षस	आदि	अग्नि	तीक्ष्ण	राक्षस	११	पुन
पूर्वाषाढ़ा	भू. ध. फ. ढ.	धनु	न॥ चतु ३	वानर	मेंढ़ा	गुरु	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	जल	२	आर्द्रा
उत्तराषाढ़ा	भे. भो. जा. जी.	ध.१ मं.३	चतुष्पद	नकुल	सर्प	गु.१ शं.३	मनुष्य	अन्त्य	अ.१ पृ.३	ध्रुव	विश्वे	२	मृग
अभिजित	जु. जे. जो. ख.	मकर	—	नकुल	सर्प	शनि	—	—	पृथ्वी	क्षिप्र	विष्णु	३	रोह
श्रवण	खी. खू. खे. खो.	मकर	चतु.१ ॥जर	वानर	मेढ़ा	शनि	देव	अन्त्य	पृथ्वी	क्षिप्र	विष्णु	३	कृति
धनिष्ठा	गा. गी. गू. गे.	म.२ कुं.२	ज.२ न.२	सिंह	गज	शनि	राक्षस	मध्य	पृ.२ वा.२	चर	वसु	४	विशा
शतभिषा	गो. सा. सी. सू.	कुम्भ	नर	अश्व	महिष	शनि	राक्षस	आदि	वायु	चर	वरुण	१००	स्वा
पूर्वाभादपद	से. सो. दा. दी.	कुं.३ मी.१	न.३ ज.१	सिंह	गज	श.३ गु.१	मनुष्य	आदि	वा.३ ज.१	उग्र	रूद्र	२	चित्रा
उ. भादपद	दू. थ. झ. ञ.	मीन	जलचर	गौ	व्याघ्र	गुरु	मनुष्य	मध्य	जल	ध्रुव	अहिबु	२	हस्त
रेवती	दे. दो. चा. ची.	मीन	जलचर	गज	सिंह	गुरु	देव	अन्त्य	जल	मृदु	पूषा	३२	उफा

नामाक्षरों से वर्ग देखने का चक्र (अपने से चतुर्थ वर्ग को मित्र क्षेत्री समझना चाहिए)

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	बिडाल	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	हरिण	मेढ़ा

वर्ण ज्ञान चक्र

वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि	१२/४/८	१/५/९	२/६/१०	३/७/११

ग्रह मैत्री चक्र

ग्रहाः	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्राणि	चं मं गु	सू बु	सू चं गुरु	सू शु	सू चं मं.	बु श	शु बु
समाः	बुधः	मं गु शु श	शु श	मं गु श	श	मं गु	गु
शत्रव	शु श	० ०	बुध	चं	बु शु	सू चं	सूचंमं
उच्चांश	मे १०	वृष ३	म २८	क १५	कर्क ५	मी २७	तु २०
नीचांश	तु १०	वृ ३	क २८	मी १५	म ५	क २७	मे २०

मित्र नवपंचम चक्र

१	२	३	५	७	८	९	१०	१२	११	६	४
५	६	७	९	११	१२	१	२	४	३	१०	८

शत्रु नवपंचम चक्र

मित्रषडाष्टक चक्र

१	३	५	७	९	११
८	१०	१२	२	४	६

शत्रुषडाष्टक चक्र

१	३	५	७	९	११
६	८	१०	१२	२	४

मित्रद्विर्द्वादश चक्र

१२	२	४	६	८	१०
१	३	५	७	९	११

शत्रुद्विर्द्वादश चक्र

१	३	५	७	९	११
२	४	६	८	१०	१२

नव पंचम—कन्या से वर अथवा वर से कन्या की राशि पांचवीं, नौवीं हो, तो दम्पत्ति को संतान हानि की संभावना होती है। परन्तु मीन-कर्क, कर्क-बृश्चिक, कुम्भ-मिथुन, कन्या-मकर विशेषतः त्याज्य माने जाते हैं। राशि मैत्री होने की स्थिति में नव-पंचम दोष अचिन्तनीय है।

षडाष्टक दोष—लड़के और लड़की की राशियां परस्पर छठे-आठवें हों तो षडाष्टक यथा-सम्भव त्याज्य है। शत्रु षडाष्टक दोष विशेषतः त्याज्य माना जाता है।

विस्तृत विवेचन के लिए देखें आगामी पृष्ठ।

भारतीय संस्कृति में संस्कारों का महत्त्व

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भारतीय संस्कृति में संस्कारों का महत्त्व

(मुख्य-मुख्य मुहूर्तों का निर्णय स्वंय करें)

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में संस्कारों का विशेष महत्त्व है। प्राचीन ऋषियों ने गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि कर्म तक **षोडश-संस्कारों** के महत्त्व को एकमत से स्वीकार किया है। मनुष्य जन्म से अबोध होता है, परन्तु संस्कारों से मनुष्य के आन्तरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व का निखार व परिष्कार होता है। जैसे, शास्त्र में कहा गया है—

जन्मना जायते शूद्र: संस्काराद् द्विज उच्यते।
वेद पाठात् भवेद् विप्र:, ब्रह्म जानाति ब्राह्मण:॥

अतएव सुख, समृद्धि एवं कल्याण चाहने वाले प्रत्येक वर्ण के गृहस्थी मनुष्य को भारतीय परम्परा एवं संस्कृति का अनुगमन करते हुए गर्भाधान, पुंसवन, नामकरणादि संस्कारों को धारण करना चाहिए। शास्त्र विधि अनुसार बच्चे के संस्कार करने से बालक/कन्या मेधावी, स्वास्थ्य धनी, यशस्वी एवं दीर्घायु होता है॥

षोडश संस्कार इस प्रकार से हैं—

(१) गर्भाधान (२) पुंसवन (३) सीमन्तोन्नयन (४) जातकर्म (५) नामकरण (६) निष्क्रमण (७) अन्न प्राशन (८) चूडाकरण (मुण्डन), **(९) यज्ञोपवीत (१०)** से **(१३) तक चतुर्वेदीय व्रत, (१४) समानवर्त्तन (१५) विवाह (१६) अन्त्येष्टि।**

☞(१) गर्भाधान संस्कार—यह प्रथम संस्कार है, जो स्त्री के ऋतु (रजस्वला) स्नान के पश्चात् किया जाता है। भार्या के स्त्री धर्म (रजोदर्शन) में होने के १६ दिन तक वह गर्भ-धारण के योग्य रहती है। **रजोदर्शन** के दिन ६, ८, १०, १२, १४, १६वें दिनों में क्रियमाण गर्भाधान पुत्रदायक तथा विषम दिनों (५, ७, ९, ११, १३, १५) में कन्या-प्रद होता है। उपरोक्त दिनों में भी शुद्ध मुहूर्त्त दिनों का विचार किया जाता है।

(१) गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त्त

शुभतिथियां—१ (कृष्ण) २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शुक्ल)

शुभ वार—सोम, बुध गुरु एवं शुक्रवार

शुभ नक्षत्र—रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, पुन, पुष्य, स्वा, अनु, श्रव, धनिष्ठा व शतभिषा।

शुभ लग्न—लग्न, केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह हों एवं लग्न को सूर्य, मंगल, और गुरु देखते हों, तो गर्भाधान से पुत्रोत्पत्ति की संभावना होती है। इसके अतिरिक्त **पुत्रार्थी** विषम लग्न राशि एवं विषम नवांशगत लग्न में तथा कन्याकांक्षी सम लग्न राशि में स्त्री संग करें।

गर्भ-धारण के दिन स्त्री-पुरुष दोनों का चन्द्र-बल प्राप्त होना शुभ होता है।

गर्भाधान के लिए त्याज्य काल—रजोदर्शन से प्रथम चार रात्रि को छोड़कर, रिक्ता तिथि, जन्म नक्षत्र, मघा-अश्ले आदि तीनों गण्डांत, मूला, भरणी, अश्विनी, रेवती नक्षत्र, ग्रहण का दिन, माता-पिता के श्राद्ध का दिन, वैधृति, परिघ का पूर्वार्ध, संक्रान्ति, व्यतीपात, ग्रहण, सन्ध्या, दिन का समय, जन्म राशि से अष्टम लग्न, दीवाली, दशहरा, नवरात्र आदि पर्व दिनों को स्त्री संसर्ग में त्याग करना चाहिए।

गर्भ मासों के अधिपति

गर्भाधान से लेकर नव एवं दस मास तक भिन्न-भिन्न ग्रह अधिपति होते हैं। अरिष्टभय की स्थिति में उसी मास से सम्बन्धित ग्रह की पूजा-दानादि करना चाहिए।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चंद्र	शनि	बुध	आधानकालिक लग्नेश	चंद्र	सूर्य

☞(२) पुंसवन संस्कार मुहूर्त्त—यह संस्कार गर्भधारण से तीसरे मास में किया जाता है। इस मास का स्वामी गुरु है। इस दिन श्री विष्णु पूजा करना शुभ होता है। इस संस्कार के शुभ मुहूर्त्त इस प्रकार से हैं।

शुभवार—रवि, चंद्र, मंग, बुध, गुरु व शुक्र। **मंगल** व बुध वारों में मं. बु. उदित होने चाहिएं।

शुभ तिथियां—१ (कृ) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शुक्ल)।

शुभ नक्षत्र—रोहणी, मृग, पुन. पुष्य, हस्त, तीनों उत्तरा, श्रवण, अनु एवं रेवती नक्षत्र। विद्ध नक्षत्र त्याज्य हैं।

☞(३) सीमन्त संस्कार—यह तृतीय संस्कार है, जो गर्भ धारण से ६, ८ वें मास, जब मास-स्वामी बली हो। **शुभवार**—रवि, मंगल, एवं गुरु।

शुभ तिथियां—२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शुक्ला)।

नक्षत्र—मृग, पुन, पुष्य, हस्त, मूला, श्रवण:

लग्न—१, ३, ५, ७, ९ आदि विषम लग्न, केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह हों॥

(३)(क) श्री विष्णु पूजा मुहूर्त्त—यह पूजा गर्भाधान से आठवें मास गर्भरक्षा के उद्देश्य से की जाती है। इसमें शंख चक्र-गदा-पद्मधारी भगवान विष्णु की यथाशक्ति, सुवर्णमयी प्रतिमा बनवाकर षोडशोपचार से पूजा करके परिधान सहित, प्रतिमा को ब्राह्मण को दान करें।

शुभ तिथियां—२, ७, १२

शुभ वार—चंद्र, बुध, गुरू, शुक्र।

शुभ नक्षत्र—रोहिणी, पुष्य और श्रवण।

☞(४) जातकर्म संस्कार—कुछ शास्त्रकार प्रसव के समय नालछेदन के पूर्व ही इस संस्कार को कार्यान्वित करने की आज्ञा दी है। परन्तु आजकल नरघटी अथवा १६ घटी तक कर लेना चाहिए।

कुछ लोग परम्परानुसार **११वें** अथवा **१२वें** दिन कर लेते हैं।

शुभ तिथियां—१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शु.)

शुभ वार = च., बु., गु., शु.

नक्षत्र—अश्वि. रोह. मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., श्रव., धनि, शत, रेव।

☞मेधा-जनन संस्कार—जात कर्म के साथ ही इस कृत्य का निष्पादन करना चाहिए। बालक/बालिका मेधावी, कीर्तिमान एवं सौभाग्यशाली हो, इसके लिए दाएं हाथ की अनामिका अंगुली से शहद एवं गोघृत चार बार बच्चे को चटाएँ। चारों बार क्रमश: "ॐ भूस्त्वपि धधामि।" ॐ भुस्त्वपि दधामि।" तथा ॐ भूर्भुवस्व: सर्वत्वपि दधामि। **मंत्रों का उच्चारण करें।** इसके साथ ही कुछ घृत मिश्रित गुड़ भी बालक के तालु में लगा देना शुभ होता है। जिससे बच्चे को स्तनपान के पूर्व ही कुछ चूसने की आदत हो जाए। (अंगुली के अतिरिक्त सुवर्ण या चांदी के चम्मच का भी प्रयोग कर सकते हैं।

☞स्तनपान का मुहूर्त्त—जन्मान्तर ५वें या ७वें किसी दिन नीचे लिखे भद्रा, व्यति, वैधृति, व्याघात आदि योगों को छोड़कर निम्न शुभ मुहूर्त्त माता संतान को प्रथम बार स्तनपान कराए।

शुभ तिथि—१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.), १५,

शुभ नक्षत्र—रोह., मृग. ,पुन, पुष्य, उत्तरा ३ हस्त, चित्रा, अनु, श्रव. धनि, व रेवती॥

शुभ वार—चंद्र, बुध, गुरु व शुक्र।

शुभ लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ राशि लग्न।

सूतिका पथ्य में भी उपरोक्त मुहूर्त्त ग्राह्य है।

☞षष्ठी पूजन—जन्म से पांचवें दिन, जीवन्ती देवी का पूजन करना चाहिए। इसी प्रकार छेठे दिन रात्रि में **षष्ठी पूजन,**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कात्यायनी देवी' का आनन्द मंगल व गीत वाद्य के साथ पूजन करना चाहिए। जीवन्ती एवं षष्ठी पूजा में सूतक की दोष आपत्ति नहीं होती। देशाचारानुसार कोई २१वें या ३१वें दिन की षष्ठी पूजन करते हैं।

☞प्रसूता स्नान मुहूर्त्त—सूतिका स्नान बच्चे के जन्मदिन से एक सप्ताह के बाद करना चाहिए।

शुभ तिथियां—१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) १५।

शुभ वार—रवि, मंगल, गुरू, शुभ हैं। सोम एवं शुक्रवार मध्यम हैं।

शुभ नक्षत्र—आश्वि, रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वा., अनु, रेव।

शुभ लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ सौम्य ग्रह से युत या दृष्ट।

☞नामकरण संस्कार—यद्यपि प्रत्येक मनुष्य के बाह्य एवं आन्तरिक व्यक्तित्व पर उसके परिवेश एवं परिस्थितियों का विशेष प्रभाव होता है। परन्तु ज्योतिष आचार्यों के अनुसार मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास में उसके प्रसिद्ध नाम का भी विशेष महत्त्व होता है—

''नामाखिलस्य व्यवहार हेतुः, शुभावहं कर्मसु भाग्य हेतुः।
नाम्नैव कीर्ति लभते मनुष्यस्ततः प्रशस्तं खलु नाम कर्म॥''

गृहारम्भ—प्रवेश, युद्ध व्यापार, व्यावहारिक कार्य, दान, मन्त्र-सिद्धि, भाग्य, पुनर्विवाह, रोगोत्पत्ति तथा स्वामी-सेवक के पारस्परिक कृत्यों में नाम राशि वांछनीय है।

☞नामकरण—सूतक-समाप्ति पर देशानुसार १०, ११, १२, १३, १६, १९, २२वें दिन संस्कार करना चाहिए। एक अन्य मतानुसार ब्राह्मण को १० या १२वें दिन, क्षत्रिय को ११ या १२ वें दिन वैश्य को १६ या २०वें दिन नामकरण संस्कार करना चाहिए। नामकरण पिता-पितामह या कुल के वृद्ध व्यक्ति के द्वारा स्वास्ती वाचन मन्त्रों सहित (विद्वान ज्योतिषी से कुण्डली परामर्श के बाद) उच्चारित करवाना चाहिए।

शुभ तिथियाँ—१ (कृष्ण), २,३,७,१०,११,१२,१३ (शुक्ल)।

शुभ वार—चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ नक्षत्र—अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, श्रव, धनि, शत, रेवती।

शुभ लग्न—१,४,६,७,९,१२ लग्न शुभ ग्रह युत या दृष्ट हों। भद्रा, ग्रहण, श्राद्ध दिन, दुष्ट योग, संक्रान्ति आदि रहित काल में, सुयोग्य ज्योतिषी से प्रथम नामाक्षर पूछ कर कानों को मधुर लगने वाले अक्षर, महापुरुषों के नाम सदृश अथवा शुभ सार्थक शब्दों वाला नाम रखना कल्याणकारी रहता है।

बालक के दाँत निकलने का फल

यदि पहले मास में बालक के दाँत निकल आएं तो स्वयं अपनी आयु के लिए अरिष्टकारक, दूसरे मास में भाई को, तीसरे मास में बहिन को, चौथे मास में माता को, पाँचवें मास में बड़े भाई के लिए विशेष कष्टकारी होता है, **छटे मास में दाँत निकलें** तो अत्यन्त सुख, सातवें मास में पिता से सुख, आठवें मास में देह की पुष्टता, नवें मास में लक्ष्मी की प्राप्ति, दसवें मास में सौख्य प्राप्ति, ११वें निकलें तो **अति सौख्य**, १२वें मांस में निकलें तो विपुल धन-प्राप्ति होती है। यदि गर्भ से ही दाँतों सहित उत्पन्न हुआ हो वह माता-पिता के सुख से विहीन अथवा ऊपर की पंक्ति के दाँत पहलें निकले तो भी माता-पिता तथा नानके पक्ष के लिए हानिकारक माना जाता है। यदि उपरोक्त अशुभ मासों में बालक को दन्तोत्पत्ति की संभावना हो तो मृत्युज्जय का जाप, ग्रह शान्ति एवं उचित दान आदि करने से अशुभत्व का निवारण तथा अरिष्ट की शान्ति हो जाती है।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
फल	स्वयं को अरिष्ट	भ्रातृ कष्ट	बहिन को कष्ट	मातृ कष्ट	ज्येष्ठ भ्रातृ कष्ट	सुख	पिता से सुख	देह सुख	धन प्राप्ति	सौख्य प्राप्ति	अति सौख्य	विपुल धन

☞झूला आरोहन मुहूर्त्त—बालक के जन्मदिन से १०, १२, १६, २२ एवं ३२वें दिन बालक को आराम देह झूले में सुलाना चाहिए। झूले में डालने से पूर्व शुभ तिथि, वार, नक्षत्र, योगादि का विचार कर लेना चाहिए। झूले में माता या दादा, दादी के द्वारा, भगवान् विष्णु का ध्यान करते हुए बच्चे का सिर पूर्व की ओर रखकर शिशु को सुलाना चाहिए।

शुभ तिथियां—१ (कृ), २,३,५,७,१०,११,१३ (शुक्ल) व पूर्णिमा।

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि, रोहिणी, मृग, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा तथा अनुराधा।

☞निष्क्रमण मुहूर्त्त—जन्म से ३,४ मासों में निम्नलिखित शुभ योगों में बालक को प्रथम बार घर से बाहर निकालना हितकर होता है। शीघ्रता में आवश्यक हो तो जन्म से १२वें दिन भी निष्क्रमण लिखा गया है।

शुभ तिथियां—१ (कृ) २,३,४,७,१०,११,१२ (शु.) एवं १५।

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु तथा शुक्र।

शुभ नक्षत्र—अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, हस्त, अनु, श्रव, धनि।

शुभ लग्न—२,३,४,५,६,७,९,१०,११ राशि लग्न।

माता, दादी आदि आत्मीयजन बालक को स्नानादि करवा कर वस्त्रादि से अलंकृत करें तथा पुण्याहवाचन, शंख और मंगल मंत्रों एवं गीत-वाद्य सहित ध्वनि के साथ उसे प्रथम देवालय (मन्दिर) में ले जावें। वहाँ देव पूजा व अर्चना करके आत्मीयजन शुभाशीष दें तथा मन्दिर की परिक्रमा करके स्वगृह लौट कर बच्चे को ननिहाल या मौसी के घर ले जावे। पुनः गृहागमन के समय दीर्घायु संज्ञक आशीर्वचनों से बालक का अभिनन्दन करें। पुनश्च, निष्क्रमण तृतीय मास में हो, तो बालक को सूर्य-दर्शन तथा चतुर्थ मास में हो तो चन्द्र-दर्शन करवाना चाहिए।

☞भूम्युपवेशन-मुहूर्त्त—जन्म से पंचम मास में मंगल के बलान्वित होने पर बालक को प्रथम बार भूमि पर विराजमान (बिठाने) के लिए विचारणीय मुहूर्त्त—

शुभ तिथियां—१ (कृ) 2,३,४,७,१०,११,१३ (शु.) तथा पूर्णिमा।

शुभ वार—चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवार।

शुभ नक्षत्र—अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उत्तरा, हस्त, अनु, ज्ये, अभिजित।

शुभ लग्न—२,५,८,११ राशि लग्न।

☞जीविका परीक्षा—'भूम्युपवशन' के अवसर पर बालक के सामने हानि रहित अस्त्र-शस्त्र, पुस्तकें, लेखनी (Pen-Pencil), वस्त्र, सोना, चाँदी, ताँबा, लोहादि धातुएँ, मशीनें मोटर, पंखा-रेडियों, टी. वी. आदि खिलौने, विज्ञान, हिन्दी, अंग्रेज़ी, संस्कृतादि साहित्य आदि वस्तुएँ रखें। इन वस्तुओं में से जिस वस्तु को बालक सहज रूप में सर्वप्रथम स्पर्श करें, वही उसकी भावी आजीविका होगी। ऐसा अनुमान लगाना चाहिए। कुल परम्परा अनुसार, कहीं-कहीं यह क्रिया अन्नप्राशन के साथ भी कर लेते हैं।

☞अन्न-प्राशन का मुहूर्त्त—जन्म से सौर मास ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र को तथा ५,७,९ या ११वें मास पुत्री को उसकी पाचन शक्ति उपयुक्त होने पर प्रथम बार बच्चे को अन्न प्राशन कराना **अन्न प्राशन** में शुक्ल पक्ष विशेष प्रशस्त माना गया है। यद्यपि कृष्ण पक्ष की १,३,५,७,१० तिथियाँ भी ग्राह्य हैं। सोमवार, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार शुभ हैं।

नक्षत्र—अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, अभिजित श्रव, धनि, रेवती तथा जन्म-नक्षत्र 'सप्तशलाका चक्र' द्वारा क्रूर ग्रह विद्ध नक्षत्र त्याज्य होगा। जन्म राशि से ६, ८वें लग्न को छोड़कर २,३,४,५,६,७,९,१०,११ की राशि का लग्न जबकि लग्न से १,४,७वें शुभ ग्रह हों तथा लग्न शुभ ग्रहों द्वार दृष्ट हो।

विशेष—अन्न प्राशन दिन के पूर्वार्द्ध भाग में बालक की राशि का चन्द्रबल देखकर भद्रा रहित काल एवं उपरोक्त शुभ दिन को

सूर्य, ब्रह्म, विष्णु, महेश तथा दिक्पतियों की पूजा करके माता स्वलंकृत बालक को अपनी गोद में बिठाकर ईश्वर-स्मरण करते

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

है। जन्मदिन पर तिल स्नान, तिलों चावल, दूध, चीनी आदि से बनी क्षीर तथा वस्त्र अनाजादि का दान एवं स्वयं भी क्षीर सेवन शुभ होता है।

—वास्तु भूमि का शुभाशुभ विचार—

(क) गृहादि निर्माण हेतु जिस भूमि की शुभाशुभ परीक्षा करनी

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्य, ब्रह्म, विष्णु, महेश तथा दिक्पतियों की पूजा करके माता स्वलंकृत बालक को अपनी गोद में बिठाकर ईश्वर-स्मरण करते हुए उसे मधु, घृत, दही, खीर का भोजन सर्व प्रथम कराएँ।

☛कर्ण वेध का मुहूर्त्त—बालक के जन्म से १२, १६वें दिन, या ६,७,८वें मास में अथवा ३,५वें वर्ष बालक का कर्ण छेदन प्रशस्त माना जाता है।

ग्राह्य मास—चैत्र, (का. शु. ११ के बाद), पौष तथा फाल्गुन।

तिथियां—४,९,१४ (रिक्ता तिथियां छोड़कर)।

वार—चं, बु., गु., शु, वारों में अश्वि, मृग, आ. पुन, पुष्य हस्त, चित्रा, अनु, अभि, श्रव, धनि, रेव, विद्ध तथा जन्म नक्षत्र भी त्याज्य।

शुभ लग्न—२,३,४,६,७,९,१२।

विशेष—बोलक को पूर्वाभिमुख बिठाकर हाथ में कुछ मिष्ठान्न दें तथा पुत्र के बाएं कान को तथा पुत्री के दाएं कान को सुवर्ण या चाँदी की शलाका से सौभाग्यवती स्त्री या कुशल स्वर्णकार से कर्ण विधवाना चाहिए।

☛कन्या की नासिका छेदन—हेतु उपरोक्त कर्ण वेध मुहूर्त्त के मासों में ही कन्या का नामक विंधवाया जाता है। शुक्ल पक्ष की तिथियाँ शुभ होती हैं—२, ३ ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५।

जन्म दिन कृत्य

सामान्यत: लोग अंग्रेज़ी तारीख अनुसार ही जन्मदिन कृत्य कर लेते हैं। परन्तु इसमें कई बार भूल होने की सम्भावना रहती है। सिद्धान्त: एक सौर वर्ष उपरान्त जिस दिन जन्मेष्ट एवं जन्मदिन के समान ही स्पष्ट सूर्य के राशि, अंश, कलादि की जब पुनरावृत्ति आ जाए, उसी दिन को जन्मदिन का नववर्ष प्रवेश माना जाएगा। यदि इतनी सूक्ष्मता का पता न चल पाए तो देशी प्रविष्टों के अनुसार जन्म दिन के वर्ष का निर्धारण किया जाए तो शुद्धता के अधिक पास रहेंगे। यदि किसी सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा वार्षिक जन्मदिन का निर्णय (गणितानुसार) करवा लें तो और अधिक उचित होगा।

जन्मदिन के शुभ अवसर पर प्रात: उठकर गंगा जल सहित शुद्ध पवित्र जल से बालकको स्नानादि के पश्चात् सुन्दर वस्त्र धारण करवा कर पूर्वाभिमुख होकर माता पिता उसे गोदी में बिठाकर किसी सुयोग्य पण्डित जी द्वारा पंचदेव पूजन, नवग्रह पूजन एवं संकल्पपूर्वक छाया दान सहित जन्मदिन पूजन करवाना चाहिए। पूजनोपरांत भगवान् सूर्यदेव को अर्घ्य तथा ब्राह्मण भोजन एवं यथाशक्ति दानादि करें।

विशेषकर वर्षफल में स्थित अशुभ ग्रहों के दान, जपादि करवाने से बच्चों को आरोग्यता एवं माता-पिता को सुख-शान्ति बनी रहती है। जन्मदिन पर तिल स्नान, तिलों चावल, दूध, चीनी आदि से बनी क्षीर तथा वस्त्र अनाजादि का दान एवं स्वयं भी क्षीर सेवन शुभ होता है।

☛मुण्डन (चूड़ाकर्म) संस्कार मुहूर्त्त

जन्म या गर्भाधान में १, ३, ४, ७ इत्यादि विषम वर्षों के कुलाचार के अनुसार उत्तरायणगत सूर्य में बालक का चौलकर्म (मुण्डन) संस्कार पूर्वान्ह काल में करना चाहिए।

चैत्र मास को छोड़कर अन्य उत्तरायण के मासों में —वैशा, ज्ये. आषा. (२० जून तक), माघ, फाल्गुन, २, ३, ४, ५, ६, ७, १०, ११, १३ (शु०) १५ तिथियों में, संक्रान्ति आदि पर्व दिनों को छोड़कर, चन्द्र, स्वा, ज्ये. श्रव, अभि., धनि. और शतभिषा नक्षत्रों में मुण्डन कार्य शुभ है। लोकाचार अनुसार कुछ लोग नवरात्रों में, अक्षयातीज आदि शुभ दिनों में बिना सुनिश्चित मुहूर्तों के भी मुण्डन आदि कार्य कर सकते हैं।

बालक का जन्म मास त्याज्य है। परन्तु जन्म नक्षत्र या जन्म राशि शुभ है। तथा जन्म राशि या जन्म लग्न से अष्टम लग्न न हो। बालक की माता रजस्वला या गर्भवती हो, तो मुण्डन कार्य न करावें परन्तु यदि गर्भ ५ मास से अधिक का हो तो या बालक की आयु ५ वर्ष से अधिक हो, तो दोष नहीं। ज्येष्ठ (बड़े) लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में शुभ नहीं।

☛क्षौर (हजामत) कर्म मुहूर्त्त—मुण्डन के लिए जो तिथियां, नक्षत्र और वार शुभ बतलाए गए हैं, वे ही क्षौर (हजामत) के लिए शुभ हैं। मंगल, शनि, व रवि वारों में क्षौर से पुन: ९वां दिन, रिक्ता तिथियों और विशेष ग्राम (नगर) में जाने के दिन, स्नान करने के बाद, शरीर में उबटन लगाने के बाद और भोजन कर लेने के बाद अपना कल्याण चाहने वाले वाले क्षौर कर्म (हजामत) न करावें॥

विशेष—यज्ञ में, विवाह, मृतक कर्म में कारागार (जेल) से छूटने पर, राजा और ब्राह्मण की आज्ञा से क्षौर कर्म निषेध दिनों में भी करा लेना शुभद होता है।

विवाह में तैलादि चढ़ाने का मुहूर्त्त

वर कन्या जिसको विवाह से पूर्व तैल चढ़ाना हो, उसका चन्द्र बल देख लेना चाहिए। तैलादि मंगल कार्य हेतु, मेषादि राशि वालों के लिए चक्र में निर्दिष्ट संख्या दिन पूर्व करना चाहिए। उदाहरणार्थ मिथुन राशि वाले वर-कन्या को विवाह से ५ दिन पूर्व तेल चढ़ाना चाहिए। इनमें विवाह का दिन गिनती में न करें।

राशि	मेष	वृष	मिथु	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
दिन	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

—वास्तु भूमि का शुभाशुभ विचार—

(क) गृहादि निर्माण हेतु जिस भूमि की शुभाशुभ परीक्षा करनी हो, तो शाम के समय वहाँ पर भूमि पूजन करवाने के पश्चात् वहाँ अपने एक हाथ लम्बा, एक हाथ चौड़ा और डेढ़ हाथ गहरा गढ़ा खोद कर उसे जल भर दें। प्रात:काल आकर उसे देखने पर, यदि वह गढ़ा पानी से भरा हुआ दिखे तो, भूमि शुभ जानें। यदि पानी न हो, तो मध्यम जानें, और यदि गड्ढा में पानी न हो और उसके आस-पास की मिट्टी फटी हुई हो, तो भूमि को अशुभ समझें।

(ख) वास्तुभूमि में परीक्षा के लिए भूमि में लगभग डेढ़ फुट गहरा उतना ही चौड़ा गढ़ा खोदें। खुदाई के समय यदि पत्थर, ईंट, ताम्बा, पात्र, धनादि द्रव्य मिलें, तो यह परिवार की आयु, धन, संतति आदि में वृद्धि होने के संकेत हैं। इसे शुभ शकुन मानना चाहिए। यदि भूमि खोदने पर कपाल, हड्डी, कोयला, केश, राख, गुठली, रुई, सीप खोपड़ी, लोहादि मिलें तो इसे अशुभ शकुन समझना चाहिए।

(ग) विश्वकर्मा के अनुसार एक अन्य परीक्षा भूमि में उत्तर दिशा की ओर एक लगभग टेढ़ फुट गहरा और डेढ़ फुट चौड़ा गढ़ा खोदें। गड्ढे में से सारी मिट्टी निकाल लें। तथा निकाली हुई मिट्टी को दुबारा उसे गड्ढे में भर देवें। यदि गड्ढा भर देने के बाद भी मिट्टी शेष बच जाती है, तो समझ लें कि भूमि उत्तम है। यदि फिर भरने के बाद मिट्टी शेष नहीं बचती और गढ़ा पूरा भर जाता है, तो इससे यह समझना चाहिए कि भूमि मध्यम स्तरीय होगी। यदि निकाली गई सारी मिट्टी गड्ढे में भरने पर भी, गड्ढा पूरी तरह नहीं भरता है, तो समझें कि जमीन निकृष्ट प्रकार की है।

(घ) फटी हुई, शूल (कांटों), दीमक आदि से युक्त ऊँची-नीची भूमि अशुभ होती है।

(ङ) **शुभ-भूमि**—चिकनी, गीली, उपजाऊ मिट्टी अथवा घास, पुष्प, लताओं, फूलों आदि से सुगन्धित एवं समतल भूमि गृह स्वामी एवं उसके परिवार के लिए सुख-सम्पत्ति में वृद्धिकारक होती है।

(च) मकान की नींव को गहरा खोदते समय यदि काली ईंटें देखने को मिलें, तो भूमि शुभ जानें। हड्डी, केश, (बाल), कोयला राखादि निकलें तो वहां मकान बनवाने वाले को रोगादि से कष्ट रहे॥

सुप्त भूमि (भू-शयन) का विचार

प्रत्येक सूर्य संक्रान्ति से ५, ७, ९, १०, २१, एवं २४वें प्रविष्टे को पृथ्वी सोई रहती है, अतएव सुप्त भूमि के दिवसों में यथासम्भव कृषि, होम, गृह निर्माण, वापी, कुआं, तालाब के लिए भूमि का खनन न करें।

एक अन्य मतानुसार, **सूर्य-नक्षत्र** से ५, ७, ९, १२, १९, तथा २६ वे नक्षत्रों में भी भूमि का शयन होता है।

भू-रजस्वला—सूर्य संक्रान्ति के दिन से १, ५, १०, ११, १६, १८, १९ वें दिन भूमि रजस्वला रहती है। अत: इन दिनों भी यज्ञ, हवन, कृषि,तालाब, गृह निर्माणारम्भ आदि कार्यों का आरम्भ न करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है—(१) जनना शौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भास्त्रावादि अशौच-व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्राव' कहते हैं। पांचवें, छटे मास में 'गर्भपात' और इसके उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पितादि सपिण्डों को ३ दिन का 'सूतक' होता है।

जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने २ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है, जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हों, तो, २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से एक मास तक धर्मकार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

मृतोत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाये तो माता को १० दिन तक सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये तो पितादि सपिण्डों का पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं होता।

मृताशौच-व्यवस्था

नामकरण अर्थात् १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दाँत आने से पहिले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थात् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक, अर्थात् मुंडन संस्कार न हुए बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है और ३ वर्ष में मुण्डन संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

कन्या शौच-व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुई कन्या पिता के घर में मर जाए व प्रसूता हो तो माता-पिता सहोदर, भाईयों को तीन दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का अशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है।

मातामह-मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना की ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १ ॥ दिन का पातक होता है।

सास-ससुर तथा जामातृ पर अशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जाये तो जामित्र पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १ ॥ दिन का पातक लगता है। जामाई के मरने पर १ दिन का पातक होता है।

बन्धुत्रय-विचार

भूआ मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी की मामी के पुत्रों को पितृबांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो तीन दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १ दिन का पातक होता है। और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का।

राहु कालम्

शुभ कार्यों में विशेषतया त्याज्य

दक्षिण भारत में राहु-कालम का विशेष प्रचलन है। विशेष वार प्रतिदिन डेढ़ घण्टे के लिए यह अनिष्ट समय होता है। जिसे शुभ कार्यारम्भ में यथासम्भव टाल देना चाहिए। दक्षिणी भारत में राहु कालम का विशेष विचार किया जाता है।

सोमवार—प्रात: ७/३० से प्रात: ९ बजे तक
मंगलवार—अपरान्ह ३/०० से ४/३० बजे तक
बुधवार—दोपहर १२/०० से १/३० बजे तक
बृहस्पतिवार—दोपहर १/३० से ३/०० बजे तक
शुक्रवार—प्रात: १०/३० से दुपै. १२ बजे तक
शनिवार—प्रात: ९/०० से प्रात: १०/३० बजे तक
रविवार—सायं ४/३० से सायं ६/०० बजे तक

स्त्री जातक विचार

- यदि कन्या की जन्म कुण्डली में सप्तमेश ग्रह के साथ शनि स्थित हो, तो ऐसी कन्या का विवाह बड़ी आयु में होता है।
- यदि सूर्य, मंगल, बुध लग्न में हो और गुरु द्वादश भाव में स्थित हों, तो भी उस कन्या का विवाह दीर्घकाल में ही होता है।
- जिस स्त्री के जन्म काल में सप्तम भाव में शुभ-अशुभ—दोनों प्रकार के ग्रह होते हैं, उसके दो विवाहों के योग बनते हैं।
- यदि किसी स्त्री के सप्तम भाव में सूर्य हो अथवा अन्य कोई पाप ग्रह ७वें भाव में स्थित हो, तो ऐसी स्त्री को वैवाहिक—सुख कम मिलता है।
- यदि सप्तम भाव में बुध तथा शनि की युति हों, तो ऐसी स्त्री का पति नपुंसक होता है।
- आठवें भाव में बुध गया हो ऐसी स्त्री काक—बन्ध्या होती है अर्थात् एक बार सन्तान होकर पुन: सन्तान होने में बाधा होती है।

विष कन्या योग

- शनिवार, आश्लेषा नक्षत्र और द्वितीया तिथि—में तीनों जिस दिन मिलें उस दिन जन्मी कन्या विष कन्या होती हैं।
- मंगलवार, विशाखा नक्षत्र और द्वादशी तिथि—ये तीनों जिस दिन मिलें, उस दिन जन्मी कन्या विष कन्या होती हैं।
- यदि पंचम भाव में धन अथवा मीन राशि हो तथा गुरु पंचम भाव में स्थित हो अथवा पंचम भाव पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो, तो ऐसे योग वाली स्त्री को उपाय से सन्तान होती है।

माला योग

- यदि कुं. में बुध, गुरु और शुक्र ४, ७, १०वें स्थानों में स्थित हों, और शेष ग्रह इनमें भिन्न भावों में पड़ें हों, तो माला योग होता है। इस योग के होने से जातक धनवान् वस्त्राभूषणों से युक्त, एक से अधिक स्त्रियों से प्रेम सम्बन्ध रखने वाला, एवं उच्च अधिकारी होता है। चुनाव, कम्पीटीशन आदि में प्राय: सफल रहता है।

शकट योग

- जन्म कुण्डली में यदि लग्न और सप्तम भाव में समस्त ग्रह पड़े हों तो शकट योग होता है। इस योग वाला व्यक्ति स्वार्थी, चतुर, रोगी, दुष्ट, अल्प-विद्या, ड्राईवरी एवं संचालनादि कार्यों में सफल होता है। धन की उसे प्राय: कमी रहती है। बन्धुओं का सुख भी नहीं होता।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ प्रसूति लग्नादि का विचार

मेष—बालक के जन्म समय मेष लग्न हो तो घर के पूर्व की ओर प्रसूतिका की शय्या, दो उपसूतिकाएँ अथवा लग्न व चन्द्रमा के मध्य में जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिका की संख्या जानें, मुख की कांति लाल वर्ण की, माता का मुख पूर्व की ओर, बालक की प्रकृति पित्तकारक, चंचल एवं साहसी होगी। माता के वस्त्र लाल वर्ण के तथा उसने पहले मीठा भोजन किया हो। जन्म के बाद बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। मकान पुराना होगा। आयु के २, ४, ११, १६, २९वें साल विशेष कष्ट रहे।

वृष—बालक के जन्म समय वृष लग्न हो, तो बालक गौरपूर्ण सुन्दर रूप, द्वार एवं माता का शिर दक्षिण की ओर, रक्त-पित्त प्रकृति, माता ने श्वेत वस्त्र और चाँदी के आभूषण पहने हों, पहले शाकादि का भोजन किया हो। पाँव से प्रसवोत्पन्न, ३ या ४ उपसूतिकाएँ हों। आयु के १, १३, १८, ३३, ४३, ५८वें वर्ष में विशेष कष्ट हो।

मिथुन—बालक का चंचल स्वभाव, वात-श्लेष्म (वायु बलगम) प्रकृति, उपसूतिकाएँ (स्त्रियाँ) ३ या ५, माता का मुख पश्चिम की ओर, स्तनों में दूध कम उतरा हो, माता ने पहले नमकीन विचित्र (मिश्रित) भोजन किया हो, वस्त्र हरा पुराना, गृह का द्वार पश्चिम की ओर हो, शिराभिमुख प्रसव हुआ हो, बालक ने दीर्घ स्वर में रूदन किया हो। आयु के २, ४, १०, १३, ३८, ४८वें साल कष्ट रहे।

कर्क—गौर वर्ण, कोमल पर पुष्ट शरीर, चंचल नेत्र, वात-श्लेष्म प्रकृति, कद लम्बा व गोल, सुन्दर मुख, माता का मुख उत्तर की ओर, प्रसव से पूर्व माता ने मीठा-शीतल थोड़ा भोजन किया हो, तथा पुराने वस्त्र पहिने हो, माता के दाहिने अंग पर लहसन का निशान हो, प्रसव से पूर्व माता ने श्वेत व गुलाबी वस्त्र व चाँदी के आभूषण पहिने हों। प्रसवोपरान्त बालक कुछ देर से रोया हो। वह जलीय (liquids) का शौकीन हो। आयु के १, ५, २५, ३९, ४८, ६२वें वर्ष कष्ट।

सिंह—जन्म समय सिंह लग्न हो, तो माता का मुख पूर्व किन्तु गृहद्वार दक्षिण की ओर, उसने रक्त वस्त्र एवं सुवर्ण आभूषण पहने हों, प्रसव पूर्व उसने खट्टा व कसैला भोजन किया हो। जन्म समय ३ या ५ स्त्रियाँ, नया मकान, बालक की पीठ पर चिन्ह हो और वह दीर्घ स्वर में रोया हो। आयु के ३, ५, १२, २८, ३६, ४९वें वर्ष कष्ट रहे।

कन्या—इस लग्न का स्वामी बुध है। जन्म समय बालक के सुन्दर नेत्र, गौर वर्ण, अल्प बाल, गोल चेहरा, सौम्य पांव, चंचल वृत्ति, कण्ठ व जंघा में चिह्न हो। माता का मुख दक्षिण की ओर, स्त्रियां ४ या ५, माता लाल एवं प्राचीन वस्त्र, कसैला सहित भोजन, पिता घर से बाहर, बालक अल्प शब्द से रोया हो। आयु के २, ४, १५, २३, २५, ३५, ४५, ५६वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

तुला—गौरवर्ण, कुछ लम्बा चेहरा, काले नेत्र, बड़ी नाक, थोड़े बाल, चंचल, तीक्ष्ण बुद्धि, दुबला कृश शरीर, माता का मुख पश्चिम की ओर, कषाय भोजन किया हो तथा पुराने वस्त्र धारण किए हों, बालक-बालिका दीर्घ शब्द में रोए। आयु के ३, ६, ८, १५, २७, ३१वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

वृश्चिक—ऊँचा मस्तक, सौम्य प्रकृति, पुष्ट शरीर, ताम्रवर्ण भूरे नेत्र, शीर्षोदय, तेज स्वभाव, केश लम्बे, स्त्रियाँ २ या ३, गृह का द्वार उत्तर की ओर, बालक की पीठ पर चिन्ह, माता ने लाल वस्त्र पहनें हों, बालक देर से रोया हो। आयु के २,६,११,२७,५८वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

धनु—रंग गोरा, ऊँचा मस्तक, बड़े नेत्र, माता का मुख पूर्व की ओर, पीले वस्त्र सहित चित्रित वस्त्र एवं पकवान भोजन किया हो, बालक की छाती पर चिन्ह, माता का मुख उत्तर-पूर्व की ओर होगा तथा जन्म समय १ या ५ स्त्रियां, बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। वर्ष के १, ३, १०, १८, २१, ३७, ४२वें वर्ष विशेष कष्टकारी होंगे।

मकर—जन्म समय कृश शरीर, पिंगल वर्ण, बहुत केश, ऊँचा मस्तक एवं ऊँची नाक, वात-विकार, माता का सिर दक्षिण की ओर, पुराना काला, नीला वस्त्र धारण किया हो, कसैला भोजन व शीतल जल पिया हो, स्त्रियां ३ या ४ हों, सूतिका गृह प्राचीन एवं गृह द्वार उत्तर की ओर, जन्म के बाद बालक ने थोड़ा रोया हो। आयु के ३, ५, १३, २७, ३३, ५७वें वर्ष में विशेष कष्ट रहें। जातक पर शनि का विशेष प्रभाव रहे।

कुम्भ—जन्म समय कुम्भ लग्न हो, तो बालक-बालिका का चौड़ा मस्तक, कुछ मोटे होंठ, वात-पित्त प्रकृति, श्वेत-श्याम वर्ण, धूम्रवर्ण वस्त्र, मध्यम केश, माता का मुख पश्चिम की ओर, ३ या ५ स्त्रियाँ, शाकादि का भोजन किया हो, माता को शरीर कष्ट, पिता घर में न हो तथा बालक-बालिका ने थोड़ा रूदन किया हो। आयु के २, ४, १३, २८, ३३, ४२, ४८, ५४वें वर्ष विशेष कष्ट हो। बालक पर शनि ग्रह का विशेष प्रभाव रहेगा।

मीन—बालक जन्म समय सुन्दर सौम्य एवं पीत (पिंगल) वर्ण, वात-श्लेष्म कफ प्रकृति, माता पीले वर्ण सहित मिश्रित वर्ण के वस्त्र धारण किए हुए मिष्ठान्न सहित अल्प भोजन किए, उस का मुख उत्तर की ओर, जन्म समय २ या ३ स्त्रियां हों, बालक जन्म से कुछ देरी के बाद रोया हो। आयु के १, ७, १०, १३, १६, २६, २९, ३८, ४१वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

ग्रह व राशियों के तत्त्वों पर से शारीरिक स्थिति

जन्म समय जिस प्रकार की उदित लग्न राशि और ग्रह के तत्त्व होंगे, जातक की शरीर संरचना भी वैसी ही होगी। शरीर की स्थिति के सम्बन्ध में विचार करने के लिए ग्रह और राशियों के तत्त्व नीचे लिखे जाते हैं—

ग्रह	शुष्कादि	तत्त्व	कद
सूर्य	शुष्क ग्रह	अग्नि	मध्यम
चन्द्र	जल ग्रह	जल	दीर्घ
मंगल	शुष्क ग्रह	अग्नि	ह्रस्व
बुध	जलीय	पृथ्वी	मध्यम
गुरु	जलीय	आकाश या तेज	मध्यम या ह्रस्व
शुक्र	जलीय	जल तत्त्व	ह्रस्व
शनि	शुष्क	वायु तत्त्व	दीर्घ
राहु	शुष्क	वायु	दीर्घ
केतु	शुष्क	वायु	मध्यम

राशि तत्त्व

मेष	अग्नि	ह्रस्व
वृष	पृथ्वी	ह्रस्व
मिथुन	वायु	मध्यम
कर्क	जल	मध्यम
सिंह	अग्नि	दीर्घ
कन्या	पृथ्वी	दीर्घ
तुला	वायु	दीर्घ
वृश्चिक	जल	दीर्घ
धन	अग्नि	मध्यम
मकर	पृथ्वी	मध्यम
कुम्भ	वायु	ह्रस्व
मीन	जल	ह्रस्व

(१) जन्म लग्न में जल राशि हो एवं उसमें जल तत्त्व ग्रह की स्थिति हो, तो जातक का शरीर मोटा एवं पुष्ट होगा।

(२) लग्न एवं लग्नाधिपति ग्रह जलराशिगत हो, तो भी शरीर स्थूल एवं पुष्ट होगा।

(३) यदि जन्म लग्न अग्नि राशि का हो और अग्नि तत्त्व के ग्रह उसमें स्थित हों, तो मनुष्य शक्तिशाली एवं बली होता है, पर शरीर देखने में दुबला लगेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(४) पृथ्वी राशि का लग्न हो और उसका राशि स्वामी ग्रह जल राशि में हो तो शरीर साधारणतया स्थूल होता है।

(५) पृथ्वी राशि लग्न हो और लग्नपति ग्रह पृथ्वी राशि में हो, तो शरीर स्थूल और दृढ़ होता है।

(६) यदि लग्न राशि पृथ्वी तत्त्व की हो और उसमें पृथ्वी तत्त्व का ही ग्रह पड़ा हो, तो जातक नाटे (छोटे) कद वाला होता है।

(७) यदि लग्न वायु तत्त्व राशि वाला हो और उसमें वायु तत्त्व के ग्रह हों, तो जातक दुबला, परन्तु तीक्ष्ण बुद्धि वाला होगा।

(८) यदि लग्न अग्नि या वायु तत्त्व की राशि वाला हो और लग्नाधिपति जल राशिगत हो तो शरीर स्थूल होगा।

(९) यदि लग्न में अग्नि या वायु तत्त्व की राशि हो और लग्नेश ग्रह पृथ्वी राशिगत हो, तो हड्डियाँ साधारणतया मज़बूत और शरीर पुष्ट होगा।

इसके साथ ही लग्न की राशि ह्रस्व, दीर्घ या सम (मध्यम), जिस प्रकार की हो, उसी के अनुसार जातक के शरीर की ऊँचाई समझनी चाहिए।

इसी भान्ति लग्न राशि और लग्नेश ग्रह के अनुसार जातक के रूप-रंग का निर्णय करना चाहिए।

राशियों द्वारा वर्ण ज्ञान

मेष लग्न में लाल मिश्रित, **वृष** में पीला मिश्रित श्वेत, **मिथुन** में विविध मिश्रित श्वेत, **कर्क** में नीला मिश्रित सफेद, **सिंह** में गन्दमी, **कन्या** में श्याम मिश्रित सफेद, **तुला** में तालिका युक्त सफेद, **वृश्चिक** में लालिमा युक्त सफेद, **धनु** में पीत वर्ण युक्त सफेद, **मकर** में चितकबरा सफेद, **कुम्भ** में आकाश सदृश नीला, **मीन** में पीत युक्त गौर वर्ण। इस भान्ति लग्न राशि और लग्नेश के स्वरूप के अनुसार जातक के रूप-रंग का निश्चय करना चाहिए। इसके अतिरिक्त लग्न पर ग्रहों की दृष्टियों का भी प्रभाव रहता है।

ग्रहों के अनुसार वर्ण (रूप-रंग) विचार

सूर्य से रक्त-श्याम (गन्दमी) **चन्द्र** से गौरवर्ण, **मंगल** से लाल वर्ण, **बुध** से दूर्वादल के समान श्यामल, **गुरु** सुवर्ण (बादामी), **शुक्र** से (नीलिमा युक्त) सफेद, **शनि** से श्यामवर्ण, **राहु** से कृष्ण एवं **केतु** से **धूम्र वर्ण** जानना चाहिए। **बुध-शुक्र** एक साथ हों तो गौरववर्ण न होते हुए भी सुन्दर आकृति होती है। **लग्न** एवं लग्नेश पर पाप ग्रह की दृष्टि होने से जातक के सौन्दर्य में कमी आती है।

शरीर के अंगों पर व्रण, तिलादि का विचार—जिस अंग का विचार करना हो, उस अंग की राशि जिस प्रकार की ह्रस्व या दीर्घ हो तथा उस राशि में रहने वाला जैसा ग्रह होगा, उस अंग की वैसी ही स्थिति (ह्रस्व या दीर्घ) होगी।

द्वादश भावों में अंग ज्ञान—ज्योतिष शास्त्र में **लग्न भाव** में स्थित राशि से सिर, **दूसरे भाव** की राशि को मुख, **तीसरे भाव** से वक्षस्थल और फेफड़े, **चौथे भाव** की राशि से हृदय और छाती, **पंचम** स्थान से कुक्षि और पीठ, **छठे भाव** से कमर और आंते, **सप्तम** स्थान से नाभि और गुप्तांग के बीच का स्थान, **अष्टम** स्थान से गुप्तांग, **नवम्** भाव से ऊरू और जंघा, **दशम्** स्थान से टेहुना, **एकादश** स्थान की राशि से पिण्डलियाँ, **द्वादश** स्थान से पाँव का विचार करना चाहिए।

राशि के अनुसार अंगों का विचार—(१) **मेष राशि** से मुख, मस्तिष्क। (२) **वृष** से नेत्र, जिह्वा, कण्ठ, भुजाएँ। (३) **मिथुन** राशि से हाथ, कन्धे, हृदय। (४) **कर्क** से पेट, (५) **सिंह** राशि से कमर, पीठ, मेरूदण्ड। (६) **कन्या** राशि से नाभि, पेट। (७) **तुला** राशि से नाभि के नीचे, गुर्दे, मूत्राश्य। (8) **वृश्चिक** से मूत्रेन्द्रिय, जननेन्द्रिय, गुदा आदि। (9) **धनु** से जंघाएँ, नितम्ब। (10) **मकर** राशि से दोनों घुटने। (11) **कुम्भ** से दोनों पिंडलियां। (12) **मीन** राशि से दोनों पाँवों का विचार किया जाता है।

काल पुरुष में राशि ज्ञान

काल पुरुष एक काल्पनिक विराट् समय को पुरुष माना गया है, जिसमें द्वादश राशियों की कल्पना की गई है।

कालपुरुष के शिर में मेष राशि मुख में वृष, वक्षस्थल में मिथुन, हृदय में कर्क, उदर में सिंह, कटि में कन्या इत्यादि काल पुरुष

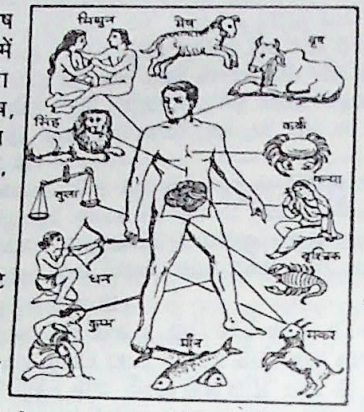

के शरीर की राशि जानें। जिस लग्न में बालक जन्मे वह शिर जानना अन्य सब राशि क्रम से अंग होते हैं।

ग्रहों के अनुसार अंगों पर चिन्ह विचार

जिस भाव एवं राशि पर पाप ग्रह हों, उसमें व्रण (घाव) आदि और जिसमें शुभ ग्रह हों, उस स्थान पर चिन्ह कहना चाहिए। यदि ग्रह अपनी राशि या अपने नवांश में हो, तो, व्रण या चिन्ह जन्म (गर्भ) से ही समझना चाहिए। अन्यथा ग्रह की अपनी दशा के समय व्रण या चिन्ह प्रकट होते हैं।

यदि किसी जातक के जन्म लग्न में मंगल और सप्तम भाव में गुरु या शुक्र हो, तो उसके सिर में व्रण (दाग) होता है।

जन्म लग्न में **मंगल-शुक्र** और चन्द्रमा हों तो जातक को जन्म से दूसरे या छठे वर्ष सिर में चोट लगने से घाव होता है। जन्म लग्न में शुक्र और आठवें स्थान में राहु हो, तो मस्तक या बाएँ कान में चिन्ह होगा। यदि लग्न में गुरु, सप्तम में राहु और आठवें स्थान में पाप ग्रह हों, तो जातक के बाएँ हाथ में चिन्ह होता है अथवा लग्न में गुरु या शुक्र हो और अष्टम में पाप ग्रह हों, तो भी बाएँ हाथ पर चिन्ह होगा।

पाँचवें या नवें (८, ९) शनि हो और उस पर शुक्र की दृष्टि हो, तो मूत्रेन्द्रिय या गुदा के समीप तिल होता है। पांचवें या नवम् भाव में शुक्र और बुध हों, अष्टम में गुरु और लग्न या चतुर्थ भाव में शनि हो, तो पेट पर चिन्ह होता है। **चतुर्थ स्थान** में राहु या शुक्र दोनों में से एक ग्रह स्थित हो और लग्न में शनि या मंगल स्थित हो, तो पाँव के तलवे में चिन्ह होता है। दूसरे भाव में शुक्र, **आठवें भाव** में सूर्य और तीसरे में मंगल हो तो जातक की कमर के आस-पास चिन्ह होता है। १२वें भाव में गुरु, नौवे भाव में चन्द्रमा और तीसरे या ११वें में बुध हो, तो गुदा स्थान में चिन्ह होता है।

जातक के शरीर में तिल, मस्सा, चिन्ह आदि का विचार लग्न राशि, लग्न स्थित द्रेष्काण राशि एवं शीर्षोदय राशि आदि के द्वारा भी किया जाता है।

पितृ-परोक्ष ज्ञान

बालक के जन्म समय पिता घर में था या नहीं ? जन्मकुण्डली में यदि लग्न को चन्द्रमा न देखता हो तो बालक के जन्म समय उसका पिता घर में नहीं था, यदि सूर्य जन्म लग्न से अष्टम, नवम, एकादश तथा द्वादश स्थान में चर राशि का होकर पड़ा हो और चन्द्रमा लग्न को न देखता हो तो पिता बालक के जन्म समय दूसरे देश में था। इन्हीं उपरोक्त स्थानों में सूर्य स्थित राशि का हो तो पिता घर में नहीं था, परन्तु देश ही में है। इसी प्रकार सूर्य के द्विस्वभाव में होने पर मार्ग में कहे, परन्तु इन सब योगों में लग्न को चन्द्रमा न देखता हो तो ऐसा होगा।

माता पिता को अरिष्ट योग

पिता के लिये सूर्य तथा दशम् स्थान से और माता के लिये चन्द्रमा तथा चतुर्थ स्थान से विचार करना चाहिये। यदि बालक की जन्मकुण्डली में सूर्य के साथ अथवा दशम् स्थान में पाप ग्रह बैठे हों या देखते हों या सूर्य पाप ग्रहों के बीच में पड़ा हो तो बालक के जन्म समय पिता को कष्ट जानना चाहिये। यदि सूर्य से ४/ ६ /८ स्थान में पाप ग्रह हों, शुभ कोई भी न हो तो भी पिता को कष्ट जानें।

इसी प्रकार चन्द्रमा तथा चतुर्थ भाव से माता का विचार करें। चन्द्रमा के साथ २। १२ स्थान में व ४। ६। ८ स्थान में क्रूर ग्रह हों, शुभ न हों तो माता को कष्ट जाने।

पंचाँग-परिवर्तन करना

जालन्धर से अतिरिक्त नगर की जन्मपत्री निर्माण हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। इस प्रक्रिया द्वारा आप भारत के किसी भी नगर का सू. उ. ज्ञात करके जालन्धर के सू.उ. से अन्तर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पंचाँग-परिवर्तन करना

'पंचांगदिवाकर' में जहाँ तिथि, नक्षत्र, योगादि का समाप्ति काल तथा ग्रहों की वक्री-मार्गी तथा राशि चार्ट भा. स्टै. टा. में दिए गए हैं, उन (समयों) में भारत के किसी अन्य स्थल के लिए कोई संस्कार करने की आवश्यकता नहीं है तथा विश्व के किसी अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्रादि का समाप्ति काल जानने हेतु भा. स्टै. टा. से उस देश का स्टै. अन्तर जमा या घटा कर प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु **पंचांगदिवाकर** में तिथ्यादि के समाप्ति काल घड़ी पलों में दिए हुए हैं, क्योंकि यह घड़ी पल जालन्धर के स्पष्ट सूर्योदय काल से हैं, इसलिए अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र राशि प्रवेश आदि हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। यह ध्यान रहे कि भारतीय ज्योतिष में वार (रविवार, सोमवार) का प्रारम्भ तथा तिथि, नक्षत्र आदि का घड़ी पलों में समाप्तिकाल सूर्योदय के समय से ही माना जाता है।

भारत के किसी भी अन्य नगर का पंचांग अर्थात् तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र-सूर्यादि संचार घटी पलों में प्राप्त करना हो तो आप इसी पंचांग में आगामी पृष्ठों से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश, रेखांशादि ज्ञात करके मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से सू. उ. ज्ञात कर लें। आपके अभीष्ट नगर के सू. उ. का जालन्धर के सूर्योदय से जितना अन्तर होगा, उसके घड़ी पल बनाकर $2\frac{1}{2}$ गुणा करके) ऋण (घटावे) या जमा (धन) करे। यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पूर्व अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर से पूर्व (पहले) होगा, वहाँ सूर्योदय अन्तर (कालान्तर) के घड़ी पल बनाकर पंचांगदिवाकर में तिथ्यादि के घड़ी-पलों में जमा करें तथा यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पश्चिम में स्थित होगा अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर के सू. उ. से बाद होगा, वहाँ कालान्तर के घड़ी पल बनाकर तिथ्यादि के घड़ी-पल में से घटावें।

उदाहरण—मान लीजिए 8 अप्रै., 2007 ई. को दिल्ली का पंचांग बनाना है, तो दिल्ली का अक्षांश, स्टै. अन्तर प्राप्त कर मध्यम सूर्योदय सारिणी से 6/08 सू.उ. प्राप्त (घण्टा मिनट वाले पृष्ठों से दिल्ली का तैयार दैनिक सू. उ. देख सकते हैं) हुआ जोकि जालन्धर के सू. उ. (6/12) से 4 मिनट पूर्व (पहले) है। अत: घड़ी पलों में तिथि, नक्षत्रादि दिल्ली के प्राप्त करने के लिए हमें जालन्धर के तिथि, नक्षत्र आदि में 4 मिनट के घटी पल 10 पल जमा करने होंगे। (ढाई गुणा करके)। **ध्यान रहे,** सूर्योदय अन्तर नगरों में सदैव एक समान नहीं रहता। इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि भारतीय ज्योतिष अनुसार जन्मपत्री निर्माण के समय जन्मपत्री में उसी तिथि, नक्षत्रादि के घड़ी पल लिखे जाते हैं जो जातक के जन्म वार के दिन स्थानीय सू. उ. के समय वर्तमान हो। चाहे वह तिथि, नक्षत्र जातक के जन्म से पूर्व ही समाप्त क्यों न हो जाए। कई बार पंचांग परिवर्तन करते हुए तिथियों/नक्षत्रों के क्षय या वृद्धि में भी अन्तर पड़ सकता है।

8 अप्रैल, 2007 ई. को जालन्धर का पंचांग—**8 अप्रैल, 2007 ई. को दिल्ली का पंचांग**

	घटी पल		घटी पल
तिथि —	९/०८ (समाप्ति काल)	**तिथि** —	९/१८ (समाप्ति काल)
नक्षत्र —	३८/१३	**नक्षत्र** —	३८/२३
योग —	३/०५	**योग** —	३/१५

जालन्धर से अतिरिक्त नगर की जन्मपत्री निर्माण हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। इस प्रक्रिया द्वारा आप भारत के किसी भी नगर का सू. उ. ज्ञात करके जालन्धर के सू.उ. से अन्तर जानकर पंचांग परिवर्तन कर सकते हैं। जबकि जहाँ तिथ्यादि, ग्रहों के वक्री-मार्गी का समय भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं है। घण्टा मिनट वाले पृष्ठों पर सर्वत्र समय (तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र संचार आदि का) भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं।

लग्न सारिणी द्वारा लग्न स्पष्ट करने की विधि

आगामी पृष्ठों पर विभिन्न अक्षांशों पर आधारित, निर्मित लग्न सारिणियां दी गई हैं। जिस नगर का लग्न स्पष्ट करना हो, सर्वप्रथम अपने अभीष्ट काल का सूर्योदयात् इष्टकाल घट्यादि में बना ले। इसके लिए उस स्थान का सही सूर्योदय का ज्ञान होना आवश्यक है। अपने नगर की शुद्ध एवं सूक्ष्म **सूर्योदय काल** जानने के लिए पंचांगदिवाकर के आगामी पृष्ठों में दी गई। **अक्षांश सारिणियों** का प्रयोग करना चाहिए। स्थानीय इष्टकाल बना लेने के पश्चात् अपने अभीष्ट काल का सूर्य स्पष्ट ग्रहण करें। सूर्यस्पष्ट जिस राशि के जितने अंश पर हो, लग्न सारिणी में उसी राशि के सामने तथा सूर्य स्पष्ट के अंशों के कोष्ठक के नीचे जितने घड़ी पल हो, उनमें अपने इष्ट के घड़ी पल जोड़ (जमा) देने से लग्न स्पष्ट जानने के लिए घड़ी पल होंगे। यह घड़ी पल लग्नसारिणी में जिस राशि के सामने और जितने अंश के नीचे होगा, वही राश्यादि पर लग्नस्पष्ट होगा।

उदाहरण—मान लीजिए, विक्रमी संवत् २०६४ मध्ये कांगड़ा (हि. प्र.) में वैशाख कृष्ण तृतीया प्रविष्टे २३ चैत्र, तदनुसार 5 अप्रै., २००७ ई. को दोपहर २ बजकर २४ मिनट पर उत्पन्न बालक का लग्न स्पष्ट करना है। इसका सूर्योदयात् ईष्ट २० घड़ी ३० पल बनेगा तथा ईष्टकालिक सूर्यस्पष्ट ११/२१°/१४'/१५'' होगा। कांगड़ा का अक्षांश ३२/०५ होने के कारण आगामी पृष्ठों पर दी गई उसके निकटवर्ती अक्षांश ३१/२० की लग्न सारिणी प्रयोग में लाई जा सकती है। लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट की राशि अर्थात् मीन राशि के सामने और २१° अंश के नीचे कोष्ठक में हमें १/४१ घट्यादि प्राप्त हुए। इनको जन्म इष्ट के घटयादि २०/३० में जमा कर देने से कुल जोड़ २२/११ घट्यादि बनेगा। इस जोड़ को पुन: लग्न सारिणी में निकटवर्ती संख्या २२/११ कर्क (३) राशि के सामने और २७ अंश के नीचे प्राप्त हुई। यह संख्या हमारे कुल जोड़ २०/११ से केवल ४ पल अधिक है। अब अनुपातिक विधि द्वारा ४ पलों के कलादि निकाल लेने से हमें इष्टकालिक लग्न स्पष्ट पता चल जाएगा। **जैसे** यदि १२ पल के पीछे १ अंश अर्थात् ६० कला का अन्तर पड़ता है तो १ पल के पीछे ५ कला का अन्तर पड़ेगा। इसी प्रकार ४ पलों के पीछे २० कलाओं का अन्तर पड़ेगा। इस प्रकार उपरोक्त इष्टकाल पर (२०/३० घट्यादि) ३ गत राशि अर्थात् कर्क लग्न, २६ अंश, ४० कला पर लग्न स्पष्ट होगा। (लग्न स्पष्ट ३/२६°/४०'/००')। अधिक सूक्ष्मता के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित पुस्तक **'ज्योतिष तत्त्व'** का अध्ययन करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

उत्तर पलभा १५।०।।५० — लग्न सारणी लंदन (अक्षांश ५१।३०) — चरखण्ड १५१।१२०।५१

उपरोक्त लंदन सारिणी विदेशी नगरों जैसे—लंदन, बर्मिंघम, साऊथ हैम्पटन, आक्सफोर्ड, स्लोह तथा लंदन के आसपास नगरों के लग्न निकालने के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगी। ध्यान रहें, लग्न स्पष्ट करने के लिए लंदनादि नगरों का ही सूर्योदय एवं सूर्य स्पष्ट करना चाहिए।

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	घ.	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४
	प.	४६	५०	५५	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३५	४०	४६	५२	५८	३	९	१५	२१	२७	३२	३८	४४	५०	५७	२	८	१२	१८	२४
१ वृष	घ.	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८
	प.	३०	३५	४१	४७	५३	५९	५	११	२०	३०	३९	४८	५७	६	१५	२४	३३	४२	५१	००	०७	१५	२३	३२	४१	५०	५९	८	१७	२६
२ मिथुन	घ.	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४
	प.	३५	४४	५३	०२	११	२०	३१	४२	५३	०२	१५	२८	४१	५४	०७	२०	३३	४६	५९	१२	२४	३७	५०	०३	१६	२९	४२	५५	०७	१९
३ कर्क	घ.	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१
	प.	२९	४२	५५	०८	२०	३३	४६	५९	१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५२	०७	२१	३५	५०	०४	१८	३२	४६	००	१३	२७	४१	५५	०९
४ सिंह	घ.	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८
	प.	२३	३७	५२	०६	२०	३४	४८	०३	१७	३१	४५	५९	१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	१८	१८	३२	४६	००	१४	२८	४२	५६	१०
५ कन्या	घ.	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५
	प.	२४	३८	५२	०७	२१	३५	५०	०२	१६	३०	४५	५९	१३	२७	४२	५६	१०	२३	३७	५१	५	१९	३३	४७	०१	१५	२९	४३	५७	११
६ तुला	घ.	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४२
	प.	२५	३९	५३	०७	२२	३७	५१	०५	२०	३४	४८	०२	१६	३१	४५	००	१३	२७	४१	५५	९	२३	३७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	०५
७ वृश्चिक	घ.	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८
	प.	३०	४४	५८	१२	२६	४१	५६	१०	२३	३५	४७	५८	१२	२६	३८	५०	०२	१६	२८	४२	५४	०६	१९	३१	४४	५६	०८	२०	३२	४४
८ धनु	घ.	४८	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३
	प.	५९	११	२४	३७	४९	०२	१५	२७	३८	४७	५५	०४	१३	२२	३१	४०	४९	५८	०६	१५	२४	३३	४२	५१	००	०८	१७	२६	३५	४४
९ मकर	घ.	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७
	प.	५२	०१	१०	१९	२८	३७	४६	५५	००	०६	१२	१७	२३	२९	३४	४०	४६	५२	५८	०४	१०	१६	२२	२८	३४	३९	४५	५१	५७	०३
१० कुम्भ	घ.	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९
	प.	०८	१३	१९	२५	३०	३५	४१	४७	५२	५७	०१	०५	०९	१४	१९	२३	२८	३३	३७	४१	४५	५०	५५	००	०४	०८	१३	१७	२२	२७
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	प.	३१	३५	३९	४४	४८	५२	५७	०२	७	११	१५	२०	२४	२८	३३	३७	४१	४५	४९	५३	५८	०३	०८	१३	१८	२२	२७	३२	३७	४२

अक्षांश १९°

पलभा ४।७।५५

मुम्बई, कल्याण, पूना, औरंगाबाद, अहमदनगर, बस्तर, खण्डाला, भुवनेश्वर, पुरी, दादरा आदि नगरों के लिए

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
	प.	६	१४	२१	२९	३७	४५	५३	१	१०	१९	२८	३६	४५	५४	३	१२	२१	३०	३८	४७	५६	५	१४	२३	३२	४१	४९	५८	७	१६	२५
१ वृष	घ.	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२
	प.	२५	३४	४३	५१	०	९	१८	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	५०	००	१०	२०	३०	४१	५२	२	१२	२३	३३	४३	५४	४	१४	२५
२ मिथुन	घ.	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	२४	१४	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
	प.	२५	३५	४५	५६	६	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४८	५८	१०	२१	३२	४३	५५
३ कर्क	घ.	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
	प.	५५	६	१७	२८	३९	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७
४ सिंह	घ.	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
	प.	२७	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	६	१७	२७	३८	४९	५९	१०	२१	३१	४२	५३	३	१४	२४	३५	४६	५६	६	१७	२८	३९	५०
५ कन्या	घ.	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
	प.	५०	०	११	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४६	५७	८	१८	२९	४०	५०	१	१२	२२	३३	४३	५४	५	१५	२६	३७	४७	५८	०९
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
	प.	९	१९	३०	४०	५१	०२	१२	२३	३४	४५	४६	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७
७ वृश्चिक	घ.	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५
	प.	३७	४९	००	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२९	४०	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२२	३२	४२	५४	५	१६	२७	३९	५०	१	१३
८ धनु	घ.	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०
	प.	१३	२४	३५	४६	४७	९	२०	३१	४१	५२	२	१२	२३	३३	४२	५४	४	१४	२५	३५	४५	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	८	१८	२९
९ मकर	घ.	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
	प.	२९	३९	४९	००	१०	२०	३१	४१	५०	५९	८	१६	२५	३४	४३	५२	१	१०	१८	२७	३६	४५	५४	३	१२	२१	२९	३८	४७	५६	५
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	५	१४	२३	३१	४०	४९	५८	७	१५	२३	३१	३९	४६	५४	२	१०	१८	२९	३४	४२	५०	५८	५	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३
	प.	९	१७	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांश २३°

पलभा ५ ।५ ।३८

कलकत्ता, अहमदाबाद, इटारसी, इन्दौर, उज्जैन, कटनी, कच्छ, जबलपुर, भोपाल, राँची, हौशंगाबाद आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	२ ५९	३ ६	३ १४	३ २१	३ २९	३ ३७	३ ४४	३ ५२	४ ०	४ ९	४ १८	४ २६	४ ३५	४ ४४	४ ५२	५ १	५ १०	५ १८	५ २७	५ ३५	५ ४४	५ ५३	६ १	६ १०	६ १९	६ २७	६ ३६	६ ४४	६ ५३	७ २	७ १०
१ वृष	७ १०	७ १९	७ २८	७ ३६	७ ४५	७ ५४	८ २	८ ११	८ २१	८ ३१	८ ४२	८ ५२	९ २	९ १२	९ २८	९ ३३	९ ४३	९ ५३	१० ४	१० १४	१० २४	१० ३५	१० ४५	१० ५५	११ ५	११ १६	११ २६	११ ३६	११ ४६	११ ५७	१२ ७
२ मिथुन	१२ ७	१२ १७	१२ २७	१२ ३७	१२ ४८	१२ ५८	१३ ९	१३ १९	१३ ३०	१३ ४१	१३ ५३	१४ ४	१४ १५	१४ २६	१४ ३८	१४ ४९	१५ ०	१५ ११	१५ २३	१५ ३४	१५ ४५	१५ ५६	१६ ८	१६ १९	१६ ३०	१६ ४२	१६ ५३	१६ ४	१७ १५	१७ २७	१७ ३८
३ कर्क	१७ ३८	१७ ४९	१८ ०	१८ १२	१८ २३	१८ ३४	१८ ४६	१८ ५७	१९ ८	१९ १९	१९ ३१	१९ ४२	१९ ५३	२० ५	२० १६	२० २७	२० ३९	२० ५०	२१ १	२१ १२	२१ २४	२१ ३५	२१ ४६	२१ ५८	२२ ९	२२ २०	२२ ३२	२२ ४३	२२ ५४	२३ ५	२३ १७
४ सिंह	२३ १७	२३ २८	२३ ३९	२३ ५१	२४ २	२४ १३	२४ २५	२४ ३६	२४ ४७	२४ ५८	२५ ९	२५ २०	२५ ३०	२५ ४१	२५ ५२	२६ ३	२६ १४	२६ २५	२६ ३६	२६ ४७	२६ ५८	२७ ९	२७ २०	२७ ३१	२७ ४२	२७ ५३	२८ ४	२८ १४	२८ २५	२८ ३६	२८ ४७
५ कन्या	२८ ४७	२८ ५८	२९ ९	२९ २०	२९ ३१	२९ ४२	२९ ५३	३० ४	३० १५	३० २६	३० ३७	३० ४८	३० ५८	३१ ९	३१ २०	३१ ३१	३१ ४२	३१ ५३	३२ ४	३२ १५	३२ २६	३२ ३७	३२ ४८	३२ ५९	३३ १०	३३ २१	३३ ३२	३३ ४२	३३ ५३	३४ ४	३४ १५
६ तुला	३४ १५	३४ २६	३४ ३७	३४ ४८	३४ ५९	३५ १०	३५ २०	३५ ३२	३५ ४३	३५ ५४	३६ ६	३६ १७	३६ २८	३६ ४०	३६ ५१	३७ २	३७ १४	३७ २५	३७ ३६	३७ ४७	३७ ५९	३८ १०	३८ २१	३८ ३३	३८ ४४	३८ ५५	३९ ७	३९ १८	३९ २९	३९ ४०	३९ ५२
७ वृश्चिक	३९ ५२	४० ३	४० १४	४० २६	४० ३७	४० ४८	४० ५९	४१ ११	४१ २२	४१ ३३	४१ ४५	४१ ५६	४२ ७	४२ १८	४२ ३०	४२ ४१	४२ ५२	४३ ३	४३ १५	४३ २६	४३ ३७	४३ ४९	४४ ००	४४ १[illegible]	४४ [illegible]३४	[illegible] ४५	४४ ५६	४४ ७	४५ १९	४५ ३०
८ धनु	४५ ३०	४५ ४१	४५ ५२	४६ ४	४६ १५	४६ २६	४६ ३८	४६ ४९	४६ ५९	४७ ९	४७ २०	४७ ३०	४७ ४०	४७ ५०	४८ १	४८ ११	४८ २१	४८ ३१	४८ ४२	४८ ५२	४९ २	४९ १३	४[illegible] २३	४९ ३३	४९ ४३	४९ ५४	५० ४	५० १४	५० २४	५० ३५	५० ४५
९ मकर	५० ४५	५० ५५	५१ ५	५१ १६	५१ २६	५१ ३६	५१ ४६	५१ ५७	५२ ५	५२ १४	५२ २३	५२ ३१	५२ ४०	५२ ४९	५२ ५७	५३ ६	५३ १४	५३ २३	५३ ३२	५३ ४०	५३ ४९	५३ ५८	५४ ६	५४ १५	५४ २४	५४ ३२	५४ ४१	५४ ४९	५४ ५८	५५ ७	५५ १५
१० कुम्भ	५५ १५	५५ २४	५५ ३३	५५ ४१	५५ ५०	५५ ५९	५६ ७	५६ १६	५६ २३	५६ ३१	५६ ३९	५६ ४६	५६ ५४	५७ १	५७ ९	५७ १७	५७ २४	५७ ३२	५७ ३९	५७ ४७	५७ ५५	५८ २	५८ १०	५८ १७	५८ २५	५८ ३३	५८ ४१	५८ ४७	५८ ५५	५९ ३	५९ ११
११ मीन	५९ ११	५९ १८	५९ २६	५९ ३३	५९ ४१	५९ ४९	५९ ५६	० ४	० ११	० १९	० २७	० ३४	० ४२	० ४९	० ५७	१ ५	१ १२	१ २०	१ २७	१ ३५	१ ४३	१ ५०	१ ५८	२ ५	२ १३	२ २१	२ २८	२ ३६	२ ४३	२ ५१	२ ५९

अक्षांश २७°

पलभा ६ ।६ ।५०

जयपुर, अयोध्या, लखनऊ, कानपुर, गोंडा, गोरखपुर, मथुरा, अजमेर, अलवर, जोधपुर, अलीगढ़, हरदोई, कन्नौज, उन्नाव, देवरिया, फैजाबाद, फर्रूखाबाद, भरतपुर, ग्वालियर आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	२ ५०	२ ५७	३ ४	३ १२	३ १९	३ २६	३ ३३	३ ४१	३ ४९	३ ५७	४ ६	४ १४	४ २२	४ ३१	४ ३९	४ ४७	४ ५६	५ ४	५ १२	५ २१	५ २९	५ ३७	५ ४६	५ ५४	६ २	६ ११	६ १९	६ २७	६ ३६	६ ४४	६ ५२
१ वृष	६ ५२	७ १	७ ९	७ १७	७ २६	७ ३४	७ ४२	७ ५१	८ १	८ ११	८ २१	८ ३१	८ ४१	८ ५१	९ १	९ ११	९ २२	९ ३२	९ ४२	९ ५२	१० २	१० १२	१० २२	१० ३२	१० ४२	१० ५२	११ ३	११ १३	११ २३	११ ३३	११ ४३
२ मिथुन	११ ४३	११ ५३	१२ ३	१२ १३	१२ २३	१२ ३३	१२ ४४	१२ ५४	१३ ५	१३ १६	१३ २८	१३ ३९	१३ ५१	१४ २	१४ १४	१४ २५	१४ ३६	१४ ४८	१५ ५९	१५ ११	१५ २२	१५ ३४	१५ ४५	१५ ५७	१६ ८	१६ १९	१६ ३१	१६ ४२	१६ ५४	१७ ५	१७ १७
३ कर्क	१७ १७	१७ २८	१७ ३९	१७ ५१	१८ २	१८ १४	१८ २५	१८ ३७	१८ ४८	१९ ००	१९ ११	१९ २३	१९ ३५	१९ ४६	१९ ५८	२० ९	२० २१	२० ३३	२० ४४	२० ५६	२१ ७	२१ १९	२१ ३१	२१ ४२	२१ ५४	२२ ५	२२ १७	२२ २९	२२ ४०	२२ ५२	२३ ३
४ सिंह	२३ ३	२३ १५	२३ २७	२३ ३८	२३ ५०	२४ १	२४ १३	२४ २५	२४ ३६	२४ ४७	२४ ५९	२५ १०	२५ २१	२५ ३२	२५ ४४	२५ ५५	२६ ६	२६ १८	२६ २९	२६ ४०	२६ ५२	२७ ३	२७ १४	२७ २५	२७ ३७	२७ ४८	२७ ५९	२८ ११	२८ २२	२८ ३३	२८ ४५
५ कन्या	२८ ४५	२८ ५६	२९ ७	२९ १८	२९ ३०	२९ ४१	२९ ५२	३० ०४	३० १५	३० २६	३० ३८	३० ४९	३० ००	३१ ११	३१ २३	३१ ३४	३१ ४५	३१ ५७	३२ ८	३२ १९	३२ ३१	३२ ४२	३२ ५३	३३ ४	३३ १६	३३ २७	३३ ३८	३३ ५०	३४ १	३४ १२	३४ २४
६ तुला	३४ २४	३४ ३५	३४ ४६	३४ ५७	३५ ९	३५ २०	३५ ३१	३५ ४३	३५ ५४	३६ ६	३६ १७	३६ २९	३६ ४१	३६ ५२	३७ ०४	३७ १५	३७ २७	३७ ३९	३७ ५०	३८ २	३८ १३	३८ २५	३८ ३७	३८ ४८	३९ ००	३९ ११	३९ २३	३९ ३५	३९ ४६	३९ ५८	४० ०९
७ वृश्चिक	४० ९	४० २१	४० ३३	४० ४४	४० ५६	४१ ७	४१ १९	४१ ३१	४१ ४२	४१ ५३	४२ ५	४२ १६	४२ २८	४२ ३९	४२ ५१	४३ २	४३ १४	४३ २५	४३ ३६	४३ ४८	४३ ५९	४४ ११	४४ २२	४४ ३४	४४ ४५	४४ ५६	४५ ०८	४५ १९	४५ ३१	४५ ४२	४५ ५४
८ धनु	४५ ५४	४६ ५	४६ १६	४६ २८	४६ ३९	४६ ५१	४७ २	४७ १४	४७ २४	४७ ३४	४७ ४४	४७ ५४	४८ ४	४८ १४	४८ २४	४८ ३४	४८ ४५	४८ ५५	४९ ५	४९ १५	४९ २५	४९ ३६	४९ ४५	४९ ५५	५० ५	५० १५	५० २६	५० ३६	५० ४६	५० ५६	५१ ०६
९ मकर	५१ ६	५१ १६	५१ २६	५१ ३६	५१ ४६	५१ ५६	५२ ०७	५२ १७	५२ २५	५२ ३३	५२ ४२	५२ ५०	५२ ५८	५३ ७	५३ १५	५३ २३	५३ ३२	५३ ४०	५३ ४८	५३ ५७	५४ ५	५४ १३	५४ २२	५४ ३०	५४ ३८	५४ ४७	५४ ५५	५५ ३	५५ १२	५५ २०	५५ २८
१० कुम्भ	५५ २८	५५ ३७	५५ ४५	५५ ५३	५६ २	५६ १०	५६ १८	५६ २७	५६ ३४	५६ ४१	५६ ४८	५६ ५६	५७ ०३	५७ १०	५७ १७	५७ २४	५७ ३२	५७ ३९	५७ ४६	५७ ५३	५८ १	५८ ८	५८ १५	५८ २२	५८ ३०	५८ ३७	५८ ४४	५८ ५१	५९ ५९	५९ ६	५९ १३
११ मीन	५९ १३	५९ २०	५९ २७	५९ ३५	५९ ४२	५९ ४९	५९ ५६	० ४	० ११	० १८	० २५	० ३३	० ४०	० ४७	० ५४	१ १	१ ९	१ १६	१ २३	१ ३०	१ ३८	१ ४५	१ ५२	२ ५९	२ ७	२ १४	२ २१	२ २८	२ ३६	२ ४३	२ ५०

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

लग्न सारणी अक्षांश ३१।२० उत्तर पलभा (७।१७।२१)

जालन्धर, अमृतसर, लुधियाना, चण्डीगढ़, रोपड़, फगवाड़ा, कपूरथला, होशियारपुर, फिरोज़पुर, शिमला, मण्डी, हमीरपुर, ऊना आदि के लिए

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४
१ वृष	घ.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	३४	४२	५०	५८	६	१४	२३	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५३	५	१६	२७	३८	५०	३	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५८	०९	२१	३२	४४	५५
३ कर्क	घ.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	५५	०७	१९	३१	४३	५४	०६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३९	५१	०३	१५	२७	३८	५०
४ सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४२	५३	०५	१७	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३८	५०	०२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५८	०९	२१	३३
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
	प.	३३	४४	५६	०८	१९	३१	४३	५४	६	१८	२९	४२	५४	०६	१७	२९	४१	५३	०५	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४१	५३	०५	१६	२८
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
	प.	२८	४०	५२	०४	१६	२८	४०	५१	०३	१५	२६	३८	४९	०१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३२	४४	५५	०७	१८
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	१८	३०	४२	५३	०५	१६	२८	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	२९	३९	४९	५९	९	१८	२८	३८	४७	५५	०३	११	१९	२७	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४६	५३	००	७	१४	२०	२७	३४	४१	४७	५४	०१	८	१५	२१	२८	३५	४१	४८	५५	०२	९	१६
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१६	२३	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२७	३४	४१

लग्न सारणी अक्षांश २९° उत्तर पलभा (६।३९।०५)

दिल्ली, रोहतक, मेरठ, हिसार, गुड़गांव, मुरादाबाद, नैनीताल, गाज़ियाबाद आदि के लिए उपयोगी

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
	प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	९	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
१ वृष	घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
	प.	४८	५६	४	१३	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
२ मिथुन	घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
	प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३८	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	११
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
	प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
४ सिंह	घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२५	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
	प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
८ धनु	घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०
	प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
	प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४१	४८

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

लग्न सारणी अक्षांश (३०°) पलभा ६/५५/४३

अम्बाला, चण्डीगढ़, कालका, कुराली, खन्ना, देहरादून, नाभा, नाहन, पटियाला, भटिण्डा, रोपड़, फाज़िल्का, सहारनपुर, फरीदकोट इत्यादि

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
१ वृष	घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
	प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	००	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
४ सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	[illegible]	[illegible]	४५	४५	४५	४५	४५	४६
	प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३[illegible]	[illegible]	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	००	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारणी (अक्षांश ३३°) पलभा ७/४८/३०

जम्मू, श्रीनगर, ऊधमपुर, रावलपिंडी, कठुआ, अनन्तनाग, किश्तवाड़, डल्हौज़ी आदि

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
	प.	३७	४४	५१	५८	४	११	१८	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५४	२	१०	१८	२६
१ वृष	घ.	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
	प.	२६	३४	४२	५०	५८	६	१३	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
	प.	१०	२०	३०	४०	५०	५९	९	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६
३ कर्क	घ.	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
	प.	४६	५८	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४३	५५	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४
४ सिंह	घ.	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	१९	३०	४३	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१८	३०	४१	५३	५	१७	२९	४१
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४
	प.	४१	५२	४	१६	२८	४०	५२	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६	३८	५०	२	१४	२५	३७	४९	१	१३	२५	३६	४८	०	१२	२४	३६
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
	प.	३६	४७	५९	११	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
	प.	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	३६	४६	५६	६	१६	२५	३५	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	००	८	१५	२३	३१	३९	४७
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	४७	५५	३	११	१९	२७	३४	४२	४९	५६	२	९	१६	२३	२९	३६	४३	४९	५६	३	९	१६	२३	३०	३६	४३	५०	५६	३	१०	१६
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	प.	१६	२३	३०	३७	४३	५०	५७	३	१०	१७	२३	३०	३७	४४	५०	५७	४	१०	१७	२४	३०	३७	४४	५१	५७	४	११	१७	२४	३१	३७

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दशमलग्न सारणी

(सर्वत्र उपयोगी) लंकोदय २७८ । २९९ । ३२३

अंश	००/०१	०२/०३	०४/०५	०६/०७	०८/०९	१०/११	१२/१३	१४/१५	१६/१७	१८/१९	२०/२१	२२/२३	२४/२५	२६/२७	२८/२९	३०
० मेष	१८ ३३	१८ ४२	१९ ५२	१९ १	१९ १०	१९ १९	१९ २८	१९ ३८	१९ ४८	२० ५८	२० ८	२० १८	२० २८	२० ३८	२० ४८	२० ५८
१ वृष	२१ ८	२१ १८	२१ २८	२१ ३८	२१ ४८	२१ ५८	२१ ८	२१ १८	२१ २८	२१ ३८	२१ ४८	२१ ५८	२२ ८	२२ १७	२२ २७	२२ ३७
२ मिथुन	२२ ४७	२२ ५७	२३ ७	२३ १७	२३ २७	२३ ३७	२३ ४७	२३ ५७	२३ ७	२३ १७	२३ २७	२३ ३७	२३ ४७	२३ ५७	२३ ७	२३ १७
३ कर्क	२४ ४५	२४ ५५	२४ ०६	२४ १७	२४ २८	२४ ३८	२४ ४९	२४ ०	२४ ११	२४ २२	२५ ३२	२५ ४३	२५ ५४	२५ ५	२५ १५	२५ २६
४ सिंह	२६ ३७	२६ ४७	२६ ५७	२६ ७	२६ १७	२६ २७	२६ ३७	२६ ४७	२६ ५७	२७ ८	२७ १८	२७ २८	२७ ३८	२७ ४८	२७ ५८	२८ ९
५ कन्या	२८ ४५	२८ ५५	२९ ०६	२९ १७	२९ २८	२९ ३८	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २२	३० ३२	३० ४३	३० ५४	३१ ५	३१ १५	३१ २६
६ तुला	३१ ३७	३१ ४८	३१ ५८	३२ ९	३२ १९	३२ ३०	३२ ४१	३२ ५२	३३ ३	३३ १३	३३ २३	३३ ३३	३३ ४३	३३ ५३	३४ ३	३४ १३
७ वृश्चिक	३४ ४८	३४ ५८	३४ ८	३४ १८	३४ २८	३४ ३८	३४ ४८	३४ ५८	३५ ९	३५ १९	३५ २९	३५ ४०	३५ ५१	३५ २	३५ १२	३५ २३
८ धनु	३६ ३३	३६ ४३	३६ ५३	३६ ३	३६ १३	३६ २३	३६ ३३	३६ ४३	३६ ५३	३७ ३	३७ १३	३७ २३	३७ ३३	३७ ४३	३७ ५३	३८ २
९ मकर	३८ १२	३८ २२	३८ ३२	३८ ४२	३८ ५२	३९ २	३९ १२	३९ २२	३९ ३२	३९ ४२	३९ ५२	४० ३	४० १३	४० २३	४० ३३	४० ४३
१० कुम्भ	४० ५३	४० ३	४० १३	४० २३	४० ३३	४० ४३	४० ५३	४१ ३	४१ १३	४१ २३	४१ ३३	४१ ४३	४१ ५३	४२ ३	४२ १३	४२ २३
११ मीन	४२ ३३	४२ ४३	४२ ५३	४३ ३	४३ १३	४३ २३	४३ ३३	४३ ४३	४३ ५३	४४ ३	४४ १३	४४ २३	४४ ३३	४४ ४३	४४ ५३	४५ ३

ग्रहों के छः प्रकार के बल

स्थान बल, दिग्बल, काल बल, नैसर्गिक बल, चेष्टा बल और दृक् बल, यह छः प्रकार के बल हैं। फलित ज्ञान के लिए इन बलों को जान लेना आवश्यक है। **स्थान बल**—जो ग्रह उच्च, मित्रगृही, मूल त्रिकोणस्थ, स्वनवांशस्थ अथवा द्रेष्काणस्थ होता है, वह स्थान बली कहलाता है। **दिग्बल**—बुध और गुरु लग्न में रहने से, शुक्र और चन्द्रमा चतुर्थ में रहने से, शनि सप्तम में रहने से, सूर्य और मंगल दशम स्थान में रहने से दिग्बली होते हैं। **कालबल**—रात में जन्म होने पर चन्द्र, शनि और मंगल तथा दिन में जन्म होने पर सूर्य, बुध और शुक्र कालबली होते हैं। मतान्तर से बध को सर्वदा काल बली माना जाता है। **नैसर्गिक बल**—शनि, मंगल, बुध, शुक्र, चन्द्र और सूर्य उत्तरोत्तर बली होते हैं। **चेष्टाबल**—मकर से मिथुन पर्यन्त किसी राशि में रहने से सूर्य और चन्द्रमा तथा मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि चन्द्रमा के साथ रहने से चेष्टाबली होते हैं। **दृक् बल**—शुभ ग्रहों से दृष्ट ग्रह दृक् बली होते हैं। बलवान् ग्रह अपने स्वभाव के अनुसार जिस भाव में रहता है, उस भाव का फल देता है। पाठकों को राशि स्वभाव और ग्रहस्वभाव दोनों का समन्वय कर फल अवगत करना चाहिये।

दशम स्पष्ट तथा भावस्पष्ट

इष्ट कालिक द्वादश भावों की वास्तविक स्थिति जानने के लिए भाव-स्पष्ट किया जाता है। भाव स्पष्ट के लिए दशम् लग्न सारिणी का प्रयोग किया जाता है॥ **विधि इस प्रकार है।—लग्न स्पष्ट** करने के लिए लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट के राश्यंशों से प्राप्त घटी-पलों को इष्टकाल के घटी पलों में जमा करने पर जो **योगफल** मिले उसको **दशम लग्न सारिणी** के निकटस्थ कोष्ठकों में देखने पर जो राशि अंशादि प्राप्त होंगे वही **दशम लग्न स्पष्ट** होगा।

भाव स्पष्ट का उदाहरण—मान लो किसी जातक का जन्मोष्टकाल २०।४५ घट्यादि है तथा **जालंधर लग्न सा० से** सूर्य स्पष्ट (०।१२।७) द्वारा प्राप्तांक ४।९ है, और लग्न स्पष्ट ४।१०।३५ है। इष्ट और सू. स्प. से प्राप्तांकों को जमा करने से हमें २४।५४ घट्यादि प्राप्त हुए। इन प्राप्त योगाकों को **दशम् लग्न सारिणी** में देखने पर हमें **दशम् भाव स्पष्ट** १।८।३६ प्राप्त हुआ। **दशभाव** स्प. में ६ राशि जोड़ने से **चतुर्थ भाव** तथा ४ थे भाव में से लग्न भाव स्पष्ट घटा कर शेष को ६ द्वारा भाग देने पर जो अंश-कलादि प्राप्त हों, वह **षष्ठांश** कहलाता है। **षष्ठांश** को लग्न भाव में जोड़ने से लग्न की सन्धि तथा इस सन्धि में षष्ठांश को पुनः जोड़ने से द्वितीय भाव स्प. होगा। **द्वितीय भाव** में **षष्ठांश** जोड़ने से दूसरे भाव की सन्धि, इस सन्धि में षष्ठांश जमा करने से **तृतीय भाव** होगा। तृतीय भाव में षष्ठांश जमा करते से **३रे भाव की सन्धि**, और इस सन्धि में **षष्ठांश** जोड़ने से **चतुर्थ भाव** प्राप्त हो जाता है। अब उसी षष्ठांश को एक राशि में से घटाकर शेष को ४थें भाव में जोड़ने से चतुर्थ भाव की सन्धि, फिर इस सन्धि में उसी शेष को जोड़ने से **पंचम भाव** होगा। लग्न भाव स्पष्ट में ६ राशि जोड़ने से सप्तम भाव तथा प्रथम लग्नभाव की सन्धि में ६ राशि युक्त करने से सप्तम भाव की सन्धि होगी। इसी प्रकार २रें, ३रें भावों में प्रत्येक में क्रम से ६-६ राशि जोड़ने से **अष्टम, नवम, दशम, एकादश आदि भाव एवं सन्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं।**

—पं० पन्ना लाल ज्यो.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

षट्वर्ग सारणी चक्रम्

भाग		०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
रा. षट्		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
० मं.	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	सं	१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१ बृ.	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	सं	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८
२ मि.	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	सं	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	
	द्वा	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
३ क.	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	सं	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८
४ सिं.	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१
	सं	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
५ कुं.	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	सं	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८

		०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
६ तु.	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३
	सं	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३
	द्वा	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
७ बृ.	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४
	सं	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८
८ ध.	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	सं	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
९ म.	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	सं	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	
	द्वा	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८
१० कुं.	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	सं	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
११ मी.	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
	सं	११	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

षड्वर्गी फलादेश विचार

षड्वर्ग में १ होरा, २ द्रेष्काण, ३ सप्तमाश, ४ नवमांश, ५ द्वादशांश, ६ त्रिशांश स्पष्ट कुण्डलियों का विचार किया जाता है। यदि ६ वर्गों में वर्गेश अधिकांश शुभ ग्रह हों तो शुभफल यदि अधिकांश अशुभ ग्रह हों तो अनिष्ट फल देते हैं।

षड्वर्ग सारणी—होरादि ६ वर्गों के लग्न व उनमें ग्रह स्थापन हेतु पीछे जो षड्वर्ग सारिणी दी गई है। अपने लग्न स्पष्ट से प्राप्त राशि अंशानुसार नवांशादि लग्न का ज्ञान करें। राशि व होरादि वर्ग के सामने और अंशों के नीचे कोष्ठक में जो अंक होगा, वही उस वर्ग का लग्न होगा।

उदाहरण—मान लें लग्न स्पष्ट ५।४।२९।२५ है। यहां पर लग्न राशि कन्या और अंशादि ४।२९॥२५ है। सारिणी में ३ भाग ४।१७ पर समाप्त होता है। अत: हमारे अभीष्ट अंशादि (४।२९) ४ चतुर्थ खाने के नीचे पड़ेगे। अतएवं कन्या राशि के सामने (दाईं ओर) तथा चतुर्थ भाग के नीचे की तालिका पर होरा के सामने ४ अर्थात् **कर्क लग्न, द्रेष्काण ६** (कन्या), सप्तमांश का १ (मेष), नवमांश का ११ (कुम्भ), द्वादशांश का ७ (तुला), एवं त्रिशांश का २ (वृष) लग्न निकलेगा। इन वर्गों के स्वामी क्रमश: चंद्र, बुध, मंगल, शनि, शुक्र व शुक्र ग्रहों में २ पापग्रह तथा शेष ४ शुभ ग्रह होने के कारण उक्त कन्या लग्न शुभग्रह फलयुक्त-श्रेष्ठ फल होगा। ग्रह स्थापन हेतु उदाहरणार्थ यदि सूर्य स्पष्ट ७।८।१०।४२ है, ७वें भाग एवं ८।३४।१७ अंशादि के नीचे तथा (७) एवं राशि वृश्चिक के सामने दाईं ओर कोष्ठक के होरादि वर्गों में क्रमश: ४।८।३।६।११।६ राशियां होंगी। सूर्य होरादि वर्गों में तदनुसार राशि में स्थापित करे। इसी भाँति अन्य चन्द्रादि ग्रहों की स्थापना करेंगे।

होरा फल

होरा लग्न में सिंह (५) अथवा कर्क लग्न ही रहता है। **होरा लग्न** विषम ५ राशि हो और सूर्य उसी में स्थित हो तो जातक पुरुषार्थी, उच्चपदाभिलाषी, शूरवीर होगा, गुरु, मंगलादि मित्र ग्रह साथ में हों तो व्यक्ति विद्वान, धन धान्य युक्त उत्तम मित्र युक्त, उच्चपदासीन, नेता व सम्पत्तिवान् होगा। यदि सम ४ राशि सूर्य होरा में शनि, भौम क्षीण चंद्र, राहु आदि पाप ग्रह हों तो जातक नीच प्रकृति वाला, कुल मर्यादा विरुद्ध आचरण करने वाला एवं निर्धनी होता है। **होरा लग्न** में सम राशि हो और चन्द्रमा उसी में स्थित हो तथा साथ में शुक्रादि शुभ ग्रह हों तो जातक मृदु-भाषी, शान्त स्वभाव, व्यवसायी, समृद्ध, धनी, सुखी परिवार वाला, सुशील व राजदरबार से लाभ प्राप्त करने वाला होगा। यदि चन्द्र होरा में सूर्य, शनि आदि पाप ग्रह हों तो नीचाचरण वाला निर्धनी, नीच कार्यों में प्रवृत्त, सुख में कमी होगी।

द्रेष्काण फल विचार

अपने वर्ग के द्रेष्काण में स्थित सौम्य ग्रह केन्द्र अथवा त्रिकोण में हों तो जातक सत्यवक्ता, धनी, विद्वान् व अनेक कलाओं का ज्ञाता होता है। **द्रेष्काणपति** शुभ ग्रह की राशि में हो या शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट अथवा युक्त हो तो धन, मान व यश की वृद्धि और अनेक सुखों की पूर्ति करता है। **द्रेष्काणपति** चन्द्रमा से युक्त व भौम अथवा शुक्र द्वारा वीक्षित हो तो जातक को स्वार्जित धन की प्राप्ति होती है। **द्रेष्काणेश** शत्रु या नीच राशि में हो तो उस राशि अनुसार शरीर में घाव, चोटादि का चिन्ह होगा। जिस द्रेष्काण में चन्द्रमा स्थित हो उस द्रेष्काण का स्वामी सौम्य ग्रहों द्वारा दृष्ट हों तो तदग्रहानुरूप शुभफलदायक होगा।

सप्तमांश फल विचार

सप्तमांश लग्नपति चन्द्रमा से युक्त या शुभ ग्रहों द्वारा युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक भाई बन्धुओं से युक्त प्रसिद्ध कांतिवान, धनी, वाक्पटु, एवं मित्रों द्वारा सहायक होता है। सप्तमाँश में पड़े अधिकांश ग्रह उच्च राशिस्थ हों तो जातक समृद्ध, नीच हों तो दरिद्र होता है। सप्तमांशपति पुरुष ग्रह स्वराशि हों या मित्रराशि में हों या शुभ ग्रहों से युक्त हों तो जातक को सुन्दर, सुशील, गुणी, पुत्र संतान का सुख प्राप्त होता है। **सप्तमांश लग्नपति** पाप ग्रह हो पाप ग्रह की राशि में हो तो अयोग्य व नीच कर्म करने वाली सन्तान होती है। सप्तमांश लग्नपति स्त्री ग्रह हो और शुक्र, बुध आदि स्त्री ग्रहों द्वारा दृष्ट हो तो जातक के कन्याएं अधिक उत्पन्न होंगी। **सप्तमांश** लग्नपति लग्न से ७।८।१२वें स्थान में पापग्रह से दृष्ट या गृष्ट हो तो जातक संतानहीन होता है। तृतीय स्थान स्थित रवि या गुरु अथवा भौम सप्तमांश में हो तो जातक सत्यवादी, मनोवांछित अर्थात् निर्वाह योग्य धन प्राप्त करने वाला होता है।

नवमांश कुण्डली विचार

वर्गोत्तम (लग्नानुरूप नवांश) को छोड़कर लग्न का प्रथम नवांश हो तो जातक चंचल, दुष्ट स्वभाव व चोर होता है। **द्वितीय नवांश** हो तो पुरुष संगीत और स्त्रियों का प्रेमी व भोगी होता है। तृतीय नवांश में उत्पन्न धर्मात्मा, रोगी व ज्ञानी होगा। चतुर्थ में उत्पन्न व्यक्ति गुरुभक्त व सम्पन्न होता है। पंचम में दीर्घायु प्रसिद्ध व बहुपुत्र वाला, **षष्ठ** में स्त्री के वशीभूत, नपुसंक अपव्ययी व प्रमादी होता है। सप्तम में उत्पन्न पराक्रमी व बुद्धिमान्, अष्टम नवांश में व्यक्ति कृतघ्न द्वेषी, बहुसंतान युक्त व क्लेश में रहता है। नवांश में उत्पन्न पुरुष प्रतापी, कार्य-कुशल व धनधान्य से युक्त होता है। जो ग्रह जन्मकुण्डली व नवमांश कुण्डली-दोनों में उच्चराशिस्थ या स्वराशिस्थ हो वह वर्गोत्तम कहलाता है जिसका फल अत्युत्तम कहा जाता है। **नवमांश लग्न** का स्वामी मंगल हो या मंगल द्वारा दृष्ट हो तो जातक की स्त्री मिलनसार, श्वेत वर्ण पर कुछ तेज़ स्वभाव की होगी। बुध हो तो सुन्दर आकृति, चतुर, शिल्पविद्या में निपुण, गुरु हो तो पतिव्रता, विद्यावान, धार्मिक स्वभाव व शुभाचरभ वाली। शुक्र हो तो चतुर, श्रृंगारप्रिय, श्वेतवर्णा सुन्दरी व कामुक होगी। **नवमांशपति शनि** हो तो क्रूर स्वभाव की, श्यामवर्णा पति से विरोध करने वाली स्त्री होती है। नवमांश लग्न का स्वामी शुभ ग्रह हो और वह स्वराशिस्थ अथवा केन्द्र त्रिकोण में स्थित तो जातक को स्त्री का अच्छा सुख मिलता है। **नवांशपति** भाग्योश के साथ २।५।११वें भाव में उच्च या स्वराशि का होकर पड़ा हो तो स्त्रियों से अनेक प्रकार का लाभ तथा ससुराल से धन लाभ होता है। नवमांशपति पाप ग्रहों से युक्त या पाप ग्रह से दृष्टय होकर ६, ८वें या १२वें भाव में स्थित हो तो जातक को स्त्री सुख नहीं मिलता। अधिकांश ग्रह यदि नीच नवांश में हों तो जातक पराधीन होकर जीवन निर्वाह करता है। **नवांश कुण्डली** में जितने पुरुष ग्रह बलवान् होकर ५वें भाव में

स्थित हों व ५वें भाव पर पूर्ण दृष्टि करें उतने ही पुत्र होंगे। यदि [illegible] भाव में हों तो माता के बहुसुख में कमी रहती है। बारह राशि के नवांशों में क्रम से आय प्रमाण इस प्रकार से वर्णित है। ८०, ८४, ८६, ८४, ६०, ५३, ७०, ५०,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

स्थित हों व ५वें भाव पर पूर्ण दृष्टि करें उतने ही पुत्र होंगे। यदि ५वें चन्द्रमा, शुक्र या बुध हो या इनसे दृष्ट हो तो कन्याएं होती हैं। केतु या शनि होने से गर्भ स्थिर नहीं रहता है। अर्थात् गर्भपात का भय होता है।

द्वादशांश फल विचार

द्वादशांश लग्न से माता-पिता के सुख-दुःख तथा आयु सीमा का विचार किया जाता हैं। **द्वादशांश लग्न** का स्वामी पुरुष ग्रह स्वराशि, मित्रराशि या उच्च राशि में स्थित होकर १ ।४ ।५ । ७ ।९ ।१०वें भावों में स्थित हो, तो जातक को पिता का पूर्ण सुख और नीच राशि हो तो पिता का अल्प सुख होता है इसी भांति **द्वादशांश लग्न** का स्वामी स्त्री ग्रह शुभ ग्रहों युक्त, स्वराशि, मित्र या उच्चराशिस्थ होकर १ ।४ ।५ ।७ ।९ ।१० वें भावों में हो तो माता का विशेष सुख होता है। यदि स्त्री ग्रह पापयुक्त या दृष्ट होकर ६ ।८ ।१२वें भाव में हो तो माता के बहुसुख में कमी रहती है। बारह राशि के द्वादशांश में क्रम से आयु प्रमाण इस प्रकार से वर्णित है। ८०, ८४, ८६, ८४, ६०, ५३, ७०, ५०, ६६, १०० अर्थात् क्रम से द्वादशांश में इतने वर्ष की आयु प्राप्ति की संभावना होती है।

त्रिशांश फल विचार

त्रिशांश में जो ग्रह मित्र के घर में या उच्च में हो वह सभी कार्यों में उत्साही धनी, धर्मिष्ठ व पूज्य होता है। मंगल अपने त्रिशांश में स्थित हो तो वह प्राणी तेजस्वी धैर्यवान स्त्री-धन से युक्त, बुध अपने त्रिशांश में हो तो बुद्धिमान, संगीत, प्रेमी, गुरु हो तो जातक उद्यमी, धनवान, शुक्र हो तो जातक बहुपुत्रों वाला, अनेक स्त्रियों से मित्रता करने वाला होता है। शनि हो तो परस्त्रीगमन करने वाला, दुःखी व मलिन हृदय होगा।

पंजाब के नगरों के अक्षांश-रेखांश

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण अं. क.
अमृतसर	31 37	74 55	30 20
अजनाला	31 51	74 48	30 48
अटारी	31 37	74 36	31 36
अमलोह	30 37	76 15	25 00
अहमदगढ़	30 41	75 51	26 36
अबोहर	30 08	74 12	33 12
अकालगढ़	29 50	75 54	26 24
अमरगढ़	30 28	76 01	25 56
अलावलपुर	31 27	75 26	28 16
आनन्दपुर सा.	31 15	76 32	23 52
आदमपुर	31 21	75 26	28 16
डरमर-टाण्डा	31 40	75 41	27 16
कपूरथला	31 23	75 25	28 20
करतारपुर	31 27	75 32	27 52
कादियां	31 49	75 23	28 28
कीरतपुर साहिब	31 11	76 34	23 44
कुराली	30 50	76 35	23 40
कोटकपुरा	30 34	74 52	30 32
खन्ना	30 42	76 13	25 08
खरड़	30 45	76 37	23 32
खेमकरण	31 08	74 35	31 40
गड़दीवाला	31 44	75 45	27 00
गढ़शंकर	31 13	76 11	25 16
गुरदासपुर	32 03	75 27	28 12
गोईन्दवाल सा.	31 22	75 08	29 28
गोराया	31 06	75 47	26 52
गोबिन्दगढ़ मण्डी	30 41	76 18	24 28
गुर हरसहाय	30 40	74 32	31 42
घनौर	30 21	76 37	23 32
चण्डीगढ़	30 44	76 53	22 28
चमकौर साहिब	30 55	76 24	24 24

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण अं. क.
छहरटा	31 16	74 53	30 28
जण्डियाला गुरु	31 51	75 37	27 32
जगरांव	30 48	75 30	28 00
जलालाबाद	30 37	74 15	33 00
जालन्धर	31 19	75 34	27 44
जालन्धर कैंट	31 20	75 26	28 16
जीरा	30 57	74 59	30 04
जैतों	30 28	74 53	30 28
जैजों	31 21	76 09	25 24
जाखल	29 48	75 41	26 36
ढिलवां	31 25	75 19	28 44
डबवाली मण्डी	29 59	74 42	31 12
डेरा बाबा नानक	32 02	75 04	29 44
तपा मण्डी	30 19	75 21	28 36
तरनतरन	31 28	74 58	30 08
तलवाड़ा	32 05	75 38	27 38
तलवंडी साबो	29 59	74 59	30 04
दतारपुर	31 53	75 45	27 00
दसूहा	31 49	75 39	27 24
दीनानगर	32 08	75 30	28 00
दोराहा मण्डी	30 49	76 01	25 56
दमदमा साहिब	30 50	76 04	25 44
दौलतपुर	31 58	75 38	27 28
धारीवाल	31 57	75 19	28 44
धूरी	30 22	75 52	26 32
धर्मकोट	30 53	75 14	29 04
नकोदर	31 07	75 29	28 04
नूरमहल	31 01	75 22	28 32
नवांशहर	31 07	76 08	25 28
नाभा	30 25	76 09	25 24
नूरपुर बेदी	31 09	76 29	24 04

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण अं. क.
नंगल	31 23	76 23	24 28
पटियाला	30 20	76 25	24 20
पट्टी	31 17	74 51	30 36
पठानकोट	32 17	75 42	27 12
फरीदकोट	30 40	74 57	30 12
फाजिल्का	30 24	74 04	33 44
फगवाड़ा	31 13	75 47	26 52
फतेहगढ़ साहिब	30 39	76 22	24 32
फिल्लौर	31 01	75 48	26 48
फतेहगढ़ (फिरोज)	31 03	75 03	29 48
फिरोजपुर	30 55	74 40	31 20
बरनाला	30 23	75 33	27 48
बस्सी	30 35	76 50	22 40
ब्यास	31 32	75 18	28 48
बसी पठानां	30 40	76 23	24 28
बटाला	31 49	75 14	29 04
बंगा	31 11	75 59	26 04
बलाचौर	31 03	76 19	24 44
बेला	30 56	76 24	24 24
बिलगा	31 02	75 26	28 16
भटिण्डा	30 11	75 00	30 00
भुलत्थ	31 32	75 32	27 32
भवानीगढ़	30 16	76 01	25 56
भुच्चो (मण्डी)	30 13	75 06	29 36
भीखी	30 05	75 34	27 44
मजीठा	31 46	75 01	29 56
मोरांवली	31 18	76 01	25 56
मुकेरियां	31 57	75 37	27 32
मलोट	30 13	74 29	32 04
मलकाणा	29 56	75 03	29 48
मलेरकोटला	30 31	75 59	26 04

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण अं. क.
मोगा	30 48	75 10	29 20
माच्छीवाड़ा	30 56	76 14	25 04
मोहाली	30 43	76 42	23 12
मानसा (मण्डी)	29 59	75 23	28 28
मुबारिकपुर	30 37	76 51	22 36
मुक्तसर	30 29	74 31	31 56
राजपुरा	30 29	76 34	23 44
रामपुरा फूल	30 17	75 14	29 04
रायकोट	30 41	75 36	27 36
राहों	31 03	76 07	25 32
रोपड़ (रूपनगर)	30 57	76 32	23 52
लोहियां खास	31 08	75 28	28 04
लहरगागा	29 55	75 54	26 04
लुधियाना	30 55	75 54	26 24
शाहकोट	31 03	75 19	28 44
शाहपुर	32 17	75 46	26 56
संगरूर	30 12	75 53	26 28
सुजानपुर	32 19	75 26	28 16
सुल्तानपुर लोधी	31 11	75 12	29 12
सरहिन्द	30 38	76 23	24 28
समराला	30 51	76 11	25 16
सनौर	30 18	76 30	24 00
समाना	30 09	76 12	25 12
सोहाणां	30 42	76 42	23 12
सुनाम	30 08	75 48	26 48
हमीरा	31 27	75 19	28 44
हरयाणा	31 36	75 48	26 48
हरीके पत्तन	31 30	74 57	30 12
होशियारपुर	31 32	75 57	26 12
हाजीपुर	31 57	75 37	27 32

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

नोट—जिस शहर के आगे (–) का चिन्ह लगाया गया है, वह नगर 82½ रेखांश में उतने मिनट पश्चिम है और जिस स्थान पर (+) का चिन्ह लगा है, वह स्थान उतने मिनट पूर्व में है। सूर्योदयास्त जानने के लिए जिन नगरों का स्टै. अन्तर (–) है, उन्हें मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी में (–) की बजाए (+) करना होगा तथा '+' चिन्ह वाले नगरों को मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से प्राप्त सू. उ. – सू. अ. में (–) ऋण करें।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
अमृतसर (पंजा.)	31 37	74 55	-30 20
अलीगढ़ (उ. प्र.)	27 54	78 06	-17 36
अगरतला (त्रिपुरा)	23 49	91 18	+35 12
अहमदाबाद (गुज.)	23 03	72 40	-39 20
अहमदनगर (महा.)	19 05	74 48	-30 48
अखनूर (काश.)	32 54	74 45	-31 00
अजमेर (राज.)	26 27	74 42	-31 12
अल्मोड़ा (उत्तरां)	29 37	79 40	-11 20
अलवर (राज.)	27 34	76 38	-23 28
अमरावती (महा.)	20 56	77 48	-18 48
अम्बाला (हर.)	30 21	76 52	-22 32
अम्बिकापुर (म. प्र.)	23 10	83 15	+03 00
अंकलेश्वर (गुज.)	21 38	73 03	-37 48
अमेठी (उ. प्र.)	26 08	81 50	-02 40
अमरोहा (उ. प्र.)	28 54	78 29	-16 04
आनन्दपुर सा. (पं.)	31 15	76 32	-23 52
आनन्द (गुज.)	22 32	73 00	-38 00
अनन्तनाग (काश.)	33 43	75 12	-29 12
अनूपगढ़ (राज.)	29 07	73 06	-37 36
आजमगढ़ (उ. प्र.)	26 03	83 13	+02 52
अयोध्या (उ. प्र.)	26 48	82 14	-01 04
अबोहर (पंजा.)	30 08	74 12	- 33 12
आसनसोल (बंगा.)	23 42	87 01	+18 04
आगरा (उ. प्र.)	27 10	78 00	-18 00
आबू (राज.)	24 40	72 45	-39 00
ईलाहाबाद (उ. प्र.)	25 28	81 54	-02 24
इटावा (उ. प्र.)	26 47	79 02	-13 52
इम्फाल (मणि.)	24 46	93 58	+45 52
इन्दौर (म. प्र.)	22 44	75 50	-26 40
इटारसी (म. प्र.)	22 30	77 55	-18 20
उदयपुर (राज.)	24 35	73 41	-35 16
उज्जैन (म. प्र.)	23 09	75 43	-27 08
उन्नाव (उ. प्र.)	26 33	80 31	-07 56
उत्तरकाशी (उत्तरां.)	30 44	78 27	-16 12
ऊना (हि. प्र.)	31 32	76 18	-24 48

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
उधमपुर (ज. का.)	32 55	75 07	-29 32
ऋषिकेश (उत्तरां)	30 07	78 18	-15 12
एटा (उ. प्र.)	27 38	78 40	-15 20
औरंगाबाद (महा.)	19 53	75 23	-28 28
कटक (उड़ी.)	20 28	85 54	+13 36
कठुआ (ज. का.)	32 17	75 36	-27 36
कारगिल (ज. का.)	34 30	76 13	-25 08
किश्तवाड़ (ज. का.)	33 19	75 48	-26 48
कटरा (ज. का.)	33 01	74 58	-30 08
कटनी (म. प्र.)	23 47	80 27	-08 12
करनाल (हरि.)	29 42	77 02	-21 52
कलकत्ता (बंगा.)	22 34	88 24	+23 36
कपूरथला (पंजा.)	31 23	75 25	-28 20
करौली (राज.)	26 30	77 01	-21 56
कांगड़ा (हि. प्र.)	32 05	76 18	-24 48
कानपुर (उ. प्र.)	26 28	80 22	-08 32
कालका (हरि.)	30 49	76 57	-22 12
कुल्लू (हि. प्र.)	31 58	77 10	-21 20
कुराली (पंजाब)	30 50	76 35	-23 40
कोटकपूरा (पंजाब)	30 34	74 52	-30 32
कादियां (पंजाब)	31 49	75 23	-28 28
करसोग (हि. प्र.)	31 23	77 14	-21 04
किन्नौर (हि. प्र.)	31 32	78 20	-16 40
कंडाघाट (हि. प्र.)	30 57	77 08	-21 28
कोहिमा (ना.)	25 41	94 07	+46 28
कुमारसेन (हि. प्र.)	31 18	77 37	-19 32
कुरुक्षेत्र (हरि.)	29 59	76 48	-22 48
करतारपुर (पंजा.)	31 27	75 32	-27 52
कैथल (हरि.)	29 48	76 26	-24 16
कोल्हापुर (महा.)	16 42	74 16	-32 56
कोटखाई (हि.प्र.)	31 08	77 36	-19 36
कन्नौज (उ. प्र.)	27 03	79 58	-10 08
कोटा (राज.)	25 10	75 52	-26 32
खन्ना (पंजाब)	30 42	76 13	-25 08
खरड़ (पंजाब)	30 45	76 37	-23 32

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
खुर्जा (उ. प्र.)	28 15	77 50	-18 40
खण्डवा (म. प्र.)	21 50	78 07	-24 28
गया (बिहार)	24 49	85 01	+10 04
ग्वालियर (म. प्र.)	26 14	78 10	-17 20
गिलगित (ज. का.)	35 55	74 22	-32 32
गुरदासपुर (पंजाब)	32 03	75 27	-28 12
गुड़गांव (हरि.)	28 29	77 04	-21 44
गोरखपुर (उ. प्र.)	26 45	83 24	+03 36
गुवहाटी (आसा.)	26 11	91 47	+37 08
गोधरा (गुज.)	22 45	73 40	-35 20
गाजीपुर (उ. प्र.)	25 34	83 35	+04 20
गोईंदवाल (पंजा.)	31 22	75 08	-29 28
गोराया (पंजा.)	31 06	75 47	-26 52
गंगानगर (राज.)	29 49	73 50	-34 40
गोण्डा (उ. प्र.)	27 08	82 01	-01 56
गढ़शंकर (पंजा.)	31 13	76 11	-25 16
गाजियाबाद (उ. प्र.)	28 40	77 26	-20 16
गुलमर्ग (ज. का.)	34 05	74 25	-32 20
गोवा (पंजिम)	15 27	73 50	-34 40
गोलकुण्डा (आ. प्र.)	17 24	78 23	-16 28
चम्बा (हि. प्र.)	32 34	76 08	-25 28
चित्तौड़गढ़ (राज.)	24 54	74 42	-31 12
चण्डीगढ़ (के. प्र.)	30 44	76 52	-22 32
चन्दौसी (उ. प्र.)	28 27	78 49	-14 44
चमौली (उत्तरां.)	30 24	79 21	-12 36
चूरु (राज.)	28 19	75 01	-29 56
छिन्दवाड़ा (म. प्र.)	22 03	78 58	-14 08
जालन्धर (पंजा.)	31 19	75 34	-27 44
जण्डयाला	31 36	75 03	-29 48
जंडियाला गुरु	31 51	75 37	-27 32
जम्मू (ज. का.)	32 43	74 54	-30 24
जौनपुर (उ. प्र.)	25 46	82 44	+00 56
जैसलमेर (राज.)	26 55	70 54	-46 24
जयपुर (राज.)	26 55	75 52	-26 32

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
जीन्द (हरि.)	29 19	76 21	-24 36
जमशेदपुर (बिहार)	22 50	86 10	+14 40
जामनगर (गुज.)	22 27	70 07	-49 32
जोगिन्द्रनगर (हि. प्र.)	31 58	76 45	-23 00
जोधपुर (राज.)	26 18	73 04	-37 44
जबलपुर (म. प्र.)	23 10	79 59	-10 04
जलगांव (महा.)	21 03	75 39	-27 24
जैतों (पंजाब)	30 28	74 53	-30 28
ज़ीरा	30 57	74 59	-30 04
जगाधरी (हरि.)	30 10	77 16	-20 56
ज्वालामुखी (हि. प्र.)	31 53	76 20	-24 40
जाखल (हरि.)	29 49	75 49	-26 44
जूनागढ़ (गुज.)	21 31	70 36	-47 36
जोरहाट (आसा.)	26 46	94 16	+47 04
झांसी (उ. प्र.)	25 27	78 37	-15 32
झरिया (बिहार)	23 50	86 24	+15 36
झुंझुनू (राज.)	28 06	75 25	-28 20
टांडा उडमड़ (पंजा.)	31 40	75 41	-27 16
टोहाना (हरि.)	29 43	75 53	-26 28
टिहरी (उ. प्र.)	30 20	78 00	-16 00
टोंक (राज.)	26 11	75 50	-26 40
टोडारायसिंह (राज.)	26 00	75 29	-28 04
डबवाली मंडी (पं.)	29 59	74 42	-31 12
डोडा (ज. का.)	33 11	75 34	-27 44
डलहौज़ी (हि. प्र.)	32 31	76 00	-26 00
डिब्रूगढ़ (आसा.)	27 29	94 56	+49 44
डूँगरपुर (राज.)	23 50	73 43	-35 08
तरनतारन (पंजा.)	31 28	74 58	-30 08
तिरुपति (आंध्र)	13 40	79 24	-12 24
त्रिवेन्द्रम (के.)	08 29	76 57	-22 12
थानेसर (हरि.)	29 58	76 56	-22 16
दिल्ली	28 39	77 12	-21 12
देहरादून (उत्तरां.)	30 19	78 04	-17 44
दसूहा (पंजा.)	31 49	75 39	-27 24
दीनानगर (पंजा.)	32 08	75 30	-28 00

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
दतारपुर (पंजा.)	31 53	75 45	-27 00
दार्जिलिंग (बंगा.)	27 03	88 18	+23 12
दुर्गापुर (बंगा.)	23 30	87 20	+19 20
दुर्ग (छत्तीसगढ़)	21 10	81 17	-04 52
द्वारिका (गुज.)	22 14	69 01	-53 56
देवरिया (उ. प्र.)	26 32	83 45	+05 00
दतिया (म. प्र.)	25 39	78 27	-16 12
धनबाद (बिहा.)	23 47	86 30	+16 00
धर्मशाला (हि. प्र.)	32 16	76 23	-24 28
धौलपुर (राज.)	26 42	77 53	-18 28
धूरी (पंजा.)	30 22	75 52	-26 32
नागौर (राज.)	27 11	73 40	-35 20
नवलगढ़ (राज.)	27 51	75 18	-28 48
नकोदर (पंजा.)	31 07	75 29	-28 04
नूरमहल (पंजा.)	31 01	75 22	-28 32
नौहर (राज.)	29 11	74 46	-30 56
नसीराबाद (राज.)	26 18	74 46	-30 56
नरवाना (हरि.)	29 36	76 08	-25 28
नासिक (महा.)	20 02	73 50	-34 40
नागपुर (महा.)	21 09	79 09	-13 24
नारनौल (हरि.)	28 02	76 14	-25 04
नंगल (पंजा.)	31 23	76 23	-24 28
नवांशहर (पंजा.)	31 07	76 08	-25 28
नाभा (पंजा.)	30 25	76 09	-25 24
नाहन (हि. प्र.)	30 33	77 21	-20 36
नालागढ़ (हि. प्र.)	30 57	76 22	-24 32
नैनीताल (उत्तरां.)	29 23	79 30	-12 00
नौशेरा (ज. का.)	33 13	74 17	-32 52
पठानकोट (पंजा.)	32 17	75 42	-27 12
पटियाला (पंजा.)	30 20	76 25	-24 20
पट्टी (पंजा.)	31 17	74 51	-30 36
पंचकूला (हरि.)	30 45	76 53	-22 28
पानीपत (हरि.)	29 23	77 01	-21 56
पिहोवा (हरि.)	29 56	76 36	-23 36
पिथौरागढ़ (उत्तरां.)	29 35	80 13	-09 08
पिंजौर (हरि.)	30 49	76 55	-22 20
पूँछ (ज. का.)	33 51	74 08	-33 28
पहलगाँव (ज. का.)	34 01	75 24	-28 24
पटना (बिहार)	25 37	85 13	+10 52
पीलीभीत (उ. प्र.)	28 38	79 48	-10 48
पालमपुर (हि. प्र.)	32 06	76 33	-23 48

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
पपरौला (हि. प्र.)	32 04	76 34	-23 44
प्रतापगढ़ (उ. प्र.)	25 50	81 59	-02 04
पाली (राज.)	25 46	73 25	-36 20
पोरबन्दर (गुज.)	21 37	69 37	-51 32
पंचमढ़ी (म. प्र.)	22 30	78 22	-16 32
पुरी (उड़ी)	19 48	85 52	+13 28
पुरुलिया (बंगा.)	23 20	86 24	+15 36
पन्ना (म. प्र.)	24 44	80 14	-09 04
पिलानी (राज.)	28 23	75 35	-27 40
पुष्कर (राज.)	26 30	74 34	-31 44
पौड़ीगढ़वाल (उत्तरां)	30 09	78 47	-14 52
फतेहगढ़ सा. (पंजा.)	30 39	76 22	-24 32
फैज़ाबाद (उ. प्र.)	26 47	82 06	-01 36
फर्रुखाबाद (उ. प्र.)	27 24	79 36	-11 36
फगवाड़ा (पंजा.)	31 13	75 47	-26 52
फरीदकोट (पंजा.)	30 40	74 57	-30 12
फाज़िल्का (पंजा.)	30 24	74 04	-33 44
फिरोज़पुर (पंजा.)	30 55	74 40	-31 20
फिल्लौर (पंजा.)	31 01	75 48	-26 48
फरीदाबाद (हरि.)	28 25	77 22	-20 32
फ़तेहाबाद (हरि.)	29 31	75 30	-28 00
बटाला (पंजा.)	31 49	75 14	-29 04
बंगा (पंजा.)	31 11	75 59	-26 04
बलाचौर (पंजा.)	31 03	76 19	-24 44
बद्रीनाथ (उत्तरां.)	30 44	79 30	-12 00
बक्सर (उ. प्र.)	25 35	83 59	+05 56
बड़ौदा (गुज.)	22 18	73 13	-37 08
बड़गाम (ज. का.)	34 00	74 44	-31 04
बरनाला (पंजा.)	30 23	75 33	-27 48
बिजनौर (उ. प्र.)	29 23	78 11	-17 16
बुलन्दशहर (उ. प्र.)	28 24	77 52	-18 32
बनारस (उ. प्र.)	25 20	83 00	+02 00
बरेली (उ. प्र.)	28 22	79 27	-12 12
बलिया (उ. प्र.)	25 44	84 11	+06 44
बदायूँ (उ. प्र.)	28 02	79 10	-13 20
बाराबंकी (उ. प्र.)	26 56	81 13	-05 08
बारामूला (ज. का.)	34 10	74 30	-32 00
बनिहाल (ज. का.)	33 32	75 19	-28 44
बल्लभगढ़ (हरि.)	28 22	77 20	-20 40
बहादुरगढ़ (हरि.)	28 42	76 55	-22 20
बीकानेर (राज.)	28 01	73 22	-36 32

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
बांसवाड़ा (राज.)	23 30	74 24	-32 24
बागपत (उ. प्र.)	28 57	77 13	-21 08
बून्दी (राज.)	25 27	75 40	-27 20
बैजनाथ (हि. प्र.)	32 03	76 36	-23 36
बिलासपुर (हि. प्र.)	31 19	76 45	-23 00
बिलासपुर (म. प्र.)	22 05	82 12	-01 12
बस्तर (म. प्र.)	19 10	81 59	-02 04
बैंगलौर (क.)	12 58	77 36	-19 36
भटिंडा (पंजाब)	30 11	75 00	-30 00
भद्रवाह (का.)	33 04	75 50	-26 40
भिवानी (हरि.)	28 46	76 18	-24 48
भुवनेश्वर (उड़ी)	20 10	85 50	+13 20
भरतपुर (राज.)	27 05	77 30	-20 00
भावनगर (गुज.)	21 46	72 11	-41 16
भुज (गुज.)	23 15	69 40	-51 20
भिलई (छत्ती.)	21 13	81 26	-04 16
भिण्ड (म. प्र.)	26 36	78 46	-14 56
भीलवाड़ा (राज.)	25 21	74 40	-31 20
भोपाल (म. प्र.)	23 16	77 24	-20 24
मलेरकोटला (पंजा)	30 31	75 59	-26 [illegible]4
मजीठा (पंजाब)	31 46	75 01	-29 56
मलोट (पंजाब)	30 13	74 29	-32 04
मानसा (पंजाब)	29 59	75 23	-28 28
मोगा (पंजाब)	30 48	75 10	-[illegible]9 20
मोहाली (पंजा.)	30 43	76 42	-[illegible]3 12
मार्तण्ड (का.)	33 48	75 18	-28 48
महेन्द्रगढ़ (हरि.)	28 18	76 09	-25 24
मनसादेवी (हरि.)	30 44	76 52	-22 32
मकराना (राज.)	27 04	74 43	-31 08
मेरठ (उ. प्र.)	29 00	77 42	-19 12
मिर्ज़ापुर (उ. प्र.)	25 10	82 36	+00 24
मुरादाबाद (उ. प्र.)	28 51	78 49	+14 44
मुगलसराय (उ. प्र.)	25 17	83 11	+02 44
मंसूरी (उत्तरां.)	30 27	78 06	-17 36
मथुरा (उ. प्र.)	27 28	77 41	-19 16
मुज़फ्फर न. (उ.प्र.)	29 28	77 41	-19 16
मुक्तसर (पंजाब)	30 29	74 31	-31 56
मन्दसौर (म. प्र.)	24 03	75 08	-29 28
मैसूर (कर्ना.)	12 18	76 42	-23 12
मण्डी (हि. प्र.)	31 43	76 58	-22 08
मनीकरण (हि. प्र.)	32 01	77 20	-20 40

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मनाली (हि. प्र.)	32 17	77 19	-20 44
मद्रास (चेन्नई) (ता.ना.)	13 04	80 17	-08 52
मुम्बई (महा.)	19 00	72 54	-38 24
यमुनानगर (हरि.)	30 08	77 16	-20 56
रामपुर बुशै. (हि. प्र.)	31 28	77 39	-19 24
रोहड़ (हि. प्र.)	31 12	77 44	-19 04
रोपड़ (पंजाब)	30 57	76 32	-23 52
राजपुरा (पंजाब)	30 29	76 34	-23 44
रायकोट (पंजाब)	30 41	75 36	-27 36
रोहतक (हरि.)	28 54	76 38	-23 28
रिवाड़ी (हरि.)	28 12	76 40	-23 20
रामबन (ज. का.)	33 14	75 15	-29 00
रियासी (ज. का.)	33 04	74 53	-30 28
रामनगर (ज. का.)	32 50	75 22	-28 32
रतलाम (म. प्र.)	23 21	75 07	-29 32
राजौरी (ज. का.)	33 23	74 18	-32 48
रायपुर (छत्ती.)	21 15	81 41	-03 16
रायबरेली (उ. प्र.)	26 14	81 16	-04 56
रामपुर (उ. प्र.)	28 48	79 03	-13 48
राँची (झार.)	23 23	85 23	+11 32
रायसिंहनगर (राज.)	29 32	73 27	-36 12
राजकोट (गुज.)	22 18	70 48	-46 48
रामेश्वरम् (ता.)	09 17	79 22	-12 32
रूड़की (उत्तरां.)	29 52	77 53	-18 28
लुधियाना (पंजा.)	30 55	75 54	-26 24
लेह (ज. का.)	34 10	77 40	-19 20
लद्दाख (रेंज)	32 00	80 00	-10 00
लखनऊ (यू.पी.)	26 52	80 56	-06 16
लखीमपुर (उ. प्र.)	27 57	80 49	-06 44
लाडवा (हरि.)	29 59	77 05	-21 40
वाराणसी	25 20	83 00	+02 00
विशाखापट्टनम	17 42	83 20	+03 20
शिमला (हि. प्र.)	31 06	77 13	-21 08
शाहदरा (दिल्ली)	28 40	77 20	-20 40
शाहाबाद (हरि.)	30 10	76 55	-22 20
शाहजहाँपुर (उ. प्र.)	27 54	79 57	-10 12
शोलापुर (महा.)	17 42	75 56	-26 16
शिलांग (मेघा)	25 34	91 56	+37 44
श्रीनगर (का.)	34 06	74 51	-30 36
श्रीगंगानगर (राज.)	29 49	73 50	-34 40
श्रीमाधोपुर (राज.)	27 25	75 32	-27 52
संगरूर (पं.)	30 12	75 53	-26 28

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
सरहिन्द (पं.)	30 38	76 23	-24 28
सुल्तानपुर लोधी (पं.)	31 11	75 12	-29 12
समाना (पं.)	30 09	76 12	-25 12
समराला (पं.)	30 51	76 11	-25 16
सुनाम (पंजाब)	30 08	75 48	-26 48
साम्बा (ज. का.)	32 33	75 07	-29 32
सुन्दरनगर (हि. प्र.)	31 33	76 54	-22 24
सोलन (हि. प्र.)	30 55	77 09	-21 24
सुजानपुर टि. (हि.प्र.)	31 50	76 31	-23 56

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
सरकाघाट (हि. प्र.)	31 43	76 22	-24 32
सिरसा (हरि.)	29 32	75 06	-29 36
सोनीपत (हरि.)	28 58	76 59	-22 04
सूरतगढ़ (राज.)	29 19	73 57	-34 12
सूरत (गुजरात)	21 10	72 50	-38 40
सीकर (राज.)	27 36	75 09	-29 24
सवाईमाधोपुर (राज.)	25 59	76 30	-24 00
साम्भर (राज.)	26 55	75 10	-29 20
सिरोही (राज.)	24 54	72 55	-38 20

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
सागर (म. प्र.)	23 50	78 48	-14 48
सिहोर (म. प्र.)	23 12	77 00	-22 00
सहारनपुर (उ. प्र.)	29 58	77 30	-20 00
सीतापुर (उ. प्र.)	27 36	80 42	-07 12
सोमनाथ (गुज.)	21 04	70 26	-48 16
होशियारपुर (पंजा.)	31 32	75 57	-26 12
हमीरपुर (हि. प्र.)	31 42	76 30	-24 00
हांसी (हरि.)	29 06	76 00	-26 00
हिसार (हरि.)	29 10	75 46	-26 56

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
हरिद्वार (उत्तरां.)	29 58	78 12	-17 12
हल्द्वानी (उ. प्र.)	29 13	79 31	-11 56
हाथरस (उ. प्र.)	27 36	78 06	-17 36
हनुमानगढ़ (राज.)	29 35	74 21	-32 36
हापुड़ (उ. प्र.)	28 43	77 50	-18 40
हरदोई (उ. प्र.)	27 23	80 10	-09 20
हैदराबाद (आ. प्र.)	17 24	78 30	-16 00
होशंगाबाद (म. प्र.)	22 46	77 45	-19 00
हावड़ा (बंगाल)	22 25	88 23	+23 32

हिमाचल प्रदेश के नगरों के अक्षांश-रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर (स्टैण्डर्ड अन्तर सर्वत्र ऋण है।)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
अम्ब	31 43	76 06	25 36
अर्की	31 09	76 59	22 04
आनी	31 28	77 20	20 40
आलमपुर	31 54	76 30	24 00
इन्दौरा	32 06	75 41	27 16
ऊना	31 32	76 18	24 48
करसोग	31 23	77 14	21 04
कसौली	30 54	77 02	21 52
कथला	31 59	76 47	22 52
कल्पा	31 34	78 16	16 56
कण्डाघाट	30 57	77 08	21 28
कांगड़ा	32 05	76 18	24 48
काला अम्ब	30 29	77 13	21 08
कुफरी	31 07	77 12	21 12
कुम्हारहट्टी	30 52	77 03	21 48
कोटखाई	31 08	77 36	19 36
कोटगढ़	31 19	77 29	20 04
कोटला	32 17	76 02	25 52
कुल्लू	31 58	77 10	21 20
कुमारसेन	31 18	77 37	19 32
कुनिहार	30 58	77 10	21 20
किन्नौर	31 32	78 20	16 40
केलांग	32 37	77 05	21 40
खजियार	32 31	76 03	25 40
गर्ली (परागपुर)	31 48	76 18	24 48
गगरेट	31 41	76 04	25 48
गोहर	31 32	77 02	21 52
घुमारवीं	31 30	76 41	23 16
चम्बा	32 34	76 08	25 28
चच्योट	31 36	77 04	21 44

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
चामुण्डा देवी	32 08	76 20	24 40
चिन्तपुरणी	31 47	76 04	25 44
चायल	31 03	77 14	21 04
चौपाल	30 58	77 36	19 36
जवाली	32 06	76 01	25 56
जस्सूर	32 17	75 55	26 20
जतोग	31 08	77 08	21 28
जुब्बल	31 07	77 38	19 28
जोगिन्द्र नगर	31 58	76 45	23 00
ज्वालामुखी	31 53	76 20	24 40
टीसा	32 48	76 12	25 12
ठयोग	31 08	77 33	19 48
डमटाल	32 13	75 41	27 16
डगशई	30 53	77 06	21 36
डल्हौज़ी	32 31	76 00	26 00
डैहर	31 29	76 52	22 22
ढलियारा	31 52	76 11	25 16
तारादेवी	31 04	77 10	21 20
तत्तापानी	31 14	77 10	21 20
त्रिलोकनाथ	32 43	76 39	23 24
त्रिलोकपुर	30 34	77 09	21 24
ददाहू	30 35	77 28	20 08
देहरा गोपीपुर	31 55	76 14	25 04
दौलतपुर	31 46	75 58	26 08
धनेटा	31 38	76 29	24 04
धर्मशाला	32 16	76 23	24 28
धर्मपुर	30 54	77 04	21 44
धारा	31 49	77 15	21 00
धौलाकुआं	30 30	77 29	20 04

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
नगर	32 10	77 20	20 40
नगरोटा बगवां	32 06	76 24	24 28
नादौन	31 47	76 22	24 32
नाहन	30 33	77 21	20 36
नालागढ़	30 57	76 22	24 32
नूरपुर	32 18	75 56	26 16
नगरोटा	32 07	76 23	24 28
निरमण्ड	31 28	77 34	19 44
नारकण्डा	31 15	77 28	20 08
नैना देवी	31 19	76 31	23 56
पच्छाद	31 47	77 08	21 28
पण्डोह	31 41	77 07	21 32
पपरोला	32 04	76 34	23 44
परवाणू	30 52	77 05	21 40
पाओंटा साहिब	30 29	77 38	19 28
पालमपुर	32 06	76 33	23 48
बरसर (भोटा)	31 34	76 28	24 08
बसौली	31 34	76 23	24 28
बंगाना तै.	31 33	76 27	24 16
बड़ागांव	31 20	77 15	21 00
बंजार	31 40	77 20	20 40
बनीखेत	32 32	75 58	26 08
बकलोह	32 27	75 59	26 04
बिलासपुर	31 19	76 45	23 00
बैजनाथ	32 03	76 36	23 36
भरवाई	31 47	76 07	25 36
भरमौर	32 27	76 32	23 52
भुन्तर	31 54	77 09	21 24
भांखड़ा	31 20	76 30	24 00

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मण्डी	31 43	76 58	22 08
मनाली	32 17	77 19	20 44
मनीकरण	32 01	77 20	20 40
मुबारकपुर	31 44	75 59	26 04
मशोबरा	31 07	77 14	21 04
मंगवाल	32 03	76 05	25 40
महासू	31 05	77 13	21 08
मैहतपुर	31 22	76 17	24 52
खालसर	31 38	76 50	22 40
रामपुर बुशैहर	31 28	77 39	19 24
राजगढ़	30 52	77 22	20 32
रायसन	32 05	77 07	21 32
रोहड़ू	31 12	77 44	19 04
लाहौल स्पीति	32 31	77 01	21 56
शाहपुर	32 14	76 12	25 12
शिमला	31 06	77 10	21 20
शेरपुर	32 34	75 59	26 04
सपाटू	30 59	76 59	22 04
सरकाघाट	31 43	76 22	24 32
सन्धोल	31 59	76 45	22 56
संतोखगढ़	31 21	76 20	24 40
सैंज	31 49	77 19	20 44
सोलन	30 55	77 09	21 24
सुन्दरनगर	31 33	76 54	22 24
सुजानपुर टिहरा	31 50	76 31	23 56
हमीरपुर	31 42	76 30	24 00
हड़सर	32 21	76 33	23 48
हाटकोटी	31 09	77 44	19 04
हरिपुर	32 39	76 11	25 16
हरिपुरधार	30 53	77 28	20 08

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

राजस्थान के मुख्य नगरों के अक्षांश-रेखांश

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मिं. सैं.
अजमेर	26 27	74 42	31 12
अनूपगढ़	29 07	73 06	37 36
अलवर	27 34	76 38	23 28
असोप	26 48	73 44	35 04
अलीगढ़	25 58	76 07	25 30
अमेट	25 20	73 59	34 04
आबू	24 40	72 45	39 00
आमेर	26 59	75 52	26 32
उदयपुर	24 35	73 41	35 16
एकलिंगजी	24 44	73 46	34 56
करौली	26 30	77 01	21 56
कांकरोली	25 02	73 54	34 24
किशनगढ़	26 33	74 52	30 32
केकड़ी	25 55	75 10	29 20
कोटा	25 10	75 52	26 32
खण्डेला	27 37	75 32	27 52
गोगुण्डा	24 46	73 34	35 44
गंगानगर	29 49	73 50	34 40
गंगापुर (टोंक)	26 29	76 46	22 56
गंगापुर (भीलवाड़ा)	25 13	74 16	32 56
घोटारू	27 18	70 04	49 44
चाल्सू	26 36	75 59	26 04
चितौड़गढ़	24 54	74 42	31 12
चूरू	28 19	75 01	29 56
चोमू	27 08	75 47	26 52
चोटां	25 28	71 06	45 36
छाबरा	24 40	76 54	22 24
छोटीसदड़ी	24 24	74 36	31 36
जयपुर	26 55	75 52	26 32
जसवंतपुरा	24 48	72 30	40 00
जालौर	25 22	72 38	39 28
जैसलमेर	26 55	70 54	46 24
जोधपुर	26 18	73 04	37 44
जोधासर	28 07	73 50	34 40
झालावाड़	24 36	76 09	25 24
झुंझुनू	28 06	75 25	28 20
टोडारायसिंह	26 00	75 29	28 04
टोंक	26 11	75 50	26 40
डूंगरपुर	23 50	73 43	35 08
डीडवाना	27 17	74 25	32 20
तिजारा	27 55	76 50	22 40
थानागाजी	27 25	76 19	24 44
देओरा	26 30	70 42	47 12
देचू	26 47	72 20	40 40

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मिं. सैं.
देवली	25 46	75 25	28 20
देवलिया	24 38	74 42	31 12
देवीकोट	26 38	71 07	45 32
धौलपुर	26 42	77 53	18 28
नवलगढ़	27 51	75 18	28 48
नसीराबाद	26 18	74 46	30 56
नागौर	27 11	73 40	35 20
नाथद्वारा	24 56	73 50	34 40
नीम का थाना	27 44	75 48	26 48
नोखा	27 35	73 29	36 04
नौहर	29 11	74 46	30 56
पचपदरा	25 55	72 21	40 36
पाली	25 46	73 25	36 20
पूरबतसर	26 53	74 47	30 52
पिलानी	28 23	75 35	27 40
पल्लू	28 56	74 13	33 08
पुष्कर	26 30	74 34	31 44
पोखरन	26 56	71 55	42 20
फतेहपुर	28 00	75 00	30 00
फलौदी	27 09	72 22	40 32
फुलेरा	26 52	75 16	28 56
बड़ी सादड़ी	24 25	74 28	32 08
बयाना	26 55	77 17	20 52
ब्यावर	26 06	74 21	32 36
बाड़मेर	25 46	71 25	44 20
बांदीकुई	27 02	76 34	23 44
बाप	27 24	72 22	40 32
बाराँ	25 07	76 30	24 00
बांसवाड़ा	23 30	74 24	32 24
बालोतरा	25 50	72 14	41 04
बिलाड़ा	26 11	73 42	35 12
बीकानेर	28 01	73 22	36 32
बून्दी	25 27	75 40	27 20
भरतपुर	27 05	77 30	20 00
भादरा	29 15	75 20	28 40
भीनमाल	25 01	72 19	40 44
भीलवाड़ा	25 21	74 40	31 20
मकराना	27 04	74 43	31 08
महाजन	28 49	73 56	34 16

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मिं. सैं.
मांगरोल	25 21	76 30	24 00
मारवाड़ जंक्शन	25 44	73 45	35 00
मावली	24 48	73 58	34 08
मेड़ता	26 40	74 06	33 36
मेड़ता रोड़	26 44	73 55	34 20
मुकन्दबाड़ा	24 49	76 01	25 56
मुनाबाओ	25 43	70 15	49 00
मोहनगढ़	27 17	71 18	44 48
रतनगढ़	28 05	74 39	31 24
रानीवाड़ा	24 46	72 13	41 08
रामगढ़ (जयपुर)	27 14	75 10	29 20
रामगढ़ (जैसलमेर)	27 23	70 30	48 00
रायसिंहनगर	29 32	73 27	36 12
रीगस	27 21	75 34	27 44
रूपनगर	26 47	74 54	30 24
लछमनगढ़	27 45	75 04	29 44
लाठी	27 03	71 30	44 00
लूनी	26 00	72 52	38 32
शाहगढ़	27 08	69 58	50 08
शाहपुरा (जयपुर)	27 22	75 58	26 08
शाहपुरा (भीलवाड़ा)	25 40	74 50	30 40
शेरगढ़ (जोधपुर)	26 24	72 21	40 36
शेरगढ़ (झालावाड़)	24 41	76 32	23 52
श्रीगंगानगर	29 49	73 50	34 40
श्रीमाधोपुर	27 25	75 32	27 52
श्रीमोहनगढ़	27 17	71 12	45 12
समदड़ी	25 49	72 35	39 40
सरदार शहर	28 27	74 30	32 00
सरूपसर	29 22	73 37	35 32
सवाईमाधोपुर	25 59	76 30	24 00
सांगानेर	26 49	75 52	26 32
सांचोर	24 41	71 50	42 40
साम्भर	26 55	75 10	29 20
सादूलपुर	28 39	75 24	28 24
सिरोही	24 54	72 55	38 20
सिवाना	25 37	72 27	40 12
सीकर	27 36	75 09	29 24
सुजानगढ़	27 42	74 30	32 00
सूरतगढ़	29 19	73 57	34 12
हनुमानगढ़	29 35	74 21	32 36

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

हरियाणा के नगरों के अक्षांश-रेखांश

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण
	अं. क.	अं. क.	मि. सैं.		अं. क.	अं. क.	मि. सैं.		अं. क.	अं. क.	मि. सैं.
अम्बाला	30 21	76 52	22 32	नरवाणा	29 36	76 08	25 28	महेन्द्रगढ़	28 18	76 09	25 24
अलीपुर	29 10	75 52	26 32	नारनौल	28 02	76 14	25 04	माहम	28 58	76 19	24 44
अगरोहा	29 20	75 38	27 28	नारायणगढ़	30 30	77 09	21 24	मोहाना	29 04	76 50	22 40
करनाल	29 42	77 02	21 52	नाहर	28 23	76 23	24 28	यमुनानगर	30 08	77 16	20 56
कलानौर	28 52	76 23	24 28	नीलोखेड़ी	29 52	76 54	22 24	रादौर	30 02	77 06	21 36
कालका	30 49	76 57	22 12	पंचकूला	30 45	76 53	22 28	रैना	29 28	74 54	30 24
कुरुक्षेत्र	29 59	76 48	22 48	पटौदी	28 19	76 48	22 48	रिवाड़ी	28 12	76 40	23 20
केसरी	30 15	76 53	26 28	पलवल	28 10	77 19	20 44	रोडी	29 44	75 15	29 00
कैथल	29 48	76 26	24 16	पानीपत	29 23	77 01	21 56	रोहतक	28 54	76 38	23 28
खतौली	30 37	76 58	22 08	पिंजौर	30 49	76 55	22 20	रिवासा	28 48	75 57	26 12
गुड़गांव	28 29	77 04	21 44	पिपली	29 59	76 52	22 32	लाडवा	29 59	77 05	21 40
गोहाना	29 09	76 41	23 16	पिहोवा	29 56	76 36	23 36	लोहारू	28 16	75 45	27 00
घरौण्डा	29 34	76 58	22 08	फतेहाबाद	29 31	75 30	28 00	शाहाबाद	30 10	76 55	22 20
चरखी दादरी	28 36	76 16	24 56	फरीदाबाद	28 25	77 22	20 32	सिरसा	29 32	75 06	29 36
जगाधरी	30 10	77 16	20 56	बल्लभगढ़	28 22	77 20	20 40	सिवानी	28 55	75 37	27 32
जाखल	29 49	75 49	26 44	बहादुरगढ़	28 42	76 55	22 20	सोनीपत	28 58	76 59	22 04
जीन्द	29 19	76 21	24 36	भादसों	29 56	76 56	22 16	हसनपुर	27 59	77 29	20 04
झज्जर	28 38	76 39	23 24	भिवानी	28 46	76 18	24 48	हांसी	29 06	76 00	26 04
टोहाना	29 43	75 53	26 28	मनसादेवी	30 44	76 52	22 32	हिसार	29 10	75 46	26 56
थानेसर	29 58	76 56	22 16	मनीमाजरा	30 42	76 53	22 28				
दादरी	28 33	77 32	19 52								

जम्मू-कश्मीर के नगरों के अक्षांश-रेखांश

अनन्तनाग	33 43	75 12	29 12	चिलास	35 27	74 06	33 36	बसौली	32 30	75 49	26 24
अखनूर	32 54	74 45	31 00	चुशूल	33 35	78 39	15 24	बारामूला	34 10	74 30	32 00
अवन्तीपुरा	33 56	75 03	29 48	छम्ब	32 51	74 23	32 28	भद्रवाह	33 04	75 50	26 40
अमरनाथ गुफा	34 13	75 33	27 48	जम्मू	32 43	74 54	30 24	मार्तण्ड	33 48	75 18	28 48
इष्कुमान	36 36	73 50	34 40	जंगला	33 40	77 00	22 00	मिनीमर्ग	34 49	75 02	29 52
उड़ी	34 04	74 02	33 52	जास्कार	33 30	77 00	22 00	मुज़फ्फराबाद	34 22	73 31	35 56
ऊधमपुर	32 55	75 07	29 32	जस्मेरगढ़	32 18	75 05	29 40	मनावर	32 50	74 25	32 20
कठुआ	32 17	75 36	27 36	डोडा	33 11	75 34	27 44	रामनगर	32 50	75 22	28 32
कटरा	33 01	74 58	30 08	तेरू	36 11	72 45	39 00	राजौरी	33 23	74 18	32 48
कारगिल	34 30	76 13	25 08	द्रास	34 22	75 50	26 40	रामबन	33 14	75 15	29 00
केरन	34 40	73 59	34 04	नवांशहर	32 30	74 46	30 56	रियासी	33 04	74 53	30 28
किश्तवाड़	33 19	75 48	26 48	नागिर	36 17	74 45	31 00	लेह	34 10	77 40	19 20
कोटली	33 30	73 57	34 12	नौशेरा	33 13	74 17	32 52	वैष्णो देवी	33 03	74 56	30 16
कुलगाम	33 42	75 02	29 52	पदम	33 28	76 54	22 24	वूलर	34 20	74 37	31 22
खयालू	35 10	76 20	24 40	पहलगांव	34 01	75 24	28 24	शेरकिला	36 05	74 04	33 44
खरताक्षी	34 53	76 12	25 12	परिपंजाल	33 36	74 22	22 32	श्रीनगर	34 06	74 51	30 36
गुलमर्ग	34 05	74 25	32 20	पुंछ	33 51	74 08	33 28	साम्बा	32 33	75 07	29 32
गिलगित	35 55	74 22	32 32	बनिहाल	33 32	75 19	28 44	सोपूर	34 19	74 30	32 00
गुरयास	34 38	74 56	30 16	बटोटी	33 06	75 19	28 44	सोनामर्ग	34 19	75 20	28 40
चिनेनी	33 01	75 20	28 40	बटोत	33 10	75 06	29 36	सोन्दर	33 29	75 57	26 12
				बड़गाम	34 00	74 44	31 04	सोपुर	34 19	74 30	32 00

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विदेशी नगरों के अक्षांश-रेखांश एवं स्टैं. अन्तर

आगे लिखे गए विदेशी नगरों के सामने स्थानीय समय का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए अन्तिम कालम में (–) चिन्ह वाले नगरों का समय भा. स्टै. टा. से पहले घटित होगा जबकि (+) चिन्ह वाले नगरों के आगे निर्दिष्ट समय, उतने घण्टे मिनट बाद में घटित होगा। जैसे इंग्लैंड (लंदन) के आगे +5/30 घं. मिं. लिखे हैं, इसका भाव यह हुआ कि यदि इंग्लैंड में प्रातः के 6/30 बजे हैं तो भारत में दोपहर के 12 बजे होंगे। इसी भान्ति न्यूयार्क (अमेरिका) के आगे +10/30 घं. मिं. होने से इसका यह तात्पर्य होगा कि वहां साढ़े दस घण्टे पीछे अर्थात् गत दिवस के डेढ़ (1/30) बजे होंगे। ज्ञातव्य रहे, अमेरिका, कैनेडा, मैक्सीको आदि देशों में एक ही समय अलग–अलग स्टैण्डर्ड टाईम का निर्धारण किया जाता है। जैसे– एटलांटिक टाईम (A.T.), ईस्टर्न टाईम (Eastern Time), सैंटर्ल टाईम (Central Time), माऊंटेन टाईम, पैसेफिक टाईम इत्यादि। यह सब स्टै. टाईम अलग–अलग रेखांशों पर आधारित होते हैं। जिसे स्टैण्डर्ड मेरिडियन कहते हैं। उदाहरणतया ईस्टर्न टाईम 75° रेखांश, सैंट्रल टाईम 90° रेखांश पर, माऊंटेन टाईम 105° पश्चिम रेखांश अनुसार निर्धारित होता है। अमरीका या कैनेडा में किसी नगर का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए वहां स्टैण्डर्ड मेरिडियन निर्धारक रेखांश का ज्ञान आवश्यक है। दूसरे, विदेशी समयांतर में विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि अमरीका, कैनेडा, ब्रिटेन आदि कुछ देशों में ग्रीष्मकालीन समय (Day Saving Time) या Summer Time का भी विचार किया जाता है। जोकि प्रायः अप्रैल के अन्तिम रविवार से अक्तूबर के अन्तिम रविवार तक होता है। (अमरीका, कैनेडा में)। इन दिनों देश की घड़ियां एक घण्टा आगे कर दी जाती है। सुश्री निधि शर्मा MSc.

नगर	देश	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टै. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
अथींस (Athens)*	Greece	37 54 उ.	23 52 पू.	-24 32	30 00 पू.	+03 30
आकलैण्ड*	Newzealand	36 52 द.	174 42 पू.	-21 12	180 00 पू.	-06 30
ओटावा (E.T.)*	Canada	45 26 उ.	75 42 प.	-02 48	75 00 प.	+10 30
अबु-धाबी	U.A.E.	24 58 उ.	54 10 पू.	-22 20	60 00 पू.	+01 30
आस्टिन (Texa) (Austin)*	U.S.A.	30 16 उ.	97 45 प.	-31 00	90 00 प.	+11 30
ऐबीलेन (Abilen)*	U.S.A.	32 27 उ.	99 44 प.	-38 56	90 00 प.	+11 30
ऐबटसफोर्ड (Abotsford)*	U.S.A.	49 10 उ.	122 30 प.	-10 00	120 00 प.	+13 30
ऐमस्टर्डम* (Netherland)	U.S.A.	52 22 उ.	04 53 पू.	-40 28	15 00 पू.	+04 30
ओक्सफोर्ड (C.T.)*	U.S.A.	34 22 उ.	89 32 प.	+01 52	90 00 प.	+11 30
ऐडनबर्ग (Adenberg)*	England	55 52 उ.	3 12 प.	-12 48	00 00	+05 30
एडमंटन (Edmonton)*	Canada	53 33 उ.	113 29 प.	-33 56	105 00 प.	+12 30
ओक्सफोर्ड (Oxford)*	England	51 46 उ.	1 15 प.	-5 00	00 00	+05 30
ईस्लामाबाद*	Pakistan	33 40 उ.	73 04 पू.	-07 44	75 00 पू.	+00 30
इस्तबुल (Istanbul)*	Turkey	41 00 उ.	29 00 पू.	-04 00	30 00 पू.	+03 30
काठमण्डू	Nepal	27 42 उ.	85 19 पू.	-03 44	86 15 पू.	-00 15
कुआलालमपुर	Malaysia	03 02 उ.	101 40 पू.	-73 20	120 00 पू.	-02 30
कुवैत	Kuwait	29 20 उ.	47 59 पू.	+11 56	45 00 पू.	+02 30
कराची	Pakistan	24 52 उ.	67 03 पू.	-31 48	75 00 पू.	+00 30
काबुल	Afghanistan	34 32 उ.	69 12 पू.	+06 48	67 30 पू.	+01 00

नगर	देश	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टै. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
कन्धार	Afghanistan	31 33 उ.	65 30 पू.	-08 00	67 30 पू.	+01 00
कैण्डी (Kandy)	Sri Lanka	07 18 उ.	80 38 पू.	-07 28	82 30 पू.	+00 00
कोलम्बो	Sri Lanka	06 56 उ.	79 51 पू.	-10 56	82 30 पू.	00 00
कोपनहेगन*	Denmark	55 40 उ.	12 30 पू.	-10 00	15 00 पू.	+04 30
कैलीफोर्निया*	U.S.A.	35 58 उ.	118 40 पू.	+05 20	120 00 प.	+13 30
कोलम्बस (E.T.)*	U.S.A.	32 28 उ.	84 59 प.	-39 56	75 00 प.	+10 30
कोलम्बिया (C.T.)*	U.S.A.	38 57 उ.	92 20 प.	-09 20	90 00 प.	+11 30
कालगिरी (Calgary)*	Canada	51 03 उ.	114 03 प.	-36 12	105 00 प.	+12 30
ग्रीनविच*	England	51 29 उ.	00 00	00 00	00 00	+05 30
जनेवा (Geneva)*	Switzerland	46 12 उ.	06 09 पू.	-35 24	15 00 पू.	+04 30
जकार्ता	Indonesia	06 10 द.	106 49 पू.	+07 16	105 00 पू.	-01 30
जाफना	Sri Lanka	09 40 उ.	80 00 पू.	-10 00	82 30 पू.	00 00
जेरूसलाम	Israel	31 46 उ.	35 14 पू.	+20 56	30 00 पू.	+03 30
टोरंटो (Toronto)*	Canada	43 39 उ.	79 23 प.	-17 32	75 00 प.	+10 30
टोक्यो (Tokyo)	Japan	35 40 उ.	139 46 पू.	+19 04	135 00 पू.	-03 30
टैरेस (Terrace)*	Canada	54 17 उ.	128 57 प.	-35 48	120 00 प.	+13 30
डोनकास्टर (Doncaster)*	England	53 27 उ.	01 02 प.	-04 08	00 00	+05 30
डेट्रोट (Detroit Michi)*	U.S.A.	42 20 उ.	83 03 प.	-32 12	75 00 प.	+10 30
डबलिन (Dublin)*	Ireland	53 21 उ.	06 15 प.	-25 00	00 00 प.	+05 30

*इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer or Day Saving Time) प्रचलित है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नगर	देश	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टै. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
डर्बी (Derby)*	England	52 58 उ.	01 25 प.	-05 40	00 00 प.	+05 30
दालेस (Dales Texas)*	U.S.A.	29 56 उ.	97 34 प.	-20 16	90 00 प.	+11 30
दारे-सलाम	Tanzania	06 50 द.	39 17 प.	-22 52	45 00 पू.	+02 30
दुबई (Dubai)	U.A.E.	25 19 उ.	55 18 पू.	-18 48	60 00 पू.	+01 30
न्यूयार्क (New York)*	U.S.A.	40 43 उ.	74 00 प.	+04 00	75 00 प.	+10 30
न्यूजर्सी (E.T.)*	U.S.A.	40 43 उ.	74 09 प.	+03 24	75 00 प.	+10 30
नौटिंघम(Nottingham)*	England	52 51 उ.	01 18 प.	-05 12	00 10	+05 30
नैरोबी	Kenya	01 18 द.	36 52 पू.	-32 32	45 00 पू.	+02 30
न्यू कैसल (New Castle)*	England	52 27 उ.	09 04 प.	-36 16	00 00	+05 30
पैरिस (Paris)*	France	48 50 उ.	02 20 पू.	-50 40	15 00 पू.	+04 30
पर्थ* (Perth)	Australia	31 57 द.	115 52 पू.	-16 32	120 00 पू.	-02 30
पेशावर	Pakistan	34 01 उ.	71 33 पू.	-13 48	75 00 पू.	+00 30
प्लाईमाउथ(Plymouth)*	England	50 25 उ.	04 05 प.	-16 20	00 00	+05 30
प्रिंस जार्ज(Prince George)*	Canada	53 55 उ.	122 46 प.	-11 04	120 00 प.	+13 30
प्रिंस रूपर्ट (Prince Rupert)*	Canada	54 19 उ.	130 19 प.	-41 06	120 00 प.	+13 30
पोर्ट लुईस(Port Louis)*	Mauritius	20 10 द.	57 30 पू.	-10 00	60 00 पू.	+01 30
फ्लोरिडा (Florida City)	U.S.A.	25 27 उ.	80 29 प.	-21 56	75 00 प.	+10 30
बगदाद	Iraq	33 18 उ.	44 30 पू.	-2 00	45 00 पू.	+02 30
बहावलपुर	Pakistan	30 00 उ.	73 16 पू.	-06 56	75 00 पू.	+00 30
बैंकांक	Thailand	13 43 उ.	100 31 पु.	-17 56	105 00 पू.	-01 30
बीजिंग	China	39 55 उ.	116 25 पू.	-14 20	120 00 पू.	-02 30
बर्लिन*	Germany	52 32 उ.	13 25 पू.	-06 20	15 00 पू.	+04 30
बर्न*	Switzerland	46 55 उ.	07 30 पू.	-30 00	15 00 पू.	+04 30
बरमिंघम (Birmingham)*	England	52 30 उ.	01 50 प.	-07 20	00 00	+05 30
ब्रैडफोर्ड (Bradford)*	England	53 46 उ.	01 40 प.	-6 40	00 00	+05 30
ब्रैम्पटन (Brampton)*	Canada	43 41 उ.	79 48 प.	-17 32	75 00 प.	+10 30
बेकर्सफील्ड(Bakersfield)*	Cal. U.S.A.	35 23 उ.	119 01 प.	+03 56	120 00 पू.	+13 30
ब्रिसटल (Bristol)*	England	51 27 उ.	02 35 प.	-10 20	00 00	+05 30
बॉन (Bonn)*	Germany	50 44 उ.	07 04 पू.	-31 44	15 00 पू.	+04 30
बोस्टन (Boston)*	U.S.A.	42 21 उ.	71 04 प.	+15 44	75 00 प.	+10 30
Frederick (Delaware Maryland)*	U.S.A.	39 38 उ.	78 31 प.	-14 04	75 00 प.	+10 30
ब्रिसबेन*	Australia	27 28 द.	153 02 पू.	+12 08	150 00 पू.	-04 30

नगर	देश	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टै. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
मस्कट	(Oman)	23 37 उ.	58 35 पू.	-5 40	60 00 पू.	+01 30
मानचैस्टर*	England	53 28 उ.	02 12 प.	-8 48	00 00	+05 30
मिलवाकी सिटी (Milwaukee)*	U.S.A.	42 53 उ.	88 03 प.	+07 58	90 00 प.	+11 30
मॉंट्रियाल (Montreal)*	Canada (E.T.)	45 31 उ.	73 33 प.	+05 48	75 00 प.	+10 30
मिसीसागा(Mississauga)*	Canada (E.T.)	43 33 उ.	79 35 प.	-18 20	75 00 प.	+10 30
मैक्सिको सिटी*	Mexico	19 26 उ.	99 10 प.	-36 40	90 00 प.	+11 30
मैलबार्न*	Australia	37 50 उ.	144 59 पू.	-20 04	150 00 पू.	-04 30
मनीला (Manila)*	Philippines	14 35 उ.	121 00 पू.	+04 00	120 00 पू.	-02 30
मुल्तान	Pakistan	30 11 उ.	71 29 पू.	-14 04	75 00 पू.	+00 30
रियाध	Soudi Arabia	24 39 उ.	46 41 पू.	+06 44	45 00 पू.	+02 30
रावलपिंडी	Pakistan	33 36 उ.	73 04 पू.	-07 44	75 00 पू.	+00 30
लाहौर (Pakistan)	Pakistan	31 15 उ.	74 18 पू.	-2 48	75 00 पू.	+00 30
लीड्स (Leeds)*	England	53 50 उ.	01 35 प.	-06 20	00 00	+05 30
लिवरपूल (Liverpool)*	England	53 24 उ.	02 58 प.	-11 52	00 00	+05 30
लंदन*	England	51 32 उ.	00 05 प.	-00 20	00 00	+05 30
लिसबन (Lisbon)*	England	38 43 उ.	09 10 प.	-36 40	00 00	+05 30
लास एजलंस*	U.S.A.	34 03 उ.	118 17 प.	+06 52	120 00 प.	+13 30
वॉलवहैम्पटन (Wolvehampton)*	England	52 36 उ.	02 05 प.	-08 20	00 00	+05 30
वैनकोवर*	Canada (P.T.)	49 17 उ.	123 05 प.	-12 20	120 00 प.	+13 30
विक्टोरिया*	Canada (P.T.)	48 25 उ.	123 21 प.	-13 24	120 00 प.	+13 30
वाशिंगटन*	U.S.A.	38 55 उ.	77 04 प.	-08 16	75 00 प.	+10 30
वैलिंगटन (Wellington)*	New Zealand	41 16 द.	174 47 पू.	-20 52	180 00 पू.	-06 30
शिकांगो (C.T.)*	U.S.A.	41 53 उ.	87 38 प.	+09 28	90 00 प.	+11 30
सेन फ्रांसिसको(P.T.)*	U.S.A. (P.T.)	37 48 उ.	122 25 प.	-09 42	120 00 प.	+13 30
सान्ता रोसा(Santa Rosa)*	U.S.A. (P.T.)	38 30 उ.	123 05 प.	-12 20	120 00 प.	+13 30
साउथ-हैम्पटन*	England	50 54 उ.	01 24 प.	-05 36	00 00	+05 30
सिंगापुर	Singapore	01 17 उ.	103 54 पू.	-64 24	120 00 पू.	-02 30
सिडनी*	Australia	33 52 द.	151 12 पू.	+04 48	150 00 पू.	-04 30
हाउसटन (Texas)*	U.S.A.	29 45 उ.	95 22 प.	-21 28	90 00 प.	+11 30
हैम्लटन (Hamilton)*	Canada	43 15 उ.	79 50 प.	-19 20	75 00 प.	+10 30
Yuba City (California)*	U.S.A.	39 08 उ.	121 08 प.	-04 32	120 00 प.	+13 30
Winnipeg (Manitoba)*	Canada	49 54 उ.	97 08 प.	-28 32	90 00 प.	+11 30

*इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer or Day Saving Time) प्रचलित है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से विश्व के किसी भी नगर का सूर्योदयास्त निकालें

ज्योतिष शास्त्र में सूर्योदयास्त की उपयोगिता सर्वविदित है। पृथ्वी पर सभी स्थानों पर सूर्योदयास्त एवं दिनमान एक समान नहीं होता। पृथ्वी की दैनिक गति एवं परिक्रमण गति के कारण प्रत्येक स्थान पर प्रतिदिन सूर्योदय एवं अस्त काल में अन्तर पड़ता है। सूर्योदयास्तादि तथा विभिन्न स्थानों की पारस्परिक अंशात्मक दूरी जानने के लिए अभीष्ट स्थान का अक्षांश, रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर की आवश्यकता पड़ती है। किसी नगर के स्टैण्डर्ड अन्तर की जानकारी के लिए तत्सम्बन्धी देश के मानक समय (Standard Time) के माध्यमिक मध्यान्ह (Stand. Meridian) रेखा ज्ञान होना चाहिए। भारतीय मानक समय का निर्धारण रेखांश ८२/३० पूर्व (ग्रीनविच से) एवं अक्षांश २३/११ उत्तर रेखाओं के मध्य बिन्दु पर आधारित है। इसी मध्यवर्ती रेखांश बिन्दु ८२/३० के आधार पर भारत में स्थित अन्य नगरों की अंशात्मक दूरी (Standard difference) ४ मिंट प्रति एक अंश के अनुपात से ऋण (—) अथवा जमा (+) किया जाता है। जो भारतीय नगर ८२°/३० रेखांश से पश्चिम में पड़ेंगे, वहां का देशान्तर (स्टै० अन्तर) ऋण (—) लिखा जाता है तथा जो भा० नगर ८२°/३०' के पूर्व में पड़ेंगे, वहां का स्टै० अन्तर जमा (+) में अंकित किया जाता है।

गत पृष्ठों पर लिखे गए प्रायः सभी नगर ८२°/३०' पू० रेखांश से पश्चिम में स्थित होने के कारण, उनका रेखांतर (स्टैण्डर्ड अन्तर) ऋण (—) लिखा गया है, जबकि अपने नगर का सूर्योदय-अस्त जानने के लिए नगर के आगे लिखे हुए स्टै० अन्तर को स्थानीय मध्यम सूर्योदयास्त अक्षांश सारणी में प्राप्त सूर्योदयास्त में जमा (+) करके अभीष्ट नगर का सूर्योदयास्त पता चलेगा।

यदि आपके नगर के अक्षांश (अंश कला में) मध्यम अक्षांश सारिणी में दिए सूर्योदयादि से कम या अधिक हो तो आप अभीष्ट तिथि से सूर्योदय-अस्त में अनुपातिक विधि से मिंट/सैकिंडज़ का संस्कार करके अभीष्ट तिथि का सूर्योदयास्त निकाल सकते हैं। **इस दृश्यमान सूर्योदयास्त में अपने अक्षांश भेद के अनुसार लगभग २/३ मिंट जमा करने (किरणवक्री भवन संस्कार) से शुद्ध शास्त्रीय मान (इष्टकालिक) का सूर्योदयास्त प्राप्त हो जायेगा।**

उदाहरण—मान लो, आपको २ फर. को सोनीपत का सूर्योदय ज्ञात करना है। सर्वप्रथम सोनीपत के अक्षांश, रेखांश ज्ञात करेंगे। गत पृष्ठों में देखने से हमें सोनीपत का अक्षांश २८/५८, रेखांश ७६/५९ तथा स्टैं. अन्तर —२२/०४ मिं. सै. प्राप्त हुआ है। सारिणी में अक्षांश २५ से ३० के मध्य अनुपातिक विधि से देखने पर हमें सू. उ. ६/४९ प्राप्त हुआ। इसमें स्टैं. अन्तर (—२२/०४) अर्थात् २२ मिनट जमा करने (क्योंकि स्टैं. अन्तर ऋण है अथवा यूं कहिए सोनीपत ८२°/३० रेखांश के पश्चिम में है) से सूर्योदय ७/११ प्राप्त हुए। इसमें ३ मिनट शास्त्रीय समय भी जमा करने से शुद्ध इष्टकालिक सूर्योदय प्राप्त होगा। अर्थात् ७/१४

आगे लिखे अक्षांशों में भारत के अतिरिक्त विदेशों के भी जैसे—इंग्लैण्ड, कैनेडा, अमरीका आदि नगरों के सूर्योदयास्त सुगमता से ज्ञात किए जा सकते हैं।

ध्यान रहे, **भारत के अधिकांश नगर अक्षांश १०° से ३५° अक्षांश तक ही पड़ते हैं, शेष अक्षांश विदेशी नगरों के हैं।**

—शुभचिन्तक पं. पन्ना लाल गणितकर्त्ता

नीचे उत्तरी अक्षांशों के अनुसार स्वदेशीय (लोकल) मध्यम सूर्योदयास्त लिख रहे हैं इनमें अपने अभीष्ट अक्षांश का स्टै. अन्तर + या — करने से स्टै. टा. में सू. उ. व सू. अ. निकल आएगा।

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
जनवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1 जन	6 17	17 49	6 35	17 31	6 45	17 21	6 56	17 10	7 08	16 58	7 22	16 44	7 39	16 28	7 59	16 08	8 08	15 58	8 19	15 47
3 ,,	6 18	17 51	6 36	17 33	6 46	17 24	6 56	17 13	7 08	17 00	7 22	16 46	7 39	16 31	7 59	16 11	8 08	16 01	8 19	15 50
5 ,,	6 18	17 52	6 36	17 34	6 46	17 25	6 57	17 14	7 09	17 02	7 22	16 49	7 38	16 33	7 59	16 13	8 08	16 04	8 19	15 53
7 ,,	6 19	17 53	6 37	17 35	6 47	17 27	6 57	17 16	7 09	17 04	7 22	16 51	7 38	16 35	7 58	16 16	8 07	16·07	8 18	15 56
9 ,,	6 20	17 54	6 37	17 36	6 47	17 28	6 57	17 17	7 09	17 05	7 22	16 53	7 38	16 37	7 58	16 18	8 06	16 09	8 17	15 59
11 ,,	6 20	17 55	6 38	17 38	6 47	17 29	6 57	17 18	7 09	17 07	7 22	16 55	7 37	16 40	7 57	16 21	8 05	16 11	8 15	16 02
13 ,,	6 21	17 56	6 38	17 39	6 47	17 30	6 57	17 20	7 08	17 09	7 21	16 57	7 37	16 42	7 56	16 23	8 04	16 14	8 14	16 04
15 ,,	6 22	17 58	6 38	17 40	6 47	17 31	6 57	17 22	7 08	17 11	7 21	16 59	7 36	16 44	7 55	16 26	8 03	16 17	8 12	16 08
17 ,,	6 22	17 59	6 38	17 41	6 47	17 33	6 57	17 24	7 08	17 13	7 20	17 01	7 35	16 47	7 54	16 29	8 01	16 21	8 10	16 12
19 ,,	6 23	18 00	6 38	17 42	6 47	17 34	6 56	17 25	7 07	17 15	7 19	17 03	7 33	16 50	7 52	16 32	7 59	16 24	8 08	16 15
21 ,,	6 23	18 01	6 38	17 43	6 47	17 35	6 56	17 27	7 06	17 17	7 18	17 06	7 32	16 52	7 50	16 35	7 57	16 27	8 06	16 19
23 ,,	6 23	18 02	6 38	17 44	6 46	17 38	6 55	17 29	7 05	17 19	7 17	17 08	7 30	16 55	7 48	16 39	7 54	16 30	8 04	16 23
25 ,,	6 23	18 03	6 37	17 46	6 46	17 40	6 55	17 31	7 04	17 21	7 16	17 10	7 29	16 58	7 45	16 42	7 52	16 34	8 00	16 27
27 ,,	6 23	18 04	6 37	17 48	6 45	17 42	6 54	17 33	7 03	17 23	7 14	17 13	7 27	16 01	7 42	16 45	7 49	16 38	7 57	16 31
29 ,,	6 23	18 05	6 37	17 49	6 45	17 43	6 53	17 34	7 02	17 25	7 13	17 15	7 25	16 04	7 40	16 48	7 47	16 42	7 54	16 35
31 ,,	6 23	18 05	6 37	17 51	6 44	17 44	6 52	17 36	7 01	17 27	7 11	17 18	7 23	16 07	7 37	16 52	7 44	16 46	7 51	16 39

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
फरवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
2 फर	6 23	18 06	6 36	17 52	6 43	17 45	6 50	17 37	6 59	17 29	7 09	17 20	7 21	17 09	7 34	16 56	7 41	16 50	7 48	16 43
4 ,,	6 22	18 06	6 35	17 53	6 41	17 47	6 49	17 39	6 58	17 31	7 07	17 23	7 18	17 12	7 32	17 00	7 38	16 54	7 44	16 47
6 ,,	6 22	18 07	6 34	17 54	6 40	17 49	6 48	17 41	6 56	17 33	7 05	17 25	7 16	17 15	7 28	17 03	7 34	16 57	7 41	16 51
8 ,,	6 22	18 07	6 34	17 55	6 39	17 50	6 47	17 42	6 54	17 35	7 03	17 27	7 13	17 17	7 25	17 07	7 31	17 01	7 37	16 55
10 ,,	6 21	18 08	6 33	17 56	6 38	17 50	6 45	17 44	6 52	17 37	7 01	17 30	7 10	17 20	7 22	17 10	7 27	17 05	7 33	16 59
12 ,,	6 21	18 08	6 32	17 57	6 36	17 52	6 44	17 46	6 50	17 39	6 58	17 32	7 08	17 23	7 18	17 13	7 24	17 08	7 29	17 03
14 ,,	6 20	18 08	6 31	17 58	6 36	17 53	6 42	17 47	6 48	17 41	6 56	17 34	7 05	17 26	7 15	17 16	7 20	17 12	7 25	17 07
16 ,,	6 20	18 09	6 30	17 59	6 34	17 55	6 40	17 49	6 46	17 43	6 53	17 36	7 02	17 29	7 11	17 20	7 16	17 15	7 21	17 11
18 ,,	6 19	18 09	6 28	18 00	6 33	17 56	6 38	17 50	6 43	17 45	6 51	17 39	6 58	17 32	7 08	17 23	7 12	17 19	7 17	17 15
20 ,,	6 19	18 09	6 27	18 01	6 31	17 57	6 36	17 52	6 41	17 47	6 48	17 42	6 55	17 35	7 04	17 26	7 08	17 23	7 12	17 19
22 ,,	6 18	18 10	6 26	18 02	6 30	17 58	6 35	17 53	6 39	17 49	6 45	17 44	6 52	17 38	7 00	17 29	7 04	17 27	7 08	17 23
24 ,,	6 17	18 10	6 24	18 03	6 27	17 59	6 33	17 55	6 36	17 51	6 43	17 46	6 49	17 41	6 56	17 33	7 00	17 30	7 03	17 27
26 ,,	6 16	18 10	6 23	18 03	6 26	18 00	6 30	17 56	6 34	17 53	6 40	17 48	6 46	17 43	6 52	17 36	6 55	17 33	6 59	17 31
28 ,,	6 15	18 10	6 22	18 04	6 24	18 01	6 28	17 58	6 32	17 54	6 38	17 50	6 42	17 45	6 48	17 39	6 51	17 36	6 54	17 34
1 मार्च	6 15	18 10	6 20	18 05	6 23	18 02	6 26	17 59	6 30	17 55	6 34	17 52	6 39	17 47	6 44	17 42	6 47	17 39	6 50	17 38
3 ,,	6 14	18 11	6 19	18 05	6 22	18 03	6 24	18 00	6 28	17 57	6 31	17 54	6 35	17 49	6 40	17 45	6 42	17 43	6 45	17 41
5 ,,	6 13	18 11	6 17	18 06	6 20	18 04	6 22	18 02	6 24	17 59	6 28	17 56	6 32	17 52	6 36	17 48	6 38	17 47	6 40	17 44
7 ,,	6 12	18 11	6 15	18 07	6 18	18 05	6 20	18 03	6 22	18 01	6 25	17 58	6 28	17 55	6 32	17 51	6 33	17 50	6 35	17 48
9 ,,	6 11	18 11	6 14	18 08	6 16	18 06	6 18	18 04	6 20	18 02	6 22	18 00	6 26	17 58	6 28	17 55	6 29	17 54	6 30	17 52
11 ,,	6 10	18 11	6 12	18 08	6 14	18 07	6 15	18 05	6 17	18 04	6 19	18 03	6 21	18 00	6 23	17 58	6 24	17 57	6 26	17 56
13 ,,	6 08	18 11	6 11	18 09	6 12	18 08	6 13	18 07	6 14	18 06	6 16	18 05	6 17	18 03	6 19	18 01	6 20	18 01	6 21	18 00
15 ,,	6 07	18 11	6 09	18 10	6 10	18 09	6 10	18 08	6 11	18 07	6 12	18 08	6 13	18 07	6 15	18 05	6 15	18 04	6 16	18 03
17 ,,	6 06	18 11	6 08	18 10	6 08	18 10	6 08	18 09	6 09	18 09	6 09	18 09	6 10	18 08	6 10	18 08	6 11	18 08	6 12	18 07
19 ,,	6 05	18 11	6 05	18 11	6 06	18 10	6 06	18 10	6 06	18 10	6 06	18 11	6 06	18 10	6 06	18 11	6 06	18 11	6 06	18 11
21 ,,	6 04	18 11	6 04	18 11	6 04	18 11	6 03	18 12	6 02	18 12	6 02	18 13	6 02	18 13	6 02	18 14	6 01	18 15	6 01	18 15
23 ,,	6 03	18 11	6 03	18 12	6 02	18 12	6 01	18 13	5 59	18 14	5 59	18 15	5 58	18 16	5 57	18 17	5 57	18 18	5 56	18 19
25 ,,	6 02	18 11	6 02	18 12	6 00	18 13	5 58	18 14	5 56	18 15	5 56	18 17	5 55	18 19	5 53	18 21	5 52	18 21	5 51	18 22
27 ,,	6 00	18 11	6 00	18 12	5 57	18 14	5 56	18 15	5 53	18 16	5 53	18 19	5 51	18 21	5 48	18 24	5 47	18 24	5 46	18 26
29 ,,	5 59	18 11	5 57	18 13	5 55	18 15	5 53	18 17	5 50	18 18	5 50	18 21	5 47	18 24	5 44	18 27	5 43	18 28	5 41	18 30
31 ,,	5 58	18 10	5 55	18 13	5 53	18 16	5 51	18 18	5 46	18 20	5 46	18 23	5 43	18 26	5 42	18 30	5 39	18 31	5 34	18 33
2 अप्रै	5 57	18 10	5 53	18 14	5 51	18 17	5 49	18 19	5 45	18 22	5 43	18 25	5 40	18 29	5 40	18 33	5 34	18 31	5 31	18 37
4 ,,	5 56	19 10	5 51	18 14	5 49	18 17	5 46	18 20	5 43	18 23	5 40	18 27	5 36	18 31	5 36	18 36	5 29	18 38	5 26	18 41
6 ,,	5 55	18 10	5 50	18 15	5 47	18 18	5 44	18 21	5 41	18 25	5 37	18 29	5 32	18 34	5 32	18 39	5 26	18 42	5 22	18 45
8 ,,	5 54	18 10	5 48	18 16	5 45	18 19	5 42	18 22	5 38	18 26	5 34	18 31	5 29	18 36	5 29	18 42	5 19	18 45	5 17	18 48
10 ,,	5 52	18 10	5 46	18 17	5 43	18 20	5 40	18 24	5 35	18 28	5 31	18 33	5 25	18 39	5 25	18 46	5 14	18 49	5 12	18 52
12 ,,	5 51	18 10	5 45	18 17	5 41	18 21	5 38	18 25	5 33	18 29	5 28	18 35	5 21	18 41	5 21	18 49	5 11	18 52	5 07	18 56
14 ,,	5 50	18 10	5 43	18 18	5 39	18 22	5 35	18 26	5 30	18 31	5 24	18 37	5 18	18 44	5 18	18 52	5 06	18 56	5 02	19 00
16 ,,	5 49	18 10	5 41	18 18	5 37	18 23	5 33	18 27	5 27	18 32	5 21	18 39	5 14	18 46	5 14	18 55	5 02	18 59	4 58	19 04
18 ,,	5 48	18 10	5 40	18 19	5 36	18 24	5 30	18 29	5 25	18 34	5 18	18 41	5 12	18 49	5 12	18 58	4 58	19 02	4 53	19 07
20 ,,	5 47	18 11	5 39	18 19	5 34	18 24	5 28	18 30	5 22	18 36	5 16	18 43	5 08	18 51	5 08	19 01	4 53	19 04	4 48	19 11
22 ,,	5 46	18 11	5 37	18 20	5 32	18 25	5 26	18 31	5 20	18 38	5 13	18 45	5 04	18 54	5 04	19 04	4 49	19 09	4 44	19 15
24 ,,	5 45	18 11	5 36	18 20	5 31	18 26	5 24	18 32	5 17	18 39	5 10	18 47	5 01	18 56	5 01	19 07	4 45	19 13	4 39	19 18

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
अप्रैल	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
26 अप्रै	5 45	18 11	5 34	18 21	5 29	18 27	5 22	18 34	5 15	18 41	5 08	18 49	4 58	18 59	4 58	19 11	4 41	19 16	4 35	19 22
28 ,,	5 44	18 11	5 33	18 22	5 27	18 28	5 20	18 35	5 13	18 43	5 04	18 51	4 54	19 01	4 54	19 14	4 37	19 19	4 31	19 25
30 ,,	5 43	18 11	5 32	18 23	5 26	18 29	5 18	18 36	5 11	18 44	5 02	18 53	4 51	19 04	4 51	19 17	4 33	19 23	4 26	19 29
2 मई	5 42	18 12	5 30	18 23	5 24	18 30	5 16	18 38	5 09	18 46	4 59	18 55	4 48	19 06	4 35	19 20	4 29	19 26	4 22	19 33
4 ,,	5 42	18 12	5 29	18 24	5 23	18 31	5 15	18 39	5 07	18 47	4 57	18 57	4 45	19 09	4 32	19 23	4 25	19 29	4 18	19 37
6 ,,	5 41	18 12	5 28	18 25	5 21	18 32	5 13	18 40	5 05	18 49	4 54	18 59	4 43	19 11	4 28	19 26	4 22	19 32	4 14	19 40
8 ,,	5 40	18 12	5 27	18 26	5 20	18 33	5 12	18 41	5 03	18 51	4 52	19 01	4 40	19 14	4 25	19 29	4 18	19 36	4 10	19 44
10 ,,	5 40	18 13	5 26	18 26	5 19	18 34	5 11	18 42	5 01	18 53	4 50	19 03	4 37	19 16	4 20	19 32	4 15	19 39	4 06	19 47
12 ,,	5 40	18 13	5 25	18 27	5 18	18 35	5 09	18 44	4 59	18 54	4 48	19 05	4 35	19 19	4 17	19 35	4 11	19 42	4 03	19 51
14 ,,	5 39	18 14	5 24	18 28	5 17	18 36	5 07	18 46	4 57	18 56	4 46	19 07	4 32	19 21	4 14	19 37	4 08	19 45	3 59	19 54
16 ,,	5 39	18 14	5 24	18 29	5 16	18 37	5 06	18 47	4 56	18 57	4 44	19 09	4 30	19 24	4 12	19 40	4 05	19 49	3 56	19 58
18 ,,	5 38	18 14	5 23	18 30	5 15	18 38	5 05	18 48	4 54	18 59	4 42	19 11	4 28	19 26	4 09	19 43	4 02	19 52	3 53	20 01
20 ,,	5 38	18 15	5 22	18 31	5 14	18 39	5 04	18 49	4 53	19 00	4 41	19 13	4 26	19 28	4 07	19 46	3 59	19 55	3 50	20 04
22 ,,	5 38	18 15	5 22	18 31	5 13	18 40	5 03	18 50	4 52	19 02	4 39	19 15	4 24	19 30	4 04	19 48	3 57	19 58	3 47	20 07
24 ,,	5 38	18 16	5 21	18 32	5 12	18 41	5 02	18 51	4 51	19 03	4 38	19 16	4 22	19 32	4 02	19 51	3 54	20 00	3 44	20 10
26 ,,	5 38	18 16	5 21	18 33	5 11	18 42	5 01	18 52	4 50	19 05	4 36	19 18	4 21	19 34	4 01	19 53	3 52	20 03	3 42	20 13
28 ,,	5 38	18 17	5 20	18 34	5 11	18 43	5 00	18 54	4 49	19 06	4 35	19 19	4 19	19 36	3 59	19 56	3 50	20 05	3 39	20 16
30 ,,	5 38	18 17	5 20	18 34	5 11	18 44	5 00	18 55	4 48	19 07	4 34	19 20	4 18	19 38	3 58	19 58	3 48	20 08	3 37	20 18
1 जून	5 38	18 18	5 20	18 35	5 10	18 45	4 59	18 56	4 47	19 08	4 33	19 22	4 17	19 39	3 56	20 00	3 46	20 10	3 35	20 21
3 ,,	5 38	18 18	5 20	18 36	5 10	18 46	4 59	18 57	4 47	19 09	4 32	19 24	4 16	19 41	3 55	20 02	3 45	20 12	3 33	20 23
5 ,,	5 38	18 19	5 20	18 37	5 10	18 47	4 58	18 58	4 46	19 10	4 32	19 25	4 15	19 42	3 53	20 04	3 43	20 14	3 32	20 26
7 ,,	5 38	18 19	5 20	18 37	5 10	18 48	4 58	18 59	4 46	19 11	4 31	19 27	4 14	19 44	3 52	20 06	3 42	20 16	3 30	20 28
9 ,,	5 39	18 20	5 20	18 38	5 10	18 49	4 58	19 00	4 46	19 12	4 31	19 28	4 14	19 45	3 52	20 07	3 41	20 18	3 29	20 30
11 ,,	5 39	18 20	5 20	18 39	5 10	18 50	4 58	19 01	4 45	19 13	4 30	19 29	4 13	19 46	3 51	20 08	3 41	20 20	3 28	20 31
13 ,,	5 39	18 21	5 20	18 40	5 10	18 51	4 58	19 01	4 45	19 14	4 30	19 30	4 12	19 48	3 50	20 10	3 40	20 22	3 27	20 34
15 ,,	5 39	18 21	5 20	18 40	5 10	18 51	4 59	19 02	4 46	19 15	4 30	19 31	4 12	19 49	3 50	20 11	3 39	20 22	3 27	20 35
17 ,,	5 39	18 22	5 21	18 41	5 10	18 51	4 59	19 03	4 46	19 16	4 31	19 31	4 13	19 49	3 50	20 12	3 39	20 23	3 27	20 36
19 ,,	5 40	18 22	5 21	18 41	5 11	18 52	4 59	19 03	4 46	19 16	4 31	19 32	4 13	19 50	3 50	20 12	3 39	20 23	3 27	20 36
21 ,,	5 40	18 23	5 22	18 42	5 11	18 52	5 00	19 04	4 47	19 17	4 31	19 32	4 13	19 50	3 51	20 13	3 40	20 23	3 27	20 36
23 ,,	5 41	18 23	5 22	18 42	5 12	18 53	5 00	19 04	4 47	19 17	4 33	19 33	4 14	19 51	3 52	20 13	3 41	20 24	3 28	20 36
25 ,,	5 41	18 24	5 23	18 43	5 12	18 53	5 01	19 05	4 48	19 17	4 33	19 33	4 15	19 51	3 53	20 13	3 41	20 24	3 29	20 36
27 ,,	5 42	18 24	5 23	18 43	5 13	18 53	5 01	19 05	4 48	19 18	4 34	19 33	4 16	19 51	3 54	20 13	3 43	20 24	3 29	20 36
29 ,,	5 42	18 24	5 24	18 43	5 13	18 53	5 02	19 05	4 49	19 18	4 34	19 33	4 17	19 51	3 54	20 13	3 43	20 24	3 32	20 36
1 जुला	5 42	18 24	5 24	18 43	5 14	18 53	5 02	19 05	4 49	19 18	4 34	19 32	4 17	19 50	3 54	20 12	3 44	20 23	3 32	20 35
3 ,,	5 43	18 25	5 24	18 43	5 15	18 54	5 03	19 05	4 50	19 17	4 35	19 32	4 18	19 50	3 56	20 12	3 45	20 22	3 33	20 34
5 ,,	5 44	18 25	5 25	18 43	5 15	18 53	5 04	19 05	4 51	19 17	4 37	19 31	4 19	19 49	3 58	20 11	3 47	20 21	3 35	20 33
7 ,,	5 44	18 25	5 26	18 43	5 16	18 53	5 05	19 04	4 52	19 17	4 38	19 31	4 20	19 49	4 00	20 10	3 49	20 20	3 37	20 32
9 ,,	5 45	10 25	5 27	18 43	5 17	18 53	5 06	19 04	4 53	19 16	4 39	19 31	4 22	19 48	4 02	20 09	3 51	20 14	3 40	20 30
11 ,,	5 45	18 25	5 27	18 43	5 18	18 53	5 07	19 04	4 54	19 16	4 40	19 30	4 24	19 47	4 04	20 07	3 53	20 17	3 42	20 28
13 ,,	5 46	18 25	5 28	18 43	5 19	18 53	5 08	19 03	4 56	19 15	4 42	19 29	4 25	19 45	4 06	20 05	3 55	20 16	3 44	20 26
15 ,,	5 46	18 25	5 29	18 43	5 20	18 52	5 09	19 02	4 57	19 14	4 43	19 28	4 27	19 44	4 08	20 04	3 57	20 14	3 47	20 24
17 ,,	5 47	18 25	5 29	18 42	5 21	18 52	5 10	19 01	4 58	19 13	4 45	19 27	4 29	19 42	4 10	20 02	4 00	20 12	3 50	20 22

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख जुलाई	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.
19 जुला	5 47	18 25	5 30	18 42	5 22	18 51	5 11	19 01	4 59	19 12	4 46	19 25	4 31	19 41	4 12	20 00	4 03	20 09	3 52	20 19
21 ,,	5 47	18 25	5 31	18 41	5 22	18 50	5 12	19 00	5 01	19 11	4 48	19 24	4 33	19 39	4 14	19 57	4 06	20 07	3 55	20 17
23 ,,	5 47	18 25	5 32	18 41	5 23	18 49	5 13	18 59	5 02	19 10	4 50	19 22	4 35	19 37	4 16	19 55	4 08	20 04	3 58	20 14
25 ,,	5 48	18 24	5 32	18 40	5 24	18 48	5 14	18 58	5 04	19 08	4 51	19 21	4 37	19 35	4 19	19 53	4 11	20 01	4 01	20 11
27 ,,	5 48	18 24	5 33	18 39	5 25	18 47	5 15	18 57	5 05	19 07	4 53	19 19	4 39	19 33	4 22	19 50	4 14	19 58	4 04	20 07
29 ,,	5 49	18 23	5 34	18 38	5 26	18 46	5 17	18 55	5 07	19 05	4 55	19 17	4 41	19 31	4 24	19 47	4 17	19 55	4 07	20 04
31 ,,	5 49	18 23	5 35	18 37	5 27	18 45	5 17	18 54	5 08	19 04	4 57	19 15	4 44	19 28	4 27	19 44	4 20	19 52	4 11	20 01
2 अग	5 50	18 22	5 35	18 36	5 28	18 44	5 19	18 52	5 09	19 02	4 59	19 13	4 46	19 25	4 30	19 41	4 23	19 48	4 14	19 57
4 ,,	5 50	18 22	5 36	18 35	5 29	18 43	5 20	18 51	5 11	19 00	5 00	19 11	4 48	19 23	4 33	19 38	4 26	19 45	4 18	19 53
6 ,,	5 50	18 21	5 36	18 34	5 30	18 42	5 22	18 50	5 12	18 58	5 02	19 08	4 50	19 20	4 36	19 34	4 28	19 42	4 21	19 49
8 ,,	5 50	18 21	5 37	18 33	5 31	18 40	5 23	18 48	5 14	18 56	5 04	19 06	4 53	19 18	4 39	19 31	4 32	19 38	4 25	19 45
10 ,,	5 50	18 20	5 38	18 32	5 32	18 39	5 25	18 46	5 16	18 54	5 06	19 03	4 55	19 15	4 42	19 28	4 35	19 34	4 28	19 45
12 ,,	5 51	18 19	5 39	18 31	5 33	18 37	5 26	18 44	5 17	18 52	5 08	19 01	4 57	19 12	4 45	19 24	4 38	19 30	4 32	19 37
14 ,,	5 51	18 18	5 39	18 30	5 33	18 35	5 27	18 42	5 19	18 49	5 10	18 58	5 00	19 08	4 47	19 21	4 42	19 26	4 35	19 32
16 ,,	5 51	18 17	5 40	18 28	5 34	18 34	5 28	18 40	5 20	18 47	5 12	18 56	5 02	19 05	4 51	19 17	4 45	19 22	4 39	19 28
18 ,,	5 51	18 16	5 41	18 26	5 35	18 32	5 29	18 38	5 22	18 45	5 14	18 23	5 04	19 02	4 53	19 13	4 48	19 18	4 42	19 23
20 ,,	5 51	18 15	5 41	18 25	5 36	18 30	5 30	18 36	5 23	18 43	5 16	18 50	5 07	18 59	4 57	19 09	4 51	19 14	4 46	19 19
22 ,,	5 51	18 14	5 42	18 23	5 37	18 28	5 32	18 34	5 25	18 40	5 18	18 47	5 09	18 56	4 59	19 05	4 55	10 10	4 49	19 15
24 ,,	5 51	18 13	4 42	18 22	5 38	18 27	5 33	18 32	5 26	18 37	5 19	18 44	5 12	18 52	5 02	19 01	4 58	19 06	4 53	19 10
26 ,,	5 51	18 12	5 43	18 20	5 39	18 25	5 34	18 29	5 28	18 34	5 21	18 41	5 14	18 49	5 05	18 57	5 01	19 02	4 57	19 05
28 ,,	5 51	18 11	5 43	18 19	5 39	18 23	5 35	18 27	5 29	18 32	5 23	18 38	5 16	18 45	5 08	18 53	5 04	18 57	5 00	19 01
30 ,,	5 51	18 10	5 44	18 17	5 40	18 21	5 36	18 25	5 31	18 29	5 25	18 35	5 19	18 41	5 11	18 49	5 08	18 53	5 04	18 56
1 सितं	5 51	19 09	5 44	18 15	5 41	18 19	5 37	18 23	5 32	18 27	5 27	18 32	5 22	18 38	5 14	18 45	5 11	18 48	5 08	18 51
3 ,,	5 51	18 08	5 45	18 13	5 42	18 17	5 38	18 20	5 34	18 24	5 29	18 29	5 24	18 34	5 16	18 41	5 14	18 43	5 11	18 47
5 ,,	5 51	18 07	5 46	18 12	5 42	18 15	5 39	18 18	5 35	18 21	5 31	18 26	5 26	18 30	5 20	18 36	5 17	18 39	5 15	18 42
7 ,,	5 50	18 06	5 46	18 10	5 43	18 12	5 40	18 15	5 37	18 18	5 33	18 23	5 28	18 27	5 23	18 31	5 21	18 34	5 18	18 37
9 ,,	5 50	18 04	5 46	18 08	5 44	18 10	5 41	18 13	5 38	18 16	5 35	18 11	5 31	18 23	5 26	18 27	5 24	18 29	5 22	18 32
11 ,,	5 50	18 03	5 46	18 07	5 44	18 08	5 42	18 10	5 39	18 13	5 37	18 16	5 33	18 19	5 29	18 23	5 27	18 24	5 25	18 27
13 ,,	5 50	18 02	5 47	18 05	5 45	18 06	5 43	18 08	5 41	18 10	5 39	18 13	5 36	18 15	5 32	18 19	5 30	18 20	5 29	18 22
15 ,,	5 50	18 00	5 47	18 03	5 46	18 04	5 44	18 05	5 42	18 07	5 40	18 10	5 38	18 11	5 34	18 14	5 34	18 16	5 32	18 17
17 ,,	5 50	17 59	5 48	18 01	5 47	18 02	5 45	18 03	5 44	18 04	5 42	18 06	5 41	18 08	5 38	18 10	5 37	18 11	5 36	18 12
19 ,,	5 49	17 58	5 48	17 59	5 47	18 00	5 46	18 01	5 45	18 02	5 44	18 03	5 43	18 04	5 41	18 06	5 41	18 06	5 40	18 07
21 ,,	5 49	17 57	5 48	17 57	5 48	17 58	5 47	17 58	5 47	17 59	5 46	17 59	5 45	18 00	5 44	18 01	5 44	18 01	5 43	18 02
23 ,,	5 49	17 55	5 49	17 55	5 49	17 55	5 49	17 56	5 48	17 56	5 48	17 56	5 48	17 56	5 47	17 56	5 47	17 56	5 47	17 57
25 ,,	5 49	17 54	5 49	17 54	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 52	5 50	17 52	5 50	17 52	5 50	17 52
27 ,,	5 49	17 53	5 50	17 52	5 51	17 51	5 51	17 50	5 51	17 50	5 52	17 50	5 52	17 48	5 53	17 48	5 53	17 48	5 54	17 47
29 ,,	5 49	17 52	5 51	17 50	5 51	17 49	5 52	17 48	5 53	17 47	5 54	17 46	5 55	17 45	5 56	17 43	5 57	17 43	5 58	17 42
1 अक्टू	5 49	17 51	5 51	17 48	5 52	17 47	5 53	17 46	5 54	17 44	5 56	17 43	5 57	17 41	5 59	17 38	6 00	17 39	6 01	17 37
3 ,,	5 49	17 49	5 51	17 46	5 53	17 45	5 54	17 43	5 56	17 41	5 58	17 40	6 00	17 37	6 03	17 35	6 03	17 34	6 05	17 32
5 ,,	5 48	17 48	5 52	17 44	5 54	17 43	5 55	17 40	5 57	17 38	6 00	17 37	6 02	17 33	6 06	17 30	6 07	17 29	6 08	17 27
7 ,,	5 48	17 47	5 52	17 43	5 55	17 41	5 57	17 38	5 59	17 36	6 02	17 33	6 05	17 30	6 09	17 26	6 10	17 24	6 12	17 22
9 ,,	5 48	17 46	5 53	17 42	5 55	17 39	5 58	17 36	6 01	17 33	6 04	17 30	6 07	17 27	6 12	17 22	6 14	17 19	6 16	17 17

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख अक्तूबर	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.
11 अक्तू	5 48	17 45	5 53	17 40	5 56	17 37	5 59	17 34	6 02	17 31	6 06	17 27	6 10	17 23	6 15	17 18	6 17	17 15	6 20	17 13
13 ,,	5 48	17 44	5 54	17 38	5 57	17 35	6 00	17 31	6 04	17 28	6 08	17 24	6 12	17 20	6 18	17 14	6 21	17 11	6 23	17 08
15 ,,	5 49	17 43	5 55	17 37	5 58	17 33	6 02	17 29	6 06	17 25	6 10	17 21	6 15	17 16	6 21	17 10	6 24	17 07	6 27	17 03
17 ,,	5 49	17 42	5 55	17 35	5 59	17 31	6 03	17 27	6 07	17 23	6 12	17 18	6 18	17 12	6 24	17 06	6 28	17 02	6 31	16 59
19 ,,	5 49	17 41	5 56	17 34	6 00	17 30	6 05	17 25	6 09	17 20	6 14	17 15	6 20	17 09	6 28	17 02	6 31	16 58	6 35	16 54
21 ,,	5 49	17 40	5 57	17 32	6 01	17 28	6 06	17 23	6 11	17 18	6 16	17 13	6 23	17 05	6 31	16 58	6. 35	16 54	6 39	16 49
23 ,,	5 49	17 39	5 58	17 31	6 02	17 26	6 07	17 21	6 12	17 15	6 18	17 10	6 26	17 02	6 34	16 54	6 38	16 50	6 43	16 45
25 ,,	5 49	17 39	5 58	17 29	6 03	17 24	6 08	17 19	6 14	17 13	6 20	17 03	6 28	16 59	6 38	16 50	6 42	16 46	6 46	16 41
27 ,,	5 50	17 38	5 59	17 28	6 05	17 23	6 10	17 17	6 16	17 11	6 22	17 04	6 31	16 56	6 41	16 46	6 46	16 42	6 50	16 37
29 ,,	5 50	17 38	6 00	17 27	6 06	17 21	6 12	17 15	6 18	17 09	6 24	17 02	6 34	16 53	6 45	16 42	6 49	16 38	6 54	16 32
31 ,,	5 50	17 37	6 00	17 26	6 07	17 20	6 13	17 14	6 20	17 07	6 27	16 59	6 37	16 50	6 48	16 39	6 52	16 34	6 58	18 28
2 नवं.	5 51	17 37	6 02	17 24	6 08	17 11	6 14	17 12	6 22	17 05	6 30	16 56	6 39	16 47	6 51	16 35	6 56	16 30	7 02	16 24
4 ,,	5 51	17 36	6 03	17 23	6 09	17 18	6 16	17 11	6 23	17 03	6 32	16 54	6 42	16 45	6 54	16 32	7 00	16 27	7 06	16 21
6 ,,	5 52	17 36	6 04	17 23	6 10	17 17	6 18	17 09	6 25	17 01	6 34	16 52	6 45	16 42	6 57	16 29	7 03	16 23	7 10	16 17
8 ,,	5 52	17 35	6 05	17 22	6 12	17 16	6 19	17 08	6 27	16 59	6 37	16 50	6 48	16 39	7 01	16 26	7 07	16 20	7 14	16 13
10 ,,	5 53	17 35	6 06	17 22	6 13	17 15	6 21	17 06	6 29	16 57	6 39	16 48	6 50	16 37	7 04	16 23	7 10	16 17	7 17	16 09
12 ,,	5 54	17 35	6 07	17 21	6 15	17 14	6 22	17 05	6 31	16 56	6 41	16 47	6 53	16 35	7 07	16 20	7 14	16 14	7 21	16 06
14 ,,	5 54	17 35	6 08	17 21	6 16	17 13	6 24	17 04	6 33	16 55	6 44	16 45	6 56	16 33	7 11	16 17	7 18	16 11	7 25	16 03
16 ,,	5 55	17 34	6 09	17 20	6 17	17 12	6 26	17 03	6 35	16 54	6 46	16 43	6 59	16 31	7 14	16 15	7 21	16 08	7 29	16 00
18 ,,	5 56	17 34	6 11	17 20	6 18	17 12	6 27	17 03	6 37	16 53	6 48	16 41	7 01	16 29	7 17	16 12	7 25	16 05	7 33	15 57
20 ,,	5 57	17 35	6 12	17 19	6 20	17 11	6 29	17 02	6 39	16 52	6 51	16 40	7 04	16 27	7 20	16 10	7 28	16 03	7 36	15 54
22 ,,	5 58	17 35	6 13	17 19	6 21	17 11	6 31	17 01	6 41	16 51	6 53	16 39	7 07	16 25	7 23	16 08	7 31	16 00	7 40	15 51
24 ,,	5 58	17 35	6 14	17 19	6 23	17 10	6 32	17 01	6 43	16 50	6 55	16 38	7 09	16 24	7 26	16 06	7 35	15 58	7 44	15 49
26 ,,	5 59	17 35	6 15	17 19	6 24	17 10	6 34	17 00	6 45	16 50	6 57	16 37	7 12	16 22	7 29	16 04	7 38	15 56	7 47	15 47
28 ,,	6 00	17 36	6 17	17 19	6 26	17 10	6 36	17 00	6 47	16 49	6 59	16 36	7 14	16 21	7 32	16 03	7 41	15 55	7 50	15 45
30 ,,	6 01	17 36	6 18	17 19	6 28	17 10	6 37	17 00	6 49	16 49	7 01	16 36	7 17	16 21	7 35	16 02	7 44	15 53	7 54	15 43
2 दिसं.	6 02	17 37	6 19	17 19	6 29	17 10	6 39	17 00	6 51	16 58	7 03	16 35	7 19	16 20	7 38	16 01	7 47	15 52	7 57	15 42
4 ,,	6 03	17 37	6 21	17 20	6 30	17 10	6 41	17 00	6 52	16 48	7 05	16 35	7 21	16 20	7 40	16 00	7 49	15 51	8 01	15 41
6 ,,	6 04	17 38	6 22	17 20	6 32	17 10	6 42	17 00	6 54	16 48	7 07	16 35	7 23	16 19	7 43	15 59	7 52	15 50	8 04	15 39
8 ,,	6 05	17 38	6 23	17 20	6 33	17 10	6 44	17 00	6 55	16 48	7 09	16 35	7 25	16 19	7 45	15 59	7 54	15 50	8 06	15 39
10 ,,	6 06	17 39	6 24	17 21	6 34	17 11	6 45	17 00	6 57	16 48	7 11	16 35	7 27	16 18	7 47	15 58	7 57	15 49	8 09	15 38
12 ,,	6 07	17 40	6 25	17 22	6 35	17 11	6 46	17 01	6 58	16 48	7 13	16 35	7 9	16 17	7 49	15 58	7 59	15 48	8 11	15 37
14 ,,	6 08	17 41	6 27	17 23	6 37	17 12	6 48	17 01	7 0	16 49	7 14	16 35	7 [illegible]	16 19	7 51	15 58	8 1	15 48	8 13	15 37
16 ,,	6 09	17 42	6 28	17 23	6 38	17 13	6 49	17 02	7 1	16 49	7 15	16 36	7 3[illegible]	16 19	7 53	15 59	8 3	15 48	8 14	15 38
18 ,,	6 10	17 43	6 29	17 24	6 39	17 14	6 50	17 03	7 2	16 50	7 17	16 36	7 33	16 20	7 54	15 59	8 4	15 49	8 16	15 38
20 ,,	6 11	17 44	6 30	17 25	6 40	17 15	6 51	17 04	7 4	16 51	7 18	16 37	7 35	16 21	7 55	16 00	8 5	15 50	8 17	15 39
22 ,,	6 12	17 45	6 31	17 26	6 41	17 16	6 52	17 05	7 5	16 52	7 19	16 38	7 36	16 21	7 56	16 00	8 6	15 51	8 18	15 39
24 ,,	6 13	17 46	6 32	17 27	6 42	17 17	6 53	17 06	7 6	16 54	7 20	16 39	7 37	16 23	7 57	16 02	8 7	15 52	8 19	15 41
26 ,,	6 14	17 47	6 33	17 28	6 43	17 18	6 54	17 07	7 6	16 55	7 21	16 41	7 37	16 24	7 58	16 03	8 8	15 53	8 19	15 42
28 ,,	6 15	17 48	6 34	17 29	6 44	17 20	6 55	17 09	7 7	16 56	7 21	16 42	7 38	16 25	7 58	16 05	8 8	15 55	8 19	15 44
30 ,,	6 16	17 49	6 34	17 30	6 45	17 21	6 56	17 10	7 8	16 57	7 22	16 44	7 38	16 26	7 59	16 07	8 8	15 57	8 19	15 46
31 ,,	6 17	17 50	6 34	17 31	6 45	17 23	6 56	17 10	7 8	16 58	7 22	16 44	7 38	16 27	7 59	16 08	8 8	15 58	8 19	15 47

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हिमाचल प्रदेश के प्रमुख शहरों के सूर्योदयास्त की सारणी भा. स्टै. टाईम

नीचे हिमाचल प्रदेश के कुछ प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त दिए गए हैं जो किरण-वक्री भवन संस्कार रहित है। जो सूर्योदयादि इष्ट, ज्योतिष शास्त्रीय एवं धार्मिक अनुष्ठानादि कृत्यों के लिए समान रूप से उपयोगी होते हैं। किसी नगर के सूर्योदय में लगभग २ मिनट घटाने तथा अस्त में २ मिनट जोड़ने से किरण वक्री संस्कार सहित (Upper Limb) अर्थात् दृश्यमान सूर्योदय-सूर्यास्त होंगे।

पाठकों की सुविधा हेतु आगे प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त से पूर्व हिमाचल प्रदेश के विभिन्न नगरों के सूर्योदयास्त में परिवर्तन संस्कार लिख रहे हैं जिससे आप किसी भी अभीष्ट नगर का सू. उदय सुगमता पूर्वक ज्ञात कर सकते हैं।

उदाहरण—मान लीजिए करसोग में ११ अप्रैल को सूर्योदय व सूर्यास्त जानना है तो हमें जिला मण्डी के स्तम्भ (Column) में देखने से सूर्योदय ६ घण्टे १ मिनट तथा सूर्यास्त १८ घण्टे ४४ मिनट प्राप्त हुए। इन दोनों सू. उ. व सू. अ. में नीचे दी गई संस्कार तालिका में करसोग का संस्कार—१ घण्टे ०४ मिनट घटाने से हमें ५ घण्टे ५९ मिनट ५६ सैकेण्ड और १८ घण्टे ४२ मिनट २६ सैकेण्ड में प्राप्त हुए। ये करसोग के शुद्ध शास्त्रीय सूर्योदय एवं सूर्यास्त होंगे।

नगर	काँगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
जनवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 28	17 29	7 27	17 28	7 27	17 29	7 23	17 28	7 24	17 26	7 27	17 29	7 22	17 27	7 23	17 27	7 27	17 29	7 22	17 25	7 22	17 26
4	7 28	17 32	7 28	17 31	7 28	17 32	7 24	17 31	7 25	17 29	7 27	17 31	7 23	17 30	7 24	17 29	7 28	17 31	7 23	17 29	7 22	17 28
7	7 29	17 34	7 28	17 33	7 28	17 33	7 24	17 32	7 25	17 31	7 27	17 33	7 24	17 32	7 24	17 31	7 28	17 34	7 23	17 30	7 22	17 29
10	7 29	17 37	7 29	17 36	7 29	17 36	7 24	17 34	7 25	17 33	7 28	17 35	7 24	17 34	7 24	17 33	7 28	17 36	7 23	17 32	7 22	17 31
13	7 28	17 39	7 28	17 38	7 28	17 39	7 23	17 36	7 25	17 36	7 27	17 38	7 23	17 36	7 24	17 35	7 28	17 39	7 23	17 35	7 22	17 34
16	7 28	17 42	7 27	17 41	7 28	17 42	7 23	17 39	7 25	17 39	7 26	17 41	7 23	17 39	7 23	17 38	7 27	17 42	7 22	17 37	7 21	17 37
19	7 27	17 44	7 26	17 43	7 27	17 43	7 23	17 42	7 24	17 43	7 25	17 43	7 22	17 41	7 22	17 42	7 26	17 46	7 21	17 41	7 21	17 41
22	7 26	17 47	7 25	17 46	7 26	17 46	7 22	17 44	7 23	17 45	7 25	17 45	7 21	17 43	7 21	17 43	7 25	17 48	7 20	17 43	7 20	17 43
25	7 25	17 50	7 25	17 49	7 25	17 49	7 21	17 47	7 22	17 48	7 24	17 48	7 20	17 46	7 20	17 46	7 24	17 50	7 19	17 46	7 19	17 46
28	7 23	17 52	7 23	17 51	7 24	17 52	7 19	17 50	7 20	17 50	7 23	17 51	7 18	17 49	7 19	17 49	7 23	17 53	7 17	17 48	7 17	17 48
31	7 21	17 55	7 21	17 54	7 21	17 54	7 17	17 53	7 18	17 54	7 22	17 55	7 16	17 52	7 18	17 52	7 22	17 56	7 15	17 51	7 15	17 51
3 फर.	7 20	17 58	7 19	17 57	7 19	17 57	7 16	17 56	7 17	17 57	7 19	17 57	7 15	17 55	7 16	17 54	7 20	17 58	7 14	17 54	7 13	17 54
6	7 18	18 00	7 17	17 59	7 18	18 00	7 14	17 58	7 15	17 59	7 17	17 59	7 13	17 57	7 14	17 57	7 18	18 01	7 12	17 56	7 12	17 56
9	7 15	18 03	7 14	18 03	7 15	18 02	7 12	18 02	7 12	18 02	7 14	18 01	7 10	18 01	7 11	18 00	7 15	18 04	7 09	18 00	7 09	18 00
12	7 12	18 06	7 12	18 06	7 12	18 06	7 08	18 04	7 09	18 04	7 12	18 04	7 07	18 03	7 09	18 02	7 13	18 06	7 06	18 02	7 06	18 02
15	7 10	18 08	7 09	18 08	7 10	18 08	7 06	18 06	7 06	18 06	7 09	18 07	7 05	18 05	7 06	18 05	7 10	18 09	7 05	18 04	7 04	18 04
18	7 07	18 10	7 06	18 10	7 07	18 10	7 03	18 08	7 03	18 08	7 06	18 09	7 02	18 07	7 03	18 07	7 07	18 12	7 02	18 07	7 02	18 07
21	7 04	18 13	7 03	18 13	7 04	18 13	7 00	18 11	7 00	18 11	7 03	18 12	6 59	18 10	7 00	18 10	7 04	18 14	6 59	18 09	6 58	18 10
24	7 01	18 15	7 00	18 14	7 01	18 15	6 57	18 13	6 57	18 13	7 01	18 15	6 56	18 12	6 57	18 12	7 01	18 16	6 56	18 11	6 55	18 12
27	6 58	18 18	6 57	18 17	6 58	18 18	6 54	18 16	6 54	18 16	6 56	18 17	6 53	18 15	6 54	18 15	6 57	18 19	6 52	18 14	6 53	18 14
2 मार्च	6 54	18 20	6 53	18 20	6 53	18 19	6 50	18 18	6 50	18 19	6 53	18 20	6 49	18 17	6 50	18 17	6 53	18 20	6 48	18 16	6 49	18 16
5	6 51	18 22	6 50	18 21	6 51	18 22	6 47	18 20	6 47	18 20	6 50	18 22	6 46	18 19	6 47	18 19	6 51	18 23	6 46	18 18	6 46	18 18
8	6 46	18 24	6 46	18 23	6 46	18 24	6 43	18 22	6 43	18 23	6 46	18 24	6 41	18 21	6 43	18 21	6 47	18 25	6 42	18 21	6 40	18 20
11	6 43	18 27	6 42	18 26	6 43	18 26	6 39	18 24	6 40	18 24	6 43	18 26	6 38	18 24	6 40	18 23	6 44	18 17	6 39	18 22	6 37	18 23
14	6 40	18 28	6 39	18 27	6 39	18 27	6 36	18 25	6 36	18 25	6 39	18 27	6 36	18 25	6 37	18 24	6 40	18 28	6 35	18 24	6 35	18 24
17	6 36	18 30	6 35	18 29	6 35	18 29	6 32	18 27	6 32	18 27	6 35	18 29	6 31	18 27	6 32	18 26	6 36	18 30	6 31	18 25	6 30	18 26
20	6 31	18 32	6 30	18 31	6 31	18 31	6 26	18 29	6 28	18 31	6 31	18 31	6 26	18 29	6 28	18 27	6 32	18 32	6 27	18 26	6 25	18 28

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नगर	कांगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशे.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
मार्च	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
23	6 28	18 34	6 27	18 33	6 28	18 33	6 24	18 30	6 25	18 31	6 28	18 33	6 23	18 31	6 25	18 30	6 29	18 34	6 24	18 28	6 22	18 30
26	6 24	18 36	6 23	18 35	6 24	18 35	6 21	18 33	6 21	18 33	6 24	18 35	6 20	18 33	6 21	18 33	6 25	18 36	6 20	18 31	6 19	18 32
29	6 21	18 38	6 20	18 37	6 20	18 37	6 18	18 34	6 18	18 34	6 20	18 37	6 16	18 35	6 17	18 35	6 21	18 38	6 16	18 33	6 15	18 34
2 अप्रै.	6 15	18 40	6 14	18 39	6 15	18 40	6 12	18 37	6 13	18 38	6 15	18 40	6 11	18 37	6 12	18 37	6 16	18 41	6 11	18 36	6 10	18 36
5	6 12	18 43	6 10	18 42	6 12	18 42	6 08	18 39	6 09	18 39	6 12	18 42	6 07	18 39	6 09	18 39	6 13	18 43	6 08	18 37	6 06	18 38
8	6 09	18 45	6 08	18 44	6 08	18 43	6 05	18 42	6 06	18 42	6 08	18 43	6 04	18 41	6 05	18 41	6 09	18 44	6 04	18 39	6 03	18 40
11	6 04	18 47	6 03	18 46	6 04	18 46	6 01	18 44	6 01	18 44	6 04	18 46	6 00	18 43	6 01	18 43	6 05	18 47	6 00	18 41	5 59	18 42
14	6 01	18 50	6 00	18 49	6 01	18 49	5 58	18 47	5 58	18 47	6 01	18 49	5 57	18 46	5 58	18 46	6 02	18 49	5 57	18 44	5 56	18 45
17	5 57	18 51	5 56	18 50	5 57	18 51	5 54	18 49	5 54	18 49	5 57	18 50	5 53	18 47	5 54	18 48	5 58	18 51	5 53	18 46	5 52	18 46
20	5 54	18 54	5 53	18 53	5 54	18 53	5 51	18 51	5 51	18 51	5 54	18 53	5 50	18 50	5 51	18 51	5 55	18 54	5 50	18 49	5 49	18 49
23	5 50	18 56	5 50	18 56	5 50	18 55	5 47	18 53	5 47	18 53	5 50	18 55	5 46	18 52	5 48	18 52	5 51	18 56	5 47	18 51	5 45	18 51
26	5 48	18 58	5 47	18 58	5 48	18 57	5 45	18 55	5 45	18 55	5 48	18 57	5 44	18 54	5 45	18 54	5 49	18 58	5 44	18 52	5 43	18 53
29	5 46	19 01	5 45	19 00	5 45	19 00	5 42	18 58	5 42	18 58	5 45	19 00	5 42	18 57	5 42	18 57	5 46	19 01	5 41	18 55	5 41	18 56
2 मई	5 44	19 02	5 43	19 01	5 43	19 01	5 40	18 59	5 40	18 59	5 43	19 01	5 39	18 58	5 40	18 58	5 44	19 02	5 39	18 56	5 38	18 57
4	5 41	19 03	5 39	19 02	5 40	19 02	5 37	18 59	5 37	18 59	5 40	19 02	5 37	18 59	5 37	19 00	5 41	19 03	5 36	18 58	5 36	18 58
7	5 38	19 05	5 37	19 04	5 37	19 04	5 34	19 00	5 34	19 00	5 37	19 04	5 34	19 01	5 34	19 01	5 38	19 05	5 33	19 00	5 33	19 00
10	5 35	19 07	5 34	19 06	5 35	19 06	5 32	19 03	5 33	19 04	5 35	19 06	5 32	19 03	5 32	19 03	5 36	19 07	5 31	19 03	5 31	19 02
13	5 34	19 09	5 32	19 08	5 33	19 09	5 30	19 06	5 30	19 06	5 33	19 09	5 30	19 05	5 30	19 05	5 34	19 10	5 29	19 05	5 29	19 04
16	5 32	19 11	5 30	19 11	5 31	19 11	5 28	19 07	5 29	19 07	5 31	19 11	5 28	19 07	5 28	19 07	5 32	19 12	5 27	19 06	5 27	19 06
19	5 30	19 13	5 28	19 12	5 29	19 13	5 26	19 09	5 26	19 09	5 29	19 13	5 26	19 09	5 26	19 10	5 30	19 14	5 25	19 08	5 25	19 08
22	5 28	19 14	5 26	19 13	5 27	19 14	5 24	19 11	5 24	19 11	5 27	19 14	5 24	19 11	5 25	19 11	5 28	19 15	5 23	19 10	5 24	19 10
25	5 27	19 16	5 25	19 15	5 26	19 16	5 23	19 14	5 24	19 14	5 26	19 16	5 23	19 13	5 24	19 14	5 27	19 17	5 22	19 12	5 23	19 12
28	5 25	19 18	5 24	19 17	5 25	19 18	5 22	19 16	5 22	19 16	5 25	19 18	5 21	19 15	5 21	19 15	5 26	19 19	5 21	19 14	5 21	19 14
31	5 24	19 20	5 22	19 21	5 24	19 20	5 21	19 17	5 21	19 17	5 24	19 20	5 20	19 17	5 20	19 17	5 25	19 21	5 20	19 16	5 20	19 16
3 जून	5 23	19 23	5 22	19 22	5 23	19 22	5 20	19 19	5 20	19 19	5 23	19 22	5 20	19 20	5 20	19 19	5 24	19 23	5 19	19 18	5 19	19 19
6	5 23	19 24	5 21	19 23	5 22	19 24	5 20	19 21	5 20	19 21	5 22	19 24	5 19	19 21	5 20	19 21	5 23	19 25	5 19	19 20	5 18	19 20
9	5 22	19 25	5 21	19 25	5 22	19 25	5 19	19 22	5 19	19 22	5 22	19 25	5 19	19 22	5 20	19 22	5 23	19 26	5 19	19 21	5 19	19 21
12	5 22	19 27	5 21	19 26	5 22	19 27	5 18	19 23	5 18	19 23	5 22	19 27	5 18	19 23	5 19	19 23	5 23	19 28	5 19	19 22	5 18	19 22
15	5 22	19 28	5 21	19 27	5 22	19 28	5 18	19 23	5 19	19 23	5 22	19 28	5 18	19 23	5 19	19 23	5 23	19 29	5 18	19 23	5 18	19 22
18	5 21	19 30	5 21	19 29	5 21	19 30	5 18	19 24	5 19	19 25	5 21	19 29	5 17	19 24	5 19	19 24	5 23	19 30	5 18	19 24	5 17	19 23
21	5 22	19 31	5 22	19 30	5 22	19 31	5 19	19 25	5 20	19 26	5 22	19 31	5 18	19 25	5 20	19 25	5 23	19 31	5 19	19 24	5 18	19 24
24	5 23	19 32	5 22	19 31	5 23	19 32	5 21	19 25	5 22	19 26	5 23	19 32	5 19	19 25	5 21	19 25	5 24	19 32	5 20	19 24	5 18	19 24
27	5 25	19 33	5 23	19 32	5 25	19 32	5 22	19 27	5 22	19 27	5 25	19 32	5 21	19 26	5 22	19 26	5 26	19 33	5 21	19 25	5 20	19 25
30	5 25	19 33	5 24	19 33	5 25	19 33	5 23	19 27	5 23	19 27	5 25	19 33	5 22	19 26	5 23	19 27	5 26	19 32	5 22	19 25	5 22	19 25
3 जुला	5 26	19 32	5 25	19 32	5 26	19 32	5 24	19 28	5 25	19 28	5 27	19 32	5 23	19 27	5 24	19 28	5 28	19 32	5 23	19 25	5 23	19 26
6	5 28	19 32	5 27	19 31	5 28	19 32	5 26	19 27	5 26	19 28	5 28	19 31	5 25	19 28	5 25	19 28	5 29	19 32	5 24	19 25	5 25	19 27
9	5 30	19 30	5 29	19 29	5 30	19 31	5 27	19 27	5 28	19 27	5 30	19 30	5 27	19 27	5 27	19 27	5 31	19 31	5 26	19 24	5 27	19 26
12	5 32	19 29	5 31	19 28	5 31	19 29	5 29	19 26	5 29	19 26	5 31	19 29	5 29	19 26	5 28	19 25	5 32	19 30	5 27	19 23	5 28	19 25

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नगर	कांगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
जुलाई	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	5 33	19 28	5 33	19 27	5 33	19 28	5 30	19 26	5 31	19 25	5 33	19 28	5 30	19 25	5 30	19 24	5 34	19 29	5 29	19 22	5 30	19 24
18	5 34	19 27	5 33	19 26	5 34	19 27	5 32	19 24	5 32	19 24	5 34	19 27	5 31	19 23	5 32	19 22	5 35	19 28	5 31	19 21	5 31	19 22
21	5 36	19 25	5 35	19 25	5 36	19 25	5 33	19 21	5 33	19 22	5 36	19 25	5 33	19 21	5 33	19 21	5 37	19 26	5 32	19 20	5 33	19 20
24	5 38	19 23	5 37	19 22	5 38	19 23	5 35	19 19	5 36	19 20	5 38	19 23	5 35	19 19	5 35	19 19	5 39	19 24	5 34	19 18	5 35	19 18
27	5 40	19 22	5 39	19 21	5 40	19 22	5 37	19 17	5 38	19 18	5 40	19 22	5 37	19 18	5 37	19 18	5 41	19 23	5 36	19 16	5 37	19 16
30	5 42	19 19	5 41	19 19	5 42	19 19	5 39	19 15	5 40	19 16	5 42	19 19	5 39	19 16	5 39	19 15	5 43	19 20	5 38	19 14	5 38	19 14
2 अग.	5 44	19 18	5 43	19 17	5 44	19 18	5 41	19 14	5 42	19 15	5 44	19 18	5 41	19 14	5 41	19 13	5 45	19 19	5 40	19 12	5 40	19 13
5	5 46	19 16	5 45	19 15	5 46	19 16	5 43	19 12	5 44	19 13	5 46	19 16	5 43	19 13	5 43	19 11	5 47	19 17	5 42	19 10	5 43	19 12
8	5 48	19 13	5 47	19 12	5 48	19 13	5 45	19 11	5 46	19 12	5 48	19 13	5 45	19 11	5 45	19 09	5 49	19 14	5 44	19 07	5 45	19 10
11	5 50	19 11	5 49	19 10	5 50	19 11	5 47	19 08	5 48	19 09	5 50	19 11	5 47	19 08	5 57	19 06	5 51	19 12	5 46	19 04	5 47	19 07
14	5 51	19 09	5 50	19 08	5 51	19 09	5 48	19 06	5 49	19 07	5 51	19 09	5 48	19 05	5 48	19 02	5 52	19 10	5 47	19 00	5 48	19 05
17	5 53	19 04	5 52	19 03	5 53	19 04	5 50	19 01	5 51	19 03	5 53	19 04	5 50	19 01	5 50	18 59	5 54	19 05	5 49	18 57	5 50	19 00
20	5 55	19 01	5 55	19 01	5 55	19 01	5 52	18 59	5 53	19 00	5 55	19 01	5 52	18 59	5 52	18 57	5 56	19 02	5 51	18 55	5 52	18 58
23	5 57	18 58	5 57	18 58	5 57	18 58	5 54	18 55	5 55	18 55	5 57	18 58	5 54	18 55	5 54	18 54	5 58	18 59	5 53	18 53	5 53	18 54
26	5 59	18 54	5 59	18 53	5 59	18 53	5 56	18 50	5 57	18 51	5 58	18 54	5 56	18 50	5 56	18 51	5 59	18 55	5 55	18 48	5 55	18 49
29	6 01	18 50	6 00	18 49	6 00	18 50	5 58	18 46	5 59	18 47	5 59	18 50	5 58	18 46	5 58	18 46	6 02	18 50	5 57	18 45	5 57	18 45
1 सितं.	6 02	18 46	6 02	18 45	6 02	18 46	5 59	18 44	6 00	18 45	6 02	18 46	5 59	18 44	6 00	18 43	6 04	18 46	5 59	18 41	5 58	18 43
4	6 04	18 43	6 03	18 41	6 04	18 42	6 02	18 40	6 03	18 41	6 04	18 42	6 01	18 39	6 02	18 39	6 06	18 42	6 01	18 39	6 00	18 38
7	6 06	18 40	6 06	18 39	6 06	18 40	6 04	18 37	6 04	18 37	6 05	18 39	6 03	18 37	6 04	18 36	6 07	18 39	6 03	18 37	6 02	18 35
10	6 09	18 35	6 09	18 34	6 09	18 34	6 06	18 32	6 06	18 32	6 08	18 33	6 06	18 32	6 05	18 32	6 09	18 35	6 05	18 31	6 05	18 31
13	6 11	18 31	6 11	18 30	6 11	18 30	6 07	18 28	6 08	18 29	6 10	18 29	6 07	18 28	6 07	18 28	6 11	18 31	6 06	18 27	6 07	18 27
16	6 12	18 27	6 12	18 26	6 12	18 27	6 09	18 24	6 10	18 25	6 12	18 27	6 09	18 24	6 09	18 24	6 13	18 28	6 08	18 24	6 09	18 23
19	6 14	18 23	6 14	18 23	6 13	18 23	6 10	18 20	6 11	18 21	6 14	18 23	6 10	18 20	6 10	18 20	6 14	18 23	6 09	18 18	6 10	18 19
22	6 16	18 18	6 16	18 18	6 16	18 18	6 12	18 15	6 13	18 16	6 16	18 18	6 12	18 15	6 13	18 16	6 17	18 18	6 12	18 13	6 12	18 14
25	6 17	18 15	6 17	18 15	6 17	18 15	6 14	18 12	6 15	18 13	6 17	18 15	6 14	18 12	6 14	18 12	6 18	18 15	6 13	18 10	6 14	18 11
28	6 19	18 11	6 19	18 11	6 19	18 11	6 16	18 08	6 17	18 09	6 19	18 11	6 15	18 08	6 16	18 08	6 19	18 12	6 15	18 07	6 15	18 07
1 अक्तू	6 22	18 07	6 21	18 07	6 22	18 07	6 18	18 04	6 18	18 04	6 21	18 07	6 17	18 04	6 18	18 03	6 22	18 07	6 17	18 02	6 16	18 03
4	6 23	18 04	6 23	18 03	6 23	18 04	6 19	18 00	6 19	18 00	6 23	18 04	6 18	18 00	6 19	18 00	6 23	18 04	6 18	17 59	6 18	17 59
7	6 25	18 01	6 24	18 00	6 24	18 00	6 21	17 57	6 21	17 57	6 24	18 00	6 20	17 57	6 21	17 56	6 25	18 00	6 20	17 56	6 20	17 56
10	6 27	17 57	6 26	17 56	6 26	17 56	6 23	17 54	6 24	17 55	6 26	17 56	6 22	17 53	6 23	17 53	6 27	17 56	6 23	17 52	6 23	17 52
13	6 29	17 53	6 28	17 52	6 29	17 52	6 26	17 50	6 26	17 50	6 29	17 52	6 24	17 49	6 26	17 49	6 30	17 53	6 25	17 49	6 25	17 48
16	6 31	17 50	6 30	17 49	6 31	17 49	6 28	17 47	6 28	17 47	6 31	17 49	6 26	17 46	6 28	17 45	6 32	17 49	6 27	17 45	6 26	17 45
19	6 33	17 46	6 32	17 45	6 33	17 45	6 30	17 43	6 30	17 43	6 33	17 45	6 29	17 42	6 30	17 42	6 34	17 46	6 29	17 41	6 29	17 41
22	6 36	17 43	6 35	17 43	6 35	17 42	6 32	17 40	6 32	17 40	6 35	17 42	6 31	17 39	6 32	17 40	6 36	17 43	6 31	17 38	6 30	17 38
25	6 38	17 40	6 38	17 40	6 37	17 40	6 34	17 37	6 34	17 36	6 37	17 40	6 33	17 36	6 34	17 36	6 38	17 40	6 33	17 35	6 32	17 35
28	6 40	17 37	6 40	17 37	6 39	17 37	6 36	17 34	6 36	17 33	6 39	17 37	6 35	17 33	6 36	17 34	6 40	17 37	6 35	17 32	6 35	17 32
31	6 43	17 34	6 43	17 34	6 42	17 33	6 39	17 31	6 39	17 31	6 42	17 34	6 38	17 30	6 39	17 31	6 43	17 34	6 38	17 29	6 38	17 29
3 नवं.	6 45	17 30	6 45	17 31	6 44	17 30	6 41	17 28	6 41	17 28	6 44	17 31	6 40	17 27	6 41	17 28	6 45	17 32	6 40	17 27	6 40	17 26

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नगर	कांगड़ा धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुश.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
नवंबर	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
6	6 48	17 29	6 47	17 28	6 47	17 28	6 43	17 26	6 43	17 26	6 47	17 28	6 43	17 26	6 43	17 25	6 47	17 29	6 42	17 24	6 42	17 25
9	6 50	17 27	6 49	17 26	6 49	17 26	6 45	17 24	6 45	17 24	6 49	17 26	6 45	17 24	6 45	17 23	6 50	17 27	6 44	17 22	6 44	17 23
12	6 52	17 25	6 51	17 24	6 51	17 24	6 47	17 22	6 47	17 23	6 51	17 24	6 47	17 22	6 47	17 21	6 52	17 25	6 46	17 20	6 46	17 21
15	6 54	17 23	6 53	17 23	6 54	17 23	6 51	17 20	6 51	17 20	6 54	17 23	6 49	17 20	6 51	17 20	6 55	17 24	6 49	17 19	6 48	17 19
18	6 57	17 21	6 56	17 21	6 57	17 21	6 54	17 19	6 54	17 18	6 57	17 21	6 52	17 18	6 54	17 18	6 58	17 22	6 53	17 17	6 51	17 17
21	7 00	17 20	6 59	17 19	6 59	17 20	6 56	17 18	6 56	17 17	6 59	17 20	6 55	17 17	6 56	17 17	7 00	17 21	6 55	17 16	6 54	17 16
24	7 02	17 19	7 01	17 18	7 02	17 19	6 59	17 17	6 59	17 18	7 03	17 19	6 58	17 16	6 59	17 16	7 04	17 20	6 58	17 15	6 57	17 15
27	7 04	17 19	7 04	17 18	7 04	17 18	7 01	17 17	7 01	17 17	7 04	17 18	7 00	17 16	7 02	17 15	7 05	17 19	7 01	17 14	6 59	17 15
30	7 07	17 18	7 06	17 18	7 07	17 18	7 04	17 16	7 04	17 16	7 06	17 18	7 03	17 15	7 04	17 15	7 07	17 19	7 03	17 14	7 02	17 14
3 दिसं	7 09	17 18	7 08	17 18	7 09	17 18	7 06	17 16	7 06	17 16	7 09	17 18	7 05	17 15	7 06	17 15	7 10	17 19	7 05	17 14	7 04	17 14
6	7 12	17 18	7 11	17 17	7 12	17 18	7 09	17 15	7 09	17 15	7 12	17 18	7 08	17 15	7 09	17 15	7 13	17 19	7 08	17 14	7 07	17 14
9	7 14	17 18	7 13	17 18	7 14	17 18	7 11	17 15	7 11	17 15	7 14	17 18	7 10	17 15	7 11	17 15	7 15	17 19	7 10	17 14	7 09	17 14
12	7 16	17 19	7 15	17 18	7 16	17 19	7 14	17 16	7 14	17 16	7 16	17 19	7 12	17 16	7 14	17 16	7 17	17 20	7 13	17 15	7 11	17 15
15	7 18	17 21	7 17	17 20	7 18	17 21	7 16	17 18	7 16	17 17	7 18	17 21	7 14	17 18	7 16	17 17	7 19	17 22	7 15	17 16	7 13	17 16
18	7 20	17 22	7 19	17 21	7 20	17 21	7 17	17 19	7 17	17 18	7 20	17 22	7 16	17 18	7 17	17 18	7 21	17 23	7 16	17 17	7 15	17 17
21	7 22	17 23	7 21	17 22	7 22	17 23	7 19	17 21	7 19	17 20	7 22	17 23	7 18	17 20	7 19	17 19	7 23	17 24	7 18	17 18	7 17	17 18
24	7 23	17 24	7 22	17 23	7 23	17 24	7 20	17 22	7 21	17 22	7 23	17 24	7 19	17 21	7 20	17 21	7 24	17 25	7 19	17 20	7 18	17 19
27	7 25	17 26	7 24	17 25	7 25	17 26	7 21	17 23	7 21	17 23	7 25	17 26	7 21	17 23	7 21	17 22	7 26	17 27	7 20	17 21	7 20	17 21
30	7 26	17 28	7 25	17 27	7 26	17 28	7 22	17 24	7 22	17 24	7 26	17 27	7 22	17 24	7 22	17 24	7 27	17 28	7 21	17 23	7 21	17 14

हिमाचल प्रदेश के अन्य नगरों के लिए संस्कार सारिणी

धर्मशाला

नगर	संस्कार मिं. सैं.
काँगड़ा	+ ० २०
नूरपुर	+ १ २८
नगरोटा	+ ० ०४
खजियार	+ १ १२
ज्वालामुखी	+ ० १२
सरकाघाट	+ ० ०४
पालमपुर	− ० ४०
भुन्तर	− ३ ०४
बैजनाथ	− ० ५२

हमीरपुर

नगर	संस्कार मिं. सैं.
नादौन	+ ० ३२
सुजानपुरटिहरी	+ ० ०४

ऊना

नगर	संस्कार मिं. सैं.
गगरेट	+ १ ००
अम्ब	+ ० ४८
दौलतपुर	+ १ २०
चिन्तपूर्णी	+ ० ५६

बिलासपुर

नगर	संस्कार मिं. सैं.
घुमारवीं	+ ० ३६
भाखड़ा	+ १ २०
नैना देवी	+ १ १६

मण्डी

नगर	संस्कार मिं. सैं.
जोगिन्द्रनगर	+ ० ५२
सुन्दरनगर	+ ० २०
करसोग	− १ ०४
किन्नौर	− ५ २८

मण्डी

नगर	संस्कार मिं. सैं.
मनाली	− १ २४
बंजार	− १ २८
अनी	− ० ५६
निरमण्ड	− २ २४

शिमला

नगर	संस्कार मिं. सैं.
तारादेवी	+ ० १२
नारकण्डा	− १ ००
कुमारसेन	− १ ३६

शिमला

नगर	संस्कार मिं. सैं.
कोटखाई	− १ ३२
रोहड़ू	− २ ०४

सोलन

नगर	संस्कार मिं. सैं.
सपाटू	+ ० ३२
परवाणु	+ ० १६
कसौली	+ ० २८
अर्की	+ ० ४०
नालागढ़	+ ३ ०८

चम्बा

नगर	संस्कार मिं. सैं.
बनीखेत	+ ० ४८
डलहौज़ी	− ० ४०
लाहौल स्पीति	− ३ २४
त्रिलोकनाथ	−३ ३४

नाहन

नगर	संस्कार मिं. सैं.
पौंटा साहिब	+ १ ०८
राजगढ़	− ० १२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्रमा-स्पष्ट द्वारा विंशोतरी दशा का भोग्य काल जानना

नीचे चन्द्रमा के अंश-कला की तालिका के सामने चन्द्र संचार की मेषादि बारह राशियों की तालिका तथा उनके द्वारा केतु, सूर्य, भौमादि ग्रहों द्वारा भोग्य दशा वर्षों की सारिणी लिख रहे हैं। ध्यान रहे, आपके द्वारा किया गया चन्द्र स्पष्ट नितान्त शुद्ध होना चाहिए। चन्द्र स्पष्ट निकालने की सरल विधि हमारे कार्यालय से प्रकाशित ज्योतिष तत्त्व का अवलोकन करें॥

उदाहरण—यदि आपका चन्द्र स्पष्ट ५।१°।५२′ है तो इसका तात्पर्य हुआ कि चन्द्रमा कन्या राशि के १° अंश ५२′ कला पर संचार कर रहा है। अब सारिणी नं. I (क) में चन्द्र-स्पष्ट के नीचे व १° अंश ५० कला के सामने और चन्द्र राशि कन्या के नीचे तालिका में देखने पर सूर्य की भोग्य दशा ३ वर्ष, ८ मास और ३ दिन प्राप्त हुई। अब शेष २ कलाओं हेतु आगामी पृष्ठों पर सारिणी नं. II (ख) में सूर्य की २ कलाओं का भोग्यकाल देखने से ५ दिन प्राप्त हुए क्योंकि जैसे-जैसे चन्द्रमा के अंश बढ़ते हैं, दशा का भोग्यकाल कम होता जाता है। अतः ५ दिन घटा देने से हमें सूर्य की भोग्य दशा ३ वर्ष, ७ मास, २८ दिन प्राप्त हुई। शुद्ध चन्द्र स्पष्ट की गणित प्रक्रिया जानने के लिए ज्योतिष तत्त्व पढ़ें।

सारिणी नं० I (क)

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश-कला		भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
०	००	केतु	७	०	०	सूर्य	४	६	०	मंग	३	६	०	गुरु	४	०	०
०	१०		६	१०	२९		४	५	३		३	४	२८		३	९	१८
०	२०		६	९	२७		४	४	६		३	३	२७		३	७	६
०	३०		६	८	२६		४	३	९		३	२	२५		३	४	२४
०	४०		६	७	२४		४	२	१२		३	१	२४		३	२	१२
०	५०		६	६	२३		४	१	१५		३	०	२२		३	०	०
१	००		६	५	२१		४	०	१८		२	११	२१		२	९	१८
१	१०		६	४	२०		३	११	२१		२	१०	१९		२	७	६
१	२०		६	३	१८		३	१०	२४		२	९	१८		२	४	२४
१	३०		६	२	१७		३	९	२७		२	८	१६		२	२	१२
१	४०		६	१	१५		३	९	०		२	७	१५		२	०	०
१	५०		६	०	१४	*	३	८	३		२	६	१३		१	९	१८
२	००		५	११	१२		३	७	६		२	५	१२		१	७	६
२	१०		५	१०	११		३	६	९		२	४	१०		१	४	२४
२	२०		५	९	९		३	५	१२		२	३	९		१	२	१२
२	३०		५	८	८		३	४	१५		२	२	७		१	०	०
२	४०		५	७	६		३	३	१८		२	१	६		०	९	१८
२	५०		५	६	५		३	२	२१		२	०	४		०	७	६
३	००		५	५	३		३	१	२४		१	११	३		०	४	२४
३	१०		५	४	२		३	०	२७		१	१०	१		०	२	१२
३	२०		५	३	००		३	०	०		१	९	०	शनि	१९	०	०
३	३०		५	१	२९		२	११	३		१	७	२८		१८	९	४
३	४०		५	०	२७		२	१०	६		१	६	२७		१८	६	९
३	५०		४	११	२६		२	९	९		१	५	२५		१८	३	१३
४	००	केतु	४	१०	२४	सूर्य	२	८	१२	मंग	१	४	२४	शनि	१८	०	१८

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश-कला		भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
४	१०	केतु	४	९	२३	सूर्य	२	७	१५	मंग	१	३	२२	शनि	१७	९	२२
४	२०		४	८	२१		२	६	१८		१	२	२१		१७	६	२७
४	३०		४	७	२०		२	५	२१		१	१	१९		१७	४	१
४	४०		४	६	१८		२	४	२४		१	०	१८		१७	१	६
४	५०		४	५	१७		२	३	२७		०	११	१६		१६	१०	१०
५	००		४	४	१५		२	३	०		०	१०	१५		१६	७	१५
५	१०		४	३	१४		२	२	३		०	९	१३		१६	४	१९
५	२०		४	२	१२		२	१	६		०	८	१२		१६	१	२४
५	३०		४	१	११		२	०	९		०	७	१०		१५	१०	२८
५	४०		४	०	९		१	११	१२		०	६	०९		१५	८	३
५	५०		३	११	८		१	१०	१५		०	५	७		१५	५	७
६	०		३	१०	६		१	९	१८		०	४	६		१५	२	१२
६	१०		३	९	५		१	८	२१		०	३	४		१४	११	१६
६	२०		३	८	३		१	७	२४		०	२	३		१४	८	२१
६	३०		३	७	२		१	६	२७		०	१	१		१४	५	२५
६	४०		३	६	०		१	६	०	राहु	१८	०	०		१४	३	०
६	५०		३	४	२९		१	५	३		१७	९	९		१४	०	४
७	००		३	३	२७		१	४	६		१७	६	१८		१३	९	९
७	१०		३	२	२६		१	३	९		१७	३	२७		१३	६	१३
७	२०		३	१	२४		१	२	१२		१७	१	६		१३	३	१८
७	३०		३	०	२३		१	१	१५		१६	१०	१५		१३	०	२२
७	४०		२	११	२१		१	०	१८		१६	७	२४		१२	९	२७
७	५०		२	१०	२०		०	११	२१		१६	५	३		१२	७	१
८	००		२	९	१८		०	१०	२४		१६	२	१२		१२	४	६
८	१०	केतु	२	८	१७	सूर्य	०	९	२७	राहु	१५	११	२१	शनि	१२	१	१०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
८	२०	केतु	२	७	१५	सूर्य	०	१	०	राहु	१५	१	०	शनि	११	१०	१५
८	३०		२	६	१४		०	८	३		१५	६	१		११	७	११
८	४०		२	५	१२		०	७	६		१५	३	१८		११	४	२४
८	५०		२	४	११		०	६	१		१५	०	२७		११	१	२८
९	०		२	३	१		०	५	१२		१४	१०	६		१०	११	३
९	१०		२	२	८		०	४	१५		१४	७	१५		१०	८	७
९	२०		२	१	६		०	३	१८		१४	४	२४		१०	५	१२
९	३०		२	०	५		०	२	२१		१४	२	३		१०	२	१६
९	४०		१	११	३		०	१	२४		१३	११	१२		९	११	२१
९	५०		१	१०	२		०	०	२७		१३	८	२१		९	८	२५
१०	०		१	९	०	चंद्र	१०	०	०		१३	६	०		९	६	०
१०	१०		१	७	२१		९	१०	१५		१३	३	९		९	३	४
१०	२०		१	६	२७		९	९	०		१३	०	१८		९	०	९
१०	३०		१	५	२६		९	७	१५		१२	९	२७		८	९	१३
१०	४०		१	४	२४		९	६	०		१२	७	६		८	६	१८
१०	५०		१	३	२३		९	४	१५		१२	४	१५		८	३	२२
११	००		१	२	२१		९	३	०		१२	१	२४		८	०	२७
११	१०		१	१	२०		९	१	१५		११	११	३		७	१०	१
११	२०		१	०	१८		९	०	०		११	८	१२		७	७	६
११	३०		०	११	१७		८	१०	१५		११	५	२१		७	४	१०
११	४०		०	१०	१५		८	९	०		११	३	०		७	१	१५
११	५०		०	९	१४		८	७	१५		११	०	९		६	१०	१९
१२	००		०	८	१२		८	६	०		१०	९	१८		६	७	२४
१२	१०		०	७	११		८	४	१५		१०	६	२७		६	४	२८
१२	२०		०	६	९		८	३	०		१०	४	६		६	२	३
१२	३०		०	५	८		८	१	१५		१०	१	१५		५	११	७
१२	४०		०	४	६		८	०	०		९	१०	२४		५	८	१२
१२	५०		०	३	५		७	१०	१५		९	८	३		५	५	१६
१३	०		०	२	३		७	९	०		९	५	१२		५	२	२१
१३	१०		०	१	१		७	७	१५		९	२	२१		४	११	२५
१३	२०	शुक्र	२०	०	०		७	६	०		९	०	०		४	९	०
१३	३०		१९	९	०		७	४	१५		८	९	९		४	६	४
१३	४०		१९	६	०		७	३	०		८	६	१८		४	३	९
१३	५०		१९	३	०		७	१	१५		८	३	२७		४	०	१३
१४	००		१९	०	०		७	०	०		८	१	६		३	९	१८
१४	१०		१८	९	०		६	१०	१५		७	१०	१५		३	६	२२
१४	२०		१८	६	०		६	९	०		७	७	२४		३	३	२७
१४	३०	शुक्र	१८	३	०	चंद्र	६	७	१५	राहु	७	५	३	शनि	३	१	१

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
१४	४०	शुक्र	१८	०	०	चंद्र	६	६	०	राहु	७	२	१२	शनि	२	१०	६
१४	५०		१७	९	०		६	४	१५		६	११	२१		२	७	१०
१५	०		१७	६	०		६	३	०		६	९	०		२	४	१५
१५	१०		१७	३	०		६	१	१५		६	६	९		२	१	१९
१५	२०		१७	०	०		६	०	०		६	३	१८		१	१०	२४
१५	३०		१६	९	०		५	१०	१५		६	०	२७		१	७	२८
१५	४०		१६	६	०		५	९	०		५	१०	६		१	५	३
१५	५०		१६	३	०		५	७	१५		५	७	१५		१	२	७
१६	०		१६	०	०		५	६	०		५	४	२४		०	११	१२
१६	१०		१५	९	०		५	४	१५		५	२	३		०	८	१६
१६	२०		१५	६	०		५	३	०		४	११	१२		०	५	२१
१६	३०		१५	३	०		५	१	१५		४	८	२१		०	२	२६
१६	४०		१५	०	०		५	०	०		४	६	०	बुध	१७	०	०
१६	५०		१४	९	०		४	१०	१५		४	३	९		१६	९	१३
१७	०		१४	६	०		४	९	०		४	०	१८		१६	६	२७
१७	१०		१४	३	०		४	७	१५		३	९	२७		१६	४	१०
१७	२०		१४	०	०		४	६	०		३	७	६		१६	१	२४
१७	३०		१३	९	०		४	४	१५		३	४	१५		१५	११	७
१७	४०		१३	६	०		४	३			३	१	२४		१५	८	२१
१७	५०		१३	३	०		४	१			२	११	३		१५	६	४
१८	०		१३	०	०		४	०	०		२	८	१२		१५	३	१८
१८	१०		१२	९	०		३	१०	१५		२	५	२१		१५	१	१
१८	२०		१२	६	०		३	९	०		२	३	०		१४	१०	१५
१८	३०		१२	३	०		३	७	१५		२	०	९		१४	७	२८
१८	४०		१२	०	०		३	६	०		१	९	१८		१४	५	१२
१८	५०		११	९	०		३	४	१५		१	६	२७		१४	२	२५
१९	०		११	६	०		३	३	०		१	४	६		१४	०	९
१९	१०		११	३	००		३	१	१५		१	१	१५		१३	९	२२
१९	२०		११	०	०		३	०	०		०	१०	२४		१३	७	६
१९	३०		१०	९	०		२	१०	१५		०	८	३		१३	४	१९
१९	४०		१०	६	०		२	९	०		०	५	१२		१३	२	३
१९	५०		१०	३	०		२	७	१५		०	२	२१		१२	११	१६
२०	०		१०	०	०		२	६	०	गुरु	१६	०	०		१२	९	०
२०	१०		९	९	०		२	४	१५		१५	९	१८		१२	६	१३
२०	२०		९	६	०		२	३	०		१५	७	६		१२	३	२७
२०	३०		९	३	०		२	१	१५		१५	४	२४		१२	१	१०
२०	४०		९	०	०		२	०	०		१५	२	१२		११	१०	२४
२०	५०	शुक्र	८	९	०	चंद्र	१	१०	१५	गुरु	१५	०	०	बुध	११	८	७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
२१	०	शुक्र	८	६	०	चंद्र	१	९	०	गुरु	१४	९	१८	बुध	११	५	२१
२१	१०		८	३	०		१	७	१५		१४	७	६		११	३	४
२१	२०		८	०	०		१	६	०		१४	४	२४		११	०	१८
२१	३०		७	९	०		१	४	१५		१४	२	१२		१०	१०	१
२१	४०		७	६	०		१	३	०		१४	०	०		१०	७	१५
२१	५०		७	३	०		१	१	१५		१३	९	१८		१०	४	२८
२२	०		७	०	०		१	०	०		१३	७	६		१०	२	१२
२२	१०		६	९	०		०	१०	१५		१३	४	२४		९	११	२५
२२	२०		६	६	०		०	९	०		१३	२	१२		९	९	९
२२	३०		६	३	०		०	७	१५		१३	०	०		९	६	२२
२२	४०		६	०	०		०	६	०		१२	९	१८		९	४	६
२२	५०		५	९	०		०	४	१५		१२	७	६		९	९	१९
२३	०		५	६	०		०	३	०		१२	४	२४		८	११	३
२३	१०		५	३	०		०	१	१५		१२	२	१२		८	८	१६
२३	२०		५	०	०	मंग	७	०	०		१२	०	०		८	६	०
२३	३०		४	९	०		६	१०	२९		११	९	१८		८	३	१३
२३	४०		४	६	०		६	९	२७		११	७	६		८	०	२७
२३	५०		४	३	०		६	८	२६		११	४	२४		७	१०	१०
२४	०		४	०	०		६	७	२४		११	२	१२		७	७	२४
२४	१०		३	९	०		६	६	२३		११	०	०		७	५	०७
२४	२०		३	६	०		६	५	२१		१०	९	१८		७	२	२१
२४	३०		३	३	०		६	४	२०		१०	७	६		७	०	४
२४	४०		३	०	०		६	३	१८		१०	४	२४		६	९	१८
२४	५०		२	९	०		६	२	१७		१०	२	१२		६	७	१
२५	०		२	६	०		६	१	१५		१०	०	०		६	४	१५
२५	१०		२	३	०		६	०	१४		९	९	१८		६	१	२८
२५	२०		२	०	०		५	११	१२		९	७	६		५	११	१२
२५	३०		१	९	०		५	१०	११		९	४	२४		५	८	२५
२५	४०		१	६	०		५	९	९		९	२	१२		५	६	९
२५	५०		१	३	०		५	८	८		९	०	०		५	३	२२
२६	०		१	०	०		५	७	६		८	९	१८		५	१	६
२६	१०		०	९	०		५	६	५		८	७	६		४	१०	१९
२६	२०		०	६	०		५	५	३		८	४	२४		४	८	३
२६	३०		०	३	०		५	४	२		८	२	१२		४	५	१६
२६	४०	सूर्य	६	०	०		५	३	०		८	०	०		४	३	०
२६	५०		५	११	३		५	१	२९		७	९	१८		४	०	१३
२७	००		५	१०	६		५	०	२७		७	७	६		३	९	२७
२७	१०	सूर्य	५	९	९	मंग	४	११	२६	गुरु	७	४	२४	बुध	३	७	१०

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
२७	२०	सूर्य	५	८	१२	मंग	४	१०	२४	गुरु	७	२	१२	बुध	३	४	२४
२७	३०		५	७	१५		४	९	२३		७	०	०		३	२	७
२७	४०		५	६	१८		४	८	२१		६	१	१८		२	११	२१
२७	५०		५	५	२१		४	७	२०		६	७	६		२	१	४
२८	०		५	४	२४		४	६	१८		६	४	२४		२	६	१८
२८	१०		५	३	२७		४	५	१७		६	२	१२		२	४	१
२८	२०		५	३	०		४	४	१५		६	०	०		२	१	१५
२८	३०		५	२	३		४	३	१४		५	९	१८		१	१०	२८
२८	४०		५	१	६		४	२	१२		५	७	६		१	८	१२
२८	५०		५	०	९		४	१	११		५	४	२४		१	५	२
२९	०		४	११	१२		४	०	९		५	२	१२		१	३	
२९	१०		४	१०	१५		३	११	८		५	०	०		१	०	२२
२९	२०		४	९	१८		३	१०	६		४	९	१८		०	१०	०६
२९	३०		४	८	२१		३	९	५		४	७	६		०	७	१९
२९	४०		४	७	२४		३	८	३		४	४	२४		०	५	०३
२९	५०		४	६	२७		३	७	२		४	२	१२		०	२	१७
३०	०		४	६	०		३	६	०		४	०	०		०	०	०

सारिणी नं० II (ख)

अनुपातिक चन्द्र कलाओं के अनुसार शेष भोग्य दशा

कला	केतु		शुक्र		सूर्य		चन्द्र		मंगल		राहु		गुरु		शनि		बुध		कला
	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	
१	०	०३	०	०९	०	०३	०	०५	०	०३	०	०८	०	०७	०	०९	०	०८	१
२	०	०६	०	१८	०	०५	०	०९	०	०६	०	१६	०	१४	०	१७	०	१५	२
३	०	०९	०	२७	०	०८	०	१४	०	०९	०	२४	०	२२	०	२६	०	२३	३
४	०	१३	१	०६	०	११	०	१८	०	१३	१	०२	०	२९	१	०४	१	०१	४
५	०	१६	१	१५	०	१४	०	२३	०	१६	१	११	१	०६	१	१३	१	०८	५
६	०	१९	१	२४	०	१६	०	२७	०	१९	१	१९	१	१३	१	२१	१	१६	६
७	०	२२	२	०३	०	१९	१	०२	०	२२	१	२७	१	२०	२	००	१	२४	७
८	०	२५	२	१२	०	२२	१	०६	०	२५	२	०५	१	२८	२	०८	२	०१	८
९	०	२८	२	२१	०	२४	१	११	०	२८	२	१३	२	०५	२	१७	२	०९	९
१०	१	०१	३	००	०	२७	१	१५	१	०१	२	२१	२	१२	२	२६	२	१७	१०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा का ज्ञान

नीचे लिखे चक्रों में अपने जन्म नक्षत्र को देखें। जिस ग्रह के नीचे जन्म नक्षत्र होगा उसी ग्रह की दशा जन्म समय में होगी और प्रत्येक ग्रह की दशा के वर्ष भी चक्र में लिखे हुए हैं।

दशा का भुक्त भोग्य ज्ञान— जन्म समय जो नक्षत्र हो उसका भयात (जन्म समय तक जितना नक्षत्र व्यतीत हो गया हो) और भभोग (कुल नक्षत्र) बनाओ फिर उसके पलादि बनाकर भयात के पलों को जन्म दशा के वर्षों से गुणा दो और भभोग के पलों से भाग दो, लब्ध व्यतीत दशा के वर्ष आवेंगे। शेष को १२ से गुणा कर भभोग से भाग दो लब्ध मास निकलेंगे, शेष को ३० से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध दिन आवेंगे, शेष को ६० से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध घड़ी आवेंगी, शेष को ६० से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध पल इत्यादि आवेंगे। यह भुक्त दशा के वर्ष मासादि आवेंगे, जन्म समय की दशा के कुल वर्षों में से घटा दो, लब्ध भोग्य दशा आवेगी, इसमें आगामी ग्रहों की दशा के वर्षों को जोड़ते जाने से दशा चक्र हो जाएगा। अधिक सूक्ष्म रूप से दशाऽन्तरदशा का ज्ञान करने के लिए हमारे कार्यालय से **ज्योतिष तत्त्व** मंगवा कर पढ़ें।

सूर्यदशावर्ष ६				चन्द्रदशावर्ष १०				भौमदशावर्ष ७				राहुदशावर्ष १८				गुरुदशावर्ष १६				शनिदशावर्ष १९				बुधदशावर्ष १७				केतुदशावर्ष ७				शुक्रदशावर्ष २०			
कृ. उ. फा. उ. षा.				रोहि. हस्त श्रवण				मृग. चित्रा. धनि.				आर्द्रा. स्वा. शत.				पुन. विशा.पू. भा.				पुष्य. अनु.उ भा. ५७				श्ले. ज्ये. रेवती				मघा. मूला. अश्वि				पू. फा. पू. षा. भर.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
सू.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७	रा.	२	८	१२	गु.	२	१	१८	श.	३	०	३	बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८	बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९	के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६	श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	२	शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९	बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०	सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
गु.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७	के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२	चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७	शु.	३	०	०	सू.	०	९	१८	चं.	१	७	०	मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०	सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९	रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६	चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६	बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०	मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२	श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

योगिनीदशाऽन्तर्दशाज्ञान के लिए चक्र

मंगला १				पिंगला २				धान्या ३				भ्रामरी ४				भद्रिका ५				उल्का ६				सिद्धा ७				संकटा ८			
मा.	१२	चं.		मा.	२४	सू.		मा.	३६	बृ.		मा.	४८	मं.		मा.	६०	बु.		मा.	७२	श.		मा.	८४	शु.		मा.	९६	के.	
मं.	०	१०		पिं.	१	१०		धा.	३	०		भ्रा.	५	१०		भ.	८	१०		उ.	१२	०		सि.	१६	१०		सं.	२१	१०	
पिं.	०	२०		धा.	२	०		भ्रा.	४	०		भ.	६	२०		उ.	१०	०		सि.	१४	०		सं.	१८	२०		मं.	२	२०	
धा.	१	०		भ्रा.	२	२०		भ.	५	०		उ.	८	०		सि.	११	२०		सं.	१६	०		मं.	२	१०		पिं.	५	१०	
भ्रा.	१	१०		भ.	३	१०		उ.	६	०		सि.	९	१०		सं.	१३	१०		मं.	२	०		पिं.	४	२०		धा.	८	०	
भ.	१	२०		उ.	४	०		सि.	७	०		सं.	१०	२०		मं.	१	२०		पि.	४	०		धा.	७	०		भ्रा.	१०	२०	
उ.	२	०		सि.	४	२०		सं.	८	०		मं.	१	१०		पि.	३	१०		धा.	६	०		भ्रा.	९	१०		भ.	१३	१०	
सि.	२	१०		सं.	५	१०		मं.	१	०		पि.	२	२०		धा.	५	०		भ्रा.	८	०		भ.	११	२०		उ.	१६	०	
सं.	२	२०		मं.	०	२०		पिं.	२	०		धा.	४	०		भ्रा.	६	२०		भ.	१०	०		उ.	१४	०		सि.	१८	२०	
श्रवण, आर्द्रा चित्रा				पुन. स्वा. धनि				पुष्य विशा शत.				श्ले. अनु. पूभा. अश्वि				मघा. ज्ये. उभा. भर.				पूफा मूला रेव कृति				उफा. पूषा रोह				हस्त उषा मृग			

योगिनी दशा विचार— योगिनी दशा कुल ३६ वर्ष की होती है। प्रत्येक ३६ वर्षों के पश्चात् पुनः उसी दशा की पुनरावृत्ति होती है। योगनी दशाओं में क्रमशः मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा और संकटा— ये आठ नाम हैं। इनकी वर्ष संख्या भी क्रमानुसार 1+2+3+4+5+6+7+8=36 वर्ष होते हैं। मंगला, पिंगला आदि योगिनी दशाएँ अपने नामानुसार ही शुभाशुभ फल प्रदान करती हैं।

योगिनी दशा की विधि— अश्विनी नक्षत्र से आरम्भ करके अपने जन्म नक्षत्र तक की संख्या,में ३ जोड़कर ८ द्वारा भाग देने पर शेष १ बचे तो मंगला, २ बचें तो पिंगला, ३ बचे तो धान्या एवं च शेष ८ या ० बचे तो संकटा की दशा होगी। उदाहरणार्थ— यदि जन्म नक्षत्र अनुराधा हो, तो अश्विनी से अनुराधा तक गिनने पर १७ की संख्या हुई। इनमें ३ जमा करने पर कुल योग २० मिला। इसको ८ द्वारा भाग देने पर २ लब्धि तथा शेष ४ बचे। पूर्वोक्त क्रमानुसार मंगला से गिनने पर चौथी दशा— अर्थात् भ्रामरी की दशा (जन्मकाल से) प्रारम्भ होगी। योगिनी की भुक्त-भोग्य दशा अन्तरदशा जानने के लिए ज्योतिष तत्त्व पढ़ें।

अन्तर्दशामासादि शुभ दशा— मंगला, धा. भ. सि., **नेष्टदशा**— पिंगला, भ्रामरी, उल्का, संकटा।

अन्तर्दशा निकालने की विधि— जब किसी ग्रह की अन्तरदशा निकालनी हो तो उस ग्रह के वर्षों को पृथक २ हर एक ग्रह की दशा के वर्षों से गुणा कर महादशा के वर्षों से भाग दें (विंशोत्तरी १२०) (अष्टोत्तरी १०८) (योगिनी ३६) भाग देने से जो अंक आवे अन्तरदशा के वर्ष, मासादि आवेंगे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों की अन्तरदशा से प्रत्यन्तर दशा ज्ञात करना

भारतीय ज्योतिष में फलित कथन के लिए विभिन्न प्रकार की दशाओं का वर्णन मिलता है। परन्तु वर्तमान काल में केवल तीन प्रकार की दशाओं का प्रचलन मिलता है। **विंशोत्तरी दशा, योगिनी दशा और अष्टोत्तरी दशा**। अष्टोत्तरी दशा की अवधि 108 वर्ष की होती है। योगिनी दशा की एक आवृत्ति 36 वर्ष की और विंशोत्तरी दशा का कुल मान **120 वर्षों** का होता है। अष्टोत्तरी दशा दक्षिण भारत, महाराष्ट्र आदि में, **योगिनी दशाओं** का प्रचलन उत्तर भारत---विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश में अधिक पाया जाता है, जबकि **विंशोत्तरी दशा** पद्धति का प्रचलन समस्त भारत वर्ष में पाया जाता है। प्रस्तुत चक्रों में विंशोत्तरी में प्रत्येक ग्रह की अन्तर-दशा में प्रत्यन्तर दशाएँ निकालने की प्रक्रिया बतलाई गई है। किसी ग्रह की प्रत्यन्तर दशा निकल आने से फलादेश में और अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। दशाऽन्तरदशाओं के फलादेश का वर्णन आप हमारी पुस्तक **ज्योतिष तत्त्व फलित खण्ड भाग (दो)** में पढ़ सकते हैं। विंशोत्तरी दशा पद्धति के अन्तर्गत ग्रहों की महादशा एवं अन्तर्दशाओं के चक्र गत पृष्ठों में लिख चुके हैं। यहाँ पर पुनरावलोकन कर सकते हैं---

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंग.	राहु	गुरू	शनि	बुध	केतु	शुक्र
वर्ष	6	10	7	18	16	19	17	7	20

सूर्यान्तर दशा चक्र---6 वर्ष

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	0	0	0	0	0	0	0	0	1
मास	3	6	4	10	9	11	10	4	0
दिन	18	0	6	24	18	12	6	6	0

सूर्य मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	5	9	6	16	14	17	15	6	18
घंटे	9	0	7	4	9	2	7	7	00
मिन्ट	36	0	12	48	36	24	12	12	00

सूर्य मध्ये चन्द्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	0	0	0	0	0	1	0
दिन	15	10	27	24	28	25	10	0	6
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

सूर्य मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	7	18	16	19	17	7	21	6	10
घंटे	8	21	19	22	20	8	0	7	12
मिन्ट	24	36	12	48	24	24	0	12	0

सूर्य मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	1	0	0	0
दिन	19	13	21	15	18	24	16	27	18
घंटे	14	4	7	21	21	0	4	0	21
मिन्ट	24	48	12	36	36	0	48	0	36

सूर्य मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	8	15	10	16	18	14	24	16	13
घंटे	9	14	19	19	0	9	0	19	4
मिन्ट	36	24	12	12	0	36	0	12	48

सूर्य मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	1	1	0	1	0	0	0	1	1
दिन	24	18	16	27	17	28	19	21	15
घंटे	3	10	22	0	2	12	22	7	14
मिन्ट	36	48	48	0	24	0	48	12	24

सूर्य मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	0	1	0	0	0	1	1	1
दिन	13	17	21	15	25	17	15	10	18
घंटे	8	20	0	7	12	20	21	19	10
मिन्ट	24	24	0	12	0	24	36	12	48

सूर्य मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	7	21	6	10	7	18	16	16	17
घंटे	8	0	7	12	8	21	19	22	20
मिन्ट	24	0	12	0	24	36	12	48	24

सूर्य मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	1	1	1	1	0
दिन	12	29	25	25	12	29	16	8	20
घंटे	6	18	0	12	12	18	12	0	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र की अन्तर्दशाएँ (10 वर्ष)

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
वर्ष	0	0	1	1	1	1	0	1	0
मास	10	7	2	4	7	5	7	2	2
दिन	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	1	1	1	0	1	0
दिन	25	17	15	10	17	12	17	20	15
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	0	1	0	0	1	0	0
दिन	12	1	28	3	29	12	5	10	17
घंटे	6	12	0	6	18	6	0	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	2	2	2	2	1	3	0	1	1
दिन	21	12	25	16	1	0	27	15	1
घंटे	0	0	12	12	12	0	0	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	2	2	2	0	2	0	1	0	2
दिन	4	16	8	28	20	24	10	28	12
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	3	2	1	3	0	1	1	2	2
दिन	0	20	3	5	28	17	3	25	16
घंटे	6	18	6	0	12	12	6	12	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	2	0	2	0	1	0	2	2	2
दिन	12	29	25	25	12	29	16	8	20
घंटे	6	18	0	12	12	18	12	0	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	0	1	0
दिन	12	5	10	17	12	1	28	3	29
घंटे	6	0	12	12	6	12	0	6	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	3	1	1	1	3	2	3	2	1
दिन	10	0	20	5	0	20	5	25	5
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	1
दिन	9	15	10	27	24	28	25	10	0
घंटे	0	0	12	0	0	12	12	12	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

मंगल की अन्तर्दशाएँ (7 वर्ष)

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
वर्ष	0	1	0	1	0	0	1	0	0
मास	4	0	11	1	11	4	2	4	0
दिन	23	12	2	8	23	23	0	8	0

मंगल मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	22	19	23	20	8	24	7	12
घंटे	13	1	14	36	19	13	12	8	6
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

मंगल मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	2	0	1	0
दिन	26	20	29	23	22	3	18	1	22
घंटे	16	9	20	13	1	0	21	12	1
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

मंगल मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	14	23	17	19	26	16	28	19	20
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

मंगल मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	2	1	0	2	0	1	0	1	1
दिन	3	26	23	6	19	3	23	29	23
घंटे	4	12	6	12	22	6	6	20	4
मिन्ट	12	36	36	00	48	0	36	24	48

मंगल मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	1	1	0	0	0	1	1	1
दिन	20	20	29	17	29	20	23	17	26
घंटे	13	19	12	20	18	19	13	14	12
मिन्ट	48	48	0	24	00	48	12	24	36

मंगल मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	24	7	12	8	22	19	23	20
घंटे	13	12	8	6	13	1	14	6	19
मिन्ट	48	00	24	0	48	12	24	36	48

मंगल मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	2	1	2	1	0
दिन	10	21	5	24	3	26	6	29	24
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

मंगल मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.

राहु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.

गुरु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.

गुरु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.

शनि मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	2	2	3	2	1	3	0

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मंगल मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	6	10	7	18	16	19	17	7	21
घंटे	7	12	8	21	19	22	20	8	0
मिन्ट	12	0	24	36	12	48	24	24	0

मंगल मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	0	1	0	0	1	0
दिन	17	12	1	28	3	29	12	5	10
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु की अन्तर्दशाएँ (18 वर्ष)

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	१
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिन	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

राहु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	4	5	4	1	5	1	2	
दिन	25	9	3	17	26	12	18	21	26
घंटे	19	14	21	16	16	0	14	0	16
मिन्ट	12	24	36	48	48	0	24	0	48

राहु मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	श.
मास	3	4	4	1	4	1	2	1	4
दिन	25	16	2	20	24	13	12	20	9
घंटे	4	19	9	9	0	4	0	9	14
मिन्ट	48	12	36	36	0	48	0	36	24

राहु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	4	1	5	1	2	1	5	4
दिन	12	25	29	21	21	25	29	3	16
घंटे	10	8	20	0	7	12	20	21	19
मिन्ट	48	24	24	0	12	0	24	36	12

राहु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	4	4	4
दिन	10	23	5	15	16	23	17	2	25
घंटे	1	12	0	21	12	13	16	9	8
मिन्ट	12	12	0	36	0	12	48	36	24

राहु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	1	1	1	1
दिन	22	3	18	1	22	26	20	29	23
घंटे	1	0	21	12	1	16	9	20	13
मिन्ट	12	0	36	00	12	48	36	24	12

राहु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	1	3	2	5	4	5	5	2
दिन	0	24	0	3	12	24	21	3	3
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	16	27	18	18	13	21	15	18	24
घंटे	4	0	21	14	4	7	21	21	0
मिन्ट	48	0	36	24	48	12	36	36	0

राहु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	2	2	2	2	1	3	0
दिन	15	1	21	12	25	16	1	0	27
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	2	0	1
दिन	22	26	20	29	23	22	3	18	1
घंटे	1	16	9	20	13	1	0	21	12
मिन्ट	12	48	36	24	12	12	0	36	0

गुरू की अन्तर्दशाएँ (16 वर्ष)

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
वर्ष	2	2	2	0	2	0	1	0	2
मास	1	6	3	11	8	9	4	11	4
दिन	18	12	6	6	0	18	0	6	24

गुरू मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	3	4	3	1	4	1	2	1	3
दिन	12	1	18	14	8	8	4	14	25
घंटे	9	14	19	19	0	9	0	19	4
मिन्ट	36	24	12	12	0	36	0	12	48

गुरू मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	4	4	1	5	1	2	1	4	4
दिन	24	9	23	2	15	16	23	16	1
घंटे	9	4	4	0	14	0	4	19	14
मिन्ट	36	48	48	0	24	0	48	12	24

गुरू मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	3	1	4	1	2	1	4	3	4
दिन	25	17	16	10	8	17	2	18	9
घंटे	14	14	0	19	0	14	9	19	4
मिन्ट	24	24	0	12	0	24	36	12	48

गुरू मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	1	1	1
दिन	19	26	16	28	19	20	14	23	17
घंटे	14	0	19	0	14	9	19	4	14
मिन्ट	24	0	12	0	24	36	12	48	24

गुरू मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	5	1	2	1	4	4	5	4	1
दिन	10	18	20	26	24	8	2	16	26
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

गुरू मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	14	24	16	13	8	15	10	16	18
घंटे	9	0	19	4	9	14	19	19	0
मिन्ट	36	0	12	48	36	24	12	12	0

गुरू मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	0	2	2	2	2	0	2	0
दिन	10	28	12	4	16	8	28	20	24
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

गुरू मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	1	0	0
दिन	16	20	14	23	17	19	26	16	28
घंटे	14	9	19	4	14	14	0	19	0
मिन्ट	24	36	12	48	24	24	0	12	0

गुरू मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	3	4	4	1	4	1	2	1
दिन	9	25	16	2	20	24	13	12	20
घंटे	14	4	19	9	9	0	4	0	9
मिन्ट	24	48	12	36	36	0	48	0	36

शनि की अन्तर्दशाएँ (19 वर्ष)

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिन	२	९	९	०	१२	०	९	६	१२

शनि मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	5	2	6	1	3	2	5	4
दिन	21	3	3	0	24	0	3	12	24
घंटे	11	10	4	12	3	6	4	10	9
मिन्ट	24	12	12	0	36	0	12	48	36

शनि मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	4	4	5
दिन	17	26	11	18	20	26	25	9	3
घंटे	6	12	12	10	18	12	8	4	10
मिन्ट	36	36	0	48	0	36	24	48	12

शनि मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	1	1	2	1
दिन	23	6	19	3	23	29	23	3	26
घंटे	6	12	22	6	6	20	4	4	12
मिन्ट	36	0	48	0	36	24	48	12	36

शनि मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	1	3	2	5	5	6	5	2
दिन	10	27	5	6	21	2	0	11	6
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शनि मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	17	28	19	21	15	24	18	19	27
घंटे	2	12	22	7	14	3	10	22	0
मिन्ट	24	0	48	12	24	36	48	48	0

शनि मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	2	2	3	2	1	3	0
दिन	17	3	25	16	0	20	3	5	28
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शनि मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	2	1	0	2	0	1
दिन	23	29	23	3	26	23	6	19	3
घंटे	6	20	4	4	12	6	12	22	6
मिन्ट	36	24	48	12	36	36	0	48	0

शनि मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	5	4	5	4	1	5	1	2	1
दिन	3	16	12	25	29	21	21	25	29
घंटे	21	19	10	8	20	0	7	12	20
मिन्ट	36	12	48	24	24	0	12	0	24

शनि मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	4	4	4	1	5	1	2	1	4
दिन	1	24	9	23	2	15	16	23	16
घंटे	14	9	4	4	0	14	0	4	19
मिन्ट	24	36	48	48	0	24	0	48	12

बुध की अन्तर्दशाएँ (17 वर्ष)

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
दिन	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९

बुध मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	4	1	2	1	4	3	4
दिन	2	20	24	13	12	20	10	25	17
घंटे	19	13	12	8	6	13	1	14	6
मिन्ट	48	48	0	24	0	48	12	24	36

बुध मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	1	5	1
दिन	20	29	17	29	20	23	17	26	20
घंटे	19	12	20	18	19	13	14	12	13
मिन्ट	48	0	24	0	48	12	24	36	48

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बुध मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	5	1	2	1	5	4	5	4	1
दिन	20	21	25	29	3	16	11	24	29
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

बुध मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	15	25	17	15	10	18	13	17	21
घंटे	7	12	20	21	19	10	8	20	0
मिन्ट	12	0	24	36	12	48	24	24	0

बुध मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	0	2	2	2	2	0	2	0
दिन	12	29	16	8	20	12	29	25	25
घंटे	12	18	12	0	18	6	18	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

बुध मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	1	0	0
दिन	20	23	17	26	20	20	29	17	29
घंटे	19	13	14	12	13	19	12	20	18
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

बुध मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	4	4	4	1	5	1	2	1
दिन	17	2	25	10	23	3	15	16	23
घंटे	16	9	8	01	13	0	21	12	13
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

बुध मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं	रा.
मास	3	4	3	1	4	1	2	1	4
दिन	18	9	25	17	16	10	8	17	2
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

बुध मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	4	1	5	1	2	1	4	4
दिन	3	17	26	11	18	20	26	25	9
घंटे	10	6	12	12	10	18	12	8	4
मिन्ट	12	36	36	0	48	0	24	36	48

केतु की अन्तर्दशाएँ (7 वर्ष)

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
वर्ष	0	1	0	0	0	1	0	1	0
मास	4	2	4	7	4	0	11	1	11
दिन	27	0	6	0	27	18	6	9	27

केतु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	24	7	12	8	22	19	23	20
घंटे	13	12	8	6	13	1	14	6	19
मिन्ट	48	0	24	0	48	12	24	36	48

केतु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	2	1	2	1	0
दिन	10	21	5	24	3	26	6	29	24
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

केतु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	6	10	7	18	16	19	17	7	21
घंटे	7	12	8	21	48	22	20	8	0
मिन्ट	12	0	24	36	0	48	24	24	0

केतु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	0	1	0	0	1	0
दिन	17	12	1	28	3	29	12	5	10
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

केतु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	22	19	23	20	8	24	7	12
घंटे	13	1	14	6	19	13	12	8	6
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

केतु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	2	0	1	0
दिन	26	20	29	23	22	3	18	1	22
घंटे	16	9	20	13	1	0	21	12	1
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

केतु मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	14	23	17	19	26	16	28	19	20
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

केतु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	2	1	0	2	0	1	0	1	1
दिन	3	6	23	6	19	3	23	29	23
घंटे	4	12	6	12	22	6	6	20	4
मिन्ट	12	36	36	0	48	0	36	24	48

केतु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु	श.
मास	1	0	1	0	0	0	1	1	1
दिन	20	20	29	17	29	20	23	17	26
घंटे	13	19	12	20	18	19	13	14	12
मिन्ट	48	48	0	24	0	48	12	24	36

शुक्र की अन्तर्दशाएँ (20 वर्ष)

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु	श.	बु.	के.
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	१
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	2	3	2	6	5	6	5	2
दिन	20	0	10	10	0	10	10	20	10
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	1	0	1	1	1	1	0	2
दिन	18	0	21	24	18	27	21	21	0
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	3	2	3	2	1	3	1
दिन	20	5	0	20	5	25	5	10	0
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	2	1	2	1	0	2	0	1
दिन	24	3	26	6	29	24	10	21	5
घंटे	12	0	0	12	12	12	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	5	4	5	5	2	6	1	3	2
दिन	12	24	21	3	3	0	24	0	3
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	4	5	4	1	5	1	2	1	4
दिन	8	2	16	26	10	18	20	26	24
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	26	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	6	5	2	6	1	3	2	5	5
दिन	0	11	6	10	27	5	6	21	2
घंटे	12	12	12	0	0	0	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	5	4	5
दिन	24	29	20	21	25	29	3	16	11
घंटे	12	12	0	0	0	12	0	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	2	1	2	1
दिन	24	10	21	5	24	3	26	6	29
घंटे	12	0	0	0	12	0	0	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान वालों की

श्री दशवर्षीय पंचाँग

(दैनिक ग्रह स्पष्ट सहित)

संवत् 2051 से संवत् 2060 तक

(सन् 1994 से 2003–04 ई. तक)

सम्पादकः पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी

हमारे ज्योतिष संस्थान से गत वर्ष से प्रकाशित 'अर्ध शताब्दी पंचाँग'-(सं. 2001 से सं. 2050 तक) को ज्योतिष के विद्वानों द्वारा हृदय से सराहा गया है, जिसके कारण प्रथम संस्करण हाथों हाथ बिका है। द्वितीय संशोधित संस्करण भी छप गया है। ज्योतिष विद्वानों के विशेष अनुरोध पर अब संवत् 2051 से 2060 तक वर्षों की दस वर्षीय पंचाँग भी आकर्षक बढ़िया जिल्द में छप कर तैयार हो चुकी है। आशा है, यह ज्योतिष संकलन ग्रन्थ भी 'अर्ध शताब्दी पंचाँग' की भान्ति ज्योतिष भाईयों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। मूल्य 160/-

मंगवाने का पता–

जनरल बुक डिपो (पब्लिशर्ज़)

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर

(पिन–144008)

फोन : (0181) 2457959 (Office)

ग्रहों की विंशोत्तरी दशाओं का वर्णन

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों की विंशोत्तरी दशाओं का वर्णन

फलित ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों द्वारा अपना शुभशुभ फल प्रदान करने का समय ज्ञात करने के लिए **भारतीय दशा-पद्धति** का विशेष महत्त्व है। सभी ग्रह अपनी दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर दशा एवं सूक्ष्म दशाकाल में फल देते हैं। भारतीय आचार्यों ने ग्रहों की अनेक प्रकार की दशाओं एवं अन्तर्दशाओं आदि का वर्णन किया है, जैसे विंशोत्तरी दशा, योगिनी दशा, अष्टोतरी दशा, काल दशा इत्यादि मुख्य हैं। परन्तु उत्तरी भारत में सर्वाधिक महत्त्व एवं मान्यता महर्षि पाराशर द्वारा प्रतिपादित विंशोत्तरी महादशाऽन्तर दशा पद्धति को दी जाती है। तदनन्तर योगिनी दशा एवं तदुपरान्त अष्टोतरी दशा को मान्यता प्रदान की जाती है। आचार्य वराहमिहिरानुसार जातक को जिस ग्रह की दशाऽन्तरदशा होती है, उस ग्रहावधि में उस ग्रह की छाया जातक पर रहती है। अग्नि (तेज), पृथ्वी, जल, आकाश और वायु- इन पांचों में से जो महाभूत जिस ग्रह से सम्बन्धित होता है, वह ग्रह अपनी दशा और अन्तर्दशा में उस महाभूत की कांति को प्राणी के शरीर एवं उसकी चेष्टाओं से प्रकट करता है। जैसे सूर्य एवं मंगल की दशा में जातक रूपवान, तेजवान एवं कान्तियुक्त हो जाता है। यदि अशुभ हो, तो जातक में क्रोधाधिक्य, पित्त प्रकोप, नेत्र पीड़ा या रक्त विकार होते हैं। यदि जातक को मधुर-अम्लादि मृष्ट रसों के प्रति रूचि, संगीत, गायन, कल्पना, काम एवं भोगासक्ति की प्रबलता हो, तो जातक पर चन्द्र एवं शुक्र कृत जल की छाया जानें। जब जातक के शरीर से उत्तम सुगन्धि (बुध नीचादि अशुभ हो, तो दुर्गन्ध) आती हो, तो बुध कृत पृथ्वी की छाया जानें। जब जातक की प्रवृत्ति धर्म-कर्म एवं परोपकार की ओर बढ़े एवं भक्ति संगीत की ओर रूचि हो और वाणी में भी मधुरता एवं गाम्भीर्य हो तो, गुरु कृत आकाश तत्त्व सम्बन्धी छाया जाननी चाहिए। जो स्पर्श मे कोमल हो, या वायु सम्बन्धी प्रकोप हो, तो आकाश सम्बन्धी छाया जाननी चाहिए।

छाया शुभाशुभ फलानि निवेदयन्ती लक्ष्म्या मनुष्यपशु पक्षिषुलक्षणज्ञैः।
तेजो गुणान् बहिरपि प्रतिभासयन्ती, दीपप्रभा स्फटिकरत्न घटस्थितेव॥ बृहत्संहिता॥

''विंशोत्तरी दशा'' का मुख्य आधार **चन्द्र स्पष्ट** एवं उससे सम्बन्धित **नक्षत्र** होते हैं। किसी जातक के जन्म समय चन्द्रमा जिस नक्षत्र में होता है। उस नक्षत्र-चरण के अनुसार ही ग्रह दशा का निधारण किया जाता है। किसी व्यक्ति का जन्म जिस नक्षत्र में होगा, उसी नक्षत्र के स्वामी ग्रह से विंशोत्तरी दशा का प्रारम्भ माना जाता है। चन्द्र स्पष्ट तथा नक्षत्रों के भयात्-भभोग (सर्वक्षं) द्वारा जन्म दशा के भोग्य वर्षों को जानने की सरल विधियां **''ज्योतिष तत्त्व-गणित खण्ड में तथा इसी पंचाँग दिवाकर''** में पढ़ सकते हैं।

पाठकों की सुविधा के लिए चन्द्र संचार से ग्रहों की **भोग्य दशा** वर्षों का विवरण संक्षिप्त रूप से आगामी पृष्ठों पर कर रहे हैं। गणित सहित इसका विस्तृत विवरण **ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड)** में लिख चुके हैं।

चन्द्र स्पष्ट से नक्षत्रों एवं ग्रहों के भोग्य वर्ष

क्रम	नक्षत्र	राशि अंश कला	से	रा. अं. क. तक	नक्षत्र स्वामी	दशा वर्ष
1.	अश्विनी	0 - 00 - 00	से	0 - 13 - 20 तक	केतु	7 वर्ष
2.	भरणी	0 - 13 - 20	से	0 - 26 - 40 तक	शुक्र	20 वर्ष
3.	कृतिका	0 - 26 - 40	से	1 - 10 - 00 तक	सूर्य	6 वर्ष
4.	रोहिणी	1 - 10 - 00	से	1 - 23 - 20 तक	चन्द्र	10 वर्ष
5.	मृगशिर	1 - 23 - 20	से	2 - 06 - 40 तक	मंगल	7 वर्ष
6.	आर्द्रा	2 - 06 - 40	से	2 - 20 - 00 तक	राहु	18 वर्ष
7.	पुनर्वसु	2 - 20 - 00	से	3 - 03 - 20 तक	गुरु	16 वर्ष
8.	पुष्य	3 - 03 - 20	से	3 - 16 - 40 तक	शनि	19 वर्ष
9.	आश्लेषा	3 - 16 - 40	से	4 - 00 - 00 तक	बुध	17 वर्ष
10.	मघा	4 - 00 - 00	से	4 - 13 - 20 तक	केतु	7 वर्ष
11.	पूर्वाफाल्गुनी	4 - 13 - 20	से	4 - 26 - 40 तक	शुक्र	20 वर्ष
12.	उत्तराफाल्गुनी	4 - 26 - 40	से	5 - 10 - 20 तक	सूर्य	20 वर्ष
13.	हस्त	5 - 10 - 00	से	5 -23 - 20 तक	चन्द्र	10 वर्ष
14.	चित्रा	5 - 23 - 20	से	6 - 06 - 40 तक	मंगल	7 वर्ष
15.	स्वाती	6 - 60 - 40	से	6 - 20 - 00 तक	राहु	18 वर्ष
16.	विशाखा	6 - 20 - 00	से	7 - 03 - 20 तक	गुरु	16 वर्ष
17.	अनुराधा	7 - 03 - 20	से	7 - 16 - 40 तक	शनि	19 वर्ष
18.	ज्येष्ठा	7 - 16 - 40	से	8 - 00 - 00 तक	बुध	17 वर्ष
19.	मूला	8 - 20 - 00	से	8 - 13 - 20 तक	केतु	7 वर्ष
20.	पूर्वाषाढ़ा	8 - 13 - 20	से	8 - 26 - 40 तक	शुक्र	20 वर्ष
21.	उत्तराषाढ़ा	8 - 26 - 40	से	9 - 10 - 00 तक	सूर्य	6वर्ष
22.	श्रवण	9 - 10 -00	से	9 - 23 - 20 तक	चन्द्र	10 वर्ष
23.	धनिष्ठा	9 - 23 - 20	से	10 -06 - 40 तक	मंगल	7 वर्ष
24.	शतभिषा	10 -06 - 40	से	10 - 20 - 00 तक	राहु	18 वर्ष
25.	पूर्वाभाद्रपद	10 - 20 - 00	से	11- 03 - 20 तक	गुरु	16 वर्ष
26.	उत्तराभाद्रपद	11-03-20	से	11-16- 40 तक	शनि	19 वर्ष
27.	रेवती	11 - 16- 40	से	0 - 00 - 00 तक	बुध	17 वर्ष

प्रत्येक ग्रह के अन्तर्गत तीन- तीन नक्षत्रों का समावेश होता है। जो ग्रह जिन-जिन नक्षत्रों का स्वामी होता है। तदनुसार ही नक्षत्र के दशा वर्षों का निर्धारण होता है। **जैसे**— कृतिका, उत्तराफाल्गुनी

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

एवं उत्तराषाढ़ा नक्षत्रों का स्वामी **सूर्य ग्रह** होने से, कृतिका आदि प्रत्येक नक्षत्र की दशा का मान सूर्य प्रदत्त छः (6) वर्ष होंगे। आगे लिखी तालिका से स्पष्ट होगा—

जन्म नक्षत्र (Birth Nakshatra)	(क्रम)	नक्षत्र स्वामी ग्रह (Lord of Nakshatra)	भोग्य दशा वर्ष Duration of Period)
कृतिका, उ. फाल्गुनी, उ. षा.	1	सूर्य	6 वर्ष
रोहिणी, हस्त, श्रवण	2.	चन्द्र	10 वर्ष
मृगशिर, चित्रा, धनिष्ठा	3.	मंगल	7 वर्ष
आर्द्रा, स्वाती, शतभिषा	4.	राहु	18 वर्ष
पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद	5.	गुरु	16 वर्ष
पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्रपद	6.	शनि	19 वर्ष
अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती	7.	बुध	17 वर्ष
मघा, मूला, अश्विनी	8.	केतु	7 वर्ष
पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, भरणी	9.	शुक्र	20 वर्ष

विंशोत्तरी दशा पद्धति में ग्रहों की दशा का क्रम उपरोक्त तालिका में दर्शाए गए अनुक्रम के अनुसार ही किया जाता है, यथा—सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु, शुक्र। इसको कण्ठस्थ करने के लिए (आ चं भौ रा जी शबु केशु) का सूत्र याद कर सकते हैं, जैसे आ से तात्पर्य सूर्य, च से चन्द्र, भौ को भौम (मंगल), रा को राहु, जी को जीव (गुरु) समझें इत्यादि जन्म समय किसी ग्रह को भुक्त-भोग्य दशा ज्ञात करने के लिए चन्द्र स्पष्ट पद्धति एवं नक्षत्र के भयात्-भभोग की प्रक्रिया ग्रहण कीजाती है। दोनों प्रकार की प्रणालियों का सरल विवरण उदाहरण सहित हमारी पँचाग दिवाकर या ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड) में देख सकते हैं।

ग्रहों की अन्तर्दशा जानने की विधि

ग्रहों की अन्तर्दशा के भोग्य वर्ष, मास आदि जानने के लिए महादशा ग्रह के वर्षों को अन्तर्दशा ग्रह के वर्षों से गुणा करके जो संख्या मिले,उसे 120 से भाग देने पर अन्तर्दशा के **भोग्य वर्ष,** फिर शेष को 12 से गुणा करके पुनः 120 से भाग देने पर तथा शेष 30 से गुणा करके पुनः 120 से भाग देने पर हमें अर्न्तदशा के भोग्य दिन आदि प्राप्त होंगे। **उदाहरणस्वरूप—** यदि हमें शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के भोग्य वर्षादि जानने हैं, तो शनि की महादशा के 19 वर्ष को शुक्र दशा के 20 वर्ष से गुणा करने पर हमें 380 की संख्या मिली, इसको 120 से भाग देने पर 3 वर्ष तथा शेष 20 को 12 से गुणा करके प्राप्त संख्या 240 को पुनः 120 से भाग देने पर हमें 2 मास प्राप्त हुए। इस प्रकार शनि महादशा के मध्य शुक्रान्तर भोग्यदशा 3 वर्ष, 2 महीने होगी। इसी प्रकार अन्य सभी ग्रहों की अन्तर्दशाएं जान सकते हैं। सूर्यादि सभी ग्रहों की अन्तर्दशाओं के भोग्य वर्ष, मासादि के चक्र आप इसी में तथा **पंचाँगदिवाकर** में अवलोकन कर सकते हैं।

ग्रहों की विंशोत्तरी महादशा के फलादेश के सम्बन्ध में उपरोक्त 'ज्योतिष तत्त्व' (गणित खण्ड) पृष्ठ 210 से पृष्ठ 213 तक का अध्ययन कर सकते हैं। सम्पादक

दशाऽन्तर्दशा के फलादेश सम्बनधी विशेष नियम

(1) जो ग्रह उच्च राशिस्थ, मित्र राशि या वर्गोत्तम में हो या स्वराशि का होकर केन्द्र या त्रिकोण (१,४, ५, ७, ९, १०) में स्थित हो, वह अपनी दशा या अन्तर्दशा काल में कार्यों में लाभ व उन्नति, आरोग्य सुख, अभीष्ट कार्यों में सफलता, भाग्योन्नति आदि सुख प्रदान करवाता है।

(2) जो ग्रह नीच राशि, शत्रु राशि, वक्री ग्रह एवं अस्तंगत हो, उसकी दशाऽन्तर्दशा में बनते कामों में अड़चनें, धन हानि, रोग एवं शत्रु भय, अपव्यय आदि अशुभ फल होते हैं। इसी भान्ति वक्री ग्रह की दशा में स्थान परिवर्तन, धन हानि एवं सुख में कमी होती है।

(3) पाप ग्रह की महादशा में अशुभ भावस्थ पाप ग्रह की अन्तर्दशा में स्वास्थ्य हानि, शत्रु भय, धन का नुकसान, बन्धुओं से वैर,कलह-क्लेश, अड़चनें, मानसिक व शारीरिक कष्ट होते हैं।

(4) जिस ग्रह की महादशा हो, उससे छटे या आठवें या 12वें स्थान में स्थित ग्रहों की अन्तर्दशा हो, तो जातक को धन हानि, कार्य-व्यवसाय में बाधाएं, अत्यधिक संघर्ष एवं धन का खर्च, स्थानान्तरण एवं मानसिक तनाव, कलह व शरीर कष्ट होते हैं।

(5) शुभ ग्रह की महादशा के मध्य शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो, तो उसका फल उत्तम होगा। उसमें धन लाभ, आरोग्य सुख, अभिलषित कार्यों में सफलता, विद्या लाभ एवं स्त्री (पति) सुख व संतान आदि सुख प्राप्त होते हैं। महादशा स्वामी एवं अन्तर्दशा स्वामी दोनों बलान्वित हों, तो और भी अच्छा है।

(6) केन्द्र भावों को विष्णु स्थान और त्रिकोण भावों को लक्ष्मी स्थान भी कहा जाता है। केन्द्र त्रिकोण के स्वामी ग्रह यदि केन्द्र-त्रिकोण (1-4-5-6-9-10) भावों में ही आ जावें, तो विशेष शुभ फल देते हैं, इनकी दशाऽन्तर्दशा में विपुल धन, लाभ, धर्म-परायणता, विद्या, भूमि-जायदाद, विद्या एवं सवारी आदि सुखों की प्राप्ति तथा स्त्री-संतान सम्बन्धी पारिवारिक सुखों की उपलब्धि होती है।

(7) दुःस्थानों (6, 8 एवं 12वें) स्थानों में स्थित ग्रहों अथवा उनके स्वामी ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा में धन हानि, रोग, शत्रु, धन का अत्यधिक खर्च, कठिनाइयाँ , शरीर कष्ट, मानसिक तनाव एवं संघर्ष होते हैं।

(8) जो ग्रह शुभ एवं योगकारक ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तथा अस्त, वक्री एवं सन्धिगत न हो, तो उस ग्रह की दशाऽन्तर्दशा में धन लाभ, प्रिय बन्धुओं का सुख, भूमि, वाहन आदि का लाभ, विद्या एवं धर्म में रुचि तथा कार्यों में सफलता होती है।

(9) महादशा ग्रह का स्वामी एवं अन्तर्दशा ग्रह का स्वामी परस्पर मित्र क्षेत्री हों तथा कुण्डली में उनकी पारस्परिक स्थिति 6-8 या 12वीं न हो, तो उनकी दशाऽन्तर्दशा में ग्रह अपने भावेशत्व के अनुसार भूमि, जायदाद, धन, परिवार आदि का सुख प्रदान करेगा।

(10) जिस ग्रह की महादशा चल रही हो, यदि अन्तर्दशा स्वामी ग्रह उसका शत्रु हो, या शत्रु राशि में स्थित हो, या छठे/आठवें में हो, या लग्नेश का शत्रु हो, तो ऐसी अन्तर्दशा में शत्रु भय, रोग भय, धन हानि, स्थान परिवर्तन, भाई-बन्धुओं से वैर-विरोध तथा बनते कार्यों में अड़चनें पड़ती हैं।

(11) शुभ ग्रह की महादशा में पाप ग्रह की अन्तर्दशा हो तो, उस अन्तर्दशा का पूर्वार्द्धभाग सुखदायक और उत्तरार्द्ध भाग कष्टकारी होता है।

(12) शनि की दशा में चन्द्र का अन्तर अथवा चन्द्रमा की दशा में शनि का अन्तर काल प्रायःआर्थिक दृष्टि से कष्टकारी होता है।

इसके अतिरिक्त यदि चन्द्रमा शनि की राशि (मकर या कुम्भ) में हो, तो उसकी महादशा के मध्य यदि सप्तमेश की अन्तर्दशा हो, तो भी कष्टकारी होती है।

11. एकादशेश की दशा में आय के स्रोतों में वृद्धि, तथा गत किए गए प्रयासों में सफलता [illegible] है। यदि एकादशेश पाप ग्रह युक्त व दृष्ट हो, तो स्वयं जातक के [illegible] के लिए अशुभ होती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

इसके अतिरिक्त यदि चन्द्रमा शनि की राशि (मकर या कुम्भ) में हो, तो उसकी महादशा के मध्य यदि सप्तमेश की अन्तर्दशा हो, तो भी कष्टकारी होती है।

(13) शनि में मंगल अथवा मंगल में शनि की अन्तर्दशा संघर्षपूर्ण, रोग एवं शरीर कष्ट तथा आर्थिक दृष्टि से परेशानीकारक रहती है।

(14) शनि में सूर्य की दशा और सूर्य में शनि की अन्तर्दशा प्रायः जातक के स्वास्थ्य की दृष्टि से तथा उसके माता-पिता एवं अग्रजों के लिए कष्टकारी होती है।

(15) राहु और केतु की दशाऽन्तर्दशा प्रायः अशुभफली होती है। यदि राहु ३, ६ या ११वें भाग में हों, तो अच्छा फल भी प्रकट होता है।

(16) जो ग्रह उच्च राशि से निकलकर नीच राशि की ओर जा रहा हो, उसकी दशा को **अवरोहिणी दशा** कहा जाता है। यह दशा अशुभ एवं कष्टकारी होती है। परन्तु यदि अवरोही ग्रह उच्च, मित्र या अपने नवांश में हो, तो वह दशा मिश्रित फल देने वाली होती है।

(17) जो ग्रह नीच से उच्च राशि की ओर अग्रसर हो, उसकी दशा को **आरोहिणी दशा** कहते हैं। इस अवधि में जातक को शुभ फल प्राप्त होते हैं। यदि ग्रह नीच या शत्रु राशि के नवांश में हो, तो शुभ फलों में कमी होती है।

भावेश अनुसार विंशोत्तरी दशा का फल

1. लग्नेश ग्रह की दशा में उद्यम में वृद्धि, शारीरिक सुख, धन लाभ, भूमि, वाहन आदि सुख होते हैं,परन्तु धन का अपव्यय एवं परिवार सम्बन्धी परेशानियां भी देखी गई हैं।

2. द्वितीयेश की दशा में धन-आय के साधन बढ़ते हैं परन्तु यदि धनेश पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो वृथा खर्च एवं स्वास्थ्य के लिए अशुभ है।

3. तृतीयेश की दशा में संघर्ष एवं भ्रमण अधिक रहेगा। भाई-बन्धु एवं आत्मीय जनों के बारे में परेशानियां व खर्च भी अधिक होते हैं।

4. चतुर्थेश दशा में भूमि, मकान, वाहनादि सुखों की प्राप्ति, माता का सुख होता है। यदि अशुभ ग्रह युक्त हो, तो माता या पिता दोनों में से किसी एक को शरीर कष्ट का भय।

5. पंचमेश की दशा में विद्या की प्राप्ति, धन लाभ-संतान-सुख एवं सोची हुई योजनाओं में सफलता प्राप्त होती है। यदि अशुभ या पाप ग्रह युक्त हों, तो विघ्न एवं अड़चनों के बाद सफलता प्राप्त होती है।

6. षष्ठेश की दशा में रोग व शत्रुओं का भय, मातुल पक्ष को कष्ट, व्यवसाय में विघ्न-बाधाएं, शरीर कष्ट तथा खर्च अधिक होते हैं।

7. सप्तमेश पाप ग्रह हो, तो उसकी दशा में शरीर कष्ट, धन हानि, स्त्री को कष्ट, तनाव एवं व्यवसाय में बाधाएँ आती हैं। यदि शुभ ग्रह हों, तो मिश्रित फल होते हैं।

8. अष्टमेश (पापग्रह हो तो) उसकी दशा में परिवारिक बन्धुओं सम्बन्धी परेशानी, आर्थिक उलझनें, बनते कामों में विघ्न एवं मृत्युतुल्य कष्ट होते हैं। यदि शुभ ग्रह हों,तो कष्टों में कमी होती हैं।

9. नवमेश की दशा में परोपकार एवं धार्मिक भावना में वृद्धि, तीर्थ यात्रा, विद्या में उन्नति, भाग्यवश लाभ व उन्नति, कार्य-व्यवसाय में सफलता और श्रेष्ठ लोगों के साथ सम्बन्ध होते हैं।

10. दशमेश की दशा में कार्य-व्यवसाय में लाभ व उन्नति, सरकारी क्षेत्रों से लाभ, परन्तु माता के स्वास्थ्य के लिए अशुभ होगी।

11. एकादशेश की दशा में आय के स्रोतों में वृद्धि, तथा गत किए गए प्रयासों में सफलता होती है। विद्या, संतान के लिए शुभ है। यदि एकादशेश पाप ग्रह युक्त व दृष्ट हो, तो स्वयं जातक के स्वास्थ्य के लिए अशुभ होती है।

12. द्वादशेश की दशा में गुप्त चिन्ताएँ, खर्च की अधिकता, वृथा भागदौड़ एवं धन हानि तथा बनते कामों में अड़चनें होती हैं।

दशाफल में प्रत्येक लग्नगत ग्रहों का शुभाशुभ

आगे मेषादि द्वादश लग्नों के अन्तर्गत ग्रह दशाओं के शुभाशुभत्व का विवरण दे रहे हैं। किसी लग्न में ग्रहों के शुभत्व एवं अशुभत्व का निर्देश सदा के लिए स्थायी नहीं समझना चाहिए। कुछ स्थितियों में किसी लग्न विशेष में शुभफल प्रदक लिखा ग्रह भी अपना दशाऽन्तर्दशा में अशुभ फल देने लगता है। **उदाहरण स्वरूप** मेष लग्न में गुरु को (भाग्येश होने के कारण) शुभ फल देने वाला लिखा गया है। परन्तु जन्म कुण्डली में यदि गुरु नीच (मकर) राशि का होकर अस्त एवं वक्री होकर पड़ा हो अथवा शत्रु राशि (२, ६) का होकर राहु, शनि आदि पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो गुरु अपना दशाऽन्तर्दशा में जातक को उच्च विद्या एवं भाग्योन्नति में विघ्न-बाधाऐं, बड़े आत्मीय लोगों के साथ विरोध, धन का अपव्यय एवं रोग आदि अशुभ फल भी होते हैं। आगे दशाफल में प्रत्येक लग्न में ग्रहों का शुभ-अशुभ विवरण देते हैं—

दशा फल में प्रत्येक लग्न में ग्रहों का शुभ-अशुभ विवरण

लग्न राशि	शुभ फल	अशुभ फल	मिश्रित फल
मेष	सूर्य, मंगल, गुरु	बुध, शुक्र	चन्द्र, शनि, राहु, केतु
वृष	सूर्य, बुध, शुक्र शनि	मंगल, केतु	चन्द्र, राहु, गुरु
मिथुन	चंद्र, बुध शुक्र	मंगल, केतु	सूर्य, गुरु, शनि, राहु
कर्क	चन्द्र, मंगल	बुध, शनि, राहु,	सूर्य, केतु, गुरु, शुक्र
सिंह	सूर्य, मंगल	शनि, शुक्र, राहु	चन्द्र, बुध, गुरु, केतु
कन्या	बुध, शुक्र	मंगल, सूर्य, केतु,	चन्द्र, शनि, गुरु, राहु
तुला	बुध, शुक्र, शनि,	सूर्य, राहु, गुरु	चंद्र, मंगल, केतु
वृश्चिक	सूर्य, चन्द्र, गुरु	बुध, शनि, राहु	मंगल, शुक्र, केतु
धनु	सूर्य, मंगल, गुरु	शुक्र, शनि, राहु,	बुध, चन्द्र, केतु
मकर	बुध, शुक्र, शनि	चन्द्र, गुरु	सूर्य, मंगल, राहु, केतु
कुम्भ	मंगल, शुक्र, शनि	चन्द्र, केतु	सूर्य, बुध, गुरु, राहु
मीन	चन्द्र, मंगल, गुरु	सूर्य, शुक्र, राहु	बुध, शनि, केतु

गत वर्ष सूर्य, चन्द्र, मंगल ग्रहों की महादशा में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशाओं का फल दिया गया था। इस बार चन्द्रमा एवं मंगल मध्ये अन्तर्दशाओं का फल दे रहे हैं। अधिक व सम्पूर्ण जानकारी के लिए 'ज्योतिष तत्त्व' फलितखण्ड-द्वितीय भाग पढ़ें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

राहु की महादशा में राहु आदि अन्तर्दशाओं का फल

विशेष : ज्योतिष आचार्यों के अनुसार राहु की दशा में सामान्यतः आदि में दुख, मध्य में सुख और यश तथा अन्त में स्थान हानि एवं गुरु, पुत्र आदि को कष्टदायक सिद्ध होती है। राहु, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या एवं कुम्भ राशि का हो, तो अपनी दशा में उच्च-प्रतिष्ठा, सम्मान, शासन लाभ एवं व्यवसाय में लाभ व उन्नति प्रदान करता है।

राहु मध्ये राहु का अन्तर—राहु 3, 6, एवं 11वें भाव में शुभ राशिस्थ एवं शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो अपनी दशा में उत्साह एवं पराक्रम में वृद्धि, प्रशासन में उच्च पद की प्राप्ति, राजनीति में सफलता, शेयरों, लाटरी अथवा वकालत में अकस्मात् लाभ की सम्भावना एवं पुत्र-सन्तति का लाभ देता है। यदि राहु मेष, सिंह आदि पुरुष राशियों में स्थित होकर 1, 4, 7, 8, 9, एवं 12वें भावों में पाप ग्रह से युत या दृष्ट हो, तो शरीर कष्ट, बन्धुओं से वियोग, धन हानि, फाईनैंस की कमी या आर्थिक परेशानियां, बनते कामों में विघ्न तथा व्यवसाय के सम्बन्ध में संघर्ष एवं दौड़धूप अधिक रहती है। दशा में शरीर कष्ट, मानसिक तनाव, गुप्त चिन्ताएं एवं अपव्यय बढ़ जाते हैं।

राहु मध्ये गुरु का अन्तर—गुरु कुण्डली में उच्च राशि या स्वगृही होकर केन्द्र या त्रिकोण एवं 11वें में स्थित हों, तो गुरु की अन्तर्दशा में धार्मिक कार्यों के प्रति रूचि, श्रेष्ठ लोगों से सम्पर्क, उच्च विद्या में सफलता, शत्रु नाश, राज्य सम्मान, धन लाभ, भूमि, वाहन, विवाह एवं पुत्र संतान आदि शुभ फल होते हैं। परोपकार की ओर प्रवृत्ति बढ़ती है। यदि गुरु नीच, शत्रु राशि या अस्तंगत होकर, 6, 8, 12वें भाव में हो, तो उच्च विद्या में विघ्न-बाधाएं, स्वास्थ्य की हानि, शरीर कष्ट, पीलिया रोग, तनाव, धन हानि, बड़े बुजुर्गों या अग्रजनों के साथ मतान्तर, आर्थिक उलझनें, बनते कामों में बाधाऐं तथा स्त्री व संतान सम्बन्धी परेशानियों का सामना होता है।

राहु मध्ये शनि का अन्तर—कुण्डली में शनि यदि उच्च, स्वराशि में होकर केन्द्र या त्रिकोण एवं लाभ स्थान में हो तो इस दशाकाल में भूमि, जायदाद एवं वाहन सम्बन्धी सुख-साधनों में वृद्धि, व्यवसाय में गुप्त युक्तियों द्वारा धनार्जन करता है। जातक लोहे, तेल, पैट्रोल, एवं शेयर-सट्टा आदि के व्यवसाय से विशेष अधिक धन प्राप्त कर लेता है। परन्तु मानसिक तनाव एवं असंतोष की भावना रहती है। शनि यदि नीच या शत्रुक्षेत्री होकर, 2, 6, 7, 8, 12वें स्थान में हो, तो जातक के किसी आत्मीयजन, पिता, माता, स्त्री, संतानादि को मृत्यु तुल्य कष्ट, धन एवं स्वास्थ्य हानि तथा अनेक प्रकार के कष्टों का भी सामना होता है।

राहु मध्ये बुध का अन्तर—बुध यदि कुण्डली में उच्च, स्वक्षेत्री होकर केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो जातक को उच्च तकनीकी विद्या की प्राप्ति, पदोन्नति, नए मित्रों के साथ सम्बन्ध, स्त्री एवं संतान सुख, व्यवसाय में बुद्धि-कौशल द्वारा धन लाभ होता है। किसी नवीन कार्य की योजना भी बन सकती है। यदि बुध राहु से 6-8 या 12वें स्थान में हो, तो जातक को धन हानि, पारिवारिक कलह-क्लेश, आर्थिक संकट तथा मानसिक व शरीरिक कष्ट होते हैं। जातक को वात, कफ़, पित्तादि रोग तथा त्वचा (चर्म), रक्त विकारादि रोग होते हैं।

राहु मध्ये केतु का अन्तर—इस अन्तर्दशा में प्रायः अशुभ फल होते हैं। जातक को ज्वर, नेत्र रोग, शत्रु भय, सिर में पीड़ा एवं शरीर कष्ट, जातक के निकट-बन्धुओं एवं मित्रों से कलह व धन हानि एवं ऋण लेने की सम्भावना हो। यदि केतु शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो जातक को शेयरों, लाटरी या व्यवसाय से लाभ, किसी नवीन कार्य की योजना बनती है। स्थानान्तरण से लाभ मिलता है।

राहु मध्ये शुक्र का अन्तर—शुक्र केन्द्र-त्रिकोण एवं 11वें भाव में शुभ राशिगत हो, तो जातक उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से लाभ व उन्नति के योग, व्यवसाय में धन लाभ एवं प्रगति के मार्ग प्रशस्त होंगे। मैत्री भाव बढ़ेंगे। भूमि, वाहन, प्रिय-बन्धु, स्त्री एवं विवाह सम्बन्धी सुखों में वृद्धि होगी। प्रेम प्रसंग बढ़ेगें। विवाहित होने की स्थिति में संतान सुख के योग परन्तु शुक्र यदि नीच या शत्रु राशि अथवा पाप ग्रह से पीड़ित हो, तो किसी प्रिय-बन्धु से कलह, स्त्री को कष्ट, धन हानि, पेट सम्बन्धी गुप्त रोगों की सम्भावना होती है। किसी से धोखा मिलने की सम्भावना भी रहेगी।

राहु मध्ये सूर्य का अन्तर—सूर्य अगर उच्च, स्वक्षेत्री होकर 5, 9, 11वें भाव में हो, तो जातक व्यवसाय में अत्यन्त संघर्ष के पश्चात् उच्च-प्रतिष्ठा, धन-धान्य का लाभ प्राप्त करता है। इस अवधि में उसे सरकारी क्षेत्रों में लाभ, प्रतिष्ठा एवं विदेश यात्रा से लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होते हैं। यदि राहु से सूर्य 6, 8, 12वें भाव होकर नीच राशिगत हो, तो जातक का पारिवारिक सदस्यों से कलह-क्लेश, सरकारी क्षेत्रों से भय, स्त्री-पुत्र को कष्ट, स्थान परिवर्तन, शरीर कष्ट एवं ज्वरादि अशुभ फल घटित होते हैं।

राहु मध्ये चन्द्र का अन्तर—चन्द्रमा उच्च, स्वराशि आदि बलान्वित होकर केन्द्र-त्रिकोण एवं 11वें भाव में हो, तो मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि, विद्या में सफलता, धन लाभ, स्त्री-संतान एवं वाहनादि सुखों की वृद्धि आदि शुभ फल होते हैं। यदि चन्द्रमा नीच, शत्रुादि राशि में होकर राहु से 1, 6, 8,12 वें भाव में अशुभ ग्रह युक्त हो, तो अकस्मात् धन हानि, माता को कष्ट, घरेलू कलह-क्लेश, नेत्र एवं शिर में पीड़ा, मानसिक तनाव, वात, कफ़ आदि रोगों के कारण शरीर को कष्ट आदि अशुभ फल होते हैं।

राहु मध्ये मंगल का अन्तर—मंगल यदि शुभ राशि, उच्च एवं स्वराशि का केन्द्र-त्रिकोण या 11वें भाव में हो, तो उसकी अन्तर्दशा में भूमि, जायदाद एवं पुत्र सन्तति, वाहनादि सुखों की प्राप्ति, उद्यम में वृद्धि, धन लाभ, स्वास्थय में सुधार, शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है। यदि मंगल पाप युक्त होकर राहु से 4, 6, 8 एवं 12वें स्थान में हो, तो जातक को गृह सुख में कमी, भाई-बन्धुओं से विवाद, स्त्री व संतान कष्ट, धन हानि, रक्त विकार तथा दुर्घटना से चोटादि का भय होता है।

गुरु की महादशा में राहु आदि अन्तर्दशाओं का फल

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

वाहन एवं अन्य सुख-साधनों में वृद्धि हो तथा धार्मिक कार्यों में

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गुरु की महादशा में गुरु आदि अन्तर्दशाओं का फल

गुरु में गुरु का अन्तर—गुरु उच्च और स्वक्षेत्री होकर केन्द्र या त्रिकोण (१, ५, ९) भावों में हो, तो इस अन्तर्दशा में जातक की परोपकार एवं धार्मिक कार्यों में प्रवृत्ति होती है। योग, दर्शन, ज्योतिष आदि ग्रंथों में भी रूचि बढ़ती है। उच्च विद्या में सफलता, धन लाभ, विवाहादि उत्सव, पुत्र एवं सन्तान सुख, वाहन, भूमि, आवास आदि सुखों की प्राप्ति होती है। सौभाग्य की वृद्धि तथा महात्माओं आदि श्रेष्ठ जनों के साथ संयोग होता है। यदि गुरु नीच या पाप ग्रहों से युत या दृष्ट हो, तो आर्थिक उलझनें, कौटुम्बिक सदस्यों के साथ मनमुटाव एवं क्लेश, उच्च विद्या में बाधाएं, स्त्री एवं सन्तान सम्बन्धी चिन्ता, उदर विकार एवं शरीर कष्ट की सम्भावना होती है।

गुरु में शनि का अन्तर—शनि यदि उच्च, स्वराशिस्थ हो या केन्द्र-त्रिकोण व 11वें भाव में स्थित हो, तो इस दशा में जातक का उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क, धन-धान्य, भूमि, कृषि, मकान, वाहनादि सुख-साधनों की प्राप्ति, पश्चिम दिशा में यात्रा, लोहे, तेल, व्यवसाय में लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त हों। शनि नीच, अस्त या शत्रु भावीं हो, या गुरु से 6, 8, एवं 12वें भाव में हो, तो पारिवारिक सम्बन्धों में तनाव, स्त्री एवं सन्तान सम्बन्धी परेशानी, नीच लोगों के साथ संगति, व्यसनों आदि में प्रवृत्ति हो, धन का खर्च बहुत अधिक एवं गुप्त चिन्ताऐं रहें, आंखों में रोग, शरीर कष्ट एवं आर्थिक संकट आदि अशुभ फल होते हैं।

गुरु में बुध का अन्तर—बुध उच्च या स्वराशि होकर केन्द्र-त्रिकोण या 11वें भाव में हो, तो इस दशा में जातक के मैत्री क्षेत्र में विस्तार, उच्च व्यवसायिक विद्या में सफलता, पदोन्नति, धन लाभ, स्त्री एवं सन्तान सुख, व्यवसाय में क्रय-विक्रय द्वारा लाभ, किसी नवीन विद्या, ज्योतिष, धर्म, योग, तंत्र आदि विषयों में रूचि एवं आय के साधनों में वृद्धि होती है। यदि बुध अस्तंगत या नीचस्थ होकर गुरु से 6, 8 या 12वें भाव में हो, तो धन हानि, मदिरा आदि व्यसनों में प्रवृत्ति, किसी नजदीकी भाई-बन्धु के व्यवहार से दुख, वात-पित्त, कफ़ आदि त्रिदोषों के कारण शरीर कष्ट का भय होता है।

गुरु मध्ये केतु का अन्तर—कुण्डली में केतु पाप युक्त होकर गुरु से 6, 8 या 12वें स्थान में हो, तो जातक के परिवारिक सदस्यों - स्त्री, पुत्रों; माता-पिता आदि को कष्ट अथवा उनके सुख में कमी हो, गृह में कलह-क्लेश, धन-हानि, दुर्घटना से चोटादि का भय, स्वास्थ्य की हानि तथा मन में असन्तोष व दुख बढ़ते हैं। यदि केतु शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो, तो किसी नवीन कार्य में रूचि, भाई-बन्धुओं का सुख, स्थान परिवर्तन तथा निर्वाह योग्य ही धन के साधन बनते हैं।

गुरु मध्ये शुक्र का अन्तर—कुण्डली में शुक्र स्वराशि या उच्चस्थ होकर केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो जातक को उच्च शिक्षा में सफलता, कार्य-व्यवसाय में धन लाभ एवं उन्नति के अवसर, उच्चपदस्थ अधिकारियों से लाभ, रहन-सहन के स्तर में सुधार, स्त्री, सन्तान सम्बन्धी सुख, संगीत, कला एवं साहित्य में रूचि, कामासक्ति एवं विलासिता आदि के कार्यों पर खर्च की अधिकता, भूमि, वाहन एवं अन्य सुख-साधनों में वृद्धि हो तथा धार्मिक कार्यों में भी रूचि बढ़े। यद्यपि कार्य-व्यवसाय में संघर्ष भी अधिक बढ़े। यदि शुक्र नीच, अस्त या गुरु से 6, 8 या 12वें स्थान में हो, तो जातक की मदिरा एवं अन्य व्यवसनों में प्रवृत्ति हो, शरीर कष्ट, आर्थिक परेशानियां तथा स्त्री एवं सन्तान सम्बन्धी कष्ट एवं चिन्ताएँ तथा वृथा धन के अपव्यय तथा उदर-विकार व गुप्त रोगों की सम्भावना होती है।

गुरु मध्ये सूर्य का अन्तर—सूर्य स्वक्षेत्री या उच्च होकर केन्द्र-त्रिकोण, 11वें भाव हो, तो इस अन्तर्दशा में जातक को उच्च विद्या में सफलता, मान-सम्मान, उच्च-प्रतिष्ठत लो के साथ सम्पर्क, पराक्रम एवं उत्साह में वृद्धि, आरोग्य, सरकारी क्षेत्रों से लाभ, व्यवसाय में ध लाभ, भूमि, जायदाद, वाहनादि सुख एवं सौभाग्य की वृद्धि होती है। पिता से सुख एवं सहयो प्राप्त होता है। सूर्य यदि गुरु से 6, 8, या 12वें स्थान में हो, या राहु आदि पाप ग्रह युक्त हो, जातक का प्रिय-बन्धु से वियोग अथवा सुख में कमी, नेत्र या सिर पीड़ा, ज्वर, वृथा खर्च शरीर कष्ट आदि अशुभ फल होते हैं।

गुरु मध्ये चन्द्रान्तर—उच्चादि स्थिति में शुभ चन्द्रमा केन्द्र-त्रिकोण एवं 11वें भाव हो, तो उस दशा में मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि, विद्या में उन्नति एवं व्यवसाय में धन प्राप्ति, स्त्री ए सन्तान सुख तथा सवारी आदि के सुख प्राप्त होते हैं। मित्रों एवं पारिवारिक सदस्यों का सुख एवं सहयोग मिलता है। यदि चन्द्र लग्नेश या गुरु से 6, 8, या 12वें स्थान में हो या पाप ग्र से युक्त या दृष्ट, नीचादि स्थिति में हो, तो जातक के निकट बन्धुओं के साथ तकरार, मिथ्याबोध माता को कष्ट, धन हानि, मानसिक तनाव तथा बनते कामों में अड़चनें पैदा होती हैं।

गुरु मध्ये मंगल का अन्तर—मंगल उच्च या स्वराशि का होकर केन्द्र-त्रिकोण भाव में स्थित होने से जातक के उत्साह एवं पराक्रम में वृद्धि, उच्च विद्या में सफलता, भूमि-जायदाद सम्बन्धी कार्यों से लाभ, नवीन कार्यों द्वारा धन व यश, तीर्थ यात्रा, परोपकार आदि धार्मिक कार्यों में रूचि होती है। भाई-बन्धुओं एवं मित्रों के साथ समागम होता है। यदि गुरु से मंगल 6, 8, 12वें भाव में हो, या पाप ग्रह से युत या दृष्ट हो, तो जातक का भाई-बन्धुओं से मतान्तर, किसी से विवाद होने का भय, पिता-माता या स्त्री एवं सन्तान को कष्ट, धन हानि, स्वयं जातक का स्वास्थ्य भी ठीक न हो, ज्वर एवं शिर पीड़ा आंखों में कष्ट का भय हो।

गुरु मध्ये राहु का अन्तर—राहु का उच्च या स्वक्षेत्री होकर ३, ६ या ११वें भाव में हो, तो जातक को उच्च विद्या का लाभ, किसी तकनीकी क्षेत्र में विशेष कुशलता, भूमि, वाहन आदि का लाभ, विदेश आदि दूर देश गमन से लाभ, शेयर, लाटरी आदि से अकस्मात् धन लाभ की सम्भावना होती है। गुरू से राहु यदि १, ४, ६, या १२वें भाव में अशुभ हो, तो घरेलू एवं व्यवसाय सम्बन्धी परेशानियां, माता-पिता या किसी आत्मीय या गुरुजन को कष्ट हो, धन हानि एवं अपव्यय, चित्त-व्याकुलता, वृथा दौड़धूप, दुःस्वप्न, शरीर कष्ट तथा अल्प लाभ, किसी से धोखा आदि अशुभ फल होते हैं। अधिक एवं विस्तृत जानकारी के लिए "ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड)" का अध्ययन करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अनिष्ट निवारक नवग्रह यन्त्र और उनको धारण करने की विधि

संसार में प्रत्येक मनुष्य को अपने पूर्व जन्म में तथा वर्तमान जन्म में किए गए कर्मों एवं नव ग्रहों के प्रभावस्वरूप अनेक प्रकार के शुभ-अशुभ (सुख-दुखादि) फलों की प्राप्ति होती है। जिस पुरुष/स्त्री की जन्म राशि या प्रसिद्ध राशि पर सूर्य, चन्द्र, मंगल आदि ग्रह अशुभ प्रभाव डाल रहे हों, उन्हें तदानुसार सम्बन्धित ग्रह यंत्र को अष्टगंध की स्याही तथा अनार की कलम द्वारा भोजपत्र पर लिखकर सोने, चांदी अथवा तांबे के तावीज़ में रखकर गले में धारण करे अथवा पुरुष दाहिनी भुजा में तथा स्त्री बाई भुजा में धारण करें। इन यंत्रों को सोना, चांदी अथवा तांबे के लाकेट अथवा प्लेट पर खुदवा कर उस पर सम्बन्धित ग्रह की पूजा शुभ मुहूर्त्त में विधिपूर्वक धारण करने से ग्रह जनित अनिष्ट प्रभाव का निवारण होकर सब प्रकार की बाधाएं दूर होती हैं।

अष्टगंध—केशर, कस्तूरी, कपूर, गोरोचन, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, अगर-तगर तथा कुमकुम।

सूर्य का यन्त्र

६	९	८
७	५	३
२	९	४

चन्द्र का यन्त्र

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

मंगल का यन्त्र

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

बुध का यन्त्र

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

गुरु का यन्त्र

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

शुक्र का यन्त्र

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

शनि का यन्त्र

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

राहु का यन्त्र

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

केतु का यन्त्र

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

'नवग्रहों के ध्यान मन्त्र'

सूर्य—पद्मासनः पद्मकरः पद्मगर्भः समद्युतिः। सप्तश्वः सप्तजुश्च द्विभुजः स्यात् सदारविः॥
चन्द्रमा—श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेताश्वः। श्वेतवाहनः गदापाणिर्द्विबाहुश्च कर्तव्यो वरदः शशी॥
मंगल—रक्तमाल्याम्बरधरः शक्तिशूलगदाधरः। चतुर्भुजः रक्तरोमा वरदः स्याद् धरासुतः॥
बुध—पीतमाल्याबरधरः कर्णिकारसमद्युतिः। खड्गचर्मगदापाणिः सिंहस्थो वरदो बुधः॥
बृहस्पति—देवानां गुरुः तद्वत् पीतवर्णः चतुर्भुजः। दण्डी च वरदः कार्यः साक्षसूत्रकमण्डलुः॥
शुक्र—दैत्यानां गुरुः तद्वत् श्वेतवर्णः चतुर्भुजः। दण्डी च वरदः कार्यः साक्षसूत्रकमण्डलुः॥
शनि—इन्द्रनीलद्युतिः शूली वरदोगृध्रवाहनः। बाणबाणासनधरः कर्त्तव्योऽर्कसुतस्तथा॥
राहु—करालवदनः खड्गचर्मशूली वरप्रदः। नीलसिंहासनस्थश्च राहुरत्र प्रशस्यते॥
केतु—धूम्रा द्विभुजः सर्वेगदिनो विकृताननाः। गृध्रासनगता नित्यं केतवः स्युर्वरप्रदाः॥

(मत्स्यपुराण ९४।१—९)

सूर्यादि ग्रहों के यंत्र-धारण विधि

सूर्य यन्त्र—जन्मपत्री में सूर्य की स्थिति अशुभ हो अथवा विंशोतरी दशा में सूर्य की अशुभ दशा चल रही हो, गोचर स्थिति भी अशुभ हो, तो सूर्य यंत्र को शुक्ल पक्ष के रविवार के दिन (यदि कृतिका, उत्तरा फाल्गुनी या उत्तराषाढ़ा नक्षत्र भी हो तो और भी अच्छा है) उपर्युक्त विधि अनुसार अष्टगन्ध से लिखकर सोने या ताम्र के तावीज़ में रखकर अथवा सोने या ताम्र की प्लेट पर खुदवा कर लाल रुमाल एवं लाल (गुलाबी) डोरी में लपेट कर अपने पास रखे। प्रातः धारण करने से पूर्व यंत्र पर "ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः" इस मन्त्र का ७ हजार बार जाप करना कल्याणकारी होगा।

चन्द्र यन्त्र—आपकी राशि की जन्मकुण्डली में दशा-अन्तरदशा अथवा गोचर में चन्द्रमा अशुभ हो तो चन्द्र यन्त्र को शुक्ल पक्ष के सोमवार विशेषकर रोहिणी, हस्त या श्रवण नक्षत्र में सायं काल को उपर्युक्त विधि अनुसार चांदी का यंत्र धारण करें अथवा भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखकर चांदी के तावीज़ में रखकर सफेद डोरी में धारण करें। यंत्र धारण करने से पूर्व उस पर "ॐ सों सोमाय नमः" या "ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः" इस मंत्र का ११००० पाठ पूरा कर लेना शुभ होगा।

मंगल यन्त्र—अपनी राशि या कुण्डली में मंगल ग्रह के अनिष्ट निवारण हेतु शुक्ल पक्ष के मंगलवार को मृगशिर, चित्रा या धनिष्ठा नक्षत्र कालीन "ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः" मन्त्र को दस हजार संख्या में जाप एवं पूजा के पश्चात् ताम्बे का यन्त्र (प्लेट, लाकेट आदि) धारण करना श्रेयकर रहता है। ताम्र यंत्र के अभाव में भोजपत्र पर अष्टगंध से यंत्र लिखकर ताम्बे के तावीज़ में धारण कर सकते हैं।

बुध यन्त्र—अपनी राशि या कुण्डली में बुध के अनिष्ट निवारण हेतु शुक्ल पक्ष के बुधवार को आश्लेषा, ज्येष्ठा या रेवती नक्षत्र के समय सोने या चांदी की प्लेट, अंगूठी या लाकेट पर खुदवा कर हरे रुमाल में बुध यंत्र धारण करें। धारण करे से पूर्व इस पर बुध के बीज मंत्र का ९००० की संख्या में पाठ करना शुभ होगा।

गुरु यन्त्र—अपनी राशि पर कुण्डली में गुरु के अरिष्ट निवारण हेतु शुक्ल पक्ष के गुरुवार को पुनर्वसु, विशाखा अथवा पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के समय या किसी अन्य शुभ मुहूर्त्त पर सोने, चांदी या ताम्बे की प्लेट अथवा लाकेट या अंगूठी पर यन्त्र खुदवा कर गुरु का बीजमंत्र "ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः" (१९०००) पढ़ते हुए पीले रुमाल में लपेट कर अपने पास रखने से अनिष्ट प्रभाव दूर हो जाता है।

शुक्र यन्त्र—अपनी राशि या कुण्डली में शुक्र ग्रह के अनिष्ट के निवारण हेतु शुक्ल पक्ष के शुक्रवार को पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा या भरणी नक्षत्र कालीन अथवा किसी अन्य शुभ मुहूर्त्त में चांदी की प्लेट या लाकेट अथवा अंगूठी पर यंत्र खुदवा कर शुक्र का बीज मंत्र "ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः" १६००० की संख्या में पढ़कर श्वेत चन्दन और श्री गंगा जल के ३ छींटे देते हुए गुलाबी रुमाल में लपेटकर अपने पास रखें।

शनि यन्त्र—अपनी नाम राशि या जन्म कुण्डली में शनि ग्रह के अनिष्ट निवारण हेतु कृष्ण पक्ष के शनिवार को पुष्य, अनुराधा या उत्तराभाद्रपद नक्षत्र कालीन अथवा किसी अन्य शुभ मुहूर्त्त में सोने या सप्तधातु की प्लेट, लाकेट अथवा अंगूठी पर यंत्र खुदवा कर, शनि के बीज मंत्र "ॐ शं शनैश्चराय नमः" मन्त्र की ३ माला का जाप करके यथाशक्ति दान के उपरान्त काले रुमाल में लपेट कर अपने पास रखें।

राहु यन्त्र—अपनी नाम राशि या जन्मकुण्डली में राहु के अनिष्ट निवारण हेतु कृष्ण पक्ष के शनिवार को आर्द्रा, स्वाती या शतभिषा नक्षत्र कालीन अथवा किसी अन्य शुभ मुहूर्त्त में चांदी अथवा सप्तधातु की प्लेट, लाकेट अथवा अंगूठी में यन्त्र खुदवा कर राहु के बीज मन्त्र "ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः" की कम-से-कम तीन माला का जाप करके दानपूर्वक धूम्र वर्ण के रुमाल में लपेट कर अपने पास रखने से लाभ होगा।

केतु यन्त्र—अपनी नाम राशि या जन्म कुण्डली में केतु के अनिष्ट प्रभाव को दूर करने के लिए शुक्ल पक्ष के मंगलवार या रविवार को अश्विनी, मघा या मूला नक्षत्र में अथवा किसी शुभ मुहूर्त्त कालीन चांदी या सप्तधातु की प्लेट, लाकेट या अंगूठी में यंत्र को खुदवाकर केतु के बीज मन्त्र "ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः" की तीन माला का जाप करके दानपूर्वक लहसुनिया जैसे वर्ण के रुमाल में लपेट कर अपने पास रखने से नेष्ट फल दूर हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भाग्योदय देखने का चक्र

यदि आपको किसी व्यक्ति के भाग्य का फल जानना हो, तो उस व्यक्ति को कहें कि वह व्यक्ति 1 से 31 की संख्या के भीतर कोई भी अंक मन में सोच ले। तदुपरान्त उसको पूछें कि नीचे लिखे A से लेकर E तक के पाँच यन्त्रों में से किस-किस यन्त्र में उसका सोचा हुआ अंक विद्यमान है। जिस-जिस यन्त्र में अमुक व्यक्ति का सोचा हुआ अंक मिले, उस यन्त्र के दाईं तरफ के सबसे ऊपर के कोने वाले पहले हिन्दसों को परस्पर जमा कर लेने से व्यक्ति विशेष के मन में सोची हुई संख्या पता लग जाएगी। उस अंक की संख्या के आधार पर व्यक्ति के 'भाग्य का फल' आगे लिखे अनुसार जानें--

उदाहरण--मान लो किसी मनुष्य ने अपने मन में 22 का अंक सोचा है। अब देखो कि यह 22 का अंक खाना नं० A, B, C, D, E में कहाँ मिलता है। अब इन यन्त्रों B, C, E के ऊपर के दायें कोनें के अंकों 2 + 4 +16 को जोड़ो तो 22 का जोड़ बनता है। अतः प्रश्नकर्ता ने 22 का अंक सोचा है और इसके अनुसार देखा तो लिखा है, कि विदेश गमन सम्बन्धी विचार बनेगा। व्यवसाय में कुछ परिवर्तन के योग हैं। इसी भांति अन्य अंकों के बारे में भी विचार करें।

नं० A

7	5	3	1
15	13	11	9
17	19	21	23
25	27	29	31

नं० B

7	6	3	2
15	14	11	10
23	22	19	18
31	30	27	26

नं० C

30	29	28	4
22	21	20	23
15	13	12	14
5	6	7	31

नं० D

30	10	28	8
26	25	24	31
14	13	12	27
9	29	11	15

नं० E

29	30	31	16
26	25	24	20
21	22	23	27
17	18	19	28

(1) तुम्हारे मन की मुराद उस समय पूरी होगी, जब तुम्हारा इस का ध्यान भी न होगा। (2) धैर्य रखें, भाग्योदय होने वाला है। फिर भी प्रतिदिन गायत्री मन्त्र का पाठ करते रहें। (3) किसी ऐसे साधन द्वारा तुम्हारी आशा पूर्ण होगी जिसका आपको ध्यान भी नहीं होगा। (4) जिस गुप्त चिन्ता के लिए आप परेशान हो, उसकी सफलता के लिए अभी कुछ विलम्ब हो सकता है, अपना पुरुषार्थ जारी रखें। (5) आपके लिए खुशी का समय आने वाला है, धैर्य रखें। सूर्य उपासना करना शुभ होगा। (6) घबराओ नहीं, तुम्हारी बेहतरी का साधन (ईश्वर कृपा से) शीघ्र निकल आएगा। (7) आपकी मुश्किलों का हल माता-पिता के आशीर्वाद से ही निकल पाएगा। (8) तुम्हारे भाग्य में धन-सम्पत्ति का सुख लिखा है, किन्तु विशेष परिश्रम करना होगा, लक्ष्मी चालीसा का पाठ करना शुभ रहेगा। (9) थोड़े दिनों में आपके सामने विदेश यात्रा सम्बन्धी प्रस्ताव रखा जाएगा, इसको स्वीकृति देने से पहले गम्भीरता से विचार करना उचित होगा। (10) इस समय आपका भाग्य गर्दिश में है, विशेष पुरुषार्थ एवं शिव उपासना करने से सफलता मिलेगी। (11) आपके संघर्ष और परेशानियों का समय बीत गया है, आने वाले दिनों में धन-लाभ एवं सुख के साधन बढ़ेंगे। (12) उतावलेपन से बनते काम बिगड़ सकते हैं। धीरज से काम लें, धीरे-धीरे ही बिगड़े कामों में सुधार आएगा। (13) किसी प्रिय बन्धु के सहयोग से बिगड़ा हुआ कोई विशेष काम बनेगा। (14) अभी बनते कामों में विघ्न-बाधाएँ रहेंगी। मानसिक तनाव व उद्विग्नता से बचें। (15) भाग्य में अभी कशमकश रहेगी। लगभग अढ़ाई महीने बाद सुधार के योग हैं। (16) ईश्वर पर भरोसा रखो, लगभग दो महीने बाद भाग्य में परिवर्तन होने के संकेत मिलते हैं। (17) अभी सितारे गर्दिश में है, लगभग डेढ़ मास बाद हालात में सुधार होगा। (18) अनावश्यक चिन्ता एवं तनाव से बचें, अच्छा समय आने वाला है। (19) उत्साहपूर्वक कर्म करते रहें, भाग्य में परिवर्तन व शुभ लाभ के योग पाए जाते हैं। (20) अपने भाग्य एवं पुरुषार्थ पर भरोसा रखें, मनोवांछित कार्यों में सफलता मिलने वाली है। (21) वर्तमान काल में आपके भाग्य के सितारे गर्दिश में है। लगभग एक मास बाद हालात में सुधार के योग हैं। (22) विदेश गमन सम्बन्धी विचार बनेगा। व्यवसाय में कुछ परिवर्तन के योग हैं। (23) आर्थिक परेशानियों के कारण तनाव होगा, लगभग डेढ़ मास बाद भाग्य में लाभ व उन्नति के योग हैं। (24) वर्तमान में समय संघर्षपूर्ण होगा। निकट भविष्य में मनोवांछित कार्यों में सिद्धि प्राप्ति होने के संकेत हैं। (25) किसी अंतरंग मित्र की सहायता से कोई बिगड़ा काम बनेगा। अचानक धन लाभ भी होगा। (26) वृथा कामों में समय न गंवाओ, आने वाले दो महीनों में लाभ व उन्नति के योग हैं। (27) व्यर्थ की चिन्ता न करें, लगभग डेढ़ मास बाद भाग्य में सुखद परिवर्तन होने के आसार हैं। (28) उत्साह से अपने कर्तव्य पालन में लगे रहें, लगभग दो मास में भाग्य में शुभ परिवर्तन होने वाला है। (29) संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के कारण मन अशान्त रहेगा। लगभग अढ़ाई मास बाद आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। लक्ष्मी स्तोत्र का पाठ करें। (30) अपने निश्चय पर दृढ़ रहें, लगभग डेढ़ मास आर्थिक कामों में सुधार होगा। (31) वर्तमान परिस्थितियां संघर्षपूर्ण होंगी। कार्य-व्यवसाय में परिवर्तन के बाद सफलता प्राप्त होगी।

''श्री अर्द्धशताब्दि पंचांग''

(संवत् 2001 से 2050 तक) अर्थात् सन् 1944 से 1993-94 ई. तक

(दैनिक ग्रह स्पष्ट सहित—ज्योतिषीयों के लिए एक संग्रहणीय एवं आवश्यक ग्रन्थ)

(प्रधान सम्पादक —पं. पन्ना लाल ज्यो.,

उप-सम्पादक—पं. विवेक शर्मा, व्यवस्थापक —पं. पंकज शर्मा)

नोट--पूर्ण राशि अग्रिम भेजने पर डाक खर्च (लगभग 60/- रु.) माफ। पुस्तक आपको रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा भेज दी जाएगी। मूल्य 640 रु.

पता--जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर। फोन--2457959

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

स्वप्न—शकुन का शुभाशुभ फल विचार

दैनिक जीवन में मनुष्य की जो वासनाएँ अतृप्त अथवा अपूर्ण रहती हैं, वही स्वप्न रूप में येन-केन प्रकारेण पूर्ति का आभास कराती हैं। सूर्योदय के कुछ पूर्व अथवा ब्रह्म मुहूर्त में देखे गए स्वप्न का फल दस दिनों में, रात्रि के प्रथम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक वर्ष के पश्चात्, रात्रि के दूसरे प्रहर में देखे गए का फल छः मास में, तृतीय प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल तीन मास के बाद, रात्रि के अन्तिम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक मास में प्रकट होता है, जबकि दिन में देखे गए स्वप्न विश्वसनीय नहीं होते। शुभ सांकेतिक स्वप्न देखने के पश्चात् सोना नहीं चाहिए, शेष रात्रि भजन, चिंतन में बितानी चाहिए तथा किसी को अपना स्वप्न बताना भी नहीं चाहिए। इसके विपरीत अशुभ स्वप्न देखने के बाद फिर सो जाएं तथा प्रातःकाल यदि उस अशुभ स्वप्न की स्मृति ताजी रहे तो गुरुजनों को उसे बतला दें। अशुभ निवारण के लिए गायत्री पाठ, स्नानदानादि, अनुष्ठानादि कार्यों का सम्पादन करें। अधिक जानकारी हेतु हमारे कार्यालय से स्वप्न ज्यो. विज्ञान सम्बन्धी पुस्तक मंगवाएँ।

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल
अंगूठी पहनना	धन लाभ व प्रसन्नता	कैंची चलाना	व्यर्थ विवाद	गर्भपात	गम्भीर रोग	ज्वर पीड़ित	स्वास्थ्य ठीक	ढोलक बजाना	किसी व्यक्ति से भेंट
आम का वृक्ष देखना	सन्तान सुख	कौआ बोलते देखना	बुरा समाचार मिले	घूंघट देखना	नया कारोबार	जुआ खेलना	धन हानि	तम्बू देखना	नया काम शुरु करें
अतिथि देखना	आकस्मिक विपत्ति	कंघी करना	इच्छा पूर्ण हो	घोड़े से गिरना	परेशानी, चिन्ता	जेब काटना	धन हानि	तलवार चलाना	शत्रु पर विजय
अन्धेरा देखना	दुःख मिले	कबूतर देखना	शुभ समाचार	घाट पर नहाना	तीर्थ यात्रा	जड़ें देखना	दीर्घायु	तपस्वी देखना	आत्म उन्नति
आकाश से गिरना	मान हानि, चिन्ता	काला नाग	राज्य सम्मान	घायल देखना	संकट से मुक्त होना	जड़ें काटना	संकट का सूचक	तैरते देखना	आयु में वृद्धि
अर्थी देखना	रोग मुक्त	किला देखना	तरक्की पाना	घर बनाना	प्रसिद्धि प्राप्त हो	जनाजा दखना	धन लाभ/तरक्की	तर्पण करते देखना	मृत्यु की सूचना
अग्नि देखना	पित्त सम्बन्धी रोग	कोढ़ी देखना	रोग सूचक	घडी देखना	यात्रा का संकेत	झगड़ा देखना	प्रसन्नता मिले	तारे देखना	मनोरथ सिद्धि
आकाश देखना	तरक्की होना	कन्या देखना	तीर्थ यात्रा	घोड़े पर बैठना	सफलता का सूचक	झाड़ू देखना	नुकसान हो	तीर मारना	खुशी मिले
आँवला खाना	स्वास्थ्य लाभ	कोयला देखना	व्यर्थ का झगड़ा	चोट लगना	स्वास्थ्य लाभ	झण्डा देखना	सुयश/धन लाभ	तूफान देखना	परेशानी बढ़े
अपने को मृत देखना	आयु वृद्धि	कीचड़ में फंसना	कष्ट हो, व्यय हो	चरखा देखना	आर्थिक लाभ	झांकी देखना	अशुभ	तीर्थ देखना	धार्मिक खींच
आग जलाकर पकड़ना	व्यर्थ व्यय हो	कटा सिर देखना	चिन्ता परेशानी	चावल खाना	शुभ समाचार	झोली देखना	विजय संकेत	तितली देखना	प्रेम सम्बन्ध में सफलता
आत्महत्या करना	दीर्घायु	कुत्ता देखना	उत्तम मित्र प्राप्त हो	चोर देखना	धन प्राप्ति	झोंपड़ी देखना	सुरक्षा सूचक	तोता देखना	धन लाभ
आलू देखना	मुसीबत आना	कोयल देखना	कोई शुभ समाचार	चादर देखना	बदनामी हो	झरना देखना	दुःख दूर हों	तलाक होते देखना	दाम्पत्य सुख में बाधा
आपरेशन देखना	रोग के चिन्ह	कढ़ाई करते देखना	प्रेम या व्यापार में सफलता	चांदी के जेवर	सम्बन्ध विच्छेद	टिकट लेना	सम्बन्ध टूटना	तरक्की होते देखना	योजनाओं में सफलता
अस्त्र-शस्त्र देखना	दुःखों से निपटारा हो	कबाब खाना	अपयश/विवाद	चौकीदार देखना	धनागमन का संकेत	टोकरी देखना	व्यापार में वृद्धि	तराजू देखना	व्यापार लाभ
इन्द्रिय देखना	सन्तान सुख	कब्रिस्तान देखना	प्रतिष्ठा वृद्धि	चीखें मारना	परेशानी व कष्ट	टाट देखना	सम्मानजनक स्थिति	ताली बजाना	खुशी मिले
इम्तहान में फेल होना	शुभ फल प्राप्ति	खून करना	संकट आना	चुनरी देखना	सौभाग्य प्रतीक	टेलीफोन करना	शुभ समाचार	ताश खेलना	व्यापार लाभ
ईमारत बनाना	धन लाभ, तरक्की	खिलौना देखना	सुख शान्ति	छुरी मारना	परिवार से वाद विवाद	टापू देखना	संकट लक्षण	ताला बन्द देखना	कार्यों में रुकावट
ईजन देखना	योजनाएं असफल	खरबूजा देखना	धन लाभ	छिपकली देखना	अचानक धन लाभ	टोपी देखना	प्रगति हो	तरबूज देखना	परेशानी
ईमली खाना	पुत्र प्राप्ति	खेत देखना	संकट पूर्ण	छींकना	कार्य बाधा	ठग मिलना	धन हानि	तांगा देखना	झगड़ा हो
ईमली का पेड़ देखना	स्वास्थ्य	खरगोश देखना	स्त्री से मिलाप	छाता देखना	चिन्ताओं से छुटकारा	ठिठुरना	उज्ज्वल भविष्य	थूक देना	परेशानी बढ़े
इन्द्रधनुष देखना	जीवन में परिवर्तन	गुरु देखना	कार्य सफलता	छपाई देखना	अपमानित होना	ठोकर लगते देखना	सफलता का सूचक	थप्पड़ मारना	कलह क्लेश
उल्लू देखना	रोग अथवा शोक हो	गोबर देखना	पशु लाभ हो	छंटनी देखना	पदोन्नति	ठाकुर देखना	आध्यात्मिक प्रवृत्ति	थप्पड़ खाना	शुभ
उल्टा लटके देखना	अपमान मिले	गंगा देखना	शेष जीवन सुखी	जख्म देखना	परेशानियां	डॉक्टर देखना	रोग उत्पत्ति	थन स्पर्श करना	धन प्राप्ति
ऊँट देखना	अंग घात	ग्रहण देखना	रोग व चिन्ता	जादूगर देखना	अशुभ लक्षण	डूबते देखना	कठिनाईयों का सामना	दूध पीना	खुशी प्राप्ति
ऊँचाई पर चढ़ना	तरक्की व मान	गोली चलते देखना	विपत्ति निवारण	जहाज देखना	परेशानी दूर हो	डोली देखना	कोई परेशानी हो	दरवाजा देखना	नए कार्य का आरम्भ
ऐनक देखना (काली)	निराशा	गुलाब देखना	मनोकामना पूर्ण हो	जिन्दा जलना	धन की प्राप्ति	डाकिया देखना	समाचार प्राप्त हो	दही देखना	सफलता
कमल देखना	धन प्राप्ति	गरीबी देखना	सुख समृद्धि	जल देखना	मान सम्मान	डाकू देखना	धन हानि	दाँव लगाना	भारी हानि

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

स्वप्न	फल
दान करना	शुभ
दर्जी देखना	काम बिगड़ना
दांत गिरते देखना	दु:ख एवं झंझट
दलदल देखना	व्यर्थ चिन्ता बढ़े
दवाई पीना	रोग नाश
दुकान (भरी) देखना	धन लाभ
दुकान (खाली) देखना	धन हानि
देवी देवता देखना	खुशी प्राप्ति
दक्षिणा देना	मंगल कार्य सूचक
दरिया में नहाना	रोग नाश
दीवार गिरना	धन हानि
दक्षिणा देना	मंगल कार्य
दाह संस्कार देखना	दीर्घायु
धन देखना	धन की प्राप्ति
धूल देखना	यात्रा पड़े
धमकी देना	शत्रु पर विजय
धार्मिक कार्य करना	पारिवारिक सुख
धोबी देखना	सफलता हो
धुआं देखना	कार्य में विघ्न
धूप देखना	पदोन्नति, लाभ हो
धनुष खींचना	लाभप्रद यात्रा हो
नदी में गिरना	फिक्र, चिन्ता
नंगा देखना	कष्ट प्राप्ति
नदी का पानी पीना	राज्य से लाभ
न्यायालय देखना	झगड़े में सफलता
नदी देखना	आकांक्षा पूर्ति
नवयौवना देखना	प्रेम सम्बन्ध
नाखून काटना	रोग से मुक्ति
नाव में बैठना	झूठा आरोप लगे
नाग देखना	सुख प्राप्ति
नृत्य देखना	धन प्राप्ति
पत्थर देखना	विपत्ति
प्यासा होना	कार्य बाधा
पुल देखना	शुभ यात्रा हो
परछाई देखना	अशुभ होना
पर्व देखना	शुभ हो
पशु देखना	व्यापार में लाभ

स्वप्न	फल
पहरेदार देखना	चोरी होना
पहाड़ देखना	उन्नति का सूचक
पान खाना	प्रिय से मिलाप
परीक्षा देते देखना	असफलता
पहलवान देखना	स्वास्थ्य लाभ
पपीता देखना	धन लाभ
पुजारी देखना	उन्नति का संकेत
पूर्वज देखना	शुभ फल प्राप्ति
पतंग देखना	परेशानी बढ़े
पखाना करना	कष्ट मिले
पानी बरसते देखना	शुभ कारक
पिंजरे में पक्षी देखना	सुख प्राप्ति
पगड़ी देखना	प्रतिष्ठा प्राप्ति
प्रणय प्रबन्ध देखना	दाम्पत्य सुख प्रतीक
प्रेत देखना	सौभाग्य वर्द्धक
फुलवाड़ी देखना	खुशी मिले
फव्वारा देखना	चिन्ता दूर हो
फेल होना	सफलता का सूचक
फकीर देखना	शुभ फलदायक
बहन देखना	सौभाग्य वृद्धि
बकरी देखना	शुभ यात्रा लाभ
बूढ़ी स्त्री देखना	दु:ख प्राप्ति
बाग देखना	सुख मिले
बाढ़ देखना	धन की हानि
बिच्छू देखना	चिन्ताकारक
बालू देखना	धन लाभ हो
बादाम देखना	स्वास्थ्य लाभ
बारिश देखना	रोग व कलह
बन्दूक देखना	संकट आवे
बिल्ली देखना	लड़ाई के चिन्ह
बाजार देखना	दरिद्रता दूर हो
बर्फ देखना	प्रिया से मिलाप
बारात देखना	चिन्ता व परेशानी
भूकम्प देखना	सन्तान कष्ट
भाषण देना/सुनना	वाद विवाद
भूखा देखना (स्वयं को)	यात्रा लाभ
भिखारी देखना	यात्रा पड़े

स्वप्न	फल
भोजन पकाना	शुभ समाचार
मिठाई खाना	मान व तरक्की
मुर्दे के साथ खाना	दु:ख दूर हो
मछली देखना	धन व स्त्री प्राप्ति
मोर देखना	खुशी प्राप्ति
महल देखना	कष्ट से छुटकारा
मधुमक्खी देखना	व्यापार वृद्धि
मिर्च खाना	लड़ाई संकेत
माली देखना	खुशी मिले
मुर्दे हंसते देखना	फिक्र व चिन्ता
मृत्यु देखना	भाग्योदय
मुण्डन कराना	सुखी गृहस्थी
मन्दिर देखना	इच्छा पूर्ण हो
मंगनी देखना	विवाह में देरी
महात्मा देखना	धन प्राप्ति
यात्रा करना	यात्रा द्वारा धन लाभ
यज्ञ देखना	सौभाग्यसूचक
युद्ध देखना	सफलता के संकेत
यन्त्र देखना	असफलता प्राप्ति
यम देखना	आयु वृद्धि
रोटी खाना	इच्छा पूर्ण हो
रुद्राक्ष देखना	कल्याण का प्रतीक
रोते हुए देखना	प्रसन्नता का प्रतीक
रोगी देखना	दु:ख निवृत्ति
रसोईघर देखना	धन धान्य का प्रतीक
रेल देखना	कष्टकारी यात्रा
राख देखना	सफलता की प्राप्ति
रथ देखना	यात्रा पड़े
रेत पर चलना	शत्रु से हानि
रीछ देखना	शुभ समाचार
रिश्वत लेना	अपमान हो
राक्षस देखना	कष्ट से छुटकारा
रखैल देखना	सन्तान कष्ट
लकड़ी उठाना/देखना	अकारण वाद-विवाद
लोहा देखना	स्वास्थ्य हानि
लाटरी का टिकट	सौभाग्य पद
लहंगा देखना	दाम्पत्य सुख प्राप्ति

स्वप्न	फल
लंगर देखना	धन सम्पदा वृद्धि
विष खाना	परेशानी बढ़े
वृक्ष काटना	धन हानि
विदाई देखना	धन वृद्धि
वध दिखाई देना	आकस्मिक विपत्ति
विवाह देखना	दुर्भाग्य सूचक
विधवा देखना	हानि
विदेश यात्रा देखना	परिवारिक विवाद
वर्षगांठ मनाना	आयु में कमी
वर्षा देखना	चिन्ता, हानि
विमान देखना	सौभाग्य सूचक
शेर देखना	शत्रु नाश
शीशा देखना	रोग नाश
शत्रु देखना	सफलता हो
शव देखना	शुभ फल
श्राद्ध करना	पितरों की प्रसन्नता
शिकार करना	पारिवारिक कष्ट
शिशु देखना	सुखी दाम्पत्य जीवन
शोक समूह देखना	आनन्द का प्रतीक
शमशान घाट	दीर्घायु
शराब पीना	वाद विवाद
साँप देखना/पकड़ना	शत्रु पर विजय
सागर देखना	धन वृद्धि
सुन्दरी देखना	धन लाभ
साईकिल चलाना	कार्य सिद्धि
स्टेशन देखना	यात्रा शुभ होगी
सेहरा देखना	गृह क्लेश
सुन्दर वस्त्र देखना	बीमार होना
सेब देखना	दीर्घायु
स्नान करते देखना	व्यवसाय में लाभ
हवालात देखना	मान सम्मान
हंसते हुए देखना	खुशी का प्रतीक
हड्डियाँ देखना	डूबे धन की प्राप्ति
हत्या देखना	परेशानी
हरी फुलवारी देखना	धन-जन वृद्धि
हाथी देखना	व्यवसाय वृद्धि
हिम गिरते देखना	धन प्राप्ति
त्रिशूल देखना	सफलता मिले

शरीर में तिल और उनके शुभाशुभ फल

अंग	फल
माथे पर तिल	धनवान होवे
माथे के दाहिने ओर	मान प्रतिष्ठा में वृद्धि
दोनों भौंह के मध्य में	यात्रा कारक है
बायीं आंख पर	औरत से कलह
दाहिनी आँख पर	औरत से विशेष प्यार रहे
ठोडी पर तिल हो	औरत से प्यार कम हो
बायें गाल पर	धन का अपव्यय
दाहिने गाल पर	धन की बढ़ोतरी हो
ऊपर के होंठ पर	विषयवासना में रत रहे
नीचे के होंठ पर	धन की कमी रहे
कान पर तिल हो	आयु मध्यम रहे
गर्दन पर तिल हो	आराम प्राप्त हो
दाहिनी भुजा पर हो	मान-प्रतिष्ठा प्राप्त हो
नाक पर तिल हो	यात्रा कारक है
बायीं भुजा पर हो	झगड़ा होवे
बायीं छाती पर हो	औरत से झगड़ा हो
दाहिनी छाती पर हो	औरत से प्यार रहे
दोनों छातियों के मध्य	जीवन सुखमय रहे
हृदय पर हो	बुद्धिमान हो
पसली पर तिल हो	डरपोक स्वभाव हो
पीठ पर तिल हो	यात्रा में रहा करे
पेट पर तिल हो	श्रेष्ठ भोजन की इच्छा रहे
बगल में तिल हो	दूसरों को हानि पहुंचावे
कमर पर तिल हो	मन अशान्त रहे
बायें हाथ की पीठ पर	व्यय अधिक हो
दाहिनी हथेली पर	धनवान् हो
बायीं हथेली पर	व्यय कारक है
दाहिने पैर में तिल हो	यात्रा कारक है
बायें पैर पर	अपव्यय कारक
पाँव के तलुवे में	यात्रा अधिक

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भारतीय संस्कृति एवं शकुन विचार

प्राचीन भारतीय ऋषि मुनियों एवं मनीषियों ने लोक कल्याण की भावना से ही प्रेरित होकर अपने सतत अनुसन्धान, आत्मचिन्तन एवं अनुभवों के आधार पर ज्योतिष एवं शकुन शास्त्र का प्रणयन किया है। शकुन शास्त्र ज्योतिष शास्त्र का ही अविभाज्य अंग है। जैसे सभी ग्रह नक्षत्र अपनी ऊर्जा शक्ति, स्थिति एवं संचार गति से मनुष्य की आकृति, स्वभाव, सुख-दुःख एवं विगत, वर्तमान और भावी घटनाओं का संकेत करते हैं, उसी भान्ति सृष्टि के अन्य स्थावरव चैतन्य जीव भी अपनी चेष्टाओं द्वारा भावी घटनाओं का संकेत करते हैं।

आज से सहस्रों वर्ष पूर्व जब आधुनिक वैज्ञानिक संयन्त्रों का अविष्कार भी नहीं हुआ था, तभी हमारे ऋषियों ने ''या ब्रह्माण्डे सा पिण्डे या पिण्डे सा ब्रह्माण्डे'' जैसे मौलिक सूत्रों के आधार पर अपनी दिव्य अन्तःदृष्टि के द्वारा समस्त सौर पिण्डों, ग्रहों-नक्षत्रों आदि का प्राणियों पर प्रभाव का ही अनुशीलन नहीं किया था बल्कि मनुष्यों के सामुद्रिक चिन्हों जैसे हस्त रेखाओं, तिलों, मस्तक आदि रेखाओं के आधार पर आश्चर्यजनक अनुसंधान किए हैं। पशु-पक्षियों एवं जीव-जन्तुओं की विभिन्न प्रकार की चेष्टाओं के अध्ययन द्वारा भविष्य कथन के अनेक प्रकार मिलते हैं।

वैदिक काल के उत्तरार्द्ध में ज्योतिष के गणित, सिद्धान्त और फलित-ये तीनों, भेद स्वतन्त्र रूप में प्रस्फुटित हो चुके थे। ग्रहों की गति, स्थिति, पात, ग्रहण, अयनांश आदि गणित ज्योतिष के अन्तर्गत तथा यज्ञ, विवाह, राजतिलक, युद्ध घोषणा आदि के लिए शुभाशुभ समय का निर्णय फलित ज्योतिष का विषय माना जाता था। पूर्वमध्यकाल को उत्तरार्ध शताब्दियों में ज्योतिषशास्त्र के अन्तर्गत स्कन्धत्रय-होरा, सिद्धान्त और संहिता सम्बन्धी विषयों का समावेश होता था। परन्तु इस युग के अन्तिम काल में ज्योतिष के विभिन्न विषयों का विवेचन—होरा, सिद्धान्त संहिता, प्रश्न और शकुन-इस पंचात्मक विभागों में स्वतन्त्र रूप में प्रस्फुटित होने लगा था।

'अमरकोश' में शकुन शब्द पक्षी के लिए पर्यायवाची माना गया है। अन्य पर्यायवाची शब्द शकुन्ति, शकुनी, शकुत्र, द्विज, खग आदि बतलाए गए हैं। इससे यहीं संकेत मिलते हैं कि प्रारम्भिक काल में हमारे प्राचीन ऋषियों ने विभिन्न प्रकार के पक्षियों की ही भिन्न-भिन्न चेष्टाओं का सूक्ष्म अध्ययन एवं निरीक्षण किया होगा फिर कालान्तर में पक्षियों के अतिरिक्त अन्य जीव-जन्तुओं, जलचर, नभचर (पक्षी), चौपाय पशु, ज्योतिष-पिण्ड, कृक्षादि, वनस्पति, स्वर, अंगस्फुरण, सामुद्रिक (शारीरिक) लक्षण अर्थात् उनके चिन्हों एवं चेष्टाओं के द्वारा भी भविष्य की घटनाओं का अनुमान किया जाने लगा। महाभारत काल में भी महायुद्ध प्रारम्भ होने से पहले भगवान वेदव्यास द्वारा भीष्म-पितामह को भौमवासरी अमावस को सूर्य-ग्रहण का लगना आगामी होने वाले भयानक युद्ध होने का अशुभ शकुन (संकेत) बतलाया था।

पौराणिक काल में नारद पुराण, अग्नि पुराण आदि ग्रन्थों में 'शकुन शास्त्र' के विस्तृत वर्णन मिलते हैं। अग्निपुराण में पुष्कर और श्रीपरशुराम के मध्य वार्ता के प्रसंग से 'शकुन'विद्या पर विस्तार पूर्वक विवरण मिलते हैं। अधिकांश वर्णन यात्रा, गमन आदि के सम्बन्ध में मिलते हैं। शकुनों के **तीन प्रकार** के भेद बतलाए गए हैं। **दीप्त, शान्त** और **मिश्र शकुन**।

दीप्त शकुनों का फल अशुभ तथा शान्त शकुनों का फल शुभ बतलाया है दीप्त और शान्त परस्पर मिलें हों, तो उनका फल शुभाशुभ (मिश्र) (मिश्रित) कहा जाता है। आगे **दीप्त शकुनों** के भी छः प्रकार के विभेद बतलाए गए हैं। जैसे वेला दीप्त, दिग्दीप्त, देशदीप्त, क्रियादीप्त, रूतदीप्त और जातिदीप्त। इनमें पूर्व-पूर्व को अधिक प्रबल समझना चाहिए।

दिन में विचरने वाले प्राणी रात्रि में और रात्रि में चलने वाले प्राणी दिन में विचरते दिखाई दें, तो उसे बैलादीप्त जानना चाहिए। ग्रह नक्षत्र क्रूरावस्था में प्राप्त हो जाएं तो वह भी वेला दीप्त के अन्तर्गत होंगे। दीप्तदिशा में जो शकुन हो उसे **दिग्धीप्त** कहा जाता है। यदि गांव में जंगली और जंगल में ग्रामीण पशु-पक्षी आदि मौजूद हों तो वह निन्दित देश होगा। इसी प्रकार जहां निदित वृक्ष हो, वह अशुभ एवं निन्द्य माना गया है। वर्ण धर्म के विपरीत अनुचित कर्म करने वाला पुरुष **''क्रिया दीप्त''** बतलाया गया है। केवल मांस भोजन करने वाला प्राणी **जातिदीप्त** कहलाता है, उसका दर्शन भी जाति दीप्त है। फटी हुई **भयंकर** आवाज़ (ध्वनि) सुनाई पड़ना **'रूतदीप्त** होता है।'

बृहत्संहिता (वाराहमिहिर) के अनुसार मनुष्यों ने पूर्वजन्मों में शुभ-अशुभ कर्म किए हैं। गमनादि के समय पक्षी आदि उस कर्म के पाक को प्रकाशित करते हैं; यही शकुन है। अन्य

जन्मान्तर कृत कर्म पुंसां शुभाशुभम् यत् तस्य शकुनः पाकं निवेदयति गच्छताम॥

पुराणानुसार यात्रा के समय श्वेत पुष्पों का दर्शन होना श्रेष्ठ माना गया है। भरे हुए घड़े का दिखाई देना तो बहुत उत्तम होता है। मांस, मछली, दूर का कोलाहल, अकेला वृद्ध पुरुष, पशुओं में बकरे, गाय, घोड़े तथा हाथी, देव प्रतिमा, प्रज्वलित अग्नि, दूर्वा, ताजा गोबर, वेश्या, सोना, चान्दी, रत्न, सरसों आदि औषिधियां, मूंग, आयुधों में तलवार, छाता, शव (जिसके पास कोई रोता न हो), फल, घी, दहीं, दूध, चावल दर्पण, मधु (शहद), शंख, ईख, शुभसूचक वचन, भक्त स्त्री-पुरुषों का गाना बजाना, बादलों द्वारा गम्भीर गर्जन, बिजली की चमक तथा मन का संतोष-ये सब शुभ शकुन हैं। इसके विपरीत यात्रा के समय श्वेत-वस्त्र, स्वच्छ जल, फलों से भरा हुआ वृक्ष, खेत में लगा हुआ काला धान्य, रूई, तृण-मिश्रित सूखा गोबर, धन, अंगार, शिर मुंडा कर तैल लगाया हुआ नग्न साधु, लोहा, कीचड़, बाल, पागल मनुष्य, हिड़ा, चाण्डाल, गर्भिणी स्त्री, विधवा स्त्री मृत्यु, राख, खोपड़ी हड्डी और टूटा हुआ बर्तन युद्ध-यात्रा के समय इनका दिखाई देना अशुभ माना जाता है।

प्रस्थानकाल में यदि मृग आगे-आगे चले, तो ऐसा शकुन प्राणलेवा होता है। चूहा, रीछ, सियार, बाघ, सिंह, बिलाव, गधे-ये यदि प्रतिकूल दिशा में जाते हों, गधा जोर-जोर से रेंकता हो, और कजिजल पक्षी बायीं अथवा दाहिनी ओर स्थित हो तो ये उत्तम माने गए हैं। यात्रा काल में तीतर का दिखाई देना अच्छा शकुन नहीं है। मृग, सूअर और चितकबरे हिरण, ये बाएं होकर फिर दाहिने जाएं तो सदा कार्य साधक माने जाते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कोए उल्लू, कुत्ते एवं गौ आदि के सम्बन्ध में शकुन

यात्रा सम्बन्धी शकुनों के अतिरिक्त अन्य विषयों की जानकारी भी कौये, कुत्ते, गाय, आदि की चेष्टाओं द्वारा जानी जाती है।

- जैसे यदि किसी समुदाय या सेना में बायीं ओर भयभीत कौआ रोता हुआ प्रवेश करे, तो यह ने वाले गम्भीर भय की सूचना है।
- किसी वाहन द्वारा कौए को कुचल डालने पर भावी अपशकुन की सूचना है।
- यदि कौआ किसी देव मन्दिर, राजभवन, किसी गृह के ऊपर, धान के ढेर, घोड़ा, हाथी आदि की पीठ पर अथवा अनाज के खेतों में, जहां अन्न उग रहा हो) बैठा हुआ दिखाई दे तो धन की प्राप्ति होती है।
- यदि कौआ पानी से भरे हुए घड़े पर बैठ कर अथवा दूध या दही के बर्तन पर बैठ कर ध्वनि कर रहा हो, तो स्त्री एवं धन की प्राप्ति होती है।
- यदि किसी शय्या पर बैठकर बोल रहा है तो स्वप्नों का समागम होता है।
- यदि कौआ अपनी चोंच को भूमि को खोदता या तोड़ता हुआ दिखाई दे तो व्यक्ति को अकस्मात् धन लाभ होता है।
- यदि घर में प्रवेश करते समय कौआ बोले तो धन का लाभ होता है।
- यदि प्रस्थान करते समय कौआ सामने आए तो ऐसा शकुन होने से कार्य में असफलता प्राप्त होती है एवं कार्यसिद्धि में सन्देह होता है।
- यदि कौआ आगे बोल रहा हो, तो वह हानि एवं रोगकारक होता है।
- यदि कौआ किसी के दाएं कन्धे पर आ बैठे, तो वह व्यक्ति के लिए मृत्युतुल्य कष्ट का संकेत है, बाएं कन्धों पर बैठने से मानहानि होती है।
- यदि उल्लू सामने की ओर से बोले तो शत्रु भय होता है।
- रात्रि समय गांव से चलते समय उल्लू बाईं ओर दिखाई दे या बोले तो सुख प्राप्त होता है।
- यदि कोई कुत्ता अपने दाएं पांव से पीठ खुजा रहा हो, तो उत्तम सवारी का लाभ होता है। यदि अपने शिर एवं पेट को खुजावे तो धन लाभ होता है।
- यदि कुत्ता बाएं पांव से अपने अंगों को खुजा रहा हो, तो विपरीत फल अर्थात हानि होती है।
- यदि प्रस्थान करते समय बिल्ली मुंह में आहार लिए मिले तो धन लाभ होने की सूचना है।
- प्रस्थान करते समय बिल्ली यदि बायीं ओर तथा प्रवेश करते समय दायीं और मिले तो सभी कार्य सफल होते हैं।
- यदि बिल्ली शीघ्र गति से चल कर घर से बाहर निकल जाए तो रोग एवं शत्रु का नाश होता है।
- यदि दो बिल्लियां परस्पर लड़ती हुई दिखाई दें तो अशुभ फल समझना चाहिए।
- यदि बिल्ली किसी मनुष्य का पांव सूघें तो यह भावी रोगोत्पत्ति की सूचना है।
- यदि प्रस्थान करते समय दायीं तरफ गाय अपने बछड़े की दूध पिलाती हुई दिखाई दे तो धन लाभ एवं सुख की प्राप्ति होती है। यदि गाय बाईं ओर मिले तो हानि होती है।
- यात्रा के समय तीन गाएं सामने दिखाई दें तो अनिष्टफल होने की सूचना है।
- इसी भान्ति मनुष्यों के अंग-स्फुरण से भी शुभाशुभ शकुन का विचार किया जाता है।

शकुन शास्त्र में अंग-स्फुरण का भी बड़ा महत्त्व है। यदि अकस्मात् बिना किसी शारीरिक विकार के अंग-स्फुरण हो तभी उसका शुभाशुभ फल देखना चाहिए।

सामान्यतः पुरुष के दाएं तथा स्त्री के बाएं अंग का फड़कना शुभ फल देने वाला माना जाता है। जैसे पुरुष की दायीं आंख के ऊपर की पुतली तथा स्त्री की बाई आंख की ऊपरी पुतली फड़के तो धन लाभ, मान-सम्मान एवं सौभाग्य में वृद्धि होती है।

- यदि किसी व्यक्ति की दाईं आंख के नीचे की पलक फड़के तो घरेलू एवं व्यावसायिक चिन्ताएं हों।

इसके अतिरिक्त छिपकली, वृक्ष, उल्लू, गर्भवती स्त्री, प्रसव सम्बन्धी शकुन, स्वर सम्बन्धी शकुन, सामुद्रिक चिन्ह, आकाशीय तत्त्वों सम्बन्धी, कृषि आदि शकुन के विषयों का विचार विभिन्न क्षेत्रों में पाया जाता है। बाह्य क्षेत्रों में वैज्ञानिक अनुसन्धानों ने अवश्य अभूतपूर्व उन्नति प्राप्त की है, परन्तु अतीन्द्रिय ज्ञान के क्षेत्र में पशु-पक्षी तथा अन्य प्राणियों के पास मनुष्यों से कहीं अधिक संवेदनशीलता एवं पूर्वाभास की शक्ति पाई जाती हैं। सम्भवतः इसी अतीन्द्रिय ज्ञानशक्ति के कारण समुद्री तूफान आने से पूर्व मछलियां अन्यत्र सुरक्षित स्थान में चली जाती हैं। सूर्य एवं चन्द्र ग्रहणों तथा भूकम्प काल से पूर्व बहुत से प्राणी (पक्षी, वनचर आदि) मौन होकर निश्चल हो जाते हैं।

आधुनिक युग में मौसम-परिवर्तन, भूकम्प, वर्षा, समुद्री तूफान आदि के विषय में पूर्व जानकारी प्राप्त करने के लिए अनेक प्रकार के वैज्ञानिक संयन्त्रों का आविष्कार किया गया है, परन्तु उनका लाभ सामान्य से अधिक नहीं मिल पाता। अनेक बार वैज्ञानिक उपकरण उनका सही पूर्व-आकलन नहीं कर पाते इस के विपरीत ऐसे उदाहरण मिलते हैं कि जब किसी स्थान पर घटित होने वाली प्राकृतिक विनाश लीला का पूर्वाभास वहां के निवासियों एवं पशु-पक्षियों को हो चुका था। इसका प्रत्यक्ष अनुभव हम सोनामी समुद्री तूफान में देख चुके हैं, जहां वहां के जंगली जाति को लोग समुद्री तूफान से पहले ही पलायन कर गए थे।

शास्त्राज्ञानुसार शकुन सम्बन्धी अपशकुन का पूर्वाभास हो जाये तो श्रीमहामृत्युजय का पाठ, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, घृत में छायापात्र दान, कन्यापूजन करना-विशेष रूप से श्रीदुर्गासप्तशी का पाठ करके ही कन्यापूजन करना-शुभ एवं कल्याणकारी रहेगा। इसके साथ ही अन्य अनिष्ट-ग्रहों के निवारण हेतु भी उपाय अवश्य करना शुभ रहेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

॥ अथ नक्षत्रकष्टावलीय ॥

नक्षत्र चरण	चरण १	चरण २	चरण ३	चरण ४	कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदान
अश्विनी १	रोग दिन संख्या ०९	११	१०	२०	अर्ध गात्र पीड़ा वातज्वर निद्राभंग	अश्विनी देवता	घृत कुंभ सुवर्ण ब्राह्मण भोजन	५ हजार	ॐ अश्विनौ तेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्य्यम् वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यो नमः।	कुमकुम, श्वेत चंदन, चम्पक पुष्प तंदुल मोदक नैवेद्य गुड़, क्षीर, कमल पुष्प, धूप तिल दीपः
भरणी २	दि ००	दि ८०	दि ४०	दि ११	छर्दरोग तीव्रज्वर तंद्रा अनेक रोग	यम देवता	शर्करा घृत अजा गौ महिषी, छायापात्र	१० हजार	ॐ यमायत्वा मखायत्वा सूर्य्यस्यत्वा तपसे देवस्यत्वा सवितामध्वा नक्तु पृथिव्या स Ω स्पृशस्पाहिअर्चिरसि शोचिरसि तपोसि ॥२॥	अगर गन्ध करवीरपुष्प गुग्गुल धूप गुड़ोदन नैवेद्य धूप दीप क्षेत्रपाल पूजा
कृतिका ३	दि ००	दि ११	दि १६	दि २८	रक्तनेत्र उरु शूल नेत्र पीड़ा अतिदाह	अग्नि देवता	सुवर्ण गौदान ग्रह शांति	१० हजार	ॐ अयमग्नि सहस्रिणो वाजस्य शांति Ω वनस्पतिः मूर्द्धा कवोरयीणाम् ॥ ३ ॥ अग्नये नमः॥	चन्दन गंध पुष्प नैवेद्य गुग्गुलधूपघृत दीप तिलमाष गुड़ोदन पायस नैवेद्य, दशांग
रोहिणी ४	दि ०७	दि ०९	दि १८	दि ३०	शिर दर्द ज्वर पीड़ा कुक्षिशूल प्रलाप	प्रजापति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्ण गौदुग्धखड	५ हजार	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सूरुचोवेन आवः सबुध्न्या उपमा अस्यविष्टाः सतश्चयोनिमसतश्चविधः ॥४॥ ॐ ब्रह्मणे नमः॥	चन्दन गन्ध पुष्प नैवेद्य अष्टगन्ध दूध मोदक धूप घृत क्षीर नैवेद्य, दीप, दशांग
मृगशिर ५	दि ०९	दि ०५	दि ०७	दि १०	अर्ध शरीर पीड़ा महाघोर कष्ट	सोम देवता	दधितडुलगोवत्सा दान ब्राह्मण भोजन	१० हजार	ॐ सोमोधनु Ω सोमाअवन्तुमाशु Ω सोमोवीरः कर्मणयन्ददाति यदत्यविदध्य Ω सभेयम्पितृ श्रवणयोम ॐ चन्द्रमसे नमः ।५॥	चन्दन गंध सौरभ पुष्प गुग्गुल धूप पायस नैवेद्य मधु घृतदुग्धदध्योदन बलि, दशांग
आर्द्रा ६	दि ००	दि १८	दि ००	दि ००	ज्वर सर्वांगपीड़ा निद्रानाश त्रिदोष	रुद्र देवता	कृष्ण वृषभादि दान कृष्ण वस्त्रादि	१० हजार	ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोत इषवे नमः बाहुभ्यां मुतते नमः॥६॥ ॐ रुद्राय नमः॥	हरिद्रा कुमकुम गन्ध सवन्तिका पुष्प अष्ट गंधतिलपिष्ट धूप नैवेद्य घृत मिष्ठान्न दशांग
पुनर्वसु ७	दि ०७	दि १४	दि ०२	दि २१	अर्ध शरीर पीड़ा शिर पीड़ा ज्वर	अदिति देवता	सुवर्ण कमलदान ५ कन्याभोजनवस्त्र	१० हजार	ॐ अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदिति र्माताः स पिता स पुत्रः विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदितिजातम अदितिरर्जनित्वम् ॥७॥ ॐ आदित्याय नमः॥	कुंमकुम गंध वारिज पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य मोदक गुडबलि पीत वर्णान्न
पुष्य ८	दि ०७	दि ०७	दि १०	दि २१	ज्वर पीड़ा शूल अतिकठिन रोग	बृहस्पति देवता	पीत वस्त्र सुवर्ण गौदान पक्वान्नदान	१० हजार	ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यदी दयच्छ वसऋतप्रजातदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम् ॥ ॐ गुरवे नमः ॥	कुमकुम अगर गंध अगस्त पुष्पघृतगुग्गुल धूपक्षीर नैवेद्यदध्योदन, शक्कर बलिदानम्
आश्लेषा ९	दि ००	दि ००	दि ११	दि ००	सर्व गात्र पीड़ा मृत्युतुल्य कष्ट	सर्प देवता	कुलमातृ योगिनी पूजा गोशय्यादान	१० हजार	ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्योये के च पृथिवीमनुः। ये अन्तरिक्षे यो दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥९॥ ॐ सर्पेभ्यो नमः	चन्दन गन्धचम्पक पुष्प गुग्गुल घृतधूप क्षीर मिष्ठान्नहविनैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि कुंकुम,
मघा १०	दि १५	दि ०७	दि १७	दि २०	अर्धगात्र पीड़ा शीत जन्वरोगभय शिर पीड़ा	पितर देवता	तिल तंडुलमाष वस्त्रदान	१० हजार	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वाधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्न पितरोऽमीमदन्तः पितरोतितृपन्त पितरःशुन्धध्वम् ॥१०॥ ॐ पितरेभ्ये नमः॥	चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प गुग्गुल धूप घृत मिष्ठान्नहविनैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि, दीप, नैवेद्य, दीपादि
पूर्वाफाल्गुनी ११	दि ००	दि १५	दि ००	दि ३०	सर्वगात्रे पीड़ा ज्वर अर्धशिररोग	भग देवता	पित्तल पात्र यव माष गोरवर्णदान	१० हजार	ॐ भगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगे मां धियमुदवाददन्नः। भगप्रजननाय गोभिरश्वैर्भगप्रणेतृभिर्नुवन्तः स्यामः ॥११॥ ॐ भगाय नमः॥	चन्दन गंध चम्पक पुष्पगुग्गुलघृतधूप शर्करामोदक पूपोदन घृत पायसनैवेद्य बिल्व
उत्तरा फाल्गु. १२	दि ००	दि १४	दि ०७	दि ६०	शिर रोग महाज्वर कुक्षिशूलरोग	अर्यमा देवता	सुवर्णरजत अन्न गो वस्त्र दान	५ हजार	ॐ दैव्या वद्धर्व्यू च आगत Ω रथेन सूर्य्यत्वचा। मध्वायज्ञ Ω समञ्जायेत प्रत्नया यं वेनश्चित्रं देवानाम् ॥१२॥ ॐ अर्यमणे नमः॥	कपूरकुंकुमगंध अर्कपुष्पघृत गुग्गुल धूप घृतपायसनैवेद्य घृतान्नहोम केशर गंध
हस्त १३	दि १५	दि १७	दि १५	दि ००	सर्वाङ्ग पीड़ा उदर शूल प्रस्वेद अफारा	सविता देवता	गोदानछाया पात्र रक्तवस्त्र सुवर्ण	५ हजार	ॐ विभ्राडबृहन्पिवतु सोम्यं मध्वार्य्युदधज्ञ पत्त व विहुतम् वातजूतोयो अभि रक्षतित्मना प्रजा पुपोषः पुरुधाविराजति ॥ ॐ सावित्रे नमः॥	कुकुमरक्तचन्दन गंध कमल पुष्पसुगन्ध गुग्गुलधूपः घृत पायसनैवेद्य दीप, केशर
चित्रा १४	दि ११	दि ०९	दि ०९	दि १६	विविधरोग भय महादारुण कष्ट	त्वष्टा देवता	विचित्रवृषभ गुड़ तिल छाया पात्र	५ हजार	ॐ त्वष्टातुरीयो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदापदायाः छन्द इन्द्रियमुक्षा गौत्र वयोदधुः ॥१४॥ त्वष्ट्रेनमः ॥ ॐ विश्व कर्मणे नमः॥	कुंकुम दीप अगरगन्ध विचित्र पुष्पगुग्गुल धूपमोदक घृत विचित्रान्नहविनैवेद्य, केशर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नक्षत्र चरण	चरण १	चरण २	चरण ३	चरण ४	कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदान
स्वाती १५	रोग दिन संख्या ६०	१७	३०	००	अनेक तरह के रोग ज्वर, कष्ट	वायु देवता	लाल गो सुवर्ण पक्वान्न दान	५ हजार	ॐ वायरन्नरदि बुधः सुमेध श्वेतः सिषीक्तिनो युतामभि श्री तं वायवे सुमनसा वितस्थुर्विश्वेनरः स्वपत्न्या निचक्रुः ॥१५॥ ॐ वायवे नमः॥	चन्दनगंध कमल पुष्प अगर गुग्गुल धूप, दीप पायस शर्करा घृत नैवेद्य।
विशाखा १६	दि १५	दि ००	दि ०४	दि १३	कुक्षिशूल रोग सर्व गात्र पीड़ा	इन्द्राग्नी देवता	रक्त पीत वस्त्र कृष्णवृषभ दान	१० हजार	ॐ इन्द्राग्नी आगत Ω सुतं गार्भिर्नभो वरेण्यम्। अस्य पातं धियोषिता ॥१६॥ ॐ इन्द्राग्नीभ्यां नमः॥	श्री खण्ड चन्दन गंध कमल पुष्प देवदारु धूपघृत पायस नैवेद्य, दीपक केशर।
अनुराधा १७	दि ६०	दि १२	दि ३६	दि ३०	तीव्र ज्वर महारोग शिर पीड़ा	मित्र देवता	अन्न सुवर्ण गो दान छायापात्र	१० हजार	ॐ नमो मित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृत Ω सपर्यत दूरंदृशे देव जाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्योयश Ω सत ॥१८॥ ॐ मित्राय नमः॥	कुंकुमगंध कमल पुष्प चन्दन धूपः पायस घृत पुष्प मोदक नैवेद्य, केशर, गंध।
ज्येष्ठा १८	दि ५९	दि ०९	दि ०६	दि ०४	पित्तरोग शरीर कांपना व्याकुलता	इन्द्र देवता	सुवर्ण नील वस्त्र तैल छायापात्रदान	५ हजार	ॐ त्रातारमिंद्रमवितारमिंद्र Ω हवे हवेसुहव Ω शूरमिंद्रम् वहयामि शक्रं पुरुहूतमिंद्र Ω स्वास्ति नो मघवा धात्विन्द्रः। ॐ इन्द्राय नमः॥	चन्दन गंध सुगंध पुष्प कपूर धूप विचित्रान्न नैवेद्य, चम्पा पुष्प पायस, नारियल।
मूला १९	दि ००	दि ०९	दि १५	दि ०६	ज्वरशूलसन्निपात महाकठिन रोग	निर्ऋति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्णगोछायापात्र	५ हजार	ॐ मातेवपुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्निं Ω स्वयोनावभारुषा तां विश्वेदेवऋतुभिः संविदानः प्रजापति विश्वकर्मा विमुञ्चत। ॐ निर्ऋतये नमः॥	कृष्ण अगर गंध नील पद्म पुष्प कृष्ण अगर धूप मिष्ठान्नहवि माष नैवेद्य।
पूर्वाषाढ़ा २०	दि ००	दि १५	दि २४	दि १०	शरीरपीड़ा कंपरोग शिररोग महाकष्ट	जल देवता	श्वेतवस्त्रतंडुलसु-वर्णजलकुंभ	५ हजार	ॐअपाघ मम कील्वषम पकृल्यामपोरपः अपामार्गत्वमस्मद यदुः स्वपन्य-सुवः ॥२०॥ ॐ अद्भ्यो नमः॥	चन्दनगन्ध पद्म पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य।
उत्तराषाढ़ा २१	दि ३०	दि २४	दि २६	दि १६	कटिपीड़ा प्रलाप उदर शूलरोग युक्त	विश्वेदेवा देवता	ब्राह्मण भोजन अन्न सुवर्ण दान	१० हजार	ॐ विश्वे अद्य मरुत विश्वऽउतो विश्वे भवत्यग्नयः समिद्धाः विश्वेनोदेवा अवसागमन्तु विश्वेमस्तु द्रविणं बाजो अस्मै ॥२१॥	चन्दन गंध मालती गुग्गुल पुष्प पायस नैवेद्य।
श्रवण २२	दि ६०	दि २४	दि ०६	दि ०९	वातापित्तकफरोग अतिसारसर्वगात्रपी	गोविन्द देवता	सुवर्णगेदानब्राह्मणभोजनछायापात्र	१० हजार	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो श्नपत्रेस्थो विष्णो स्युरसिविष्णो ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥२२॥ ॐ विष्णवे नमः॥	चन्दन गंध मालतीपुष्प कपूर गुग्गुल धूप ओदन पायस षडरम नैवेद्य।
धनिष्ठा २३	दि १५	दि २	दि २०	दि २१	मूत्रकृच्छ ज्वर रक्त अतिसार कंपरोग	वसु देवता	छत्री जूता सुवर्ण गोछायापात्रदान	१० हजार	ॐ वसोःपवित्र मसि शतधारंवसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वासविता पुनातुवसोः पवित्रेणशतधारेण सुप्वाकामधुक्षः। ॐ वसुभ्यो नमः॥	अगर गंध कमल पुष्प अगर धूप धृत पायस नैवेद्य, दीपक, ताम्र बर्तन।
शतभिषा २४	दि ००	दि ४५	दि ०३	दि २२	वायु रोग से भय सन्निपातज्वरपीड़ा	वरुण देवता	तिलसुवर्ण घृत तैल अजागोदान	१० हजार	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कुं भसर्जनी स्थोवरुणस्य ऋत सदन्य सि वरुण स्यऋतमदन ससि वरुणस्यऋतसदनमसि। ॐ वरुणाय नमः॥	कुकम अगर गन्ध कमल पुष्प अगर धूप घृत धूप नैवेद्य।
पूर्वाभाद्र--पद २५	दि ००	दि १२	दि २१	दि १९	सर्वगात्रपीड़ाछर्दी चिन्ताव्याकुलता	ऽजेकपाद देवता	सुवर्ण रजतश्वेत वस्त्र घृत दुग्ध	५ हजार	ॐ उतनाऽहिर्बुध्न्यः शृणोत्वज एकपापृथिवी समुद्रःविश्वे देवा ऋता वृधो हुवाना स्तुतामंत्राः कविशस्ता अवन्तु॥ ॐ अजैकपदे नमः॥	कुंकुम चन्दनगन्धश्वेतार्क पुष्प सर्वोषधी मिश्र धूप दधि पायस नैवेद्य।
उत्तराभा--द्रपद २६	दि १०	दि २०	दि ०९	दि १५	कामलारोगअतिसा ज्वरवायुशूलभ्रम	अहिर्बुध्न देवता	रजत कृष्ण वस्त्र तिल सुवर्ण दान	१ हजार	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तो पिता नमस्तेऽस्तुमामाहि Ω सो निवर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननायर रायम्पोषाय (सुप्रजास्वाय ॥२६॥) ॐ अहिर्बुधाय नमः॥	कपूरचन्दनगन्ध पद्म पुष्प विल्व गुग्गुल धूप दधि पायस नैवेद्य।
रेवती २७	दि १८	दि १०	दि ०९	दि २०	वातपित्तज्वर भ्रम उरू शूलपीड़ा	पूषा देवता	पित्तल पात्र रक्त वृषभवस्त्रछायापात्र	१० हजार	ॐ पूषन् तव व्रते वय नरिष्येभ कदाचन। स्तोतारस्तेइहस्मसि ॥२७॥ ॐ पूष्णेनमः॥	रक्त चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प घृत गुग्गल धूप घृत पायस नैवेद्य।

रोग-त्रिनाड़ी चक्र

आर्द्रा	पूफा	उफा	अनु	ज्ये०	धनि	शत०	भरणी	कृत्ति
पुर्न	मघा	हस्त	विशा	मूला	श्रव०	पूभा	अश्वि	रोहि
पुष्य	आश्ले	चित्रा	स्वाती	पूषा	उषा	उभा	रेवती	मृग

मंगलवार १।६।११ तिथि कृत्तिका नक्षत्र। बुधवार २।७।१२ तिथि आश्लेषा नक्षत्र। गुरुवार ३।८।१३ तिथि मघाहस्तनक्षत्र। शुक्रवार ४।९।१४ तिथि आर्द्रा धनिष्ठा नक्षत्र। शनिवार ५।१०।१५ तिथि भरणीनक्षत्र। इन तीन योगों में रोग का प्रारम्भ हो तो मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट जानना। (रोग के दिन नक्षत्र से नाम का नक्षत्र ५।१४।२३ संख्या पर काल का मुंह होता है और १०, १८वें नक्षत्र काल की दंष्ट्र (दाढ़) होती हैं, मुख वा दंष्ट्रा में जिस दिन नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यंत रोगग्रसित पुरुष की मृत्यु तुल्य कष्ट जानना। सूर्य जिस नक्षत्र में हो, वह नक्षत्र, चन्द्र नक्षत्र और नाम का नक्षत्र जिस दिन एक नाड़ी में हो उसी दिन असाध्य रोगी की मृत्यु जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

।। अथ बालकष्टावली पूतना विधान ।।

मंत्र को २१ बार पढ़कर सात बार रूग्ण बालक के सिर पर घुमाकर चौरस्ते (चौराहे) पर मौन होकर रख आवे॥

जन्म से			पूतना नाम	ग्रसित लक्षण	मूर्तिद्रव्य	बलि द्रव्य तथा समय	धूप	मन्त्र
दि ०१	मा १	व ०१	१ योगिनी २ मातृका ३ नंदिनी	ज्वर गात्रशोष अनाहार वमन मूर्छा कांपना हीन ज्वर उदर पीड़ा	नदी का मिट्टी का पुतला ३ दिन विधान	उबले चावल सफेद चंदन का लेप सफेदफूल ध्वजा ५ चिलिड़ियां (पूड़े) ५ दीपक ५ प्रातः समय पूर्व दिशा में तीन दिन बलि देवे।	सरसों बालछड़ आक बिल्वपत्र तिल्ली और मनुष्य के केश नीम घी का धूप	ॐ नमो भक्तवत्सले मोचिनी स्वाहा
दि ०२	मा ०२	व ०२	१ सुनंदिनी २ योगिनी ३ स्तनदा	ज्वर हाथ पांव संकोचदांतो का पीसना आँखें मीचना ज्वरादि रोदन आँखें दुखना	सेर चावल की पीठी का पुतला ३ दिन दिन विधान	उबले चावल सेर पर आटे के पूड़े मच्छी और बकरे का मांस ध्वजा १३ दीपक १३ पश्चिम दिशा में सन्ध्या समय ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत् सब वस्तुओं का धूप देना	ॐ नमो भगवती स्वाहा
दि ०३	मा ०३	व ०३	१ पूतना	ज्वर कम्प न प्रलाप अरुचि आँखें मीचना वमन रोमांच	पूर्ववत मूर्ति	लाल चावल लाल ध्वजा लाल चन्दन लालफूल सायंकाल उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग और सांप की कांचली का धूप देना	ॐनमो भगवती स्वाहा
दि ०४	मा ०४	व ०४	१ मुखमंडिका २ आकाशयोगिनी	ज्वर गात्र भग आंखमीचना शिर झुकाना श्वास श्याम ता अरुचि नींद न आना	चावल के चूर्ण का पुतला विल्व के कांटे से रेखा	सफेद चंदन का लेप सफेद फूल सफेद ध्वजा सेर भर आटे के पूड़े तीनों सन्ध्या समय पश्चिम दिशा में बलि ३ दिन देवें।	लहसन नीम के पत्ते मनुष्य के और बिल्ली के बाल गो घृत धूप देना।	ॐ नमो पूतने मातवीर्लि भक्ष सुशोभने बालंकमु वंसुयोगेन बलिदाने नहर्षयेत्
दि ०५	मा ०५	व ०५	विडालिका	ज्वर हिक्का श्वास शूल गात्र संकोच अरुचि उदर पीड़ा	सेर भरचावलों की पीठी का पुतला	उबले चावल ध्वजा ५ दीपक ५ सफेद चन्दन सफेद फूल अपरान्ह के समय वृक्ष के मूल में पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत धूप देना	ॐ सुभगे सुभलेदेवि सर्व शत्रु निवारिणी। कुरु शांति शिशोः स्वस्थं जीव दानेन राक्षसि
दि ०६	मा ०६	व ०६	शकुनी	ज्वर गात्र संकोच अरुचि श्वास लेने में कठिनाई उदर पीड़ा	सेर चावलों की पीठी का पुतला बनाना	कृष्णोदन ध्वजा ५ दीपक ५ काले फूल मच्छी का मांस बकरे का मांस पायस दूध आधसेर आटे को पूड़े अपरान्ह पश्चिमदिशा में तीन दिन बलि देवे	कूठ गुग्गुल सफेद चन्दन सरसों हाथी का दांत गो घृत धूप देना।	ॐ राक्षसि त्व महाभागे बालमुंच शुभानने। क्षेम कुरु जगत्य स्मिन् शोभावान वरं कुरु
दि ०७	मा ०७	व ०७	शुष्करेवती	ज्वर देह संकोच अरुचि कांपना रोदन करना	पूर्ववत मूर्ति	सफेद ध्वजा ७ दीपक ७ सफेद फूल सफेद चंदन सायंकाल पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गो श्रृङ्ग और लहसन से पूर्ववत धूप देना।	ॐ नमो पद्मपत्राक्षि विशालाक्षि बन शिव। सगृहीं बलि माषञ्च बाले मुँच सुशोभने।
दि ०८	मा ०८	व ०८	विडालिका	ज्वर गात्र संकोच आँखें मीचना रोना जिव्हाशोष शिर पीड़ा अरुचि	पूर्ववत मूर्ति	पायस (खीर) दूध घी लाजा मध्यान्ह व पूर्व संध्या समय दक्षिण दिशा में ३ दिन बलि देवे	गुग्गुल में घृत मिलाकर उपरोक्त धूप देना।	ॐ नमो सर्व भूतेषि शोभने त्वं पिशाचिनी। बलिचैवा सुरी कृत्य त्वरितं मुंच बालकम्
दि ०९	मा ०९	व ०९	मनोन्मत्ता	ज्वर वमन तृष्णा श्वास अफारा देह संकोच उदर शूल	पूर्ववत मूर्ति	उबले चावल मच्छी का मांस पापड़ गन्ना संध्या समय उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग को घृत में घिसकर पूर्ववत धूप देना	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय हुं फट स्वाहा।
दि १०	मा १०	व १०	रेवती	ज्वर वमनाकास श्वास पीड़ा	पूर्ववत मूर्ति	गुड़ उबले चावल घी ध्वजा २५ पूड़े २५ लालफूल २५ सफेद फूल ४४ संध्यासमय दक्षिण में ३ दिन बलिदेवे	गोश्रृङ्ग लहसन को घृत में मिलाकर धूप देना।	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय फट स्वाहा।
दि ११	मा ११	व ११	सुदर्शना	ज्वर अरुचि मुखशोष गात्र पीड़ा रोदन	माष उड़द की पीठी	उबले चावल सफेद चंदन लेपन सफेद फूल ध्वजा २५ दीपक २५ पूड़े २५ बलि संध्या समय दक्षिण दिशा में बलि देवे।	पूर्ववत धूप देना	ॐ नमो भगवते रावणाय चंद्रहास वज्रहस्ताय ॐ हुं फट स्वाहा।
दि १२	मा १२	व १२	अद्भुता	ज्वर रोदन पसीना आँखें दुखना सन्ताप रोमांच शरीर पीड़ा	सेर चावल की पीठी का पुतला	ध्वजा १३ पूड़े मच्छी का मांस बकरे का मांस पापड़ संध्या समय दक्षिण में ३ दिन बलि देवे	गो श्रृङ्ग को घृत में घिस कर पूर्ववत धूप देना।	ॐनमो नारायणाय प्रज्वल २ ताप हर २ शोषय २ मर्दय २ हन दुष्टान् हुं फट स्वाहा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर्षफल बनाने की सारिणी (सूर्य सिद्धान्तीय)

वर्ष	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वार	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३
घड़ी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
वार	०४	०५	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६
घड़ी	४३	५९	१४	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६
पल	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१३	४३	१५
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
वार	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३
घड़ी	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	३१	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४
पल	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६
घड़ी	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	४३	१७	३२	४८	०३	१९	३४	५०	०५	२१	३६	५२
पल	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	३०	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष फल साधन

जिस संवत् या वर्ष का वर्ष लग्न निकालना हो, उस संवत् में से जातक के जन्म का सम्वत् घटाने से जो वर्ष शेष बचेंगे वह **गतवर्ष** होंगे फिर वर्षफल सारणी में गत वर्षों के नीचे लिखे वार, घड़ी पलादि के ध्रुवांक को जातक के जन्म, वार, घड़ी, पलादि में जमा कर लेने पर आगामी वर्ष का वार एवं वर्षेष्ट काल निकल आएगा। अब इस वर्षेष्ट को स्थानिक लग्न सारणी की सहायता से जन्म लग्न की भान्ति ही वर्ष लग्न ज्ञात कर सकते हैं। फिर वर्ष प्रवेश के वर्षेष्ट अनुसार ही ग्रहस्थापना कर लेंवे। उदाहरण सहित इसका स्पष्टीकरण हमारी प्रकाशित **वर्षफल चन्द्रिका** में पढ़ें।

मुन्था—जन्म लग्न राशि की संख्या में से गतवर्ष की संख्या को जोड़कर जो योगफल आए, उसे १२ से भाग देकर जो संख्या शेष रहे, उसी राशि अंक पर मुंथा स्थापित करनी चाहिए। **मुन्था जन्म** लग्न से प्रति वर्ष एक राशि आगे चलती है।

त्रिपताकी चक्र—त्रिपताकी का **चन्द्रमा** निकालने के लिए वर्ष प्रवेश की संख्या को ९ द्वारा भाग दें। जो शेष बचे जन्मकुण्डली में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित है, उससे आगे उतने भाव गिनकर प्राप्त राशि अंक पर चन्द्रमा लगावें। शेष ग्रहों के लिए वर्ष प्रवेश संख्या में ४ द्वारा भाग दें। शेष को जन्मस्थान के ग्रहों से जहां वे स्थित हैं, उतना आगे गिनकर चक्र में लिखें।

मुद्दा दशा निकालना—गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें से दो घटावें, ९ द्वारा भाग देने से जो शेष बचे तदनुसार दशा जाननी चाहिए। यदि १ बचे तो **सूर्य** की, २ बचें तो **चन्द्रमा**, ३ बचें तो **मंगल**, ४ से **राहु**, ५ बचें तो गुरु, ६ बचें तो **शनि**, ७ से **बुध**, ८ से केतु, ९ अथवा ० बचे तो शुक्र की दशा जाननी चाहिएं।

मुद्दा दशा के दिनादि—सूर्य के १८ दिन, **चन्द्रमा** के ३०, **मंगल** के २१ दिन, **राहु** के ५४ दिन, **गुरु** के ४८ दिन, **शनि** के ५७ दिन, **बुध** के ५१ दिन, **केतु** के २१ दिन तथा **शुक्र** के ६० दिन **मुद्दा दशा में होते हैं।**

स्थानबल—सूर्य वर्ष लग्न से ९वें, चन्द्रमा ३रे, मंगल ६ठे, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५, शनि १२वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वभोच्चबल—सूर्य १।५, चन्द्रमा २।४, मंगल १।८।१०, बुध ३।६, बृहस्पति १२।४, शुक्र २।७।१२, शनि १०।११।७—इन राशियों में ५ बल देते हैं।

पुरुष-स्त्री ग्रहः—स्त्री ग्रह लग्न से १।२।३।७।८।९, घरों में ५ बल देते हैं और पुरुषग्रह लग्न से ४।५।६।१०।११।१२ घरों में ५ बल देते हैं। दिन के समय पुरुष ग्रह तथा रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
सू.	शु.	श.	शु.	बृ.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.	दिनपति
बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.	रात्रिपति

वर्ष लग्न की जो राशि हो उसकी ऊपर की पंक्ति में राशि के सामने देखो और उसके नीचे यदि इष्ट दिन का हो तो दिनपति के सामने रात्रि का हो तो रात्रिपति के सामने और वर्ष लग्न की राशि के नीचे जो ग्रह हैं वही त्रिराशिपति होगा।

वर्ष कुण्डली में दृष्टि चक्र

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
प्रत्यक्ष मित्र	५–९	५–९	५–९	५–९	५–९	५–९	५–९
गुप्त मित्र	३–११	३–११	३–११	३–११	३–११	३–११	३–११
प्रत्यक्ष शत्रु	१–७	१–७	१–७	१–७	१–७	१–७	१–७
गुप्त शत्रु	४–१०	४–१०	४–१०	४–१०	४–१०	४–१०	४–१०

वर्ष कुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो वह उस भाव से पांचवें और ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। तीसरे ग्यारहवें गुप्तमित्र दृष्टि से, पहले सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से और ४-१० गुप्त शत्रु दृष्टि से देखते हैं।

(१) प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि शुभ और बलवान् होती है। (२) गुप्त मित्र दृष्टि सम है। (३) गुप्त शत्रु दृष्टि अशुभ है। (४) शत्रु दृष्टि अशुभ है।

दृष्टि फल

प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि—इस का फल कार्य में शीघ्र सफलता, सम्बन्धियों से सुख-प्रेम और लाभ इत्यादि इस से जिन मनुष्यों के साथ पहिले शत्रुता होती है उन से प्रेम उत्पन्न होता है तथा नए सम्बन्ध स्थापित होते हैं।

गुप्त शत्रु दृष्टि—यह प्रत्यक्ष दृष्टि से कुछ कम फलदायक है। अर्थात् कार्य बड़ी कठिनता से सफलता को प्राप्त होता है, यह प्रत्यक्ष रूप में सहायता करने वाली होती है, परन्तु गुप्त रूप से शत्रुता करने वाली होती है।

गुप्त मित्र दृष्टि—इसका फल प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से कम होता है। यह भी कार्य में सफलता व लाभदायक है, परन्तु प्रत्यक्ष भाव से नहीं, गुप्त भाव से सफलता व कार्य सिद्ध होता है।

प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि—इसका फल शत्रुता उत्पन्न करना, बनता कार्य बिगाड़ना, मित्र से वैर, धन हानि, मानसिक परेशानी, निकट बंधुओं से मन-मुटाव इत्यादि हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वेध-सिद्ध नवीन मतानुसार वर्ष प्रवेश सारिणी

एक सौर वर्ष में सूर्य द्वारा उसी राशि, अंश, कला, विकला पर घूमकर पुनः जितना समय लगता है, उसकी अवधि (Duration) के सम्बन्ध भिन्न-भिन्न मत पाए जाते रहे हैं। ''सूर्य सिद्धान्तानुसार'' उक्त समय ३६५ दिन, १५ घड़ी, ३१ पल ३० विपल है, जबकि आधुनिक वेधशालाओं द्वारा प्रमाणित यह समयावधि ३६५ दिन, १५ घड़ी २२ पल और साढ़े ५३ विपल होते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग ८ ।३० पल अथवा ३ मिन्ट २७ सेकिण्ड का अन्तर पाया जाता है। प्रत्येक शताब्दि (वर्ष) यह अन्तर बढ़ता जाता है। फलस्वरूप वर्ष प्रवेश इष्ट एवं कभी-कभी एक-दो लग्नों का भी अन्तर पड़ जाता है। गत पृष्ठों में हमने सूर्य सिद्धान्तानुसार वर्ष सारिणी पहिले की भान्ति ही दी हुई है। अब आजकल कुछ विद्वान नवीन वेधसिद्ध वर्ष सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। इससे फलादेश में भी अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। अधिक जानकारी हेतु हमारे ज्योतिष कार्यालय से **'वर्षफल चन्द्रिका'** लेखक पण्डित पन्ना लाल गणितकर्त्ता (संशोधित संस्करण) मंगवा कर पढ़ें। यद्यपि परम्परानुगामी सूर्य-सिद्धान्तीय वर्ष सारिणी का ही प्रयोग कर रहे हैं।

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२५	४८	११	३४	५७	२०	४३	६	२९	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५४	१७	४०	३	२६
विपल	५३	४६	३९	३२	२५	१८	११	०४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	८	०१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०
गताब्द	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	५	२१	३६	५२	७	२२
पल	४९	१२	३५	५८	२०	४३	६	२९	५२	१५	३८	१	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३
विपल	२३	१६	९	२	५५	४८	४१	३४	२७	२०	१३	६	५९	५२	४५	३८	३१	२४	१७	१०	०३	५६	४९	४२	३५	२८	२१	१४	७	०
गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	२	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२५	४१	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०२	१८	३३	४८	०४
पल	१५	३८	१	२४	४७	१०	३३	५६	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६	५९	२२	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४७	१०	३३	५६	१९
विपल	५३	५६	३९	३२	२५	१८	११	४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	८	१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०

वर्ष कुण्डली में मुंथा का महत्त्व

वर्ष कुण्डली में नवग्रहों के समान मुंथा की भी स्थापना की जाती है। मुंथा यद्यपि कोई ग्रह नहीं है, तो भी इसका फल ग्रह के समान ही महत्त्वपूर्ण है। मुंथा जन्म लग्न से प्रति वर्ष एक-एक राशि आगे चलती है। वर्ष कुण्डली में ४, ६, ७, ८ एवं १२वें भाव में स्थित मुंथा अशुभ फलदायक होती है। यदि ४, ६, ७, ८, १२वें भाव में शुभ ग्रह युक्त हो तो इतनी अधिक अनिष्टकारी नहीं होती। लग्नादि द्वादश भावों में मुंथा का फल इस प्रकार होगा—(१) **लग्न भाव में मुंथा** स्थित हो तो उस वर्ष शत्रुओं का नाश, भाग्य में वृद्धि, सवारी का सुख, यदि चर राशि में हो तो स्थान परिवर्तन के भी योग बनते हैं। (२) **द्वितीय भावस्थ मुंथा** हो तो कठिन परिश्रम द्वारा धन लाभ एवं धन प्राप्ति के साधन बनते हैं। मनोरंजन एवं सुख साधनों पर व्यय भी बढ़ता है। (३) **तृतीय भावस्थ मुंथा** होने से शत्रुओं का नाश, भाइयों, मित्रों या उच्च पद प्राप्त महानुभावों का सहयोग प्राप्त होता है। (४) **चतुर्थ भावस्थ मुंथा** शरीर कष्ट, वायु विकार, अपने-परायों से विरोध, गुप्त चिन्ताएँ, नौकरी और व्यवसाय में अनेक प्रकार के विघ्न, स्थान परिवर्तन आदि अशुभ फल घटित होते हैं। (५) **पंचमस्थ मुंथा** अत्यन्त शुभ फल देने वाली होती है। सर्विस अथवा व्यापार में लाभ, धन, पुत्र एवं विद्या का लाभ, नए उद्योग से सफलता मिले। (६) **षष्ठस्थ मुंथा** हो तो शरीर कष्ट, शत्रुओं का भय, चित्त में अशान्ति, नानके पक्ष को हानि, स्वभाव में चिड़चिड़ापन रहता है। (७) **सप्तमस्थ मुंथा** अशुभ रहती है। स्त्री अथवा निकट बन्धुओं की ओर से कलह-क्लेश, परिवारिक सदस्यों को कष्ट, बने बनाए कार्य बिगड़ना आदि अशुभ फल घटित होते हैं। (८) **अष्टमस्थ मुंथा** होने से आशाओं में निराशा, पेट तथा अन्य गुप्त रोगों का भय, स्थान परिवर्तन, अनावश्यक यात्राओं तथा स्वास्थ्य पर भी अपव्यय होता है। (९) **नवमस्थ मुंथा** उत्तम फल देती है। नौकरी में पदोन्नति अथवा व्यवसाय में लाभ-वृद्धि, परिवारिक सुख एवं भाग्योन्नति होती है। (१०) **दशमस्थ मुंथा** होने से आर्थिक लाभ, सरकारी क्षेत्र में यदि कोई कार्य रुका होगा तो पूरा होगा (अर्थात् लाभ होगा) तथा सोचे हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। (११) **ग्यारवें भाव में मुंथा** होने से धन लाभ सुख-प्राप्ति, व्यापार और क्रय-विक्रय के कार्यों से लाभ होगा। (१२) **द्वादशस्थ मुंथा** आने से नया व्यापार तथा यात्रा करने से हानि, स्थान परिवर्तन के योग बनेंगे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

वेध सिद्ध शुद्ध वर्ष प्रवेश सारिणी (घण्टा-मिनटों में)

सूर्य सिद्धान्तानुसार 365 दिन, 15 घटी, 31 पल, 30 विपलों में—अर्थात् 365 दिन, 6 घण्टे, 12 मिनट एवं 36 सैकिंडों में सूर्य पुनः उसी स्थान या बिन्दु पर आ जाता है। जबकि नवीन एवं आधुनिक अनुसंधानों से यह सिद्ध हो चुका है कि सूर्य (पृथ्वी) को पुनः उसी बिन्दु पर आने में 365 दिन, 6 घण्टे, 9 मिनट एवं 9 सैकिंड लगते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग साढ़े तीन मिनटों अर्थात् 3 मिनट 27 सैकिंड (प्रतिवर्ष) का अन्तर पड़ता है तथा वर्षमान सारिणी में यह अन्तर प्रतिवर्ष बढ़ता जाता है। 40 वर्षों के अतराल में यह अन्तर 2 घण्टे 18 मिनट का हो जाएगा। जिससे प्राचीन सूर्य सिद्धान्तीय सारणी से एक/दो लग्नों का अतर हो जाना स्वाभाविक है।

आजकल अधिकांश ज्योतिषी वेध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। आधुनिक कम्पयूटर प्रणाली द्वारा भी नवीन वर्ष प्रवेश सरिणी का ही अनुमोदन किया जाता है। गत वर्षों से पंचांग दिवाकर में नवीन सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी घड़ी/पलात्मक में दे चुके हैं। आगे वेद्ध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष-प्रवेश सारिणी घण्टा/मिनटों में दे रहे हैं। **वर्ष-लग्न** निकालने के लिए इसका प्रयोग **और भी अधिक सरल** है।

	वार	घंटे	मिनट
जन्म वार समयादि	4	5	30
सारिणी से प्राप्त संख्या	+ 3	22	44
	8	28	14
अर्थात् (रविवार)	1 वार	4	14

प्रस्तुत सारिणी की प्रयोग विधि— आपको जिस साल का वर्ष प्रवेश ज्ञात करना हो, उस वर्ष में से जन्म वर्ष निकाल देने से हम **गताब्द** अर्थात् गतवर्ष मिलेंगे। गतवर्ष के सामने के वार एवं घंटा/मिंट को अपने जन्म वार एवं जन्म समय (स्टैं. टा.) में जमा कर देने से हमें नववर्ष प्रवेश कालीन वार एवं घण्टा-मिनट भा. स्टैं. टाईम में मिल जाएगा। नववर्ष प्रवेश स्टैं. घंटा/मिंट को दैनिक लग्न में देखने से हमें लग्न ज्ञात हो जाएगा। **ध्यान रहे**, सारिणी में जमा करने से जोड़ यदि 24 घं. से अधिक आ जाए, तो उसमें से 24 घटा दें, तथा 1 वार जमा कर लेवें। वार की गणना रविवार से की जाती है।

उदाहरण— मान लो किसी जातक का जन्म 2 अक्तूबर, 1974 ई० में, बुधवार की प्रातः साढ़े पाँच (5/30) बजे हुआ। यदि हमने उस जातक का सन् 2005 ई. की वर्ष कुण्डली तैयार करनी है, तो 2005 ई. में से जन्म वर्ष घटा देने पर हमें 31 गतवर्ष प्राप्त हुए। आगे दी गई वर्ष प्रवेश सारिणी में गतवर्ष 31 के सामने हमें 3 वार, 22 घण्टे एवं 44 मिनट मिले। इनको जातक के जन्मवार एवं जन्म समय (5/30) में जमा कर देने से हमें 7 वार 28 घण्टे, 14 मिनट प्राप्त हुए। अब 28 घण्टों में से 24 घं. घटा देने और 1 वार बढ़ा देने से हमें 8 वार अर्थात् रविवार की प्रातः 4 बजकर, 14 मिनट प्राप्त हुए।

जन्त्री/पंचाँग में दी गई दै. लग्न सारिणी से देखने पर 1 अक्तू. की मध्य रात्रि एवं 2 अक्तू. की प्रातः 4 बजकर 14 पर हमें **सिंह वर्ष लग्न** प्राप्त हुआ। वर्ष लग्न सिंह में सं. २०६२ की पंचांग से 2 अक्तू. 2005 ई. प्रातः 4/14 स्टैं. टा. के ग्रह स्थापन करके हमें नववर्ष प्रवेश की कुण्डली प्राप्त होगी। मुंथा लगाने के लिए जातक के जन्म लग्न राशि में गतवर्ष जमा करके प्राप्त संख्या को 12 से भाग देने जो संख्या शेष बचे उसी राशि पर **मुंथा** स्थापित की जाती है।

वर्ष लग्न के अंश, कला, विकला जानने के लिए हमें वर्षेष्ट, सूर्य स्पष्ट तथा (जातक द्वारा वर्तमान में स्थायी तौर पर रह रहे) नगर की लग्न सारिणी का प्रयोग करना होगा। अधिक जानकारी एवं फलादेश के लिए हमारी प्रकाशित '**वर्षफल चन्द्रिका**' पुस्तक का अध्ययन करें।

गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट
1	1	6	9	26	4	15	58	51	1	01	47	76	4	11	36
2	2	12	18	27	5	22	07	52	2	07	57	77	5	17	46
3	3	18	27	28	0	04	17	53	3	14	06	78	6	23	55
4	5	00	37	29	1	10	26	54	4	20	15	79	1	06	04
5	6	6	46	30	2	16	35	55	6	02	24	80	2	12	13
6	0	12	55	31	3	22	44	56	0	08	33	81	3	18	22
7	1	19	04	32	5	04	53	57	1	14	42	82	5	00	31
8	3	01	13	33	6	11	02	58	2	20	51	83	6	06	41
9	4	07	23	34	0	17	32	59	4	03	01	84	0	12	50
10	5	13	32	35	1	23	21	60	5	09	10	85	1	18	59
11	6	19	41	36	3	05	30	61	6	15	19	86	3	01	08
12	1	01	50	37	4	11	39	62	0	21	28	87	4	07	17
13	2	07	59	38	5	17	48	63	2	03	37	88	5	13	26
14	3	14	08	39	6	23	57	64	3	06	43	89	6	19	36
15	4	20	17	40	1	06	07	65	4	15	56	90	1	01	45
16	6	02	27	41	2	12	16	66	5	22	05	91	2	07	54
17	0	08	36	42	3	18	25	67	0	04	14	92	3	14	03
18	1	14	45	43	5	00	34	68	1	10	23	93	4	20	12
19	2	20	54	44	6	06	43	69	2	16	32	94	6	02	21
20	4	03	03	45	0	12	42	70	3	22	41	95	0	08	30
21	5	9	12	46	1	19	02	71	5	04	51	96	1	14	40
22	6	15	22	47	3	01	11	72	6	11	00	97	2	20	49
23	0	21	31	48	4	07	20	73	0	17	09	98	4	20	58
24	2	03	40	49	5	13	29	74	1	23	18	99	5	09	07
25	3	09	49	50	6	19	38	75	3	05	27	100	6	15	16

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री दुर्गा चरित् एवं सप्तशती की महिमा

कलियुग में समस्त दुःखों एवं कष्टों के निवारण का एकमात्र उपाय भगवती देवी दुर्गा की उपासना ही शास्त्रों में बतलाया गया है। **''कलौ हि कार्य सिद्धयर्थमुपायं श्री दुर्गार्चनम्॥''** श्री दुर्गासप्तशती में वर्णित श्री दुर्गा जी के चरितों का विधिपूर्वक पाठ करने से मनुष्यों के पाप नष्ट होकर उन्हें धन-धान्य एवं सौभाग्यादि की प्राप्ति होती है। शुभ कार्यों में बार-बार पड़ने वाले विघ्नों की शान्ति होती है। विधिपूर्वक पाठ करने से जीवन के चारों क्षेत्रों-धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष में मनोवाँछित फल प्रदान कराने वाली **मन्दाकिनी** है।

जो व्यक्ति चैत्र, आश्विनादि नवरात्रों में दीपावली, दशहरा, अष्टमी आदि पर्वों पर अथवा कोई आकस्मिक संकट उपस्थित हो जाने पर श्रद्धा भक्ति के साथ श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ करता है। माँ दुर्गा की कृपा शक्ति से समस्त विघ्न दूर होकर मनोवांछित फलों की प्राप्ति हो जाती है। पाठोपरान्त पाठ की दशांश संख्या में श्री दुर्गा हवन करने से शीघ्र ही कामना सिद्धि होती है।

श्री दुर्गासप्तशती मात्र धर्म ग्रन्थ ही नहीं, बल्कि एक सिद्ध ग्रन्थ है। पं. पन्ना लाल ज्योतिषी द्वारा प्रणीत श्री दुर्गा सप्तशती के प्रस्तुत नवीन संशोधित संस्करण में मूल पाठ के साथ हिन्दी टीका, श्री दुर्गा यन्त्र, संक्षिप्त पाठ विधि, श्री दुर्गा पाठ सार कथा, श्री नवदुर्गा महिमा, देवी कवच, अर्गला स्तोत्र, तीनों रहस्य, नवचण्डी, शतचण्डी-विधान, श्री सप्तशती के प्रत्येक अध्याय के मन्त्रों की आहुतियां हवन विधि सहित, अनुष्ठान हेतु अनेक **काम्य तान्त्रिक प्रयोग**, कनकधारा स्तोत्र, आरतियां इत्यादि अनेक नवीन विषय जो अन्य किसी भी अन्य प्रचलित सप्तशती में आप नहीं पाएँगे॥ धर्म पारायण प्रत्येक पाठक के लिए संग्रहणीय एवं उपयोगी पुस्तक। इसमें दिए गए तान्त्रिक प्रयोगों की सहायता से मनोवांछित कामनाओं की सहज पूर्ति हो सकती है। श्रीदुर्गासप्तशती (सरल भाषा में) भी उपलब्ध है। **पता—जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर।**

भेंट—55 रु., डाक व्यय अलग॥

नोट—कार्यालय के नियमानुसार 50 रु. अग्रिम मनीआर्डर द्वारा भेजें।

—मुंथहा अर्थात् मुंथा स्तोत्र—

वर्ष कुण्डली में कई बार मुंथहा चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या द्वादश भाव में आ जाने से व्यक्ति के आगामी वर्ष में शरीर कष्ट, निकट बन्धुओं से विरोध, व्यवसाय में विघ्न, धन हानि, गुप्त, दुर्घटना आदि की आशंका होती है। मुंथा युक्त अशुभ ग्रह एवं मुंथेश ग्रह की यथाशक्ति पूजा, दान आदि करने से तथा निम्नलिखित मुंथा स्तोत्र का पाठ करने से अनिष्ट मुंथा की शान्ति होती है—

कैलाश शिखरासीनं देवदेवं जगद्गुरुम्। पार्वती प्रणता भूत्वा वचनं समभाषता॥
श्री पार्वत्युवाच भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वशत्रुविमर्दन। यस्मिन् वर्षे व्याधिभयं मुन्थहा कुरुते यदि॥
केनोपायेन शान्तिः स्यात् तद् वदस्व सुरेश्वर। (श्री महादेवोवाच)
अस्तहि मुन्थहादे व्याश्चाष्टकं नाम सिद्धिदम्॥
यस्यविज्ञानमात्रेण बहवो निर्भयंगता। (मुन्थहा प्रथमे। नाम द्वितीयं कीर्तिवर्धिनी॥
तृतीयं देवजननी चतुर्थं मधवप्रिया। पञ्चमं भयहन्त्री च षष्ठं विश्वेश्वरी तया॥
सप्तमं कलुबध्नी व वरदा चाष्टमं तया। इत्यतेनमिभिर्देवी प्रत्यहं पूजिता यदि॥
तस्य पीड़ाभयं नाऽस्ति सत्यं सत्यं वदाम्यहम्। यज्ज्ञात्वा निर्जरेर्देवैः सर्वे दानव राक्षसाः॥
निहताः समरे देवि तस्मान्मुन्थां सदा जपेत्।
राज्यदां भोग्यदां श्रीदां पुत्रदां कीर्तिदां तथा॥ नामान्येतानि मुन्थाया पठेन्नित्यं महेश्वरि॥

स्तोत्र पाठ के अनन्तर 3 बार श्री दुर्गा मन्त्र ''सर्व मङ्गल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते'' मंत्र का पाठ करके श्री दुर्गा माता की आरती करना कल्याणकारी होगा।

किसी ग्रह के अंश कलादि स्पष्ट के द्वारा नक्षत्र-पाद (चरण) आरम्भ ज्ञात करना (प्रारम्भ काल)

सूर्य चन्द्रादि ग्रह अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों के क्रांतिवृत्त (Zodiac = 360°) को पूरा परिभ्रमण करने में अलग-अलग समय लेते हैं। ३६० अंश को२७ द्वारा भाग देने से प्रति नक्षत्र का मध्यम मान १३ अंश २० कला बनता है तथा एक नक्षत्र के चार चरण (पाद) होने से प्रत्येक नक्षत्र पाद को भोग्य मान ३°—२०' (अंश कला) होगा (१३°—२०') ÷ 4 = 3°—20' शून्य से प्रारम्भ होकर प्रतयेक ग्रह इसी भान्ति क्रमानुसार नक्षत्र चरण राशि आदि परिवर्तन करता है। अधिक व्याख्या हेतु देखें ज्योतिष तत्त्व।

रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि	रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि	रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि
०—००—००	अश्विनी (१) मेषे	४—००—००	मघा (१) सिंहे	८—००—००	मूला (१) धनु
०—०३—२०	,, (२) ,,	४—०३—२०	,, (२) ,,	८—०३—२०	,, (२) ,,
०—०६—४०	,, (३) ,,	४—०६—४०	,, (३) ,,	८—०६—४०	,, (३) ,,
०—१०—००	,, (४) ,,	४—१०—००	,, (४) ,,	८—१०—००	,, (४) ,,
०—१३—२०	भरणी (१) ,,	४—१३—२०	पूफा (१) ,,	८—१३—२०	पूषा (१) ,,
०—१६—४०	,, (२) ,,	४—१६—४०.	,, (२) ,,	८—१६—४०	,, (२) ,,
०—२०—००	,, (३) ,,	४—२०—००	,, (३) ,,	८—२०—००	,, (३) ,,
०—२३—२०	,, (४) ,,	४—२३—२०	,, (४) ,,	८—२३—२०	,, (४) ,,
०—२६—४०	कृतिका (१) मेषे	४—२६—४०	उफा (१) ,,	८—२६—४०	उषा (१) ,,
१—००—००	,, (२) वृषे	५—००—००	,, (२) कन्या	९—००—००	उषा (२) मक
१—०३—२०	,, (३) ,,	५—०३—२०	,, (३) ,,	९—०३—२०	,, (३) ,,
१—०६—४०	,, (४) ,,	५—०६—४०	,, (४) ,,	९—०६—४०	,, (४) ,,
१—१०—००	रोहिणी (१) ,,	५—१०—००	हस्ते (१) ,,	९—१०—००	श्रव (१) ,,
१—१३—२०	,, (२) ,,	५—१३—२०	,, (२) ,,	९—१३—२०	,, (२) ,,
१—१६—४०	,, (३) ,,	५—१६—४०	,, (३) ,,	९—१६—४०	,, (३) ,,
१—२०—००	,, (४) ,,	५—२०—००	,, (४) ,,	९—२०—००	,, (४) ,,
१—२३—२०	मृगशिर (१) ,,	५—२३—२०	चित्रा (१) ,,	९—२३—२०	धनि (१) ,,
१—२६—४०	,, (२) ,,	५—२६—४०	,, (२) ,,	९—२६—४०	,, (२) ,,
२—००—००	,, (३) मिथुन	६—००—००	चित्रा (३) तुला	१०—००—००	,, (३) कुंभे
२—०३—२०	,, (४) ,,	६—०३—२०	,, (४) ,,	१०—०३—२०	,, (४) ,,
२—०६—४०	आर्द्रा (१) ,,	६—०६—४०	स्वाती (१) ,,	१०—०६—४०	शतभिषा (१),,
२—१०—००	,, (२) ,,	६—१०—००	,, (२) ,,	१०—१०—००	,, (२) ,,
२—१३—२०	,, (३) ,,	६—१३—२०	,, (३) ,,	१०—१३—२०	,, (३) ,,
२—१६—४०	,, (४) ,,	६—१६—४०	,, (४) ,,	१०—१६—४०	,, (४) ,,
२—२०—००	पुनर्वसु (१) ,,	६—२०—००	विशाखा (१) ,,	१०—२०—००	पूभा (१) ,,
२—२३—२०	,, (२) ,,	६—२३—२०	,, (२) ,,	१०—२३—२०	,, (२) ,,
२—२६—४०	,, (३) ,,	६—२६—४०	,, (३) ,,	१०—२६—४०	,, (३) ,,
३—००—००	पुनर्वसु (४) कर्के	७—००—००	,, (४) वृश्चिके	११—००—००	पूभा (४) मीने
३—०३—२०	पुष्ये (१) ,,	७—०३—२०	अनुराधा (१) ,,	११—०३—२०	उभा (१) ,,
३—०६—४०	,, (२) ,,	७—०६—४०	,, (२) ,,	११—०६—४०	,, (२) ,,
३—१०—००	,, (३) ,,	७—१०—००	,, (३) ,,	११—१०—००	,, (३) ,,
३—१३—२०	,, (४) ,,	७—१३—२०	,, (४) ,,	११—१३—२०	उभा (४) ,,
३—१६—४०	अश्ले (१) ,,	७—१६—४०	ज्ये. (१) ,,	११—१६—४०	रेवती (१) ,,
३—२०—००	,, (२) ,,	७—२०—००	,, (२) ,,	११—२०—००	,, (२) ,,
३—२३—२०	,, (३) ,,	७—२३—२०	,, (३) ,,	११—२३—२०	,, (३) ,,
३—२६—४०	,, (४) ,,	७—२६—४०	,, (४) ,,	११—२६—४०	रेवती (४) ,,
				००—००—००	अश्वि (१) मेषे

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारणी **जनवरी** भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

जनवरी	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	8 10	9 53	11 21	12 45	14 21	16 16	18 30	20 50	23 09	1 25	3 43	6 02
2	8 06	9 49	11 17	12 41	14 17	16 12	18 26	20 47	23 05	1 21	3 39	5 58
3	8 02	9 45	11 13	12 37	14 13	16 08	18 22	20 43	23 01	1 17	3 35	5 54
4	7 58	9 41	11 09	12 33	14 09	16 04	18 18	20 39	22 57	1 13	3 31	5 50
5	7 54	9 37	11 05	12 29	14 05	16 00	18 14	20 35	22 53	1 09	3 27	5 46
6	7 50	9 33	11 01	12 25	14 01	15 56	18 10	20 31	22 49	1 05	3 23	5 42
7	7 46	9 29	10 57	12 21	13 57	15 52	18 06	20 27	22 45	1 01	3 19	5 38
8	7 42	9 25	10 53	12 17	13 53	15 48	18 02	20 23	22 41	0 57	3 15	5 34
9	7 38	9 21	10 49	12 13	13 49	15 44	17 58	20 18	22 37	0 53	3 11	5 30
10	7 34	9 17	10 45	12 09	13 45	15 40	17 54	20 15	22 33	0 49	3 07	5 26
11	7 30	9 13	10 41	12 05	13 41	15 36	17 50	20 11	22 29	0 45	3 03	5 22
12	7 26	9 09	10 37	12 01	13 37	15 32	17 46	20 07	22 25	0 41	2 59	5 18
13	7 22	9 05	10 33	11 57	13 33	15 28	17 42	20 04	22 22	0 37	2 55	5 14
14	7 18	9 01	10 29	11 53	13 29	15 24	17 38	20 00	22 18	0 33	2 51	5 10
15	7 14	8 57	10 25	11 49	13 25	15 20	17 34	19 56	22 14	0 29	2 47	5 6
16	7 10	8 54	10 22	11 46	13 22	15 17	17 31	19 52	22 10	0 26	2 43	5 2
17	7 06	8 50	10 18	11 42	13 18	15 13	17 27	19 48	22 06	0 22	2 39	4 58
18	7 02	8 46	10 14	11 38	13 14	15 09	17 23	19 44	22 02	0 18	2 35	4 54
19	6 58	8 42	10 10	11 34	13 10	15 05	17 19	19 40	21 58	0 14	2 31	4 51
20	6 54	8 38	10 06	11 30	13 06	15 01	17 15	19 36	21 54	0 10	2 27	4 47
21	6 50	8 34	10 02	11 26	13 02	14 57	17 11	19 32	21 50	0 6	2 23	4 43
22	6 47	8 30	9 58	11 22	12 58	14 53	17 07	19 28	21 46	0 2	2 19	4 39
23	6 43	8 26	9 54	11 18	12 54	14 49	17 03	19 24	21 42	23 58	2 15	4 35
24	6 39	8 22	9 50	11 14	12 50	14 45	16 59	19 20	21 38	23 54	2 12	4 31
25	6 35	8 18	9 46	11 10	12 46	14 41	16 55	19 16	21 34	23 50	2 08	4 27
26	6 31	8 15	9 43	11 07	12 43	14 38	16 52	19 13	21 31	23 47	2 04	4 23
27	6 27	8 11	9 39	11 03	12 39	14 34	16 48	19 09	21 27	23 43	2 00	4 19
28	6 23	8 07	9 35	10 59	12 35	14 30	16 44	19 05	21 23	23 39	1 56	4 16
29	6 19	8 03	9 31	10 55	12 31	14 26	16 40	19 01	21 19	23 35	1 52	4 12
30	6 15	7 59	9 27	10 51	12 27	14 22	16 36	18 57	21 15	23 31	1 48	4 08
31	6 12	7 55	9 23	10 47	12 23	14 18	16 32	18 53	21 11	23 27	1 44	4 04
फर	6 08	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी **फरवरी** भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

फरवरी	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 51	9 19	10 43	12 19	14 14	16 28	18 49	21 07	23 23	1 40	4 00	6 04
2	7 47	9 15	10 39	12 15	14 10	16 24	18 45	21 03	23 19	1 36	3 56	6 00
3	7 43	9 11	10 35	12 11	14 06	16 20	18 41	20 59	23 15	1 32	3 52	5 56
4	7 39	9 07	10 31	12 07	14 02	16 16	18 37	20 55	23 11	1 28	3 48	5 52
5	7 35	9 03	10 27	12 03	13 58	16 12	18 33	20 52	23 07	1 24	3 44	5 48
6	7 31	8 59	10 23	11 59	13 54	16 08	18 29	20 48	23 03	1 21	3 40	5 44
7	7 27	8 55	10 19	11 55	13 50	16 04	18 25	20 44	22 59	1 17	3 36	5 40
8	7 23	8 51	10 15	11 51	13 46	16 00	18 21	20 40	22 55	1 13	3 32	5 36
9	7 19	8 47	10 11	11 47	13 42	15 56	18 18	20 36	22 51	1 09	3 28	5 32
10	7 15	8 43	10 07	11 43	13 38	15 52	18 14	20 32	22 47	1 05	3 24	5 28
11	7 11	8 39	10 03	11 39	13 34	15 48	18 10	20 28	22 43	1 01	3 20	5 24
12	7 07	8 35	9 59	11 35	13 30	15 44	18 06	20 24	22 39	24 57	3 16	5 20
13	7 04	8 31	9 55	11 31	13 26	15 40	18 02	20 20	22 35	24 53	3 12	5 16
14	7 00	8 27	9 51	11 27	13 22	15 36	17 58	20 16	22 31	24 49	3 08	5 12
15	6 56	8 23	9 47	11 23	13 18	15 32	17 54	20 12	22 27	24 45	3 04	5 08
16	6 52	8 19	9 43	11 19	13 14	15 28	17 50	20 08	22 23	24 41	3 00	5 04
17	6 48	8 15	9 39	11 15	13 10	15 24	17 46	20 04	22 19	24 37	2 56	5 01
18	6 44	8 11	9 35	11 11	13 06	15 20	17 42	20 00	22 15	24 33	2 52	4 57
19	6 40	8 07	9 31	11 07	13 02	15 16	17 38	19 56	22 11	24 29	2 48	4 53
20	6 36	8 04	9 28	11 04	12 58	15 13	17 34	19 52	22 07	24 25	2 44	4 49
21	6 32	8 00	9 24	11 00	12 55	15 09	17 30	19 48	22 03	24 21	2 41	4 45
22	6 28	7 56	9 20	10 56	12 51	15 05	17 26	19 44	21 59	24 17	2 37	4 41
23	6 24	7 52	9 16	10 52	12 47	15 01	17 22	19 40	21 55	24 14	2 33	4 37
24	6 20	7 48	9 12	10 48	12 43	14 57	17 18	19 36	21 51	24 10	2 29	4 33
25	6 16	7 44	9 08	10 44	12 39	14 53	17 14	19 32	21 47	24 06	2 25	4 29
26	6 12	7 40	9 04	10 40	12 35	14 49	17 10	19 28	21 43	24 02	2 21	4 25
27	6 08	7 36	9 00	10 36	12 31	14 45	17 06	19 24	21 39	23 58	2 17	4 21
28	6 05	7 32	8 57	10 32	12 27	14 41	17 02	19 20	21 35	23 54	2 13	4 17
मार्च	6 01	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारणी **मार्च** भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

मार्च	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 28	8 53	10 28	12 23	14 37	16 58	19 16	21 31	23 50	2 09	4 13	5 57
2	7 24	8 49	10 24	12 19	14 33	16 54	19 12	21 27	23 46	2 05	4 09	5 53
3	7 21	8 45	10 21	12 16	14 30	16 50	19 08	21 23	23 42	2 01	4 05	5 49
4	7 17	8 41	10 17	12 12	14 26	16 46	19 04	21 19	23 38	1 57	4 01	5 45
5	7 13	8 37	10 13	12 08	14 22	16 42	19 00	21 15	23 35	1 53	3 58	5 41
6	7 09	8 33	10 09	12 04	14 18	16 38	18 56	21 11	23 31	1 49	3 54	5 37
7	7 05	8 29	10 05	12 00	14 14	16 34	18 52	21 08	23 27	1 45	3 50	5 33
8	7 01	8 25	10 01	11 56	14 10	16 30	18 48	21 04	23 23	1 41	3 46	5 29
9	6 57	8 21	9 57	11 52	14 06	16 27	18 45	21 00	23 19	1 38	3 42	5 25
10	6 53	8 17	9 53	11 48	14 02	16 23	18 41	20 56	23 15	1 34	3 38	5 21
11	6 49	8 13	9 49	11 44	13 58	16 19	18 37	20 52	23 11	1 30	3 34	5 17
12	6 45	8 09	9 45	11 40	13 54	16 15	18 33	20 48	23 08	1 26	3 30	5 14
13	6 41	8 05	9 41	11 36	13 50	16 11	18 29	20 44	23 04	1 23	3 27	5 10
14	6 37	8 01	9 37	11 32	13 46	16 07	18 25	20 40	23 00	1 19	3 23	5 06
15	6 33	7 57	9 33	11 28	13 42	16 03	18 21	20 36	22 56	1 15	3 19	5 02
16	6 29	7 53	9 29	11 24	13 38	15 59	18 17	20 32	22 52	1 11	3 15	4 58
17	6 25	7 49	9 25	11 20	13 34	15 55	18 13	20 28	22 48	1 07	3 11	4 54
18	6 21	7 45	9 21	11 16	13 30	15 51	18 09	20 24	22 44	1 03	3 07	4 50
19	6 17	7 41	9 17	11 12	13 26	15 47	18 05	20 20	22 40	0 59	3 03	4 46
20	6 13	7 37	9 13	11 08	13 23	15 43	18 01	20 16	22 36	0 55	2 59	4 42
21	6 09	7 33	9 09	11 04	13 19	15 39	17 57	20 12	22 32	0 51	2 55	4 38
22	6 05	7 29	9 05	11 00	13 15	15 35	17 53	20 08	22 28	0 47	2 51	4 34
23	6 01	7 26	9 01	10 56	13 11	15 31	17 49	20 04	22 24	0 43	2 47	4 30
24	5 57	7 22	8 57	10 53	13 07	15 27	17 45	20 00	22 20	0 39	2 43	4 27
25	5 53	7 18	8 53	10 49	13 03	15 23	17 41	19 56	22 16	0 35	2 39	4 23
26	5 49	7 14	8 49	10 45	12 59	15 19	17 37	19 53	22 12	0 31	2 35	4 19
27	5 45	7 10	8 46	10 41	12 55	15 15	17 33	19 49	22 08	0 27	2 31	4 15
28	5 41	7 06	8 42	10 37	12 51	15 11	17 29	19 45	22 04	0 23	2 28	4 11
29	5 37	7 02	8 38	10 33	12 47	15 07	17 25	19 41	22 00	0 19	2 24	4 07
30	5 34	6 58	8 34	10 29	12 44	15 03	17 21	19 37	21 56	0 15	2 20	4 03
31	5 30	6 54	8 30	10 25	12 40	14 59	17 17	19 33	21 52	0 11	2 16	3 59
अप्रै	5 26	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दैनिक लग्न सारणी **अप्रैल** भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

अप्रैल	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 50	8 26	10 21	12 36	14 55	17 13	19 29	21 48	0 07	2 12	3 55	5 22
2	6 46	8 22	10 17	12 32	14 51	17 09	19 25	21 44	0 03	2 08	3 51	5 18
3	6 42	8 18	10 13	12 28	14 47	17 05	19 21	21 40	23 59	2 04	3 47	5 14
4	6 38	8 14	10 09	12 24	14 43	17 01	19 18	21 36	23 55	2 00	3 43	5 10
5	6 34	8 10	10 05	12 20	14 39	16 57	19 14	21 33	23 52	1 56	3 39	5 06
6	6 31	8 07	10 01	12 16	14 35	16 53	19 10	21 29	23 48	1 52	3 35	5 02
7	6 27	8 03	9 58	12 12	14 31	16 49	19 06	21 25	23 44	1 48	3 31	4 58
8	6 23	7 59	9 54	12 08	14 27	16 46	19 02	21 21	23 40	1 44	3 27	4 54
9	6 19	7 55	9 50	12 04	14 23	16 42	18 58	21 17	23 36	1 40	3 23	4 51
10	6 15	7 51	9 46	12 00	14 20	16 38	18 54	21 13	23 32	1 36	3 19	4 47
11	6 11	7 47	9 42	11 56	14 16	16 34	18 50	21 09	23 28	1 32	3 15	4 43
12	6 07	7 43	9 38	11 52	14 12	16 30	18 46	21 05	23 24	1 28	3 11	4 39
13	6 03	7 39	9 34	11 48	14 08	16 26	18 42	21 01	23 20	1 24	3 07	4 35
14	5 59	7 35	9 30	11 44	14 04	16 22	18 38	20 57	23 16	1 20	3 03	4 31
15	5 55	7 31	9 26	11 41	14 00	16 18	18 34	20 53	23 12	1 16	2 59	4 27
16	5 51	7 27	9 22	11 37	13 56	16 14	18 30	20 49	23 08	1 12	2 55	4 23
17	5 47	7 23	9 18	11 33	13 52	16 10	18 26	20 45	23 04	1 08	2 51	4 19
18	5 43	7 19	9 15	11 29	13 49	16 06	18 23	20 41	23 00	1 04	2 47	4 15
19	5 39	7 15	9 11	11 25	13 45	16 02	18 19	20 37	22 56	1 00	2 43	4 11
20	5 35	7 11	9 07	11 21	13 41	15 58	18 15	20 33	22 52	00 56	2 39	4 07
21	5 31	7 07	9 03	11 17	13 37	15 54	18 11	20 29	22 49	00 52	2 35	4 03
22	5 27	7 03	8 59	11 13	13 33	15 50	18 07	20 25	22 45	00 48	2 31	3 59
23	5 23	6 59	8 55	11 09	13 29	15 46	18 03	20 22	22 41	00 44	2 27	3 55
24	5 19	6 55	8 51	11 05	13 25	15 42	17 59	20 18	22 37	00 40	2 23	3 51
25	5 15	6 51	8 47	11 01	13 21	15 38	17 55	20 14	22 33	00 36	2 19	3 47
26	5 11	6 47	8 43	10 57	13 17	15 34	17 51	20 10	22 29	00 32	2 15	3 43
27	5 07	6 44	8 39	10 53	13 13	15 30	17 47	20 06	22 25	00 28	2 11	3 39
28	5 03	6 40	8 35	10 49	13 10	15 26	17 43	20 02	22 21	00 24	2 07	3 35
29	4 59	6 36	8 31	10 45	13 06	15 22	17 39	19 58	22 17	00 20	2 03	3 31
30	4 55	6 32	8 27	10 41	13 02	15 19	17 35	19 54	22 13	00 17	1 59	3 27
मई	4 51	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

दैनिक लग्न सारणी **जून** भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारणी मई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

मई	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	6 28	8 23	10 37	12 58	15 15	17 31	19 50	22 09	00 13	1 56	3 23	4 47
2	6 24	8 19	10 33	12 54	15 11	17 27	19 46	22 05	00 09	1 52	3 19	4 44
3	6 20	8 15	10 29	12 50	15 7	17 24	19 42	22 01	00 05	1 48	3 16	4 40
4	6 16	8 11	10 25	12 46	15 3	17 20	19 38	21 57	00 01	1 44	3 12	4 36
5	6 12	8 07	10 21	12 42	14 59	17 16	19 34	21 53	23 57	1 40	3 08	4 32
6	6 08	8 03	10 17	12 38	14 55	17 12	19 30	21 49	23 53	1 36	3 04	4 28
7	6 04	7 59	10 13	12 34	14 51	17 08	19 26	21 45	23 49	1 32	3 00	4 24
8	6 00	7 55	10 09	12 30	14 47	17 04	19 22	21 41	23 45	1 28	2 56	4 20
9	5 56	7 51	10 05	12 26	14 43	17 00	19 18	21 37	23 41	1 24	2 52	4 16
10	5 52	7 47	10 01	12 22	14 39	16 56	19 14	21 33	23 37	1 20	2 48	4 12
11	5 48	7 44	9 57	12 18	14 35	16 52	19 10	21 29	23 33	1 16	2 44	4 08
12	5 44	7 40	9 53	12 14	14 31	16 48	19 06	21 25	23 29	1 12	2 40	4 04
13	5 40	7 36	9 49	12 10	14 28	16 44	19 02	21 21	23 25	1 08	2 36	4 00
14	5 36	7 32	9 45	12 06	14 24	16 40	18 58	21 17	23 21	1 04	2 32	3 56
15	5 32	7 28	9 41	12 02	14 20	16 36	18 54	21 13	23 17	1 00	2 28	3 52
16	5 28	7 24	9 37	11 58	14 16	16 32	18 50	21 09	23 13	24 56	2 24	3 48
17	5 24	7 20	9 33	11 54	14 12	16 28	18 46	21 05	23 09	24 52	2 20	3 44
18	5 20	7 16	9 29	11 50	14 08	16 24	18 42	21 01	23 05	24 48	2 16	3 40
19	5 16	7 12	9 25	11 46	14 04	16 20	18 38	20 57	23 01	24 44	2 12	3 36
20	5 12	7 08	9 21	11 42	14 00	16 16	18 34	20 53	22 57	24 40	2 09	3 32
21	5 08	7 04	9 17	11 38	13 56	16 12	18 30	20 49	22 53	24 36	2 05	3 28
22	5 04	7 00	9 13	11 34	13 52	16 08	18 26	20 45	22 49	24 32	2 01	3 24
23	5 00	6 56	9 09	11 30	13 48	16 04	18 22	20 41	22 45	24 28	1 57	3 20
24	4 56	6 52	9 05	11 26	13 44	16 01	18 19	20 38	22 42	24 25	1 53	3 16
25	4 52	6 48	9 01	11 22	13 40	15 57	18 15	20 34	22 38	24 21	1 49	3 12
26	4 48	6 44	8 58	11 18	13 36	15 53	18 11	20 30	22 34	24 17	1 45	3 08
27	4 44	6 40	8 54	11 14	13 32	15 49	18 07	20 26	22 30	24 13	1 41	3 04
28	4 40	6 36	8 50	11 10	13 28	15 45	18 03	20 22	22 26	24 09	1 37	3 01
29	4 36	6 32	8 46	11 06	13 24	15 41	17 59	20 18	22 22	24 05	1 33	2 57
30	4 33	6 28	8 42	11 02	13 20	15 37	17 55	20 14	22 18	24 01	1 29	2 53
31	4 29	6 24	8 38	10 58	13 16	15 33	17 51	20 10	22 14	23 57	1 25	2 49
जून	4 25	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दैनिक लग्न सारणी जून भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

जून	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	6 20	8 35	10 54	13 12	15 29	17 47	20 06	22 10	23 53	1 21	2 45	4 21
2	6 16	8 31	10 50	13 08	15 25	17 43	20 02	22 06	23 49	1 17	2 41	4 17
3	6 12	8 27	10 46	13 04	15 21	17 39	19 58	22 02	23 45	1 13	2 37	4 13
4	6 08	8 23	10 42	13 00	15 17	17 35	19 54	21 58	23 41	1 09	2 33	4 09
5	6 04	8 19	10 38	12 56	15 13	17 31	19 50	21 54	23 37	1 05	2 29	4 05
6	6 00	8 15	10 34	12 52	15 09	17 27	19 46	21 50	23 33	1 01	2 25	4 01
7	5 57	8 11	10 31	12 48	15 05	17 23	19 42	21 46	23 29	24 57	2 21	3 58
8	5 53	8 07	10 27	12 44	15 01	17 19	19 39	21 43	23 26	24 53	2 17	3 54
9	5 49	8 03	10 23	12 40	14 58	17 16	19 35	21 39	23 22	24 49	2 13	3 50
10	5 45	7 59	10 19	12 37	14 54	17 12	19 31	21 35	23 18	24 46	2 09	3 46
11	5 41	7 55	10 15	12 33	14 50	17 08	19 27	21 31	23 14	24 42	2 05	3 42
12	5 37	7 51	10 11	12 29	14 46	17 04	19 23	21 27	23 10	24 38	2 02	3 38
13	5 33	7 47	10 07	12 25	14 42	17 00	19 19	21 23	23 06	24 34	1 58	3 34
14	5 29	7 43	10 03	12 21	14 38	16 56	19 15	21 19	23 02	24 30	1 54	3 30
15	5 25	7 39	9 59	12 17	14 34	16 52	19 11	21 15	22 58	24 26	1 50	3 26
16	5 21	7 35	9 55	12 13	14 30	16 48	19 07	21 11	22 54	24 22	1 46	3 22
17	5 17	7 31	9 51	12 09	14 26	16 44	19 03	21 07	22 50	24 18	1 42	3 18
18	5 13	7 27	9 47	12 05	14 22	16 40	18 59	21 03	22 46	24 14	1 38	3 14
19	5 09	7 23	9 43	12 02	14 18	16 36	18 55	20 59	22 42	24 10	1 34	3 10
20	5 05	7 19	9 39	11 58	14 14	16 32	18 51	20 55	22 38	24 06	1 30	3 06
21	5 01	7 15	9 36	11 54	14 10	16 28	18 47	20 51	22 34	24 02	1 26	3 02
22	4 57	7 11	9 32	11 50	14 06	16 24	18 43	20 47	22 30	23 58	1 22	2 58
23	4 53	7 07	9 28	11 46	14 02	16 20	18 39	20 43	22 26	23 54	1 18	2 54
24	4 49	7 03	9 24	11 42	13 58	16 16	18 36	20 39	22 22	23 51	1 15	2 50
25	4 46	6 59	9 20	11 38	13 54	16 13	18 32	20 35	22 18	23 47	1 11	2 46
26	4 42	6 55	9 16	11 34	13 50	16 09	18 28	20 31	22 14	23 43	1 07	2 43
27	4 38	6 51	9 12	11 30	13 46	16 05	18 24	20 27	22 10	23 39	1 03	2 39
28	4 34	6 47	9 09	11 26	13 43	16 01	18 20	20 23	22 06	23 35	24 59	2 35
29	4 30	6 43	9 05	11 23	13 39	15 57	18 16	20 20	22 02	23 31	24 55	2 31
30	4 26	6 39	9 01	11 19	13 35	15 54	18 13	20 16	21 59	23 28	24 52	2 28
जुला	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारणी जुलाई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

जुलाई	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 35	8 57	11 15	13 31	15 50	18 09	20 13	21 56	23 24	24 48	2 24	4 18
2	6 31	8 53	11 11	13 27	15 46	18 05	20 9	21 52	23 20	24 44	2 20	4 14
3	6 27	8 49	11 07	13 23	15 42	18 01	20 5	21 48	23 16	24 40	2 16	4 10
4	6 24	8 46	11 04	13 19	15 38	17 57	20 01	21 44	23 12	24 36	2 12	4 06
5	6 20	8 42	11 00	13 15	15 34	17 53	19 57	21 40	23 08	24 32	2 08	4 02
6	6 16	8 38	10 56	13 11	15 30	17 49	19 53	21 36	23 04	24 28	2 04	3 58
7	6 12	8 34	10 52	13 07	15 26	17 46	19 49	21 32	23 00	24 24	2 00	3 55
8	6 09	8 30	10 48	13 04	15 22	17 42	19 46	21 28	22 56	24 21	1 56	3 51
9	6 05	8 26	10 44	13 00	15 18	17 38	19 42	21 24	22 53	24 17	1 53	3 47
10	6 01	8 22	10 40	12 56	15 15	17 34	19 38	21 21	22 49	24 13	1 49	3 43
11	5 57	8 18	10 36	12 52	15 11	17 30	19 34	21 17	22 45	24 09	1 45	3 39
12	5 53	8 14	10 32	12 48	15 07	17 26	19 30	21 13	22 41	24 05	1 41	3 36
13	5 49	8 10	10 28	12 45	15 03	17 22	19 26	21 09	22 37	24 01	1 37	3 32
14	5 45	8 06	10 25	12 41	14 59	17 18	19 22	21 05	22 34	23 57	1 33	3 28
15	5 41	8 03	10 21	12 37	14 55	17 14	19 19	21 02	22 30	23 54	1 30	3 24
16	5 37	7 59	10 17	12 33	14 51	17 10	19 15	20 58	22 26	23 50	1 26	3 20
17	5 34	7 55	10 13	12 29	14 47	17 06	19 11	20 54	22 22	23 46	1 22	3 16
18	5 30	7 51	10 09	12 25	14 43	17 02	19 07	20 50	22 18	23 42	1 18	3 12
19	5 26	7 47	10 05	12 21	14 40	16 58	19 03	20 46	22 14	23 38	1 14	3 08
20	5 22	7 43	10 02	12 17	14 36	16 54	18 59	20 42	22 10	23 34	1 10	3 04
21	5 18	7 39	9 58	12 13	14 32	16 51	18 55	20 38	22 06	23 30	1 06	3 00
22	5 15	7 35	9 54	12 09	14 28	16 47	18 51	20 34	22 02	23 26	1 02	2 56
23	5 11	7 32	9 50	12 05	14 24	16 43	18 47	20 30	21 58	23 22	2458	2 53
24	5 07	7 28	9 46	12 01	14 20	16 39	18 43	20 26	21 55	23 18	2454	2 49
25	5 03	7 24	9 42	11 58	14 16	16 35	18 40	20 23	21 51	23 14	2450	2 45
26	5 00	7 20	9 38	11 54	14 12	16 31	18 36	20 19	21 47	23 10	2446	2 41
27	4 56	7 16	9 34	11 50	14 08	16 27	18 32	20 15	21 43	23 06	2442	2 37
28	4 52	7 12	9 30	11 46	14 04	16 23	18 28	20 11	21 39	23 02	2438	2 34
29	4 48	7 08	9 27	11 42	14 00	16 19	18 24	20 07	21 35	22 58	2435	2 30
30	4 44	7 04	9 23	11 38	13 56	16 15	18 20	20 03	21 31	22 54	2431	2 26
31	4 40	7 00	9 19	11 34	13 53	1612	18 16	19 59	21 27	22 50	2427	2 22
अग	4 36	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दैनिक लग्न सारणी अगस्त भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

अगस्त	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 56	9 15	11 31	13 49	16 08	18 12	19 55	21 23	22 47	24 23	2 18	4 32
2	6 52	9 11	11 27	13 45	16 05	18 09	19 51	21 19	22 43	24 19	2 14	4 28
3	6 48	9 07	11 23	13 42	16 01	18 05	19 47	21 15	22 39	24 15	2 10	4 24
4	6 44	9 03	11 19	13 38	15 57	18 01	19 44	21 11	22 35	24 11	2 06	4 20
5	6 40	9 00	11 15	13 34	15 53	17 57	19 40	21 08	22 31	24 08	2 02	4 16
6	6 36	8 56	11 12	13 30	15 49	17 53	19 36	21 04	22 28	24 04	1 58	4 13
7	6 32	8 52	11 08	13 26	15 45	17 49	19 32	21 00	22 24	24 00	1 54	4 09
8	6 29	8 48	11 04	13 22	15 41	17 45	19 28	20 56	22 20	23 56	1 50	4 05
9	6 25	8 44	11 00	13 18	15 37	17 42	19 24	20 52	22 16	23 52	1 46	4 01
10	6 21	8 41	10 56	13 14	15 33	17 38	19 21	20 48	22 12	23 48	1 43	3 57
11	6 17	8 37	10 53	13 10	15 29	17 34	19 17	20 44	22 08	23 44	1 39	3 54
12	6 13	8 33	10 49	13 06	15 25	17 30	19 13	20 40	22 04	23 40	1 35	3 50
13	6 09	8 29	10 45	13 02	15 21	17 26	19 09	20 36	22 00	23 36	1 32	3 46
14	6 05	8 25	10 41	12 59	15 17	17 22	19 05	20 33	21 56	23 32	1 28	3 42
15	6 01	8 21	10 37	12 55	15 14	17 18	19 01	20 29	21 53	23 29	1 24	3 38
16	5 57	8 17	10 33	12 51	15 10	17 14	18 57	20 25	21 49	23 25	1 20	3 34
17	5 54	8 13	10 29	12 47	15 06	17 10	18 53	20 21	21 45	23 21	1 16	3 30
18	5 50	8 09	10 25	12 43	15 02	17 06	18 49	20 17	21 41	23 17	1 12	3 26
19	5 46	8 05	10 21	12 39	14 58	17 02	18 45	2013	21 37	23 13	1 08	3 22
20	5 42	8 02	10 17	12 35	14 54	16 58	18 41	20 09	21 33	23 09	1 04	3 18
21	5 39	7 58	10 13	12 31	14 50	16 54	18 37	20 05	21 29	23 05	1 00	3 14
22	5 35	7 54	10 09	12 27	14 46	16 50	18 33	20 01	21 25	23 01	0 56	3 10
23	5 31	7 50	10 05	12 23	14 42	16 46	18 21	19 57	21 21	22 57	0 52	3 06
24	5 27	7 46	10 02	12 19	14 38	16 42	18 25	19 53	21 17	22 53	0 48	3 02
25	5 23	7 42	9 58	12 15	14 34	16 38	18 21	19 49	21 13	22 49	0 44	2 58
26	5 19	7 38	9 45	12 11	14 30	16 34	18 17	19 45	21 09	22 45	0 41	2 54
27	5 15	7 34	9 50	12 08	14 27	16 31	18 14	19 42	21 06	22 42	0 37	2 50
28	5 11	7 30	9 46	12 04	14 23	16 27	18 10	19 38	21 02	22 38	0 33	2 46
29	5 07	7 26	9 42	12 00	14 19	16 23	18 06	19 34	20 58	22 34	0 29	2 42
30	5 03	7 22	9 38	11 56	14 15	16 19	18 02	19 30	20 54	22 30	0 25	2 38
31	4 59	7 18	9 34	11 52	14 11	16 15	17 58	19 26	20 50	22 26	0 21	2 34
सितं	4 55	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारणी **सितंबर** भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

सितंबर	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	7 14	9 30	11 48	14 07	16 11	17 54	19 22	20 46	22 22	0 17	2 31	4 52
2	7 10	9 26	11 44	14 03	16 07	17 50	19 18	20 42	22 18	0 13	2 27	4 48
3	7 06	9 22	11 40	13 59	16 03	17 46	19 14	20 38	22 14	0 09	2 23	4 44
4	7 02	9 18	11 36	13 55	15 59	17 42	19 10	20 34	22 10	0 05	2 19	4 40
5	6 58	9 14	11 32	13 51	15 55	17 38	19 06	20 30	22 06	0 01	2 15	4 36
6	6 54	9 10	11 28	13 47	15 51	17 34	19 02	20 26	22 02	23 57	2 11	4 32
7	6 50	9 06	11 24	13 43	15 47	17 30	18 58	20 22	21 58	23 53	2 07	4 28
8	6 46	9 02	11 20	13 39	15 43	17 26	18 54	20 18	21 54	23 49	2 03	4 24
9	6 42	8 58	11 16	13 35	15 39	17 22	18 50	20 14	21 50	23 45	1 59	4 20
10	6 38	8 54	11 12	13 31	15 35	17 18	18 46	20 10	21 46	23 41	1 55	4 16
11	6 34	8 50	11 08	13 27	15 31	17 14	18 42	20 06	21 42	23 37	1 51	4 12
12	6 30	8 46	11 04	13 23	15 27	17 10	18 38	20 02	21 38	23 33	1 47	4 08
13	6 26	8 42	11 00	13 19	15 23	17 06	18 34	19 58	21 34	23 29	1 43	4 04
14	6 22	8 38	10 56	13 15	15 19	17 02	18 30	19 54	21 30	23 25	1 39	4 00
15	6 18	8 34	10 52	13 11	15 15	16 58	18 26	19 50	21 26	23 21	1 35	3 56
16	6 14	8 30	10 48	13 07	15 11	16 54	18 22	19 46	21 22	23 17	1 31	3 52
17	6 10	8 26	10 44	13 03	15 07	16 50	18 18	19 42	21 18	23 13	1 27	3 48
18	6 06	8 22	10 40	12 59	15 03	16 46	18 14	19 38	21 14	23 09	1 23	3 44
19	6 02	8 18	10 36	12 55	14 59	16 42	18 10	19 34	21 10	23 05	1 19	3 40
20	5 58	8 14	10 32	12 51	14 55	16 38	18 06	19 30	21 06	23 01	1 15	3 36
21	5 54	8 10	10 28	12 47	14 51	16 34	18 02	19 26	21 02	22 57	1 11	3 32
22	5 50	8 06	10 24	12 43	14 47	16 30	17 58	19 22	20 58	22 53	1 07	3 28
23	5 46	8 02	10 20	12 39	14 43	16 26	17 54	19 18	20 54	22 49	1 03	3 24
24	5 42	7 58	10 16	12 35	14 39	16 22	17 50	19 14	20 50	22 45	0 59	3 20
25	5 38	7 54	10 12	12 31	14 35	16 18	17 46	19 10	20 46	22 41	0 55	3 16
26	5 34	7 50	10 08	12 27	14 31	16 14	17 42	19 06	20 42	22 37	0 51	3 12
27	5 30	7 46	10 04	12 23	14 27	16 10	17 38	19 02	20 38	22 33	0 47	3 08
28	5 26	7 42	10 00	12 19	14 23	16 06	17 34	18 58	20 34	22 29	0 43	3 04
29	5 22	7 38	9 56	12 15	14 19	16 02	17 30	18 54	20 30	22 25	0 39	3 00
30	5 18	7 34	9 53	12 12	14 16	15 59	17 27	18 51	20 27	22 22	0 36	2 57
अक्टू.	5 15	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी **अक्टूबर** भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

अक्टूबर	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	7 30	9 49	12 08	14 12	15 55	17 23	18 47	20 23	22 18	0 32	2 53	5 11
2	7 26	9 45	12 04	14 08	15 51	17 19	18 43	20 19	22 14	0 28	2 49	5 07
3	7 23	9 42	12 00	14 04	15 47	17 15	18 39	20 15	22 10	0 24	2 45	5 03
4	7 19	9 38	11 56	14 00	15 43	17 11	18 35	20 11	22 06	0 20	2 41	4 59
5	7 15	9 34	11 52	13 56	15 39	17 07	18 31	20 07	22 02	0 16	2 37	4 55
6	7 11	9 30	11 48	13 52	15 35	17 03	18 27	20 03	21 58	0 12	2 33	4 51
7	7 07	9 26	11 44	13 48	15 31	16 59	18 23	19 59	21 54	0 08	2 29	4 47
8	7 03	9 22	11 40	13 44	15 27	16 55	18 19	19 55	21 50	0 04	2 25	4 43
9	6 59	9 18	11 36	13 40	15 23	16 51	18 15	19 51	21 46	24 00	2 21	4 39
10	6 55	9 14	11 32	13 36	15 19	16 47	18 11	19 47	21 42	23 56	2 17	4 35
11	6 51	9 10	11 28	13 32	15 15	16 43	18 07	19 43	21 38	23 52	2 13	4 31
12	6 47	9 06	11 24	13 28	15 11	16 39	18 03	19 39	21 34	23 48	2 09	4 27
13	6 43	9 02	11 20	13 24	15 07	16 35	17 59	19 35	21 30	23 44	2 05	4 23
14	6 39	8 58	11 16	13 20	15 03	16 31	17 55	19 31	21 26	23 40	2 01	4 19
15	6 35	8 54	11 12	13 16	14 59	16 27	17 51	19 27	21 22	23 36	1 57	4 15
16	6 31	8 50	11 08	13 12	14 55	16 23	17 47	19 23	21 18	23 32	1 53	4 11
17	6 27	8 46	11 04	13 08	14 51	16 19	17 43	19 19	21 14	23 28	1 49	4 07
18	6 23	8 42	11 00	13 04	14 47	16 15	17 39	19 15	21 10	23 24	1 45	4 03
19	6 19	8 38	10 56	13 00	14 43	16 11	17 35	19 11	21 06	23 20	1 41	3 59
20	6 15	8 34	10 52	12 56	14 39	16 07	17 31	19 07	21 02	23 16	1 37	3 55
21	6 11	8 30	10 48	12 52	14 35	16 03	17 27	19 03	20 58	23 12	1 33	3 51
22	6 07	8 26	10 44	12 48	14 31	15 59	17 23	18 59	20 54	23 08	1 29	3 47
23	6 03	8 22	10 40	12 44	14 27	15 55	17 19	18 55	20 50	23 04	1 25	3 43
24	5 59	8 18	10 36	12 40	14 23	15 51	17 15	18 51	20 46	23 00	1 21	3 39
25	5 56	8 15	10 33	12 37	14 20	15 48	17 12	18 48	20 43	22 57	1 17	3 36
26	5 52	8 11	10 29	12 33	14 16	15 44	17 08	18 44	20 39	22 53	1 13	3 32
27	5 48	8 07	10 25	12 29	14 12	15 40	17 04	18 40	20 35	22 49	1 09	3 28
28	5 44	8 03	10 21	12 25	14 08	15 36	17 00	18 36	20 31	22 45	1 06	3 24
29	5 40	7 59	10 17	12 21	14 04	15 32	16 56	18 32	20 27	22 41	1 02	3 20
30	5 36	7 55	10 13	12 17	14 00	15 28	16 52	18 28	20 23	22 37	2458	3 16
31	5 33	7 51	10 09	12 13	13 56	15 24	16 48	18 24	20 19	22 33	2454	3 12
नवं.	5 29	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारणी **नवंबर** भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

नवंबर	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 47	10 6	12 10	13 53	15 21	16 44	18 20	20 15	22 29	0 50	3 08	5 25
2	7 43	10 2	12 06	13 49	15 17	16 40	18 16	20 11	22 25	0 46	3 04	5 21
3	7 39	9 58	12 02	13 45	15 13	16 37	18 13	20 08	22 22	0 43	3 00	5 17
4	7 35	9 54	11 58	13 41	15 09	16 33	18 09	20 04	22 18	0 39	2 56	5 13
5	7 31	9 50	11 54	13 37	15 05	16 29	18 05	20 00	22 15	0 35	2 52	5 09
6	7 27	9 46	11 50	13 33	15 01	16 25	18 01	19 56	22 10	0 31	2 48	5 05
7	7 24	9 42	11 46	13 29	14 57	16 21	17 57	19 52	22 06	0 27	2 45	5 01
8	7 20	9 38	11 42	13 25	14 53	16 17	17 53	19 48	22 02	0 23	2 41	4 57
9	7 16	9 34	11 38	13 21	14 49	16 13	17 49	19 44	21 58	0 19	2 37	4 53
10	7 12	9 30	11 34	13 17	14 45	16 09	17 45	19 40	21 54	0 15	2 33	4 49
11	7 08	9 26	11 30	13 13	14 41	16 05	17 41	19 36	21 50	0 11	2 29	4 45
12	7 04	9 22	11 26	13 09	14 37	16 01	17 37	19 32	21 46	0 07	2 25	4 41
13	7 00	9 18	11 22	13 05	14 33	15 57	17 33	19 28	21 42	0 03	2 21	4 37
14	6 56	9 14	11 28	13 01	14 29	15 53	17 29	19 24	21 38	23 59	2 17	4 33
15	6 52	9 10	11 14	12 57	14 25	15 49	17 25	19 20	21 34	23 55	2 13	4 29
16	6 48	9 06	11 10	12 53	14 21	15 45	17 21	19 16	21 30	23 51	2 09	4 25
17	6 43	9 02	11 06	12 49	14 17	15 41	17 17	19 12	21 26	23 47	2 05	4 21
18	6 39	8 58	11 02	12 45	14 13	15 37	17 23	19 08	21 22	23 43	2 01	4 17
19	6 35	8 54	10 58	12 41	14 09	15 33	17 09	19 04	21 18	23 39	1 57	4 13
20	6 31	8 50	10 54	12 37	14 05	15 29	17 05	19 00	21 14	23 35	1 53	4 09
21	6 27	8 46	10 50	12 33	14 01	15 25	17 01	18 56	21 10	23 31	1 49	4 05
22	6 23	8 43	10 47	12 30	13 58	15 22	16 58	18 53	21 07	23 28	1 46	4 02
23	6 20	8 39	10 43	12 26	13 54	15 18	16 54	18 49	21 03	23 24	1 42	3 58
24	6 16	8 35	10 39	12 22	13 50	15 14	16 50	18 45	20 59	23 20	1 38	3 54
25	6 12	8 31	10 35	12 18	13 46	15 10	16 46	18 41	20 55	23 16	1 34	3 50
26	6 08	8 28	10 31	12 14	13 42	15 06	16 42	18 37	20 51	23 12	1 30	3 46
27	6 04	8 23	10 27	12 10	13 38	15 02	16 38	18 33	20 47	23 08	1 26	3 42
28	6 00	8 19	10 23	12 06	13 34	14 58	16 34	18 29	20 43	23 04	1 22	3 38
29	5 56	8 16	10 20	12 03	13 31	14 55	16 31	18 26	20 40	23 01	1 19	3 35
30	5 53	8 12	10 16	11 59	13 27	14 51	16 27	18 22	20 36	22 57	1 15	3 31
दिसं	5 49	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दैनिक लग्न सारणी **दिसंबर** भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

दिसंबर	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	8 08	1012	11 55	13 23	14 47	16 23	18 18	20 32	22 53	1 11	3 27	5 45
2	8 04	10 08	11 51	13 19	14 43	16 19	18 14	20 28	22 49	1 07	3 23	5 41
3	8 00	10 04	11 47	13 15	14 39	16 15	18 10	20 24	22 45	1 03	3 19	5 37
4	7 56	10 00	11 43	13 11	14 35	16 11	18 06	20 20	22 41	0 59	3 15	5 33
5	7 52	9 56	11 39	13 07	14 31	16 07	18 02	20 16	22 37	0 55	3 11	5 29
6	7 48	9 52	11 35	13 03	14 27	16 03	17 58	20 12	22 33	0 51	3 07	5 25
7	7 44	9 48	11 31	12 59	14 23	15 59	17 54	20 08	22 29	0 47	3 03	5 21
8	7 40	9 44	11 27	12 55	14 19	15 55	17 50	20 04	22 25	0 43	2 59	5 17
9	7 36	9 40	11 23	12 51	14 15	15 51	17 46	20 00	22 21	0 39	2 55	5 13
10	7 33	9 37	11 20	12 48	14 12	15 48	17 43	19 57	22 18	0 36	2 52	5 10
11	7 29	9 33	11 16	12 44	14 08	15 44	17 39	19 53	22 14	0 32	2 48	5 06
12	7 25	9 29	11 12	12 40	14 04	15 40	17 35	19 49	22 10	0 28	2 44	5 02
13	7 21	9 25	11 08	12 36	14 01	15 36	17 31	19 45	22 06	0 24	2 40	4 58
14	7 17	9 21	11 04	12 32	13 56	15 32	17 27	19 41	22 02	0 20	2 36	4 54
15	7 13	9 17	11 00	12 28	13 52	15 28	17 23	19 37	21 58	0 16	2 32	4 50
16	7 09	9 13	10 56	12 24	13 48	15 24	17 19	19 33	21 54	0 12	2 28	4 46
17	7 05	9 09	10 52	12 21	13 44	15 20	17 15	19 29	21 50	0 08	2 24	4 42
18	7 11	9 05	10 49	12 17	13 41	15 16	17 11	19 25	21 46	0 04	2 20	4 38
19	6 58	9 01	10 45	12 13	13 36	15 12	17 07	19 21	21 42	0 00	2 16	4 34
20	6 53	8 57	10 41	12 09	13 32	15 08	17 03	19 17	21 38	23 56	2 12	4 30
21	6 49	8 53	10 37	12 05	13 28	15 04	16 59	19 13	21 34	23 52	2 09	4 26
22	6 45	8 49	10 33	12 01	13 24	15 00	16 55	19 10	21 30	23 49	2 05	4 22
23	6 41	8 45	10 29	11 57	13 20	14 56	16 51	19 06	21 26	23 45	2 01	4 18
24	6 37	8 42	10 25	11 53	13 16	14 52	16 48	19 02	21 23	23 41	1 57	4 14
25	6 33	8 38	10 21	11 49	13 12	14 48	16 44	18 58	21 19	23 37	1 53	4 10
26	6 30	8 34	10 17	11 45	13 09	14 44	16 40	18 54	21 15	23 33	1 49	4 06
27	6 26	8 30	10 13	11 41	13 05	14 41	16 36	18 50	21 11	23 29	1 45	4 03
28	6 22	8 26	10 09	11 37	13 01	14 37	16 32	18 46	21 07	23 25	1 41	3 59
29	6 18	8 22	10 05	11 33	12 57	14 33	16 28	18 42	21 03	23 21	1 37	3 55
30	6 14	8 18	10 01	11 29	12 53	14 29	16 24	18 38	20 59	23 17	1 33	3 51
31	6 10	8 14	9 57	11 25	12 49	14 25	16 20	18 34	20 55	23 13	1 29	3 47
जन.	6 06	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

अनुकूल कार्य सिद्धि के लिए लग्न चक्र (मुहूर्त) और फल.ज्ञान

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

अनुसार अपना कार्य सिद्ध कर सकता है। सात ग्रहों के सात होरे,

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अनुकूल कार्य सिद्धि के लिए होरा ज्ञान चक्र (मुहूर्त) और फल.ज्ञान

सर्वकार्य सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त श्रेयस्कर है। होरा मुहूर्त के अनुसार कार्यारम्भ करके प्रत्येक मनुष्य अशुभ समय में से होरा के अनुसार अपना कार्य सिद्ध कर सकता है। सात ग्रहों के सात होरे हैं। **सूर्य की होरा**-टेंडर देने व नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने-देने के लिए अच्छी होती है। **चंद्रमा की होरा**—सब कार्यों के लिए अच्छी होती है। **मंगल की होरा**-युद्ध, यात्रा, कर्ज देने, सभा-सोसाईटी में आना-जाना और मुकद्दमा के कार्यों में अच्छी होती है। **बुध की होरा**—में विद्यारम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार, नवीन लेख, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने के लिए अच्छी होती है। **गुरु की होरा**—विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलना, कोषसंग्रह, नवीन काव्य लेखन आदि के लिए शुभ है। **शुक्र की होरा**—यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, प्रवास, सौभाग्यवर्धक कार्य के लिए शुभ है। **शनि की होरा**—भूमि, मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी, मिल्स कार्यारम्भ समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं।

प्रत्येक होरा १ घण्टे का होता है। जिस दिन जो 'वार' होता है, उस वार के आरम्भ (अर्थात् सूर्योदय के समय) से १ घण्टा तक उसी वार को होरा रहता है। इसके बाद १ घण्टे का दूसरा होरा उस वार से छठे वार का होता है। इसी प्रकार दूसरे होरे के वार से छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता है। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरे बीतने पर अगले वार के सूर्योदय समय उसी (अगले) वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा उपयुक्त लिखी है, उसके अनुसार ही उस होरा में (१ घण्टे) में वह कार्य करेंगे तो अवश्य सफलता मिलेगी। ऋषियों ने होरा को 'क्षणवार' कहा है। वार से भी क्षण वार में प्रधानता मानी गई है। इसलिए यदि वार और 'क्षणवार' दोनों अनुकूल हों, तभी किसी कार्य को करना चाहिए। आवश्यकता में, यदि वार अनुकूल नहीं हो तो 'क्षणवार' अर्थात् होरा की अनुकूलता के अनुसार कार्य करना चाहिए। जैसे—पश्चिम की यात्रा रविवार में करने की आवश्यकता हो तो वार के अनुसार दिक्शूल पड़ेगा। इसलिए जिस समय सोम की होरा (क्षणवार) हो उस समय रविवार में पश्चिम की यात्रा की जा सकती है। नीचे चक्र के अनुसार रविवार को सोम की होरा सूर्योदय समय से ४, ११, १८ घण्टे बाद के एक-एक घण्टे तक आप सोम की होरा में जा सकते हैं। इसी प्रकार अन्य दिनों के होराओं के विषय में भी समझ लें।

वार	होरा १	होरा २	होरा ३	होरा ४	होरा ५	होरा ६	होरा ७	होरा ८	होरा ९	होरा १०	होरा ११	होरा १२	होरा १३	होरा १४	होरा १५	होरा १६	होरा १७	होरा १८	होरा १९	होरा २०	होरा २१	होरा २२	होरा २३	होरा २४
रवि.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध
सोम.	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु
मंगल	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र
बुध	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि
गुरु	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि
शुक्र	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम
शनि	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल

।।चौघड़ियां मुहूर्त ।।

दिन की चौघड़ियां

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	समय
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	६.००
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	७.३०
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	९.००
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	१०.३०
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१२.००
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	१.३०
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	३.००
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	४.३०

।।चौघड़ियां मुहूर्त ।।

रात्रि की चौघड़ियां

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	समय
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	६.००
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	७.३०
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	९.००
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	१०.३०
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१२.००
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	१.३०
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३.००
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	४.३०

शीघ्रता में कोई मुहूर्त न मिलता हो तो, तथा अचानक यात्रा करनी पड़ी तो, उस समय चौघड़ियां मुहूर्त का उपयोग करना श्रेयस्कर रहता है। दिन और रात्रि के आठ-आठ बराबर भाग करने से एक-एक चौघड़ियां मुहूर्त होता है। जब दिन और रात्रि बराबर अर्थात् १२ घण्टे का दिन तथा १२ घण्टे की रात्रि हो, तब एक चौघड़ियां मुहूर्त १ घण्टे अर्थात् पौने चार घटी का होगा। इसलिए इसका नाम चौघड़ियां मुहूर्त पड़ा। रविवार, चंद्रवार आदि वार सूर्योदय से प्रारम्भ होकर अगले दिन सूर्योदय तक रहता है। प्रत्येक वार के सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय उस वार का दिनमान तथा सूर्यास्त से अग्रिम सूर्योदय तक का समय 'रात्रिमान' होता है। दिनमान और रात्रिमान में सू. उ. तथा सू. अ. के अन्तर आने के कारण घटते-बढ़ते रहते है। परन्तु 'वार सदैव' २४ घण्टा अर्थात् ६० घटी का होता है। रात्रिमान जानने के लिए पंचांगदिवाकर में दिए गए दिनमान को ६० घटी में घटा दें। जिस दिन यात्रा करनी हो उस दिन के दिनमान के अष्टमांश घटी पल का घण्टा मिन्ट बनाकर उस दिन के सूर्योदय समय में जोड़ते जाएँ तो क्रमशः उस दिन की आठों चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जाएगा। इसी प्रकार जिस दिन रात्रि में यात्रा करनी हो तो उस दिन के रात्रिमान के अष्टमांश घटी-पल का घण्टा मिन्ट बनाकर सूर्यास्त समय में जोड़ते जाने से क्रमशः रात्रि की प्रत्येक चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जाएगा तथा शुभाशुभ जानने के लिए प्रत्येक वार के नीचे तथा चौघड़ियां के सामने तालिका में देखें। **टिप्पणी**—सदैव चर, लाभ, अमृत एवं शुभ चौघड़ियों में ही शुभ कार्य का आरम्भ करना श्रेष्ठ रहता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

द्वादश लग्नों एवं राशियों का फल [ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) से उद्धृत]

मेष लग्न–मेष लग्न (राशि) का स्वामी मंगल है। जातक का मध्यम कद, मुख का वर्ण लाल अथवा गेहुँआ होगा। राशिपति मंगल की स्थिति शुभ होने से रक्तवर्ण नेत्रों वाला, चंचल एवं उग्र स्वभाव, अत्यन्त साहसी, सतर्क एवं महत्वाकांक्षी होगा। जातक उद्यमी, तीव्र बुद्धि, स्वतन्त्र विचारों वाला, अस्थिर किन्तु तेज स्मरण शक्ति वाला, अत्यधिक उत्साही, स्पष्टवादी एवं भ्रमणप्रिय व्यक्ति होगा। प्राय: अपने परिश्रम के बल पर आय एवं धन के साधन जुटा लेगा। सगे सम्बन्धियों की ओर से सहायता व सुख कम होगा। यह राशि चर और अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण मेष राशि (लग्न) का जातक परिवर्तनशील प्रकृति, अस्थिर स्वभाव तथा शीघ्र क्रोधित हो जाने वाला एवं शीघ्र ही मान जावे। व्यवसाय में अनेक कठिनाईयों के बावजूद उन्नति के लिए प्रयास करता रहता है। जायदाद एवं व्यवसाय में कई प्रकार के झंझट (उलझनें) आती हैं और इन्हीं कामों के द्वारा लाभ भी होता रहता है। पित्त, कफ, सिर दर्द, रक्त विकार, नेत्र विकार, त्वचा आदि रोगों का भय रहता है। मंगल शुभ होने पर जातक को खेल-कूद व संगीतादि में भी विशेष शौक रहता है। सामान्यत: **मूंगा मेष लग्न वालों के लिए शुभ रहता है**, परन्तु योग्य ज्योतिषी से परामर्श के बाद धारण करना चाहिए। **भाग्योदयकारक** वर्ष १६, २२, २८, ३२, ३६वें होंगे।

वृष लग्न–वृष लग्न का **स्वामी शुक्र** है। यदि शुक्र शुभ हो तो जातक सुन्दर, सुगठित शरीर व मध्यम कद वाला होगा। गोल, बड़ी व चमकदार आँखें, सुन्दर वर्ण एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होगा। जातक परिश्रमी, हँसमुख एवं सौम्य प्रकृति वाला, धीर, शान्त एवं दृढ़ स्वभाव का होता है। जातक उदारहृदय, प्रसन्नहृदय और प्रभावशाली व्यक्ति होगा। स्वावलम्बी, उच्चाभिलाषी तथा भौतिक सुखों के लिए कठोर परिश्रम से भी पीछे नहीं हटेगा। जातक मधुरभाषी, सौन्दर्य प्रेमी, संगीत कला-साहित्यादि कार्यों में विशेष रुचि रखने वाला होगा। घर-दफ्तर आदि स्थानों पर सजावट रखेगा तथा ऐश्वर्य साधनों में निरन्तर वृद्धि करते रहने का प्रयास करेगा। जातक प्राय: अपनी इच्छानुसार ही कार्य करने वाला, ऐश्वर्ययुक्त जीवनयापन का इच्छुक, विपरीत योनि वालों के साथ मैत्री करने का आकांक्षी, व्यवहार कुशल तथा कठिन परिस्थितियों में भी अपना कार्य निकालने में कुशल होगा। जातक प्राय: चन्द्र-बुध की स्थिति शुभ होने पर कामर्स, गणित, बैंकिंग, एक्टिंग, वस्त्र उद्योग, क्रय-विक्रय (Trading) आदि में सफलता प्राप्त कर लेता है। **शुभ नग हीरा** है। भाग्योदायकारक वर्ष २८, ३६, ४२ एवं ४८वें होंगे।

मिथुन लग्न–मिथुन लग्न (राशि) का स्वामी बुध है। मिथुन लग्न वाला जातक, गौरवर्ण, चंचल आँखों वाला, सामान्य एवं ऊँचे कद वाला होगा। जातक अस्थिर किन्तु मौलिक विचारों से युक्त, तीव्र बुद्धि, परिवर्तनशील प्रकृति, मित्रों को हर प्रकार से सहायक तथा नीति के अनुसार आचरण करने वाला, तर्क-वितर्क करने में कुशल, दूर-दूर के स्थानों की यात्राएँ करने का सौभाग्य प्राप्त करेगा। जातक में बुद्धि तत्त्व एवं भाव तत्त्व दोनों प्रबल होने के कारण पठन-पाठन, कानूनी कार्य, व्यापार सम्बन्धी और लेखन सम्बन्धी कार्यों को बड़ी गम्भीरता से करेगा, मजबूत हृदय वाला परन्तु नर्म स्वभाव होने के कारण कमजोर समझा जाता है। द्विस्वभाव होने से एक ही समय पर एक से अधिक कार्य शुरू करने की प्रवृत्ति रहेगी, अपने कार्य-क्षेत्र (व्यवसाय) में प्राय: परिवर्तन करता रहता है तथा प्राय: अपने परिश्रम, बुद्धि एवं चातुर्य के बल पर जीवन में सफलता प्राप्त कर लेगा। नए-नए मित्र बनाने में कुशल, बातचीत करने की कला में निपुण होगा। क्रय-विक्रय, पुस्तक-लेखन, लेखाकार (Accounts), बैंक, वकालत, अध्यापन, इंजीनियरिंग, कल-पुर्जों के कार्य-व्यवसाय में सफलता प्राप्त हो सकती है। **शुभ नग पन्ना** है, स्त्रियों के लिए पुखराज भी अच्छा होगा। भाग्योदयकारक वर्ष २२, ३२, ३५, ३६, ४२ वें होंगे।

कर्क लग्न–कर्क लग्न (राशि) का स्वामी चन्द्रमा है। जल तत्त्व प्रधान एवं चर राशि होने से जातक सुन्दर एवं आकर्षक मुखाकृति, गोल चेहरा और मध्यम कद होगा। चन्द्र-मंगल शुभ हो तो जातक बुद्धिमान, संवेदनशील, भावुकहृदय, नयायप्रिय व दयालु स्वभाव वाला होगा। सामान्यत: परिवर्तनशील स्वभाव, चंचल, जलीय वस्तुओं (Liquids) का प्रिय, उच्च कल्पनाशील, समयानुकूल काम निकालने में कुशल, मिलनसार प्रकृति होगी। यदि चन्द्रमा अशुभ हो तो चिड़चिड़ा स्वभाव, वातावरण से शीघ्र प्रभावित होने वाला होगा। प्राकृतिक सौन्दर्य, कला-संगीत व साहित्य में विशेष रुचि रखे तथा सौन्दर्यानुभूति भी विशेष रूप से रहे। ऐसा जातक परिस्थितिनुसार ढल जाने वाला, प्यार सम्बन्धों में सच्चा, ईमानदार और सहृदय दयालु प्रकृति का होगा। ऐसा जातक दिल से जिस काम को करना चाहे कर ही लेता है। कल्पना (विचार) शक्ति प्रबल होती है, अन्य पुरुष के भावों को शीघ्र समझ लेने की विशेष क्षमता होती है। कर्क राशि वालों को मकर, वृश्चिक, मीन राशि वालों के साथ मित्रता शुभ रहती है। **शुभ नग सुच्चा मोती** तथा **सफेद पुखराज** है। भाग्योदयकारक वर्ष २४, २५, २८, ३२, ३६, ४० होंगे।

सिंह लग्न–सिंह लग्न (राशि) का स्वामी सूर्य है। इस लग्न (राशि) में जन्म लेने वाला जातक सुन्दर-पुष्ट शरीर वाला, चौड़ा मस्तक, सुगठित, आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होगा। जातक बुद्धिमान, उद्यमी, कर्मठ, निडर, स्वतन्त्र विचारों वाला, पराक्रमी, व्यवहार कुशल, नीति के अनुसार आचरण करने वाला, उच्चाकांक्षी, खानपान का शौकीन, देश-विदेश में भ्रमण करने वाला, शीघ्र क्रुद्ध हो जाने की प्रकृति होने पर भी अपने बुद्धि-चातुर्य से स्थिति को सम्भाल लेने वाला होगा। छोटी-छोटी एवं मामूली बातों को उपेक्षा की दृष्टि से देखने वाला होगा तथा बड़े-बड़े कामों को भी अपने उद्यम द्वारा पूरा करने से तत्पर हो जाएगा। भाई-बन्धु होने पर भी उनका सुख कम रहता है। उच्चाभिलाषी होने के कारण प्रत्येक कार्य-व्यवसाय को बड़े पैमाने एवं उच्चस्तर पर करना पसन्द करेगा। उच्चस्तरीय, वैभवशाली एवं रईसी जीवन-यापन करने की प्रबल इच्छा रखेंगे जिसके कारण अपनी सीमा से बढ़कर भी खर्च कर डालते हैं। इस लग्न वाले जातक का बाह्य रूप में आकर्षक रूप एवं अच्छा स्वास्थ्य रहता है। **शुभ नग माणिक्य है। सिंह लग्न (राशि) वालों को सूर्य उपासना** करनी चाहिए। भाग्योन्नति वर्ष १६, २२, २४, २६, २८, ३२ होते हैं।

कन्या लग्न–कन्या लग्न (राशि) वाले जातक का मध्यम कद, कोमल शरीर, सुन्दर व आकर्षक आँखें, लम्बी नाक, वाणी तेज और बारीक होगी। जातक प्रियभाषी, हर कार्य में सहायक, लज्जाशील प्रकृति, नर्म स्वभाव और नीति के अनुकूल काम करने वाला होगा। कल्पनाशील, सूक्ष्मदर्शी, एवं संवेदनशील (Senstivie) स्वभाव होगा। शान्तचित्त एवं एकान्तप्रिय प्रवृत्ति होगी। परन्तु कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं को ढालने का सामर्थ्य होगा। एक ही समय पर अनेक यात्राएँ एवं विषयों में पारंगत होने की चेष्टा करेगा। संगीत, कला एवं साहित्य की ओर विशेष दिलचस्पी रखेगा। द्विस्वभाव एवं परिवर्तनशील प्रकृति होने के कारण एक विषय पर चिरकाल तक स्थिर नहीं हो पाता। बुध-शुक्र का शुभ योग होने से लेखा-गणित, (Account), संगीत, कला, अध्यापन, लेखन, क्रय-विक्रय आदि की ओर विशेष झुकाव रहेगा तथा सफलता भी होगी। धन की अपेक्षा बौद्धिक कार्यों में विशेष रुचि रहती है। बुद्धिमान, तीव्र स्मरणशक्ति एवं अध्ययनशील प्रकृति होगी। **शुभ नग पन्ना** है। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २५, ३२ तथा ३५, ३६, ४२ वें वर्ष होते हैं.

तुला लग्न–तुला लग्न (राशि) का स्वामी शुक्र है। तुला लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्वेत व सुन्दर वर्ण, मध्यम अथवा लम्बा कद, सौम्य एवं हंसमुख प्रकृति होगी। जातक/जातिका न्यायप्रिय, हंसमुख, व्यवहारशील एवं नीति के अनुसार कार्य करने में कुशल होगा। ईमानदार, मिलनसार, नए-नए मित्र बनाने में कुशल होगा। सौंदर्यानुभूति विशेष होगी, संगीत, कला, नाट्य की ओर विशेष झुकाव होगा। रहन-सहन का ढंग रईसी एवं प्रभावपूर्ण होगा। जातक पर संगीत का प्रभाव जल्दी होगा। **चन्द्र-शुक्र** शुभ हों, तो मानसिक एवं कल्पनाशक्ति प्रबल होगी, परन्तु मन की केन्द्रीय शक्ति बहुत देर तक नहीं रहती। जब तक किसी कार्य में लगा रहे तब तक दिलोजान और मजबूत दिल से करे, परन्तु अपने विचार व योजना में परिवर्तन करने में भी शीघ्र तैयार हो जाएगा। जातक को देश-विदेशों में अनेक स्थानों पर भ्रमण करने के अवसर प्राप्त होते हैं। बुद्धिमान्, तर्कशील, सावधान एवं सतर्क रहने वाला, मध्यस्थता एवं न्याय करने में कुशल, विपरीत योनि (Sex) के प्रति विशेष झुकाव रखे। इनको **हीरा** (Diamond) अथवा **श्वेत मोती शुभ नग** है जोकि किसी सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शानुसार धारण करने चाहिएं। जीवन के २५, २७, ३२, ३३, ३५ एवं ४७वें वर्ष भाग्य वृद्धिकारक होंगे।

वृश्चिक लग्न–वृश्चिक लग्न (राशि) का स्वामी मंगल है। इस लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक सुन्दर मुख वाला, परिश्रमी, अपने सामर्थ्य पर ही भरोसा करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति होगी। **मंगल शुभ** हो तो उत्साही, उदार, परिश्रमी, साहसी, ईमानदार, स्पष्टवादी, परोपकारी, व्यवहार-कुशल, कर्त्तव्यनिष्ठ, दृढ़ संकल्प शक्ति वाला होगा। भाई बहनों अथवा सम्बन्धियों की सहायता कम मिलती है, निजी पुरुषार्थ द्वारा ही निर्वाह योग्य आय के संसाधन जुटा पाते हैं। तनिक विरुद्ध बात हो जाने पर शीघ्र उत्तेजित हो जाएंगे, परन्तु सच्चाई अथवा सुपात्रता की दृष्टि से सुयोग्य जन की सहायता करने में अपने स्वार्थ की भी बलि देने से पीछे नहीं हटेंगे। जातक जिस कार्य को करने का निश्चय कर लेता है, उसे दृढ़तापूर्वक पालन करने का प्रयास करता है। कैमिस्ट, इंजीनियर, वकील, पुलिस, सेना विभाग, अध्यापन, ज्योतिष, अनुसंधानकर्त्ता के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करेंगे। **शुभ नग मूँगा** है। शुभ रंग लाल, संतरी, पीला, हल्का गुलाबी (Pink) है। अपनी आयु के २४, २८, ३२, ३६, ४४वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

धनु लग्न–धनु लग्न (राशि) का स्वामी गुरु है। इस लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक का ऊँचा मस्तक, कान बड़े, लग्न भाव में क्रूर ग्रह होने की स्थिति में सिर मध्य अल्पबाल अथवा गंजा हो सकता है। **गुरु-बुध** की स्थिति शुभ हो तो सौम्य एवं शान्त, सरल स्वभाव, धार्मिक प्रकृत्ति, उदार हृदय, परोपकारी, संवेदनशील, करुणा-दया आदि भावनाओं से युक्त होगा। दूसरों के मनोभावों को जान लेने की विशेष क्षमता होगी, इस लग्न (राशि) प्रभावित व्यक्ति में बौद्धिक एवं मानसिक शक्ति की प्रबलता के साथ-साथ अश्व जैसी तीव्रता, उत्साह एवं उत्तेजना से कार्य करने की क्षमता होगी। द्विस्वभाव राशि के कारण शीघ्र कोई निर्णय नहीं ले पाएं और इनको क्रोध जल्दी नहीं आता, परन्तु जब आता है तो देर तक क्रोधित रहते हैं। अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण कठिन से कठिन समस्याओं को अपने सब, साहस एवं परिश्रम के द्वारा सुलझा लेंगे तथा निजी पुरुषार्थ द्वारा जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति करने वाला, धन, सम्पदा, भूमि-जायदाद व सवारी आदि सुखों को प्राप्त करने में सफल होगा। **मंगल-गुरु** शुभ हो तो उच्च व्यवसायिक विद्या के योग है। शिक्षक, धर्म-प्रचारक, राजनीतिक, वैद्य-डॉक्टर, वकील, पुस्तक व्यवसाय आदि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। **शुभ नग पुखराज** है। अपनी आयु के २३, २७, ३२, ३६वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

मकर लग्न–मकर लग्न (राशि) का स्वामी शनि है। इस लग्न (राशि) में जन्म लेने वाले जातक का मध्यम कद, नयन नक्श तीखे, सुन्दर मुखाकृति, काले घने बाल एवं पतली कमर वाला होगा। जातक गम्भीर, भावुक, हृदय, संवेदनशील, उच्चाभिलाषी, सेवाधर्मी, मननशील एवं धार्मिक प्रवृत्ति वाला होगा। बुध व शुक्र शुभ होने पर व्यवहार-कुशल, गहन विचार एवं सूक्ष्म विश्लेषण के पश्चात् ही महत्त्वपूर्ण निर्णय लेते है। क्षमाशील प्रायः कम होते हैं तथा इन्हें बदले एवं शत्रुता की भावना भुला पाना अत्यन्त कठिन होता है। चर राशि एवं लग्न होने से जातक की मानसिक एवं आत्मिक शक्ति प्रबल होगी। **गुरु-शनि** शुभ हो तो, जातक नर्म स्वभाव (विनम्र), विनयशील, व्यवहार-कुशल, नीति के अनुकूल आचरण करने वाला, तर्कशील, भली-बुरी बात की पहचान करने में कुशल, विश्वसनीय, मित्रता स्थापित करने में अत्यन्त सावधान (Selective) तथा ईमानदार होंगे। तर्क-वितर्क करने में कुशल, अपने विरुद्ध बात को हृदय से भुला पाना कठिन होता है। खांसी तथा वायु रोग से सावधानी बरतें। **शुभ नग नीलम** है। भाग्योन्नति वर्ष २२, २४, २८ एवं ३२, ४६ होते हैं।

कुम्भ लग्न–लग्नेश (राशिपति) शनि शुभ अवस्था में हो तो जातक मध्यम अथवा ऊँचे कद वाला, सुन्दर प्रभावशाली व्यक्तित्त्व होगा। बुद्धिमान, साधन सम्पन्न, तीव्र स्मरण शक्ति एवं गम्भीर प्रकृत्ति वाला होगा। दूसरों के प्रति दयाभाव रखने वाला, परोपकारी मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों के लिए हर प्रकार से सहायक होगा। व्यावहार कुशल, मिलनसार, स्पष्टवादी एवं निस्वार्थ भाव से सेवा करने में तत्पर होगा। जातक स्वाभिमानी, स्वतन्त्रताप्रिय एवं नए-नए मित्र बनाने में भी पीछे नहीं हटेगा। उद्योगी, उद्यमी, परिश्रमी प्रकृति एवं प्रबन्धात्मक योग्यता विशेष होगी एवं उपयुक्त साधन उपलब्ध होने पर देश-विदेशों में जाने के सुअवसर प्राप्त होंगे। महत्त्वकांक्षी होते हुए भी क्रियात्मक दृष्टिकोण रखेंगे तथा अनेक विघ्न-बाधाओं व कठिनाइयों के होने पर भी जीवन में उच्च स्थिति, धन पदादि प्राप्त करने में सफल होंगे। कुम्भ लग्न मे यदि गुरु मित्र क्षेत्री या शुभ में हो तो जातक उच्चाधिकारी, उच्चपदासीन, क्रय-विक्रय, प्रोफेसर, जज-वकील अथवा उच्च एवं धनी-व्यापारी होगा, प्रारम्भिक जीवन में आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष होगा। आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष व कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। **शुभ नग नीलम** है। **स्त्रियों के लिए, पुखराज शुभ** होगा।

मीन लग्न–मीन लग्न (राशि) का स्वामी गुरु है। मीन लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक बुद्धिमान्, गम्भीर एवं सौम्य प्रकृति, परोपकारी कार्य करने में तत्पर, ईमानदार, सत्यप्रिय, धार्मिक, धर्म-कर्म एवं फिलास्फी, साहित्य एवं गूढ़ विद्याओं की ओर विशेष अभिरुचि रखेगा। उच्चाभिलाषी, उच्चाकांक्षी एवं स्वाभिमानी प्रकृति, अपनी मान-मर्यादा एवं प्रतिष्ठा का विशेष ध्यान रखें। सेवाभाव रखने वाला, तीव्र बुद्धि, परिश्रमी, उद्यमी, दूरदर्शी, व्यवहार कुशल एवं नीति के अनुसार आचरण करने वाला, विश्वसनीय, ईमानदार तथा हर प्रकार से मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों के लिए सहायक होगा। परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल लेने की अपूर्व क्षमता होगी। देव तुल्य प्रकृति होती है। दूसरों पर न तो अन्याय करेंगे न ही किसी भान्ति अन्याय को सहन करेंगे। जातक कलाकार, चल-चित्र, व्यवसाय, खाने-पीने की वस्तुओं से सम्बन्धित, समाज सुधारक, अध्यापन सम्बन्धी कार्यों में सफल होते हैं। **शुभ नग पुखराज** है। शुभ वैवाहिक जीवन के लिए **पन्ना** धारण करें। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २४, २८, ३३, ३८, ४५ वर्ष होते हैं।

ज्योतिषी तत्त्व-(लेखक पं. पन्ना लाल ज्योतिषी) इसमें भारतीय ज्योतिष के प्रारम्भिक इतिहास से लेकर ज्योतिष सम्बन्धी प्रारम्भिक ज्ञान-सम्पूर्ण बड़ी जन्म पत्री निर्माण शैली, ग्रहों के सप्तवर्गी बलाबल निकालना। भावों, राशियों एवं ग्रहों तथा फलादेश सम्बन्धी मूलभूत सिद्धान्तों को अत्यन्त सरल शैली में प्रस्तुत किया गया है। नवीन संशोधित संस्करण (मूल्य 65 रुपये)

वर्षफल चन्द्रिका-(नवीन संशोधित संस्करण) इसमें अब प्राचीन सूर्य सिद्धान्तीय वर्ष सारणी के अतिरिक्त नवीन वेध सिद्ध सारिणी का भी समावेश किया गया है। जातक फल, प्रश्नफल एवं गोचर फल कथन की विशेष रीतियों का विशद वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त वर्षफल बनाने और वर्ष भर की ठीक-ठाक फलादेश कहने के लिए उत्तम पुस्तक है। **(मूल्य 65 रुपये)**

ज्योतिष तत्त्व फलित (दो खण्डों में) द्वादश लग्नों में ग्रहों के राशिगत एवं भाव सम्बन्धी विस्तृत फलादेश दिए गए हैं। इन दो खण्डों के पास होने से आप एक सफल ज्योतिषी बन सकते हैं। **(मूल्य 250 रु.प्रत्येक)**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जब हमारी घड़ियां बारह (१२) बजाती हैं

विश्व के प्रत्येक देश का मानक समय (स्टैण्डर्ड टाईम) अलग-अलग होता है। एक ही समय में अनेक देशों के स्टैण्डर्ड टाईम में कई घण्टों का अन्तर रहता है। उदाहरणार्थ जब भारत में दोपहर के १२ बजे होते हैं, तो इंग्लैण्ड में प्रातः के साढ़े छः (६.३०) बजे होते हैं। एवं पाकिस्तान में प्रातः के साढ़े ग्यारह (११.३०) बजे होते हैं। ध्यान रहे, अमेरिका, इंग्लैण्ड आदि कई देशों में अप्रैल के प्रथम रविवार से अक्तूबर के प्रथम सप्ताह तक सभी घड़ियों का समय एक घण्टा आगे बढ़ा दिया जाता है। जिससे उनके मानक समयान्तर (Difference of Standard Times) में एक घण्टे का अन्तर पड़ जाता है। नीचे भिन्न-भिन्न कुछ देशों के स्टै. समय और भारत के स्टै. समय का अन्तर स्पष्ट करते हैं। अमेरिका, कैनेडा, रूस आदि अति विस्तृत देशों में एक से अधिक स्टै. टाईम का निर्धारण किया जाता है।

नाम देश	राजधानी	स्टै. समय	नाम देश	राजधानी	स्टै. समय
अमेरिका	वाशिंगटन	१.३० प्रातः	भारत	नई दिल्ली	१२ दुपैहर
अफगानिस्तान	काबुल	११.०० प्रातः	पाकिस्तान	इस्लामाबाद	११.३० दुपै.
आस्ट्रेलिया	कैनबरा	४.३० सायं	फ्रांस	पैरिस	७.३० प्रातः
आयरलैंड	डबलिन	६.३० प्रातः	स्विट्जरलैंड	जिनेवा	७.३० प्रातः
इंडोनेशिया	जकार्ता	१.३० दुपै.	जापान	टोकियो	३.३० दुपै.
इंग्लैंड	लन्दन	६.३० प्रातः	चीन	पीकिंग	२.३० दुपै.
इटली	रोम	७.३० प्रातः	रूस	मास्को	९.३० प्रातः
ईरान	तैहरान	१०.०० प्रातः	सऊदी अरब	मक्का	९.३० प्रातः
ओमान	मस्कट	१०.३० प्रातः	थाईलैंड	बैंकाक	१.३० दुपै.
कीनिया	नैरोबी	९.३० प्रातः	डैनमार्क	कोपनहैगन	७.३० प्रातः
कैनेडा	ओटावा	१.३० प्रातः	श्रीलंका	कोलम्बो	१२.०० दुपै
कुवैत	कुवैत	९.३० प्रातः	सिंगापुर	सिंगापुर	२.०० दुपै.
बंगलादेश	ढाका	१२.३० दुपै.	मलेशिया	कुआलालम्पुर	२.०० दुपै.
द. कोरिया	सियोल	३.३० सायं	न्यूजीलैंड	वलिंगटन	६.३० शाम
ग्रीस	एथसिं	८.३० प्रातः	जर्मनी	बर्लिन	७.३० प्रातः
जांबिया	लुसाका	७.३० प्रातः	जार्डन	अमन	७.३० प्रातः
कतर	अरब	९.३० प्रातः	फिलिपाईन	मनीला	२.३० दुपै.
बर्मा	रंगून	१३.०० दुपै.	रोमानिया	बुखापेस्ट	८.३० प्रातः

चरणामृत ग्रहण करने का मन्त्र—

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधि विनाशनम्।
विष्णोः पादोदकां पीटवा पुनर्जन्म न विद्यते॥

दैनिक लग्न सारणी में वार्षिक संस्कार

आगामी पृष्ठों में दी गई दैनिक लग्न सारणी ३१°। १९ अक्षांश जालन्धर, एवं २३°। ३० अयनांश पर आधारित है। इसमें प्रत्येक लग्न का समाप्तिकाल अंग्रेजी तारीखों के मुताबक, भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में लिखा गया है। सूर्योदयास्त एवं लग्नों के प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल का आधार मुख्यतः अंग्रेजी तारीखें ली गई हैं। चूंकि पृथ्वी की अयनगति में प्रतिवर्ष परिवर्तन होता है, इसके अतिरिक्त तीन वर्षों के पश्चात् हर चौथे वर्ष लीप वर्ष (अर्थात् **फरवरी मास** के दिन २८ की अपेक्षा २९ होते हैं) होने के कारण लग्नों के मान में प्रति वर्ष कुछ स्थूलता आ जाती है। इसको सूक्ष्म बनाने के लिए वार्षिक संस्कार सारणी दी जा रही है। यह वार्षिक संस्कार (+ या −) करने से अभीष्ट सन् एवं तारीख (Desired date and Year) का सूक्ष्मतम लग्न समाप्तिकाल प्राप्त होगा। वार्षिक संस्कार सारणी में लीप वर्ष (Leap Year) दो बार लिखा गया है। जिस सन् ईसवी के साथ (A) का निशान दिया गया है, उस संस्कार तालिका को जनवरी की १ तारीख से २८ फरवरी तक के लिए जाने तथा जिस सन् के साथ (B) का निशान है, उस संस्कार तालिका का प्रयोग १ मार्च से ३१ दिसंबर तक की अवधि के लिए करें।

२९ फरवरी के लग्न मान के लिए २८ फरवरी के प्रत्येक लग्न (कुम्भ से मकर तक) समा. काल में से २/२ मिनट हीन (कम) कर देवे। लीप रहित जिस सन् के आगे कोई निशान नहीं दिया गया उस संस्कार तालिका का प्रयोग **१ जनवरी** से ३१ दिसंबर तक के महीनों के लिए करें। **उदाहरणार्थ**—ता. १६ अप्रैल, १९९५ को मेष लग्न समाप्ति देखना है तो सारिणी में ता. १६ अप्रैल को ७.२९ पर मेष लग्न समाप्त हुआ। अब इसमें वार्षिक संस्कार तालिका से हमें +२ मिनट प्राप्त हुए। अतः सन् १९९५ में मेष लग्न ७.३१ पर समाप्त होगा।

दैनिक लग्न सारणी में वार्षिक संस्कार तालिका

सन् ई.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१९९०	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९९१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
१९९२A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
१९९२B	−१	−१	०	०	०	०	०	०	०	−१	−१	−१
१९९३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१९९४	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९९५	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
१९९६A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
१९९६B	−१	−१	०	०	०	०	०	०	−१	−१	−१	−१
१९९७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
१९९८	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९९९	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२०००A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२०००B	−१	−१	०	०	०	०	०	०	०	−१	−१	—१
२००१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००२	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२००३	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२००४A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००४B	−१	−१	०	०	०	०	०	०	०	−१	−१	—१
२००५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००६	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२००७	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारणी (अप्रैल-मई (वैशाख)) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

अप्रैल	वैशाख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
		घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
14	१	७ ३७	९ ३१	११ ४५	१४ ०८	१६ २८	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ३३	३ १४	४ ३९	६ ००
15	२	७ ३३	९ २७	११ ४२	१४ ०४	१६ २४	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ २९	३ १०	४ ३५	५ ५६
16	३	७ २९	९ २३	११ ३८	१४ ००	१६ २०	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ २५	३ ०६	४ ३१	५ ५२
17	४	७ २५	९ १९	११ ३४	१३ ५७	१६ १७	१८ ३४	२० ५६	२३ १६	१ २१	३ ०२	४ २७	५ ४८
18	५	७ २१	९ १६	११ ३०	१३ ५३	१६ १३	१८ ३१	२० ५२	२३ १२	१ १७	२ ५८	४ २३	५ ४४
19	६	७ १७	९ १२	११ २६	१३ ४९	१६ ०९	१८ २७	२० ४८	२३ ०८	१ १३	२ ५४	४ १९	५ ४०
20	७	७ १३	९ ०८	११ २२	१३ ४५	१६ ०५	१८ २३	२० ४४	२३ ०४	१ ०९	२ ५०	४ १५	५ ३६
21	८	७ ०९	९ ०४	११ १८	१३ ४१	१६ ०१	१८ १९	२० ४०	२३ ०१	१ ०५	२ ४६	४ ११	५ ३२
22	९	७ ०५	९ ००	११ १५	१३ ३७	१५ ५७	१८ १५	२० ३६	२२ ५७	१ ०१	२ ४२	४ ०७	५ २८
23	१०	७ ०१	८ ५६	११ ११	१३ ३३	१५ ५३	१८ ११	२० ३३	२२ ५३	०० ५७	२ ३८	४ ०३	५ २४
24	११	६ ५७	८ ५२	११ ०७	१३ २९	१५ ५०	१८ ०७	२० २९	२२ ४९	०० ५३	२ ३४	३ ५९	५ २१
25	१२	६ ५३	८ ४८	११ ०३	१३ २५	१५ ४६	१८ ०३	२० २५	२२ ४५	०० ४९	२ ३०	३ ५५	५ १७
26	१३	६ ४९	८ ४४	१० ५९	१३ २१	१५ ४२	१७ ५९	२० २१	२२ ४१	०० ४५	२ २७	३ ५१	५ १३
27	१४	६ ४६	८ ४०	१० ५५	१३ १७	१५ ३८	१७ ५५	२० १७	२२ ३७	०० ४१	२ २३	३ ४७	५ ०९
28	१५	६ ४२	८ ३६	१० ५१	१३ १४	१५ ३५	१७ ५१	२० १३	२२ ३३	०० ३७	२ १९	३ ४३	५ ०५
29	१६	६ ३८	८ ३२	१० ४७	१३ १०	१५ ३१	१७ ४७	२० ०९	२२ २९	०० ३३	२ १५	३ ३९	५ ०१
30	१७	६ ३४	८ २८	१० ४३	१३ ०६	१५ २७	७ ४४	२० ०५	२२ २५	०० २९	२ ११	३ ३५	४ ५७
मई	१८	६ ३०	८ २४	१० ३९	१३ ०२	१५ २३	१७ ४०	२० ०१	२२ २१	०० २५	२ ०७	३ ३२	४ ५३
2	१९	६ २६	८ २०	१० ३५	१२ ५८	१५ १९	१७ ३६	१९ ५७	२२ १७	०० २१	२ ०३	३ २८	४ ५०
3	२०	६ २२	८ १६	१० ३१	१२ ५४	१५ १५	१७ ३२	१९ ५३	२२ १३	०० १८	१ ५९	३ २४	४ ४६
4	२१	६ १८	८ १२	१० २७	१२ ५०	१५ ११	१७ २८	१९ ४९	२२ ०९	०० १४	१ ५५	३ २०	४ ४२
5	२२	६ १४	८ ०८	१० २३	१२ ४६	१५ ०७	१७ २४	१९ ४५	२२ ०५	०० १०	१ ५१	३ १६	४ ३८
6	२३	६ १०	८ ०४	१० १९	१२ ४२	१५ ०३	१७ २०	१९ ४१	२२ ०१	०० ०६	१ ४७	३ १२	४ ३४
7	२४	६ ६	८ ००	१० १५	१२ ३८	१४ ५९	१७ १६	१९ ३७	२१ ५७	०० ०२	१ ४३	३ ०८	४ ३०
8	२५	६ २	७ ५६	१० ११	१२ ३४	१४ ५५	१७ १२	१९ ३३	२१ ५३	२३ ५८	१ ३९	३ ०४	४ २६
9	२६	५ ५८	७ ५२	१० ०७	१२ ३०	१४ ५१	१७ ०८	१९ २९	२१ ४९	२३ ५४	१ ३५	३ ००	४ २२
10	२७	५ ५४	७ ४८	१० ०३	१२ २६	१४ ४७	१७ ०४	१९ २५	२१ ४५	२३ ५०	१ ३१	२ ५६	४ १८
11	२८	५ ५०	७ ४५	९ ५९	१२ २२	१४ ४३	१७ ००	१९ २१	२१ ४१	२३ ४६	१ २७	२ ५२	४ १४
12	२९	५ ४६	७ ४१	९ ५५	१२ १८	१४ ३९	१६ ५६	१९ १७	२१ ३७	२३ ४२	१ २३	२ ४८	४ १०
13	३०	५ ४२	७ ३७	९ ५१	१२ १५	१४ ३५	१६ ५२	१९ १३	२१ ३३	२३ ३८	१ १९	२ ४४	४ ०६
14	३१	५ ३९	७ ३३	९ ४७	१२ ११	१४ ३१	१६ ४८	१९ ०९	२१ २९	२३ ३४	१ १५	२ ४०	४ ०२
15	ज्ये.	५ ३५	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी (मई-जून (ज्येष्ठ)) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

मई	जून	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
		घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
15	१	७ २९	९ ४४	१२ ०७	१४ २७	१६ ४५	१९ ०६	२१ २६	२३ ३०	०१ ११	२ ३६	३ ५८	५ ३१
16	२	७ २५	९ ४०	१२ ०३	१४ २३	१६ ४१	१९ ०२	२१ २२	२३ २६	०१ ०७	२ ३२	३ ५४	५ २७
17	३	७ २२	९ ३६	११ ५९	१४ १९	१६ ३७	१८ ५८	२१ १८	२३ २२	०१ ०३	२ २८	३ ५०	५ २३
18	४	७ १८	९ ३२	११ ५५	१४ १५	१६ ३३	१८ ५४	२१ १४	२३ १८	०० ५९	२ २४	३ ४६	५ १९
19	५	७ १४	९ २८	११ ५१	१४ ११	१६ २९	१८ ५०	२१ १०	२३ १५	०० ५६	२ २०	३ ४२	५ १५
20	६	७ १०	९ २४	११ ४७	१४ ०७	१६ २५	१८ ४६	२१ ०६	२३ ११	०० ५२	२ १७	३ ३८	५ ११
21	७	७ ०६	९ २०	११ ४३	१४ ०३	१६ २१	१८ ४२	२१ ०२	२३ ०७	०० ४८	२ १३	३ ३४	५ ०७
22	८	७ ०२	९ १६	११ ३९	१३ ५९	१६ १७	१८ ३८	२० ५८	२३ ०३	०० ४४	२ ०९	३ ३०	५ ०३
23	९	६ ५९	९ १३	११ ३६	१३ ५६	१६ १४	१८ ३५	२० ५५	२३ ००	०० ४१	२ ०५	३ २७	५ ००
24	१०	६ ५५	९ ०९	११ ३२	१३ ५२	१६ १०	१८ ३१	२० ५१	२२ ५६	०० ३७	२ ०२	३ २३	४ ५६
25	११	६ ५१	९ ०५	११ २८	१३ ४८	१६ ०६	१८ २७	२० ४७	२२ ५२	०० ३३	१ ५८	३ १९	४ ५२
26	१२	६ ४७	९ ०१	११ २४	१३ ४४	१६ ०२	१८ २३	२० ४३	२२ ४८	०० २९	१ ५४	३ १५	४ ४८
27	१३	६ ४३	८ ५७	११ २०	१३ ४०	१५ ५८	१८ १९	२० ३९	२२ ४४	०० २५	१ ५०	३ ११	४ ४४
28	१४	६ ३९	८ ५३	११ १६	१३ ३६	१५ [illegible]	१८ १५	२० ३५	२२ ४०	०० २१	१ ४६	३ ०७	४ ४०
29	१५	६ ३५	८ ४९	११ १२	१३ ३२	१५ ५०	१८ ११	२० ३१	२२ ३६	०० १७	१ ४२	३ ०३	४ ३६
30	१६	६ ३१	८ ४५	११ ०८	१३ २८	१५ ४६	१८ ०७	२० २७	२२ ३२	०० १३	१ ३८	२ ५९	४ ३२
31	१७	६ २७	८ ४१	११ ०४	१३ २४	५ ४२	१८ ०३	२० २३	२२ २८	०० ०९	१ ३४	२ ५५	४ २८
जून	१८	६ २३	८ ३७	११ ००	१३ २०	१५ ३८	१७ ५९	२० १९	२२ २४	०० ०५	१ ३०	२ ५१	४ २४
2	१९	६ १९	८ ३३	१० ५६	१३ १६	१५ ३४	१७ ५५	२० १५	२२ २०	०००१	१ २६	२ ४७	४ २०
3	२०	६ १५	८ २९	१० ५२	१३ १२	१५ ३०	१७ ५१	२० ११	२२ १६	२३ ५७	१ २२	२ ४३	४ १६
4	२१	६ ११	८ २५	१० ४८	१३ ०८	१५ २६	१७ ४७	२० ०७	२२ १२	२३ ५३	१ १८	२ ३९	४ १२
5	२२	६ ०७	८ २१	१० ४४	१३ ०४	१५ २२	१७ ४३	२० ०३	२२ ०८	२३ ४९	१ १४	२ ३५	४ ०८
6	२३	६ ०३	८ १८	१० ४१	१३ ०१	१५ १९	१७ ४०	२० ००	२२ ०५	२३ ४६	१ १०	२ ३२	४ ०४
7	२४	५ ५९	८ १४	१० ३७	१२ ५७	१५ १५	१७ ३६	१९ ५६	२२ ०१	२३ ४२	१ ०६	२ २८	४ ०१
8	२५	५ ५५	८ १०	१० ३३	१२ ५३	१५ ११	१७ ३२	१९ ५२	२१ ५७	२३ ३८	१ ०२	२ २४	३ ५७
9	२६	५ ५१	८ ०६	१० २९	१२ ४९	१५ ०७	१७ २८	१९ ४८	२१ ५३	२३ ३४	०० ५८	२ २०	३ ५३
10	२७	५ ४७	८ ०२	१० २५	१२ ४५	१५ ०३	१७ २४	१९ ४४	२१ ४९	२३ ३०	०० ५४	२ १६	३ ४९
11	२८	५ ४३	७ ५८	१० २१	१२ ४१	१४ ५९	१७ २०	१९ ४०	२१ ४५	२३ २६	०० ५०	२ १२	३ ४५
12	२९	५ ३९	७ ५४	१० १७	१२ ३७	१४ ५५	१७ १६	१९ ३६	२१ ४१	२३ २२	०० ४६	२ ०८	३ ४१
13	३०	५ ३५	७ ५०	१० १३	१२ ३३	१४ ५१	१७ १२	१९ ३२	२१ ३७	२३ १८	०० ४२	२ ०४	३ ३७
14	३१	५ ३१	७ ४६	१० ०९	१२ २९	१४ ४७	१७ ०८	१९ २८	२१ ३३	२३ १४	०० ३८	२ ००	३ ३३
15	आ.	५ २८	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारणी (जून-जुलाई (आषाढ़) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

जून	आषाढ़	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	९	७ ४२	१० ०५	१२ २५	१४ ४३	१७ ०४	१९ २४	२१ २९	२३ १०	०० ३५	१ ५६	३ २९	५ २४
16	२	७ ३८	१००१	१२ २१	१४ ३९	१७ ००	१९ २०	२१ २५	२३ ०६	०० ३१	१ ५२	३ २५	५ २०
17	३	७ ३४	९ ५७	१२ १७	१४ ३५	१६ ५६	१९ १६	२१ २१	२३ ०२	००२७	१ ४८	३ २१	५ १६
18	४	७ ३०	९ ५३	१२ १३	१४ ३१	१६ ५२	१९ १२	२१ १७	२२ ५८	०० २३	१ ४४	३ १७	५ १२
19	५	७ २६	९ ४९	१२ ०९	१४ २७	१६ ४८	१९ ०८	२१ १३	२२ ५४	०० १९	१ ४०	३ १३	५ ०८
20	६	७ २२	९ ४५	१२ ०५	१४ २३	१६ ४४	१९ ०४	२१ ०९	२२ ५०	०० १५	१ ३६	३ ०९	५ ०४
21	७	७ १८	९ ४१	१२ ०१	१४ १९	१६ ४०	१९ ००	२१ ०५	२२ ४६	०० ११	१ ३२	३ ०५	५ ००
22	८	७ १५	९ ३७	११ ५७	१४ १५	१६ ३६	१८ ५६	२१ ०१	२२ ४२	०० ०७	१ २८	३ ०१	४ ५६
23	९	७ ११	९ ३३	११ ५३	१४ ११	१६ ३२	१८ ५२	२० ५७	२२ ३८	०० ०३	१ २४	२ ५७	४ ५२
24	१०	७ ०७	९ २९	११ ४९	१४ ०७	१६ २८	१८ ४८	२० ५३	२२ ३४	२३ ५९	१ २०	२ ५३	४ ४८
25	११	७ ०३	९ २५	११ ४५	१४ ०३	१६ २४	१८ ४४	२० ४९	२२ ३०	२३ ५५	१ १६	२ ४९	४ ४४
26	१२	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ५९	१६ २०	१८ ४०	२० ४५	२२ २६	२३ ५१	१ १२	२ ४५	४ ४०
27	१३	६ ५५	९ १८	११ ३८	१३ ५६	१६ १७	१८ ३७	२० ४२	२२ २३	२३ ४८	१ ०९	२ ४२	४ ३७
28	१४	६ ५१	९ १४	११ ३४	१३ ५२	१६ १३	१८ ३३	२० ३८	२२ १९	२३ ४४	१ ०५	२ ३८	४ ३३
29	१५	६ ४७	९ १०	११ ३०	१३ ४८	१६ ०९	१८ २९	२० ३४	२२ १५	२३ ४०	१ ०१	२ ३४	४ २९
30	१६	६ ४३	९ ०६	११ २६	१३ ४४	१६ ०५	१८ २५	२० ३०	२२ ११	२३ ३६	००५७	२ ३०	४ २५
जुला.	१७	६ ३९	९ ०२	११ २२	१३ ४०	१६ ०१	१८ २१	२० २६	२२ ०७	२३ ३२	००५३	२ २६	४ २१
2	१८	६ ३५	८ ५८	११ १८	१३ ३६	१५ ५७	१८ १७	२० २२	२२ ०३	२३ २८	०० ४९	२ २२	४ १७
3	१९	६ ३१	८ ५४	११ १४	१३ ३२	१५ ५३	१८ १३	२० १८	२१ ५९	२३ २४	०० ४५	२ १८	४ १३
4	२०	६ २७	८ ५०	११ १०	१३ २८	१५ ४९	१८ ०९	२० १४	२१ ५५	२३ २०	०० ४१	२ १४	४ ०९
5	२१	६ २३	८ ४६	११ ०६	१३ २४	१५ ४५	१८ ०५	२० १०	२१ ५१	२३ १६	०० ३८	२ ११	४ ०५
6	२२	६ १९	८ ४२	११ ०२	१३ २०	१५ ४१	१८ ०१	२० ०६	२१ ४७	२३ १२	०० ३४	२ ०७	४ ०१
7	२३	६ १६	८ ३९	१० ५९	१३ १७	१५ ३८	१७ ५८	२० ०३	२१ ४४	२३ ०९	०० ३१	२ ०४	३ ५८
8	२४	६ १२	८ ३५	१० ५५	१३ १३	१५ ३४	१७ ५४	१९ ५९	२१ ४०	२३ ०५	०० २७	२ ००	३ ५४
9	२५	६ ०८	८ ३१	१० ५१	१३ ०९	१५ ३०	१७ ५०	१९ ५५	२१ ३६	२३ ०१	००२३	१ ५६	३ ५०
10	२६	६ ०४	८ २७	१० ४७	१३ ०५	१५ २६	१७ ४६	१९ ५१	२१ ३२	२२ ५७	०० १९	१ ५२	३ ४६
11	२७	६ ००	८ २३	१० ४३	१३ ०१	१५ २२	१७ ४२	१९ ४७	२१ २८	२२ ५३	०० १५	१ ४८	३ ४२
12	२८	५ ५६	८ १९	१० ३९	१२ ५७	१५ १८	१७ ३८	१९ ४३	२१ २४	२२ ४९	०० ११	१ ४४	३ ३८
13	२९	५ ५२	८ १५	१० ३५	१२ ५३	१५ १४	१७ ३४	१९ ३९	२१ २०	२२ ४५	०० ०७	१ ४०	३ ३४
14	३०	५ ४८	८ ११	१० ३१	१२ ४९	१५ १०	१७ ३०	१९ ३५	२१ १६	२२ ४१	०० ०३	१ ३६	३ ३०
15	३१	५ ४४	८ ०७	१० २७	१२ ४५	१५ ०६	१७ २६	१९ ३१	२१ १२	२२ ३७	२३ ५९	१ ३२	३ २६
16	श्रा.	५ ४०	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी (जुला.-अग. (श्रावण) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

जुलाई	श्रावण	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	८ ०३	१० २३	१२ ४१	१५ ०२	१७ २२	१९ २७	२१ ०८	२२ ३३	२३ ५५	१ २८	३ २२	५ ३६
17	२	७ ५९	१० १९	१२ ३७	१४ ५८	१७ १८	१९ २३	२१ ०४	२२ २९	२३ ५१	१ २४	३ १८	५ ३२
18	३	७ ५५	१० १५	१२ ३३	१४ ५४	१७ १४	१९ १९	२१ ००	२२ २५	२३ ४७	१ २०	३ १४	५ २८
19	४	७ ५२	१० १२	१२ ३०	१४ ५१	१७ ११	१९ १६	२० ५६	२२ २१	२३ ४३	१ १७	३ १०	५ २४
20	५	७ ४८	१० ०८	१२ २६	१४ ४७	१७ ०७	१९ १२	२० ५२	२२ १८	२३ ४०	१ १३	३ ६	५ २०
21	६	७ ४४	१० ०४	१२ २२	१४ ४३	१७ ०३	१९ ८	२० ४८	२२ १४	२३ ३६	१ ०९	३ ०२	५ १६
22	७	७ ४०	१० ००	१२ १८	१४ ३९	१६ ५९	१९ ०४	२० ४४	२२ १०	२३ ३२	१ ०५	२ ५८	५ १२
23	८	७ ३६	९ ५६	१२ १४	१४ ३५	१६ ५५	१९ ००	२० ४०	२२ ०६	२३ २८	१ ०१	२ ५४	५ ०८
24	९	७ ३२	९ ५२	१२ १०	१४ ३१	१६ ५१	१८ ५६	२० ३६	२२ ०२	२३ २४	० ५७	२ ५०	५ ०४
25	१०	७ २८	९ ४८	१२ ६	१४ २७	१६ ४७	१८ ५२	२० ३२	२१ ५८	२३ २०	० ५३	२ ४६	५ ००
26	११	७ २४	९ ४४	१२ ०२	१४ २४	१६ ४४	१८ ४८	२० २९	२१ ५४	२३ १६	० ४९	२ ४२	४ ५६
27	१२	७ २०	९ ४०	११ ५८	१४ २०	१६ ४०	१८ ४४	२० २५	२१ ५०	२३ १२	० ४५	२ ३८	४ ५२
28	१३	७ १६	९ ३६	११ ५५	१४ १६	१६ ३६	१८ ४०	२० २१	२१ ४६	२३ ०८	० ४१	२ ३४	४ ४९
29	१४	७ १२	९ ३२	११ ५१	१४ १२	१६ ३२	१८ ३६	२० १७	२१ ४२	२३ ०४	० ३७	२ ३०	४ ४५
30	१५	७ ०८	९ २८	११ ४७	१४ ८	१६ २८	१८ ३२	२० १३	२१ ३८	२३ ००	० ३३	२ २७	४ ४१
31	१६	७ ०४	९ २४	११ ४३	१४ ०४	१६ २५	१८ २८	२० ९	२१ ३४	२२ ५६	० २९	२ २३	४ ३७
अग.	१७	७ ००	९ २०	११ ३९	१४ ००	१६ २१	१८ २४	२० ०५	२१ ३०	२२ ५२	० २५	२ १९	४ ३३
2	१८	६ ५६	९ १६	११ ३५	१३ ५६	१६ १७	१८ २०	२० ०१	२१ २६	२२ ४८	० २१	२ १५	४ २९
3	१९	६ ५२	९ १२	११ ३१	१३ ५२	१६ १३	१८ १६	१९ ५७	२१ २२	२२ ४४	० १७	२ ११	४ २५
4	२०	६ ४८	९ ०९	११ २७	१३ ४८	१६ ९	१८ १२	१९ ५३	२१ १८	२२ ४१	० १३	२ ०७	४ २१
5	२१	६ ४४	९ ०५	११ २४	१३ ४५	१६ ५	१८ ९	१९ ५०	२१ १४	२२ ३८	० १०	२ ०४	४ १७
6	२२	६ ४०	९ ०१	११ २०	१३ ४१	१६ ०१	१८ ५	१९ ४६	२१ ११	२२ ३४	० ०६	२ ००	४ १४
7	२३	६ ३७	८ ५७	११ १६	१३ ३७	१५ ५७	१८ ०१	११ ४२	२१ ७	२२ ३०	०.०२	१ ५६	४ १०
8	२४	६ ३३	८ ५३	११ १२	१३ ३३	१५ ५४	१७ ५७	१९ ३९	२१ ०३	२२ २६	२३ ५८	१ ५२	४ ०६
9	२५	६ २९	८ ४९	११ ८	१३ २९	१५ ५०	१७ ५३	१९ ३५	२० ५९	२२ २२	२३ ५४	१ ४८	४ ०२
10	२६	६ २५	८ ४५	११ ४	१३ २५	१५ ४६	१७ ४९	१९ ३१	२० ५५	२२ १८	२३ ५०	१ ४४	३ ५८
11	२७	६ २१	८ ४१	११ ००	१३ २१	१५ ४२	१७ ४५	१९ २७	२० ५१	२२ १४	२३ ४६	१ ४०	३ ५४
12	२८	६ १७	८ ३७	१० ५६	१३ १७	१५ ३८	१७ ४१	१९ २३	२० ४८	२२ १०	२३ ४२	१ ३७	३ ५०
13	२९	६ १३	८ ३३	१० ५२	१३ १३	१५ ३४	१७ ३७	१९ १९	२० ४४	२२ ०६	२३ ३८	१ ३३	३ ४७
14	३०	६ ०९	८ २९	१० ४८	१३ ०९	१५ ३०	१७ ३३	१९ १५	२० ४०	२२ ०२	२३ ३४	१ २९	३ ४३
15	३१	६ ०५	८ २५	१० ४४	१३ ०५	१५ २६	१७ २९	१९ ११	२० ३६	२१ ५८	२३ ३०	१ २५	३ ३९
16	३२	६ ०१	८ २१	१० ४०	१३ ०१	१५ २२	१७ २५	१९ ०७	२० ३२	२१ ५४	२३ २६	१ २१	३ ३५
17	भाद्र	५ ५७	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारणी (अग.-सितं. (भाद्रपद) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

अगस्त	भाद्रपद	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
17	१	८ १७	१० ३६	१२ ५७	१५ १८	१७ २१	१९ ०३	२० २८	२१ ५०	२३ २२	१ १७	३ ३१	५ ५३
18	२	८ १३	१० ३३	१२ ५३	१५ १४	१७ १७	१८ ५९	२० २४	२१ ४६	२३ १८	१ १३	३ २७	५ ४९
19	३	८ ९	१० २९	१२ ४९	१५ १०	१७ १३	१८ ५५	२० २०	२१ ४२	२३ १४	१ ०९	३ २३	५ ४५
20	४	८ ६	१० २५	१२ ४६	१५ ०६	१७ ०९	१८ ५१	२० १६	२१ ३८	२३ १०	१ ०५	३ १९	५ ४१
21	५	८ ०२	१० २१	१२ ४२	१५ ०२	१७ ०६	१८ ४७	२० १२	२१ ३४	२३ ०७	१ ०१	३ १५	५ ३७
22	६	७ ५८	१० १७	१२ ३८	१४ ५८	१७ ०२	१८ ४४	२० ८	२१ ३०	२३ ०३	० ५७	३ ११	५ ३३
23	७	७ ५४	१० १३	१२ ३४	१४ ५४	१६ ५८	१८ ४०	२० ४	२१ २६	२२ ५९	० ५३	३ ०७	५ २९
24	८	७ ५०	१० ०९	१२ ३०	१४ ५०	१६ ५४	१८ ३६	२० ०१	२१ २२	२२ ५५	० ५०	३ ०३	५ २५
25	९	७ ४६	१० ५	१२ २६	१४ ४६	१६ ५०	१८ ३२	१९ ५७	२१ १९	२२ ५१	० ४६	३ ००	५ २२
26	१०	७ ४२	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४६	१८ २८	१९ ५३	२१ १५	२२ ४७	० ४२	२ ५६	५ १८
27	११	७ ३८	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४३	१८ २४	१९ ४९	२१ ११	२२ ४३	० ३८	२ ५२	५ १४
28	१२	७ ३४	९ ५३	१२ १५	१४ ३५	१६ ३९	१८ २०	१९ ४५	२१ ७	२२ ३९	० ३४	२ ४८	५ १०
29	१३	७ ३०	९ ४९	१२ ११	१४ ३१	१६ ३५	१८ १६	१९ ४१	२१ ०३	२२ ३५	० ३०	२ ४४	५ ६
30	१४	७ २६	९ ४५	१२ ०७	१४ २७	१६ ३१	१८ १२	१९ ३७	२० ५९	२२ ३१	० २६	२ ४०	५ ०२
31	१५	७ २२	९ ४१	१२ ०३	१४ २३	१६ २७	१८ ०८	१९ ३३	२० ५५	२२ २७	० २२	२ ३६	४ ५८
सितं.	१६	७ १८	९ ३७	११ ५९	१४ १९	१६ २३	१८ ०४	१९ २९	२० ५१	२२ २३	० १८	२ ३२	४ ५४
2	१७	७ १४	९ ३४	११ ५५	१४ १५	१६ १९	१८ ००	१९ २५	२० ४७	२२ १९	० १४	२ २८	४ ५०
3	१८	७ १०	९ ३०	११ ५१	१४ ११	१६ १५	१७ ५६	१९ २१	२० ४३	२२ १६	० १०	२ २४	४ ४६
4	१९	७ ०६	९ २६	११ ४७	१४ ०७	१६ ११	१७ ५२	१९ १७	२० ३९	२२ १२	० ६	२ २०	४ ४२
5	२०	७ ०२	९ २२	११ ४३	१४ ०३	१६ ०७	१७ ४८	१९ १३	२० ३५	२२ ८	० ०२	२ १६	४ ३८
6	२१	६ ५९	९ १८	११ ३९	१३ ५९	१६ ०३	१७ ४४	१९ ९	२० ३१	२२ ०४	२३ ५८	२ १२	४ ३४
7	२२	६ ५५	९ १४	११ ३५	१३ ५५	१५ ५९	१७ ४०	१९ ५	२० २७	२२ ००	२३ ५४	२ ०८	४ ३०
8	२३	६ ५१	९ १०	११ ३१	१३ ५१	१५ ५५	१७ ३६	१९ ०१	२० २३	२१ ५६	२३ ५०	२ ०४	४ २६
9	२४	६ ४७	९ ०६	११ २७	१३ ४७	१५ ५१	१७ ३२	१८ ५७	२० १९	२१ ५२	२३ ४६	२ ००	४ २२
10	२५	६ ४३	९ ०२	११ २३	१३ ४३	१५ ४७	१७ २८	१८ ५३	२० १५	२१ ४८	२३ ४२	१ ५६	४ १८
11	२६	६ ३९	८ ५८	११ १९	१३ ३९	१५ ४३	१७ २४	१८ ४९	२० ११	२१ ४४	२३ ३८	१ ५२	४ १४
12	२७	६ ३५	८ ५४	११ १५	१३ ३५	१५ ३९	१७ २०	१८ ४५	२० ७	२१ ४०	२३ ३४	१ ४८	४ १०
13	२८	६ ३१	८ ५०	११ ११	१३ ३१	१५ ३५	१७ १६	१८ ४१	२० ०३	२१ ३६	२३ ३०	१ ४४	४ ६
14	२९	६ २७	८ ४६	११ ७	१३ २७	१५ ३१	१७ १२	१८ ३७	१९ ५९	२१ ३२	२३ २६	१ ४०	४ ०२
15	३०	६ २३	८ ४२	११ ०३	१३ २३	१५ २७	१७ ०८	१८ ३३	१९ ५५	२१ २८	२३ २२	१ ३६	३ ५८
16	३१	६ १९	८ ३८	१० ५९	१३ १९	१५ २३	१७ ०४	१८ २९	१९ ५१	२१ २४	२३ १८	१ ३२	३ ५४
17	आ.	६ १५	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी (सितं.-अक्तू. (आश्विन) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

सितंबर	आश्विन	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
17	१	८ ३४	१० ५५	१३ १५	१५ १९	१७ ००	१८ २५	१९ ४७	२१ २०	२३ १४	१ २८	३ ५१	६ ११
18	२	८ ३०	१० ५१	१३ ११	१५ १५	१६ ५६	१८ २१	१९ ४३	२१ १६	२३ १०	१ २४	३ ४७	६ ०७
19	३	८ २६	१० ४७	१३ ०७	१५ ११	१६ ५२	१८ १७	१९ ३९	२१ १२	२३ ०६	१ २०	३ ४३	६ ०३
20	४	८ २२	१० ४३	१३ ०३	१५ ०७	१६ ४८	१८ १३	१९ ३५	२१ ०८	२३ ०२	१ १६	३ ३९	५ ५९
21	५	८ १८	१० ३९	१२ ५९	१५ ०३	१६ ४४	१८ ०९	१९ ३१	२१ ०४	२२ ५८	१ १२	३ ३५	५ ५५
22	६	८ १४	१० ३५	१२ ५५	१४ ५९	१६ ४०	१८ ०५	१९ २७	२१ ००	२२ ५४	१ ०८	३ ३१	५ ५१
23	७	८ १०	१० ३१	१२ ५१	१४ ५५	१६ ३६	१८ ०१	१९ २३	२० ५६	२२ ५०	१ ०४	३ २७	५ ४७
24	८	८ ६	१० २७	१२ ४७	१४ ५१	१६ ३२	१७ ५७	१९ १९	२० ५२	२२ ४६	१ ००	३ २३	५ ४३
25	९	८ ०२	१० २३	१२ ४३	१४ ४७	१६ २८	१७ ५३	१९ १५	२० ४८	२२ ४२	० ५७	३ १९	५ ३९
26	१०	७ ५८	१० २०	१२ ४०	१४ ४४	१६ २५	१७ ५०	१९ १२	२० ४४	२२ ३८	० ५३	३ १५	५ ३५
27	११	७ ५४	१० १६	१२ ३६	१४ ४०	१६ २१	१७ ४६	१९ ८	२० ४०	२२ ३५	० ४९	३ ११	५ ३१
28	१२	७ ५०	१० १२	१२ ३२	१४ ३६	१६ १७	१७ ४२	१९ ०४	२० ३६	२२ ३१	० ४५	३ ०७	५ २७
29	१३	७ ४६	१० ०८	१२ २८	१४ ३२	१६ १३	१७ ३८	१९ ००	२० ३२	२२ २७	० ४१	३ ०३	५ २३
30	१४	७ ४२	१० ०४	१२ २४	१४ २८	१६ ०९	१७ ३४	१८ ५६	२० २८	२२ २३	० ३७	२ ५९	५ १९
अक्तू	१५	७ ३८	१० ०	१२ २०	१४ २४	१६ ०५	१७ ३०	१८ ५२	२० २४	२२ १९	० ३३	२ ५५	५ १५
2	१६	७ ३४	९ ५६	१२ १६	१४ २०	१६ ०१	१७ २६	१८ ४८	२० २१	२२ १५	० २९	२ ५२	५ ११
3	१७	७ ३०	९ ५२	१२ १२	१४ १६	१५ ५७	१७ २२	१८ ४४	२० १७	२२ ११	० २५	२ ४८	५ ०७
4	१८	७ २६	९ ४८	१२ ०८	१४ १२	१५ ५३	१७ १८	१८ ४०	२० १३	२२ ०७	० २१	२ ४४	५ ०३
5	१९	७ २२	९ ४४	१२ ०४	१४ ८	१५ ४९	१७ १४	१८ ३६	२० ०९	२२ ०३	० १७	२ ४०	५ ००
6	२०	७ १८	९ ४०	१२ ००	१४ ४	१५ ४५	१७ १०	१८ ३२	२० ०५	२१ ५९	० १३	२ ३६	४ ५६
7	२१	७ १४	९ ३६	११ ५६	१४ ००	१५ ४१	१७ ०६	१८ २८	२० ०१	२१ ५५	० ०९	२ ३३	४ ५२
8	२२	७ १०	९ ३२	११ ५२	१३ ५६	१५ ३७	१७ ०२	१८ २४	१९ ५७	२१ ५१	० ०५	२ २९	४ ४८
9	२३	७ ०६	९ २८	११ ४८	१३ ५२	१५ ३३	१६ ५८	१८ २०	१९ ५३	२१ ४७	० ०१	२ २५	४ ४४
10	२४	७ ०३	९ २५	११ ४५	१३ ४९	१५ ३०	१६ ५५	१८ १७	१९ ४९	२१ ४४	२३ ५८	२ २१	४ ४१
11	२५	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ४५	१५ २६	१६ ५१	१८ १३	१९ ४५	२१ ४०	२३ ५४	२ १७	४ ३७
12	२६	६ ५५	९ १७	११ ३७	१३ ४१	१५ २२	१६ ४७	१८ ९	१९ ४१	२१ ३२	२३ ४६	२ ०९	४ २९
13	२७	६ ५१	९ १३	११ ३३	१३ ३७	१५ १८	१६ ४३	१८ ०५	१९ ३७	२१ २८	२३ ४२	२ ०५	४ २५
14	२८	६ ४७	९ ०९	११ २९	१३ ३३	१५ १४	१६ ३९	१८ ०१	१९ ३३	२१ २४	२३ ३८	२ ०१	४ २१
15	२९	६ ४३	९ ०५	११ २५	१३ २९	१५ १०	१६ ३५	१७ ५७	१९ २९	२१ २०	२३ ३४	१ ५७	४ १७
16	३०	६ ३९	९ ०१	११ २१	१३ २५	१५ ०६	१६ ३१	१७ ५३	१९ २५	२१ १६	२३ ३०	१ ५३	४ १३
17	का.	६ ३५	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारणी (अक्तू-नवं. (कार्तिक)) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

अक्तूबर	कार्तिक	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
17	१	८ ५७	११ १७	१३ २१	१५ ०२	१६ २७	१७ ४९	१९ २१	२१ १६	२३ ३०	१ ५३	४ १३	६ ३१
18	२	८ ५३	११ १३	१३ १७	१४ ५८	१६ २३	१७ ४५	१९ १७	२१ १२	२३ २६	१ ४९	४ ०९	६ २७
19	३	८ ४९	११ ०९	१३ १३	१४ ५४	१६ १९	१७ ४१	१९ १३	२१ ०८	२३ २२	१ ४५	४ ०५	६ २३
20	४	८ ४५	११ ०५	१३ ०९	१४ ५०	१६ १५	१७ ३७	१९ ०९	२१ ०४	२३ १८	१ ४१	४ ०१	६ १९
21	५	८ ४१	११ ०१	१३ ०५	१४ ४६	१६ ११	१७ ३३	१९ ०५	२१ ००	२३ १४	१ ३७	३ ५७	६ १५
22	६	८ ३७	१० ५७	१३ ०१	१४ ४२	१६ ०७	१७ २९	१९ ०१	२० ५६	२३ १०	१ ३३	३ ५३	६ ११
23	७	८ ३३	१० ५३	१२ ५७	१४ ३८	१६ ०३	१७ २५	१८ ५७	२० ५२	२३ ०७	१ २९	३ ५०	६ ७
24	८	८ २९	१० ४९	१२ ५३	१४ ३४	१५ ५९	१७ २१	१८ ५३	२० ४८	२३ ०३	१ २५	३ ४६	६ ४
25	९	८ २६	१० ४६	१२ ५०	१४ ३०	१५ ५५	१७ १८	१८ ५०	२० ४४	२२ ५९	१ २२	३ ४२	६ ००
26	१०	८ २२	१० ४२	१२ ४६	१४ २७	१५ ५२	१७ १४	१८ ४६	२० ४१	२२ ५५	१ १८	३ ३९	५ ५६
27	११	८ १८	१० ३८	१२ ४२	१४ २३	१५ ४८	१७ १०	१८ ४२	२० ३७	२२ ५१	१ १४	३ ३५	५ ५२
28	१२	८ १४	१० ३४	१२ ३८	१४ १९	१५ ४४	१७ ०६	१८ ३८	२० ३३	२२ ४७	१ १०	३ ३१	५ ४८
29	१३	८ १०	१० ३०	१२ ३४	१४ १५	१५ ४०	१७ ०२	१८ ३४	२० २९	२२ ४३	१ ०६	३ २७	५ ४४
30	१४	८ ०६	१० २६	१२ ३०	१४ ११	१५ ३६	१६ ५८	१८ ३०	२० २५	२२ ३९	१ ०२	३ २३	५ ४१
31	१५	८ ०२	१० २२	१२ २६	१४ ०७	१५ ३२	१६ ५४	१८ २६	२० २१	२२ ३५	० ५८	३ १९	५ ३७
नवं.	१६	७ ५८	१० १८	१२ २२	१४ ०३	१५ २८	१६ ५०	१८ २२	२० १७	२२ ३१	० ५४	३ १५	५ ३३
2	१७	७ ५४	१० १४	१२ १८	१३ ५९	१५ २४	१६ ४६	१८ १८	२० १३	२२ २७	० ५०	३ ११	५ २९
3	१८	७ ५०	१० १०	१२ १४	१३ ५५	१५ २०	१६ ४२	१८ १५	२० ०९	२२ २३	० ४६	३ ०७	५ २५
4	१९	७ ४६	१० ०६	१२ १०	१३ ५१	१५ १६	१६ ३८	१८ ११	२० ०५	२२ १९	० ४२	३ ०३	५ २१
5	२०	७ ४२	१० ०२	१२ ०६	१३ ४७	१५ १२	१६ ३४	१८ ०७	२० ०१	२२ १५	० ३८	२ ५९	५ १७
6	२१	७ ३८	९ ५८	१२ ०२	१३ ४३	१५ ०८	१६ ३०	१८ ०३	१९ ५७	२२ ११	० ३४	२ ५५	५ १३
7	२२	७ ३५	९ ५४	११ ५८	१३ ३९	१५ ०४	१६ २६	१७ ५९	१९ ५३	२२ ०७	० ३०	२ ५१	५ ९
8	२३	७ ३१	९ ५०	११ ५४	१३ ३५	१५ ००	१६ २२	१७ ५५	१९ ४९	२२ ०३	० २६	२ ४७	५ ५
9	२४	७ २७	९ ४६	११ ५०	१३ ३१	१४ ५६	१६ १८	१७ ५१	१९ ४५	२१ ५९	० २२	२ ४३	५ ०१
10	२५	७ २३	९ ४२	११ ४६	१३ २७	१४ ५२	१६ १४	१७ ४७	१९ ४२	२१ ५६	० १८	२ ३९	४ ५७
11	२६	७ १९	९ ३८	११ ४२	१३ २४	१४ ४९	१६ ११	१७ ४३	१९ ३८	२१ ५२	० १४	२ ३५	४ ५३
12	२७	७ १५	९ ३४	११ ३९	१३ २०	१४ ४५	१६ ०७	१७ ३९	१९ ३४	२१ ४८	० ११	२ ३१	४ ४९
13	२८	७ ११	९ ३१	११ ३५	१३ १६	१४ ४१	१६ ०३	१७ ३५	१९ ३०	२१ ४४	० ०७	२ २७	४ ४५
14	२९	७ ०७	९ २७	११ ३१	१३ १२	१४ ३७	१५ ५९	१७ ३१	१९ २६	२१ ४०	० ०३	२ २३	४ ४१
15	३०	७ ०३	९ २३	११ २७	१३ ०८	१४ ३३	१५ ५५	१७ २७	१९ २२	२१ ३६	२३ ५९	२ १९	४ ३७
16	मा.	६ ५९	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी (नवं.-दिसं. (मार्गशीर्ष)) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

नवम्बर	मार्ग.	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	९ १९	११ २३	१३ ०४	१४ २९	१५ ५१	१७ २३	१९ १८	२१ ३२	२३ ५५	२ १५	४ ३३	६ ५५
17	२	९ १५	११ १९	१३ ००	१४ २५	१५ ४७	१७ १९	१९ १४	२१ २८	२३ ५१	२ ११	४ २९	६ ५१
18	३	९ ११	११ १५	१२ ५६	१४ २१	१५ ४३	१७ १५	१९ १०	२१ २४	२३ ४७	२ ०७	४ २५	६ ४७
19	४	९ ०७	११ ११	१२ ५२	१४ १७	१५ ३९	१७ ११	१९ ०६	२१ २०	२३ ४३	२ ०३	४ २१	६ ४३
20	५	९ ०३	११ ०७	१२ ४८	१४ १३	१५ ३५	१७ ०७	१९ ०२	२१ १६	२३ ३९	१ ५९	४ १७	६ ३९
21	६	८ ५९	११ ०३	१२ ४४	१४ ०९	१५ ३१	१७ ०३	१८ ५८	२१ १२	२३ ३५	१ ५५	४ १३	६ ३५
22	७	८ ५५	१० ५९	१२ ४०	१४ ०५	१५ २७	१७ ००	१८ ५५	२१ ०९	२३ ३१	१ ५२	४ १०	६ ३२
23	८	८ ५१	१० ५५	१२ ३६	१४ ०१	१५ २३	१६ ५६	१८ ५१	२१ ०५	२३ २७	१ ४८	४ ६	६ २८
24	९	८ ४७	१० ५१	१२ ३२	१३ ५७	१५ १९	१६ ५२	१८ ४७	२१ ०१	२३ २३	१ ४४	४ ०२	६ २४
25	१०	८ ४४	१० ४८	१२ २९	१३ ५४	१५ १६	१६ ४८	१८ ४३	२० ५७	२३ १९	१ ४०	३ ५८	६ २०
26	११	८ ४०	१० ४४	१२ २५	१३ ५०	१५ १२	१६ ४४	१८ ३९	२० ५३	२३ १६	१ ३६	३ ५४	६ १६
27	१२	८ ३६	१० ४०	१२ २१	१३ ४६	१५ ०८	१६ ४०	१८ ३५	२० ४९	२३ १२	१ ३२	३ ५०	६ १२
28	१३	८ ३२	१० ३६	१२ १७	१३ ४२	१५ ०४	१६ ३६	१८ ३१	२० ४५	२३ ०८	१ २८	३ ४६	६ ०८
29	१४	८ २८	१० ३२	१२ १३	१३ ३८	१५ ००	१६ ३३	१८ २७	२० ४१	२३ ०५	१ २५	३ ४३	६ ०४
30	१५	८ २४	१० २८	१२ ०९	१३ ३४	१४ ५६	१६ २९	१८ २३	२० ३७	२३ ०१	१ २१	३ ३९	६ ००
दिसं	१६	८ २०	१० २४	१२ ०५	१३ ३०	१४ ५२	१६ २५	१८ १९	२० ३३	२२ ५७	१ १७	३ ३५	५ ५६
2	१७	८ १६	१० २०	१२ ०१	१३ २६	१४ ४८	१६ २१	१८ १५	२० २९	२२ ५३	१ १३	३ ३१	५ ५२
3	१८	८ १२	१० १६	११ ५७	१३ २२	१४ ४४	१६ १७	१८ ११	२० २५	२२ ४९	१ ०९	३ २७	५ ४८
4	१९	८ ०८	१० १२	११ ५३	१३ १८	१४ ४०	१६ १३	१८ ०७	२० २१	२२ ४५	१ ०५	३ २३	५ ४४
5	२०	८ ०४	१० ०८	११ ४९	१३ १४	१४ ३६	१६ ०९	१८ ०३	२० १७	२२ ४१	१ ०१	३ १९	५ ४०
6	२१	८ ००	१० ०४	११ ४५	१३ १०	१४ ३२	१६ ०५	१७ ५९	२० १३	२२ ३७	०० ५७	३ १५	५ ३६
7	२२	७ ५६	१० ००	११ ४१	१३ ०६	१४ २८	१६ ०१	१७ ५५	२० ०९	२२ ३३	०० ५३	३ ११	५ ३२
8	२३	७ ५२	९ ५६	११ ३७	१३ ०२	१४ २४	१५ ५७	१७ ५१	२० ०५	२२ २९	०० ४९	३ ७	५ २८
9	२४	७ ४८	९ ५२	११ ३३	१२ ५८	१४ २०	१५ ५३	१७ ४७	२० ०१	२२ २५	०० ४५	३ ०३	५ २४
10	२५	७ ४५	९ ४९	११ ३०	१२ ५५	१४ १७	१५ ५०	१७ ४४	१९ ५८	२२ २२	०० ४२	३ ००	५ २१
11	२६	७ ४१	९ ४५	११ २६	१२ ५१	१४ १३	१५ ४६	१७ ४०	१९ ५४	२२ १८	०० ३८	२ ५६	५ १७
12	२७	७ ३७	९ ४१	११ २२	१२ ४७	१४ ०९	१५ ४२	१७ ३६	१९ ५०	२२ १४	०० ३४	२ ५२	५ १३
13	२८	७ ३३	९ ३७	११ १८	१२ ४३	१४ ०५	१५ ३८	१७ ३२	१९ ४६	२२ १०	०० ३०	२ ४८	५ ९
14	२९	७ २९	९ ३३	११ १४	१२ ३९	१४ ०१	१५ ३४	१७ २८	१९ ४२	२२ ०६	०० २६	२ ४४	५ ०५
15	३०	७ २५	९ २९	११ १०	१२ ३५	१३ ५७	१५ ३०	१७ २४	१९ ३८	२२ ०२	०० २२	२ ४०	५ ०१
16	पौ.	७ २१	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारणी (दिसं.-जन. (पौष) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

दिसम्बर	पौष	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	९ २५	११ ०६	१२ ३१	१३ ५३	१५ २६	१७ २०	१९ ३४	२१ ५८	०० १८	२ ३६	४ ५७	७ १७
17	२	९ २१	११ २	१२ २८	१३ ४९	१५ २२	१७ १६	१९ ३०	२१ ५४	०० १४	२ ३२	४ ५३	७ १३
18	३	९ १७	१० ५९	१२ २४	१३ ४५	१५ १८	१७ १२	१९ २६	२१ ५०	०० १०	२ २८	४ ४९	७ ९
19	४	९ १३	१० ५५	१२ २०	१३ ४१	१५ १४	१७ ८	१९ २२	२१ ४६	०० ०६	२ २४	४ ४५	७ ५
20	५	९ ९	१० ५१	१२ १६	१३ ३७	१५ १०	१७ ४	१९ १८	२१ ४२	०० ०२	२ २०	४ ४१	७ १
21	६	९ ५	१० ४७	१२ १२	१३ ३३	१५ ६	१७ ००	१९ १४	२१ ३८	२३ ५८	२ १७	४ ३७	६ ५७
22	७	९ ०१	१० ४३	१२ ८	१३ २९	१५ २	१६ ५६	१९ ११	२१ ३४	२३ ५४	२ १३	४ ३३	६ ५३
23	८	८ ५७	१० ३९	१२ ४	१३ २५	१४ ५८	१६ ५२	१९ ०७	२१ ३०	२३ ५०	२ ९	४ २९	६ ४९
24	९	८ ५४	१० ३५	१२ ००	१३ २१	१४ ५४	१६ ४९	१९ ३	२१ २६	२३ ४६	२ ५	४ २५	६ ४५
25	१०	८ ५०	१० ३१	११ ५६	१३ १७	१४ ५०	१६ ४५	१८ ५९	२१ २२	२३ ४२	२ १	४ २१	६ ४२
26	११	८ ४६	१० २७	११ ५२	१३ १४	१४ ४६	१६ ४१	१८ ५५	२१ १८	२३ ३८	१ ५७	४ १७	६ ३८
27	१२	८ ४२	१० २३	११ ४८	१३ १०	१४ ४३	१६ ३७	१८ ५१	२१ १४	२३ ३४	१ ५३	४ १४	६ ३४
28	१३	८ ३८	१० १९	११ ४४	१३ ६	१४ ३९	१६ ३३	१८ ४७	२१ १०	२३ ३०	१ ४९	४ १०	६ ३०
29	१४	८ ३४	१० १५	११ ४०	१३ २	१४ ३५	१६ २९	१८ ४३	२१ ०६	२३ २६	१ ४५	४ ६	६ २६
30	१५	८ ३०	१० ११	११ ३६	१२ ५८	१४ ३१	१६ २५	१८ ३९	२१ ०२	२३ २२	१ ४१	४ २	६ २२
31	१६	८ २६	१० ०७	११ ३२	१२ ५४	१४ २७	१६ २१	१८ ३५	२० ५८	२३ १८	१ ३७	३ ५८	६ १८
जन.	१७	८ २२	१० ०३	११ २८	१२ ५०	१४ २३	१६ १७	१८ ३१	२० ५४	२३ १४	१ ३३	३ ५४	६ १४
2	१८	८ १८	९ ५९	११ २४	१२ ४६	१४ १९	१६ १३	१८ २७	२० ५०	२३ १०	१ २९	३ ५०	६ १०
3	१९	८ १४	९ ५५	११ २०	१२ ४२	१४ १५	१६ ९	१८ २३	२० ४६	२३ ०६	१ २५	३ ४६	६ ६
4	२०	८ १०	९ ५१	११ १६	१२ ३८	१४ ११	१६ ५	१८ १९	२० ४२	२३ ०२	१ २१	३ ४२	६ २
5	२१	८ ६	९ ४७	११ १२	१२ ३४	१४ ०७	१६ १	१८ १५	२० ३८	२२ ५८	१ १७	३ ३८	५ ५८
6	२२	८ ०२	९ ४३	११ ८	१२ ३०	१४ ०३	१५ ५७	१८ ११	२० ३४	२२ ५४	१ १३	३ ३४	५ ५४
7	२३	७ ५८	९ ३९	११ ४	१२ २६	१३ ५९	१५ ५३	१८ ७	२० ३०	२२ ५०	१ ९	३ ३०	५ ५०
8	२४	७ ५४	९ ३५	११ ००	१२ २२	१३ ५५	१५ ४९	१८ ३	२० २६	२२ ४६	१ ५	३ २६	५ ४६
9	२५	७ ५०	९ ३१	१० ५६	१२ १८	१३ ५१	१५ ४५	१७ ५९	२० २२	२२ ४२	१ ०१	३ २२	५ ४२
10	२६	७ ४६	९ २७	१० ५२	१२ १४	१३ ४७	१५ ४१	१७ ५५	२० १८	२२ ३८	०० ५७	३ १८	५ ३८
11	२७	७ ४२	९ २३	१० ४८	१२ १०	१३ ४३	१५ ३७	१७ ५१	२० १४	२२ ३४	०० ५३	३ १४	५ ३४
12	२८	७ ३८	९ १९	१० ४४	१२ ०६	१३ ३९	१५ ३३	१७ ४७	२० १०	२२ ३०	०० ४९	३ १०	५ ३०
13	२९	७ ३४	९ १५	१० ४०	१२ ०२	१३ ३५	१५ २९	१७ ४३	२० ०६	२२ २६	०० ४५	३ ०६	५ २६
14	मा.	७ ३०	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी (जन.-फर. (माघ) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

जनवरी	माघ	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	९ ११	१० ३६	११ ५८	१३ ३१	१५ २५	१७ ३९	२० ०२	२२ २२	०० ४१	३ ०२	५ २२	७ २६
15	२	९ ०७	१० ३२	११ ५४	१३ २७	१५ २१	१७ ३५	१९ ५८	२२ १८	०० ३७	२ ५८	५ १८	७ २२
16	३	९ ०४	१० २९	११ ५१	१३ २४	१५ १८	१७ ३२	१९ ५५	२२ १५	०० ३४	२ ५४	५ १४	७ १८
17	४	९ ००	१० २५	११ ४७	१३ २०	१५ १४	१७ २८	१९ ५१	२२ ११	०० ३०	२ ५०	५ १०	७ १४
18	५	८ ५६	१० २१	११ ४३	१३ १६	१५ १०	१७ २४	१९ ४७	२२ ०७	०० २६	२ ४३	५ ०६	७ १०
19	६	८ ५२	१० १७	११ ३९	१३ १२	१५ ६	१७ २०	१९ ४३	२२ ०३	०० २२	२ ४२	५ ०३	७ ०६
20	७	८ ४८	१० १३	११ ३५	१३ ८	१५ २	१७ १६	१९ ३९	२१ ५९	०० १८	२ ३८	४ ५९	७ ०२
21	८	८ ४४	१० ९	११ ३१	१३ ४	१४ ५८	१७ १२	१९ ३५	२१ ५५	०० १४	२ ३४	४ ५५	६ ५९
22	९	८ ४०	१० ०५	११ २७	१३ ००	१४ ५४	१७ ०८	१९ ३१	२१ ५१	०० १०	२ ३०	४ ५१	६ ५५
23	१०	८ ३६	१० ०१	११ २३	१२ ५६	१४ ५०	१७ ४	१९ २७	२१ ४७	०० ०६	२ २६	४ ४७	६ ५१
24	११	८ ३२	९ ५७	११ १९	१२ ५२	१४ ४६	१७ ००	१९ २४	२१ ४३	०० ०२	२ २३	४ ४३	६ ४७
25	१२	८ २८	९ ५३	११ १५	१२ ४८	१४ ४२	१६ ५६	१९ २०	२१ ३९	२३ ५८	२ १९	४ ३९	६ ४३
26	१३	८ २५	९ ५०	११ १२	१२ ४५	१४ ३९	१६ ५३	१९ १६	२१ ३६	२३ ५५	२ १५	४ ३५	६ ३९
27	१४	८ २१	९ ४६	११ ०८	१२ ४१	१४ ३५	१६ ४९	१९ १२	२१ ३२	२३ ५१	२ ११	४ ३१	६ ३५
28	१५	८ १७	९ ४२	११ ०४	१२ ३७	१४ ३१	१६ ४५	१९ ०८	२१ २८	२३ ४७	२ ०७	४ २७	६ ३१
29	१६	८ १३	९ ३८	११ ००	१२ ३३	१४ २७	१६ ४१	१९ ०४	२१ २४	२३ ४३	२ ०३	४ २३	६ २७
30	१७	८ ०९	९ ३४	१० ५६	१२ २९	१४ २३	१६ ३७	१९ ००	२१ २०	२३ ३९	१ ५९	४ २०	६ २४
31	१८	८ ५	९ ३०	१० ५२	१२ २५	१४ १९	१६ ३३	१८ ५६	२१ १६	२३ ३५	१ ५५	४ १६	६ २०
फर.	१९	८ १	९ २६	१० ४८	१२ २१	१४ १५	१६ २९	१८ ५२	२१ १२	२३ ३१	१ ५१	४ १२	६ १६
2	२०	७ ५७	९ २२	१० ४४	१२ १७	१४ ११	१६ २५	१८ ४८	२१ ०८	२३ २७	१ ४७	४ ०८	६ १२
3	२१	७ ५३	९ १८	१० ४०	१२ १३	१४ ०७	१६ २१	१८ ४४	२१ ०४	२३ २३	१ ४३	४ ०४	६ ८
4	२२	७ ४९	९ १४	१० ३६	१२ ०९	१४ ०३	१६ १७	१८ ४०	२१ ००	२३ १९	१ ३९	४ ००	६ ०४
5	२३	७ ४५	९ १०	१० ३२	१२ ०५	१३ ५९	१६ १३	१८ ३६	२० ५७	२३ १५	१ ३५	३ ५६	६ ००
6	२४	७ ४१	९ ०६	१० २८	१२ ०१	१३ ५५	१६ ०९	१८ ३२	२० ५३	२३ ११	१ ३२	३ ५२	५ ५६
7	२५	७ ३७	९ ०२	१० २४	११ ५७	१३ ५१	१६ ०५	१८ २८	२० ४९	२३ ७	१ २८	३ ४८	५ ५२
8	२६	७ ३३	८ ५८	१० २०	११ ५३	१३ ४७	१६ ०१	१८ २४	२० ४५	२३ ०३	१ २४	३ ४४	५ ४८
9	२७	७ २९	८ ५४	१० १६	११ ४९	१३ ४३	१५ ५७	१८ २१	२० ४१	२२ ५९	१ २०	३ ४०	५ ४४
10	२८	७ २५	८ ५०	१० १२	११ ४५	१३ ३९	१५ ५३	१८ १७	२० ३७	२२ ५५	१ १६	३ ३६	५ ४०
11	२९	७ २१	८ ४६	१० ०८	११ ४१	१३ ३५	१५ ४९	१८ १३	२० ३३	२२ ५१	१ १२	३ ३२	५ ३६
12	३०	७ १७	८ ४२	१० ०४	११ ३७	१३ ३१	१५ ४५	१८ ०९	२० २९	२२ ४७	१ ०८	३ २८	५ ३२
13	फा.	७ १४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

सूर्य संक्रान्तियों में प्रतिवर्ष परिवर्तन के कारण देशी प्रविष्टे एवं अंग्रेज़ी तारीखों में कई बार परस्पर एक दिन का अन्तर पड़ जाता है। सूक्ष्मता के लिए सारिणी का प्रयोग अंग्रेज़ी तारीखानुसार करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारणी फर.-मार्च (फाल्गुन) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

फरवरी	फाल्गुन	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
13	१	८ ३८	९ ००	११ ३३	१३ २७	१५ ४१	१८ ०५	२० २५	२२ ४३	१ ०४	३ २४	५ २८	७ १०
14	२	८ ३४	९ ५६	११ २९	१३ २३	१५ ३७	१८ ०१	२० २१	२२ ३९	१ ००	३ २०	५ २४	७ ०६
15	३	८ ३०	९ ५२	११ २५	१३ १९	१५ ३३	१७ ५७	२० १७	२२ ३५	० ५६	३ १६	५ २०	७ ०२
16	४	८ २६	९ ४८	११ २१	१३ १५	१५ २९	१७ ५३	२० १३	२२ ३१	० ५२	३ १२	५ १६	६ ५८
17	५	८ २२	९ ४४	११ १७	१३ ११	१५ २५	१७ ४९	२० ०९	२२ २७	० ४८	३ ०८	५ १३	६ ५४
18	६	८ १८	९ ४०	११ १३	१३ ०७	१५ २१	१७ ४५	२० ०५	२२ २३	० ४४	३ ०४	५ ०९	६ ५०
19	७	८ १४	९ ३६	११ ०९	१३ ०३	१५ १७	१७ ४१	२० ०१	२२ १९	० ४०	३ ००	५ ०५	६ ४६
20	८	८ ११	९ ३३	११ ०६	१२ ५९	१५ १४	१७ ३७	१९ ५७	२२ १५	० ३६	२ ५६	५ ०१	६ ४२
21	९	८ ०७	९ २९	११ ०२	१२ ५६	१५ १०	१७ ३३	१९ ५३	२२ ११	० ३२	२ ५३	४ ५७	६ ३८
22	१०	८ ०३	९ २५	१० ५८	१२ ५२	१५ ०६	१७ २९	१९ ४९	२२ ०७	० २८	२ ४९	४ ५३	६ ३४
23	११	७ ५९	९ २१	१० ५४	१२ ४८	१५ ०२	१७ २५	१९ ४५	२२ ०३	० २५	२ ४५	४ ४९	६ ३०
24	१२	७ ५६	९ १८	१० ५१	१२ ४५	१४ ५९	१७ २२	१९ ४२	२२ ००	० २२	२ ४२	४ ४६	६ २७
25	१३	७ ५३	९ १५	१० ४८	१२ ४२	१४ ५६	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १९	२ ३९	४ ४३	६ २४
26	१४	७ ५०	९ १२	१० ४५	१२ ३९	१४ ५३	१७ १६	१९ ३६	२१ ५४	० १६	२ ३६	४ ४०	६ २१
27	१५	७ ४७	९ ०९	१० ४२	१२ ३६	१४ ५०	१७ १३	१९ ३३	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ३६	६ १८
28	१६	७ ४३	९ ०५	१० ३८	१२ ३२	१४ ४६	१७ ०९	१९ २९	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ३२	६ १४
29	१७	७ ३९	९ ०१	१० ३४	१२ २८	१४ ४२	१७ ०५	१९ २५	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ २८	६ ११
मार्च	१८	७ ३५	८ ५७	१० ३०	१२ २४	१४ ३८	१७ ०१	१९ २१	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ २५	६ ०७
2	१९	७ ३१	८ ५३	१० २६	१२ २०	१४ ३४	१६ ५७	१९ १७	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ २१	६ ०३
3	२०	७ २८	८ ५०	१० २३	१२ १७	१४ ३१	१६ ५३	१९ १३	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ १७	५ ५९
4	२१	७ २४	८ ४६	१० १९	१२ १३	१४ २७	१६ ४९	१९ ०९	२१ २७	२३ ४९	२ ०९	४ १३	५ ५५
5	२२	७ २०	८ ४२	१० १५	१२ ०९	१४ २३	१६ ४५	१९ ०५	२१ २३	२३ ४६	२ ०५	४ १०	५ ५१
6	२३	७ १६	८ ३८	१० ११	१२ ०५	१४ १९	१६ ४१	१९ ०१	२१ १९	२३ ४२	२ ०१	४ ६	५ ४७
7	२४	७ १२	८ ३४	१० ०७	१२ ०१	१४ १५	१६ ३७	१८ ५७	२१ १६	२३ ३८	१ ५७	४ ०२	५ ४३
8	२५	७ ०८	८ ३०	१० ०३	११ ५७	१४ ११	१६ ३३	१८ ५३	२१ १२	२३ ३४	१ ५३	३ ५८	५ ३९
9	२६	७ ०४	८ २६	९ ५९	११ ५३	१४ ०७	१६ ३०	१८ ५०	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	३ ५४	५ ३५
10	२७	७ ००	८ २२	९ ५५	११ ४९	१४ ०३	१६ २६	१८ ४६	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	३ ५०	५ ३१
11	२८	६ ५६	८ १८	९ ५१	११ ४५	१३ ५९	१६ २३	१८ ४२	२१ ००	२३ २२	१ ४२	३ ४६	५ २७
12	२९	६ ५२	८ १४	९ ४७	११ ४१	१३ ५५	१६ १९	१८ ३९	२० ५६	२३ १९	१ ३८	३ ४२	५ २४
13	३०	६ ४८	८ १०	९ ४३	११ ३७	१३ ५१	१६ १५	१८ ३५	२० ५२	२३ १५	१ ३५	३ ३९	५ २०
14	चैत्र	६ ४४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी मार्च-अप्रैल (चैत्र) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

माह	चैत्र	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	८ ०६	९ ३९	११ ३३	१३ ४७	१६ ११	१८ ३१	२० ४८	२३ ११	१ ३१	३ ३५	५ १६	६ ४०
15	२	८ ०२	९ ३५	११ २९	१३ ४३	१६ ०७	१८ २७	२० ४४	२३ ०७	१ २७	३ ३१	५ १२	६ ३६
16	३	७ ५८	९ ३१	११ २५	१३ ३९	१६ ०३	१८ २३	२० ४०	२३ ०३	१ २३	३ २७	५ ०८	६ ३२
17	४	७ ५४	९ २७	११ २१	१३ ३५	१५ ५९	१८ १९	२० ३६	२२ ५९	१ १९	३ २३	५ ०४	६ २८
18	५	७ ५०	९ २३	११ १७	१३ ३१	१५ ५५	१८ १५	२० ३२	२२ ५५	१ १५	३ १९	५ ००	६ २४
19	६	७ ४६	९ १९	११ १३	१३ २७	१५ ५१	१८ ११	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ १५	४ ५६	६ २०
20	७	७ ४२	९ १५	११ ०९	१३ २४	१५ ४७	१८ ०७	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ ११	४ ५२	६ १६
21	८	७ ३८	९ ११	११ ०५	१३ २०	१५ ४३	१८ ०३	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ ०७	४ ४८	६ १२
22	९	७ ३४	९ ०७	११ ०१	१३ १६	१५ ३९	१७ ५९	२० १६	२२ ३९	० ५९	३ ०३	४ ४४	६ ०८
23	१०	७ ३१	९ ०३	१० ५८	१३ १२	१५ ३५	१७ ५५	२० १२	२२ ३५	० ५५	२ ५९	४ ४०	६ ४
24	११	७ २७	८ ५९	१० ५४	१३ ८	१५ ३१	१७ ५१	२० ०८	२२ ३१	० ५१	२ ५५	४ ३७	६ ००
25	१२	७ २३	८ ५५	१० ५०	१३ ४	१५ २७	१७ ४७	२० ०४	२२ २७	० ४७	२ ५१	४ ३३	५ ५६
26	१३	७ १९	८ ५१	१० ४६	१३ ०	१५ २३	१७ ४३	२० ०१	२२ २३	० ४३	२ ४७	४ २९	५ ५२
27	१४	७ १५	८ ४८	१० ४२	१२ ५६	१५ १९	१७ ३९	१९ ५७	२२ १९	० ३९	२ ४३	४ २५	५ ४८
28	१५	७ ११	८ ४४	१० ३८	१२ ५२	१५ १५	१७ ३५	१९ ५३	२२ १५	० ३५	२ ४०	४ २१	५ ४४
29	१६	७ ०७	८ ४०	१० ३४	१२ ४८	१५ ११	१७ ३१	१९ ४९	२२ ११	० ३१	२ ३६	४ १७	५ ४१
30	१७	७ ०३	८ ३६	१० ३०	१२ ४५	१५ ०७	१७ २७	१९ ४५	२२ ७	० २७	२ ३२	४ १३	५ ३७
31	१८	६ ५९	८ ३२	१० २६	१२ ४१	१५ ०३	१७ २३	१९ ४१	२२ ०३	० २३	२ २८	४ ०९	५ ३३
अप्रै.	१९	६ ५५	८ २८	१० २२	१२ ३७	१४ ५९	१७ १९	१९ ३७	२१ ५९	० १९	२ २४	४ ०५	५ २९
2	२०	६ ५१	८ २४	१० १८	१२ ३३	१४ ५५	१७ १५	१९ ३३	२१ ५५	० १५	२ २०	४ ०१	५ २५
3	२१	६ ४७	८ २०	१० १४	१२ २९	१४ ५१	१७ ११	१९ २९	२१ ५१	० ११	२ १६	३ ५७	५ २१
4	२२	६ ४३	८ १६	१० १०	१२ २५	१४ ४७	१७ ०७	१९ २६	२१ ४७	० ०७	२ १२	३ ५३	५ १७
5	२३	६ ३९	८ १२	१० ०६	१२ २१	१४ ४३	१७ ०३	१९ २२	२१ ४४	० ०४	२ ०८	३ ४९	५ १३
6	२४	६ ३६	८ ०९	१० ०२	१२ १७	१४ ३९	१६ ५९	१९ १८	२१ ४०	२४ ००	२ ०४	३ ४५	५ ०९
7	२५	६ ३२	८ ०५	९ ५९	१२ १३	१४ ३५	१६ ५६	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ ००	३ ४१	५ ०५
8	२६	६ २८	८ ०१	९ ५५	१२ ०९	१४ ३१	१६ ५२	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	१ ५६	३ ३७	५ ०१
9	२७	६ २४	७ ५७	९ ५१	१२ ०५	१४ २७	१६ ४८	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	१ ५२	३ ३३	४ ५८
10	२८	६ २०	७ ५३	९ ४७	१२ ०१	१४ २४	१६ ४४	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	१ ४८	३ २९	४ ५४
11	२९	६ १६	७ ४९	९ ४३	११ ५७	१४ २०	१६ ४०	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ४४	३ २५	४ ५०
12	३०	६ १२	७ ४५	९ ३९	११ ५३	१४ १६	१६ ३६	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ४१	३ २१	४ ४६
13	३१	६ ०८	७ ४१	९ ३५	११ ४९	१४ १२	१६ ३२	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ३७	३ १८	४ ४३
14	वै.	६ ०४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भारत के प्रमुख नगरों में लग्नों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल जानना

इस पंचांग के गत पृष्ठों में जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह जालन्धर के अक्षांश ३१।१९ पर आधारित है। भारत के किसी अन्य नगर में लग्नारम्भ अथवा समाप्तिकाल जानने के लिए नीचे दी गई तालिका में मेष, वृषादि राशियों के नीचे लिखे संस्कार अनुसार जालन्धर सारणी में जमा (+) करने अथवा (—) देने से आपको अभीष्ट तारीख एवं नगर में लग्नों का समाप्तिकाल भा. स्टै. टाईम में ज्ञात हो जाएगा। **उदाहरण स्वरूप**—मान लो आपने १६ जुलाई, २००७ को दिल्ली में कन्या लग्न का समाप्तिकाल जानना है, तो सर्व प्रथम जालन्धर की दैनिक लग्न सारणी में देखने पर हमें १६ जुलाई को कन्या लग्न १२।४१ पर समाप्ति काल लिखा मिला है। तदनन्तर आगे सारणी में **दिल्ली** के आगे कन्या लग्न के नीचे देखने पर हमें —८ मिनट मिले। इन्हें जालन्धर में कन्या ल. समा., १२।४१ (घं. मिं.) में से और घटाने पर हमें **१२।३३ (घं. मिं.)** पर **कन्या लग्न** समाप्ति काल प्राप्त हुआ। **कन्या लग्न** का समाप्ति काल ही **तुला लग्न** का **प्रारम्भकाल** होगा। **नोट**—नीचे **लग्न संस्कार तालिका** में यदि किसी अभीष्ट नगर का नाम न मिले, तो आप अपने निकटस्थ नगर का संस्कार ग्रहण कर सकते हैं। **निधि शर्मा M.Sc.**

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
अमृतसर	+२	+२	+२	+३	+३	+२	+३	+३	+३	+३	+२	+२
अम्बाला	-५	-५	-५	-३	-३	-६	-५	-५	-४	-५	-५	-५
अजमेर	+१२	+१२	+१३	+१०	+६	+४	-१	-३	-४	-१	+६	+१०
अबोहर	+५	+५	+५	+६	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५
अहमदाबाद	+२६	+३०	+३०	+२५	+१७	+७	-१	-५	-४	+२	+११	+१८
अलाहाबाद	-१५	-१२	-१३	-१५	-२१	-२९	-३४	-३७	-३६	-३२	-२६	-२०
अलीगढ़	-४	-३	-३	-५	-७	-१३	-१६	-१७	-१७	-१३	-११	-७
अयोध्या	-१८	-१८	-१५	-१९	-२१	-२५	-२८	-३०	-२८	-२७	-२४	-१६
अलवर	+३	+४	+४	+१	+१	-४	-६	-७	-७	-४	+१	+४
आगरा	-४	-२	-२	-६	-७	-१२	-१५	-१६	-१६	-१३	-१०	-६
अगरतला	-५०	-४७	-४६	-५३	-६०	-६७	-७५	-७८	-७६	-७३	-६४	-५३
इन्दौर	+१३	+१७	+१५	+१०	+३	-८	-१४	-१९	-१७	-१०	-१	+७
ऊना (हि. प्र.)	-३	-३	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-२	-२	-३
उधमपुर	-२	-२	-२	+११	+३	+४	+७	+७	+७	+६	+५	+२
उज्जैन	+१३	+१६	+१४	+८	+०	-७	-१४	-१९	-१७	-१०	-२	+६
उदयपुर	+१९	+२१	+२०	+१५	+७	+२	-४	-८	-६	-१	+६	+१३
करनाल	-५	-६	-५	-५	-५	-६	-६	-७	-७	-५	-४	-३
कालका	-५	-५	-५	-४	-४	-५	-६	-६	-७	-७	-४	-३
कुरुक्षेत्र	-४	-३	-३	-४	-५	-६	-६	-७	-७	-५	-३	-३
करतारपुर	+१	+१	+०	+०	-१	-१	+१	-०	-०	-०	-०	-१
कोटखाई	-७	-७	-७	-७	-७	-८	-७	-७	-७	-६	-६	-७
कोटा	+९	+११	+१०	+५	-१	-६	-११	-१४	-१३	-८	-२	+४
कपूरथला	+१	+१	+०	-०	-०	-१	+०	-०	-०	-०	-०	-१
काठमण्डू	-३२	-३१	-३१	-३०	-३३	-३८	-४०	-४२	-४२	-४०	-३६	-३३
कोलकत्ता	-३७	-३२	-३५	-४०	-४९	-५८	-६४	-६९	-६८	-६१	-५३	-४४
कानपुर	-११	-९	-१०	-१४	-१८	-२२	-२५	-२७	-२६	-२१	-१७	-१३
कांगड़ा	-५	-५	-५	-४	-५	-५	-५	-५	-४	-४	-४	-४
कुल्लू	-७	-७	-७	-६	-६	-६	-५	-४	-४	-४	-५	-५

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
कठुआ	-२	-२	-२	-१	-०	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+१
कटड़ा	+३	+३	+२	+४	+६	+७	+७	+७	+७	+६	+६	+३
किश्तवाड़	-१	-१	-१	-०	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+१	+१
खन्ना (पंजा.)	-२	-३	-३	-२	-२	-३	-३	-३	-३	-२	-२	-३
ग्वालियर	-२	+१	+०	-५	-९	-१२	-१६	-१८	-१७	-१३	-८	-५
गुरदासपुर	-१	-१	-१	+०	+१	+०	+१	+१	+१	+१	+१	+०
गोरखपुर	-२३	-२१	-२२	-२४	-२७	-३२	-३५	-३७	-३६	-३२	-२७	-२४
गुड़गांव	-१	-१	-१	-३	-३	-७	-१०	-११	-११	-९	-६	-४
गौहाटी	-५५	-४८	-५३	-५५	-६१	-६८	-७२	-७५	-७३	-६९	-६४	-६०
गाज़ियाबाद	-२	-१	-१	-२	-२	-७	-९	-११	-११	-९	-६	-३
गंगानगर	+६	+६	+६	+७	+७	+६	+६	+६	+६	+७	+७	+६
गया (बिहार)	-२६	-१८	-२३	-२७	-३३	-४२	-४७	-५१	-४१	-४४	-३७	-३२
चण्डीगढ़	-५	-४	-४	-५	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-५
चिन्तपूर्णी	-२	-१	-२	-२	-३	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-१
चम्बा	-६	-६	-५	-५	-४	-२	+१	+२	+१	+०	+३	-४
जयपुर	+७	+८	+७	+४	+२	-३	-७	-९	-९	-७	-२	+३
ज्वालामुखी	-५	-५	-६	-५	-५	-५	-५	-५	-४	-४	-४	-४
जम्मू	-१	-१	-१	+०	+२	+४	+६	+७	+६	+५	+३	+१
जोधपुर	+१९	+२१	+२०	+१६	+१०	+५	+१	-२	-१	+४	+९	+१३
जीन्द	+०	+२	+१	-१	-३	-५	-६	-७	-७	-५	-४	-१
जैसलमेर	+२६	+२८	+२८	+२३	+१८	+१४	+१०	+९	+१०	+१३	+१७	+२२
झाँसी	-२	+१	+०	-६	-११	-१७	-२२	-२५	-२३	-१८	-१३	-७
जगन्नाथपुरी	-२२	-१६	-१३	-२६	-३७	-४९	-५९	-६४	-६३	-५५	-४४	-३२
दिल्ली	-२	-१	-१	-२	-४	-८	-११	-१२	-१२	-१०	-७	-५
दुर्ग (म. प्र.)	-६	-०	-२	-१०	-१९	-२७	-३७	-४२	-४२	-३१	-२१	-१४
देहरादून	-१०	-९	-९	-९	-९	-११	-१२	-१२	-१३	-११	-९	-९
धर्मशाला	-५	-५	-६	-५	-५	-५	-५	-५	-४	-४	-४	-४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
नाहन(हि.प्र.)	-६	-६	-६	-५	-५	-६	-६	-७	-७	-५	-५	-६
नंगल (पंजा.)	-३	-३	-३	-४	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३
नैनीताल	-१३	-११	-१२	-१४	-१३	-१७	-१८	-२०	-१९	-१७	-१४	-११
नवलगढ़	+७	+९	+९	+८	+६	+३	+१	+२	-२	-१	+४	+४
नवांशहर	-२	-२	-२	-२	-३	-३	-२	-२	-३	-३	-२	-२
नागपुर	+३	+९	+११	+०	-१०	-२१	-३०	-३४	-३३	-२७	-७	-६
नदौन(हि.प्र.)	-३	-३	-३	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३	-३
नाभा (पंजा.)	-२	-१	-१	-२	-२	-२	-३	-३	-२	-२	-२	-२
पटियाला	-३	-२	-२	-३	-३	-३	-५	-५	-४	-३	-३	-३
पानीपत	-६	-६	-६	-६	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-६	-५
पठानकोट	-४	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१
पुंछ	-१	-१	+०	+२	+४	+८	+१२	+१४	+१२	+९	+६	+३
प्रयाग	-१६	-१४	-१५	-१८	-२४	-३०	-३५	-३७	-३७	-३१	-२७	-२१
पूना (महा.)	+२८	+३५	+३७	+२४	+११	-२	-१३	-१९	-१७	-९	+३	+१७
पंचकूला	-५	-५	-५	-४	-४	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-५
पटना	-२९	-२६	-२३	-३०	-३५	-४२	-४७	-४९	-४९	-४६	-४०	-३३
पालमपुर	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-६	-६	-५	-५	-५	-५
फरीदकोट	+३	+४	+४	+३	+३	+२	+४	+३	+३	+३	+२	+२
फगवाड़ा	-१	-१	-१	-१	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१
फाजिल्का	+५	+५	+६	+६	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५
फिरोजपुर	+४	+४	+५	+४	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+३	+३
फरीदाबाद	-३	-२	-२	-३	-५	-९	-१२	-१३	-१३	-११	-८	-६
बटाला	+१	+१	+१	+२	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+१	+१
वाराणसी	-२०	-१६	-१६	-२३	-२६	-३३	-३८	-४१	-४१	-३७	-३२	-२५
बिलासपुर	-५	-५	-५	-४	-४	-५	-४	-४	-४	-३	-३	-४
बंगलौर	+२१	+२९	+२७	+१३	-१	-२१	-३६	-४४	-४१	-२८	-११	+६
बरेली	-११	-१०	-१०	-१३	-१२	-१५	-१७	-१९	-१९	-१७	-१३	-११
बीकानेर	+१३	+१५	+१५	+१४	+१३	+९	+८	+६	+६	+८	+११	+१४
बड़ौदा	+२६	+३०	+२९	+२३	+१६	+७	+२	-५	-५	+१	+११	+११
बुलन्दशहर	-५	-४	-५	-६	-८	-१२	-१४	-१५	-१५	-१४	-११	-८
बरनाला	-१	-१	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-०	-०	-०	-०
विशाखापटनम	-९	-१	+१	-१३	-२६	-४०	-५२	-५८	-५६	-४७	-३४	-२०
भटिण्डा	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+४	+३	+३	+३	+२	+२
भुवनेश्वर	-२३	-१७	-१९	-२८	-३६	-४९	-५८	-६३	-६२	-५४	-४३	-३२
भरतपुर	-२	+०	+०	-३	-६	-१२	-१५	-१७	-१७	-१२	-१०	-५
भोपाल	+६	+१०	+९	+२	-३	-१३	-२०	-२३	-२२	-१७	-९	-१
मेरठ(उ.प्र.)	-५	-३	-४	-५	-४	-७	-१०	-११	-११	-१०	-७	-५

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
मुरादाबाद	-८	-७	-७	-८	-१०	-१४	-१६	-१८	-१७	-१४	-११	-८
मण्डी (हि.प्र.)	-६	-७	-६	-६	-७	-६	-४	-४	-४	-६	-६	-६
मोगा	+१	+१	+१	+२	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+१	+१
मथुरा	-२	+०	-१	-४	-६	-१०	-१२	-१३	-१३	-११	-८	-६
मद्रास	+१०	+१९	+१६	+२	-१३	-३१	-४६	-५५	-५२	-४०	-२३	-०५
मैसूर	+२६	+३६	+३७	+१९	+२	-१७	-३३	-४१	-३९	-२६	-९	+१०
मुक्तसर	+४	+४	+३	+४	+४	+३	+५	+४	+४	+४	+३	+३
मलेरकोटला	-१	-१	-१	-१	-१	-२	+०	-१	-१	-१	-२	-२
मुम्बई	+३१	+३७	+३५	+२५	+१७	+३	-८	-१४	-१२	-३	+९	+२१
रोपड़	-४	-३	-३	-४	-३	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-३
राँची	-२५	-२१	-२३	-२८	-३६	-४५	-५१	-५७	-५५	-४८	-३९	-३१
रायपुर (छत्ती.	-८	-२	-४	-१२	-२१	-२९	-३९	-४४	-४४	-३४	-२३	-१६
रोहतक	-१	+१	+१	-२	-२	-६	-९	-१०	-१०	-८	-५	-३
लुधियाना	-२	-२	-१	-२	-१	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-२
लखनऊ	-१४	-१२	-१२	-१६	-२२	-२४	-३०	-३०	-३०	-२७	-२३	-१८
शिलांग	-५५	-४९	-५२	-५५	-६१	-६९	-७४	-७६	-७५	-७१	-६५	-६१
श्रीनगर	-३	-३	-३	-१	+२	+८	+११	+१२	+११	+७	+४	+१
शिमला	-६	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-५	-७	-७	-६
सोलन	-६	-५	-३	-६	-६	-६	-५	-५	-६	-६	-६	-६
सोनीपत	-२	-२	-२	-२	-३	-७	-१०	-११	-११	-९	-७	-५
सहारनपुर	-६	-५	-५	-६	-६	-७	-८	-९	-९	-७	-५	-६
सुन्दरनगर	-६	-६	-६	-५	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-५
सूरत	+२८	+३३	+३१	+२४	+१५	+४	-४	-९	-८	+१	+१२	+२१
शाहपुर	-४	-४	-५	-५	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३
हरिद्वार	-८	-७	-७	-९	-८	-१०	-११	-११	-१२	-११	-१०	-९
हैदराबाद	+११	+१८	+१५	+५	-७	-२१	-३३	-३९	-३७	-२८	-१५	-१
होशियारपुर	-३	-४	-३	-३	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-२	-३
हमीरपुर	-५	-५	-४	-४	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-४
हाँसी	+२	+२	+३	+२	+०	-४	-५	-७	-५	-४	-१	+२
हिसार	+२	+४	+३	+१	+०	-२	-३	-४	-४	-२	-१	+१

अर्द्ध-शताब्दि पंचांग (दैनिक ग्रह स्पष्ट सहित)

पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़ द्वारा जन्मपत्री निर्माण के लिए उपयोग करने हेतु संवत् २००१ से संवत् २०५० (सन् 1944 से 1993 ई.) तक तैयार किया गया है। दैनिक सूर्योदयास्त, दैनिक ग्रह स्पष्ट, सूर्य, चन्द्रादि ग्रहों के राशि प्रवेश दिए गए हैं। मूल्य-640/- ।

पता—जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर-144008

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पुस्तकों के महासागर में से मोती रूप पुस्तकें वी. पी. द्वारा मंगवाएँ

टैक्निकल पुस्तकें

सट्टे का कल्प वृक्ष (मंदा–तेजी)	100 रु.
मोटर मैकेनिक गाईड	50 रु.
मोटर वाईडिंग	40 रु.
पशु चिकित्सा	40 रु.
विवाहित आनन्द	35 रु.
पत्नी पथ प्रदर्शक	35 रु.
लाटरी गाईड	40 रु.
स्वर लिपि संग्रह	50 रु.
व्यापार रत्न	300 रु.
टेलीविजन वीडियो गाईड	30 रु.
Dictionary (Big)	250 रु.
Dictionary (Med.)	120 रु.
ताश के जादू	40 रु.
स्माल स्केल इण्डस्ट्रीज (बड़ी)	150 रु.
इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स	95 रु.
कम्पयूटर कोर्स (बड़ा)	200 रु.
इलैक्ट्रिक गाईड	120 रु.
फोटोग्राफी व कलर प्रोसेसिंग	50 रु.
जूडो कराटे सीखें	30 रु.
हारमोनियम सीखिए	60 रु.
होम टेलरिंग कोर्स	50 रु.
सिलाई कटाई शिक्षा	50 रु.
101 मैजिक ट्रिक्स	48 रु.
मोटर ड्राइवरी शिक्षा	40 रु.
हिन्दी उर्दू टीचर	25 रु.
मिलिंग मशीन	45 रु.
महिलाओं के उद्योग	120 रु.
पोल्ट्री फार्मिंग	50 रु.
मॉडर्न सोप इन्डस्ट्रीज	300 रु.
कॉस्मेटिक्स इन्डस्ट्रीज	200 रु.
इन्वर्टर सर्विसिंग	80 रु.
ए. सी. मोटर वाईडिंग	80 रु.
स्टीम बायलर्स और इंजन	100 रु.
प्लास्टिक गुड्स इंडस्ट्रीज	60 रु.
स्क्रीन प्रिंटिंग	100 रु.

घर में रखने योग्य पुस्तकें

बनाइये खाना वेजीटेरियन	75 रु.
खाना खजाना	250 रु.
कुकरी बुक (बड़ी)	100 रु.
आचार, चटनी व मुरब्बे	30 रु.
भारतीय व्यंजन	25 रु.
रोटी–परांठे व कचौरियां	36 रु.
151 पेय पदार्थ	36 रु.
फल सब्जी से चिकित्सा	40 रु.
101 वर्ष कैसे जिएं	35 रु.
चाइनिज कुकरी	35 रु.
शहनाज ब्यूटी बुक	125 रु.
योगासन चिकि. विज्ञान स्वा. रामदेव	125 रु.
प्राणायाम चिकित्सा	50 रु.
ब्यूटी पार्लर कोर्स	50 रु.
हिन्दुओं के व्रत और त्यौहार	35 रु.

चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तकें

एलोपैथिक चिकि. (कोकचा)	200 रु.
वृहद् होम्योपैथिक चिकित्सा	180 रु.
अमृतसागर	200 रुपए
माधवनिदान	100 रुपए
हृदय रोग	40 रुपए
घर का वैद्य	40 रुपए
रसराज महोदधि	250 रुपए
सूर्य शक्ति से ईलाज	25 रुपए
आयुर्वेदिक गाईड	150 रुपए
अनुपम आयुर्वेदिक गाईड	35 रुपए
एलोपैथिक मैडी. गाईड	135 रुपए
न्यू एलोपैथिक मैडी. गाईड	40 रुपए
होम्योपैथी द्वारा ईलाज	50 रुपए
योगासन एवं साधना	50 रुपए
वृहद् बूटी प्रचार	35 रुपए
जड़ी–बूटियाँ	30 रुपए
आयुर्वेद सार संग्रह (वैद्यनाथ)	150 रु.
यूनानी चिकित्सा सार (वैद्यनाथ)	150 रु.
सचित्र योगासन	30 रु.
वनौषधि शतक (वैद्यनाथ)	100 रु.
रस भस्मों का सेवन	25 रु.
भैषज्य भास्कर	50 रु.
ईलाजुलगुर्बा	85 रु.
शरीर रचना क्रिया वि.	50 रु.
भोजन द्वारा चिकित्सा	40 रु.
आयुर्वेद मंथन	30 रु.
सुगम परिवार चिकित्सा	40 रु.
रसेन्द्र सार संग्रह	245 रु.
गुणकारी जड़ी–बूटियां	60 रु.
आयुर्वेदिक पेटेण्ट चिकित्सा	45 रु.
आयुर्वेदिक पेटेण्ट चिकित्सा	60 रु.
होम्योपैथिक चिकित्सा	70 रु.
भाव प्रकाश निघन्टु	120 रु.
योग के अद्भुत चमत्कार	50 रु.
योग द्वारा इलाज	30 रु.
योगासन	30 रु.
प्राकृतिक चिकित्सा	30 रु.
घरेलू इलाज	30 रु.
चरक संहिता (सम्पूर्ण)	125 रु.
आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान	100 रु.
84 योगासन व स्वास्थ्य	40 रु.
प्राणायाम कुण्डलिनी हठयोग	50 रु.

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र

काली किताब	400 रु.
काली किताब (छोटी)	150 रु.
महाइन्द्रजाल	150 रु.
असली प्राचीन इन्द्रजाल	100 रु.
शाबर मंत्र विद्या	50 रु.
तंत्र–मंत्र–यंत्र रहस्य	300 रु.
यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र (छोटी)	35 रु.
इस्लामी तंत्र शास्त्र	60 रु.
हिन्दू तंत्र शास्त्र	60 रु.
श्री दुर्गा साधना तंत्र	125 रु.
भारतीय तंत्र विद्या	200 रु.
अनुभूत यंत्र तंत्र ओर टोटके	120 रु.
बगुलामुखी रहस्यम्	40 रु.
कालिका सिद्धि	150 रु.
सिद्ध शाबर मन्त्र	50 रु.
तांत्रिक सिद्धियां	60 रु.
काली तंत्र शास्त्र	50 रु.
तारा तंत्र शास्त्र	50 रु.
तांत्रिक मुद्रा विज्ञान	60 रु.
तंत्र विद्या के अद्भुत प्रयोग	30 रु.
यंत्र–मंत्र–तंत्र टोटके	40 रु.
छिन्नमस्तका तंत्र शास्त्र	60 रु.
धनप्रदायक तांत्रिक क्रियाएं	50 रु.
तंत्र द्वारा यश धन प्राप्ति	30 रु.
11000 गंडे ताबीज और टोटके	150 रु.
महाशक्तिशाली टोने टोटके	150 रु.
मंत्र रहस्य	80 रु.
यंत्र विधान	120 रु.
यंत्र विद्या के 121 प्रयोग	75 रु.
नवग्रह अनुकूलन तंत्र	50 रु.
धन प्रदायक साधनाएं	50 रु.
ग्रह नक्षत्र तंत्रम्	60 रु.
श्री यन्त्रम् महिमा	60 रु.
मनोकामना सिद्धि	30 रु.
वशीकरण मन्त्र	30 रु.
चीन बंगाल का जादू	30 रु.
कामाक्षा मन्त्र	30 रु.
सूर्य तन्त्रम्	40 रु.
कामाख्या उपासना	40 रु.
रुद्रायमल तंत्र (बड़ा)	125 रु.
महाविद्या मंत्र तंत्र	30 रु.
परमसिद्ध 121 चमत्कारी यन्त्र	80 रु.
श्री नवग्रह गधना रहस्य	50 रु.

कर्मकाण्ड सम्बन्धी पुस्तकें

गण्डमूल नक्षत्र शांति प्रयोग	35 रु.
कार्तिक स्त्री प्रसूता शांति	20 रु.
कर्मकाण्ड प्रदीपः	80 रु.
विवाह पद्धति	45 रु.
शिवरात्रि व्रत कथा (भा. टी.)	25 रु.
कर्मकाण्ड पद्धति	100 रु.
दुर्गा सप्तशती (भा. टी.)	65 रु.
श्राद्ध पद्धति	25 रु.
कर्मकाण्ड भास्कर	100 रु.
कर्मकाण्ड भारती	70 रु.
पूजा पद्धति	50 रु.
पूजा भास्कर	40 रु.
हवन रहस्यम्	50 रु.
नवग्रह पूजा विधान (नवग्रह उपायों सहित)	25 रु.
नित्यकर्म व देवपूजा पद्धति	55 रु.
रुद्राष्टाध्यायी भा. टी.	50 रु.
श्री दुर्गा पूजन विधान	15 रु.
महालक्ष्मी पूजन विधान	25 रु.
गरुड़ पुराण (भाषा टीका)	60 रु.
गरुड़ पुराण (भाषा)	30 रु.
सनातन संस्कार विधि	125 रु.
संस्कार पद्धति	60 रु.
श्राद्ध विवेक	150 रु.
नित्यकर्म पद्धति	40 रु.
पितृकर्म पद्धति	75 रु.
सर्वदेव पूजा पद्धति	20 रु.
सर्वदेव प्रतिष्ठा प्रकाश	160 रु.
हवन पद्धति	25 रु.
वशिष्ठी हवन पद्धति	25 रु.
आदित्य हृदय स्तोत्र (भा.टी.)	25 रु.
सर्वदेव प्रतिष्ठा	60 रु.
अन्त्येष्टि कर्म रहस्यम्	35 रु.
सर्व व्रतोद्यापन प्रकाश	100 रु.
नित्यकर्म पूजा प्रकाश	35 रु.
दुर्गार्चन पद्धति	100 रु.

अपने आर्डर के साथ 50/- रु. पेशगी अवश्य भेजें। वी.पी. द्वारा मंगवाने का पता–

जनरल बुक डिपो

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर।

फोन–2457959

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के लिए उपयोगी रत्न (नग) एवं उपरत्न

लेखक—पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी (M.A., LLB.)

शुभ ग्रहों के प्रभाव में वृद्धि और अनिष्ट ग्रहों के कुप्रभाव के निवारण हेतु उपयुक्त ग्रह रत्न (नग) धारण करना अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होते हैं। अपनी जन्म कुण्डली में स्थित ग्रहों की स्थिति एवं अपनी राशि के अनुसार ही उपयुक्त रत्न (नग) का चयन करना चाहिए, **अन्यथा कई बार लाभ की अपेक्षा गलत नग धारण करने से हानि की सम्भावना हो जाती है।** उनका परिचय से पूर्व यदि सुयोग्य ज्योतिषी से परामर्श कर लिया जावे तो लाभप्रद होगा। धारण करने की विधि, उपयोगादि का **संक्षिप्त विवरण** लिख रहे हैं—

सूर्य रत्न माणक (RUBY)

संस्कृत में इसे माणिक्य, पद्मराग, हिन्दी में माणक, **मानिक, अंग्रेज़ी** में रूबी कहते हैं। सूर्य रत्न होने से इस ग्रह रत्न का अधिष्ठाता सूर्यदेव है।

पहचान विधि—असली माणिक्य लाल सुर्ख वर्ण का पारदर्शी, स्निग्ध-कान्तियुक्त और कुछ भारीपन वज़न लिए होते हैं। अर्थात् हथेली में रखने से हल्की ऊष्णता एवं सामान्य से कुछ अधिक वज़न का अनुभव होता है। (२) **कांच के पात्र में** रखने से इसकी हल्की लाल किरणें चारों ओर से निकलती दिखाई देंगी। (३) **गाय के दूध में** असली माणिक्य रखा जाये तो दूध का रंग गुलाबी दिखलाई देगा।

धारण विधि—माणिक्य रत्न रविवार को सूर्य की होरा में, कृतिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा नक्षत्रों, **रविपुष्य योग में सोने अथवा ताँबे की अंगूठी में जड़वा कर तथा सूर्य के बीजमन्त्रों द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वजन ३, ५ ७ अथवा ९ रत्ति के क्रम से होना चाहिए।**

सूर्य बीज मन्त्र—ॐ, ह्रां, ह्रीं, ह्रौं सः सूर्याय नमः

धारण करने के पश्चात् गायत्री मन्त्र की ३ माला का पाठ, हवन एवं **सूर्य भगवान को** विधिपूर्वक अर्घ्य प्रदान करना तथा ताम्र बर्तन, कनक, नारियल, मानक, गुड़, लाल वस्त्रादि सूर्य से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना चाहिए।

विधिपूर्वक माणिक्य धारण करने से राजकीय क्षेत्रों में प्रतिष्ठा, भाग्योन्नति, पुत्र संतान लाभ, तेजबल में वृद्धिकारक तथा हृदय रोग, चक्षुरोग, रक्त विकार, शरीर दौर्बल्यादि में लाभकारी होता है।

मेष, कर्क, सिंह तुला, वृश्चिक एवं धनु राशि अथवा इसी लग्न वालों को मानक धारण करना शुभ लाभप्रद रहता है अथवा जिनकी चन्द्र कुण्डली में सूर्य योगकारक होता हुआ भी प्रभावी न हो रहा हो, उन्हें भी माणिक्य धारण शुभ रहता है।

चन्द्र-रत्न मोती (PEARL)

चन्द्र-रत्न मोती को संस्कृत में मौक्तिक, चन्द्रमणि इत्यादि, **हिन्दी-पंजाबी** में मोती एवं **अंग्रेज़ी** में पर्ल **(Pearl) कहा जाता है। मोती या मुक्ता रत्न का स्वामी चन्द्रमा है।**

पहचान—शुद्ध एवं श्रेष्ठ मोती गोल, श्वेत, उज्ज्वल, चिकना, चन्द्रमा के समान कान्तियुक्त, निर्मल एवं हल्कापन लिए होता है।

परीक्षा—(१) गोमूत्र को किसी मिट्टी के बर्तन में डालकर उसमें मोती रात भर रखें, यदि वह अखण्डित रहे तो मोती को शुद्ध (सुच्चा) समझें। (२) पानी से भरे शीशे के गिलास में मोती डाल दें यदि पानी से किरणें सी निकलती दिखलाई पड़ें, तो मोती असली जानें। सुच्चा मोती के अभाव में **चन्द्रकान्त मणि** अथवा **सफेद पुखराज** धारण किया जा सकता है।

असली शुद्ध मोती धारण करने से **मानसिक शक्ति का विकास, शारीरिक सौन्दर्य की वृद्धि, स्त्री एवं धनादि सुखों की प्राप्ति होती है। इसका प्रयोग स्मरण शक्ति में भी वृद्धिकारक होता है।**

रोग शान्ति—चिकित्सा शास्त्र में भी मोती या मुक्ता भस्म का उपयोग मानसिक रोगों, मूर्छा-मिरगी, उन्माद, रक्तचाप, उदर-विकार, पत्थरी, दन्तरोगादि में।

धारण विधि—मोती चाँदी की अंगूठी में शुक्ल पक्ष के सोमवार को पूर्णिमा के दिन, चन्द्रमा की होरा में गंगा जल, कच्चा दूध व पाण्डुलादि में डूबोते हुए **'ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः'** के बीजमन्त्र का पाठ ११००० की संख्या में करने के पश्चात् धारण करना चाहिए। तदुपरान्त चावल, चीनी, क्षीर, श्वेत फल एवं वस्त्रादि का दान करना शुभ होगा।

मोती २, ४, ६ अथवा ११ रत्ति का कनिष्ठका अंगुली में **हस्त, रोहिणी अथवा श्रवण** नक्षत्र में सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा बताए गए मुहूर्त्त में धारण करना चाहिए। **मेष, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक, मीन राशि/लग्न वालों को मोती शुभ रहता है।**

चन्द्रमा का उपरत्न—चन्द्रकान्त मणि (Moon Light Stone)—यह उपरत्न चाँदनी जैसे चमक लिए हुए चन्द्रमा का 'उपरत्न' (मोती का पूरक) माना जाता है। इसको हिलाने से, इस पर एक दुधिया जैसी प्रकाश रेखा चमकती है। यह रत्न भी मानसिक शान्ति, प्रेरणा, स्मरण शक्ति में वृद्धि तथा प्रेम में सफलता प्रदान करता है। लाभ की दृष्टि से चन्द्रकान्त मणि मलाई के रंग का (सफेद और पीले के बीच का) उत्तम माना जाता है। **इसे चाँदी में ही धारण करना चाहिए।**

मंगल-रत्न मूंगा (CORAL)

इसे **संस्कृत** में अंगारकमणि तथा **अंग्रेज़ी** में **कोरल** (Coral) कहते हैं।

गोल, चिकना, चमकदार एवं औसत से अधिक वज़नी, सिन्धूरी से मिलते-जुलते रंग का मूंगा श्रेष्ठ माना जाता है। इसका स्वामी ग्रह **मंगल** है।

परीक्षा—(१) **असली मूंगे को** खून में डाल दिया जाये तो उसके चारों ओर गाढ़ा रक्त जमा होने लगता है। (२) **असली मूंगा यदि** गौ के दूध में डाल दिया जाए तो उसमें लाल रंग की झाई सी दीखने लगती है।

श्रेष्ठ जाति का मूंगा धारण करने से भूमि, पुत्र एवं भ्रातृ सुख, नीरोगता आदि की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त रक्त-विकार, भूत-प्रेत बाधा, दुर्बलता, मन्दाग्नि, हृदय-रोग, वायु-कफादि विकार, पेट विकारादि में मूंगे की भस्म अथवा मिट्टी का प्रयोग किया जाता है। **मेष, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर, कुम्भ व मीन राशि एवं लग्न वालों को सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शानुसार** धारण करना लाभप्रद होगा।

धारण विधि—शुक्ल पक्ष के मंगलवार को प्रातः मंगल की होरा में मृगशिर, चित्रा या धनिष्ठा नक्षत्र

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

में सोने या तांबे के अंगूठी में जड़वा कर, बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में ६, ८, १० या १२ रत्ति के वज़न में धारण करना कल्याणकर होता है। धारणोपरान्त मंगल स्तोत्र एवं मंगल ग्रह का दान करना शुभ होता है।

भौम बीज मन्त्र—ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः

शारीरिक स्वास्थ्य एवं कुं. में मंगल नीच राशिस्थ हो तो सफेद मूँगा भी धारण किया जाता है।

बुध रत्न पन्ना (EMERALD)

"**पन्ना**" बुध ग्रह का मुख्य रत्न है। **संस्कृत** में मरकतमणि, फारसी में जमरूद व अंग्रेज़ी में इमरल्ड (Emerald)। पन्ना रत्न हरे रंग, स्वच्छ, पारदर्शी कोमल, चिकना व चमकदार होता है।

परीक्षा—(१) शीशे के गिलास में साफ पानी और पन्ना डाल दिया जाए तो हरी किरणें निकलती दिखाई देंगी। (२) शुद्ध पन्ने को हाथ में लेने पर वह हल्का, कोमल व आँखों को शीतलता प्रदान करता है।

गुण—'पन्ना' धारण करने से **बुद्धि तीव्र एवं स्मरण शक्ति बढ़ती है। विद्या, बुद्धि, धन एवं व्यापार में वृद्धि के लिए लाभप्रद** माना जाता है। पन्ना सुख एवं **आरोग्यकारक** भी है। **यह रत्न जादू-टोने, रक्त विकार, पथरी, बहुमूत्र, नेत्र रोग, दमा, गुर्दे के विकार, पाण्डु, मानसिक विकलतादि रोगों में लाभकारी माना जाता है।**

धारण विधि—यह नग शुक्ल पक्ष के बुधवार को अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, पू.फा. अथवा पुष्य नक्षत्रों में अथवा बुध की होरा में सोने की अंगूठी में दाएं हाथ की कनिष्ठिका (छोटी) अंगुली में बुधग्रह के बीजमन्त्र से अभिमंत्रित करते हुए धारण करना चाहिए। इसका वज़न ३, ६, ७ रत्ति होना चाहिए।

बुध बीज मन्त्र—ॐ, ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, मकर व मीन राशि वालों को विशेष लाभप्रद रहता है।

गुरु—रत्न पुखराज (TOPAZ)

पुखराज गुरु (बृहस्पति) ग्रह का मुख्य रत्न है। **संस्कृत में** इसे पुष्य राजा, **हिन्दी में पुखराज**, व अंग्रेज़ी में टोपाज (Topaz) कहते हैं।

पहचान विधि—जो **पुखराज** स्पर्श में **चिकना, हाथ में लेने पर कुछ भारी लगे, पारदर्शी, प्राकृतिक चमक से युक्त हो वह उत्तम कोटि का** माना जाता है।

परीक्षा—(i) जहां किसी विषैले कीड़े ने काटा हो, वहां पर असली पुखराज घिस कर लगाने से विष उतर जाता है। (ii) चौबीस घण्टे कच्चे दूध में रखने के बाद यदि चमक में अन्तर न पड़े तो पुखराज असली होगा। इत्यादि।

गुण—पुखराज धारण करने से **बल, बुद्धि, स्वास्थ्य एवं आयु** की वृद्धि होती है। **वैवाहिक सुख, पुत्र सन्तान कारक एवं धर्म-कर्म** में प्रेरक होता है। प्रेत-बाधा का निवारण एवं स्त्री के **विवाहसुख** की **बाधा को दूर करने में** सहायक होता है।

औषधी प्रयोग—इसको वैद्य के परामर्शानुसार केवड़ा एवं शहदादि के साथ देने से **पीलिया, तिल्ली, पाण्डु रोग, खांसी, दन्त रोग, मुख की दुर्गन्ध, बवासीर, मन्दाग्नि, पित्त-ज्वरादि** में लाभदायक होता है।

धारण विधि—पुखराज रत्न ३, ५, ७, ९ या १२ रत्ति के वजन का सोने की अंगूठी में जड़वा कर तर्जनी अंगुली में धारण करें, सुवर्ण या ताम्र बर्तन में कच्चा दूध, गंगाजल, पीले पुष्पों से एवं "**ॐ ऐं वर्लीं बृहस्पतये नमः**" के बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके धारण करना चाहिए। मन्त्र संख्या १९ हजार।

यह नग शुक्ल पक्ष के गुरुवार की होरा में, अथवा गुरुपुष्य योग में या पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में धारण करना चाहिए।

पुखराज धनु, मीन राशि के अतिरिक्त मेष, कर्क, वृश्चिक, राशि वालों को लाभप्रद रहता है। धारण करने के पश्चात् गुरू से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना शुभ होता है।

गुरु का उपरत्न—सुनैला इसे पुखराज का उपरत्न माना जाता है। पुखराज मूल्यवान होने के कारण सुनैला को उसके पूरक के रूप में धारण किया जा सकता है। श्रेष्ठ सुनैला हल्के पीले रंग (सरसों के जैसा पीलापन) का होता है। कई बार पुखराज से अधिक पीलापन लिए होता है तथा आंशिक मात्रा में पुखराज के समान ही उपयोगी होता है। धारण विधि पुखराज के समान ही होगी।

शुक्र-रत्न 'हीरा' (DIAMOND)

शुक्र ग्रह का मुख्य प्रतिनिधित्व **'हीरा'** है।

संस्कृत में इसे वज्रमणि, **हिन्दी** में हीरा तथा अंग्रेज़ी में डायमण्ड (Diamond) कहते हैं।

हीरा अत्यन्त चमकदार प्रायः श्वेत वर्ण का होता है।

पहचान—अत्यन्त चमकदार, चिकना, कठोर, पारदर्शी एवं किरणों से युक्त हीरा असली होता है।

परीक्षा—(i) धूप में यदि हीरा रख दिया जाये तो उसमें से इन्द्रधनुष जैसी किरणें दिखाई देती हैं। (ii) तोतले बच्चे के मुंह में रखने से बच्चा ठीक से बोलने लगता है। (iii) अन्धेरे में जुगनू की भान्ति चमकता है।

गुण—हीरे में **वशीकरण करने की विशेष शक्ति होती है।** इसके पहनने से **वंश-वृद्धि, धन-लक्ष्मी व सम्पत्ति की वृद्धि, स्त्री एवं सन्तान सुख की प्राप्ति व स्वास्थ्य** में लाभ होता है। **वैवाहिक सुख** में भी वृद्धिकारक माना जाता है।

औषधीय गुण—हीरे की भस्म शहद-मलाई आदि के साथ ग्रहण करने से अनेक रोगों में लाभ होता है जैसे—दौर्बल्यता, नपुंसकता, वायु प्रकोप, मन्दाग्नि, वीर्य विकार, प्रमेह दोष, हृदय रोग, श्वेत प्रदर, विषैला व्रण, बच्चों में सूखा रोग, मानसिक कमज़ोरी इत्यादि।

धारण विधि—शुक्ल पक्ष के शुक्रवार वाले दिन, शुक्र की होरा में, **भरणी, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र,** एक रत्ति या इससे अधिक वज़न का हीरा सोने की अंगूठी में जड़वा कर शुक्र के बीज मन्त्र (**ॐ द्रां, द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः**) का १६ हज़ार की संख्या में जाप करके शुभ मुहूर्त्त में धारण करना चाहिए। हीरा मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। धारण करने के दिन शुक्र ग्रह से सम्बन्धित वस्तुएं जैसे दूध, चाँदी, दही, मिश्री, चावल, श्वेत वस्त्र, चन्दनादि का दान यथाशक्ति करना चाहिए।

हीरा (धारण करने की तिथि से) सात वर्ष पर्यन्त प्रभावकारी बना रहता है। **हीरा वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ राशि वालों को लाभदायक रहता है।**

शुक्र के उपरत्न—(i) फिरोज़ा नीले आकाशीय रंग जैसा यह नग शुक्र का उपरत्न माना गया है। यह रत्न भूत, प्रेत, दैवी आपदा तथा आने वाले कष्टों से धारक की रक्षा करता है। यदि इस रत्न को कोई भेंटस्वरूप प्राप्त करके पहनेगा तो अधिक प्रभावशाली रहेगा। हल्के-प्रखर चमकदार रंग वाला रत्न उत्तम होता है। कोई भी कष्ट या रोग आने से पहले यह रत्न अपना रंग बदल लेता है। नेत्र रोग, सौन्दर्य, सिर दर्द, विषादि रोगों में विशेष लाभकारी रहता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(ii) ओपल (Opel)– यह भी शुक्र का अन्य उपरत्न है, इसको धारण करने से सदाचार, सदचिन्तन तथा धार्मिक कार्यों की ओर रुचि रहती है। अधिक लोकप्रिय नहीं है। इसके अतिरिक्त शुक्र के अन्य भी बहुत से उपरत्न प्रचलित हैं।

शनि रत्न नीलम (SAPHIRE)

नीलम शनिग्रह का मुख्य रत्न है। हिन्दी में नीलम तथा अंग्रेज़ी में सैफायर (Saphire) कहते हैं।

पहचान—असली नीलम चमकीला, चिकना, मोरपंख के समान वर्ण जैसा, नीली किरणों से युक्त एवं पारदर्शी होगा।

परीक्षा—(i) असली नीलम को गाय के दूध में डाल दिया जाए तो दूध का रंग नीला लगता है। (ii) पानी से भरे कांच के गिलास में डाला जाए नीली किरणें दिखाई देंगी। (iii) सूर्य की धूप में रखने से नीले रंग की किरणें दिखाई देंगी।

गुण—नीलम धारण करने से धन-धान्य, यश-कीर्ति, बुद्धि चातुर्य, सर्विस एवं व्यवसाय तथा वंश में वृद्धि होती है। स्वास्थ्य सुख का लाभ होता है।

ध्यान रहे, बहुधा नीलम चौबीस घण्टे के भीतर ही प्रभाव करना शुरू कर देता है। यदि नीलम अनुकूलन न बैठे तो भारी नुक्सान की आशंका हो जाती है। अतएव परीक्षा के तौर पर कम से कम ३ दिन तक पास रखने पर यदि बुरे स्वप्न आएं, रोग-उत्पन्न हो या चेहरे की बनावट में अन्तर आ जाए तो नीलम न पहनें।

रोग शान्ति—नीलम धारण करने या औषधि रूप में ग्रहण करने से दमा, क्षय, कुष्ट रोग, हृदय रोग, अजीर्ण, मूत्राशय सम्बन्धी रोगों में लाभकारी है।

धारण विधि—नीलम ५, ७, ९, १२ अथवा अधिक रत्ति के वजन का, पंचधातु, लोहे अथवा सोने की अंगूठी में शनिवार को शनि की होरा में एवं पुष्य, उभा, चित्रा, स्वा, धनि या शतभिषा नक्षत्रों में शनि के बीज मन्त्र ॐ प्रां. प्रीं. प्रौं. सः शनये नमः मन्त्र से २३००० की संख्या में अभिमन्त्रित करके धारण करें। तत्पश्चात् शनि की वस्तुओं का दान दक्षिणा सहित करना कल्याणकारी होगा।

राहु रत्न–गोमेद (ZIRCON)

राहु रत्न गोमेद को संस्कृत में गोमेदक, अंग्रेज़ी झिरकन (Zircon) कहते हैं। गोमेद का रंग गोमूत्र के समान हल्के पीले रंग का, कुछ लालिमा तथा श्यामवर्ण होता है। स्वच्छ, भारी, चिकना गोमेद उत्तम होता है तथा उसमें शहद के रंग की झांई भी दिखाई देती है।

पहचान विधि—सामान्यतः गोमेद उल्लू अथवा बाज की आँख के समान होता है तथा गोमूत्र के समान, दल रहित अर्थात् जो परतदार न हों, ऐसे गोमेद उत्तम होंगे। (१) शुद्ध गोमेद को २४ घण्टे तक गोमूत्र में रखने से गोमूत्र का रंग बदल जाएगा।

धारण विधि—गोमेद रत्न शनिवार को शनि की होरा में, स्वाती, शतभिषा, आर्द्रा अथवा रविपुष्य योग में पंचधातु अथवा लोहे की अंगूठी में जड़वाकर तथा राहु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वजन ५, ७, ९ रत्ती का होना चाहिए।

राहु बीज मन्त्र—"ॐ भ्रां भ्रीं, भ्रौं सः राहवे नमः"

धारण करने के पश्चात् बीजमन्त्र का पाठ हवन एवं सूर्य भगवान को अर्घ्य प्रदान कर नीले रंग का वस्त्र, कम्बल, तिल, बाजरा आदि दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक गोमेद धारण करने से अनेक प्रकार की बीमारियां नष्ट होती हैं, धन-सम्पत्ति-सुख, सन्तान वृद्धि, वकालत व राजपक्ष आदि की उन्नति के लिए अत्यन्त लाभकारी है। शत्रु-नाश हेतु भी इसका प्रयोग प्रभावी रहता है।

जिनकी जन्म कुण्डली में राहु १, ४, ७, ९, १० वें भाव में हो, उन्हें गोमेद रत्न पहनना चाहिए। मकर लग्न वालों के लिए गोमेद शुभ होता है।

केतु रत्न लहसनिया (CAT'S EYE STONE)

केतु-रत्न लहसनिया को संस्कृत में वैदूर्य, हिन्दी में लहसनिया, अंग्रेज़ी में Cat's eye Stone कहते हैं। यह नग अन्धेरे में बिल्ली की आंखों के समान चमकता है। लहसनिया ४ रंगों में पाया जाता है। काली तथा श्वेत आभा युक्त लहसनिया जिस पर यज्ञोपवीत के समान तीन धारियां खिंची हों, वह वैदूर्य ही उत्तम होता है।

पहचान—(१) असली लहसनिया को यदि हड्डी के ऊपर रख दिया जाए तो वह २४ घण्टे के भीतर हड्डी के आर-पार छेद कर देता है। (२) असली वैदूर्य में ढाई या तीन सफेद सूत्र होते हैं, जो बीच में इधर-उधर घूमते हिलते रहते हैं।

धारण विधि—लहसनिया रत्न बुधवार के दिन अश्विनी, मघा, मूला नक्षत्रों में, रविपुष्य योग में पंचधातु की अंगूठी में कनिष्ठका अंगुली में धारण करें। धारण करने से पूर्व केतु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करें। ५ रत्ती से कम वज़न का नहीं होना चाहिए। प्रत्येक ३ वर्ष पश्चात् नई अंगूठी में लहसनिया जड़वाकर उसे अभिमन्त्रित कर धारण करना चाहिए।

केतु बीज मन्त्र—"ॐ स्त्रां स्त्रीं, स्त्रौं, सः केतवे नमः"

रत्न धारण करने के पश्चात् बुधवार को ही किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण को तिल, तेल, कम्बल, धूमवर्ण का वस्त्र, सप्तधान्य (अलग-अलग रूप में) यथाशक्ति दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक लहसनिया धारण करने से भूत प्रेतादि की बाधा नहीं रहती है। सन्तान सुख, धन की वृद्धि एवं शत्रु व रोग नाश में सहायता प्रदान करता है।

अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारे यहाँ 'रत्न ज्योतिष विज्ञान' पुस्तक 35 रु० भेजकर मंगवा सकते हैं। बृहदरत्न शास्त्र, मूल्य १०० रुपये, जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर।

घर बैठे ही अपना भविष्य जानें

(सही फलादेश का आधार वैज्ञानिक ढंग से निर्मित शुद्ध जन्मपत्री है।)

जन्म कुण्डली टेवा : संक्षिप्त रूप से अपना भविष्य जानने के लिए अपनी जन्म तारीख, जन्म समय, जन्म स्थान, पिता का नाम, दादा का नाम, गौत्र लिखें भेजें जिसकी फीस 251 रुपए होगी।

वर्षफल : आपके लिए यह वर्ष कैसा रहेगा। यह जानने के लिए जन्म कुण्डली की नकल अवश्य भेजें। यदि जन्म कुण्डली नहीं है तो पत्र लिखने का समय अंग्रेज़ी तारीख, स्थान तथा अपनी पारिवारिक व कारोबारी समस्या स्पष्ट लिखते हुए मनपसन्द फूलका नाम भी लिखें। विस्तारपूर्वक फलादेश के लिए फीस 301) रुपए होगी। कृपया पूर्ण राशि अग्रिम भेजें। विदेश के लिए 25 पौंड अथवा 31 डालर होंगे।

जन्मपत्री (सम्पूर्ण) : इसमें आपके जीवन में होने वाली महत्त्वपूर्ण घटनाओं, नौकरी, व्यवसाय, शिक्षा, विवाहादि के सम्बन्ध में विस्तृत रूप से विवरण दिया जाएगा जिसकी फीस 551) रुपए होगी। जन्मपत्री बनवाने के लिए जन्म समय, जन्म स्थान, जन्म तारीख, गौत्र, प्रसिद्ध नाम, पिता का नाम, दादा का नाम लिख भेजें। विदेश में पैदा होने वाले सज्जनों के लिए फीस 751 रुपए से 1500 रुपए होगी। कृपया पूरी राशि अग्रिम भेजें। विदेश के लिए 25 पौंड अथवा 40 डालर होंगे। डाक व्यय अलग होगा।

कम्प्यूटर द्वारा जन्मपत्री बनाने की दक्षिणा शुल्क 201 रुपए से लेकर 501 रुपए तक होगी।

पं. पन्ना लाल ज्योतिषी, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर-8 (पंजाब) ☎ 2457959

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मानव जीवन को सुधारने वाले धार्मिक ग्रन्थ

गो. तुलसीकृत रामायण (भाषा–टीका)

आठ काण्ड वाली सम्पूर्ण रामायण जिसमें गो० स्वामी तुलसी कृत दोहे व चौपाइयों को इतनी सरल भाषा में दिया गया है कि साधारण पढ़ा लिखा व्यक्ति भी श्रीराम चरित् की महिमा को हृदयांगम कर सकता है। इस पवित्र रामायण को पठन-पठनार्थ घर में रखना अथवा दान-दहेज में देना पुण्य का काम समझा जाता है। सुन्दर छपाई, चित्रों सहित व मोटे अक्षरों में इस रामायण की कीमत 251/- रुपए। आर्डर के साथ 50 रुपए पेशगी अवश्य भेजें। मध्यम रामायण का मूल्य 125 रुपए (डाक व्यय अलग)

श्री वाल्मीकि रामायण (सचित्र)

हिन्दी भाषा में सुन्दर मोटे अक्षरों में प्राप्य हैं। (मूल्य 200 रु.) ये ग्रन्थ पंजाबी भाषा में भी उपलब्ध हैं। मूल्य 800 रुपए। डाक व्यय अलग।

श्री प्रेम सागर (सचित्र)

प्रेम, भक्ति और भावना से परिपूर्ण भगवन् श्री कृष्ण की बाल लीलाओं तथा उनके जीवन चरित्रों का सजीव एवं सचित्र वर्णन जिसे धर्म में श्रद्धा रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को पढ़ना चाहिए। मूल्य 100 रुपए, डाक व्यय अलग।

सुखसागर बड़ा

श्रीमद्भागवत पुराण के 12 स्कन्धों का सरल हिन्दी अनुवाद जिसमें भगवान् विष्णु के 24 अवतारों का विशद वर्णन, शुकदेव जी द्वारा राजा परीक्षत को श्री कृष्ण, इत्यादि तत्वों को उदाहरण देकर समझाया गया है। इसके श्रवण और मनन मात्रा से परम शान्ति प्राप्त हो जाती है। मूल्य सचित्र 250 रुपए आर्डर के साथ 50 रुपए पेशगी अवश्य भेजें। मध्यम सुखसागर—मूल्य 100 रु.।

महाभारत भाषा

महर्षि वेदव्यास की अमूल्य सम्पूर्ण रचना 18 पर्वों का सरल हिन्दी रूपान्तर हैं। जिसमें राजा परीक्षित की कथा, कौरव पाण्डवों की वंशोत्पति, भीष्म प्रतिज्ञा से लेकर महाभारत के भयंकर युद्ध का साष्टांग वर्णन दिया गया है।

मूल्य 200 रु.।

अष्टावक्र गीता

चित्त के सन्देहों को दूर करने एवं ज्ञान के मुमुक्षयों को तमोमय अंधकार नष्ट करने तथा शान्त, अद्वैत और निर्मल आत्मा के लिए इस पुस्तक का अध्ययन अवश्य करना चाहिए। (मूल्य 100 रु.)

श्री दुर्गा सप्तशती (भाषाटीका)

भगवती देवी पर यह पुस्तक अनेक वर्षों से अप्रकाशित रही है जोकि अब पं० देवी दयालु ज्योतिष कार्यालय से प्रकाशित हो चुकी है। इसमें दुर्गा हवन विधि, सिद्ध सम्पुट मन्त्र नवार्ण, दुर्गा पाठ, शतचण्डी विधि श्री दुर्गा पाठाध्याय के अतिरिक्त और भी बहुत विशेषताओं का समावेश कर दिया गया है। मूल्य केवल 55 रुपए। सजिल्द 65 रुपए।

बड़ा भक्ति सागर

जिसमें नित्यकर्म पद्धति, ईश्वर प्रार्थना, स्तोत्र, चालीसे, सन्ध्या व आरतियों का अपूर्व संग्रह प्रस्तुत किया गया है।

मूल्य 40 रुपए।

श्रीमद्भगवत् गीता (सचित्र)

भगवद् गीता विश्व ज्ञान का अपूर्व भण्डार है जिसमें कर्म, भक्ति और ज्ञान का अद्भुत समन्वय मिलता है। अर्जुन को दिया गया भगवान् कृष्ण का परम ज्ञान जो प्रत्येक भारतीय के लिए आवश्यक है। 18 अध्याय वाली महात्म्य व अनेक आरतियों सहित यह पुण्य ग्रन्थ आज ही मंगवाएँ। मूल्य 100 रु.।

चारों वेद (भा. टी.)

ऋग्वेद-4 खण्डों में, यजुर्वेद-1 खण्ड, अर्थर्ववेद-2 खण्ड, समावेद-1 खण्ड में उपलब्ध हैं जिसे प्रत्येक भारतीय को अवश्य पढ़ना चाहिए। आज ही मंगवाएँ। मूल्य सम्पूर्ण सैट-425 रु.।

श्री शिव महापुराण (बड़ा) सचित्र

जिसमें शिव महिमा, पार्थिव, पूजन, शिव पूजन विधि, सृष्टि वर्णन, योग वर्णन इत्यादि पौराणिक कथाओं सहित विस्तृत वर्णन दिया गया है। शिव-भक्ति में श्रद्धा रखने वालों के लिए अनिवार्य ग्रन्थ है। मूल्य केवल 200 रु.। मनीआर्डर के साथ 50 रुपए पेशगी अवश्य भेजें। डाक व्यय पृथक।

शिवरात्रि व्रत कथा (भा. टी.) 25/-

कुछ अन्य उपयोगी ग्रन्थ

योग वशिष्ठ (दो भाग)	500/-
व्यापार रत्न	300/-
धर्मसिन्धु (भाषा टीका)	350/-
निर्णयसिन्धु	500/-
चाणक्य नीति	40/-
विदुर नीति	40/-
महामृत्युञ्जय साधना	50/-
श्री गरुण पुराड़ (प्रेतकल्प)	50/-
कर्मकाण्ड कुसुमाञ्जली	35/-
कर्मकाण्ड प्रदीप:	80/-
कर्मठगुरु	85/-
कवच संग्रह	20/-
भद्रबाहु संहिता (मंदा-तेज़ी पर)	150/-
लाल किताब गुटका	135/-
मंत्र महोदधि	125/-
षोडश संस्कार पद्धति	80/-
वास्तु शान्ति प्रयोग	25/-
मन्त्र सागर	100/-
बगुलामुखी उपासना	40/-
मंत्र द्वारा कामना सिद्धि	40/-
मंत्र द्वारा रोग निवारण	60/-
मंत्र शक्ति	40/-
मनोकामना पूरक मंत्र	60/-
वृहद् कौवा तंत्र	30/-
सूर्यशक्ति से इलाज	25/-
तंत्र द्वारा यश धन प्राप्ति	30/-
आरती संग्रह ग्लेज़चित्र	30/-
योग वसिष्ठ महारामायण	150/-
महालक्ष्मी व्रत कथा (ग्लेज़)	25/-
गरुड़ पुराण भा. टी.	50/-
विशाल हस्त सामुद्रिक	100/-
वैशाख महात्म्य	25/-
विशाल भृगु संहिता पद्धति	250/-

पं. देवीदयालु का राशिफल (सन् 2007 ई.) 25/-

माघ महात्म्य	25/-
चन्द्र हस्त विज्ञान	225/-
ज्योतिष शास्त्र	35/-
कार्तिक महात्म्य	25/-
व्यापारिक तेज़ी मन्दी ज्ञान	25/-
नित्य कर्म पाठमाला	40/-
ज्योतिष सर्व संग्रह	40/-
वशिष्ठी हवन पद्धति	25/-
असली आल्हाखण्ड	101/-
विवाहपद्धति देवीदयालु	45/-
दुर्गा सप्तशती (भा. टी.)	65/-
सूर्य पुराण (भा. टी.)	50/-
हस्त रेखा विज्ञान	60/-
सूर्य उपासना (भाषा)	40/-
तान्त्रिक सिद्धियाँ	50/-
रामायण तर्ज राधेश्याम	100/-
मन्त्र सिद्धि	35/-
श्री हरिवंश पुराण बड़ा	300/-
श्री हरिवंश पुराण (मध्यम)	100/-
देवीभागवत पुराण बड़ा	175/-
मनुस्मृति	40/-
देवी-देवता सिद्धि	35/-
कर्मकाण्ड पद्धति	100/-
भजन सरोवर	100/-
लाल किताब (हिन्दी)	500/-
लाल किताब (हिन्दी मध्यम)	120/-

अपने आर्डर के साथ 50/- रुपपए पेशगी अवश्य भेजें। अपना नाम व पता साफ पूरा लिखें। वी. पी. द्वारा मंगवाने का पता—

जनरल बुक डिपो

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर

फोन–2457959

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ज्योतिष सम्बन्धी अनुपम पुस्तकें वी० पी० पी० द्वारा मंगवाएँ

ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड)

इसमें भारतीय ज्योतिष के प्रारम्भिक इतिहास से लेकर ज्योतिष सम्बन्धी प्रारम्भिक ज्ञान—सम्पूर्ण बड़ी जन्मपत्री निर्माण शैली, ग्रहों से सप्तवर्गी बलाबल निकालना। भावों, राशियों एवं ग्रहों तथा फलादेश सम्बन्धी मूलभूत सिद्धान्तों को अत्यन्त सरल शैली में प्रस्तुत किया गया है। (मूल्य 65 रुपए)

वर्षफल चन्द्रिका

(नवीन संशोधित संस्करण)

इसमें अब प्राचीन सूर्य सिद्धान्तीय, नवीन वेधसिद्ध सारिणी के अतिरिक्त लाल किताब के अनुसार वर्षफल बनाने तथा पुराणों, तन्त्रिक व लाल किताब के उपायों का समावेश किया गया है। प्रश्नकाल एवं गोचरफल कथन की रीतियों का विशद वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त वर्षफल बनाने और वर्ष भर का ठीक-ठीक फलादेश कहने के लिए उत्तम पुस्तक है। (मूल्य 65 रु.)

ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) प्रथम भाग

गत कई वर्षों से जो प्रकाशनाधीन था। अब छपकर आ चुका है। फलित ज्योतिष सम्बन्धी आरम्भिक जानकारी सहित प्रत्येक लग्न एवं राशि के अनुसार ग्रहों का फल, दृष्टि फल, तथा कुण्डली में बनने वाले अनेकों योगों एवं फलादेश बताने के मूलभूत सिद्धान्तों को अत्यन्त सरल शैली में प्रस्तुत किया गया है। लेखक के अथक परिश्रम का परिणाम है।

मूल्य 250/-

ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) द्वितीय भाग

(फलित ज्योतिष सम्बन्धी सम्पूर्ण ज्ञान हेतु)

फलादेश कथन में विशेष सूत्र, तुला से मीन लग्न राशियों तक के सम्बन्ध में गुण, स्वभाव, शिक्षा, कैरियर, स्वास्थ्य रोग, प्रेम विवाह, व्यवसाय उपायों आदि के सम्बन्ध में सूक्ष्म एवं विस्तृत जानकारी, कुण्डली में सभी ग्रहों का अनेक उदाहरण कुण्डलियों सहित भावगत फलादेश, दो-तीन एवं अधिक ग्रहों के योग फल, दशाऽन्तर्दशाओं द्वारा फलादेश, त्रिशांश, ज्योतिष और रोग, स्त्री जातिकाओं सम्बन्धी फल एवं मंगलीक दोष आदि विषयों पर महत्त्वपूर्ण एवं शोधपूर्ण व्याख्याओं सहित अत्यन्त सरल शैली में प्रस्तुत किया गया है।

मूल्य 250 रुपए।

पं० देवीदयालु ज्यो. एण्ड सन्ज़ द्वारा प्रकाशित 'राशिफल'—सन् 2007 ई.

जन्म एवं नाम राशि के आधार पर सन् 2007 ई० का दैनिक एवं साप्ताहिक राशिफल—जिसमें प्रत्येक स्त्री-पुरुष की वर्षभर में समय-समय पर घटने वाली घटनाएँ और उनका प्रभाव, व्यवसाय, दाम्पत्य सुख, स्वास्थ्य तथा अन्य समस्त विषयों के फलादेश सहित उपाए दिए गए हैं। इसके अतिरिक्त संक्षिप्त त्यौहार, शनि-साढ़ेसाति तथा रत्नों सम्बन्धी विस्तृत जानकारी भी दी गई है। (मूल्य—30 रु.)

ज्योतिष सम्बन्धी अन्य अमूल्य पुस्तकें

अर्द्ध शताब्दि पंचांग	**640 रु०**
श्री दशवर्षीय पंचांग	160 रु०
ग्रहों को कैसे शान्त करें	**—85 रु०**
तनुभाव प्रकाश	**30 रु०**
मुफीद आलम जन्त्री (हिन्दी-उर्दू-पंजाबी)	46 रु०
ज्यो. ज्ञान शास्त्र (पंजाबी)	75 रु०
ज्योतिष और सन्तान योग	50 रु०
ज्योतिष और रोग	60 रु०
ज्योतिष और व्यवसाय	50 रु०
भारतीय ज्योतिष (नेमिचन्द्र)	240 रु०
फलदीपिका	145 रु०
भृगु संहिता	250 रु०
भृगु संहिता (छोटी)	100 रु०
भारतीय ज्योतिष (लाल किताब)	155रु.
लाल किताब ज्योतिष (पं. अशान्त)	200 रु०
शनि साढ़ेसति से छुटकारा	40 रु०
षड्वर्ग फलम	180 रु०
ज्योतिष के अनुभूत रहस्य	250 रु०
अष्टकवर्ग सिद्धान्त व प्रयोग	110 रु०
कालसर्पयोग कारण-निवारण	120 रु०
मंगलीक दोष भ्रांति-निदान	135 रु०
फलित ज्योतिष रैडिरैक्नर	68 रु०
क्या कहते हैं कुण्डली के ग्रह	80 रु०
रावण संहिता (छोटी)	**400 रु०**
रावण संहिता (बड़ी)	**2500 रु०**
काली किताब	**150 रु०**
भृगु संहिता महाशास्त्र	**2100 रु०**
शनि शमन	**115 रु०**
शत्रु शमन	**190 रु०**
मानसागरी (भा. टी.)	100 रु०
भारतीय फलित ज्योतिष	120 रु०
बृहज्योतिषसार	80 रु०
जातकभरणम्	80 रु०
मुहूर्त पारिजात	150 रु०
मुहूर्त चिन्तामणि	60 रु०
बृहजातकम्	150 रु०
वृहद् होरा शास्त्रम्	200 रु०
आयुर्निर्णय	**200 रु०**
जातकतत्त्वम्	**125/-**
अर्घ मार्तण्ड	55 /-
मुहूर्त मार्तण्ड	125/-
ज्योतिष तत्त्व प्रकाश	**155/-**
प्रश्न मार्ग (दो खण्ड)	300/-
केवलज्ञान प्रश्नचूड़ामणि	60/-
प्रश्न चन्द्रप्रकाश	70/-
प्रश्न भास्कर	80/-
प्रश्न विद्या	50/-
वैवाहिक सुख	**95/-**
सन्तान सुख-सर्वांग चिंतन	165/-
वैवाहिक विलम्ब के उपाए	95/-
भावकुतूहलम्	60/-
नाक्षत्र ज्योतिष	80/-
जातक भूषणम्	150 रु०
कुण्डली दर्पण	80 रु०
दशाफल विचार	**45 रु०**
दशाफल दर्पण	**60 रु०**
कालसर्पयोग निवारण अनुष्ठान	65 रु०
लघु पराशरी भाष्य	**165 रु०**
मंत्र सागर	**100 रु०**
शिव मंत्रावली	**100 रु०**
हस्तरेखा शास्त्र-श्रीमाली	80 रु०
चन्द्र हस्त विज्ञान	225 रु०
हस्त रेखा विज्ञान-कीरो	60 रु०
सम्पूर्ण हस्तरेखा शास्त्र	150 रु०
हस्तरेखाएँ और दाम्पत्य जीवन	50 रु०
चमत्कार चिन्तामणि	195/-
ज्यो० द्वारा रोग विचार	125/-
ज्यो. और दाम्पत्य जीवन	200/-
ज्यो. और कालनिर्णय	50/-
कालसर्प एवं घट विवाह	100/-
लग्न दर्शन (चार भाग)	400/-
ज्योतिष सर्वस्व	200/-
अनिष्ट ग्रह निवारण	40/-
सूर्य सिद्धान्त	150/-
लघु पाराशरी	50/-
सर्वार्थ चिन्तामणि	70/-
सुनहरी किताब	150/-
अष्टकवर्ग से भविष्य ज्ञान	100/-

—वास्तुशास्त्र विज्ञान पर—

सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र	100 रु०
वास्तुशास्त्रानुसार भवन निर्माण	120 रु०
रेमिडियल वास्तु शास्त्र	150 रु०
व्यवहारिक वास्तुशास्त्र	100 रु०
कमर्शियल वास्तुशास्त्र	150 रु०
वास्तुकला और भवन निर्माण	120 रु०
वास्तुशास्त्र रहस्य	250 रु०
समरांगण वास्तुशास्त्र	70 रु०
सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र	200 रु०
वास्तु दोष निवारण	100 रु०
फेंग शुई 151 स्वर्णिम सूत्र	100 रु०

रत्न ज्योतिष

रत्न ज्योतिष	50 रु०
रत्न पहने भाग्य बदलें	60 रु०
रत्न प्रदीप	100 रु.
सम्पूर्ण रत्न विज्ञान	110 रु.
रत्न, रुद्राक्ष और भाग्य	150 रु.
रत्न परिचय	40 रु.
रत्नों का रहस्यमय संसार	200 रु.
रेखाओं का रहस्यमय संसार	195 रु.

शिवरात्रि व्रत कथा (भा. टी.)

शिवरात्रि पूजन कैसे करें ?

श्रीमहाशिवरात्रि का व्रत सब व्रतों में उत्तम एवं कल्याणकारी है। जैसे गंगा जी के समान कोई तीर्थ नहीं है। भगवान् शंकर के समान कोई दूसरा देवता नहीं है तथा शिवरात्रि से बढ़कर दूसरा कोई व्रत एवं तप नहीं है।

व्याख्याकार पं. पन्ना लाल द्वारा प्रणीत इस महाशिवरात्रि व्रत कथा में माहात्म्य, आध्यात्मिक रहस्य एवं सम्पूर्ण पूजन विधि, उद्यापन, व्रत कथा, रुद्राष्टक, शिव पंचाक्षर, शिव चालीसा, शिव षडक्षर स्तोत्र, शिवमानस पूजा, आरती सहित बहुत सरल एवं सुबोधगम्य ढंग से प्रस्तुत की गई है जिससे शिव भगत स्वयं शिवरात्रि पूजन कर पुण्य लाभ ले सकें।

पुस्तक खरीदते समय व्याख्याकार पं. पन्ना लाल ज्योतिषी का नाम तथा जनरल बुक डिपो का पता अवश्य देख लें अथवा सीधे वी.पी.पी. द्वारा मंगवाएं।

मूल्य 25/- (डाक व्यय अलग)।

ज्योतिष की दुर्लभ

लाल किताब

अब हिन्दी में उपलब्ध मूल्य डाक व्यय सहित 550 रुपए

उर्दू की फोटोस्टेट (असली)

मूल्य—1500 रुपए

सभी प्रकार की पुस्तकें मंगवाने का पता—

जनरल बुक डिपो (पब्लिशर्ज़)

अड्डा होशियारपुर

जालन्धर शहर (पंजाब) फोन : 2457959

नोट—प्रत्येक आर्डर के साथ 50 रुपए अग्रिम राशि M.O. द्वारा भेजें। (डाक व्यय अलग)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान वालों की

"श्री अर्द्धशताब्दि पंचांग"

(दैनिक ग्रह स्पष्ट सहित)

(संवत् 2001 से संवत् 2050 तक)

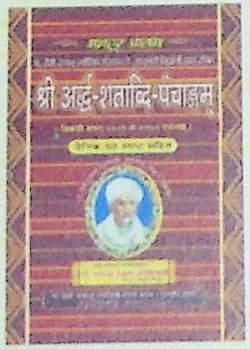

नवीन संशोधित संस्करण

(गत 50 वर्षों में उत्पन्न किसी भी जातक की जन्मपत्री मिनटों में बनाएँ)

मशहूर आलम पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान द्वारा प्रकाशित पुरातन पंचांगों (संवत् 2001 से संवत् 2050 तक) तक का एक सम्पूर्ण प्रामाणिक संग्रह ग्रंथ है, जो संस्थान के अनुभवी विद्वानों द्वारा पुनः संशोधित करके तैयार किया गया है इसमें तिथि, नक्षत्र, योग आदि घड़ी/पलों के साथ-साथ सभी ग्रहों के राशि परिवर्तनों का विवरण अलग से घण्टा-मिनटों में दिया गया है, जिससे यह पंचांग संकलन ग्रन्थ आधुनिक संदर्भ में भी सभी ज्योतिषी भाइयों के लिए अत्यन्त उपयोगी हो गया है। इसके अतिरिक्त इसमें भारत के प्रसिद्ध नगरों के तथा विदेशी नगरों के भी अक्षांश-रेखांश, घड़ी पलों का घण्टों मिनटों (स्टै० टा०) में परिवर्तन सारणी, विविध नगरों की लग्नसारणियाँ, विश्व के सभी स्थलों के सूर्योदयास्त जानने की सारणियाँ तथा ज्योतिष सम्बन्धी अनेक उपयोगी विषयों का समावेश किया गया है, जिससे यह ग्रंथ अखिल भारतवर्ष के ज्योतिषियों के लिए अत्यन्त उपयोगी हो गया है।

ज्योतिषियों एवं जन्मपत्री निर्माण वालों के लिए एक संग्रहणीय ग्रंथ है।
640 रुपये का मनीआर्डर भेजकर रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा मंगवाएँ।

पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान वालों की

श्री दशवर्षीय पंचांग

(दैनिक ग्रह स्पष्ट सहित)

(संवत् 2051 से संवत् 2060 तक)

(सन् 1994 से सन् 2004-05 ई० तक)

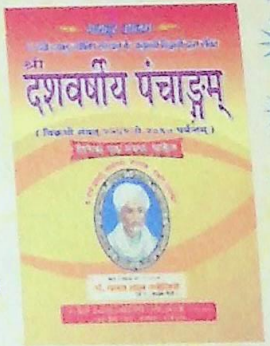

सम्पादक : पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी

हमारे ज्योतिष संस्थान से गत वर्ष से प्रकाशित 'अर्द्ध शताब्दी पंचाँग'—(संवत् 2001 से संवत् 2050 तक) को ज्योतिष के विद्वानों द्वारा हृदय से सराहा गया है। द्वितीय संशोधित संस्करण भी छप गया है। ज्योतिष विद्वानों के विशेष अनुरोध पर अब संवत् 2051 से 2060 तक वर्षों की दस वर्षीय पंचाँग भी आकर्षक बढ़िया जिल्द तथा अन्य ज्योतिष तथा जन्मपत्री निर्माण सम्बन्धी विषयों सहित छप कर तैयार हो चुकी है। इस पंचाँग की सहायता से आप पिछले दस वर्षों में उत्पन्न बालक/बालिका की जन्मपत्री का निर्माण (बिना गहन गणित किए) शीघ्र बना सकते हैं। आशा है, यह ज्योतिष संकलन ग्रन्थ भी 'अर्द्ध शताब्दी पंचाँग' की भान्ति ज्योतिष भाइयों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा।

मूल्य 160 रुपये + 30 रुपये =190 रुपये भेजकर रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा मंगवाएँ।

ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) दो भागों में छपकर तैयार हो चुका है।
मूल्य 250 रुपये प्रत्येक

मंगवाने का पता :— जनरल बुक डिपो (पब्लिशर्ज़)
अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पिन — 144008) (पंजाब) फोन : (0181) 2457959

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

समस्त भारत में ऐम बी डी का एकछत्र राज्य

अनुभव और अनुभवी अध्यापकों का कमाल

ऐम बी डी पुस्तकें

एक चमत्कार

ऐम बी डी पुस्तकें

आपकी सफलता बनाए यादगार

ऐम बी डी पुस्तकें

सफलता के ताने पर बुनीं

ऐम बी डी पुस्तकें

सम्पूर्ण, अभूतपूर्व एवं नवीनतम पाठ्यक्रमों के सभी प्रश्न उत्तर सहित
अन्य परीक्षोपयोगी प्रश्नों का समावेश
स्कूल और कालेज की सभी कक्षाओं के सभी विषयों पर

सम्पूर्ण भारत में सर्वत्र उपलब्ध

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection